



डा॰ करणीसिंहजी, महाराजा बीकानेर, संसद सदस्य

प्रकाशकीय

मूल पुस्तक ग्रंग्रेजी में लिखी गई थी। पहले श्रंग्रेजी का ही संस्करण छपवाने का विचार था परन्तु बाद में हिन्दी श्रनुवाद पहले निकालने का निश्चय किया गया।

अनुवाद हिन्दी व राजस्थानी के प्रख्यात विद्वान ठाकुर रामसिंहजी तंवर व श्री चन्द्रदान जी चारण ने किया है। जिस तत्परता से आप लोगों ने समय निकाल कर सहयोग दिया है उसके लिये हम अभारी हैं।

प्रकाशन में हमारा यह प्रथम प्रयास है और हिज़ हाईनेस महाराजा डा. करणीसिंह जी ने अपनी अमूल्य पुस्तक का प्रकाशन हमें सौंप कर जो प्रोत्साहन दिया है उसके लिये हम उनके सदा कृतज्ञ रहेंगे।

श्चन्त में, जैसा भी बन पड़ा है वह सहृद्य पाठकों के सामने है। श्चाशा है हमारे प्रथम प्रयास का ध्यान रखते हुये वे हमें श्चागे के लिये श्चपने सुभाव व सहयोग से प्रोत्साहन देंगे।

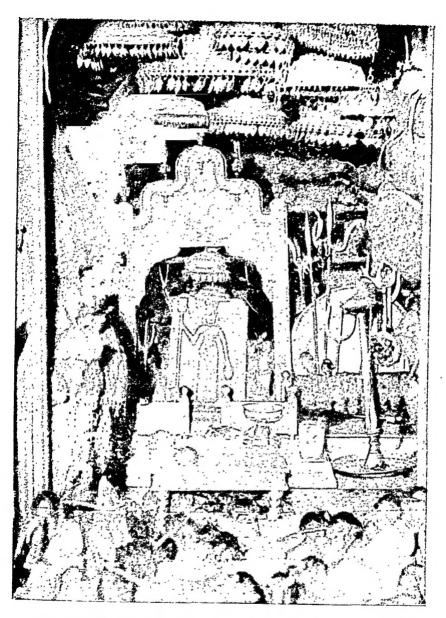
वीकानेर ६-४-१६६८ ।

प्रकाशक

•

.

,			
•			
1			
•			
		-	



श्रो करनो जो, बीकानेर के राज्य कुल की इष्ट देवी

समर्पग

माता करणी जी की पवित्र स्मृति को समर्पित, जिनके ग्राशीर्वाद ग्रीर देवी पथ-प्रदर्शन द्वारा राव बीकाजी से लेकर उनके न्नाज तक के वंशजों की पीढियों के बहादुर लोग दृदता से खड़े रहे हैं ग्रीर ईमानदारी, वीरता, द्यालुता तथा जनता की सेवा, जो हमेशा उन्हें बहुत ही प्रिय थे, की शानदार परम्परा को कायम रखने के लिये जिन्होंने ग्रानेक बार लड़ते हुये मृत्यु का वरण किया है।

यह उन लोगों को भी समर्पित है जो भारत की ख्राजादी के लिये लड़े ताकि हम भारतीय एक स्वतंत्र देश के स्वतंत्र नागरिकों की तरह स्वतंत्र वातावरण में सांस ले सकें।



विषय सूची

१.	भूमिका	•	क—ज
₹.	विषय प्रवेष	•	१–२२
₹.	श्रध्याय - १		२३–३६
	बीकानेर के राठौड़ राज्य की उत्पत्ति स्त्रौर स्थापना	,	
٧.	स्रध्याय - २		३७-५०
	त्र्यारिम्भक मुगलों के साथ वीकानेर के सम्बन्ध	•	
પુ.	त्र्रध्याय – ३		५१ –७६
	रायसिंह स्रौर मुगल वादशाह		
ξ.	ग्रध्याय — ४		७७–११४
	रायसिंह के उत्तराधिकारी और केन्द्रीय सत्ता		
७.	श्रध्याय — ५		११५-१४०
	मुगल साम्राज्य के पतन के समय बीकानेर) ′
5.	श्रध्याय - ६	•	१४१–१६०
	बीकानेर का ऋंग्रेजों से प्रारम्भिक सम्बन्ध		
.3	ग्रध्याय - ७		१६१२४१
	सिक्रय हस्तचेप का युग		`.
ξο.		•	२४२-३४४
	त्रांग्ल-भारतीय तथा साम्राज्य की राजनीति		
	में महाराजा गंगासिंह का भाग		
११.	श्राध्याय − ६		३४५-४२६
	भारत के एकीकरण में बीकानेर का योग	·	t
१२.	परिशिष्ट .		
	(१) त्र्रकबर का रायसिंह के नाम फरमान सन्		-
	४० ता० २२ ग्रस्फन्दारमञ		४२७
	(२) जहांगीर का रायसिंह के नाम फरमान इलाही सन्		
	४७ ताः ४ श्रजर		४२८

(३) जहांगीर का रायसिंह के नाम फरमान इलाही सन् ५०	
ता॰ २६ मेहर	४२९
(४) जहांगीर का रायसिंह के नाम फरमान हिजरी	
सन् १०१५ ता० २ त्राज्ञान	४३०
(५) ग्रकवर का रायसिंह के नाम फरमान इलाही सन् ४१	
ता॰ ५ उर्दी विहिश्त	४ ३१
(६) ग्राकवर का रायसिंह के नाम फरमान सन् जुलूस ४२	•
ता॰ ६ दे	४३२
(७) त्रकवर का रायसिंह के नाम फरमान सन् इलाही ४६ -	
ता० २१ खुर्दाद	४३३
(८) श्रौरंगजेव [का श्रन्पसिंह के नाम फरमान ता॰ ६	,
रवी उलग्रव्यलः १० 👙 👙 👙 👍 👭	४३४४३५
(६) गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित एजेन्ट व्रिगेडियर	
जनरल जी सेन्ट पी लारेन्स् का भारत सरकार	
के विदेश विभाग के सचिव जी. एफ. एडमंसटन	
के नाम २७ जुलाई १८५८ का पत्र 💢 🖫 😗 .	४३६४३७
(१०) गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित सहायक एजेन्ट	
लेफ्टिनेंट ऐ. जी. होम का गवर्नर जनरला के	
राजपूताना स्थित एजेन्ट व्रिगेडियर जनरल सेन्ट	•
पी. लारेंस के नाम ता॰ २४ सितम्बर १८५७	
. ना पत्र	४३८-४४०
(११) राजपूताना स्थित गवर्नर जनरल के एजेन्ट का	
भारत सरकार के विदेश विभाग के सचिव के नाम	1 1 × 1 × 1
ता॰ २१ दिसम्बर १८६० का पत्र 💯 💮 😥	225-222
(१२) सर चार्ल्स बुड का महाराजा सरदारसिंह के नाम	
ता० १५ दिसम्बर १८५६ का पत्र	४४५
(१३) लार्ड रिपन का महाराजा ट्रंगरसिंह के नाम ता॰ ३१	
दिसम्बर १८८३ का पत्र	४४६-४४७
(१४) लार्ड डफरिन काः महाराजाः ह्रंगरसिंह के नाम	
ता० २ फरवरी १८८७ का पत्र	388288

्राप्ति हुई ते हैं। का संस्थान र ता सामार । है क	,
(१५) गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित एजेंट के प्रथम	
सहायक लेफ्टिनेंट कर्नल ए. डी. मेकफरसन का	
बीकानेर स्टेट कौंसिल के राजनीतिक सदस्य के नाम	
ता १२६ मार्च १११६ का पत्र	४५
(१६) महाराजा गंगासिंह का सम्राट के नाम ता॰ ३	
श्रगस्त १६१४ का तार समार अस्तर व	४५
(१७) महाराजा गंगासिंह का वाइसराय के नाम ता॰ ३	
श्रगस्त १६१४ का तार हर है है ।	४५:
(१८) सम्राट काः महाराजा गंगासिंह के नाम ता॰ ४	
श्रगस्त १९१४ का तार	४५
(१६) वाइसराय का महाराजा गंगासिंह के नाम ता॰ ४	
(a) त्रास्त १६१४ का तार क्रांकर कर कर विकास	४५१
(२०) महाराजा गंगासिंह को प्राप्त सम्मानों उपाधियों	. :)
इत्यादि की सूची	४५५४५१
(२१) महाराजा गंगासिहः द्वाराः साम्राज्य संसदीय संघ के	1
समच् ता० २४ अप्रोल १६१७ को दिये गये भाषण	
का श्रंश । १५ - ११ वर्षात । १३४ वर्ष	४५७४५६
(२२) महाराजा गंगासिंह द्वारा "टाईम्स" अखनार को	
ता॰ १० मई १६१७ को दी गई भेंट के अंश	४६०-४६१
(२३) लार्ड चेम्सफोर्ड का महाराजा गंगासिंह के नाम	
तारु १५ नवस्वर १६१८ काः तार 🗁 🗀 🗢 🐃 .	४६३
(२४) मि. मोन्टेग्यू द्वारा महाराजा गंगासिंह को भेजा	
गया तार है। मानक विकास	४६३
(२५) महाराजा गंगासिंह द्वारा वाइसराय श्रीर भारत के	1
लिये राज्य मन्त्री की संयुक्त रिपोर्ट के ऋष्याय १०	
पर की गई टिप्पणी के ग्रंश	४६४
(२६) महाराजा गंगासिंह का लार्ड लिनलियगो के नाम ता॰	
१७ जुलाई १६३८ के पत्र का ग्रंश	४६५
(२७) महाराजा गंगासिंह के सर डोनल्ड फील्ड के नाम	
ता॰ २१ फरवरी १६३७ के पत्र का ग्रंश	४६६-४७०
(२८) बीकानेर मन्त्री परिषद के राजनैतिक सदस्य का	
पश्चिमी राजपूताना की रियासतों के रेजीडेंट के नाम	
ता॰ २ फरवरी १९१६ का पत्र	४७१४७४

	(२६) श्री जी॰ के॰ गोखले का महाराजा गंगासिंह के नाम	
	ता॰ २५ फरवरी १९१२ का पत्र	४७४-४७⊏
	(३०) महाराजा गंगासिंह का महात्मा गांघी के नाम ता० ६	
	जुलाई १६३१ का पत्र	४७६-४८०
	(३१) महाराजा गंगासिंह का महात्मा गांघी के नाम ता॰ ४	
	जुलाई १६३१ का पत्र	४८१-४८२
	(३२) प्रहाराजा सादूलसिंह को प्राप्त सम्मानों, उपाधियों	
	इत्यादि की सूची	४८३
•	(३३) भूतपूर्व बीकानेर रियासत के कुछ ऐसे अफसरों की	
	सूची जो राजस्थान संघ वनने पर विभागाध्यद्य	
	इत्यादि बने	. የଘሄ
	(३४) महाराजा सादूलसिंह का महात्मा गांधी के नाम	
	ता॰ १८ जून १६४७ का पत्र	४८५४८६
	. (३५) महाराजा सादूलसिंह की ता॰ ८ जुलाई १९४७ की	
	प्रेस विज्ञास	४८७
	(३६) बीकानेर रियासत का भारतीय संघ में सम्मिलित होने	1 days 1 day 0
	का समभौता	22-25
	(३७) वीकानेर रियासत श्रीर भारतीय संव के वीच हुश्रा सममौता	V0 0V0 3
	(३८) राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद का महाराजा करखीसिंह के नाम	&E3-\\$
	ता० १८ अक्टूबर १९५० का पत्र	አ£ _ጸ
	(३६) श्री एन. एम. बुच का महाराजा सादूलसिंह के नाम	٥٤٠
	१८ फरवरी १६४६ का पत्र	૪૬૫
23.	वीकानेर राजधराने का वंश वृद्ध	४९६
\$ %.	वीकानेर के राजास्त्रों व समकालीन जोधपुर, जयपुर, उदयपुर	**
• -	व केन्द्रीय शासकों की सूची	४६७-५००
શ્પુ;	सहायक ग्रंथों की सूची	५०१–५०६
		•





(१) राव बीकाजी (२) राव नारोजी (३) राव लूणकरणजी (४) राव जैतसीजी (५) राव कल्याणमलजी (६) राजा रायसिंहजी (७) राजा दलपतिंहजी (०) राजा स्र्सिंहजी (१०) महाराजा अनूपसिंहजी (११) महाराजा सर्पसिंहजी (१०) महाराजा अनूपसिंहजी (११) महाराजा सर्पसिंहजी (१०) महाराजा सुजानसिंहजी (१३) महाराजा जोरावरसिंहजी (१४) महाराजा गजिसिंहजी (१५) महाराजा प्रतापिंहजी (१७) महाराजा स्रतासिंहजी (१०) महाराजा स्रतासिंहजी (१०) महाराजा स्रतासिंहजी (१०) महाराजा स्रतासिंहजी (२०) महाराजा स्रतासिंहजी (२०) महाराजा स्रार्थिहजी (२०) महाराजा करणीसिंहजी

भूमिका

लगभग ५०० वर्षों की श्राविष में बीकानेर के राजधराने का दिल्ली के शासकों के साथ जो सम्बन्ध रहा उसका एक विस्तृत रिकार्ड देने का प्रयत्न इस शोध प्रबन्ध में किया गया है । शोध प्रबन्ध की सामग्री मूल श्रोतों श्रीर श्राधुनिक लेखों के श्रसंख्य ग्रन्थों, दोनों रूपों में मिलती हैं । यह सम्बन्ध दो ऐसे पत्तों में था जिनके लद्ध श्रीर उद्देश्य इतने भिन्न थे कि सदियों तक फैले इतिहास के परिवर्तित रूप के श्रनुसार एक शोध श्रध्येता को बहुचा श्रपना दृष्टिकोण बदलना पड़ता है । इस प्रकार के सम्बन्ध का रूप श्रधिकांशतः केन्द्रीय सत्ताधारियों श्रीर बीकानेर के शासकों के भाव श्रीर चरित्र पर निर्भर करता था । एक महाराजा के शासन में दिल्ली के शासकों के साथ राजनैतिक श्रीर निजी सम्बन्ध इतनी बार बदला कि इसने थोड़े—थोड़े समय के बाद श्रसंख्य करवेट ली । इस शोध प्रबन्ध में विस्तार के साथ उन सब प्रतिक्रियाश्रों श्रीर परिवर्तनों के कारणों श्रीर परिणामों की जांच करने का एक प्रयत्न किया गया है जिन्होंने कभी सम्बन्ध के शांत रहने में बाधा डाली, कभी इस सम्बन्ध में तनाव उत्पन्न किया श्रीर कभी इसे श्रीर मजबूत बनाया ।

यह वृतान्त एक जबरदस्त युद्ध श्रौर कोलाहल के बीच श्रारम्भ होता है जबिक मध्य एशिया के श्रपने पूर्वजों का स्थान पाने की श्राशा में निराश होकर वाबर ने भारत पर श्राक्रमण किया, लोदी वंश को हराया श्रौर एक नया साम्राज्य स्थापित करने की हिन्द से कनवाहा की श्रोर बढ़ा। कनवाहा के रक्त रंजित युद्ध में मृत्यु के समय भी निर्भय रहने वाला राजपूती शौर्य वाबर के भयंकर तुर्की तोपखाने के समस्त नष्ट हो गया। राव कल्याणमल ने युवराज काल में ही श्राक्रमणकारी मुगल सेना के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया। राव जैतसी ने सफलता से एक मुगल श्राक्रमण को रोक दिया श्रीर कामरां को वापस भागने के लिये विवश किया। इस युद्ध श्रीर संघर्ष के समय के बाद तैमूर के वंशाओं श्रीर वीकानेर के राजधराने दोनों ने एक दूसरे की महत्ता समस्ती। दोनों ने ऐसा सम्बन्ध जोड़ा जो

प्रेमपूर्ण श्रीर सहकारी या । श्राफ्गान शिक्त को रोकने के लिये मुगल वादशाह हमेशा वहादुर योद्धाश्रों का सम्मान करने के लिये तैयार रहते ये । उन्हें उनकी सहायता की श्रावश्यकता थी । बीकानेर के शासकों ने देखा कि शाही सेवा में उन्हें श्रापनी राजनीति श्रीर युद्ध कला दिखाने का पूर्ण श्रावस मिल सकेगा । उनमें ये दोनों गुए प्रचुर मात्रा में थे । इससे एक युखद सम्बन्ध बना । राजा रायसिंह सम्राट श्रकवर के सर्वश्रेष्ठ प्रसिद्ध सेना-पितयों में से एक थे । उन्होंने साम्राज्य की सभी सीमाश्रों पर लड़ाइयां लड़ीं । उन्हें पांच इजारी मनसबदार बनाया गया, जागीर श्रीर राजा की उपाधि दी गयी ।

वीकानेर के राजघराने में शाही सेवा की परम्परा दृढ़ता से स्थापित होने पर शानदार मुगल साम्राज्य की रज्ञा में वीकानेर के कई राजाश्रों ने यश श्रीर सम्मान प्राप्त किया । वीकानेर के राजघराने ने बहुत समय तक श्रीर बहुत स्वामि भिक्त से जिस साम्राज्य का समर्थन किया था वह श्रंत में ज्ञीए होने लगा । एक ऐसा समय श्राया जब यह श्रपती ही सीमा में व्यवस्था कायम नहीं रख सका श्रीर एक बढ़े नाम की केवल छाया मात्र रह गया । मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही राजनैतिक श्रीर सैनिक सम्बन्ध का एक शानदार युग समाप्त होता है । इस युग में ही यह सम्भव हुश्रा कि बीकानेर के शासक भारत के विभिन्न भागों में श्रपना श्रीर्थ दिखा पाये श्रीर दूर-दूर तक श्रपना नाम पहुंचा पाये ।

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, श्राँग्रेजों के ख्राने तक बीकानेर एक तरह से पूर्ण स्वतन्त्र रहा। राजपूताना की रियासतों में विलक्जल उत्तर की श्रोर सबसे अलग होने की स्थित के कारण बीकानेर के राठौड़ राज्य को न तो पिंडारियों की लूट श्रीर न मरहठां के हमले कोई हानि पहुँचा सके। तो मी बीकानेर के राठौड़ शासकों ने देखा कि आंतरिक गड़वड़ी करने वालों के कारण उनकी स्थिति काबू से बाहर है। इससे विवश होकर महाराजा स्रतसिंह को श्रंग्रेजों की नवोदित शिक्त के साथ सममौता करना पड़ा। सन् १८६८ में निरंतर मैत्री, पारस्परिक मेल और स्वायों के ऐक्य के सममौतों पर हस्ताच्तर हुये। सन् १९४७ में व्रिटिश सत्ता के भारत से हटने तक दोनों पत्तों ने इस समभौते का हर तरह से पूर्ण पालन किया। ब्रिटिश शाधिपत्य काल में जब भी जहरत पड़ी बीकानेर का राजधराना ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थन में हमेशा एक मित्र की तरह खड़ा रहा। प्रथम अफगान युद्ध (१८३८–४२) में काबुल पर चढ़ाई करने के लिये उंट दिये गये और १८४५-४६ के प्रथम

सिक्ल युद्ध में बीकानेर की सेना ने लड़ाई में भाग लिया। इस अप्रवसर पर तोपें और गोला बारूद दिया गया । इसके अलावा रसद को सुरिच्चत पहुँचाने श्रीर लुटेरों का दमन करने के लिए भी सहयोग दिया गया । दूसरे सिक्ख-युद्ध (१८४८-४९) के समय फिरोजपुर में अंग्रेजी सेना की सहायता के लिये वुइसवार ग्रौर तोपलाना भेजा गया । ग्रंग्रेजी सेना के उपयोग के लिये ऊंट भी दिये गये । बीकानेर की परम्परागत सैनिक वीरता, विद्रोह (१८५७) को दवाने में दिखाई गई। इस समय अंग्रेजों को बचाया गया, उनके भोलेभाले रिश्तेदारों को शरण दी गई, उनको त्रावश्यक वस्तुर्वे दी गई तथा हांसी श्रीर हिसार में ग्रंग्रेजी चढाइयों में सिकय सहयोग दिया गया । सन् १८७८-७६ के द्वितीय अफगान युद्ध में रियासत की सारी सेना अंग्रेज सरकार की सेना के लिये देने की बात कही गई । लेकिन यद्यपि सारी सेना लेना आवश्यक नहीं समभा गया, इस युद्ध में उपयोग के लिये ऋंग्रेजी सेना को ८०० ऊंट दिये गये । महाराजा गंगासिंह के स्वयं के सेनापितत्व में वीकानेर की सेना ने चीन युद्ध (१६००-०१) में सिक्रय भाग लिया । इनका मुरासिलों में उल्लेख हुत्रा । सोमालीलेंड की चढ़ाई (१६०२--०४) में गंगारिसाले (बीकानेर की कॅट सेना) ने भाग लिया ऋौर कई मौकों पर युद्ध किया । प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१९१८) में बीकानेर रियासत की सेनाओं ने कई प्रकार की सेवायें प्रदान की । मुख्य प्रनथ में इसका संत्तेप में उल्लेख किया गया है । तीसरे श्रफगान युद्ध (१९१६) में भी महाराजा गंगासिंह ने लड़ने के लिये श्रपनी तथा बीकानेर रियासत की सेना की सेवायें ऋर्पित कीं लेकिन उनकी सेवाऋों का लाभ नहीं उठाया गया । दूसरे महायुद्ध के त्रारम्भ होने पर महाराजा गंगासिंह तथा महाराजा सादूलसिंह (जो उस समय युवराज थे) ने लड़ने के लिये श्रपनी सेवायें श्रापित की । लेखक के साथ महाराजा गंगासिंह मध्य पूर्व के दौरे पर भी गये। वीकानेर की सेना लड़ने के लिये बर्मा, ऋदन और मध्य पूर्व में गई।

पाँच शताब्दियों की अविध में २२ राजाओं ने बीकानेर पर शासन किया । उनमें से १८ ने विभिन्न युद्धों, चढ़ाइयों अथवा आन्तरिक सैनिक कार्यवाहियों में स्वयं भाग लिया । इससे निसंदेह सिद्ध होता है कि बीकानेर के राजधराने ने दिल्ली के शासकों के साथ जो सम्बन्ध स्थापित किया वह गहरा और अत्यधिक महत्वपूर्ण था। इस प्रकार इस खोज और शोध का मुख्य उद्देश्य उन कारणों की आलोचना दृष्टि से जाँच करना है, जिन्होंने ऐसे सम्बन्ध की आवश्यकता को स्थिर किया और इसे आगे चालू रक्खा । समभौता करने वाले पत्तों के उद्देश्यों में गहराई से जाने के विशेष प्रयत्न किये गये हैं । इसके साथ इस समभौते के चालू रहने में बाधा डालने वाले कई परिवर्तनों का विषय दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है।

इस विषय पर जो प्रन्थ प्राप्त हैं वे विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखे गये थे । फलस्वरूप इन ५०० वर्षों में बीकानेर श्रीर दिल्ली के शासकों में जो सम्बन्ध बना उसकी त्र्योर केवल लापरवाही से ध्यान दिया गया है। इस सम्बन्ध के बारे में जो भी श्राकस्मिक उल्लेख हुन्ना है वह इतना विखरा हुआ है कि इसे एक जगह करने और इससे एक सुसम्बद्ध कथा बनाने का एक महान् प्रयत्न करना पड़ा है । राजनैतिक श्रीर सैनिक श्रिरियरता को ध्यान में रखते हुये कई जगह तथ्यों की एक विल्कुल ही भिन्न रूप में . पुनर्व्याख्या करनी पड़ी है । डा॰ त्र्रोका ने विना त्रनुमान या व्याख्या के घटित घटनात्रों को केवल कालानुसार लिख दिया है। स्रतः इस बात का प्रयत्न करना पड़ा है कि एक सम्बन्धित कथा तैयार की जाय और हरएक स्तर पर सम्बन्ध की व्याख्या करते हुये वैज्ञानिक आधार पर उसके परिणाम समकाये जायँ । उदाहरण के लिये इस इलाके की भौगोलिक, राजनैतिक सामाजिक, महत्वपूर्ण स्थिति स्त्रीर व्यापारिक स्वरूप का विश्लेषण करते हुये यह बताया गया है कि बीकानेर का वंजर इलाका श्रोर उसके रेगिस्तानी मैदान कैसे मुगल बादशाहों का ध्यान अपनी ख्रोर आकर्षित कर सके । इसी प्रकार उन परिस्थितियों का युक्तिपूर्वक विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है, जिन्होंने बीकानेर के शासकों को दिल्ली के शासकों से सहायता मांगने . के लिये विवश किया तथा दिल्ली के शासकों को बीकानेर के राठौड़ों से पारस्परिक मैत्री करने के लिये ललचाया ।

उन कारणों की पुनर्व्याख्या की गई है, जो पहले राजा रायिं को प्रकाश में लाने तथा बाद में बादशाह की कृपा से वंचित करने के लिये उत्तरदायी थे। जहाँगीर के शासन के आरिम्भिक काल में बीकानेर राजधराने ने जो अभूतपूर्व उन्नित और श्रेष्ठता प्राप्त की उसे समभने के लिये एक बिलकुल नये दृष्टिकोण की आवश्यकता है। तभी रायिं की सहायता पाने के लिये जहाँगीर की उत्सुकता को अधिक अच्छी तरह से समभा जा सकता है। समय—समय पर बीकानेर के राजधराने के प्रति मुगल बादशाहों के दृष्टिकोण में जो परिवर्तन हुये उन्हें समभने के लिये उन कारणों के मूल्यांकन का प्रयत्न किया गया है जिनसे स्थापित नीति में परिवर्तन का अवसर उत्पन्न हुआ। औरंगजेव ने महाराज। करणिंस्ह और

बाद में महाराजा अन्पसिंह के प्रति शत्रु भाव क्यों अपनाया इसके कारण पूरी तरह समभाये गये हैं।

ग्रंग्रेजों से सहायता मांगने में महाराजा स्रतिसह की उत्सुकता सममाने के लिये एक विलकुल नई दृष्टि श्रपनायी गई है। इस बात को बताने का प्रयत्न भी किया गया है कि कैसे ग्रंग्रेजों ने सन् १८१८ के निरंतर मैत्री, पारस्परिक मेल ग्रीर स्वार्थों के ऐक्य के सममौते की दुष्प्रवृत्ति से व्याख्या की ग्रीर बीकानेर के शासक को श्रधिक ग्राधीन बना लिया। ग्रव तक यह प्रवृत्ति रही है कि सममौते की व्याख्या भारत के राजाग्रों की मजाक उड़ाने ग्रथवा उन्हें गुमराह करने के लिये की जाय।

बीकानेर के त्रांतिरक प्रशासन में ग्रंग्रेजी हस्तत्तेप के प्रयत्नों की अब विषय प्रधान ढंग से व्याख्या की गई है त्रीर यह दिखाया गया है कि किस प्रकार धीरे धीरे ग्रंग्रेजों ने रियासत के त्रांतिरक प्रशासन के कार्यों में दखल दिया। इस विषय के तथ्य पर विशेष रूप से नवीन प्रकाश डाला गया है जो अब तक लोगों को ठीक तरह से मालूम न था। बीकानेर प्रशासन पर ग्रंग्रेजों प्रभाव श्रीर महाराजा गंगासिंह द्वारा इस प्रवृत्ति को रोकने के लिये किया गया विरोध तथा राजनैतिक व्यवहार पुनः लागू करने संबंधी नई साम्रगी शोध प्रवंध में जोड़ी गई है। यह सामग्री लालगढ़ पैलेस तथा राजस्थान राज्य पुरालेख विभाग बीकानेर के रेकार्ड से खोज कर निकाली गई है। भारत सरकार के साथ महाराजा गंगासिंह के समस्त सम्बन्ध को पहली बार अपने सही रूप में बताया गया है।

इस प्रकार शोध प्रवन्ध में किये गये प्रयत्नों को तीन स्रलग वर्गों में बांटा जा सकता है :—

- (१) अनेक प्रकार के रेकार्ड और ग्रंथों का अध्ययन करके वीकानेर के साथ दिल्ली के सम्बन्ध निश्चित करने और सारी सामग्री को क्रमानुसार रखने, जिससे कि घटनाओं की एक अदूट कहानी वन जाय, का प्रयत्न किया गया है।
- (२) मुख्य घटनात्रों के कारणों स्त्रीर परिणामों की जांच करने के लिये इतिहास के तथ्यों की पुनर्व्याख्या की गई है।
- (३) पुराने कागजों से ऋव तक ऋजात कुछ तथ्य इकट्ठे किये गये हैं ऋौर वीकानेर के इतिहास के स्वरूप पर नया प्रकाश डाला गया है ।

ये ही कुछ नातें हैं जो शोध प्रवन्ध में मौलिक हैं। सारें शोध प्रवन्ध में वीकानेर के केन्द्रीय सत्ता के साथ सम्बन्धों पर ही ऋधिक जोर दिया गया है और बीकानेर के द्यांतरिक इतिहास का विवरण यथा-सम्भव नहीं दिया गया है।

यह लेखक का सौमाग्य है कि उसके स्वयं के ग्राधिकार में वीकानेर महाराजा के निजी सचिव के कार्यालय की फाइलों की सामग्री है। इनमें वीकानेर के शासकों श्रीर अंग्रेज श्रिधकारियों के बीच हुआ पत्र व्यवहार है। बीकानेर रियासत के समय "बीकानेर का राजधराना" शीर्षक सहकारी ग्रन्थ प्रकाशित करने के लिये जो सामग्री संग्रहीत की गई थी उसका उपयोग भी लेखक के लिये सम्भव हो गया। इसके अतिरिक्त लालगढ पैलेस में हिथत प्रसिद्ध श्रान्य संस्कृत पुस्तकालय लेखक को सलम रहा है। यहाँ पर वीकानेर के इतिहास से सम्बन्धित फारसी श्रीर राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों की सर्वश्रेष्ठ प्रतिलिपियां मिलर्ती हैं । लेखक राजस्थान राज्य पुरालेख विभाग के निदेशक श्री नाथराम खड़गावत का इतज़ और आमारी है, जिन्होंने ये सुविधायें प्रदान कीं । लेखक की एक बहुत ही महत्वपूर्ण देन यह है कि वह श्रनेक ऐसे कागजों की खोज कर सका है जो श्रव तक वड़ा कारखाना श्रीर तीशाखाना में पड़े हये थे। इन कागजों में सैकड़ों वहियाँ, खरीते, खतूत श्रहल-कारान, वकील रिपोर्ट, खतूत महाराजगान श्रीर जनानी तहरीर सम्मिलित हैं। खोज के समय लेखक को मुगल वादशाहों द्वारा बीकानेर के शासकों को लिखे गये मूल फरमान, निशान और मंसूर मिले। इनमें से अनेक लेखक के निजी श्रिधकार में हैं।

उपर्यु क स्रोतों के साथ २ लेखक को बम्बई, बीकानेर, दिल्ली श्रौर कोधपुर स्थित कई पुस्तकालयों को भी देखना पड़ा। जब लेखक एक बार लंदन गया तो वहाँ उसे ब्रिटिश म्यूजियम लायब्रेरी में कुछ, पुस्तकें देखने का श्रयसर प्राप्त हुश्रा। मूल श्रप्रकाशित स्रोतों में शोध का चेत्र बीकानेर के इतिहास के श्राखिरी काल तक सीमित है। श्रारम्भिक समय का वर्णन श्रिषकांशतः प्रकाशित स्रोतों, साहित्य श्रौर परम्पराश्रों पर श्राधारित है। यह पहला श्रवसर है कि सन् १६३७ के बाद के बीकानेर के इतिहास पर कुछ लिखा गया है।

इतिहास के ग्रामी हाल ही के तथ्यों की न्याख्या करने की हिन्द से महाराजा गंगासिंह के साथ काम करने वाले वृद्ध ग्रीर ग्रायकाश प्राप्त कर्मचारियों से बहुधा बात करनी पड़ी । उनमें कंवर जसवन्तसिंह

दाऊदसर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये महाराजा गेगासिंह के निजी सचिव थे और इंग्लैंड में गोलमेज सम्मेलन में महाराजा के कार्य से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित थे। महाराजा सादूलसिंह के समय बाद में ये बीकानेर रियासत के प्रधान मन्त्री मी थे। बीसवीं शताब्दी के इतिहास का पुनर्गठन करने में इन सज्जनों द्वारा दी गई मौखिक गवाही और उनकी जानकार सलाह अमूल्य सहायता पहुंचाने वाली थी।

ग्रंतिम दो महाराजाश्रों के समय से सम्वन्धित सामग्री इतनी ग्राधिक ग्रीर वैविध्यपूर्ण थी कि उस सब को सम्बन्ध के ऐसे संज्ञित सर्वेज्ञ्या में शामिल करना मानवीय दृष्टि से ग्रासम्भव था। लेकिन जैसे ग्रीर जब लेखक को ग्रावसर मिलेगा तो ग्रालग से इस सारी सामग्री पर विस्तार से काम करने का प्रयस्न किया जा सकता है।

श्रंप्रेजों श्रीर बीकानेर के सम्बन्ध के बारे में लेखक का दावा है कि उसने विशेषतः महाराजा ट्रांगरसिंह, गंगासिंह श्रीर सादूलसिंह के शासन के कुछ नये तथ्यों का पता लगाया है। श्रभी हाल के समय का इतिहास पहली बार लिखा गया है। इस प्रकार लेखक की मौलिक देन श्रंग्रेजों द्वारा श्रपनाये गये उन तरीकों का उद्घाटन करती है जिनसे उन्होंने भारतीय राजाश्रों को धोखा दिया श्रीर उससे श्रपने हस्तज्ञेप का चित्र बहाया। इससे निसंदेह रूप से इतिहास के विद्यार्थियों को ब्रिटिश श्राधिपत्य की प्रकृति को श्रीर श्रिधिक श्रच्छी तरह समभने में सहायता

एक श्रौर दिशा जिसकी श्रोर सत्य के उद्घाटन का प्रयत्न किया गया है, भारतीय रियासतों में विद्रोही जागीरदारों के प्रति श्रंप्रेजों की नीति से सम्बन्धित है। यही वह विशेष चेत्र है जिसमें श्रंप्रेजों ने श्रपनी "फूट डालो श्रौर शासन करो" की नीति का बहुत उत्साह से पालन किया तथा जब श्रौर जहाँ सामंतों ने श्रसन्तोष की श्रावाज उठाई वहीं श्रपनी हस्तचेप की कार्यवाही को तेज कर दिया। श्रंप्रेजी साम्राज्य श्रौर ब्रिटिश भारत की राजनीति में महाराजा गंगासिंह ने जो काम किया उससे इस बात का गहरा सन्तोष होता है कि राजा लोग भी देश को स्वतन्त्र कराने के लिये सच्चे मन से इच्छुक थे श्रौर शीघ ही होने वाले परिवर्तन के सम्बन्ध में भी श्राशंकित थे। इस शोध प्रबन्ध के श्रध्ययन से पाठक को यह ज्ञात होगा कि राजाश्रों ने सर्वोच्च सत्ता (श्रंग्रेजों) को श्रपने तरीके से रोका श्रौर उन्होंने भी ब्रिटिश उच्छ खलता का कड़ा विरोध किया। श्रन्तिम देन जो

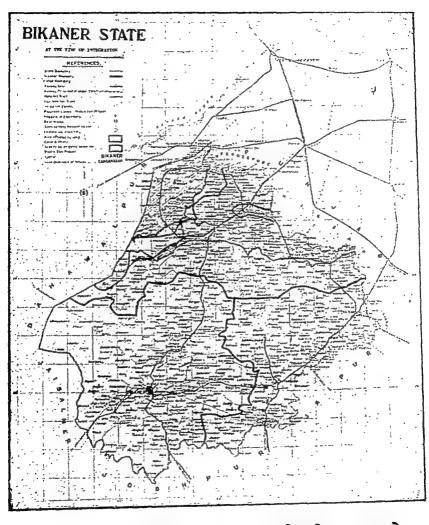
कम महत्व पूर्ण नहीं है, यह है कि वाद के दो शासकों— महाराजा गंगासिंह ग्रीर महाराजा सादूलसिंह द्वारा राजनैतिक स्वतन्त्रता के लिये भारत की इच्छाश्रों को समक्तने श्रीर श्राजादी की लड़ाई में योग देने के काम को प्रकाश में लाया गया।

मृलतः शोघ प्रबन्ध का शोध कार्य स्वर्गीय फादर हेरास के निर्दे-शन में ग्रारम्भ हुन्ना । कुछ समय तक ग्रध्ययन रोकने के बाद यह कार्य सेंट जेवियर कालेज बम्बई के भारतीय इतिहास ग्रीर संस्कृति के हेरास संस्थान के प्रोफेसर विलियम कोयलों के निर्देशन में चालू किया गया । बम्बई विश्वविद्यालय को पी एच॰ डी॰ की उपाधि के लिये प्रस्तुत करने हेतु यह शोध प्रबन्ध तैयार किया गया है ।

लेखक अपने निर्देशकों और भूमिका में वर्णित पुस्तकालयों और पुरालेख विभाग के अधिकारियों का आभारी है।

en al la reconstruir de la companya La companya de la co





सन् १६४६ में एकीकरण के समय बीकानेर राज्य के विस्तार का नकशा

विषय-प्रवेश

वर्तमान बीकानेर, चुक ग्रीर गंगानगर जिले का चेत्र, ग्राप्रैल १६४६ में बीकानेर रियासत के राजस्थान संघ में एकीकरण से पूर्व बीकानेर के राठौड़ राज्य के नाम से ज्ञात था। यह २७°-१२' ग्रीर ३०°-१२' ग्रीर उप"-४१ पूर्व देशान्तर के बीच रियत था। यह उत्तर ग्रीर पश्चिम में भावलपुर रियासत, ग्रीर दिच्चण-पश्चिम में जैसलमेर रियासत, दिच्चण-पृत्व में जयपुर रियासत, पूर्व में लोहाक रियासत व हिसार जिले एवं उत्तर-पूर्व में फिरोजपुर जिले से घरा हुन्ना था। इसका चेत्रफल २३,३१७ वर्ग मोल था ग्रीर चेत्रफल की दृष्टि से यह भारत की समस्त रियासतों में छठी ग्रीर राजपूताना में दूसरी सबसे बड़ी रियासत थी। इस चेत्र का उत्तरी भाग समतल ग्रीर उपजाऊ है। वह गंग नहर द्वारा सिचित ६ लाख २० हजार एकड़ भूमि के ग्रीतिरिक्त, वर्षा के वर्षों में रवी ग्रीर खरीफ दोनों फसल उगाने की दृष्टि से काफी उपजाऊ है। यह चेत्र शीघ ही राजस्थान

۹.	दि इम्पीरियल गजेटियर स्त्राफ इंडिया, माग न, पृ. २०२।
	अर्सिकन-गजेटियर आफ बीकानर, पु० २०६।
	वीकानेर और इसके शासकों का संदित्त इतिहास, पू. ५ ।
	कैंटेन पाउलेट ने बीकानेर राज्य के अपने गजेटियर में [पु. ६१] उत्तर अलाश
	२७-°३०' और २६°-३५' तथा पूर्व देशान्तर ७२°-३०' व ७५°-४०'
	एवं चेत्रफल २३,५०० वर्ग मील लिखा है जो स्पन्ट रूप से गलत है।

२. च्रेत्रफल की दिष्ट से छः बड़ी रियासते इस प्रकार थीं —

(१) जम्मू और काश्मीर	<i><u>4444</u></i>	वर्ग मील
(२) हैदराबाद	मर्द् ष्म	33 33
(३) जोधपुर	३५०६६	נו וו
(४) मैस्र	2 E 8 9 X	າາ າາົ
(५) ग्वालियर	२६३६७	າງ ກຳ
(६) बीकानेर	२३३१७	כר לכ

 राजपूताना की रियासतों में केवल जोधपुर का च्लेत्रफल ही अधिक था अर्थात् ३५०६६ वर्श मोल था । नहर-द्वारा-कृषि की सम्भावना वाले इलाके में बदल जायेगा। शेष भाग ग्राध-कांशतः रेतीला व स्खा है। दिल्ण पश्चिमी भाग विशाल भारतीय महस्थल में है ग्रीर दिल्णी पूर्वी भाग में कुछ पहाड़ी श्रेणियाँ हैं।

इन प्राकृतिक रूपों ने इलाके को दो स्पष्ट भागों में वाँट दिया है जो घग्घर द्वारा एक दूसरे से अलग किये गये हैं, इनमें मध्य और दिल्गी भाग 'घोरा' तथा उत्तरी भाग 'बग्गी' के नाम से प्रसिद्ध है। बग्गी लेत्र के एक भाग ने नहरी इलाके के विकास के कारण महत्वपूर्ण रूप प्राप्त कर लिया है और बग्गी से भिन्न यह अब नहरी कहलाने लगा है। घोरा नाम से प्रसिद्ध इलाके को भी दो भागों में बाँटा जा सकता है- (१) मगरा-यह अधिकांशतः पथरीला लेकिन समतल है और अच्छी वर्षा होने पर पैदाबार ठीक हो जाती है। (२) यली- यह अधिकांशतः रेतीले टीलों से ढका हुआ है। वर्षा कम होती है। वर्षा का अभेसत लगभग १० इंच है। इस इलाके के कुल लेत्र का

- बीकानेर श्रीर उसके शासकों का संचित्त इतिहास, ए. ५-६। ۹. इम्पीरियल गजेटियर स्राफ इन्डिया, भाग ८, पू. २०२-२०३। वीकानेर राज्य जनगणना रिपोर्ट १६४३, माग १, पृ. २ । महाराजा गंगासिंह जो ने ही सर्व प्रथम सारे इलाके की जांच करवाई थी । सर श्राँरेल स्टेन श्रौर मिस्टर जी. डी रडिकन द्वारा की गई जाँच के श्राधार पर गंग नहर क्लेत्र के ऋलावा मूमि को सिंचित करने की एक विशेष योजना तैयार की गई थी। इन सिंचाई की योजनात्रों को कार्य रूप देने के लिए महाराजा सादूलसिंह जी काफी रकम पोते बाकी में छोड़ गऐ थे पर राजस्थान सरकार ही इस योजना को लागू कर सकती थी। राजस्थान फीडर अक्टूबर सन् १६६० में खोला गया। इससे एक लाख छुब्बीस हजार छह सौ चौपन एकड़ भूपि सींची जानी थी । ऋप्रेल १६६१ में राजस्थान नहर से सिंचाई होने लगी और इससे ३,२३,६७७ एकड़ भूमि सीची जानी थी । इसकी सीघी नालियों से २,२१,६३१ एकड़ भूमि सींची जानी है जबिक नीची सतह का कुल इलाका ५२,१०,०५६ एकड़ श्रीर राजस्थान नहर से सीचा जाने वाला कुल इलाका ११,६३,४६१ एकड़ है।
- बीकानेर और उसके शासकों का संचित्त इतिहास, ृ. ६ ।
 श्रर्सिकन-गजेटियर, पृ ३०६ ।
- ३. बीकानेर राज्य जनगणना रिपोर्ट, १६४३, माग १, प. ३ ।
- ४. वीकानेर राज्य जनगएना रिपोर्ट १६४३, माग १, पृ. ७ । बीकानेर राज्य की प्रशासकीय रिपोर्ट में निम्निलिखित वर्षों में वर्षा का श्रीसत इस

काफी भाग वंजर ख्रीर कम बसा हुआ है। यह ख्राबादी भी स्ले ख्रीर ख्रकाल के वर्षों में पड़ोस के ख्रिधिक उपजाऊ भागों में चली जाती है।

यहाँ निदयाँ नहीं हैं ग्रीर इस इलाके में केवल दो, ताजा पानी की, भीलों हैं जो बीकानेर के दिल्लाए पश्चिम में चट्टानी भू-भाग के नालों से भर जाती हैं। प्रदेश में तह में केवल थोड़ा श्रन्तर होते हुए भी पानी बहुत भिन्न गहराइयों में मिलता है ग्रीर नगर के ग्राधिकांश कुएँ ३०० फीट से ज्यादा गहरे हैं।

प्रकार दिया गया है।	•		
सन् १६२०-२१		33.3	इंच
सन् १६३०-३१		₹0.9€	इंच
सन् १६४०-४१		१०.२६	इंच

- बीकानेर और उसके शासकों का संद्यित इतिहास, ृ ६।
 इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इन्डिया, भाग ८, पृ. २९३ पर लिखा है कि सन् १८६६ के आकाल में कुल आबादी का लगमग २२ प्रतिशत माग दूसरी जगह चला गया।
- पाऊलेट-बीकानेर राज्य का गजेटियर, ृ. ६३ स्त्रीर १४६। इस सम्बन्ध में पाऊलेट ₹, ने डा॰ मूरे की जांच का उद्धरण दिया है जिसने नीखा में ४०० फीट गहरा एक कुन्नों देखा। उसने भूगर्भ के सम्बन्ध में भी डा॰ भूरे को उद्धृत किया है जो कहता है "वीकानेर में पानी सतह से २०० या ४०० फीट गहराई में ही मिलता है। मैंने एक ऐसे कुएँ की सामग्री की जांच की जिसमें पहलें पानी ३१६ फीट की गहराई में ही मिल गया या। इस तह में पहले काफी कंकर थी बाद में लाल मिट्टी, फिर रेतीला पंत्यर ऋौर ऋन्त में सफेर पथरी थी। यह पथरी एक मटर के दाने से लेकर एक ऋंडे के आकार तक थी। इसमें क्वार्ट ज थी। यह यद्यपि गोल नहीं थे पर इनका तला .श्रीर कोएं इतने कोमल थे जिससे यह विचार उत्पन्न होता था कि किसी समय वे अवश्य ही बहते हुए पानी में रहे होंगे। मेरा विश्वास है कि भूगर्भ शास्त्री कार्टर ने जो यह मत प्रगट किया है कि पिरचमी भारत का यह समस्त ऋर्ध रेगिस्तान भाग किसी समय समुद्र की सतह रही होगी, जो समुद्र के वर्तमान किनारों से अरावली की पहाड़ी श्रंखला तक फैला हुआ था, बीकानेर के गहरे कुओं में भूगर्भ की जो विशेषताएँ मिलती है, उनसे इस मत का समर्थन होता है।"

मिस्टर जार्ज थॉमस अपने सैनिक संस्मरणों में लिखता है "मू भाग उठा हुआ है, मिटी हल्के मूरे रंग की रेत है जिससे ज्योंही वर्षा होती है इसमें समा जाती है। इस स्थिति में इस प्रदेश के सभी मार्गों में कुओं का वनना लेकिन पानी बहुत बढ़िया है। इलाके का अधिकांश भाग मैदानी और स्थान बदलने वाले रेत के टीलों से बना हुआ है जिसके ढाल समुद्र तट की तरह अनुमानित होते हैं। 3

इस इलाके के विभिन्न भागों में चूना, विद्या किस्म का लाल पत्यर, फुल्लर्स अर्थ, जिप्सम, तांबा आदि पाये जाते हैं। यद्यपि इलाका निर्कन और सुनसान है उप यहाँ घास, जंगली भाड़ियाँ, फोग और सज्जी काफी होती है। इस

जरूरी हो जाता है। ये ईंटों से बनाये जाते हैं और सामान्यतः १०० से २०० फीट गहरे हैं यद्यपि जैसलमेर की सीमा की ओर उनकी गहराई २०० फीट से कम नहीं है।

राज्य के उत्तरी मागों में पानी की गहराई कुछ भिन्न रही है। श्रौसत गहराई सतह से निम्निलिखित है —

> मिर्जावाला तहसील १२५ फीट श्रनूपगढ़ तहसील १३५ फीट हनुमानगढ़ तहसील १८० फीट स्रतगढ़ तहसील १६० फीट टीवी तहसील १५० फीट

इस प्रकार सारे इलाके की श्रीसत गहराई १५० फीट से श्रधिक मानी ना सकती है। वहुत से कुएँ १८० से २०० फीट तक गहरे हैं श्रीर उनमें से प्रतिशत का पानी खारा है तथा मनुष्यों श्रीर पशुश्रों के पीने के काम में नहीं श्राता। कुश्रों की गहराई १५० फीट से लेकर ४५० फीट तक है श्रीर राज्य के गावों में पीने के पानी के लिये बनाये गये ३६८४ कुश्रों में से ४० प्रतिशत का पानी खारा होने के कारण पीन योग्य नहीं था। कई श्रीर कुएँ श्रच्छे श्रीर बुरे की सीमा रेखा पर हैं श्रीर किसी मीसम के श्रारम्म में खारे हो जाते हैं।

- १. पाऊलेट-वही, पृ. ६३ ।
- ऋसिकन-वही, पृ. ३०६।
 इस्पीरियल गजेटियर ऑफ इन्डिया, माग म, पृ. २०३।
 टॉड-अनाल्स एन्ड अन्टीिक्वटीन आफ राजस्थान, माग २, पृ. ११५२-५३।
 डॉ. मूरे जैसा कि पाऊलेट ने उद्धृत किया है, वही, पृ. १४६।
- पाऊलेट-वही, पृ. ६२-६३।
 टॉड-वही, माग २, पृ. ११५४।
 इम्पीरियल गजेटियर आफ इन्डिया, माग ८, पृ. २९१।
 प. सी. बनर्जी-राजपूत स्टेट्स एन्ड ईस्ट इन्डिया कम्पनी, पृ. १८३।

इलाके के दिल्ली भाग में भुक्ट आम घास है, दूसरे प्रकार की घास धामन, माकड़ा, गंठीला, फुलेर आदि हैं।

यहाँ के प्राकृतिक रूप, विशेषतात्रों, जलवायु श्रीर दूसरे भोगोलिक विषयों ने बीकानेर के श्रास पास रहने वाले लोगों के जीवन को इतना श्रिषक प्रभावित किया है कि इसका यहाँ के इतिहास के प्रवाह पर निश्चित प्रभाव पड़ा है । सिवाय एक छोटे भू भाग के उत्तर पश्चिम का समतल जेत्र केंचे रेतीले टीलों का है जो स्थान वदलते रहते हैं । सतह का श्राकार इस प्रकार का है कि रेगिरतान में से निकलना लगभग श्रसम्भव हो जाता है । स्रतगढ़ तक का भाग निर्जन है श्रीर रेत के ढलवां टीलों वाला है जो जंगली माड़ियों से ढका हुश्रा है । यद्यपि यहां से श्रागे चिकनी मिट्टी का समतल मैदान है जहां बनस्पति ज्यादा है श्रीर गांव भी श्रिषक हैं लेकिन यह समस्त चेत्र वंजर भूमि वाला श्रीर डाकुश्रों व लुटेरों का श्रह्णा था । यहां की जमीन ऐसी है कि वर्षा के सारे पानी को बरसते ही सोल लेती है । इससे बहुत गहरे कुश्रों का निर्माण श्रावश्यक हो जाता है । जीवन के सामान्य कार्यों श्रीर घरेलू उपयोग के लिए भी वर्षा के पानी को कुन्डों में इकट्ठा करने के सभी सम्भव प्रयत्न किये जाते हैं । भूतकाल में पानी की कमी से बहुधा यहां के निवासियों को श्रपने पूरे परिवार के साथ श्रिषक उपजाऊ भूमि में चले जाने को विवश किया । यानी का श्रमाव, वर्षा की

निरन्तर पड़ने वाले अकालों की किटनाइयों से संघर्ष करने वाली यहां की आबादी को मुक्त करने की सारी आशायें उत्तरी भाग पर, जिसमें घग्वर की तली का भाग भी है, केन्द्रित हैं। यह भाग २३०० वर्ग मील का है और सतलज से सींचा जाता है। यह इलाका भी १६वीं शताब्दी के आरम्भ में सारा का सारा वजर या और लुटेरों व डाकुओं का अड्डा था। ६० वर्ष पहले तक यहां कोई गांव नहीं था। रिएयां के भाटी लोगों ने इसके समस्त उत्तरी भाग को लूटा और इससे यह उजाड़ हो गया। यहां के पशुओं और मेडों की संख्या मिन्न-मिन्न वर्षों में चारे और पानी के काफी मात्रा में मिलने के अनुसार मिन्न रही है। निम्नलिखित आंकड़ों पर

१. ए. सी. बनर्जी-बही, पृ० १८१।

र. जार्ज थॉमस अपने सैनिक संस्मरणों में लिखता है ''जीवन के साधारण कामों और घरेलू खपत के लिये प्रत्येक परिवार वर्षा के पानी को एकत्रित करने के लिये एक कुएड बनाने का ध्यान रखता है इसके फलस्वरूप इस मूल्यवान वस्तु (पानी) का अभाव निवासियों को बहुधा विवश करता ह कि वे सारे परिवार के साथ अच्छी जगह में चले जायें।"

कमी और निर्देशों के न होने से यहां के लोग अपने आवश्यक अनाज के लिये अपने पड़ोसियों पर निर्भर होने को बाध्य हो गये हैं। खास इलाके, जो खेती के

एक दृष्टि डालने र	से यह तथ्य स्पष्ट हो जाएगाः—	
वर्ष	भेड़ें व बकरियां	बैल, गायें, भैंस आदि
१ महि	२,४६,२६४	२,२५,७४१
. 2 EE	३,३८ _, ७६३	४,३४,६६४
2=88	१,६३,३२ प	३८,७६६
3,800	१,४१,१ <i>८७</i>	४९,४९५
2508	२,६६,६२५	४न _, न७४
8502	४,५७,५१६	. ९,०६,५१६

कमी-कभी तो पानी की कमी और चारे के अभाव के कारण इस माग के कम से कम ७५ प्रतिशत पशुत्रों को बाहर ले जाना पड़ा। प्रत्येक अकाल के वर्ष के बाद प्रशासन को यहां के लोगों को ऋपनी जमीन जोतन के लिए काफी पशु जुटाने के लिए कठिनाई का सामना करना पड़ा। सूखे वर्षों में मेहनती ऊंटों को, जो कम पानी पर रह जाते हैं श्रीर मोटी से मोटी वनस्पति खा लेते है, मी दूसरी जगह जाना पडता है। अपने पत्रांक १३६० दिनांक २२-६-१ न ६६ में वीकानेर के पोलिटिकल एजेन्ट ने दरवार को लिखा कि बीकानेर से त्रावश्यकता से ऋधिक लोगों के चले जाने से पंजाब सरकार को बहुत ऋषिक ऋषुविधा हो गई । उसने सुमाब दिया कि दूसरी जगह जाने वाले इन लोगों पर किसी तरह की रोक लगाई जाये श्रीर बीकानर-मिटन्डा रेल्वे लाइन का मिट्टी का काम हाथ में लिया जाये । ऋपने पत्रांक १६२० दिनांक ३०-६-१८६६ में पोलिटिकल एजेन्ट ने पुनः लिखा कि गवर्नर जनरल के पजेन्ट के पास इस वात की निरन्तर शिकायतें आ रही हैं कि राजपूताना से उठ कर स्त्राने वाले लोग अंग्रेजी जिलों के सहायता कार्यों स्त्रीर पड़ोसी रियासतों में भीड़ मचा रहे हैं। अपने पत्रांक ६१८ दिनांक २८-३-१६०० में उसने दरवार से मांग की कि वे ऐसे लोगों को पंजाब से हटाकर उन्हें अपने-अपने गांवों को भेज दें। सी. एम. केन की सिरसा और फाजिलका तहसीलों की अन्तिम भू प्रवन्य रिपोर्ट में बताया गया है कि फाजिजका के लोग बीकानेर और सिरसा के अपने हजारों रिश्तेदारों की मदद करने में समर्थ थे । सन् १९११ में भी पंजाब के उप-राज्य-पाल ने गवर्नर जनरल के राजप्रताना रियासतों में एजेन्ट को लिखा कि राजप्रताना से हमेशा की तरह लोग पंजाव जाने शरू हो गये हैं। १८६६-१६०० के अकाल में कम से कम ३ लाख लोग वीकानेर छोड़कर पास के अंग्रेजी जिलों और रियासतों के भूखों मरने वाले निवासियों की संख्या बढ़ाने गये । सन् १६०१ की जनगणना

लिए कुछ ग्रधिक उपयुक्त हैं, भी इतना कम उत्पन्न करते हैं कि उससे किसान की मेहनत का भी पूरा फल नहीं मिलता । स्पष्ट हैं कि इसी से यहां के लोग खेती की ग्रपेचा पशु चराने के व्यवसाय को ज्यादा ग्रज्छा समस्तते हैं । बीकानेर के राठौड़ शासकों ने इस प्रकार का ऐसा ग्रातिश्य विहीन प्रदेश रक्ला कि बाहर के बहुत कम लोग यहां के धोरों में ग्राने ग्रीर इलाके की शान्ति मंग करने का साहस कर सके । इससे बाहरी हमलों से यह इलाका बहुत सुरचित रहा ग्रीर बीकानेर के शासक ग्रपने राज्य का स्वतन्त्रता से स्वयं निर्माण कर सके । इसका मतलब था स्वायन

बीकानेर रियासत की जन संख्या ४,५४,७२७ रह गई जनकि सन् १८६१ में यह

(रायस्थान राज्य पुरालेख विभाग, बीकानेर, में प्राप्त एक लेख के अंश से उद्भत)

१. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० १३५ ।

इम्पीरियल गजेटियर ऋॉफ इपिडया, माग ८, पृ० २१० ।

सन् १८६६ में कुल वर्षा पिरचमी भाग में १ ६ ६ इञ्च और पूर्वी भाग में २ २ १ इञ्च भी। वर्षा की अनिष्चितता बहुत अधिक है और आम तौर पर यह काफी अस्थिर, दूर दूर तक और ठीक ठीक होती है; पर ऐसा कभी २ होता है। कुओं से सिंचाई असम्भव है और खेती पूरी तरह अनिष्टिचत और कम होने वाली वर्षा पर निर्भर है। फसल तो वास्तव में और भी अधिक अनिष्टिचत है। इसलिये लोगों को भेड़ और पशु पालने का धन्धा अपनाना पड़ा है।

२. बीकानेर राज्य बाहरी हमलों से सुरिक्ति रहा। उत्तर की श्रीर से बीकानेर पर हमला करने वालों में भावलपुर या रिएया के भाटी लुटेरे थे। संगठित हमले दो बार किये गये, एक बार मिर्जा कामरां द्वारा श्रीर फिर जार्ज थॉमस द्वारा। ये दोनों ही श्राक्रमए कोई प्रभाव नहीं डाल सके श्रीर उनका श्रन्त श्रसफलता में हुश्रा। न तो मराठों ने श्रीर न पिएडारियों ने कभी यहां की शान्ति मंग की। दिल्ए से जोधपुर राज्य ने श्रवश्य श्राक्रमण किया श्रीर एक बार तो राव मालदेव के शासन काल में जोधपुर की सेना ने बीकानेर पर वास्तिवक श्रिधकार भी कर लिया था। इन हमलों के श्रितिरिक्त बीकानेर सुरिक्ति रहा श्रीर श्राम तौर पर इसकी भीगोलिक स्थित ने इसकी रक्ता की।

शासन जो उच्च संस्कृति के विकास और ग्रामंग् प्रेम के लिये उपयुक्त था।"

भूमिगत बनावट द्वारा उत्पन्न बाधा और बीकानेर राज्य की जल-वायु के कारण बाहर के लोगों में इस इलाके में आने का आकर्षण कभी पैदा न होता और बीकानेर का इतिहास सामान्यतः स्थानीय महत्व के मामलों तक सीमित रह कर घटनाहीन बातों का संग्रह होता लेकिन कुछ दूसरी ऐसी वातें थीं जिन्होंने इस अनाकर्षक भू-भाग को काफी महत्वपूर्ण बना दिया । इससे घटनाओं की शृंखला ने एक ऐसा मार्ग बनाया, जो यद्यपि कठिन था पर जिसने अन्त में बीकानेर राज्य के शासकों और दिल्ली के बादशाहों में राजनैतिक सम्बन्ध का नव-प्रभात दिखाया ।

वास्तव में इस प्रदेश की दिल्ली साम्राज्य के अरयधिक निकटता ने दिल्ली के शासकों के लिये यह अनिवार्य कर दिया कि वे अपने इतने निकट स्थित एक राज्य को सैनिक महत्व की हिष्ट से कम न सममें । र राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित दो दुर्जय दुगों, भटिएडा और मटनेर

- १. इस इलाके में रहने वाले लोगों को सुरचा की मावना मिली उसी का यह पिरिणाम था कि यहाँ सेठ साहूकार ख्रीर दूसरी न्यापार करने वाली जातियाँ समृद्ध हो सकीं, यद्यपि अन्य सभी दिध्यों से वीकानेर की वंजर मूिम समृद्ध का कोई अवसर नहीं दे पाई। वीकानेर के सेठ साहूकार जब समस्त मारत में न्यापार करते थे और अधिकांशतः राज्य से वाहर कलकत्ता और वस्वई जैसे दूर २ के स्थानों में निवास करते थे, वीकानेर में अपने धन को केवल इसिलये ही एकत्रित करके रखते थे क्योंकि यहां की प्राकृतिक बनावट ने सुरचा प्रदान कर रक्खी थी। इतना ही नहीं प्रकृति द्वारा प्रदत्त सुरचा ने साहित्यकारों को मी इस इलाके में अपने हस्तिलखित ग्रंथ लेकर ख्राने के लिये प्रेरित किया। यही कारण है कि बीकानेर राज्य में आज मी हजारों हस्तिलखित ग्रंथ मौजूद हैं। जगद्गुरू का प्रसिद्ध संग्रह आज भी बीकानेर के अनुप संस्कृत पुस्तकालय में उपलब्ध है।
- २. दिल्ली से बीकानेर राज्य की सीमा लगमग १९७ मील श्रीर मटनेर (हनुमानगढ़) से लगमग १९६ मील दूर है।
- इसिकन-पूर्व उद्भृत, पृ० ३६७ । मटनेर हनुमानगढ़ का पुराना नाम था । सन् १८०५ में यह मंगलवार के दिन महाराजा सूरतिसह जी द्वारा जीता गया ख्रतः इसका नाम हनुमानगढ़ रक्खा गया । इसका मटनेर नाम मूलतः इस पर मिट्टयों—मुसलमान मिट्टयों का अधिकार होने से पड़ा । मटनेर एक बहुत ही मजबूत ख्रीर अच्छी तरह किले वन्द गढ़ था जो सारे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध था ।

के कारण यहां का सैनिक महत्व ग्रीर भी बढ़ गया । कोई भी सैनिक शिक्त इन दोनों दुगों पर ग्रिधिकार किये बिना पूर्वी पंजाब पर ग्रिधिकार करने का दावा नहीं कर सकती थी।

इस प्रकार राठौड़ राज्य ने भटनेर श्रीर भटिंडा के चारों श्रोर एक ऐसे ब्यूह का निर्माण किया जिससे प्रभावित होकर दिल्ली के शासकों ने इस पर किसी प्रकार का श्रधिकार रखना चाहा श्रीर इसी भावना के कारण बीकानेर के शासकों श्रीर दिल्ली के बादशाहों में सम्बन्ध बना । श्रफगानों के विरुद्ध एक शिक्षशाली विरोध कायम करने की भावना ने मुगल बादशाहों को बोकानेर के राठौड़ों का सहयोग प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया ताकि वे श्रपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने का प्रयत्न कर सकें। इस प्रकार मुगल साम्राज्य की नींव केवल राजपूत योद्धाश्रों की सहायता से ही सुदृढ़ वन सकी।

- १. उत्तर पश्चिम से श्राने वाले प्रायः सभी हमलावर ितरसा के श्रास पास वाले इलाके को, जो सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध था, श्रिष्ठिकार में करने की भावना रखते थे। सुलतान मुहम्मद गौरी श्रोर उसके सेनापितयों के श्राक्रमण के समय में यह इलाका बहुत उल्लेखनीय वन गया। तबकाते—नासीरी में सरस्वती नामक जिस दुर्ग का उल्लेख है वह वास्तव में सरस्वती नदी, जो घग्चर भी कहलाती है, के पास में था। इसी इलाके के विल्कुल निकट भटनेर श्रीर भिटिण्डा के किले स्थित थे। इसका सैनिक महत्व इस बात में है कि इस इलाके को जीतने के बाद प्रत्येक हमलावर दिल्ली की श्रीर वढने के लिये इसे श्रपंना श्रह्डा बना लेता था।
- शाबर के सभी प्रयत्न अफगान मुजंग को केवल घायल ही कर सके और फल-स्वरूप हुमायूं ने अपना सिंहासन खो दिया तथा शेरशाह मारत में अफगान साम्राज्य स्थापित कर सका। पानीपंत की दूसरी लड़ाई में अकबर ने हेमू को हरा दिया था तो भी अफगान खतरा मुगल साम्राज्य के भाग्य पर इतनी गहरी काली छाया डाल रहा था कि मुगल बादशाहों को उनके विरुद्ध राजपूतों का सहयोग प्राप्त करने के लिये विवश होना पड़ा।
- ३. बादशाह बनने के तुरन्त वाद ही अकबर ने अफगानों के निकट खतरे को महसूस किया। साथ ही इस तथ्य को भी अनुभव किया कि राजस्थान के शासकों की सहायता और सहयोग के बिना वह सफलता से इसका मुकाबला नहीं कर सकता। इसिलिये उसने उन्हें एक दूसरे के विरुद्ध करने की नीति अपनाई। सन् १५६२ में भारमल से समम्मीता करके उसने कच्छवाहों की मित्रता प्राप्त की इससे राजस्थान के राजपूत शासकों में इतनी फूट पढ़ गई कि अकबर का साम्राज्य बढ़ाने के लिये वे आपस में ही एक दूसरे के विरुद्ध सन् १५६२ में मेड़ता में,

वीकानेर राज्य को महत्व देने का दूसरा कारण यह या कि इस इलाके में रहने वाले लोग योधेयों की भूमि में पले होने के कारण युद्ध के लिये ग्रावश्यक सभी गुणों से युक्त ये ग्रीर इसलिये दिल्ली की शाही सेना में भर्ती करने के लिये यह इलाका एक ग्रच्छा स्थान था। इतना ही नहीं इस इलाके में निवास करने वाली लड़ाकू जातियां खतरे का कारण वन सकती थीं ग्रीर पंजाब की शान्ति ग्रीर स्थिरता को भंग कर सकती थीं। इसके ग्रलावा हज जाने वाले तीर्थ यात्रियों का रास्ता भी इसी भाग में से होकर था।

निश्चय ही यह कैवल दिल्ली के बादशाहों को ही इच्छा नहीं थी कि वे बीकानेर के राजधराने के साथ सम्बन्ध जोड़ें विलक यह बीकानेर के शासकों की भी आवश्यकता थी। यद्यपि बीकानेर पर किसी बाहरी हमले का खतरा नहीं या पर वह आंतरिक विष्लव का शिकार था जो अधिकांशतः

सन् १४६३ में जोधपुर में, सन् १४६७-१४६ में चितीड़ में और सन् १४६६ में रणयम्मीर और कालिंजर में लड़े। उसकी कूटनीति इतनी सफल थी कि सन् १४७० में जब वह नागीर आया तो उसकी सवोंच सत्ता स्वीकार करने और इसकी कृपा पाने के लिये राजपूत राजा एक दूसरे से स्पद्धी करने लगे।

राव बीका और उसके उत्तराधिकारियों की विस्तारवादी नीति ने यहां पहले वसे हुए लोगों में काफो रोष उत्पन्न कर दिया था। इनमें सबसे महत्वपूर्ण उत्तर—पश्चिम के माटी और भटनेर के मही थे। जब राव बीका ने कोइमदेसर में एक किला बनाना चाहा तो माटियों ने इस विचार का विरोध किया और अन्त में लड़ने पर उत्तर आये। उनके निरंतर विरोध की सम्मावना से प्रमावित होकर राव बीका ने अन्त में बीकानेर में एक किला बनाने का निश्चय किया। मही भी जो माटियों से मुसलमान बन गये थे और जिनका भटनेर और उसके आस पास के इलाके पर अधिकार था, राव बीका द्वारा दिमत हुए। लेकिन इस इलाके ने कई बार अपनी सत्ता बदली और केवल सूरतिसह जी के शासन काल में ही मही अन्तिम रूप से पराजित हुए।

इस प्रकार के विष्तव का दूसरा कारण राव वीका के कुछ उत्तराधिकारियों का कमजोर शासन और उनकी अदूरदर्शी नीति थी जैसे कि करों में वृद्धि करना, विना सन्देह किये जागीर देना और फिर उन्हें वापिस ते लेना। इससे उनके अपने ही जागीरदारों में असन्तोष उत्पन्न हो गया जिन्हें कुछ मामलों में तो षड्यन्त्र करने और शासक की सत्ता के विरुद्ध ख़ुला विद्रोह करने का साहस किया।

भिट्टेगों ने जोहियों ये और इस इलाके के दूसरे देशी तत्वों की गैर कान्नी हरकतों के कारण उत्पन्न हो रहा था। बीका द्वारा इस इलाके की विजय और यहां के गणतां- त्रिक समूहों , जो वहां मिल कर बन गये थे और जिनका अपने र चेत्र पर अधिकार था, को अधीन कर लेने पर स्वामाविक था कि वे शोर मचाते और जब भी उनको अवसर मिलता धृणित कायों में लग कर शान्ति मंग करते और इस इलाके के प्रशासन को सुन्यवस्थित चालू रखना कठिन बनाते। अपने इलाके में अव्यवस्था फैलाने वाली इन शिक्तयों के विरुद्ध लड़ने के लिये बीकानेर के शासकों को बाहरी मदद लेनी पड़ी। आन्तरिक अव्यवस्था से भी अधिक दुर्माग्यपूर्ण जोधपुर राज्य को महत्वाकांचा सिद्ध हुई, जिसके शासकों ने बीकानेर पर कई हमले किये और यहां के शासक राव कल्याणमल को शेरशाह से सहायता प्राप्त करने के लिये विवश होना पड़ा। इस प्रकार जोधपुर राज्य के साथ पारस्परिक विनाशकारी युद्धों, आंतरिक विज्लव और सीमा पर मिट्टियों एवं स्वेच्छाचारी डाकुओं द्वारा उत्पन्न कण्टों से तंग आकर बीकानेर के शासकों ने दिल्जी के बादशाहों के साथ सम्बन्ध

इसके साथ ही राजदरवारों में चलने वाले षड्यन्त्र श्रीर सरकारी श्रिधिकारियों की श्रपना स्वार्थ सिद्ध करने की इच्छा भी थी चाहे इससे राजा श्रीर प्रजा को हानि ही हो ।

- १. बीकानेर की स्थापना से पूर्व बीकानेर के उत्तर पश्चिम का सारा इलाका जो जैसलमेर से आरम्म होकर पंजाब की सीमा तक जाता था, माटियों के अधिकार में था। ये दो श्रे िएयों में बंटे हुये थे। हिन्दू माटियों का जैसलमेर के नजदीक और पूगल के मू माग पर अधिकार था और मुसलमान माटियों का उत्तर में मटनेर के पास अधिकार था। ये मुसलमान माटी मटी कहलाते थे।
- २. पृ० १८ देखें।
- ये दूसरे देशी तत्व जागीरदार थे जिनमें अजीतपुरा, चूरू और मादरा के ठाकुर मुख्य थे।
- ४. ये गणतान्त्रिक समूह मुख्यतः जाटों के थे और निम्निलिखित जातियों से बने थे— १. गोदारा २. सारण ३. कस्वां ४. वेणीवाल ५. पूनिया ६. सिहागा ७. सोहुआ।
- प्र. राव कल्याणमल के शासनकाल तक बीकानेर के विरुद्ध जोधपुर के दो त्राक्रमण हो चुके थे और उसके बाद सुजानसिंह जोरावरसिंह और गजसिंह के शासन के समय प्र और हमले किये गये ।

जोड़ा। यह संबंध अकबर की हिन्दुओं के प्रति संहिष्णुता की नीति से और मी सरल तथा मजबूत बन गया।

दिल्ली के बिल्कुल निकट होने के कारण बीकानेर राज्य का सैनिक महत्व तो था ही, इसके श्रितिक इसका व्यापारिक महत्व भी था। राजगढ़ एक बहुत बड़ा व्यापारिक स्थान था श्रीर उत्तरी भारत के सभी भागों से काफिले यहां श्राकर ठहरते थे। पंजाब श्रीर काश्मीर की चीजें हांसी श्रीर हिसार होकर सीधी यहां श्रातो थीं श्रीर पूर्वी भागों से दिल्ली, रेवाड़ी श्रीर दादरी होते हुये यहां रेशम, बिढ़्या कपड़ा, नील, चीनी, लोहा, तम्बाक् श्रादि श्रातो थी। हाड़ोती श्रीर मालवा की तरफ से श्रमीम श्राता था जो राजपृताना की सभी रियासतों को जाता था। सिंघ घाटी के प्रसिद्ध व्यापारिक स्थानों शिकारपुर श्रीर मुलतान से खजूर, गेहूँ चावल, लुँगी (श्रीरतों के लिये रेशमी घाघरा) श्रीर फल श्राते थे। मारवाड़ में पाली से विदेशों से समुद्दी रास्ते श्राया हुश्रा श्रायात का माल, जैसे मसाले दवाइयां, नारियल श्राता था।

यद्यपि इस व्यापार का कुछ माल तो स्थानीय लोगों की आवश्यकता को पूरा करता था पर उसका अधिकांश माग यहां से दूसरे स्थानों पर चला जाता था और इससे काफी आमदनी होती थी। ऊन, व्यापार और उत्पादन के लिये एक मुख्य सामग्री थी। इस इलाके के लोग लोहे के काम में भी निपुण थे और उनकी दुकानें राजधानी तथा दूसरे बड़े नगरों में थीं जहां उचकोटि की तलवार, ताले, कटार भाले आदि बनाये जाते थे। तलवारों की बहुत मांग

१. सिमय— आवसफोर्ड हिस्ट्री आफ इन्डिया, पृ० २६६--२७०। अकबर की हिन्दू नीति सिहण्युता की थी जो उन्हें अपने धर्म को मानने की समान स्वतन्त्रता प्रदान करती थी। उसने जिजया हटा दिया और नियुक्ति या मनसब देने में वह हिन्दू मुसलमानों में भेद नहीं रसता था। यद्यपि कुछ लोगों का मत है कि उसकी यह नीति राजनैतिक योग्यता का परिग्राम थी पर इस मत का समर्थन करने वाला कोई प्रमाण नहीं है। इसके विपरीत हम अबुल फजल का अधिकृत हवाला दे सकते है कि अकबर का समस्त जीवन सत्य की खोज के लिये था और उसका वास्तव में विश्वास था कि प्रत्येक धर्म में सत्य है।

ए. सी. वनर्जी--पूर्व उद्भृत, पृ १८३-१८४ ।
 टॉड--पूर्व उद्भृत, पृ०११४४-११४४ ।
 असैकिन--पूर्व उद्भृत, पृ० १४१-२४२ ।

यी ग्रीर वे भारत के विभिन्न भागों में भेजी जाती थीं 1

बीकानेर के राजगढ़ को उत्तर की ऋोर से जोड़ने वाले मुख्य व्यापारिक मार्ग दिल्ली, भिवानी और हिसार होकर आते थे। राजगढ़ से तीन मुख्य मार्ग जाते थे। एक रीगी होकर बीकानेर जाता थाः दूसरा चुरू, रतनगढ़ श्रीर सुजानगढ़ होकर फलौदी, नागौर, जोधपुर ऋोर पाली जाता या ऋोर तीसरा प्राल हो कर भावलपुर जाता था। इनके स्रलावा दूसरे भी मार्ग थे स्रौर व्यापारी स्रपने माल को ले जाने के लिये अपने अपर लगायी गई शतों के अनुसार एक अथवा दूसरे मार्ग को ज्यादा पसन्द करते थे। उदाहरण के लिये व्यापारी मिवानी स्रोर मारवाड़ के वीच शेखावटी मार्ग की अपेद्धा बीकानेर मार्ग को अधिक पसन्द करते थे क्योंकि शेखावटा मार्ग पर अनेक ठाकुरों द्वारा जकात ली जाती शी जबिक बीकानेर मार्ग में जकात केवल एक बार राजगढ़ में ही ली जाती यो। इसके अतिरिक्त यह इलाका दूसरी जगहों के व्यापारिक मागों से भी जुड़ा हुआ था, यदापि अब जैसलमेर के व्यापारिक केन्द्र न रहने से ये मार्ग विस्मृत हो गये हैं । विभिन्न मार्ग कई भागों में तय किये जाते थे जो कि काफिलों के ठहरने के स्थान थे ख्रोर उनकी दूरी, पानी, भोजन ऋौर चारे ऋदि की सुविवा ऋौं पर निर्भर रहते हुये, ३ से २० मील तक होती थी। उदाहरण के लिये राजगढ़ से ऋमरकोट होता हुआ हैदराबाद सिन्ध का मार्ग २६ भागों में पूरा किया जाता था। इस व्यापारिक महत्व के इलाके के कारण भी दिल्ली के अफगान अोर मुगत शासक दोनों इस राज्य की छोर श्राकर्षित हुए बिना न रह सके।

ड. पाडलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० १५७-१५८।

परिशिष्ट १—कैप्टन बर्टन की सन् १८७२-१८७३ की रिपोर्ट से बीकानेर की जकात और व्यापार पर तैयार की गई टिप्पिएयाँ।

मुख्य मार्गों की दूरी पाउलेंट ने अपने गजेटियर में पूर्व १०५-१०६ पर इस प्रकार दी है--

बीकानेर से अजमेर		१५० मील
बीकानेर से मावलपुर	-	१५० मील
वीकानेर से मिवानी		. १८० मीलं
वीकानेर से सिरसा	-	१६० मील

१. प. सी. बनजीं—पूर्व उद्धृत, पृ०ारम्४ । टॉड—पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ११४४ । ऋसैकिन—पूर्व उद्धृत, पृ० ३४२ ।

इस इलाके का देश के दूसरे मार्गों से सामान्य रूप से तथा केन्द्रीय सत्ता से विशेष रूप में जो सम्बन्ध बना वह दिल्लों के मुगल और अंग्रेज शासकों तक सीमित न रहा। मुसलमानों के आने से पूर्व भी यहाँ के लोगों ने अपने युग की राजनीति में जो महत्वपूर्ण भाग अदा किया उससे इस चेत्र का सैनिक महत्व स्पष्ट रूप से प्रकट हो गया। इस इलाके की ऐतिहासिकता अतीत में भारतीय इतिहास के आरम्भिक युग और इस माग में स्थित सरस्वती घाटी जो हड़प्पा संस्कृति की पूर्वों सीमा थी, के प्राग्ऐतिहासिक युग से जोड़ी जा सकती है। अब यह माना जाता हैं कि "यदि हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो हड़प्पा साम्राज्य की दो राजधानियाँ थीं-- एक उत्तर में और दूसरी दिज्ञ में तो गंगानगर जिले में स्थित कालीवंगा पूर्व में तीसरी राजधानी थी।"

महाभारत काल में यह प्रदेश कुरू राज्य का एक माग या। यह कहना बहुत कठिन है कि मौर्य, प्रीक, गुत और प्रतिहार अधिकार काल में यहाँ कौन शासन कर रहा या लेकिन बीकानेर के वर्तमान प्रदेश का मौर्य, शुर्ग और कुषाण कालों में जो गौरव रहा हैं वह कान्यों और शिलालेखों के प्रमाणों से सिद्ध किया जा सकता है। इस क्त्र पर एक बार यौद्ध यों का भी अधिकार रहा जिन्होंने शकों और कुषाणों के विरुद्ध सफलता से लड़ कर न केवल अपनी, बल्कि शेप भारत की भी स्वतन्त्रता पुनः प्राप्त की। डा॰ टैस्सीटोरी ने सोचा कि घग्धर के त्रेत्र के आरम्भिक मिट्टी के टीलों को यौधेयों से जोड़ा जा सकता

१. वा॰ दशस्य शर्मा--विभिन्न युगों में राजस्यान, मूमिका पृ० १-४।

२. बीकानेर के राठीड़ राज्य के त्तेत्र का प्राचीन नाम "जांगलदेश" था। इसके उत्तर में कुछ श्रीर मद्र थे। यही कारण है कि महामारत में "जांगल" शब्द कई बार श्रकेला श्रीर कई बार कुछ श्रीर मद्र के साथ श्राया है। महामारत में हमें कुछ पांचाल माद्रेय जांगल (कुछपांचालः माद्रेय जांगलाः) श्रीर कुछ जांगल (कुछ जांगलाः) शब्द मिलते हैं जिसका तारपर्य है कि पांचाल कुछ से श्रीर जांगल मद्र से जुड़ा हुआ था। इस सम्बन्ध में महामारत के श्लोकों के निम्नलिखित श्रंश इस तथ्य की प्रमाणित करेंगे।

[&]quot;कच्छा गोपालकचारच जांगलाः कुरूवर्णकाः"

[—]महामारत, मीष्म पर्व, अध्याय ६, श्लोक ५६। ''तत्रेमे कुरू पाश्चालाः शाल्या माद्रेय जांगलाः''

⁻⁻महामारत, मीष्म पर्व, अष्याय ६, रलोक ३६। ''तीर्थयात्रामनुकामन्त्राप्तोरिम कुरू जांगलान्'

⁻⁻⁻महामारत, वन पर्व, ऋष्याय १०, श्लोक १९।

है, लेकिन अब यह जात हो जुका है कि उनमें बहुत से ग्रीर भी ग्रधिक प्राचीन हैं। स्रतगढ़, रंगमहल, ग्रीर बडोपल के इलाके में बीद अवशेष मिले हैं। इस इलाके में खुदाई से पत्थर जैसी मूर्तियां मिली हैं जिनसे संकेत मिलता है कि यहां एक उन्नत सभ्यता थी। ये मूर्तियां बाहरी ग्राकार में भारत यूनानी तथा धार्मिक परम्परा में शैव ग्रीर वैष्णव मूर्तियों से मिलती जुलती हैं। गुप्तकाल में इस स्नेत्र ने गुप्त संस्कृति के सर्व श्रेष्ठ रूप को ग्रपनाया ग्रीर कला साहित्य तथा विज्ञान को एक महत्वपूर्ण देन दी। गुप्तकाल के बाद में यहां के कलाकार उच्चकोटि की परम्परा से प्रभावित होकर श्रमुपम सीन्दर्थ की मूर्तियाँ बनाते

ए० इह-७० ।

मरूभारती (पिलानी) में प्रकाशित 'धाजस्थान में गण्राज्यों का युग" तथा राज-स्थान में प्रकाशित 'राजस्थान की संस्कृति' शीर्धक डा० दशरथ शर्मा के लेख देखें। "योधिय जिनका गएतन्त्र सरस्वती के कांठे में था, सम्भवतः राजस्थान पश्चिमी उत्तर प्रदेश श्रीर दिल्ला पूर्वी पंजाव की गरातन्त्रात्मक जातियां में सवसे शक्तिशाली थी। जैन कथात्रों में रोहितक को यौधयों की राजधानी चताया गया है लेकिन उनकी एक से ऋधिक शाखा छोर एक से ऋधिक राज-धानी होना सम्मंत्र है। सतलज नदी के दोनों श्रोर का प्रदेश और पुराने भावलपुर राज्य की सीमात्रों पर स्थित जोहिया चाड़ नाम का भू भाग त्राज भी जोहिया बाड़ या जोहिया अथवा योधयों की भूमि कहलाता है। ईसा की दूसरी शताब्दी में योधयों का शिक्षशाली शासक रूद्रदामन के साथ संघर्ष हुआ। यद्यपि उसने उनको पराजित कर दिया फिर भी उनके गौरव के कारण उनका ऋषिकार में न होने योग्य कहलाना वह सहन नहीं कर सका । फलस्वरूप समी क्तियों में उन्हें वीर की उपाधि से विभूषित करके उल्लेख किया गया। लुधियाना से प्राप्त उनकी मिट्टी कीं एक मोहर में भी यही भाव व्यक्त किया गया है जिसमें लिखा है "योधेया नाम जय मंत्र धारणमा अर्थात् विजय मम्त्र को अधिकार में रखने वाले योधयों की मोहर। अनेक विजयों ने ही उन्हें इतना गर्वीला और विश्वासी वनाया होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि युद्ध उनका व्यवसाय था। देव सेनापित कुमार कार्तिकेय उनके इष्टदेव थे ऋौर योद्धेय राज्य के सर्वोच्च शासक माने जाते थे। जैन कथाओं में चर्गडमारी उनकी इंग्ट देवी कही गई है और वह सुत्रहान्यु या कुमार से भी ऋषिक रक्त को पसंद करती थी"

--डा॰ दशरथ शर्मा, मरुमारती, भाग ८, ऋङ्क ३, पृ॰ ३-६ ऋौर 'विमिन्न युगों में राजस्थान' में इसका ऋ ग्रेजी ऋनुवाद । थें। पल्लू गांव के निकट श्रीर प्राप्त बीकानेर के राजकीय संग्रहालय तथा विल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में प्रदर्शित जैन सरस्वती की प्रतिमाश्रों से यह तथ्य प्रमाणित हो जाता है। "

कन्नोज के शासक हर्ष के समय में इस राज्य के दिल्गी राज्य के संबंध में हमें कुछ स्चना मिलती है। डा॰ गोएट्ज के अनुसार चीनी यात्री ह नचांग द्वारा वर्णित स्रोच-स्रली प्रदेश बीकानेर की हालत से विल्कुल मिलता जुलता है। वाद की शताब्दी के बारे में हम प्रायः कुछ नहीं जानते। कहा जाता है .. ्कि पूगल के राजा का सिंहासन³ गजनी से लाया गया या। यह ब्राव भी पूगल के राव के अधिकार में है। यद्यपि यह काफी पुराना है तो भी गननी काल से अधिक पुराना नहीं हो सकता । देवी की छोटी मूर्ति है जो एक प्रतिरूप है श्रीर जो लगमग ८०० वर्ष पूर्व जैसलमेर से लाई गई बताई जाती है, ग्राधिक से ग्राधिक १४वीं शताब्दी की हो सकती है। कोलायत भादरा श्रीर मोरखाना की बारहवीं शताब्दी की तथा रासीसर, कॅबलीसर श्रीर छापर की तेहरवीं शताब्दी की देव-लियां ग्रद्ध वर्वेर स्तर से ग्रंकित हैं। केवल उत्तरी भाग में कुछ सुन्दर हिन्दू श्रीर जैन मूर्तियों के प्रमाण मिलते हैं श्रीर ऐसा लगता है कि वे मध्य राज-पूताना से वहां लाई गयी हैं । १५वीं ग्रीर १६वीं शताब्दी में जाकर ही हमें संभवतः गुजरात से प्रभावित पुनर्जागरण के संकेत, एक विनम्र माप दएड पर मिलते हैं। ४ श्री लच्मीनायजी के मन्दिर के पास बीकाजी की टेकरी श्रीर पूगल के पुराने किले छोटे श्रोर मिट्टी की कच्ची ईटों से बने हुए हैं। यह भी संदिग्ध है कि नागऐचीजी की ग्रण्टादश भुजा तथा हिरएयगर्भ एवं श्री लद्मीनाथ जी की मृर्तियां १५वीं शताब्दी से पूर्व की हैं। यद्यपि कन्नोज के प्रसिद्ध सिंहासन के

'राजस्थान-भारती' भाग १, अंक २-३, जुलाई-अक्टूबरं १६४६, पृ० ३। डा. एच. गोएट्ज--'बीकानेर के कला इतिहास की रूप रेखा' [आउट लाइन आफ एन आर्ट हिस्ट्री आफ बीकानेर]

ढा॰ दशरथ शर्मा—'राजस्थान : एक सिम्पोनियम' रानस्थान सरकार के जनसंपर्क विभाग द्वारा प्रकाशित ।

२. वही ।

यह सिंहासन अब भी पूगल के राव के अधिकार में हैं।

४. मन्दिर में पास पास दो मूर्तियाँ हैं-एक बड़ी और एक छोटी।

राजस्थान--मारती, भाग १, अंक २-३, जुलाई-अक्टूबर १६४६, पृ० ४ ।

सबसे पूर्व ग्रालंकृत भाग राव बीका के समय से पहले के हैं पर ग्राधिक से ग्राधिक यह कहा जा सकता है कि इस सिंहासन के कुछ काष्ट फलक सम्भवतः करनीज़ से ग्राये हों। कोलायत श्रीर कोडमदेसर के १५वों शताब्दी के स्मारक प्रस्तरों में केवल एक श्राकृति दिखाई गई है जो बहुत श्रप्रीढ़, छोटी श्रीर ठोस है। लेकिन इसमें शरीर का वास्तविक विस्तार दिखाया गया है जो पहले की देवलियों में नहीं मिलता। इस शताब्दी के श्रन्त की देवलियों में काफी कलात्मक सुधार मिलता है ग्रीर कुछ त्राकृतियों के महत्वपूर्ण हश्य सजीव मुद्राश्रों में हैं यद्यपि रूप रेखा अत्र भी परंपरागत, परिमाण, स्वच्छन्द ग्रीर संत्रेप की श्रपेत्ता विस्तार का भाव लिये हुये है। इन सबसे यह निष्कर्ष निकलता है कि राठोड़ों के श्राने से पूर्व भी इस द्वेत्र की श्रपनी स्वयं की सांस्कृतिक संपत्ति थी।

राठौड़ों के ग्राने से पूर्व। की शताब्दियों में यह इलाका जो बाद में बीकानेर राज्य के नाम से पुकारा जाने लगा ऐसी जातियों से बसा हुन्ना ग्रौर शासित था जो यहीं पैदा हुई थीं। यह बहुत से मागों में विमाजित था ग्रौर इनमें से कुछ जोहियों, चौहानों, साखलां, परमारों, माटियों ग्रौर जाटों द्वारा शासित थे। यह जात करना कठिन है कि उनका किस २ प्रदेश पर ग्राधिकार था ग्रौर वे किस २ समय दूसरों से उन्नत थे।

जोहिये प्रसिद्ध यौद्धे यों, जिनकी उत्पत्ति प्राचीन च्रित्रों में दूं ही जा सकती है, के वंशज थे। लगभग सभी शिलालेखां में उनका ऐसा ही वर्णन मिलता है। यौद्धे य एक वीर जाति थी ग्रीर च्रित्रयों में उनका महत्वपूर्ण स्थान था। यौद्धे य शब्द युद्ध से बना है जिसका ग्रथ है लड़ाई। प्रसिद्ध संस्कृत वैया-करण पाणिनी ने, जो मौर्य साम्राज्य की स्थापना से कुछ शताब्दी पूर्व हो चुका था, ग्रपनी रचना श्रष्टाश्यायी में योद्धे य जाति का भी उल्लेख किया है। यौद्धे य ग्रारम्भ में पंजाब के थे। सृतपूर्व भावलपुर रियासत के पास सतल्ज नदी के किनारों के दोनां ग्रोर स्थित प्रदेश मूलतः इसलिये जोहिया बाड़ कहलाता था क्योंकि यहां जोहिये बसे हुये थे। ग्राज भी जोहिया राजपूत काफी संख्या में हिसार (पूर्वी पंजाब) श्रीर मांटगुमरी (पश्चिमी पाकिस्तान) के जिलों में बसे हुये मिलते हैं। प्राचीन काल में ये लोग स्वतन्त्र समूह के रूप में रहते थे ग्रीर समूह का नेता गणतन्त्र का शासक या मुख्य सेनापित माना जाता था। गिरनार में स्द्रदामन के शिलालेख से पता चलता है कि उसने यौद्धे यों को, जो उस

१. राजस्थान भारती, भाग १, ऋंक २-३, जुलाई-ऋक्टूबर, १६४६, पृ० ५।

२. श्रोमा--पूर्व उड़ृत, प्रथम खंड, प० ६६।

संमय योद्धाशों के रूप में जाने जाते थे, काफी संख्या में मारा। स्ट्रदामन के उपरान्त समुद्रगुप्त ने उन्हें श्रयने श्रधीन किया। धीरे २ वे पंजाब के श्रयने निवास से राजपूताना चले गये। वे हिन्दू देवताश्रों के मुख्य सेनापित कुमार कार्तिकेय की पूजा करते थे। उनके सिक्कां के एक श्रोर कुमार कार्तिकेय की परमुखी मूर्ति श्रीर दूसरी श्रोर उनके मुख्य सेनापित का नाम होता था। धीरे २ ये जोहिये मुसलमान बन गये श्रीर श्राजकल वीकानेर त्रेत्र में पाये जाने वाले श्रधिकांश जोहिये मुसलमान हैं। १६वीं शताब्दी में जब राव बीका मारवाड़ से जांगलू की श्रोर बढ़ा तो उनको उनके विरद्ध निरन्तर युद्ध करना पड़ा। उन्होंने भी उनकी बढ़ती हुई शिक्त श्रीर प्रभाव को श्रानुभव करके श्रन्त में उन्हें श्रयना स्त्रामी खीकार कर लिया।

चौहान ऋहिच्छत्रपुर के थे। यह ऋाजकल नागौर के नाम से पुकारा जाता है। बाद में वे वहां से सांभर की छोर ऋागे वढ़ गये जो बाद में उनकी राजधानी वन गईं। सांभर के छास पास का च्लेत्र उस समय सपाद देश

जैम ग्रंथों में जांगल देश की राजधानी का नाम श्रहिच्छत्रपुर लिखा है-— यति ज्ञानचन्द्र मण्डल, मेत्राङ् का संग्रह।

एक अहिच्छत्रपुर सिन्घ में भी या (भैरोंमत्ती का शिलालेख) (एपिग्राफीका इन्डिका माग ३, पृ० २३५) वम्बई गजेटियर प्रथम खण्ड माग २, पृ• ५६० की पाद टिप्पणी भी देखें ।

इं. डा॰ श्रोम्मा ने जांगल देश की राजधानी श्रहिच्छत्रपुर को ही नागीर मानने का एक कारण दिया है। उनके श्रनुसार नागीर नागपुर शब्द का विगड़ा हुआ़ रूप है जिसका श्रर्थ है नागों का नगर। श्रहिच्छत्रपुर का तात्पर्य है "नाग है छत्र जिस नगर का" नाग और श्रिह दोनों शब्दों का श्रर्थ सांप है उन्होंने श्रपने तर्क की पुष्टि में मागवत श्रीर महामारत के उदाहरण उद्धृत किये हैं। दूसरे सोमेश्वर के फागुन बदी तीज सम्वत् १२२६ के विजोलिया शिलालेख में श्रहिच्छत्रपुर के शासक को चौहान लिखा है:--

निप्र श्रीनत्सगोत्रे मूदहिछत्र पुरे पुरा । सामंतीनंत सामन्तः पूर्शतल्ले नृपस्ततः ॥ रलोक १२

१. श्रोभा-पूर्व उद्भृत, प्रथम खराड, पृ० ६६-७०।

२. मारत में अनेक अहिच्छत्रपुर रहे हैं। होनचांग ने अपनी पुस्तक "सी-यु-की" में उत्तर पांचाल की राजधानी का नाम अहिच्छत्रपुर लिखा है।— बील, बुद्धिस्ट रेकार्डस् ऑफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड, माग १, पृ० २००।

कहलाता था। वीकानेर दोत्र में प्राप्त शिलालेखों ते विदित होता है कि चौहान इस इलाके में १२वीं शताब्दी में ही बस गये थे। १३वीं शताब्दी में प्रिस्ट चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ ने दिल्ली, हांसी श्रौर हिसार पर श्रिष्ठकार कर लिया था। सन् १६३२ में हनुमानगढ़ के पास चौहान शासक अजयराज का एक तांवे का सिक्का मिला जिस पर उसकी रानी सोमलदेवी का नाम श्रंकित भा। बीकानेर राज्य में बहुत से चौहान सिक्के पाये गये हैं। अतः यह सम्भव है कि चौहन साम्राज्य इस इलाके तक फैला हुआ रहा हो।

छापर और द्रोणपुर के पास का प्रदेश मोहिलवाटो के नाम से प्रसिद्ध था और मोहिल चौहानों की ही एक शाखा थी। ने एसी लिखता है कि मोहिलों ने इस इलाके में वसने वाले वगिहिया राजपूतों को हराया जिन्होंने पहले द्रोणपुर के श्रासपास के इलाके को शिशुपाल के वंशजों, जो डाहिलये कहलाते थे, से छीना था। रासीसर के एक शिलालेख में जिसमें विक्रमिंस चौहान की मृत्यु जेठ वदी अमावस सम्वत् १२८८ को हुई लिखा है, प्रमाणित करता है कि मोहिल चौहान देशनोक के पास रासीसर तक शासन करते थे। कहा जाता है कि रासीसर गांव सांखला रायसिंह ने वसाया था अतः यह सम्भव है कि किसी समय सांखलों (परमारों) ने उनके इलाके के एक भाग को जीतकर अपने साथ मिला लिया हो। यह एक विदित तथ्य है कि बीकानेर का दिल्ला पूर्वी भाग और लाडनू का परगना कभी मोहिलों के अधीन थे। र राठौड़ और मोहिल आपस में शत्रु थे। इसका मूल कारण राव जोधा द्वारा मोहिल चौहान अजीतिसंह का मारा जाना था। दोनों में अनेक युद्ध हुये और बाद में जब आंत-रिक भगड़ों से मोहिल कमजोर हो गये तो राव जोधा ने उन पर आक्रमण किया और उनके समस्त प्रदेश पर अधिकार कर लिया। लेकिन मोहिलों ने हिसार

इसी प्रकार पृथ्वीराज विजय महाकाव्य में लिखा है कि वासुदेव शिकार खेलने को गये और उसे शाकम्बर नामक एक भील मिली। इसके आधार पर यह प्रमाणित किया जा सकता है कि श्रहिच्छत्रपुर सांमर के बिल्कुल निकट था और इस प्रकार यह केवल नागौर से ही मिलता जुलता है।

- २. श्रोभा-- पूर्व उड़्त, प्रथम सन्ड, पृं. ७० ।
- २. मुहणोत नैणसी--मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग १, पृ. १८६-६६ ।
- ३. विक्रमसिंह की देवली पर जेठ बदी अमावस सम्वत् १२ मन का रोसीसर का शिलालेख ।
- ४. श्रोमा--पूर्व उद्भृत, प्रथम खण्ड, १०७०-७१।

में तैनात मुस्लिम स्वेदार सारंगलां की सहायता से पुनः इस पर कब्जा कर लिया । ग्रन्त में राव बीका ने उन पर ग्राकमण करके उन्हें हरा दिया ग्रौर उनका प्रदेश ग्रपने भाई बीदा को दे दिया ।

विक्रम सं॰ १३८१ के एक शिलालेख में सांखला परमारों को शंखकुल कहा गया है। 3नकी एक शाखा जीवपुर इलाके में रू ए में रहती थी ग्रीर वे राणा कहलाते थे। १२ शताब्दी के ग्रास पास महिपाल सांखला का पुत्र रायसिंह जांगलू के इलाके में बस गया। रासीसर गांव में प्राप्त एक देवली पर जेट बदी स्रमावस सम्वत १२२८ का जो शिलालेख है उससे स्पष्ट है कि सोखलों का वास्तव में जांमलू पर ऋषिकार था। उ यह सम्भव है कि जांगलू पर सांखलों के अधिकार से पूर्व यह प्रदेश चौहानों के अधीन रहा हो और समवतः रायसी ने लाखन चौहान के पुत्र विक्रमसिंह को मार कर इस इलाके पर कब्जा किया हो। रायसी के बाद उसका पुत्र अर्णाखसी जांगलू का स्वामी बना और उसने अपने नाम से अगुखीसर गांव वसाया। अगुखसी का पुत्र खींवसी और फिर खीवसी का पुत्र कुमरसी वहां के स्वामी वने । कुमरसी के बाद क्रमशः राजसी, मूं जा ऊदा, पुन्यपाल श्रीर माणकपाल उत्तराधिकारी हुये। माणकपाल का उत्तराधिकारी नापा हुत्रा। उसके समय में इस इलाके पर बिलोचियों के कई बार हमले हुये इससे सांखले कमजोर हो गये। तव नापा जोघपुर चला गया और राव जोघा के दरबार में रहा। जब उसने राव बीका को एक नये राज्य की स्थापना के लिए तत्पर देखा तो उसने राव बीका को जांगलू जीतने की सलाह दो । वह इस अभियान में उनके साथ आया और राव वीका का बिश्वासपात्र बन गया।

बीकानेर राज्य की स्थापना से पूर्व जैसलमेर की सीमा से पंजाब तक फैला हुआ बीकानेर का उत्तरी पश्चिमी भाग माटियों के अधिकार में या। ये लोग डाकेजनी, मारकाट और लूटपाट की गैर कान्नी प्रवृतियों में लगे हुये थे। ये दो समूह में बंटे हुए थे। जैसलमेर की सीमा के पास पूराल के इलाके में भाटी राजपूत थे और भटनेर के आसपास के त्रेत्र में भट्टी मुसलमान

श्रीम्ता--वही, माग १, पृ. ७१ ।
 सुहर्णोत नैयासी-पूर्व उद्भृत, माग १, पृ० १६५-६६ ।

२. सम्वत् १३८१ का रू ए का शिलालेख।

जेठ बदी अमावस सम्बत् १२ पन का रासीसर का शिलालेख ।

४. श्रीभा-पूर्व उद्धृत, प्रथम सन्ड, षृ. ७१ । नैगासी-पूर्व उद्धृत, माग १, षृ. २३६-२४• ।

थे। राव बीका ने जांगलू पर अधिकार करने के समय प्राल का माटी सरदार राव शेखा मुसलमानों द्वारा पकड़ लिया गया। राव शेखा की पत्नी ने राव बीका से सहायता की प्रार्थना की। राव बीका ने राव शेखा को कैद से छुड़ाया जिस पर शेखा की पत्नी का विवाह राव बीका से हो गया। लेकिन बाद में जब राव बीका ने कोडमदेसर में एक किला बनाने का निश्चय किया तो वे डर गये। जब वहां किला न बनाने की उनकी प्रार्थना पर बीका ने ध्यान नहीं दिया तो उन्होंने शेखा से सहायता मांगी और राव बीका से युद्ध किया। माटियों से निरन्तर मगड़ा होने की सम्मावना देख राव बीका बीकानेर की ओर आ गया जहां उसने एक किला बनवाया। अन्त में राव शेखा ने राव बीका की अधीनता स्वीकार कर ली और पूगल बीकानेर के राठौड़ राज्य की एक जागीर बन गया। बीका को भटनेर के मिट्टियों से भी लड़ना पड़ा। भटनेर दिल्ली के बिल्कुल निकट होने के कारण समय समय पर मिन्न २ लोगों के अधिकार में रहा और केवल मुगल साम्राज्य के पतन के उपरान्त ही यह अन्त में बीकानेर के शासकों के अधिकार में आया।

बीकानेर के स्त्रासपास बहुत सा इलाका जाटों के स्त्रिधिकार में था। केन्द्रीय सत्ता ने उनकी स्त्रोर कभी ध्यान नहीं दिया स्तरः वे पूर्ण स्वतन्त्रता का उपभोग करते थे। जाटों की यहां कई जातियां थी स्त्रीर प्रत्येक का स्त्रपना प्रदेश था। अपर वे बहुधा स्त्रापस में लड़ते रहते थे। राव वीका ने सारण

सिंढायच दयाल दास—दयाल दास श ख्यात, माग २, पृ. ४ ।
मुंशी देवी प्रसाद—राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ. ६-७ ।
कविराजा श्यामलदास— वीर विनोद, माग २, पृ. ४७ ।
पाउलेट—पूर्व उद्भृत, पृ. २-३ ।
जयसोम— कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनकम्काव्यम, श्लोक १२६ ।
इस हस्तलिखित प्रथ में बीका की पत्नी का नाम रंगदेवी लिखा है ।

दयालदास--पूर्व उद्धृत, माग २, प्. ४-६ ।

- मुंशी देवी प्रसाद— राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ. ५-१ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ३ । नैससी लिखता है कि जब बीकानेर का किला बन गया तो जैसलमेर के शासक के एक छोटे पुत्र कालीकरण ने बीकानेर पर त्राक्रमस किया ऋौर घेरे के समय लढ़ता हुआ मारा गया। लेकिन नैससी की यह बात सत्य नहीं लगती क्योंकि कालीकरस एक पूर्व युद्ध में मारा गया था।
- दयालदास के अनुसार (पूर्व उद्धृत, माग २, पृ. ७) निम्निलि सित सात प्रदेश जाटों के अधिकार में थे—

जाटों के विरुद्ध गोदारों का पत्त लिया और पूला को इरा दिया। अन्त में जाटों ने राव बीका की अधीनता स्वीकार कर ली और वह अपनी विजयों को स्थिर कर सका।

- (१) गोदारा पांडू के अधिकार में लाघड़िया और शेखसर,
- (२) सारण पूला के श्रिधकार में माडंग,
- (३) कवरपाल के अधिकार में सीधमुख,
- (४) वैणीवाल रायसाल के ऋषिकार में रायसलाणा,
- (५) पूनिया काहना के अधिकार में तूं घी,
- (६) सिहांगां चोखा के अधिकार में सुंई और
- (७) सोहुआ अमरा के अधिकार में धानसी ।
- दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ. ७-११ |
 नैएसी-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ. २०१ से २०३ ।
 देवीप्रसाद- राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ. ११-१८ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ४-६ ।
 बीठू सूजा- राव जैतसी रो छन्द, संख्या ४२ ।

ऋध्याव १

बीकानेर के राठौड़ राज्य की उत्पत्ति और स्थापना

१५वीं शताब्दी के आरम्भ में बीकानेर के श्रसत्कारी रेगिस्तान में श्राकर वसने वाले राठौड़ वीर थे श्रीर उन्हें श्रपने विजय के श्रिधिकार में श्रदूट विश्वास था। बीकानेर के राठौड़ राज्य की स्थापना करने वाला राव बीका

भारत सरकार को प्रकाशन— राजपूताना कै राजा और मुख्य घराने, ९८६४,
 १६०३, १६१२ और १६१६ के संस्करण ।

सुखदेव प्रसाद— राठौड़, उनकी उत्पत्ति और विकास, पृ० १०।
सुन्शी देवी प्रसाद— राव बीकाजी का जीवन चरित्र, ए० ३०—३१।
चांकी दास— ऐतिहासिक बातों का संग्रह, विवरण संख्या २६११।
स्यामलदास— पूर्व उद्धृत, माग २, ए० ४१८। उसने बीका की जन्म तिथि ईस्की
सन् १४३८ लिखी है।

जयसोम- पूर्व उद्भृत, छन्द १०६-११५ । दयालदास- पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० २१ ।

पाउलेट ने अपने गजेटियर में बीका को छठा पुत्र लिखा है पर मह किसी मी हालत में सही नहीं हो सकता। दयालदास के अनुसार बीका का जन्म ईस्वी १४६ में हुआ। डा. टैसीटोरी द्वारा सही मानी गई जोषपुर की अन्य ख्यातों में बीका का जन्म ईस्वी १४४० (सम्बत् १४६७) में हुआ। डा. टैसीटोरी का यह मत बंगाल की ऐशियाटिक सोसायटी पित्रका माग १५ सन् १६१६ संख्या १ ए० १६ पर "सन् १६१७ में राजपूताना के बीर काव्य और ऐतिहासिक खोज के सम्बम्ध में किये गये कार्य की प्रगति की रिपोर्ट" में है। डा. टैसीटोरी ने जोधपुर की एक दूसरी ख्यात में सुरजा का जन्म ईस्वी सन् १४४२ (सम्बत् १४६६) लिखा हुआ पाया।

राव जोधा का दूसरा एवं जीवित पुत्रों में सबसे बड़ा या। राव जोधा के कई पुत्र थे। चूँ के उसकी मृत्यु के उपरान्त उत्तराधिकार के लिये भगड़ा होने की ग्राधिक सम्भावना थी, उसने बीका से कहा कि वह ग्रापने पिता के सिंहासन को उत्तराधिकार में पाने की प्रतीचा करने की ग्रापेचा ग्रापने लिये एक नया राज्य बनाकर ग्रापनी योग्यता प्रमाणित करने का प्रयत्न करे। इस प्रकार ३० सितम्बर सन् १४६५ को राव बीका नये प्रदेश जीतने की दृढ़ इच्छा से ग्रापने चाचा काँघल ग्रीर नापा-साँखला को साथ लेकर मारवाड़ से रवाना हुगा। उसके साथ बहुत से स्वामी-भक्त हित-चिन्तक भी थे। जिनमें रूपा,

- कत्रीज पर मुसलमानों का अधिकार हो जाने पर सैतराम का पुत्र राठीड़ सीहा सन् १२४३ के लगमग राजण्ताना में आया और पाली एवं उसके आस पास के प्रदेश पर अधिकार कर लिया । सीहा से दशवीं पीढ़ी में मल्लीनाथ ने मालाणी को जीता । मह्मीनाय का एक छोटा माई वीरम मालाणी छोड़कर चला गया क्योंकि उसे अपने माई से निर्वाह के लिये मूं मि नहीं मिली थी। उसके पुत्र चूंगडा ने अपने वीर कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त की । मगडोर के ईन्दा प्रतिहारों से मण्डोर का इलाका उसे दहेज में निला श्रीर वहाँ उसने श्रपना राज्य स्थापित किया। चूँकि चूएडा अपने वह पुत्र रणमल की जगह अपने छोटे पुत्र कान्हा को अपना उत्ताराधिकारी बनाना अधिक पसन्द करता या अतः रणमल मण्डोर छोड़कर मेवाड़ चला गया । कान्हा चूएडा के बाद स्वामी बना पर वह छोटी ही उम्र में मर गया अतः उसको छोटा माई सत्ता उसके बाद उत्तराधिकारी हुआ। रणमल ने मेवाड़ की सेना की सहायता से मण्डोर पर श्राक्रमण किया श्रीर उस पर श्रिधिकार कर लिया । लेकिन वह अपने पुत्र जोघा के साथ मेवाड़ में ही निवास करता रहा । बाद में सन् १४३६ से कुछ समय पूर्व किन्हीं कारणों से रणमल सिसोदियों द्वारा मार डाला गया। जोधा उस समय मेवाड़ में या । जान बचाने के लिये वह वहाँ से मार्गा । सिसोदियों ने उसका पीछा किया । उन्होंने मण्डोर पर अधिकार कर लिया पर जीघा बचकर निकल गया । सिसोदियों से अपना राज्य पुनः पाने के लिये जोधा तत्परता से लड़ता रहा और लगमग सन् १४५३ में उसने उस पर अधिकार कर लिया। सन् १४५६ में उसने जोधपुर वसाया और अपने राज्य का विस्तार किया।
- २. दयालदास की ख्यात (माग २ पृ० १-२) के अनुसार एक दिन वीका अपने पिता के दरवार में कुछ दर से पहुंचा और पिता को प्रणाम करके अपने चाचा कॉथल के पास बैठ गया । चाचा भतीजे कानाफूसी करने लगे। इस पर राव

मगडला, नाथू श्रीर बीका के माई जोगा व बीदा के अलावा पहिहार वेला भी था। बीका के साथ एक सी सवार तथा पाँच सी पैदल सैनिक थे। बीका रेगिस्तानी भाग को मील-मील करके जीतता गया जो बाद में बीकानेर राज्य बना। उसे इस इलाके में रहने वाले लोगों के हमलों को रोकना पड़ा। इस इलाके से उत्तर श्रीर पश्चिम की श्रीर भाटियों का श्रीवकार था। उत्तर पूर्व श्रीर दिल्ला पूर्व में जाटों के स्वाधीन शासक थे। इसके श्रलावा मट्टी, चायल श्रीर जोहिया थे। थोड़ी ही दूर हिसार में दिल्ली के बादशाह का मुस्लिम सूबे-दार शासन करता था। क्यामखानी, जिनका शेखावटी पर श्रीपकार था श्रीर बीदावत सेत्र के मोहिल श्रीर खीची बिना विरोध किये अपने इतने श्रीपक पस एक नई शिक्त का उदय नहीं देखना चाहते थे। घर से चल कर राव बीका पहले दिन मण्डोर ठहरा श्रीर वहां उसने गौरीजी की पूजा की। वहां से श्रागे चलकर बीका देशनोक में ठहरा श्रीर करणी जी के प्रति श्रपनी श्रदा श्रीत की। करणी जी चारण जाति में उत्पन्न एक देवी थी। श्रपनी श्रात पाइत शिक्तियों के कारण वह लोगों द्वारा पूजी जाती थी। बीकानेर के श्रागे के

जोधा ने व्यंग्य में पूछा कि वे दोनों किस विजय की योजना बना रहे हैं, काँधल तुरन्त खड़ा हुआ। उसने चुनौतों स्वीकार की और नये प्रदेश जीतने का प्रण लिया । नापा सांखला जो पहले जांगलू का शासक था और वहां से बिलोचियों द्वारा हटा दिया गया था, उस समय दरवार में हाजिर था । उसने सुमाव दिया कि बीका जांगलू जीते ।

जयसोम (पूर्व उद्भृत श्लोक १९०-१९६) के अनुसार बीका की, सौतेली माता और राव जोधा की रानियों में से एक जसमाद ने उसे विवश्त किया कि वह बीका को अपने लिये एक नया राज्य स्थापित करने को कहे ताकि जोधपुर की गद्दी उसके स्वयं के पुत्र को मिल सके।

- १. दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, ए० ३ ।
- २. करणी जी का जन्म सन् १३८७ में जोधपुर राज्य के सुवाप नामक गाँव में एक चारण परिवार में हुआ था। वह मेहा की पुत्री थी और बीकानेर राज्य में साठीका गांव के बीठू केलू के पुत्र देपा को ब्याही थी। लोग उसे देवी का अवतार मानते थे। मिक्य कथन की उनमें अद्भुत शक्ति थी। उनके आशीर्वाद से ही राव बीका ने बीकानेर राज्य की स्थापना की। वे अब भी बीकानेर राज्यराने द्वारा और साधारण जनता द्वारा पूजी जाती हैं। उनके मक्त केवल बीकानेर चेत्र तक ही सीमित नहीं है बिलंक दूर २ तक हैं। उनका स्वर्गवास सन् १५३८ में हुआ।

राव जोधा का दूसरा एवं जीवित पुत्रों में सबसे बड़ा या। राव जोधा के कई पुत्र थे। चूँ के उसकी मृत्यु के उपरान्त उत्तराधिकार के लिये भगड़ा होने की ग्राधिक सम्भावना थी, उसने बीका से कहा कि वह ग्रापने विता के खिंहासन को उत्तराधिकार में पाने की प्रतीद्मा करने की ग्रापेद्मा ग्रापने लिये एक नया राज्य बनाकर ग्रापनी योग्यता प्रमाणित करने का प्रयत्न करे। इस प्रकार ३० सितम्बर सन् १४६५ को राव बीका नये प्रदेश बीतने की हद इच्छा से ग्रापने चाचा काँधल ग्रीर नापा-साँखला को साथ लेकर मारवाइ से रवाना हुगा। उसके साथ बहुत से स्वामी-भक्त हित-चिन्तक भी थे। जिनमें रूपा,

- कत्रीज पर मुसलमानों का अधिकार हो जाने पर सेंतराम का पुत्र राठीड़ सीहा ٤. सन् १२४६ के लगमग राजप्ताना में आया और पाली एवं टसके आस पास के प्रदेश पर अभिकार कर लिया । सीहा से दशकों पीड़ो में मल्लीनाय ने मालाणी को नीता । मङ्गीनाय का एक छोटा भाई बीरम मालाणी छोड़कर चला गया क्योंकि उसे अपने माई से निर्वाह के लिये मूलि नहीं जिली थी। उसके पुत्र चुरुडा ने अपने दीर कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त की । नर्यडोर के इंन्डा प्रतिहारों से मण्डोर का इलाका उसे दहेज में मिला और वहाँ उसने अपना राज्य स्यापित किया । चूँकि चुएडा ऋषने बड़े धुत्र रएमल की जगह ऋषने होटे पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाना अधिक पसन्द करता या अतः रूपमल मण्डोर छीड़कर नेबाड़ चला गया । कान्हा चुएडा के बाद स्वामी बना पर वह छीडी ही उम्र में मर गमा अतः उसका छोटा भाई सत्ता उसके बाद उत्तराधिकारी हुआ। रणमल ने मेवाद की सेना की सहायता से मण्डोर पर आहमण हिया श्रीर उस पर श्रविकार कर लिया । लेकिन वह अपने पुत्र ओवा के साम मेबाद में हो निवास करता रहा । बाद में सन् १४३६ से हुछ समय पूर्व हिन्हीं कारणों से रणमल सिसीदियों द्वारा मार टाला गया । जोघा उस समय मेताड़ ने या । जान बचाने के लिये वह वहाँ से भागा । सिसोदियों ने टराफा पीएरा किया । उन्होंने मण्डोर पर अधिकार कर लिया पर जोवा बचकर निवल गया । सिसोदियों से ऋपना राज्य पुनः पाने के लिये जीवा तत्परता से लड़ता रहा और लगमंग सन् १४५३ में उसने उस पर अधिकार कर लिया। सन् १४४६ में उसने जोषपुर बसाया और अपने राज्य का विस्तार किया।
- २. दयालदास की ख्यात (माग २ पृ॰ १-२) के अनुसार एक दिन बीका अपने पिता के दरवार में कुछ देर से पहुंचा और पिता की प्रशाम करके अपने चाचा कींघल के पास बैठ गया । चाचा मतीजे कानाष्ट्रशी करने लगे। इस पर राव

मर्डला, नाथू श्रीर बीका के माई जोगा व बीदा के श्रलावा पहिहार वेला भी था। बीका के साथ एक सौ, सवार तथा पाँच सौ पैदल सैनिक थे। वीका रेगिस्तानी भाग को मील-मील करके जीतता गया जो बाद में बीकानेर राज्य बना। उसे इस इलाके में रहने वाले लोगों के हमलों को रोकना पड़ा। इस इलाके से उत्तर और पश्चिम की ओर भाटियों का अधिकार या। उत्तर पूर्व श्रीर दृद्धिण पूर्व में जाटों के स्वाधीन शासक थे। इसके श्रलावा भट्टी, चायल श्रीर जोहिया थे। थोड़ी ही दूर हिसार में दिल्ली के बादशाह का मुस्लिम स्वे-दार शासन करता था। ज्यामखानी, जिनका रोखावटी पर अधिकार था और बीदावत च्रेत्र के मोहिल और खीची बिना विरोध किये अपने इतने अधिक पास एक नई शक्ति का उदय नहीं देखना चाहते थे। घर से चल कर राव बीका पहले दिन मएडोर ठहरा श्रीर वहां उसने गौरीजी की पूजा की । वहां से श्रागे चलकर बीका देशनोक में ठहरा श्रीर करणी जी के प्रति श्रपनी श्रद्धा अर्पित की। करणों जी चारण जाति में उत्पन्न एक देवी थीं। श्रपनी ऋति प्राकृत शक्तियों के कारण वह लोगों द्वारा पूजी जाती थी। बीकानेर के आगे के

जोघा ने व्यंग्य में पूछा कि वे दोनों किस विजय की योजना बना रहे हैं, काँघल तुरन्त खड़ा हुआ । उसने चुनौतो स्वीकार की और नये प्रदेश जीतने का प्रया लिया । नापा सांखला जो पहले जांगलू का शासक या श्रीर वहां से बिलोचियों; द्वारा हटा दिया गया था, उस समय दरवार में हाजिर था । उसने सुम्नाव दिया कि बीका जांगलू जीते।

जयसोम (पूर्व उद्धृत रत्नोक ११०-११६) के अनुसार बीका की सौतेली माता और राव जोघा की रानियों में से एक जसमादे ने उसे विवश किया कि वह बीका को अपने लिये एक नया राज्य स्थापित करने को कहे ताकि जोघपुर की गद्दी उसके स्वयं के पुत्र को मिल सके।

- दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग र, पृ० ३ ।
- करणी जी का जन्म सन् १३८७ में जोधपुर राज्य के सुवाप नामक गाँव में ٦. पक चारण परिवार में हुआ था। वह मेहा की पुत्री यी और वीकानेर राज्य में साठीका गांव के बीठू केलू के पुत्र देगा को ब्याही थी। लोग उसे देवी का अवतार मानते थे। मविष्य कथन की उनमें अद्भुत शक्ति थी। उनके आशीर्वाद से ही राव वीका ने बीकानेर राज्य की स्थापना की । वे अब भी बीकानेर राजघराने द्वारा और साधारण जनता द्वारा पूजी जाती हैं। उनके मक्त केवल वीकानेर चेत्र तक ही सीमित नहीं है बल्कि दूर २ तक है। उनका स्वर्गवास सन् १४३८ में हुआ।

इतिहास से यह स्पष्ट होगा कि त्राने वाली पीढियों में किस प्रकार करणी जी बीकानेर के शासकों के लिए एक महान शिक्त मानी जाकर उनका पथ प्रदर्शन करती रहीं। कहा जाता है कि करणी जी ने मिवष्यवाणी की कि बीका यश श्रीर शिक्त में अपने पिता से भी बद्दकर होगा श्रीर बहुत से बड़े २ लोग उसे अपना स्वामी मान कर गौरवन्वित होंगे।

करणी जी के निर्देशानुसार राव बीका चाग्डासर के निकट वस गया जहां वह ३ वर्ष तक रहा। उसके बाद वह देशनोक चला गया जहां वह बहुधा करणी जी के दर्शन करता था। बाद में उसने श्रास पास के इलाके जीत लिये और कोडमदेसर में जाकर बस गया। सन् १४७२ में उसने श्रपने को राजा घोषित किया।

ख्यातों के अनुसार पूगल का शासक राव शेखा लूट मार किया करता था। एक बार जब वह मुल्तान की ओर से लूटकर आ रहा था तो मुल्तान के स्वेदार की सेना से उसकी मुठमेड़ हो गई। इसमें उसके कई आदमी मारे गये और वह पकड़ लिया गया। शेखा को छुड़ाने के लिए उसकी पत्नी ने राव बीका से सहायता मांगी। राव बीका द्वारा राव शेखा को कैंद से छुड़ाने पर राव शेखा की पुत्री रंगदे अथवा रंगकुमारी का विवाह राव बीका से कर दिया।

सन् १४७८ में राव बीका ने कोडमदेसर के तालाब के पास एक

१. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ३।

२: वही।

इ. श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ४७८ । सुन्शो देवी प्रसाद-राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० ५ । दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ५ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० २ । नैरासी-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० १६८ ।

४. बीठू सूजा-पूर्व उद्धत, छन्द ४५।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४-५ ।
सुन्शी देवीप्रसाद-राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० ६-७ ।
रयामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४७८ ।
पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० २-३ ।

किला बनवाना चाहा। 'राव शेखा ने इसका विरोध किया। राव बीका अपनी योजना के अनुसार काम करता रहा। इस पर भाटी नाराज हो गये और किल-कर्ण, जो जैसलमेर के रावल का छोटा पुत्र था, की सहायता से एक शिक्तशाली सेना लेकर बीका पर आक्रमण किया। बीका ने अपने भाई बीदा और चाचा कान्धल की सहायता से भाटियों को जुरी तरह हराया। हार के वावजूद भाटियों की नाराजी बरावर बनी रही अतः बीका ने किले के लिए कोई दूसरा स्थान हूं दने का निश्चय किया। उसने नापा और कई दूसरे लोगों को जगह हू दने के लिये भेजा। खोज करने वाले राती घाटी नामक स्थान पर आये। इसे उन्होंने शुभ समभा अग्रेर बीका ने यहां किले की नींव रक्खी। लेकिन नापा और उसके साथियों द्वारा इससे भी अधिक अनुकूल स्थान की खोज जारी रही। नापा ने एक दूसरा और अधिक बड़ा किला बनाने के लिये एक अन्य स्थान का चयन किया। यहाँ सन् १४८५ में बीका के किले की नींव रक्खी गई और सन् १४८५ में नगर निर्माण आरम्भ हुआ। अ

- १. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ४ । पाउलेट-बीकानेर राज्य के अपने गजेटियर (पृ० ३) में लिखता है कि बीका ने कोडमदेसर में किला बनवाया ।
- २. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ३ । दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ४--६ ।
- इ. जब नापा इस जगह पर आया तो उसने देखा कि कैर के नीचे एक मेड़ अपने दो मेमनों की लिये हुये मेड़ियों के एक भुरुष्ड का विरोध कर रही थी। उसने मेड़ियों को मगाया और उस स्थान को शुम शोषित किया।
- ४. पहली जगह के निकट ही उन्होंने अरूट घास के देर पर एक श्रादमी को सिर रख कर सोये हुए देखा। वहां एक सांप कुएडली मारे हुये था। नापा श्रीर उसके सायी सांप की कियाश्रों को देखने के लिये बैठ गये। कुछ देर बाद सांप कुएडली छोड़ कर पहले जुने हुये स्थान की श्रीर चला गया। नापा श्रीर उसके साथियों द्वारा यह दूसरा स्थान श्रीषक शुम माना गया।
- प्र. पाऊलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ४। दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ६-७। श्यामलदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ४७६-७६। नैएासी-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० १६६। टैसीटोरी-पूर्व उद्भृत, पृ० ७२।

अपने राज्य से भगा दिया गया था। अपने दो वेटों-- सैसमल और सूरजमल के साय सन् १४७३ में बीकानेर आया। राव बीका ने उसे शरण दी पर अपना राज्य पुनः प्राप्त करने के लिये उसकी सहायता नहीं की। तब रागा ऊदा ने मारुड्र के सुल्तान गयासुद्दीन खिल्जी के यहाँ शरण ली।

उत्तरी पूर्वी सीमा पर जाटों का ऋधिकार था। इनमें से गोदारों र ने जोहियों ख्रीर माटियों के हमले से बचने के लिये बीका की सत्ता स्वेच्छा से स्वीकार कर ली। बाद में जब बीका ने सारगों के मुखिया पूला के विरुद्ध गोदारों के मुखिया पाँडु की सहायता की श्रीर पूला को बुरी तरह से हराया तो घीरे घीरे जाटों की दूसरी जातियों ने भी बीका की अधीनता स्वीकार कर ली । इस प्रकार जाटों की विभिन्न जातियों के १६६४ गाँव बीकानेर राज्य में मिल गये।

तव बीका ने सिंधाणा पर स्नाक्रमण किया स्नौर जोहियों को स्नपने श्राघीन कर लिया। बाद में उसने खीचियों पर हमला किया जिनके पास बीकानेर के बीच में १४० गाँव ये । बीका ने देवराज को मार डाला और उसके

नीकानर की स्थापना की तिथि के सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है--पनशै से वैतालके, सुदं वैसाख सुमेर । शावर बीज धरिपयों, बीके बीकानेर ॥

नैरासी-पूर्व उद्धृत, मांग ६, पृ० ३६ । र्श्यामलिदास-पूर्व अद्भेत, भाग १, १० ३६ में।

गोदारों की स्वामी-मिकि और स्वेच्छा से वीका की अधीनता स्वीकार करने के बदले उन्हें बीकानर के शासकों का राजतिलक करने का सम्मान दिया गया। यह परम्परा आज भी चाल है। गोदारों के मुखिया द्वारा अपना अंगूठा काट कर रहे से तिलक किया जाता है।

पाउलैट-पूर्व उद्धृत, हु॰ ४ । उसने उनका विवरण इस प्रकार दिया है-जाति का नोम गाँव की संख्या मुख्य गांव मुखियां को नाम पीइ ३६० लाधिह्या और शेखसर गोंदारा, भाड़ंग पूला सरिए ३६० सीधमुखं कुँवर पाल ३६० कसवां रायसाल रायसलाना - - - वेगीवांल कान्हा बड़ी सू वी ३६ ७ ़ पूनियाँ चोखा 240 सीहागां श्रमरा सींहंश्रा घानसी

58

गांवों को अपने राज्य में मिला लिया। उसने सिंध की ओर विलोचियों के कुछ इलाके पर भी कब्जा कर लिया और क्यामखानियों से शेखावाटी और हिसार के पठानों से कर्ण वाटी का कुछ दोत्र छीन लिया। इस प्रकार अब बीका का राज्य ३ हजार गांव तक फैला हुआ था और इसकी सीमा पंजाब तक पहुंच गई थी।

शीव ही बीका का भगड़ा दिल्ली के मुस्लिम शासकों से हो गया। बीदा ने अपने समुर के कहने पर उसके कई रिश्तेदारों को जतम कर दिया। जब वह प्रोणपुर और छापर पर राठौड़ों का अधिकार हट कर रहा था तो बरसल और नरबद (कांचल के पुत्र बाधा के भतीजे) जिन्हें अपने घर से निकाल दिया गया था, कांचल के एक असन्तुष्ट पुत्र बाधा के साथ दिल्ली चले गये। दिल्ली में उन्होंने मुल्तान बहलोल लोदी की ऐसी अच्छी सेवा की कि मुल्तान ने हिसार के स्वेदार को आजा दी कि वह बरंसल को उसका प्रदेश चापस दिलाने में मदद करे। हिसार का स्वेदार सारंग खा अपनी सेना लेकर द्रोणपुर आ पहुँचा। पर चूँकि बीदा मुसलमानों और मोहिलों की सम्मिलत सेना का मुकाबला करने में समर्थ नहीं था अतः उसने छापर द्रोणपुर देकर बरसल से सन्धि कर ली और बीकानेर में अपने भाई बीका के पास चला आया।

श्रपने माई के लोये हुये श्रिषकार को पुनः प्राप्त करने के लिये चीका ने श्रपने पिता राव जोघा से सहायता मांगी, पर वह व्यर्थ रही । वीदा ने श्रपने पिता राव जोघा को सुजानगढ़ के निकट लाड़न, देने से इन्कार करके श्रप्रसन्न कर दिया था। बीका ने श्रपने समुर राव शेखा श्रीर सिंघाणा के सरदार की सहायता से द हजार सैनिक एकत्रित किये श्रीर करणी जी का श्राशीर्वाद पाकर शत्रु के विरुद्ध चले पड़ा। नापा सांखला को उसने बीकानेर के किले की देखभाल के लिये छोड़ दिया। जब वह द्रोणपुर से द मील दूर रहा तो उसने श्रपनी सेना को रोक लिया क्योंकि सारंग, खां द्रोणपुर में था श्रीर बीका की गित रोकने के लिये उसने श्रपनी सेना को तैयार रहने का श्रादेश दे दिया था। धीका वाघा से एकान्त में मिला श्रीर उसे भिड़कते हुए कहा "काका कांघल तो मेरे पर इतने कुपालु हैं कि श्रपना सर्वस्व खतरे में डाल, कर भी जाटों की शिक्त को नष्ट करके मुक्ते बीकानेर का राज्य दिलाया। लेकिन तुम, उनके पुत्र मेरे विरुद्ध मोहिलों की सहायता करके श्रपने पिता के किये पर पानी फेर रहे हो। कांचल

दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० १२ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ६ ।

२. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, ए० १२।

कै पुत्र के लिये यह ठीक नहीं इन शब्दों का वाघा पर वहुत प्रभाव पड़ा । उसने दूसरे दिन के युद्ध में मोहिलों की सहायता न करने का वचन दिया। उसने कहा कि वह मोहिलों को पैंदल लड़ने की सलाह देगा और सारंग खां की सेना उनके दाहिनी और रहेगी। इससे बीका अपने घोड़े पर मोहिलों को तितर वितर करने में समर्थ हो सकेगा। दूसरे दिन युद्ध के मैदान में ऐसा ही हुआ। मोहिल और मुसलमान रखनेत्र से भाग गर्य और नरकद और वरस्ल दोनों युद्ध में मारे गये। विजयी बीका कुछ, दिन द्रोखपुर में रहा । उसने वहां की सारी भूमि बीदा को सोंप दी और उसे अपना जागीरदार कना लिया।

मोहिलों की इस घटना के बाद कांघला ने राजासर को अपना कैम्प वनाया। यहां से वह हिसार पर हमले करता रहता था। लूट का काफी माल एकत्रित करने के बाद वह साहवा की आरे बढ़ा । सारंग खां ने एक शिक्त-शाली सेना एकत्रित की ऋौर कांघल के इमलों को समाप्त करने को निकल पड़ा। अपने तीन पुत्रों राज्यी, नीम्बा, और स्रा के साथ कांघल ने अपने साथियों को एकत्रित किया और सारंग खां से लड़ने निकल पड़ा । अपने घोड़े को शत्रु की स्त्रीर दोड़ाते समय कांघल के घोड़े का तंग टूट गया। इसे ठीक करने वह घोड़े से नीचे उतरा लेकिन घोड़े पर पुनः सवार होने से पहले ही सारंग खां ने उसे घेर लिया श्रीर जीरदार हमला करके कांघल की सेना को तितर वितर कर दिया । राठौड़ योद्धा केवल १५ साथियों के साथ ७३ वर्ष की उम्र में बड़ी बहादुरी से सारंग खां से लड़ा ऋौर आमने-सामने की लड़ाई में २३ शतुत्रों को मारकर पीष बदी ५ सम्वत् १५४६ (ईस्वी सन् १४८६) को रणखेत रहा 🏳 जब बीका ने कांघल की मृत्यु का समाचार सुना तो उसे बहुत क्रीध त्राया । उसने प्रतिज्ञा की कि जब तक कांघल की मृत्यु का बदला महीं ले लेगा, तब तक भोजन ब्रह्ण नहीं करेगा। उसने ख्रपने पिता राव जोघा से सहायता मांगी जो उसे तुरन्त मिली । राव जोघा स्वयं ऋपनी सेना के साथ ऋाया ऋौर द्रोगापुर में बीका के साथ मिला। यहां से दोनों की सम्मिलित सेना हिसार के विरुद्ध चल पड़ी श्रीर भांस नामक गांव में शत्रु से उनका सुकाबला हुत्रा युद्ध में नरा के हायों सारंग खां मारा गया पर स्वयं बीका का एक पुत्र भी

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० १४-१५ ।
पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ६-- ।
मुन्शी देवी प्रसाद-राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० २१-२२ ।

२. दयालदास- पूर्व उद्धृत, माग २, ए० १५--१६।

सारा गया व

कांघल की मृत्यु का बदला लेने के उपरान्त राव बीका श्रीर राव जोधा द्रोणपुर लौटे। राव जोधा ने राव बीका से दो बालें चाही कि वह लाडन् उसे दे दे श्रीर श्रपने ही जीते हुए भाग से सन्तुष्ट रहकर श्रपने भाइयों से जोधपुर का कोई पैतृक भाग न छीने। राव बीका ने ये बातें मानली पर साथ में यह शर्त रखी कि चूं कि वह उनके जीवित पुत्रों में सबसे बड़ा है अतः वंश के राज्य-चिन्ह (तख्त छत्र ग्रादि) मिलने की उसकी पूर्व प्रार्थना स्वीकार की जाय। राव जोघा ने स्वीकार किया कि वह इन्हें बीकानेर भेज देगा। ⁸ इस वचन को पूरा किये विना ही राव जोधा का स्वर्गवास हो गया। जब राव बीका ने वेला पड़िहार की राव सूजा³ के पास राज्य चिन्ह लाने के लिये भेजा तो सूजा ने उन्हें देने से इन्कार कर दिया। इस चचन भंग से क्रोघित होकर राव बीका ने ३० हजार सैनिकों र की एक बड़ी सेना को एकत्रित किया और अपने उदेश्य की सफलता के लिये करणी जी से आशीवोद पाकर जोधपुर पर चढ़ाई कर दी । राव बीका की सेना को रोकने के लिये राव सूजा ने अपनी सेना भेजी। बोधपुर से लगभग १ कोस दूर दोनों सेनाओं में मुठमेड़ हुई । जोधपुर की सेना शीघ ही भाग गई और राव बीका की सेना ने आगे बढ़ कर को घपुर के किले को घेर लिया । अन्त में राव सूजा को माता जसमादे जी ने बीका के पास आकर राज्य चिन्ह श्रीर बीका द्वारा चाही गई कुछ ग्रम्य चीजें दे दी । इन्हें पाकर राव बीका बीकानेर लौट ग्राया । ^४

नैग्रसी-पूर्व उद्धृत, भाग २, ६० २०६ ।
पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ८ ।
दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० १७-१८ ।
मुन्शी देवी प्रसाद-राव वीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० २८-३० ।

दयालदास—पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० १८।
 सुन्शी देवी प्रसाद—राव वीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० ३०-३१।
 पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ६।

राव जोधा का पुत्र, जोधपुर का तत्कालीन शासक ।

४. पाउत्तेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ६ । दयानदास--पूर्व उद्धृत, पृ० १६ ।

प्रशास्त्र विद्वत, माग २, पृ० २०-११।
 मुन्शी देवी प्रसाद-राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० ३५-३६।
 स्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४७६-८०।

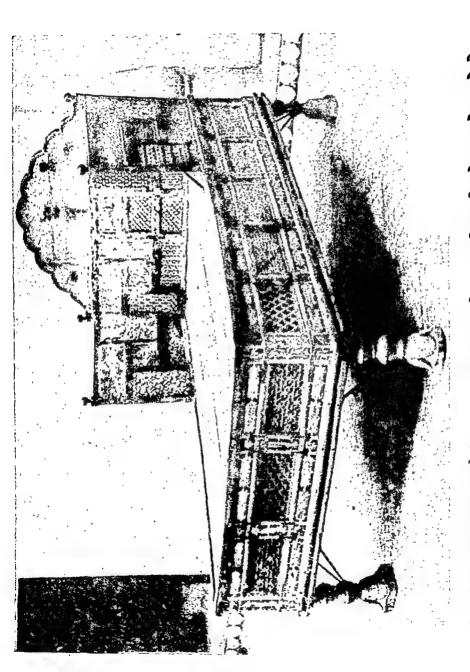
उन दिनों मेडता पर बीका के दो भाइयां दूदा श्रीर वरसिंह का श्रिष्ठिकार था। वरसिंह इघर उघर लूट मार किया करता था। एक बार उसने श्रुं जमेर के हलाके पर हमला करके काफी माल लूटा। वरसिंह के हमले की रोकने में श्रुं जमेर के स्वेदार मल्लुखां ने श्रुपने को श्रुं समर्थ पाया। श्रुं तः उसने उसे एक मित्र की तरह निमंत्रित किया। लेकिन जब वरसिंह श्राया तो उसे बन्दी बना लिया गया। यह खबर सुनकर दूदा ने राव बीका से सहायता मांगी जिसने तुरन्त श्राने का वचन दिया। दूदा ने जोषपुर के राव स्वां की भी सहायता करने के लिये कहा। उसने भी श्रुपनी सेना भेज दी। बीकानेर श्रीर जोषपुर की समित्रित सेना ने श्रुं को पर चढ़ाई की। मल्लुखां ने शान्ति सममौता कर लिया श्रीर वरसिंह को छोड़ दिया।

शेखावाटी चेत्र के खन्डेला का ठाकुर प्रायः बीकानेर के इलाके पर हमले किया करता था। एक बार उसने बहुत नुकसान पहुँचाया। इस पर बीका इसके विरुद्ध चल पड़ा। दोनों की सेनाश्रों में युद्ध हुन्ना न्नौर रिड़मल हार गया।

कुछ समय से बीका की यह इच्छा थी कि दिल्ली की ओर अपने अधि-कार को बढ़ाये। उसने एक बड़ी सेना एकत्रित की और रेवाड़ी की ओर खाना

वांकीदास-पूर्व उद्भृत, विवरण संख्या २६११ । जोधपुर से लाये गये राज्य चिन्ह ये थे :—

- (१) चन्दन का तस्त (२) छत्र (३) चैंबर (४) राव जोधाजी की तलवार (५) राव जोधाजी की दाल (६) हरमूत्री सांबला की कटार (७) हिरयं गर्भ लदमी नारायण की मूर्ति (६) देवी नागणचीजी की चांदी की मूर्ति (६) करपड (१०) दिल्लावृत शंख (११) मंबर दोल (१२) वैरी साल नगारा (१२) मुक्जाई की देग और (१४) दर्ज सिंगार ।
- दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २१-२२: ।
 श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४७६ ।
 मुनशी देवीप्रसाद-राव वीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० ३६-४१ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ६ ।
- २. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० १० । दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २४।



गोज से लाया हुआ पुरुतेनी चन्दन का तक्त जो राव बीकाजी जोधपुर से लाये थे

	•			
			•	
·				
		•		

हुआ। उसने उस इलाके का काफी भाग दबा लिया। खन्डेला का ठाकुर रिड़मल सहायता के लिये दिल्ली के सुल्तान के पास पहुँचा। श्रीर हिन्दाल के सेनापितत्व में बादशाही सेना की सहायता से बीका पर चढ़ाई कर दी। लेकिन रिड़मल बीका की सेना का मुकाबला नहीं कर सका श्रीर युद्ध में राव वीका ने रिड़मल श्रीर हिन्दाल दोनों को मार डाला। यह राव वीका का श्रीन्तम युद्ध था। व

टॉड के शब्दों में बीका के ऋभियान, जो स्पष्ट रूप से विजय के लिये थे, प्रायः हमेशा सफल रहे । पाउलेट लिखता है कि ऋभे जाकृत योड़े ही समय में उसके राज्य में ३ हजार से ऋषिक गांव हो गये । इनमें रेवाड़ी या हिसार का हलाका सम्मिलित नहीं है । बीका का राज्य उत्तर में दीपालपुर ऋौर मिटिएडा (ऋब पंजाब में) से लेकर शेखावाटी में फते हपुर ऋौर नरेन्दा तथा नागौर हिसार ऋौर सिरसा से देरावर तक फैला हुआ था। इसका चेत्रफल ४०,००० वर्गमील से कम नहीं था।

राव बीका से बीकानेर का अलग इतिहास आरम्भ हुआ। उसने अपनी मातृभूमि छोड़ी और जांगलू के साँखलों में उत्तरी सीमाओं पर बसने आया। यहां से उसकी दृष्ट उत्तर पूर्व की ओर गई जिसके बहुत बड़े इलाके का कुछ भाग शान्ति प्रिय जाटों के अधिकार में था और कुछ भाग लड़ाकू मोहिलों के। उसने अपनी महत्वाकांचा से विजय का अभियान आरम्भ किया। फलस्वरूप थोड़े ही समय में वह पूगल की सीमा से हिसार तक और घग्धर से नागौर की सीमा तक सारे रेगिस्तान का स्वामी बन गया। अपनी विजयी तलवार से उसने देरावर, दीपालपुर, भटनेर, भटिएडा, नागौर और फतेहपुर के द्वार खटखटाये। इस प्रकार बीका का इतिहास मानव की महत्वकांचा और दृ निश्चय के उज्ज्वल स्मारक का प्रतीक है।

राव बीका की मृत्यु ११ सित्म्बर सन् १५०४ को हुई। उसका जयेष्ठ पुत्र राव नरा उसका उत्तराधिकारी बना। उसने केवल ५ महिनों तक राज्य किया और निःसन्तान मर गया। २३ जनवरी सन् १५०५ को उसका छोटा

२. श्यामलदोस-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २४-२५ ।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २४ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० १० ।
 सुनशी देवीप्रसाद-राव बीकाजी का जीवन चरित्र, पृ० ४३-४४ ।

भाई राव लूणकरण उसका उत्तराधिकारी वना ।"

श्रपने श्रल्य कालीन शासन में राव नरा राज्य के दूरवर्ती जिलों पर श्रपनी सत्ता प्रभावशाली ढंग से रखने में श्रसमर्थ रहा । गैरकावृती तत्वों ने बीकानेर के श्रधिकार से छुटकारा पाने के लिये श्रचानक प्रयत्न किया । लेकिन उन्होंने राव लूएकरण की योग्यता को कम श्रांका था । गहो पर वैठने के तुरन्त बाद उसने श्रपने इलाके में व्यवस्था करनी श्रारम्म करदी श्रीर श्रास पास के इलाकों के जिन मालिकों ने उसकी भूमि पर पुनः श्रधिकार कर लिया था उनका दमन किया ।

सन् १५०६ में उसने दहेवा के विद्रोही सरदार मानसिंह चौहान पर ग्राक्रमण किया। ७ महिनों के विरोध के बाद मानसिंह युद्ध में मारा गया ग्रीर दहेवा बीकानेर में मिला लिया गया ³

उस समय फतेहपुर पर क्यामखानियों का ग्रिषकार या। वहाँ के शासक दौलत खां श्रीर रंग खां में निरन्तर भगड़ा चलता रहता था। यव लूण-करण ने इस रियति का लाभ उठाया श्रीर फतेहपुर पर चढ़ाई कर दी। फलस्व-रूप दौलत खां श्रीर रंग खां मिल गये श्रीर संयुक्त रूप से लड़ने श्राये। लेकिन वे हार गये श्रीर उन्होंने लूणकरण को १२० गाँव देकर सन्धि की। वहां लूण-करण ने श्रपनी चौकियाँ स्थापित कर दी। फिर उसने चायल राजपूती पर

१. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० २७ । श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ४८१ । मुन्शी देवीप्रसाद-राव लूग्यकरण का जीवन चरित्र, पृ० ४८ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० १० । राव नरा की मृत्यु की तिथि १३ जनवरी सन् १५०५ है।

२. अोमा-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ११२ ।

इयामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २८ ।
 इयामलदास-माग २, पृ० ४८१ ।
 पाठलेट-पूर्व उद्धत, ृ० ११ ।
 सुन्शी देवी प्रसाद-राव त्याकरण जी का जीवन चरित्र, पृ० ४५०-५१ ।

४. दयानदास-पूर्व उद्धत, माग २, पृ० २ । पाठलेट-पूर्व उद्धत, पृ० ११ । सुन्शी देवीप्रसाद-राव नूराकरण जी का जीवन चरित्र, पृ० ५१-५२ ।

इमला किया भ्रीर ४४० गांवों को अपने अधिकार में कर लिया !

सन् १५१३ में जब नागौर के स्वामी मुहम्मद खां ने बीकानेर पर चढ़ाई की तो राव लूणकरण अपनी सेना के साथ उसका मुकाबला करने के लिये गया। रात्रि में हमला करके उसने खान की सेना को तितर वितर कर दिया। खान भी युद्ध में घायल होकर अपने इलाके में लौट गया। लेकिन चाद में जब जोधपुर के राव गांगा ने नागौर पर इमला किया और नागौर के खान ने राव लूणकरण से सहायता मांगी तो वह तुरन्त वहां गया और लड़कर शत्रु सेना को भगा दिया। अन्त में उसने राव गांगा और खान में मेल करा दिया।

नागीर से लौटने के कुछ समय बाद राव लूग्करण ने अपने राज्य विस्तार के कार्य को पुनः आरम्म किया। उसने अपने कुछ मुस्लिम पड़ोसियों पर हमला किया और काठिलयाँ, डीडवाना, वागड़, नरबद सिंघाणा आदि कई गांवों पर अधिकार कर लिया। तब वह नारनौल की ओर बढ़ा। नारनौल के नवाब ने राठौड़ों के विषद्ध लड़ने में अपने को दुर्वल पाकर मेल करना चाहा पर राव लूग्करण ने इन्कार कर दिया। जैसलमेर के रावल ने अपने पहले की हार का कष्ट अनुभव करते हुये स्थित का लाम उठाया और नवाब से मिल कर लूग्करण से लड़ने आगे आया। अपनी अकामक योजनाओं से राव लूग्करण से लड़ने आगे आया। अपनी अकामक योजनाओं से राव लूग्करण में अपने सरदारों की सहानुभृति खो दी अतः जब युद्ध हुआ तो वे राव लूग्करण और उसके पुत्रों अतापसी, नैतसी और वैरसी तथा थोड़े से सैनिकों को छोड़कर मैदान से हट गये। उनके विरोधियों की संख्या बहुत अधिक थी। अतः युद्ध में वे सब मारे गये। यह युद्ध नारनौल से ३ मील दूर दोसी नामक स्थान पर २४ जून सन् १५२६ को हुआ था। हम कह सकते हैं कि अपने अस्तित्व काल से हो बीकानेर राज घराने को दिल्ली के शासकों से

दयालदास--पूर्व उद्धृत, माग २, पृ. २८-२६ ।
 सुन्शी देवीप्रसाद-रात्र लूणकरण जी का जीवन चरित्र, पृ० ५२-५३।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ११ ।

२. बीठू सूजा-पूर्व उद्धृत, छन्द ५७-६१।

३. वही, छन्द ७४--७५।

४. वही, छन्द ७५-७६--७८, ८०-८१।

प्रशालदास पूर्व उद्धृत, भाग २, प० ३४-३६ ।
 वीठ्र सूजा-पूर्व उद्धृत, छन्द ८४-६३ ।

संघर्ष करना पड़ा । उस समय बहलोल लोदी ने एक अफगान मंडल का संगठन किया था । वह स्वयं दिल्ली का सुल्तान था । ग्रीर बाकी सल्तनत विभिन्न त्रफगान सरदारों में वंटी हुई थी । हिसार सारंग खां के अधिकार में या और मल्लूखां त्रजमेर पर शासन कर रहा था। यहां तक कि नागौर भी एक क्रफगान सरदार के अधीन था। स्वामाविक था कि राव बीका की राज्य विस्तार और राज्य संस्थापित करने की महत्वाकां द्वा से अप्रगान सरदारों का संघर्ष होता जो स्वयं श्रपनी सल्तनत का विस्तार करना चाहते थे । यह पहले कहा जा चुका है कि किस प्रकार मोहिलों का सरदार सहायता के लिये बहलोल लोदी के पास गया जिस पर हिसार का स्वेदार सारंग खां मोहिलवाटी भेजा गया । इस प्रकार एक ऐसा संघर्ष आरम्भ हुआ जो बीका के शेष शासन काल में वरावर मयंकर रूप में चलता रहा। बीका की सबसे महत्वपूर्ण देन यह है कि उसने दिल्ली सल्त-नत की ऋघीनता ऋथवा ऋघिकार माने विना ऋपने लिये एक स्वाधीन राज्य बनाने का सफल प्रयत्न किया । सच्चे वीर श्रीर साम्राज्य निर्माता की मांति उसमें ग्रसीम साहस था। इससे दिल्ली सल्तनत के प्रति उसका दृष्टिकोग् स्पष्ट हो जाता है। उसने इस इलाके में, जहां उसने ऋपना राज्य स्थापित किया, बसने वाले लोगों को ही सफलता से नहीं हराया, बल्कि दिल्ली के लोदियों और उसके सुवेदारों से भी मोर्चा लिया, जिन्होंने आरम्भ से ही उसके प्रति शत्रता का भाव ऋपना लिया था।

राव लू ग्लं करण ने अपने पिता के पदिचन्हों का अनुकरण किया एवं राज्य का और भी विस्तार किया । वास्तव में राज्य-विस्तार की इस महत्वाकां ज्ञा ने ही उसके प्राण लिये ।

चारिम्भक मुगलों के साथ बीकानेर के सम्बन्ध

सन् १५२६ में बीकानेर की गही पर राव जैतसी का ग्राल्ट होना न केवल बीकानेर के इतिहास में बिल्क उत्तरी भारत के इतिहास में भी एक नये युग के ग्रारम्भ का स्चक है। पानीपत के मैदान में (२१ श्रप्रेल सन् १५२६) बाबर श्रीर इग्राहिम लोदी की सेनाश्रों के संवर्ष से, जिसमें सुल्तान इग्राहिम हार गया, कुछ ही समय पूर्व वह (जैतसी) श्रपने पिता का उत्तरा- विकारी बना था। श्रपने नवीन हथियार "तोपखाने" की सहायता से बाबर ने जो विजय प्राप्त की उसने श्रप्रगान सत्ता को समाप्त कर दिया। इसके कारण बीकानेर राज्य भी बहुत श्रशान्त रहा। बाबर ने पंजाब श्रीर मुल्तान पर श्रविकार कर लिया। उसके दोत्र की दिल्णी पश्चिमी सीमा वर्तमान पंजाब से मिलती जुलती थी जिसमें श्रवोहर, सिरसा, हांसी श्रीर हिसार सम्मिलत थे। लेकिन गणेशगढ़, हनुमानगढ़ श्रीर श्रजीतपुरा उसकी सीमाश्रों से परे थे। दिल्ला में सिन्ध का राज्य था जिस पर श्रविन ताह बेग श्रीर उसका पुत्र मिर्जाशाह हुसेन राज्य करते थे। हुमायू बद्ख्शां का, कामरां काबुल, गजनी श्रीर कन्धार का तथा श्रस्करी मुल्तान का स्वेदार नियुक्त था। उ

१६ मार्च सन् १५२७ को कणवाहा के युद्ध में राणा सांगा पर वावर की विजय ने राजपूतों के मण्डल राज्य के ब्रान्तिम चिन्ह को भी मिटा दिया जो कि लोदी वादशाहों के लिये निरन्तर खतरे का कारण बना हुआ था।

१. स्मिथ-पूर्व उद्भृत, पृ० ३२२ ।

२. एस. के. वनर्जी-हुमायू वादशाह, पृं २६ १

३. वहीं।

४. स्मिय-पूर्व उद्भृत, पृ० २२३ । ...

भारत में त्राने के थोड़े ही समय के भीतर मुगलों ने त्रापने त्राप को उत्तरी भारत का स्वामी बना लिया और सन् १५२८ में प्रवल सगल साम्राज्य की स्थापना हुई । यद्यपि बाबर ने एक साम्राज्य जीत लिया या, ग्रौर उसके विभिन्न सूर्वे परस्पर शिथिलता से जुड़े हुये थे लेकिन उसके विरुद्ध कोई स्थानीय विद्रोह प्रकट नहीं हुआ । तो भी राजनैतिक स्थिति सुद्द नहीं थी । नवीदित सुगल राज्य के बहुत बलवान विरोधियों में अप-गान थे। वे बहलोल लोदी के समय देश के शासक थे ऋौर उन्होंने राज्य को सैनिक शक्ति प्रदान की थी। देश में उन्होंने एक राजनैतिक शक्ति प्राप्त कर ली थी । आरम्भ में अफगानों ने ही सुल्तान इवाहिम को हटाने में मदद करने के लिये वाबर को निमन्त्रित किया था। पर बाबर ने श्रपनी विजय को कायम रखने का निश्चय किया) - श्रतः वे उसके विरोधी वन गये और उसे अपहरण कर्ता मानने लगे। अफगान सुगलों की इस घृणा की छाया के नीचे राव जैतसी ने बीकानेर शासक के रूप में **अपना राजनैतिक जीवन आरम्भ किया । दिल्ली साम्राज्य के बहुत निकट** होने के कारण यह स्वामाविक या कि वहाँ की उथल पुथल का इस पर प्रभाव पहता ।

राव जैतली के राज्य काल के आरिम्मक वर्ष चिन्ता और सन्देह से भरे थे। याव जेतली का पिता राव लू एकर ए नार नोल के नवाब से, जिसकी सहायता में जैसलमेर का राव था, लड़ते हुये मारा गया। चूँ कि राठौड़ों ने बीका नेर राज्य की स्थापना बड़े विरोध के बावजूद की थी अतः यहां पहले बसने वालें लोग जिनकी अपनी जागीरें थी और जिनका इला के में प्रमाव था वे राठौड़ों की किसी भी कमजोरी का फायदा उठाने को सदा तरपर रहते थे। वे अपने असन्तोष को प्रकट करने का कोई भी अवसर नहीं चूकते थे। भट्टी और मोहिलों ने तो राव बीका के शासन काल में भी इस इला के में अशानित उत्पन्न की थी। बीका को मृत्यु के उपरान्त उसके उत्तराधिकारियां के दुवल शासन ने, उनके लिये गड़ बड़ी उत्पन्न करना, केन्द्रीय सत्ता से अलग होने की भावना बढ़ाना और शासन को चलाने में कठिनाइयां उत्पन्न करना और भी सम्भव बना दिया। जैसलमेर और नारनील के शासकों से राव लू एकरण के काड़े का दुर्भाग्य पूर्ण परिणाम उसकी मृत्यु में हुआ और इससे अव्यवस्था फैलाने वाले

१. एस. के. वनर्जी-पूर्व उद्भृत, पृ० २०-३२ ।

तत्वों को वढ़ावा मिला । इस प्रकार राव जैतसी ने पाया कि उसका नवी-दित राज्य गम्भीर संकटों से विरा हुआ या। एक स्रोर नागीर ख्रीर नारनील के स्रफगान शासक राज्य की वर्तमान परिस्थितियों का लाभ उठाने को उत्सुक थे, तो दूसरी स्रोर जैसलमेर का राव स्रलग कष्ट दे रहा था।

श्रतः राव जैतसी ने यह समक्त कर, सन् १५२६ में, ज्योंही वह गद्दी पर वैठा, सबसे पहले अपने यहां सुन्यवस्था कायम करना श्रारम्भ किया । उसने अपने पिता राव लूणकरण की मृत्यु के लिये उत्तरदायी कल्याणमल बोदा' से युद्ध किया । कल्याणमल पर यह श्राक्रमण ४ श्रक्ट्र-वर सन् १५२७ को हुआ था । कल्याणमल बच निकला श्रीर उसने नागौर के लान के यहां शरण ली । इस पर राव जैतसी ने द्रोणपुर की खाली गद्दी पर राव बीदा के पौत्र श्रीर संसार चन्द्र के पुत्र सांगा को बैठा दिया।

इस समय मुगल साम्राज्य का राजनैतिक संगठन भी ध्यान देने योग्य है। अपने पुत्रों में प्रेम बनाये रखने के लिये बाबर सब के साथ समान व्यवहार में विश्वास रखता था। उसने अपने बड़े पुत्रों को उत्तरी पश्चिमी और पश्चिमी मागों के स्वेदार नियुक्त किया, ताकि सरकार मजबूत बनी रहे। इसी का परिणाम था कि उसने अपने पुत्रों हुमायूं, कामरां और असकरी को पूर्वोक्त त्तेत्रों में नियुक्त किया। उसने अपनी मृत्यु के समय हुमायूं को निर्देश दिया था कि वह परिवार के सदस्यों में एकता की भावना न केवल कायम रवस्त्रे बल्कि और भी बढ़ाये। इस प्रकार हुमायूं की घरेलू नीति उसके पिता द्वारा पहले से ही निर्धारित कर दी गई थी। लेकिन कामरां एक महत्वाकांची व्यक्ति था और हुमायूं के सिंहासनारुढ़ होते ही उसने अपने राज्य विस्तार का प्रथम अवसर प्राप्त किया और लाहौर को अपने राज्य में मिला लिया। वाद में बाबर के आदेशानुसार पारिवारिक एकता बनाये रखने के लिये हुमायूं ने पंजाब का स्वा कामरां को दे दिया। उसने काबुल, कन्धार और पंजाब के देने का एक फरमान जारी किया और शीघ ही हिसार फिरोजा भी कामरां को दे दिया।

यह कल्याग्रमल राव जैतसी का पुत्र राव कल्याग्रमल नहीं है जो कि सन् १५४२ में बीकानेर के राज सिंहासन पर बैठा ।

२. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ३७-३८ ।

३. एस. के. वनर्जी-पूर्व उद्धृत, पृ० ४२-४७।

पर कामरां ने ग्रापने को पंजाब श्रीर श्राफगानिस्तान का स्वतन्त्र शांसक बना लिया और लाहौर को अपनी राजधानी वनाया। सन् १५३७ तक हुमायू श्रीर कामरां ने अपना अधिकार श्रीर भी बढ़ाया श्रीर अपने पास के इलाकों को ऋषीन कर लिया। लेकिन बीकानेर खतन्त्र रहा। घमएडी कामरां को यह बात कांटे की तरह खटकी । अतः उसने बीकानेर पर आक्रमण के लिये अपनी सेना को तैयार करने का ख्रादेश दिया । बीकानेर पर कामरां के आक्रमण का एक दूसरा कारण यह बताया जाता है कि जैतसी के आदेश पर जब कान्धल के पौत्र खैतसी ने मटनेर पर त्राधिकार किया तो एक जैन यति बीकानेर के सैनिकों के व्यवहार से अप्रयन्त हो गया था। जैन यति तव दिल्ली में कामरां के पास गया ख्रीर उसे बीकानेर पर ख्राक्रमण करने के लिये कहा कामरां सन् १५३८ में एक बहुत शिक्त शाली सेना लेकर भटनेर पर चढ़ स्राया। किला उस समय खेतसी के अधिकार में था। खेतसी श्रीर उसके मुट्टी भर सायी वड़ी बहादुरी से लड़े । पर किले पर मुगलों का ऋघिकार हो गया। इस विजय से उत्साहित होकर उन्होंने बीकानेर पर चढ़ाई की। उन्होंने बहुत सा धन भेंट करने और कामरां की ऋधीनता स्वीकार करने की मांग की। राव जैतसी बहुत क्रोधित हुआ श्रीर कामरां के दूत को लौटा दिया। दूसरे दिन प्रातः बहुत बड़ी मुगल सेना ने नगर पर त्राक्रमण किया त्रीर बीकानेर के किले को घर लिया। राव जैतसी शीव ही देशनोक पहुँचा स्त्रीर करणी जी की प्रार्थना कर दैवी सहायता चाही । जब उसे इसका विश्वास हो गया तो उसने शत्रुख्रों पर रात्रि में हमला किया । मुगल सेना हक्की बक्की रह गई श्रीर पूर्ण रूप से पराजित हुई । जनश्रुति है कि राव जैतसी को

२. नेंग्रसी-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० १६२ ।

२. अगरचन्द नाहटा-बीकानर जैन लेख संग्रह, मूमिका पृ० १० पुस्तक पृ० २ शिलालेख २ (ख) संतत् १५६१ वर्ष सुद्रलाधिप कामरा पातसाहि समागमे विनाशित परिकरस्य उद्र (द) रित श्री आदिनाय मूलनायकस्य वोहियरा गोत्रे म० वच्छा पुत्रो म० वरसिंह मार्या श्री ठीऊल (१ वीम्नल) दे पुत्र मं० मेवा मार्या महिगल दे पुत्र मं० वयरसिंह ... श्री जयतसिंह विजय राज्ये।"

इ. दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ५४। जर्नल ऑफ इन्डियन हिस्ट्री, माग ११, अंक १-३, १६३२ पृ० १६४ पर लाहीर के प्रोफेसर श्रीराम शर्मा का "हुमायू और मालदेव" शिर्षक लेख। डा० टैसीटोरी द्वारा अनुवादित बीटू सूजा के अन्य राव जैतसी रो छन्द में इस युद्ध का सजीव वर्णन मिलता है—

दैवी सहायता प्राप्त हुई। कामरां ने देखा कि हजारों चारिएयां उसकी सेना को निष्ट कर रही हैं। सबेरा होने पर बची खुची मुगल सेना अपनी जान बचाने के लिये लाहीर की ओर भागती नजर आई। वास्तव में कामरां इतनी शीवता से पीछे हटा और घबराहट इतनी अधिक थी कि जब गांव छोटेड़िया में उसका शाही छन्न गिरा तो उसे उठाने के लिये भी वह नहीं

"भाले रूपी संडासी से उसने इसे ग्रहण किया और मोड़ा, तब अत्यधिक शिक्त से उसे (मट्टी में) फूँक मारी, इसे पिचलाया इसका पिएड बनाया तब उसने इसे अपने शस्त्र रूपी हथोड़े से पीटा और पहले जो टेढ़ा था उसे सीधा करके उसने इसे चमकाया, तब तलवार से उसने इसके टुकड़े टुकड़े किये और बाद में उसने इसे सोने के बराबर तोला। किव शिवा ऐसा कहता है। सूणकरण के पुत्र ने शीव्रता से शत्रु की शरीरों की जन्त्री में से माले के रूप में से इसे बाहर निकाला। इस प्रकार राव जैतसी ने कामरां की सेना को वैसे ही तोड़ा और ढ़ाला जैसे सुनार सोने की तोड़ता और ढ़ालता है।

घोड़े और हाथियों की घंटियाँ नुपूर ध्विन को तरह भनभानाने लगी, चोले की जगह कवच धारण किया गया। साधारण वाजों की जगह रण-वाद्य बजाये गये, सिर पर पुष्पों की जगह शिरस्त्राण रक्खे गये तलवारों से ताल दी गई। युद्ध के लिये कमर कसी गई और प्रहारों से शत्रु के शारीर को मोड़ दिया गया। किन शिवा कहता है कि मैं सत्य कह रहा हूं इस प्रकार राव ज्याकरण के अजय पुत्र राव जैतसी ने कामरा की सेना को नट की तरह नचाया।

श्रपनी सेना को ३ मागों में बांट कर उसने उसे कुन्ड की तरह सजाया श्रीर जब श्रनेक घावों से रक्त घी की तरह प्रवाहित हो रहा था तो श्राटे की तरह घोड़ों श्रादिमयों श्रीर हाथियों को उसमें उड़ेल कर उसने उनकी शीव बिल चढ़ाने का निश्चय कर लिया। रेत का बादल धुयें के समान मालूम पड़ा श्रीर चमकती हुई तलवारें ज्वालाश्रों की तरह लपलपाई। तब श्तुश्रों के मस्तकों को नारियल की मांति लेकर जबिक गिद्ध मांस के लिये ब्राह्मणों की मांति बिल मूमि में पकित्रत हो रहे थे, लूग्फरग्ण के पुत्र ने युद्ध की श्राह्मि दी कि शिवा कहता है कि इस प्रकार राव जैतसी ने श्रपने श्तुश्रों की श्रमिन में बिल दी श्रीर शंकर ने खोपड़ियों को पहना श्रीर बिल की श्रमिन से बची मरम को लगाया।

१. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, ए० ५४।

रका । यह गांव बाद में राव जैतसी ने करणी जी के परिवार के चारणों को दे दिया अगर जो मुगलों पर राठौड़ों की विजय स्वरूप आज भी उस छत्र को रक्खे हुये हैं।

जोधपुर के राव गांगा का पुत्र मालदेव अपने पिता से असन्तुष्ट या क्योंकि राज्य का अधिकांश भाग उसके हाथ से निकल गया था अतः उसने अपने पिता को भरोखे से नीचे गिरा कर मार डाला और जोधपुर की गद्दी पर अधिकार कर लिया । महत्वाकांची होने के कारण सन् १५४१ में उसने वीकानेर पर चढ़ाई की । जयसोम के अनुसार जैतसी ने मालदेव को अपने से अधिक शिक्तशाली पाकर अपने मन्त्री नगराज को मेंट देकर शेरशाह के पास सहायता के लिये भेजा । लेकिन इसी बीच मालदेव ने हमला कर दिया और राव जैतसी २६ फरवरी सन् १५४२ को युद्ध में लड़ते हुए मारा गया ।

इस समय बीकानेर के शासकों की संरक्तक इष्टदेवी करणी जी का स्वर्गवास हो गया। बीकानेर की स्थापना की तिथि से लेकर आज तक न केवल बीकानेर का राजधराना बल्कि साधारण लोग भी उनकी पूजा करते रहे हैं और

पाउलेट ने भी अपने बीकानेर राज्य के गजेटियर में पृ० १६ पर इस घटना का उल्लेख किया है।

दयोत्तदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ५४ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० १५ ।

२. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० १५ ।

३. जयसोम-पूर्व उड्डूत, श्लोक २०५-२१८।

थ. लेकिन दयालदास अपनी ख्यात (पृ० ५७) में लिखता है कि जब मालदेव बीकानेर पर हमला करने आया तो राव जैतसी अपनी सेना के साथ उसका मुकाबला करने गया और साहेवा नामक गाँव में डेरे डाल दिये। यहाँ पर कुछ पठान जिनसे राव जैतसी ने कुछ घोड़े खरीदे थे और जिन्हें कामदारों की असावधानी से मूल्य नहीं जुकाया गया था, आये और कीमत माँगी। इस पर राव जैतसी ने अपने लोगों से कहा कि वह पठानों को रुपये देने का प्रवन्ध करने के लिये बीकानेर जा रहा है और डेरे में किसी को भी उसके जाने की बात न बताई जाय। राव जैतसी की वापसी में देर हो गई और डेरे से उसके जाने की बात खुल गई। इसके फलस्वरूप उसके बहुत से सरदार अपनी सेना लेकर चले गये। जब राव जैतसी छरे में लौटा तो मालदेव ने उस पर आक्रमण कर दिया। राव जैतसी अपने अनेक बहादुर योद्धाओं के साथ मारा गया।

उनकी चमत्कारी शिक्तियों की प्रशंसा करते रहे हैं। अतः बीकानेर के इतिहास में उनके चमत्कारों का उल्लेख पाकर आश्चर्य नहीं होता। इस महान् देवी ने जो चमत्कार दिखाये उनके बारे में चाहे लोग सन्देह करें और उन्हें न मानें लेकिन ईसाइयों और दूसरे लोगों में हुये चमत्कारों में वे पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुये प्रतीत होते हैं। कहावत है कि राव जैतसी की पीठ के फोड़े को केवल स्पर्श मात्र से ठीक करके करणी माता एकाएक अदृश्य हो गई। बाद में उनके द्वारा एक अन्धे खाती (सुथार) को पुनः दृष्टि देने की बात भी कही जाती है। कहा जाता है कि कारदिया तलाई पर उन्होंने अपने को एक कम्बल में लपेट लिया और समाधि लगा ली। सहसा अपने आप लप्टें फूट पड़ी और वे अदृश्य हो गई। बीकानेर से २० मील दूर देशनोक में उनका मन्दिर एक तीर्थ स्थान है और प्रति वर्ष सारे राजस्थान से हजारों लोग वहां दर्शन करने आते हैं। उनका मन्दिर और यश दिल्ए में अहमदनगर तक है जहां महाराजा कर्णसिंह द्वारा निर्मित करणी जी का मन्दिर आज भी है।

वीकानेर का पतन निकट जान राव जैतसी का मन्त्री नगराज उनके वहे पुत्र श्रीर बीकानेर की गद्दी के उत्तराधिकारी राव कल्याण्मल श्रीर राजघराने के दूसरे सदस्यों को, जब वह शेरशाह से सहायता मांगने के लिये गया तो श्रपने साथ ले गया श्रीर उन्हें सिरसा में छोड़ दिया जो उस समय बीकानेर के इलाके में था श्रीर बीकानेर से काफी दूर था। जैतसी की मृत्यु का बदला लेने का भार उसके पुत्र श्रीर उत्तराधिकारी कल्याण्मल पर पड़ा जो ६ जनवरी सन् १५१६ को उत्पन्न हुआ था। सन् १५४२ में जब वह बीकानेर की गद्दी पर वैठा तो बीकानेर राज्य का कुछ भाग जोधपुर के मालदेव के श्रिधकार में था। राव कल्याण्मल ने खोई हुई भूमि पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न किया। इसमें शेखसर के गोदारा जाट सरदार ने भी उसकी सहायता की पर सफलता नहीं मिली। अतः राव कल्याण्मल श्रीर उसके छोटे भाई भीमराज ने दिल्ली के बादशाह (शेरशाह) से सहायता लेने का निश्चय किया श्रीर भीमराज ५० सैनिकों के साथ दिल्ली के लिये रवाना हो गया चूँक हुमायू सूरों

१. जयसोम-पूर्व उद्धृत, छन्द २१५।

दलपत निलास (पृ० ४) के अनुसार रान कल्याणमल का राजतिलक ठाकुरियासर गाँव में किया गया था।

३. पाउलेट-पूर्व ठढ्त, पृ० १७।

४. वही।

से हार कर माग गया था, राव मालदेव ने महत्वाकांची होने के कारण इसे हुमायूं की सद्भावना प्राप्त करने का एक ग्रन्छा श्रवसर समभा । श्रतः राव मालदेव ने हुमायूं के पास भक्कर में जहां वह २६ जनवरी सन् १५४१ को पहुँचा था, अपनी सहायता का सन्देश मेजा। पर हुमायूं को थट्टा के शासक शाहहुसैन से सहयोग मिलने की ऋाशा थी, उसने मालदेव के सन्देश पर ध्यान नहीं दिया । लेकिन कहीं से सहायता न मिलते देखकर शाहहुसैन पर आक्रमण किया । इसमें वह असफल रहा आतः हुमायूं ने मालदेव से सहायता लेने का निश्चय किया । वह फलोदी पहुँचा । वहां उसने अपने डेरे लगा दिये और अपने दूत अत्काखां को मालदेव के पास भेजा। र मालदेव को इसी बीच शेरशाह की श्रेष्ठतर शक्ति का पता चल गया था। तत्र तक शेरशाह ने नागौर जीत लिया था स्रतः मालदेव ने हुमायूं की सहायता करने का ऋपना विचार बदल दिया। उसने किसी वहाने से ऋत्काखां को जोधपुर में रोक रखने की कोशिश की लेकिन अरकाखां को मालदेव के विचारों का पता चल गया। वह फलोदी भाग गया त्र्यौर उसने हुमायूं को सारी स्थिति से परिचित करा दिया। शेरशाह वंगाल के सूवेदार को हराने के लिये गया हुन्ना था। जब वह वहां से त्रागरा लौटा तव हुमायूं फलोदी में ही था। उसे पता चल गया कि हुमायूं ने जोधपुर के इलाके में शरण ले रक्खी है स्रतः उसने एक बड़ी सेना के साथ जोघपुर पर चढ़ाई की। उसने मालदेव को कहलवाया कि या तो हुमायूं को अपने राज्य से निकाल दो या लड़ने के लिये तैयार हो

एच. डबल्. इिलयट-हिस्ट्री ऑफ इिन्डिया एज टोल्ड वाई इट्स हिस्टोरियन्स, माग ४, पृ० २११।
 बी. डे.-तबकाते अक्रवरी, माग २, पृ० ५३-५४।

इिलयट-पूर्व उद्धृत, माग ४, पृ० २०७-११ ।
 बी. डे.-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ५४ ।
 मिर्जा किलचवेग फ्रोडनवी-हिस्ट्री ऑफ सिन्घ, माग २, पृ० ५४ ।
 जर्नल ऑफ इन्डियन हिस्ट्री, माग ११, अङ्क १-३, १६३२ पृ० १६२-२०२ ।
 लाहौर के प्रोफेसर औराम शर्मा का "हुमायू और मालदेव" शीर्षक लेख (इसमें तारीखे हिन्दो सिन्घ पृ० २५२ का हवाला दिया है ।)
 सी. स्टुवर्ट-तजिकरात-उल-वािकयात, पृ० ३६-३५ ।

इलियट-पूर्वं उद्धृत, माग प्र, पृ० २११-१२ ।

जात्रों 1 हुमायूं को जन शेरशाह के त्राने त्रीर मालदेव के धोखे की खनर मिली तो वह त्रमरकोट मान गया।

इस घटना ने शेरशाह को मालदेव के प्रति सन्देहर्शाल बना विया क्योंकि उसकी महत्वाकां या प्रकृति को वह अच्छी तरह से जानता था। इसी समय मालदेव की शिकायत लेकर नागौर का वीरमदेव भी शेरशाह के पास पहुँच गया था। बीकानेर के मन्त्री नागराज ने इन सब अवसरों का लाम उठाया और उसने शेरशाह को जोधपुर पर आक्रमण करने के लिये सहमत कर लिया। शेरशाह अपने शासन को सुदृढ़ करने के लिये प्रभावशाली व्यक्तियों को अपने पच्च में करना चाहता था। अतः सहायता मांगने वालों को वह तुरन्त दो गईं और जनवरी सन् १५४४ में शेरशाह एक शिक्तशाली सेना के साथ रवाना हुआ। मेड़ता पहुँचने पर सिरसा से राव कल्याणमल उससे आ मिला। मालदेव की सेना उस समय अजमेर में डेरे डाले हुये थी। शेरशाह की सेना भी वहीं पहुँची। एक महोने तक दोनों सेनायें एक दूसरे के आक्रमण की प्रतीचा करती रहीं। अन्त में मालन्वेव की पूर्ण पराजय हुई और जोधपुर पर शेरशाह का अधिकार हो गया। इसी

१. के. स्रार. कानूनगो-शेरशाह, पृ० २७५-७६ । इलियट--पूर्व उद्धृत, भाग ५, पृ० २१३ ।

२. जयसोम-पूर्व उद्भृत, छन्द २१३-१५।

इ. दलपत निलास (पृ०५) के अनुसार एक नार संकट के समय नीकानेर के रान लूग्यकरगा ने शेरशाह और उसके पुत्र सलीम शाह को शरगा दी थी और सेना की थी। अतः इस उपकार का नदला जुकाने के लिये इस अन-सर पर सहायता देने हेतु शेरशाह बहुत उत्सुक था।

४. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० २१ ।

नैएसी-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० १४ = १४६ ।
डा० टैसीटोरी द्वारा अनुवादित बीठू सूजा के अन्य "राव जैतसी रो छन्द"
में इस युद्ध का सजीव वर्णन मिलता है— "जब विजली की तरह गड़गहा—
हट की प्रतिध्विन होने पर दूसरे राजा अपने हृदय में कांपे, तभी विश्व
जैतसी के पुत्र के कार्य को जान सका । कल्याण मंडोवर वालों को कुच—
लने के लिये एक असीम चहान की मांति वादशाह को ले आया था ।
एक ओर से मुस्लिम योद्धाओं ने अपनी पैदल सेना और घुड़सवारों से हमला
किया । एक शिकिशाली हल्के पत्थर के समान धमाके की आवाज करते हुए

बीच रावत किशनसिंह को मालदेव द्वारा बीकानेर में स्थापित थानों पर अधिकार कर लिया या यहां तक कि उसने मालदेव के स्वेदार से बीकानेर का किला भी छोन लिया और कल्याणमल को शासक घोषित कर दिया। जोघपुर पर अधिकार करने के बाद शेरशाह ने कल्याणमल का राजतिलक किया के कल्याणमल बीकानेर लौट गया। नगराज शेरशाह के साथ दिल्ली चला गया और कुछ समय बाद जब यह वापस बीकानेर लौट रहा था तो मार्थ में अजमेर में उसकी मृत्यु हो गई। कल्याणमल भी जो अपना पन्न प्रस्तुत करने हेतु शेरशाह के साथ दिल्ली गया था, उसकी आजा से वापस बीकानेर लौट आया। इस दिन के बाद से बीकानेर के शासक केन्द्र की शाही सत्ता से सीधे राजनैतिक सम्बन्ध में आ गये।

बीकानेर लौटने पर राव कल्याणमल ने एक दरबार किया और अपने माई भीमराज द्वारा दी गई सहायता की सार्वजनिक प्रशंसा करते हुये उसे "गई भूमिका बाहडू" विरुद्द दिया । रावत किशनिष्ठंह को जैतपुर मिला ।

२४ मई सन् १५४५ को कालिंजर के युद्ध में शेरशाह की मृत्यु के शीव बाद राव मालदेव ने जोधपुर पर पुनः ऋषिकार कर लिया । उसने

सुल्तान राव मालदेव की छाती पर जा गिरा। पहले ही हमले में मालदेव अपना राज्य और युद्ध की भावना छोड़कर माग गया। सूरों ने, जिन्हें कल्याएमल राव जैतसी का वदला लेने के लिये और जोधपुर को कुचलने के लिये एक वड़ी चट्टान की भांति ले आया था, अपने चरएों से वहां की धरती को रोंद डोला।

शत्रु कुचले गये। तिरोध का वदला लिया गया। मालदेव वर्नीद हुवा श्रोर राठौड़ वंशावतंस लूगुकरगु का पौत्र बहुत हिर्षत हुश्रा। महान राव हटा दिया गया। बीका की नगरी जीत ली गई श्रोर धरती अपने रच्क कल्यागु राठौड़ के नीचे सुरिक्तत हो गई।

- १. वीकानेर राज्य के मुख्य सरदारों में से एक रावतसर का ठाकुर।
- जयसोम—पूर्वं उद्भृत, श्लोक २१३-२२ । इन श्लोकों में विक्रमपुर शब्द श्राया है जो वीकानेर के लिये है ।
- ३. वही।
- ४. पाउलेट--पूर्व उद्धृत, पृ० २१ । दयालदास--पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ७६ ।

में इता पर भी ग्राक्रमण किया जो वीरमदेव के पुत्र जयमल के ग्रिधिकार में था। बिना किसी की सहायता के इस ग्राक्रमण का मुकावला करने में ग्रापने की ग्रासमर्थ पाकर जयमल ने कल्याणमल से सहायता मांगी। घह उसे तुरन्त मिली। फलस्वरूप जोधपुर की सेना हार गई। व

जब ग्राकबर राज्य सिंहासन पर बैठा तो हाजी खां नामक एक शक्तिशाली सेनापित ऋलवर का स्वेदार या । ऋकबर ने वहां से उसे निकालने के लिये मोहम्मद सर्वानी (नासिरउलमुल्क) की अधीनता में अपनी सेना भेजी । हाजी खां त्राजमेर भाग गया। उराव मालदेव को जब इसका पता चला सो उसने भागते हुये हांजी खां को लूटने के लिये पृथ्वीराज जयतावत को भेजा। हाजी खां श्रकेला पृथ्वीराज के हमलों का मुकावला करने में श्रममर्थ था स्रतः उसने उदयपुर के महाराणा उदयसिंह से स्रीर राव कल्याणे-मल से सहायता मांगी । उसे तुरन्त सहायता दी गई । पृथ्वीराज श्रीर उसके सैनिक बिना लड़े ही वापस लौट गये। राव कल्याग्रमल की सेना भी वापस लौट ऋाई 18 सन् १५६० में जब वैरामखां ऋकबर द्वारा प्रधानमन्त्री पद से हटाया गया तो उसने मक्का की तीर्थ यात्रा पर जाने देने की स्राज्ञा मांगी / तेकिन जल्दी ही स्पष्ट हो गया कि वह पंजाश्र में जाकर विद्रोह फैलाना चाहता था । स्रतः स्रकवर ने उस पर चढ़ाई कर दी । वैरामखां मारवाड़ होकर गुजरात भाग जाना चाहता या लेकिन जब उसकी मालूम हुन्ना कि राव मालदेव ने उसका रास्ता रोक लिया है; वह वापस लौटा ञ्चौर उसने राव कल्याग्रमल ख्रौर उनके पुत्र रायसिंह से शरग्र मांगी जिन्होंने उसे अपना परम्परागत राजपूती आतिश्य दिया । १

- भालदेव को हराने श्रीर जोधपुर को जीतने के बाद शेरशाह ने मेहता पर पुनः वीरमदेव का श्रिषकार करा दिया था ।
- २. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ७५-६२ ।
- वेवरिज-अकवरनामा, भाग २, पृ० ७१-७२।ईलियट-पूर्व उद्धृत, माग ६, पृ० २१-२१।
- ४. दयालदास-वही, माग २, पृ० ८७-८८ । ईलियट-वही, भाग २, पृ० २१-२२ ।
- प्र. वी. हे.—वही, माग २, पृ० २४३ ।
 ईलियट-वही, माग ४, पृ० २६४ ।
 पच. व्लाकभेन--श्राईन-ए-श्रकवरी, माग १, पृ० ३१६ ।
 एच. वेवरिज-श्रकवरनामा, भाग २, पृ० १४६ ।
 मुन्शो देवीप्रसाद-राव कल्याणमल जी का जीवन चरित्र, पृ० १०६ ।

राव कल्याण्मल के भाई टाकुरसी ने पहले ही भटनेर के प्रधान ग्रहमद से वहां का किला छीन लिया था । कुछ समय से उसका इस पर ग्रिधिकार था । उसने पड़ोस के सिरसा, फतेहाबाद ग्रीर सिवाड़ी परगनों पर भी ग्रिधिकार कर लिया या । एक बार बादशाही खजाना डाकुग्रों द्वारा उसके इलाके में लूटा गया अतः अकवर ने हिसार के स्वेदार निजामुल्मुल्क को भटनेर पर इमला करने का हुक्म दिया। किला घर लिया गया। लेकिन काफी समय तक कोई सफलता नहीं मिली। अन्त में जब किले पर दबाव ज्यादा हो गया छौर किले में रसद पहुँचनी बन्द हो गई तो राजपृत शत्रु पर टूट पड़ें। ठाकुरिंस और उसके साथी लड़ते हुये मारे गये और निजामुल्मुल्क ने किले पर त्राधिकार कर लिया । इस पर ठाकुरसी का ^{हंयेष्ठ} पुत्र वाघा बीकानेर चला गया जहां वह कुछ समय तक स्रपने च।चा के पास रहा क्रीर बाद में राव कल्याण्या से स्वीकृति लेकर दिल्ली में वादशाह की सेवा में चला गया । वहां उसने ऋपनी ऋसाधारण शक्ति श्रौर वीरता से वादशाह का ध्यान ऋपनी ऋोर आकर्षित किया। एक बार एक फारसी घनुष को वादशाह के दरवार में कोई न चढ़ा सका पर बाधा ने उसे चढ़ा दिया । एक दूसरे अवसर पर उसने अपने हाथों से ही एक बाध को मार डाला। बादशाह उससे बहुत प्रसन्न हुन्ना स्त्रीर उनसे कहा- "वाघा जो तुम्हारी इच्छा हो मांगों ।" बाघा ने भटनेर मांगा ग्रौर वादशाह ने उसकी प्रार्थता स्वीकार कर ली । वाधा ने भटनेर में श्री गोरखनायजी का एक मन्दिर बना कर इंस शुभ अवसर को मनाया।

राव कल्यागमल दूरदर्शी श्रीर चतुर शासक था। उसने शीव ही श्रमुभव किया कि दिनों दिन बढ़ती हुई सत्ता श्रीर शिक्त बाले मुगल बादशाह से मित्रता करने में ही उसका हित है। जब हम पड़ौसी राज्य जोघपुर के बीकानेर पर बराबर हमलों को ध्यान में लाते हैं तो उसके इस निर्णय की समभदारी में कोई मतभेद नहीं हो सकता। श्रातः १५७० ई० में जब श्रकवर श्रावमेर के ख्वाचा मुईनुद्दीन चिश्ती की जियारत से वापस लौटते हुए नागौर श्राया तो राव कल्यागमल श्रपने पुत्र महाराज कुमार रायसिंह के साथ नागौर पहुंचा। वह कई

१. पाउलेट-नहीं, पृ० २२--२३। दयालदास--नहीं, भाग २, पृ० --३---६। सुन्शी देवीप्रसाद-राव कल्याणमस जी का जीवन चरित्र, पृ० १०६।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ५७ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २३ ।

दिन बादशाह की सेवा में रहा । जब बादशाह ने पंजाब की स्त्रोर प्रस्थान किया तो राव कल्याणमल बीकानेर लौट स्त्राया लेकिन उसका पुत्र रायसिंह बादशाह के साथ रहा । सन् १५७० में राव कल्याणमल को दो हजार का जाति मनसब स्त्रीर दो हजार सवारों का मनसब मिला ।

इस व्रेमपूर्ण सम्बन्ध का कारण अकबर की वहें नीति भी थी जो खून खरात्री और युद्ध की विरोधी यी । अक्टर महान् कृटनीतिज्ञ था श्रीर श्रपने लच्य को पाने के लिये वह हमेशा दूसरे समी तरीके पहले कार्म में लाता था। इसी से उसे काफी सफलता मिली। उसने यह अनुभव किया कि सुगल साम्राज्य को अफगान खतरे की सम्मावना पूर्णतः मिटी नहीं है श्रीर इसे मिटाने में राजपूतों की सहायता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उसने सफलता से उनका सहयोग ध्रौर समर्थन प्राप्त किया। इस कार्य में वह इतना सफल हुआ कि उतके राज्य विस्तार के लिये राजपूत श्रापस में ही सन् १५६२ में मेड़ता में, सन् १५६३ में जोधपुर में, सन् १५६७-६८ में चितौड़ में, सन् १५६९-७० में रण्यम्भोर में स्रौर १५६९ में कालिन्जर में लड़े। सन् १५७० में जब स्रक्वर नागौर में डेरा डाले हुये था तो उन्होंने जल्दी से जल्दी वहां पहुंचकर उसे अपना बादशाह स्वीकार करने में भी एक दूसरे से प्रतिस्पर्दा दिखाई । अतः बीकानेर कोई अपवाद नहीं था। इस कार्य में अकवर की धार्मिक सिहण्याता की नीति तथा जिया हटाने ने वहत वल दिया । यद्यपि यह कहा जाता है कि अकबर की धार्मिक नीति राजनीतिक कारणों से निर्देशित थी पर इस सत के समर्थन में कोई प्रमाण नहीं मिलता। दूसरी छोर ख्रवुल फजल के छाधार पर हम श्रिधकृत रूप से कह सकते हैं कि श्रकवर एक गहन धार्मिक व्यक्ति था। चूंकि स्वयं राजपूत बहुत धार्मिक थे ऋतः यह स्वामाविक है कि वे उससे बड़ी सरलता से प्रभावित हो सके।

यह मान लेना चाहिये कि राज्यारोहण के शीव्र बाद ग्रक्तवर ने यह ग्रम्भन किया कि ग्रफगानों का खतरा वड़ा जबरदस्त है ग्रोर विना राजपूतों की सिक्रय सैनिक शक्ति के न तो ग्रफगानों को हराना सम्भन है ग्रीर न मुगल साम्राज्य को शिक्तशाली वनाना सम्भन है।

१. वेवरिज-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ५१६-१६ । डब्तू. एच. लो-मुंतखबुत्तवारीख, माग २, पृ० १३७ । दलपत विलास, पृ० १३ ।

व्लाकमैन-पूर्व उद्भृत, माग १, पृ० २५७ ।
 मोहस्मद सईद अहमद-उमराय हनुद (हिन्दी), पृ० २५४ ।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सन् १५२६ से सन् १५७४ की अविध में बीकानेर के राजधराने और केन्द्रीय शासकों में जो सम्बन्ध बना वह बीकानेर के शासकों की आवश्यकता से बना क्योंकि वे जोधपुर राज्य के हमलों और अपने राज्य के लुटेरों और उपद्रवी लोगों से अपनी रक्षा चाहते थे। साथ ही केन्द्रीय शासक मी अपने इलाके को मजबृत बनाने के लिये बीकानेर से सहायता चाहते थे। यह बात ध्यान में रखने की है कि सन् १५७० तक बीकानेर स्वाधीन रहा और सन् १५७० में जब यहाँ का शासक मुगल दरवार का मनसबदार बन गया तो बीकानेर के शासक मुगल दरवार में उच्च सम्मान और इज्जत तथा पूर्ण विश्वास प्राप्त करते रहे।

श्रध्याय ३

रायसिंह और मुगल बादशाह

रायसिंह का जन्म २० जुलाई सन् १५५१ को हुआ था। वे सन् १५७४ में गद्दी पर विराजे और अपने पूर्व शासकों की राव उपाधि के स्थान पर अपनी उपाधि महाराजाधिराज और महाराजा रखी। राव रायसिंह अकबर के समकालीन थे।

रायसिंह एक प्रसिद्ध योद्धा थे। सुगल साम्राज्य को मज़बूत. बनाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भाग ऋदा किया। सुगलों की ऋोर से बे बराबर किसी न किसी संघर्ष में लगे रहे। कहा जाता है कि उनके घोड़े

- १. नैएसी-पूर्व उद्भृत, भाग २ पृ. १६६ ।
 टॉड-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ. ११३२ ।
 इन दोनों ने उनका राज्यारोहरण सन् १५७३ लिखा है। राव कल्यारामल की छत्री
 के शिलालेख में उनकी मृत्यु सन् १५७४ में होनी लिखी है पर पाउलेट श्रीर
 दयालदास ने रायसिंह का राज्यारोहरण सन् १५७१ माना है।
- ६. टॉड-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ११३५ "अकबर के सभी युद्धों में राजा रायसिंह ने अपने बहादुर राठौड़ सैनिकों का नेतृत्व किया।"

की काठी ही उनका सिंहासन थी। सच्चे राजपूतों की वीर परम्परा में पल कर बड़े होने के कारण, उनमें युद्ध श्रीर साहसिक कायों के प्रति एक महज लगाव था । युवावस्था में ही वे एक ऐसे भयंकर पठान सरदार से भिड़ गये थे जिसने न केवल उद्वयुपुर के राना को बुरी तरह से हराया था विलक त्रकबर की सेनात्रों की भी दाल न गलने दी थी। 3 इस मिड़न्त में सफलता पाकर उनमें एक ऐसा ब्रात्म विश्वास उत्पन्न हुन्ना जो वाद के वधों में उनके लिये हमेशा बहुत काम का सिद्ध हुन्ना। उनकी रोनिक प्रतिभा, ग्रत्यधिक वीरता श्रीर प्रशासन की चमता उनके कुछ ऐसे गुण थे जिन्होंने दिल्ली के केन्द्रीय शासन से सम्बन्ध स्थापित करने में महत्वपूर्ण योग दिया । लेकिन यदि उस समय देश की राजनीतिक दशा वैसी न होती तो सम्भव है उनके ये गुण अज्ञात रहते। राणा प्रताप मुगल विरोधी कार्यों में लगे हुये थे और सिरोही तथा जालौर के शासक भी उनसे मिले हुये थे। बीकानेर के निकट जोधपुर की दशा, चन्द्रसेन की श्रयोग्यता^१ श्रीर श्रन्याय के सत्ता ग्रहण करने के कारण, खराब हो गई थी। अपनी माता स्वरूपदे, जो मालदेव की प्रिय रानी थी, के प्रभाव से राज्य के सच्चे उत्तराधिकारी रामसिंह के स्थान पर चन्द्रसेन राजगद्दी पर बैठा। इसके त्रातिरिक्त गुजरात की स्थिति भी दिल्ली के मुगल शासकों के लिये चिन्ता उत्पन्न कर रही थी। इन परिस्थितियों ने ग्राकवर को वाध्य कर दिया कि वह बीकानेर ऋौर दूसरे, राजपूत राजाओं से सहायता मांगे। सहायता के लिये उसकी उत्सुकता ने रायसिंह को मुगलों के लिये श्रपना राजनीतिक चातुर्थ श्रीर सैनिक शक्ति उपयोग में लाने का श्रवसर प्रदान

पाउलेट-पूर्व उद्धृत, ृ० २४ ।
 शेरशाह का एक सेनापित हाजीखाँ जो इस समय नागीर परगने और किलें पर अधिकार किये हुये था ।

२. अतस्वारी-राजा रायसिंह, १० २२ ।

य. वही, पृ० २२-२४।

४. सिरोही का सुल्तान देवड़ा श्रीर जालीर का ताजखां।

५. चन्द्रसेन मालदेव का तीसरा पुत्र या पर अपने पिता की इच्छानुसार उसे जोधपुर की गदी मिली । इससे उसके दोनों वहे भाई रामसिंह और उदयसिंह नाराज हो गये। उसके अन्याय से गदी हथियाने व दुर्व्यवहार के कारण उसके जागीरदार भी उससे असन्तर्य हो गये और रामसिंह को गदी पर वैठाने के लिये उससे जा मिले।

किया इससे केन्द्रीय सत्ता के साथ ऐसा सम्बन्ध स्थापित हुआ जो बहुत ही प्रेम-पूर्ण था, जिसे दोनों ही पच्च बहुत महत्व देते थे और जो कई पीढियों तक चलने चाला था।

चन्द्रसेन के अन्याय से गही हिथ्याने के कारण उसके बहुत से सरदार उससे अप्रसन्न हो गये। वे रामसिंह तथा मालदेव के अन्य पुत्रों के पास पहुँचे और चन्द्रसेन को राजगही से हटाने का प्रस्ताव रखा जिसे उन्होंने प्रसन्ता से स्वीकार कर लिया। अतः वे बोधपुर पर हमले करने लगे पर सफलता न मिली। तत्र रामसिंह ने अक्बर से सहायता मांगी जो उसे तुरन्त मिली। इस सैनिक सहायता से रामसिंह ने जोधपुर का किला घर लिया लेकिन सतरह दिन के बाद घरा उठा लिया गया और प्रमावशाली सरदारों के बीच-बचाव से परस्पर समभौता हो गया। इसके अनुसार चन्द्रसेन ने रामसिंह और उदयसिंह को और अधिक इलाका दे दिया। यहाप उस समय शाही सेना लौट गई पर उसने हुसेन कुलीखां के सेनापतित्व में जोधपुर पर पुनः आक्रमण किया। चन्द्रसेन ने चार लाख रुपये देकर उससे सुलह कर ली के लेकिन यह अस्थायी थी और हुसेन कुलीखां ने एक शिक्तशाली सेना लेकर जोधपुर पर पुनः हमला किया। इस बार चन्द्रसेन उससे लड़ा पर उसे जोधपुर छोड़ना पड़ा और भाद्राज्य में शरण लेनी पड़ी। वे

ये सब घटनार्थे सन् १५७० से पहले हुई जबिक अकबर नागौर आया था और बीकानेर की गद्दी पर कल्याणमल थे। अधिकार च्युत दोनों राजकुमार रामसिंह और उदयसिंह अपने पत्त के लिये बादशाह की सद्भावना प्राप्त करने की आशा से उसके पास नागौर आये। चन्द्रसेन भी अपने पुत्र रायसिंह के साथ पुनः जोधपुर राज्य पाने की आशा से बादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। कुछ समय के बाद निराश होकर चन्द्रसेन भाद्राज्य चला गया और अपने पुत्र रायसिंह को बादशाह की सेवा में छोड़ गया। जैसा पहले कहा जा चुका है इसी समय कल्याणमल भी यह अनुभव करके कि बीकानेर राज्य को सुरक्षा और हित, शकित में दिनोंदिन बढ़ती हुई मुगल सत्ता से मित्रता के सम्बन्ध कायम करने में है, इस अवसर का लाभ उठाकर

१. श्रोभा-पूर्व उद्भृत, भाग १, ए० १६४-६५'।

२. वही।

३. श्रोमा-पूर्व उद्भृत, भाग १, ९० १६४-६५ ।

४. वहीं ।

बादशाह के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये उपस्थित हुआ। वह अपने पुत्र रायसिंह के साथ नागौर में बादशाह की सेवा में गया। वहां वे. कुछ समय तक ठहरें। जब अकबर पंजाब की ओर गया तो अपने पुत्र रायसिंह को दरवार में बात चीत चालू रखने के लिये छोड़कर कल्याणमल बीकानेर लौट गया।

श्रफगान राजवंश के पतन के बाद गुजरात स्वतन्त्र हो गया था। इस समय वहां गड़वड़ी ग्रीर ग्रन्यवस्था, दमन ग्रीर विद्रोह फैला हुग्रा था। देश के दूसरे मागों में गड़बड़ी को मिटा कर ख्रीर कुछ स्रवकाश पाकर ग्रकवर ने ग्रपना ध्यान ग्रव गुजरात की ग्रोर दिया। २ जुलाई सन् १५७२ को उसने ग्रांपनी सेना के साथ ग्रागरा से प्रस्थान किया । श्रजमेर पहुँच कर उसने मीर मोहम्मद खाने कलां को एक वड़ी सेना देकर आगे मेजा और एक ख्रीर भी वड़ी सेना के साथ स्वयं उसके पीछे पीछे गया । इस समय महाराज कुमार रायसिंह उसके साथ था। मेड़ता पहुँचने पर उसे ज्ञात हुवा कि सिरोही से मीरमोहम्मद खाने कलां के पास मेल करने के लिये गये हुये दूतों ने घोखें से उस पर वार कर दिया । जब अक्रकर सिरोही पहुँचा तो एक सौ पचास राजपूतों ने उस पर हमला किया। लेकिन वे सव मारे गये । इसके अतिरिक्त राणा प्रतापिंह निरन्तर चिन्ता का कारण या श्रीर राव मालदेव भी बादशाह का विरोधी बन गया था। गुजरात का मार्ग जोधपुर के इलाके में से होकर जाता था। यह ऋसुरिच्चत वन गया था। गुजरात में किसी भी सैनिक संघर्ष की सफलता के लिये यह बहुत महत्वपूर्ण था। दूरदर्शी ग्रकवर ने रिथति की गम्भीरता का शीघ ही श्रनुभव कर लिया। श्रतः रायसिंह जोधपुर का स्वेदार नियुक्त किया गया। उसे न केवल जोधपुर का मार्ग खुला रखने बल्कि शाही राजधानी (आगरा) और उसके चतुर्दिक चेत्र की रक्ता का कार्य भी सौंपा गया। इस कार्य के लिये उसे शाही सेना की एक

१. वेनरिज-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ४१६-१६ । को-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० १३७ ।

इिलयट-पूर्व उद्भृत, माग ५, ए० ३४१।
 एल्फिस्टन-हिस्ट्री श्लॉफ इन्डिया, ए० ४६६।
 लो-पूर्व उद्भृत, माग २, ए० १४४।
 वी. हे.-पूर्व उद्भृत, माग २, ए० ३७२-७३।
 दलपत विलास, ए० १५।
 वेवरिज-पूर्व उद्भृत, माग ३, ७० ८।
 लो लिसता है कि रायसिंह जोधपुर का सुवेदार नियुक्त किया गया, इलियट कहता

टुकड़ी भी दी गई श्रीर इन इलाकों के स्बेदारों श्रीर जागीरदारों के नाम फरमान जारी किये गये कि श्रपने कर्तव्य के पालन में रायसिंह को वे सभी प्रकार की सहायता दें।

जब रायिसंह इस कार्य में लगा हुआ था तो उसे पता चला कि इब्राहीम हुसेन मिर्जा, जिसे शाही सेना ने सरनाल से भगा दिया था, नागौर को घेरे हुए हैं। रायिसंह ने अपनी सेना के साथ तुरन्त नागौर (सन् १५७३ में) प्रस्थान किया। यह जानकर इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने घेरा उठा लिया और भाग गया। रायिसंह और उसकी सेना ने उसका पीछा किया और कठौटी के निकट युद्ध में उसे बुरी तरह पराजित किया। वह पंजाब की ओर भाग गया।

विद्रोह को शान्त करके और कोकल्ताश को गुजरात का स्वे— दार नियुक्त करके अकबर फतेहपुर लौट गया। लेकिन ज्यों ही अकबर फतहपुर लौटा, गुजरात में विद्रोहियों ने पुनः अपना सिर उठाया और मोहम्मद हुसैन— मिर्जा भी अहमदाबाद से उनमें जा मिला। यह खबर सुन कर तेईस अगस्त सन् १५७३ को एक बड़ी सेना लेकर अकबर पुनः गुजरात के लिए खाना हुआ और उसने ८०० मील की दूरी केवल नौ दिनों में पार कर ली। रायसिंह भी जो उस समय गुजरात के पास था, शाही सेना से मिल गया। युद्ध में रायसिंह ने बड़ी बहादुरी दिखाई और द्वंद युद्ध में मुहम्मद हुसेन मिर्जा को मार डाला।

है कि रायसिंह गुजरात का मार्ग खुला रखने के लिये और जोघपुर के इलाके को अपने अधिकार में रखने के लिये मेजा गया था। वेवरिज का कथन है कि रायसिंह को जोघपुर के चेत्र में ठहरने की आजा प्रदान की गई थी। डे का विवरण इलियट से मिलता जुलता है। दलपत विलास में लिखा है कि जोघपुर रायसिंह को दे दिया गया था।

- १. वेवरिज-पूर्व उद्धृत, माग ३. पृ. ४० । इलियट-पूर्व उद्धृत, माग ४, पृ० ३०४ । लो-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० १४३-४४ । दलपत विलास, पृ० २०-२१ । वजरतन दास-मञ्जासिरूल उमरा (हिन्दी), पृ० ३४४ ।
- टॉड-पूर्व उड्डृत, माग २, प० ११३५ ।
 वेनरिज-पूर्व उड्डृत, माग २, पृ० ४६-६३, ७३, ८१-८२, ८५-८६ ।
 मुहम्मद हुसैन मिर्जा युद्ध में हारकर वन्दी बनाया गया और रायसिंह के सुपुर्द

स्यसिंह के भाई, राजकुमार रामसिंह ने भी, जो इस युद्ध के साथ था, एक प्रसिद्ध शत्रु सेनापित को हाथी के ही है से नीचे गिरा कर मार डाला ग्रीर ग्रपने लिये यश प्राप्त किया। उसकी वहातुरी ग्रीर सेवा से प्रसन्न होकर ग्रक्कर ने उसे मनसक प्रदान किया ग्रीर रायसिंह को बावन पर्गने मिले।

श्रपने शासन के सतरहवें वर्ष में सन् १५७४ में जब श्रकवर श्रजनेर में या तो उसे स्चना मिली को जोधपुर का शासक चन्द्र सेन उसके विरुद्ध विद्रोह की तैयारी कर रहा है। इसके लिये उसने अपने निवास स्थान – सिवाना के गढ़ को श्रीर भी हद कर लिया था। वादशाह ने तुरन्त रायसिंह विया कई श्रन्य प्रमुख सरदारों, जैसे शाह कुलीखाँ महरम, श्रिमालखाँ, के केशोदास श्रीर जगतराय को सेना के साथ भेजा।

शाही सेना ने मालदेव के पौत्र श्रीर समिहि के पुत्र करला से सोजत छीन लिया। करला ने वचकर भागने की कोशिश की लेकिन पीछा करने वालों से वचना श्रसम्भव जान श्रन्त में उसने श्रातम-सम्पर्ध कर दिया श्रीर शाही सेना से जिल गया। उसने श्रपने भाई केशोदास को भो बादशाह की सेवा में कर दिया। इस प्रकार जब चन्द्रसेन की विरोध की शिक्त कमजोर हो गई तो शाही सेना ने सिवाने की श्रीर प्रस्थान किया जो

किया गया ताकि वह उसे नगर में ले जाये। जब वह नगर को लेजाया जा रहा था तो इित्तयारूलमुल्क ने पांच हजार सेना के साथ शाही सेना पर आक्रमण कर दिया। अकबर ने सुजातसों और भगवान दास को हमलावर सेना से मुकावला करने के लिये भेजा और मुहम्मद हुसैन मिर्जा को कल्ल करवा दिया। दलपत विलास, पृ. २२-२३।

पाठलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. २४।
 दलपत विलास (पृ. २२-२३) में लिखा हैं कि अन्य परगनों के अलावा नागीर कि सिरसा और मारीठ के परगने मिले,।
 दयालदास—पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ११२,।

२. वेवरिज-पूर्व उद्धृत, माग ३, ए० ११३।

३. अकबर का एक पाँच हजारी मनसबदार ।

४. श्रकवर का एक गुलाम जो वाद में एक हजारी मनसबदार बना दिया गया ।

५. केशोदास मेड़ता के ज्यमल का पुत्र या ।

६. धर्मचन्द का पुत्र ।

उस समय चन्द्रसेन के सेवक रावल सुखराज के अधिकार में था। चन्द्रसेन ने सुखराज की सहायता के लिये आदमी भेजे पर रायसिंह ने उन्हें पराजित कर दिया। सिवाना का मार्ग अब शाही सेना के लिये साफ था। चन्द्रसेन ने खतरे का अनुमव कर के किला अपने विश्वासी सेनापतियों के हाथ छोड़ दिया और स्वयं वहां से हट गया। किला लम्बे समय तक घेरा पड़ने की सम्भावना को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था अतः घेरा डालने वालों के सभी हमले नाकाम रहे। रायसिंह ने अजमेर में बादशाह के पास जाकर अधिक सेना भेजने के लिये कहा। दो वर्ष बीत गये लेकिन तब भी किला अजेय रहा। अन्त में अकबर ने रायसिंह को वापस बुला लियां और उसके स्थान पर शहबाज खां को मेजा जिसने

कुछ ही दिनों में उस गढ़ को जीत लिया।

श्रकवर की श्रोर से रायसिंह ने कुछ महत्वपूर्ण सैनिक कार्यों में भाग लिया। अक्रवर के शासन के २१वें वर्ष सन् १५७६ में विदित हुआ कि जालौर का प्रधान ताजुलां ऋौर सिरोही का शासक सुरतां ए ऋकबर के चिर श्रृ राखा प्रताप के साथ उपद्रव कर रहे हैं। वादशाह ने रायसिंह को कुछ श्रान्य सरदारों के साथ उपद्रवियों को दंड देने के लिये भेजा। ताजला श्रीर मुरतार्ग ने विना विरोध किये त्रात्म समर्पण कर दिया। रायसिंह त्रीर सैच्यद हाशिम कुछ समय तक नाडोल र में ठहरे। उन्होंने सभी विद्रोही तत्वों को समाप्त कर दिया और मेवाड़ के रागा के राज्य से उधर जाने वाले सभी मार्ग बन्द कर दिये । अपने कार्य की पूर्ण कर रायसिंह सुरताण को बादशाह के दरवार में ले गया लेकिन सुरताण किसी के कहने से शान्ति की शतों को स्वीकार करने वाला नहीं था। अतः अवसर मिलते ही वह विना वादशाह को बताये अपने राज्य को लौट गया । रायसिंह को सुरतारा पर पुनः चढ़ाई करनी पड़ी । सुरतारा ने अपने गढ़ के फाटक बन्द कर दिये लेकिन उसे वहां से खदेड़ दिया गया और उसके दूसरे ब्राश्रय स्थल ब्राचू के किले तक उसका पीछा किया गया । रायसिंह ने त्रावृ के किले पर भी सन् १५७७ में अधिकार कर लिया और सुरताण को बन्दी बना कर विदेशाह के पास

वेनरिज-पूर्व उद्धृत, पृ० ११३-१४, १३६, २३७-३८।
 व्रजरतन दास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी), पृ० ३४४-४६ ।
 मोहम्मद सैयद अहमद-पूर्व उद्धृत, पृ० २१३ ।

२. नाडोल जोधपुर की गोड़वाड़ तहसील में है। फारसी तवारीलों में नादोत (गुजरात में) नाम लिखा है जो सही ज्ञात नहीं होता ।

है स्ट है

हन् १५७७ में जब श्रकवर लाहौर गया तो उसने रायसिंह की इचर की लड़ाई में की गई सेवाश्रों को ध्यान में रखकर उसे मनसव तथा बाइन परगने प्रदान किये। ये सन् १५७८ में पठानों ने सिंधु के इलाके में राज-खुन्तर मानसिंह (राजा मगवान दास का पुत्र) के नेतृत्व में स्थित शाही सेना पर रहरा दबाव डाला। मानसिंह ने श्रकवर से सहायता मांगी। उसने रायसिंह को भेज दिया। जवरदस्त लड़ाई के बाद पठान हार गये श्रीर यह खतरा ठल गया।

सन् १५८१ में ग्राकवर के सौतेले भाई हकीम मिर्जा ने, जो कावल का शासक था, अपने भाई से भारत का इलाका छीनना चाहा । कुछ ही समय पूर्व सिन्धु के निकटवर्ती उत्तरी पश्चिमी जिलों के स्वेदार मुहम्मद युसुफलां को हटा कर आमेर के राजा मगवानदास के पुत्र राजा मानसिंह को वहां भेजा गया था। मानसिंह जब रावलपिंडी पहुँचा तो उसे पता लगा कि हकीम मिर्जा का एक सेनापति एक वड़ी सेना के साथ सिन्धु के दूसरे किनारे पर पहुँच गया है । शत्रु को रोकने के लिये मानसिंह शीघ वहां पहुँचा। बाद में हुई लड़ाई में मिर्जा का सेनापति (शादमान) बुरी तरह घायल हुवा श्रीर काबुल की सेना हार गई। जब अकबर को इस घटना का पता चला तो उसने श्रनुभव किया कि हकीम मिर्जा इस ग्रसफलता से चुप होकर नहीं बैठेगा । ग्रतः उसने रायसिंह, नगन्नाय, (ग्रामेर के राजा भारमल का पुत्र) राजा गोपाल (एक दो हजारी मनसवदार) और कई अन्य लोगों को एक शक्ति-शाली-सेना देकर मानसिंह की सहायता करने भेजा। है लेकिन साथ ही उसने मानसिंह को कहला दिया कि यदि हकीम मिर्जा सिन्धु नदी को पार करने का प्रयत्न करे, तो उसे रोका न जाय बल्कि ग्रागे बढ़ने दिया जाय। जैसी श्राशा यी हकीम मिर्जा ने २३ जनवरी सन् १५८१ को नदी पार कर ली ऋीर ६ फरवरी को पंजाव पहुंच गया । ऋकवर भी ये वात जान कर

वेतरिज-पूर्व उद्धृत, भाग ३, पृ० २६६--२६७, २७५--७६ ।
मुहम्मद सैयद ऋहमद-पूर्व उद्धृत, ए० २१३--१४ ।
क्रजरतन दास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी), ए० ३५६--३५७ ।

२. दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २१२ ।

३. त्रालसभारी-पूर्व उद्धृत, पु॰ ७४-७५ ।

४. वेवरिज-पूर्व उद्भृत, माग ३, ए० ५१८, ५३०-३१, ५३२-४७।

श्रपनी सेना के साथ उसकी श्रोर बढ़ा लेकिन हकीम मिर्जा श्रपनी सेना के साथ सिन्धुतट के दूसरी श्रोर चला गया । बादशाह ने श्रपने माई से सुलह के लिये प्रयत्न किया लेकिन हकीम मिर्जा ने लड़ना चाहा । लेकिन वह हार गया श्रोर श्रकवर ने काबुल के किले में उसका पीछा किया । वहाँ हकीम मिर्जा ने श्रात्म-सम्पर्ण कर दिया । श्रकवर ने उसे काबुन का श्रिधकार फिर दे दिया । वादशाह श्रपनी राजधानी लौट श्राया श्रोर रायसिंह पंजाव में रहा ।

इसी समय के आस पास जब महाराजा रायसिंह बादशाह के काम से सोरठ जा रहा था तो उसे सिरोही में से जाना पड़ा । सिरोही के स्वामी सुरताण ने उसका बहुत स्वागत किया और उसे बताया कि उसके राज्य का भूतपूर्व प्रवन्धक बीजा देवड़ा उसे तंग कर रहा है । रायसिंह ने सुरताण को कहा कि यदि वह सिरोही का आधा राज्य बादशाह को दे दे तो उसे बादशाह का संरक्षण मिल जायेगा । सुरताण के इस शर्त पर सहमत होने पर रायसिंह ने बीजा को सिरोही राज्य से निकाल दिया ।

सन् १८५२ के लगभग बंगाल के विद्रोह के समय जब मास्मखां काबुली ने तार खां दीवाना और दूसरों की सहायता से ख्वाजा शमसुद्दीन खाविफ के नेतृत्व में शाही सेना को हरा दिया तो नूरमोहम्मद भी शाही काफिलों पर हमला करने लगा। उन्होंने तीस हजार घुड़सवारों और पाँच सौ हाथियों की एक शिक्तशाली सेना एकत्रित की और राजा टोडरमल के सेनापितत्व में मेजी गई शाही फौज से लड़ने के लिये आगे वढ़े। उन्होंने टोडरमल को हरा दिया।

इस समय तक वंगाल और विहार का समस्त चेत्र इनके हाथों में जा चुका था। इस स्थिति का लाम उठाकर उड़ीसा के सरदार कतलूखां अप्रगान ने भी विद्रोह कर दिया। खानए आजम ने कतलूखां से सुलह करनी चाही। जिस पर कतलूखां ने स्वयं तो अधीनता स्वीकार करने का बहाना बनाया लेकिन अपनी सेना के एक अप्रसर वहादुर कौड़िया को उकसाया कि वह खाने आजम द्वारा अपने दूत शेखफरीद-ए-बुखारी के अधीन भेजी गई सेना पर आक्रमण करे। इस लड़ाई में शाही सेना को बहुत नुकसान उठाना पड़ा। विद्रोह को रोकने में अपने को असमर्थ पाकर खान-ए-आजम ने बादशाह से सहायता मांगी। बादशाह ने राजा रायसिंह को अपनी सेना के साथ खाने-आजम की सहायता करने

१. वेनरिज-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४६२-६५, ४०५-६, ४१५, ४४२, ४४६।

१. नैगासी-पूर्व उड़्त, माग १, पृ० १३१–३३ ।

हेतु वंगाल भेजा तािक विद्रोह को दवा दिया जाय। इस कार्य को राजा रायिहिंह ने इतिनी संफलता से किया कि शीघ ही खान-ए-ग्राजम ग्रानेक ग्राधीन जागीरदारों ग्रोर विद्रोहियों को साथ लेकर वंगाल से वादशाह की सेवा में पहुँचा ग्रीर स्वा बिल्कुल खाली रहा ग्राधीत स्वे का कोई स्वे-दार नहीं रहा । "यदाप यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है पर यह विल्कुल सम्भव है कि खान-ए-ग्राजम की ग्रानुपस्थित में रायिहह बंगाल का स्वेदार रहा।"

सन् १५८५ में बादशाह ने रायसिंह को विलोचिस्तान के निवा-सियों के विरुद्ध मेजा जिन्होंने विद्रोह कर दिया था। रायसिंह ने उन पर ऐसा दबाव डाला कि विलोची सरदारों की विवश होकर ग्रात्म सम्पर्ध करना पड़ा। वे बादशाह के सामने लाये गये। उनसे स्वामी-भिक्त का श्राश्वा-सन पाकर बादशाह ने उनकी जागीरे पुनः उन्हें सौंप दीं। इसी वर्ष पंजाब के दीवलपुर परगने के गांव लाखीपुर की एवज में हिसार फिरोजा का जिला परगना मटनेर राजा रायसिंह को दिया गया।

सन् १५८६ में बादशाह ने प्रशासनिक ढांचे में कुछ परिवर्तन किये श्रौर रायिंह को जयपुर के राजा भगवानहास के साथ लाहौर मेजा।

बीकानेर के वर्तमान दुर्ग की नींव ३० जनवरी सन् १५८६ को रखी गई और यह १७ फरवरी सन १५६४ को पूर्ण हुआ। ख्यातों के अनुसार रायसिंह जब बुरहानपुर में था तो उसने अपने मन्त्री कर्मचन्द की यह

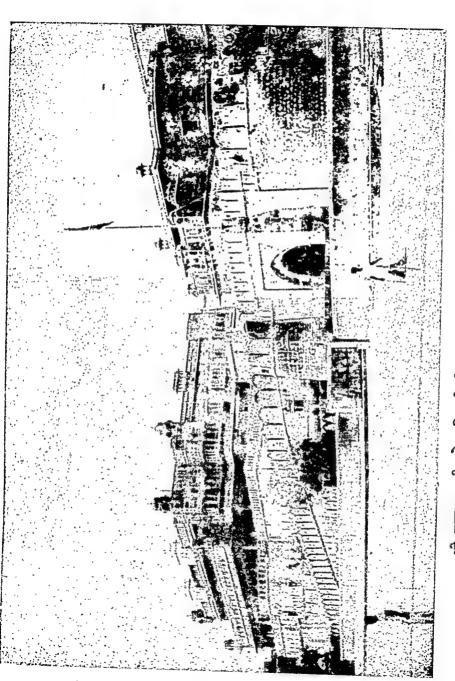
असिकिन-पूर्व उद्धृत, पृ. ३१८ । उसने राजा रायसिंह के बंगाल जाने की तियी उसके काबुल मेजे जाने के दों वर्ष बाद अर्थात् लगमग १४८४ लिखी है ।

२. अलसवारी-पूर्व उद्धृत, पृ. ५०।

वेबरिज-पूर्व उद्धृत, माग ३, षृ. ७१६-१७ और ७३६।
 इलियट-पूर्व उद्धृत, भाग ४, षृ ४४०-४३।
 लो-पूर्व उद्धृत, माग २, षृ. ३६०।

४. हिजरी सन् १६३ की १५ वीं रज्जब का अकबर का फरमान । यह विश्व में सबसे प्रचीन सुगल फरमान माना जाता है ।

५. वेवरिज-पूर्व उद्धृत, माग ३, पू. ७७६।



श्री ज्नागढ़, बीकानेर, जिसकी नींव महाराजा रायसिंहज़े के आदेशानुसार ३॰ जनवरी १५८६ में रखी गयी थी

किला बनाने के लिये निर्देश मेजा था।"

सन् १५८७ में कारिमखां मीरबहरी, जो काश्मीर का मुगल स्वेदार था को रायसिंह के चाचा शृंग ने अपने ४० राजपूत योदास्रों के साथ बड़ो वीरता दिखलाकर काश्मीरी विद्रोहियों के हायों पराजित होने से बचाया । इन सब राजपूतों ने ऋपने आगा देकर बादशाह के पद्म की स्थिति को सुधारा । उनमें से प्रत्येक युद्ध में मारा गया । अन्त में अकबर ने कासिमखां की जगह यूसफुखां को भेजा। कासिमखां शाही दरवार में लौट त्राया। ³ इस घटना से सिद्ध हो जाता है कि वीकानेर के राजा और उसके घराने के लोगों की सहायता से श्रकवर को कितना श्रिधिक सैनिक गौरव प्राप्त हुआ । लेकिन राजघराने के सभी लोग बादशाह के स्वामी भक्त नहीं थे। रायसिंह के भाई अमरा (अमरसिंह) ने कुछ छुटेरों को एकत्रित कर लिया और गैर कान्नी कार्यों में लग गया। इससे उसका मुगलों से भी भगड़ा हो गया । ऐसे ही एक भगड़े में भिभर के जागीरदार इमजा द्वारा वह मारा गया । श्रमरा का पुत्र केशवदास अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये आया और उसने हमजा के पुत्र की जगह भूल से करमवेग को मार डाला । केशवदास का पीछा किया गया जिसके साथ रायसिंह ऋौर वैरामखां के पुत्र खानखाना के भी कुछ लोग थे। उन्होंने केशवदास को घेर लिया त्र्यौर उसे व उसके ऋषिकांश साथियों को मार डाला । उन्होंने कुछ को बन्दी भी बना लिया।

३ दिसम्बर सन् १५६१ को बादशाह ने रायसिंह को खानखाना की सहायता करने भेजा । उड़ा के स्वामी जानीवेग ने विद्रोह के लक्ष्ण दिखाये थे श्रौर श्रकवर ने उसे दिख्डत करने हेतु खानखाना को भेजा था। जानीवेग ने अपने मजबूत किले में शरण लेकर विरोध किया । शाही सेना को तंग करने के लिये वह बहुधा वाहर निकल कर उस पर छापे मारता। उसने कमी किसी बड़े युद्ध का मौका नहीं दिया। शाही सेना हिम्मत हारने लगी श्रीर उनकी शिक्त चीए होने लगी । खानखाना ने बादशाह के पास तुरन्त सहायता भेजने का

दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ. १२२ । ۹.

अकवर नामा (वेवरिज, भाग ३, पृ. ७६७) में श्रंग जी को चचेरा भाई लिखा है जो सही नहीं है।

वेनरिज-पूर्व उद्भृत, माग ३, पृ. ७६६-६५ । वेनरिज-पूर्व उद्भृत, माग ३, पृ. ६०५ । ₹.

٧.

सन्देश भेजा। तब बादशाह ने खानखाना की सहायता के लिये रायसिंह को भेजा जो चार हजारी मनसबदार था। मुगल दरबार में रायसिंह के उच्च पद का उस समय की फारसी तवारीखों में यह पहला उल्लेख है।

थोड़े ही समय बाद रायिंह के परिवार में एक दुःखान्त घटना हुई। बान्योगढ़ (रीवां) के बांग्रेला सरदार रामचन्द्र के पुत्र बीरभद्र के साथ रायिंह की बेटी का विवाह हुआ था। सन् १५६३ में यात्रा करते समय वह पालकी से गिरने के कारण मर गया। जब बादशाह ने यह सुना तो २५ जुलाई सन् १६५३ को स्वयं रायिंह के पास जाकर अपना शोक प्रकट किया और रायिंह की बेटी के बच्चे छोटे होने के कारण उसे सती होने से रोकने में सफल हुआ। द इस घटना से भी पता चलता है कि बादशाह राजा रायिंह का कितना अधिक सम्मान करता था और कितनी गहरी दोस्ती रखता था।

सन् १५६३ में रायसिंह को बुरहानुलमुल्क को दवाने के लिये दिल्या मेजा गया। ग्रहमदनगर के शासक बुरहानुलमुल्क को बादशाह द्वारा कई वार सहायता दी गई थी। वह वास्तव में संरक्तित श्लीर ग्राश्रित शासक माना गया था। ग्रीर उसे वादशाह को एक निश्चित रकम नजराने के रूप में देनी पड़ती थी। लेकिन वाद में बुरहानुलमुल्क ने विद्रोह के लच्चण प्रकट किये श्लीर नजराना नहीं चुकाया। ग्रतः ग्रकवर ने बुरहानुलमुल्क को दर्ख देने के लिये शाहजादे दानियाल के साथ रायसिंह को एक वड़ी सेना देकर दिल्या मेजा। उसी वर्ष वादशाह ने रायसिंह को जूनागढ का प्रदेश (दिल्यों काठियावाड़) दिया जिसे कुछ ही समय पूर्व ग्राजम खां ने जीत कर मुगल साम्राज्य में मिलाया था।

इिलयट-पूर्व उद्धृत, माग, ५ पृ ४६२ । लॉ-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ. ३६२ ।

वेविरिज-पूर्व उद्धृत, माग ३, पृ० ६८५ ।

मुन्शी देवी प्रसाद-अकवर नामा, पृ० २१४-१६ ।

मुहम्मद सैयद अहमद-पूर्व उद्धृत, पृ० २१४ ।

अजरत्न दास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी), पृ० ३४८-४६ ।

इिलयट-पूर्व उद्धृत, माग ४, पृ० ४६७ ।
 लो-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४०३ ।
 वेवरीज-पूर्व उद्धृत, माग ३, पृ० ६६४-६५ ।

र. लो-पूर्व उद्धृत माग, २, पृ० ४०० । यह जागीर देने का उल्लेख अकवर के निदांक ६ दे ४२ के फरमान में भी मिलता

यद्यपि रायसिंह अक्रवर के प्रति वहुत स्वामी मक्त ये और दोनों में ट्रेमपूर्ण सम्बन्ध था लेकिन सन् १५६७ में एक घटना को लेकर उनमें विगाइ हो गया। यह घटना उस समय हुई जब रायसिंह भटनेर में ये और अक्रवर का एक ससुर नसीरखां उसके साथ था। रायसिंह ने वादशाह के इस ससुर की सेवा के लिये अपने नौकर तेजा को लगा दिया था। लेकिन तेजा ने नसीर खां के व्यवहार का विरोध किया और रायसिंह को स्वना दी कि मेहमान ने एक खत्री जाति की लड़की से छेड़छाड़ की है। रायसिंह ने तेजा की चात मानकर उसे छूट दे दी कि वह चाहे जैसे नासीरखां को ठीक रास्ते पर लाये। तेजा ठीक मौके की तलाश में था। जब नासीरखां ने अपने को भेजी गई रसद में कोई दोध निकाल कर तेजा को गांलियां दीं तो तेजा और उसके साथियों ने नसीरखां को पीट डाला। जब नसीर दिल्ली लौटा तो उसने वादशाह से रायसिंह के आदमी की शिकायत की। अक्रवर ने रायसिंह से तेजा को मांगां लेकिन रायसिंह ने कहला दिया कि तेजा भाग गया। वादशाह बहुत अपसत्र हुआ और उसने राजा रायसिंह से भटनेर लेकर उसके विद्रोही पुत्र दलपत को दे दिया जिसने भटनेर को

है जिसमें लिखा है • • • अपिरिचितों के प्रति नम्रता और दोषों को च्रमा करना बादशाह का प्रशंसनीय गुण है, हमने कुलीन लोगों के वंशज और शाही कृपाओं के योग्य रायिस के अपराधों को च्रमा करने के बाद उसे अनेक शाही उपहारों से सम्मानित किया है, और जूनागढ़ और दूसरे जिलों की जागीर इलाही सन् ४३ से पुनः प्रदान करने के बाद उसे यहां से जाने की इजाजत दी है।

९. दयालदास की ख्यात भाग २, पृ० १२६ के अनुसार नसीरखां जब भटनेर में ठहरा हुआ या तो उसने किसी लड़की से अनुचित छेड़छाड़ की इस पर राजा रायसिंह के इशारे से उनके एक सेवक तेजा ने उसको पीटा । दिल्ली पहुंचने पर नसीरखां ने बादशाह से शिकायत कर दी । बादशाह ने राजा रायसिंह से तेजा को सींप देन का हुक्म दिया पर उसने नहीं सौंपा और सूचना भिजवादी कि तेजा माग गया ।

इस घटना का उल्लेख "राजा रायसिंह जी री वेल" नाम की रचना में भी मिलता है।

(डिस्कप्टिन कैटेलॉग श्रॉन बार्डिक एएड हिस्ट्रॉरिकल मेन्युस्किप्टस सेक्शन २ भाग १, ७० ४६।

फारसी तवारीखों ने इतना ही लिखा है कि रायसिंह के सेवकों के दुष्कृत्यों की खबर पाकर वादशाह रायसिंह से अप्रसन्न हो गया। बीकानेर के विरुद्ध अपनी कारवाईयों का अड्डा बना लिया। बीकानेर में एंड युद्ध को रोकने के लिये रायसिंह बादशाह द्वारा बीच बचाव के लिये तुरन्त दिल्ली पहुँचा। इस बीच दलपत के शतुओं – भट्टियो और जोहियों– ने पहले ही बादशाह से सैनिक सहायता प्राप्त कर दलपत को भटनेर से निकाल दिया लेकिन दलपत बीकानेर आ गया और सेना इकट्टी कर उसने शींव ही भटनेर पर पुनः अधिकार कर लिया।

बादशाह के दरबार के कुछ खास लोग रायिंह के प्रति वैर भाव रखते थे। इनमें से एक राजा रायसिंह का यूर्व मन्त्री कर्मचन्द था। बादशाह की छोर से युद्ध में भाग लेने हेतु रायसिंह के लम्बे समय तक बीकानेर से दूर रहने के कारण कर्मचन्द ने रायसिंह के ज्येष्ठ पुत्र दलपत को बीकानेर का राज्य अपने अधिकार में करने के लिए सहायता देने का षड्यन्त्र किया। जब कर्मचन्द के इस पृणित कार्य का पता चला तो रायसिंह ने उसे बनदी बनाकर उसकी सम्पति जन्त करनी चाही। लेकिन अपने मालिक की नाराजी का ज्ञान होते ही कर्मचन्द दिल्ली भाग गया । शतरंज में निपुण होने के कारण उसे तुरन्त बादशाह के दरवार में प्रवेश मिल गया क्योंकि वादशाह को शतरंज खेलने का बहुत शौक था। दरबार में कमैचन्द की कुचालों का यह परिणाम निकला कि अक्रवर रायसिंह से नाराज हो गया । त्रातः रायसिंह दिल्ली नहीं गये । लेकिन साम्राज्य की प्रतिष्ठा स्रौर एकता की बनाये रखने में रायसिंह का समर्थ योग हमेशा स्त्रकंद की इतना मृल्यवान लगा कि वह राजा रायसिंह से स्राधिक समय तक नाराजगी न रख सका । उसने सोरठ की जागीर (सौराष्ट्र) ह्यौर सारा दिस्ए काठियावाड़ रायसिंह को प्रदान किया और उसे दिल्ला जाने की आजा दी। लेकिन २० दिसम्बर सन् १५६७ (पौष बदी ७ सम्बत् १६५४) को दिल्ली में ये फरमान पाकर राजा बीकानेर लौट स्राया स्रौर दक्षिण में नहीं गया। त्व वादशाह ने उसे कहलाया कि यदि वह दक्षिण नहीं जाना :चाहता :तो उसे शाही सेवा में उपस्थित होना चाहिये। इस पर राजा रायखिह दिल्ली चले गये त्रीर बादशाह उससे प्रेमपूर्वक मिला । तत्र रायसिंह दिस्ण को चला गया।

१. तारील ६ दे सन् जुलूस ४२ का अकवर का फरमान ।
"(सामान्यतः) गुजरात के सूचे में काम कर रहे मु शियों और विशेषतः सूरत के
जागीरदारों का यह कर्तव्य है कि ज्योंही हमारी इस आजा का पता चले, जो
अल्लाह ताला की है, त्योंही उन्हें इसका पालन करना चाहिये और आदेश में
लिखे जिले हमारे सहायक को सौंप दिये जाँय ।"
वेवरिज—पूर्व उद्धत, माग ३, पू० १०६५—६६ ।

श्रक्रवर के शहरवार ४३ तारीख १५ मेहर के (श्रगस्त १५६८ के) फरमान से पता चलता है कि राजा रायसिंह ने हाम श्रीर बारा रावलों का पह लिया था। वादशाह का राजा में इतना विश्वास था श्रीर वह उनका इतना विचार रखता था कि उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। बादशाह ने उपर्युक्त रावलों के लिये फरमान राजा को भेज दिये ताकि वह उन्हें श्रपने पास रखे श्रीर केवल तभी दे जब उनकी ईमानदारी का राजा को पक्का विश्वास हो जाये। सन् १६०० में बादशाह ने नागौर का परगना रायसिंह को जागीर में दिया। व

सन् १६०१ में बादशाह ने रायिष्ठ को शेल अबुल फजल की सहायता करने नासिक मेजा। शेखअबुलफजल इचिए के निद्रोह को सिटाने गया हुआ था लेकिन अपने ही राज्य में गड़बड़ी की खबर पाकर उसने वापस बीकानेर लौटने की आजा प्राप्त कर ली।

उत्तरोत्तर वादशाह रायिसंह की स्वामी भिक्त का प्रशंसक बनता गया श्रीर उसे दरबार में उनकी उपिस्थित ऋषिक छादश्यक छानुभव होती गई। सन् १६०३ में दशहरे के दिन उसने सलीम को मेवाड़ पर चढ़ाई करने की छाजा प्रदान की। रायिसंह और कई दूसरे प्रमुख राजपूत सरदार उसके साथ थे। लेकिन जब सलीम फतेहपुर पहुंचा तो वह ऋपने को सौंपे गये कार्य की कठिनाइयों को उठाने के लिये तैयार न हुआ, उसने बादशाह से छिषक सेना तथा धन भेजने छान्यशा इलाहाबाद छपनी जागीर में लौट जाने की छाजा माँगी। उसकी बात मान ली गई और प्रस्तावित छाक्तमण छोड़ दिया

९. "उसकी प्रार्थना स्वीकार करली गई है और शाही आज्ञा भेज दी गई है। रावल हाम और रावल बारा से सम्बन्धित फरमानों को उसे अपने पास सुरिद्धित रखना चाहिये। यदि उनकी ईमानदारी का राजा को पक्का विश्वास हो जाये, यदि वे अन्तः करण से अधीनता स्वीकार कर ले, यदि वे अपनी पहले की मूलों पर पश्चाताप कर लें तब उनको फरमान देकर शाही दया और छपा का विश्वास दिलाया जाये और राजा इन सब घटनाओं की दैनिक रिपोर्ट प्रस्तुत करें।"

२. अकबर का इलाही सन् ४५ तारीख ३ आवान (१३ अक्टूबर सन् १६००) का फरमान ।

वेविरिज-पूर्व उद्धृत, माग ३, पृ० १९७३ श्रीर १९५४ ।
 मोहम्मद सैयद श्रहमद-पूर्व उद्धृत, पृ० २९४ ।
 मजरतन दास-पूर्व उद्धृत, पृ० ३४६ ।

गया। ' सन् १६०४ में अक्रवर ने सम्सावाद परगने के दो भाग - सम्सावाद तथा नूरपुर - कर दिये और उन्हें रायसिंह को जागोर में दे दिया। इस जागीर को पाकर रायसिंह वापस बीकानेर लौट आये।

सितम्बर सन १६०५ (सावण विक्रमी सम्बत् १६६२) में बादशाह श्रक्तवर बीमार हो गया श्रोर उससे कभी ठीक नहीं हुग्रा । दिनोंदिन उसकी हालत खराब होती गई। शाही तख्त खाली होने की श्राशा से उसमें रूचि रखने वाले लोग श्रपने २ पन्न के सम्भावित उत्तराधिकारियों के लिये प्रयत्न करने लगे। राजा मानसिंह श्रीर खान-ए-श्राजम ने जो शाही दरवार के दो सर्वाधिक शिक्तशाली श्रीर प्रभावशाली ब्यिक थे, शाहजादा खुसरो का समर्थन किया। खुसरो स्नामेर के मानसिंह का भानजा श्रीर खान-ए-श्राजम का दामाद था। श्रकवर के ज्येष्ठ पुत्र सलीम, जो तख्त का वास्तविक श्रिधकारी था, को जात हुश्रा कि उसके समर्थक बहुत कमजोर है लेकिन यह श्रनुपय करके कि वीकानेर का राजा रायसिंह उसका श्रच्छा मददगार हो सकता है, उसने उन्हें तुरन्त श्रागरा बुत्ता भेजा। अत्र रायसिंह शाहजादे के सन्देश पर शीध श्रागरा पहुँच गये। १५ श्रवस्वर सन् १६०५ की रात्रि में श्रकवर का देहान्त हो गया।

२४ अक्टूबर सन् १६०५ को सलीम जहाँगीर के नाम से अपने पिता अकबर के बाद भारत का बादशाह बना । ११ मार्च सन् १६०६ को जहाँगीर की गद्दी नशीनी का पहला उत्सव मनाया गया । इस पर बादशाह जहाँगीर ने राजा रायसिंह का मनसब चार हजारी से बढ़ा कर पांच हजारी कर दिया ।

इित्तयट-पूर्व उद्धृत, माग ६, पृ० ११० ।
 वेवरिज-पूर्व उद्धृत, माग ३, पृ० १२३१-३४ ।
 व्रजरतन दास-पूर्व उद्धृत, पृ० ३६० ।

अक्रवर का इलाहो सन् ४६ तारीख २१ खुरदाद (मई सन् १६०४) का फरमान ।

सलीम का इलाही सन् ५० तारीख २६ मेहर (सितम्बर सन् १६०५) का फरमान जो इस समय बीकानेर संग्रहालय में हैं।

४. वेवरिज और राजर्स-तुजुक-इ-जहाँगीरी, माग १, पृ० १, ४६ । मोहम्मद सैयद अहमद-पूर्व उद्धृत, पृ० २१५ । देवी प्रसाद-जहाँगीर नामा, पृ० २४, ५२ ।

इस उत्सव के कुछ महीनों वाद शाहजादा खुसरों ने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसे दबाने जहाँगीर खाना हुआ। उसने रायसिंह को यह कह कर आगरे में रखा कि जब वेगमों को बुलाया जाये तो वह उनको लेकर आवे। जब बादशाह ने वेगमों को बुलवाया तो रायसिंह उनके साथ गये। लेकिन मथुरा में जब उसे मानसिंह सेवड़ा नामक एक जैन साधु से ज्ञात हुआ कि जहाँगीर का राज्य दो वर्ष से अधिक नहीं चलेगा तो उसने वेगमों का साथ छोड़ दिया और बीकानेर चला गया।

राजधानी लौट कर जहाँगीर को मालुम हुवा कि दलपत ने विद्रोह कर दिया है। बादशाह ने ऋपने कई प्रमुख सरदारों के साथ एक शिक्तशाली सेना उसके विरुद्ध भेजी। कुछ समय तक सामना करने के बाद दलपत युद्ध के मैदान से भाग गया और छिप गया।

१४ जनवरी सन् १६०८ को रायसिंह शाही दरबार में लौटा। श्रमीर उल-उमरा शरोफलां के कहने से बादशाह ने उसे ज्मा प्रदान की तथा उसका मनसब तथा सारी जागीरें बहाल कर दी।

१. कुछ दूसरे इतिहास कारों (इकबालनामा पू. ५, मश्रासिर-इ-जहांगीरी पू. ७१ श्रीर कजवीनी पू. ४२ के श्रनुसार जहांगीर ने राज्य की सुरक्ता की देखमाल के लिये शाहजादा खुरेम की श्रध्यक्तता में एक कमेटी वना दो थो, जिसमें शेख श्रलाउदीन, मिर्जा गयास वेग तेहरानी, दोस्त सुहम्मद ख्वाजा जहां श्रीर राजा रायसिंह समिनलित थे।

डा. श्रीभा-पूर्व उद्धृत, खंड १, ृ. १६१ ।

- वेतरिज श्रीर राजर्स-पूर्त उद्भृत, भाग १, पृ. ४६७-६८ ।
 मुहम्मद सैयद श्रहमद-पूर्व उद्भृत, पृ. २१६ ।
- ३. वेवरिज श्रोर रजर्स-पूर्व उद्धृत, माग १, पृ. ५४।
- ४. वेवरिज श्रीर राजर्स-पूर्व उद्धृत, माग १, पृ. १३०-३१ ।

 मुहम्मद सैयद श्रहमद-पूर्व उद्धृत, पृ. २१६ ।

 इस सम्बन्ध में सन् १०१५ ता० २ श्रावान का जहाँगीर का फरमान विशेष रूप
 से ध्यान देने योग्य है "समकालीन श्रीर मित्रों में से चुने गये, शाही कृपा
 श्रीर कृतज्ञा के योग्य, शाही उपहारों से सम्मानित राजा रायसिंह को सूचित किया
 जाता है कि ये खबर शाही कानों तक पहुंची है कि श्रविविक्त दलपत श्रपने दुर्मांग्य
 श्रीर नीचना के कारण श्रपने व्यवहार में रायसिंह के साथ बहुत खराब श्रीर वुरी
 तरह से पेश श्राता है जिसके फलस्वरूप उसने (रायसिंह ने) उसके विरुद्ध सेना
 लेकर उसे घेर लिया है।

उसी वर्ष दलपतिसंह ने मी खान जहां पीरखाँ लोदी के मारफत वादशाह ते चमा मांगी । उसे चमा कर दिया गया ।

२२ जनवरी सन् १६१२ को बुरहानपुर में, जहां वह मुगल साम्राज्य की श्रोर से दिल्लिए का स्वेदार था, रायिंह का देहान्त हो गया। मरते समय उन्होंने श्रपने पुत्र स्रिस्ह को श्रामिलाघा बताई कि मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र करने वाले समी लोगों को दिएडत किया जाय। स्रिसंह ने श्रपने पिता की इच्छा पूर्ण करने की प्रतिज्ञा की।

इस प्रकार कल्याणमल द्वारा केन्द्रीय सत्ता से जो मित्रता पूर्ण सम्बन्ध हुवा या वह रावसिंह द्वारा ऋौर मी हट हुआ। रावसिंह की स्वामी मिक्त ऋौर निष्ठा तथा विवेकपूर्ण सलाह ने ऋकबर की दृष्टि में उसके महत्व को उत्तरोत्तर

चू कि हमारा उदार स्वभाव यह सहन नहीं करता कि कोई भी भुत्र इतने अपना जनक ढंग से अपने ही पिता के विरुद्ध व्यवहार करें, हमारे मन में, जिसमें अल्लाह ताला का निवास है, यह बात आई कि हम अपनी विजयी सेना को उसे ऐसा दंड और ताड़ना देने के लिये नियुक्त करें ताकि वह दूसरे विद्रोही लोगों के लिये एक सचक बन जाय।

ते किन चूं कि उस (रायसिंह) की ओर से इस मामले में कोई बात अब तक दरबार में नहीं आई है अतः हमारे मन में फिर यह बात आई कि शायद यह बात गलत हो। इसिल्ये हमने अपनी विजयी सेना को नहीं मेजा।

यदि वास्तव में ऐसा हुआ है और वह विद्रोही (दलपत) गड़वड़ी करने को कृत संकल्प है तो उसे (रायसिंह को) चाहिये कि (जिस दिन उसे यह फरमान मिले) उसी दिन वह सारी हकीकत लिसकर अपना प्रतिनिधि भेजे ताकि हम शाही दरवार से सेना भेज सके और उनको यह आदेश दें कि सीमान्त पर जाकर उसे बुरी तरह पराजित कर (उसके प्राण निकाल लें) उसके उद्देश्यों को मिटी में मिला दें।

 \times \times \times

यह आवश्यक है कि उसे (रायसिंह को) हमेशा यह विश्वास रहना चाहिये कि उससे सम्बन्धित मामलों में बादशाह उसी का पन्न लेंगे ।"

१. वेनरिज और राजर्स-पूर्व ठढ़ूत, माग १, पू. १४८ । वेनरिज-अकनरनामा, माग ३, पू० १२०० । चढाया । शीघ्र ही उन्हें चार हजारी मनसबदार बना दिया गया स्त्रीर वे मुगल सत्ता के समर्थक माने जाने लगे। श्रामेर के राजाश्रों के श्रितिरिक्त चास्तव में रायसिंह ही ऐसे हिन्दू शासक थे जिन्हें इतना उच्च मनसव मिला था क्योंकि इससे नीचे का मनसब जो हिन्दू राजा³ को मिला हुस्रा था वह केवल दो हजारी था। दूसरे सभी हिन्दू राजा केवल उससे नीचे ही नहीं थे बल्कि कई बातों में पीछे थे। रायसिंह से नीचे दूसरा व्यक्ति रीवां का राजा रामचन्द्र या जो दो हजार सैनिकों का सेनापित या ऋौर उसका स्थान द्भा वा अबिक रायुसिंह का स्थान ४४वां या । बूँदी का राव सुजानसिंह का भी, जो दो हजारी सेनापित था, ६६वां स्थान था श्रीर वह रायसिंह से ५२ स्थान पीछे,था । जोघपुर का उदयसिंह एक इजारी सेनापित और १२१ वें स्थान पर था। मनसव्दारों में उसकी गणना १३वीं श्रेगी में थी। जैसलमेर के रावल, स्रोरछां, के राजा स्रोर पालनपुर के नवाव स्रोर मी नीचे थे, श्रौर उनका स्थान क्रम्शः १८१ वां, २०४ वां श्रौर २१७ वां था। जहांगीर ने ऋपनी जीवनी में रायसिंह का उल्लेख "एक ऋत्यन्त माननीय ऋमीरों में से एक" विशेषण से किया है ऋौर इसी को ध्यान में रख कर ऋपने तख्त पर वैठने के पहले जुलूस के उत्सव में रायसिंह का मनसन्न वढा कर पांच हजारी कर दिया था । राजा रायिसंह ने, मुगल बादशाहों की स्रोर से वंगाल से लेकर काबुल तक ग्रौर कश्मीर से लेकर दिस्ण श्रौर गुजरात तक, प्रायः सभी प्रमुख युद्धों में भाग लिया । इनमें न केवल उन्होंने अपने साहस का

पिल्फरटन के अनुसार—ये बात उल्लेखनीय है कि पांच हजार से ऊपर का मनसब केवल सुगल वंश के शाहजादों को ही दिया जाता था। रायसिंह का मनसब बढ़ाकर पांच हजारी जहांगीर द्वारा अपने तख्त पर बैठने के समय किया गया था। आइने अकबरी—माग १ पृ. २३७ में ब्लाकमेन भी लिखता है कि इसी कारण बादशाह ने मनसबदारों की श्रेणी दहवासी (दश का सेनापित) से लेकर दह हजारी (दस हजार का सेनापित) तक कायम की थी पर पांच हजार से ऊपर का सेनापितत्व उसने केवल अपने प्रतापी पुत्रों के लिये सुरिन्तित रखा।

१. ब्लाक मैन-पूर्व उद्भृत, भाग १, पृ. ३४८।

२. श्रामेर के राजाश्रों को इस मामले में इसलिये विशेष तरजीह दी गई क्योंकि मुगल शासन को राजमिक श्रिपत 'करने वाले वे प्रथम हिन्दू शासक थे।

बान्धु (श्रव रीवाँ) का राजा रामचन्द्र बघेला ।

४. वेबरीज श्रीर राजर्स-पूर्वं उद्धृत, भाग १, पृ. १३०-३१ ।

विलक्त ग्रापने सेनापतित्व की यथार्थ प्रतिभा का भी पूर्ण परिचय दिया। रायितह ने केवल रराभूमि में ही यश प्राप्त नहीं किया, संघर्ष की तरह शान्ति में भी उन्होंने सर्वदा मुगल शासन को त्रपना पूर्णतम सहयोग प्रदान किया और वादशाह द्वारा एक स्वामीमक सायी और सच्चा मित्र माना जाने लगा । इन्ही गुणों के कारण रायसिंह को कम से कम चार विभिन्न श्रवसरों पर स्वेदार नियुक्त किया गया । तन् १५८१ में उन्हें पंजान का श्रीर १५८६ में लान देश में बुरहानपुर^२ का स्वेदार बनाया गया। सन् १५६३ में उन्हें स्रत³ ग्रीर सन् १६०५-६ में दूसरी बार छुरहानपुर मेजा गया । ^४ इन उत्तरदायित्व के उच्च पदों, जिन पर श्रत्यधिक प्रशासकीय योग्यता की ग्रावस्यकता थी, का प्रदान करना केवल रायसिंह की योग्यता ही प्रकट नहीं करता बल्कि वह भी सिद्ध करता है कि अकबर और जहांगीर उनका कितना ग्रादर करते थे ग्रौर उनमें कितना ग्रहट विश्वास रखते थे। वे रायसिंह को सुगल साम्राज्य का हितैषी मानते थे । यह बात रायसिंह को दिये गये शाही फरमानों ऋौर समय समय पर दी गई विभिन्न जागीरों से बिल्कुल स्रष्ट हो जाती है। अकबर के इलाही सन् ४० तारीख २२ इस्फरमूज (फरवरी सन् १५६५) के फरमान में ग्रक्यर शिकायत करता है कि उसे मालूम हुग्रा है कि रायसिंह तब तक दिच्या के ग्रिमियान पर स्वाना नहीं हुग्रा । श्रकवर ने पूछा है कि उसकी ईमानदारी, कार्य के लिये महत्वाकांचा और मित्रता को क्या हो गया अथवा क्या वह (महारानी) भटियाणी के प्रेम में मग्न हो गया है। मित्रता श्रीर कार्य के लिये महात्वाकांचा (खिदमत व दोस्ती) शब्दों का प्रयोग ऋौर मटियाणी का उल्लेख महत्वपूर्ण है। इस व्यक्तिगत स्पर्श से दोनों के बहुत प्रेमपूर्ण श्रौर मित्रता पूर्ण श्रापसी सम्बन्धों का पता चलता है।

श्रव्य के इलाही सन् ४२ तारीख २६ श्राजर (नवम्बर सन् १५६७) के फरमान में शाहजादे सलीम ने रायसिंह को खानखाना की सहायता के लिये जाने का कहते हुये इन विशेषणों का प्रयोग किया है "साम्राज्य के चुने हुए श्रमीरों में सर्वश्रेष्ठ, स्वर्ग पर स्थित राज्य के सरदारों का प्रधान, जन्नत जैसे दरवार के कुपापात्रों में सर्वश्रेष्ठ श्रादि।"

१. मुहम्मद सैयद श्रहमद-पूर्व उद्भृत, १० २१४।

२. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, १० २७।

३. व्लाकमैन-आइने अकवरी, माग १, पृ० ३५८।

४. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, १०३०।

प्र. परिशिष्ट १।

शाहजादा सलीम रायसिंह के लिये कितना सम्मान श्रीर चिन्ता रखता या इस बात का पता उसके द्वारा रायसिंह को लिखे हुए फरमान से चलता है। रायसिंह ने काफी समय तक शाहजादा सलीम को पत्र नहीं लिखा था। इलाही सन् ४७ सांसेख ४ ब्राजर (नवम्बर सन् १६०२) के फरमान में लिखा है कि यद्यपि रायसिंह ने शाहजादे (सलीम) को याद नहीं किया है पर उसने रायसिंह का ग्रानेक शुभ ग्रावसरों पर ध्यान किया । इससे दोनों की मित्रता का सम्बन्ध श्रासंदिग्ध रूप से सिद्ध हो जाता है। शाही दरबार में रामसिंह का कितना श्रिधिक प्रभाव था इसका पता श्रकबर की मृत्यु के समय हुई एक घटना से चलता है। जैसा पहले कहा जा चुका है खुसरो को गदी पर वैठाने के लिये दरबार में एक षड्यन्त्र चल रहा था। उस समय जहांगीर की दृष्टि रायसिंह की छ्रोर गई छ्रौर उसने उसकी सहायता मांगी ! इस त्र्यवसर पर इलाही सन् ५० तारीख २८ मेहर को शाहजादे द्वारा राय-सिंह को भेजे गये फरमान^र से उसकी महत्ता श्रीर श्रामह का पता चलता है। रावितंह तुरन्त आगरे के लिये खाना होकर वहां पहुँचे श्रीर राज-सिंहासन के उत्तराधिकार के प्रश्न को उन्होंने इतनी चतुराई से हल किया कि बिना किसी बाघा के जहांगीर को बाद साह बना दिया तथा राजा मानसिंह श्रीर खाने-श्राजम का षड्यन्त्र विकल हो गया । जहांगीर का रायितह पर कितना ऋधिक विश्वास था, यह इस तथ्य से विदित होता है कि जब बादशाह खुसरो को दबाने के लिये गया तो उसने रायसिंह को ब्रागरे की देखभाल के लिये नियुक्त किया।

v₁' . '

जब जहांगीर को मालूम हुआ कि रायिष अपने कु वर दलपतिसंह के विद्रोह से तंग है तो तारीख २ आबान रजब उल मुरजाब हिजरी सन् १०१५ (नवम्बर सन् १६०७) को तुरन्त उसने फरमान मेजा । इसमें अपने पिता के मित पुत्र के अपमान जनक व्यवहार पर गहरी नापसन्दगी प्रकट की । प्रारम्भ में बादशाह ने रायिष की सहायता के लिये सेना मेजने को बात सोची थी पर बाद में विचार करने पर उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि रायिष की ओर से उसके पास कोई सूचना न थी । उसने सोचा कि विद्रोह की बात गलत हो सकती है लेकिन उसने फरमान में

१. परिशिष्ट २ ।

२. परिशिष्ट ३।

३. परिशिष्ट ४।

यह जोड़ दिया कि यदि यह बात सत्य हो तो रायिसह को चाहिये कि शीछ वादशाह को सुचित करे श्रीर श्रपने मामलों में शाही कुपा का पूर्ण भरोसा रखे।

जैसा पहिले लिखा जा चुका है बहुत बढिया सम्बन्ध होते हुए भी दरवारी षड्यन्त्र ऋौर विरोधी पद्धों द्वारा दोनों में ऋस्थायी रूप से ग्रलगाव भी उत्पन्न किया गया लेकिन यह स्थायी रूप से मिट कर ग्राधिक इट मित्रता में बदल गया।

ग्राइने ग्रक्बरी के ग्रनुसार उस समय बीकानेर राज्य में निम्नलिखित महल छे—

(१) बीकमपुर (२) वरसलपुर (३) बीकानेर (४) जैसलमेर (५) बाहरमेल (बाड़मेर) (६) पोकल (पूगल) (७) बरकाल (सिन्ध में स्थित पारकर) (८) पोकरण (६) चोयान (१०) कोटड़ा क्रोर (११) देवदार ।

सन् १५६१ में मारवाड़ पर आक्रमण के बाद अकबर द्वारा मेड़ता और नागौर भी रायसिंह को दे दिये गये थे। अकबर द्वारा रायसिंह

टाड-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ११३३। पाउलेट ने भी अपने "वीकानेर राज्य के गर्जेटियर" (पु. २५) मैं लिखा है कि रायसिंह के शासन काल में नागीर उसके राज्य का एक माग था। १५ ऋक्ट्रबर सन् १६०० का अकवर का फरमान में भी जो राजस्थान सरकार के पुरालेख विभाग बीकानर में सरिक्तत है रायसिंह को नागौर का परगना देने की वात लिखी है। उसमें रायसिंह के लिए ''साम्राज्य के विश्वास पात्र, साम्राज्य के आधार स्तम्म, शाही कृपात्रों के योग्य" त्रादि विशेषणों का प्रयोग किया गया है। इसमें राजस्त ऋधि-कारियों को भी निर्देश किया गया है कि यह महाल रायसिंह के प्रतिनिधियों को सींप दिये जांय श्रीर चौधरी, राजस्व वसूल करने वाले, किसानों श्रीर दूसरे लोगों को कहा गया है कि वे लगान व दूसरे कर आदि रायसिंह के प्रतिनिधियों को चुकार्ये श्रीर रायसिंह को ही अपना राजा माने लेकिन जागीर देने की तिथियों की अस-मानता उलभन में डालने वाली है। डाक्टर टैसीटोरी का मत है कि रायसिंह ने निसन्देह सन् १५६१ में नागौर पर अधिकार कर लिया या पर चूं कि वह मुगलों की और से कार्य कर रहा या अतः सम्मन है कि महाल मुगलों के पास रहा श्रीर गुजरात के युद्धों में रायसिंह की शानदार सेवाओं के वाद सन् १५७३ के लगमग यह रायसिंह को जागीर में दिया गया । अकबर का सन १६०० का फरमान इस प्रकार से इस आदेश को स्थिर करने के रूप में हैं।

रे. जैरेट-श्राइने श्रकवरी, भाग २ <u>ए</u>० २७७-७**न** ।

को दियां गया । जोधपुर जब बाद में सन् १५८२ में उदयसिंह को लौटाया गया तो भी नागौर रायसिंह के ही पास रहा। वाद में दोनों राज्यों के आपसी समभौते के फलस्वरूप यह जोधपुर को लौटा दिया गया । उसके द्वारा अधिकृत ताहरा, कस्र और आतगढ़ के परगनों के बदले में उसे निहयाद (निरयाद) का परगना दिनांक ५ उर्दि वहिस्त इलाही सन् ४१ (अप्रेल सन् १५६६) के शाही फरमान द्वारा दिया गया । जूनागढ़ को जागीर उसे इलाही सन् ४२ तारीख ६ हे (फरवरी सन् १५६७) के फरमान द्वारा तथा उप जिला न्रपुर सहित शम्साबाद जिले की जागीर इलाही सन् ४६ तारीख २१ खुरदाद (मई सन् १६०४) के फरमान द्वारा प्रदान की गई । पाउलेट ने लिखा है कि रायसिंह की जागीर में जोधपुर के कुछ गांव (फलौदी) तथा सिरसा, हांसी और हिसार के भी कुछ गांव थे । मुल्तान के निकट मारौठ रायसिंह की जागीर में होने का उल्लेख पाउलेट ने किया है और दीपलपुर लाखी का दिया जाना हिजरी सन् ६६३ के रज्जब की १५ तारीख (अप्रेल सन् १५८५) के फरमान से स्पष्ट है ।

वादशाह द्वारा इन जागीरों का दिया जाना निःसंदेह केन्द्रीय सत्ता द्वारा राजा रायसिंह की उल्लेखनीय सेवाश्रों की प्रशंसा का प्रतीक है लेकिन साथ ही ये जागीरें रायसिंह द्वारा रखी जाने वाली बहुत बड़ी सेना का व्यय भार उठाने के लिये भी थीं। ग्राइने ग्रकवरी के ग्रनुसार रायसिंह की सेना में बारह हजार घुड़सवार ग्रीर ५० हजार पैदल सैनिक थे। उस समय की परिस्थितियों में इतनी बड़ी सेना रखे जाने की छूट ग्रपने ग्राप में इस बात का प्रमाण है कि बादशाह को रायसिंह पर कितना ग्राधिक विश्वास था। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि बादशाह के दरवार में रायसिंह का

१. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. २७।

२. परिशिष्ट'५।

३. परिशिष्ट ६।

४. परिशिष्ट ७।

५. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, टू. २५ ।

६. वही।

मेरे अधिकार में अकवर का हिजरी सन् ६६३ तारीख १५ रज्जव (अप्रेल १५८५)
 का एक फरमान है जिसके अनुसार हिसार फिरोजा जिले में मटनेर का प्रगना दीपलपुर में लाखीपुर प्रगने के बदले में रायसिंह को दिया गया।

जैरेट-त्राइने अकवरी, माग २, पृ. २७७ ।

कितना महत्वपूर्ण श्रौर सम्मानित स्थान था श्रौर निःसन्देह श्रन्तरीज्य के मामलों को प्रभावित करने में समर्थ था। वादशाह की ग्रोर से की गई चढ़ाईयों में लूटे गये घन, ब्रान्तरिक प्रशासन की सुयोग्यता तथा व्यापार श्रीर वाणिज्य के तीत्र विकास के कारण बीकानेर की समृद्धि श्रीर धन श्रभृतपूर्व हो गया । धन की वृद्धि ने सांस्कृतिक श्रीर साहित्यिक प्रवृत्तियों को, जिनका स्वयं रायसिंह सर्वाधिक उत्सुक संरत्तक था, बढ़ने की प्रेरणा मिली। अनेक कवि उसके दरवार में आये और उन्होंने उसकी प्रशंसा में अनेक रचनायें की, क्योंकि उसकी दानशीलता काव्य रचना के लिये एक प्रिय विषय या । रायसिंह की प्रशंसा में सैकड़ों गीत लिखे गये । बीकानेर के किसी ग्रन्य शासक के यहां इतने ग्राधिक प्रशंसा करने वाले नहीं थे। कहा जाता है कि उदयपुर थ्रौर जैसलमेर में अपने विवाहों के अवसर पर उसने अपनो प्रशंसा में लिखे गये सम्बोधन गीतों के लिये चारणों ग्रौर दूसरों को बहुत सा धन दान में दिया था। वह अनेक कवियों और ख्यात लेखकां, जो उसके त्राश्रय में रहते थे, का संरक्तक था। रायसिंह स्वयं संस्कृत का विद्वान् श्रीर उच्चकोटि का किव था श्रयवा वह दूसरों के काव्य को समभ सकता था । उसके समय में कई विद्वानों ने संस्कृत के महत्वपूर्ण प्रन्थों की टीकायें लिखी । कहा जाता है कि उसने स्वयं दो महस्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की । इनमें ''रायसिंह महोत्सव'' संस्कृत में तथा च्योतिष पर दूसरा प्रन्थ ''वाल बोधिनी" हिन्दी में है ।

मुगल साम्राज्य के लिये अपनी छोर से सहायता देने में वीकानेर राज परिवार के सदस्य पीछे नहीं रहे। रायसिंह के चाचा शृंग ने काश्मीर के युद्ध में उल्लेखनीय सेवायें दी तथा वहां अपने मुळी भर वहादुर साथियों के साथ ज्ञिक जीवन का अन्त करके शाश्यत यश प्राप्त किया। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। गुजरात के युद्ध में रायसिंह के भाई रामसिंह

श. "रायसिंह महोत्सव" में राव सीहा से लेकर रायसिंह तक जोघपुर और वीकानेर के शासकों का वंश परम्परानुसार वर्णन है। 'वालवोधिनी" श्री पित की संस्कृत रचना 'ज्योतिष रत्नमाला" का हिन्दी अनुवाद है। ये दोनों अन्य लेखक के निजी अधिकार में अनूप संस्कृत पुस्तकालय में हैं जो लालगढ़ पैलेस वीकानेर में स्थित है। लेखक द्वारा कुछ ही समय पूर्व स्थापित करणी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के लिए शोघकार्य हेतु यह महत्वपूर्ण पुस्तकालय खोल दिया गया है। यह पुस्तकालय वाहर के शोध अध्येताओं के उपयोग हेतु मी खुला है।

ट. वेवरिज-त्रकवर नामा, माग ३, पृ. ७६७।

देंगरा दिखाई गई वीरता का उल्लेख भी पहले किया जा चुका है । सन् १५७३ में गुजरात की दूसरी लड़ाई में जब रायिंग्ह को एक महत्वपूर्ण सेनापित वनाया गया तो उसका एक छोटा माई पृथ्वीराज भी बीकानेर की सेना के साथ था । श्रालखधारी के अनुसार काबुल पर चढाई में पृथ्वीराज एक सैनिक टुकड़ी का प्रधान या और वहाँ उसने जो वीरता दिखाई उसके बदले में बादशाह (ग्राकबर) ने उसे गागरोन की जागीर प्रदान की थी । प्रिकंड योद्धा होने के अतििक पृथ्वीराज एक महान किया था । उसका काव्य प्रन्थ "वेलि कृष्ण ककमणी री" श्रामर रचना बन गई है ।

समस्त भारत में जिस घटना से पृथ्वीराज प्रसिद्ध हुवा वह राणा प्रताप को गहन निराशा के च्यां में उसके द्वारा दी गई प्रेरणा है। अकबर के अव्यव्धिक अव्य सैन्यदल के क्रूर आक्रमणों के विरुद्ध राणा प्रताप काफी समय से अपनी स्वतन्त्रता कायम रखने का प्रयत्न कर रहा था। इस असमान संघर्ष में राणा के साधन प्रायः समाप्त हो गये और एक समय ऐसा भी आया जब उसे भूख से पीडित होना पड़ा। वह अपने बच्चों को भूख से विलिबलाते नहीं देख सका। वह लगभग दुर्वेल हो गया था और मुगल सेनापित ने अकबर के पास स्चना भेजी थी जिसमें लिखा था कि राणा आत्म-सम्पर्ण करने वाला है। अकबर ने प्रसन्न होकर वह पत्र पृथ्वीराज को दिखाया। पृथ्वीराज ने कहा कि यह पत्र असली नहीं हो सकता। सत्य ज्ञात करने के लिये उसने बादशाह की स्वीकृति माँगी। उसने महाराणा प्रताप को निम्मलिखित दो दोहे लिखे:—

पातल जो पतशाह, बोले मुख हूतां वयण । मिहर पिछम दिसमांह, ऊगे कासप राव उत्त ॥ पटकूं मूंछां पाण, कै पटकूं निजतन करद। दीजै लिख दीवाण, इसा दो महिली वात इक ॥

श्रर्थीत् "यदि पातल (प्रताप) श्रपने मुख से श्रकबर को वादशाह कह दे तो कश्यप का पुत्र सूर्य पश्चिम दिशा में उदय होगा। मैं गर्व के साथ श्रपनी मूं छों पर बल दूँ श्रथवा शर्म से श्रपने शरीर को तलवार से काट कर मर जाऊँ। हे दीवान इन दो बातो में से एक बात लिख दें।" इस उद्वोधन ने महाराखा प्रताप को प्रभावित करके इतना हट वना दिया कि

१. श्रलखघारी-राजा रायसिंह, दृ० १५०।

२. अलखधारी पूर्व उड्डत, ए० १५९ ।

उसने श्राबीवन वादशाह के विरुद्ध श्रपनी स्वतन्त्रता की रज्ञा करने की निश्चय कर लिया । राणा प्रताप ने निम्नलिखित उत्तर भिजवाया—

तुरक कहासी मुख पतौ, इए तन सूं इकलिंग। ऊगे जांही ऊग सी, प्राची बीच पतंग।। खुशी हूँत पीयल कमघ, पटको मूंछां पाए। पछटण है जेते पतो, कलमां सिर के वाए।।

श्रर्थीत् "इकलिंग जी की कुपा से जब तक यह शरीर है, में श्रपने मुख से श्रक्तर को तुरक ही कहूँगा। सूर्थ हमेशा की तरह पूर्व दिशा में ही उदय होता रहेगा। हे कमघज (राठोड़) पीथल (पृथ्वीराज) तुम प्रसन्नता के साथ श्रपनी मृंछों पर बल दो। मेरी तलवार हमेशा मुसलमानों के सिरों को काटती रहेगी।"

केवल पृथ्वीराज ही इस प्रकार का कार्य करने का साहस कर सकता था। यह घटना उसकी स्वतन्त्र प्रकृति का प्रमाण है। राजपूत राजकुमारों में सम्भवतः पृथ्वीराज ही एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जिसके बारे में अकबर ने अपनी रचना में कुछ कहा हो। विवाद के च्यों में अकबर के मुख से निकला—

> पीयल सू मजलिस गई, तानसेन सो राग। इंसनो रिमनो, नोलिनो, गयो नीरनल साथ॥

ग्रर्थात् पीयल के साथ मजलिस चली गई । तानसेन के साथ संगीत चला गया ग्रीर वीरवल के चले जाने (मर जाने) पर हँसने खेलने श्रीर बातचीत करने का श्रानन्द गया ।

जब शाहजादे खुर्रम ने अपने पिता से भगड़ा कर वंगाल पर अधिकार कर लिया या तो तो रायसिंह का चतुर्थ पुत्र किशनसिंह उसकी सेना का सेनापित और पक्का सहायक था। सन् १६०६ में जहांगीर ने उदयपुर के राणा के विरुद्ध सेना मेजी तो उसे महावत खां के साथ सेनापित बना कर भेजा गया। इस अवसर पर उसने जो वहादुरी दिखलाई, उसके लिये उसका दर्जा बढ़ा कर उसे २००० (तीन हजारी) का मनसवदार बना दिया गया। जब शाहजादा खुसरो ने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह किया तो उनका पीछा करने और हटाने में किशनसिंह ने भी भाग लिया था। सन् १६१५ ई० में जहांगीर ने उसका मनसव सादेचार हजार कर दिया।

१. अलखघारी-पूर्व उद्भत, टु० १४६-६०।

रायसिंह के उत्तराधिकारी चौर केन्द्रीय सत्ता

सन् १६१२ में दलपतिसंह अपने पिता रायसिंह का उत्तरिकारी वना । उसका जन्म २४ जनवरी सन् १५६५ (फाल्गुन बदी ८, सम्वत् १६२१) को हुआ था। उसने अपने पिता को अप्रसन्न कर दिया था। अतः उसके पिता ने उसे अधिकारच्युत कर के उसके छोटे भाई स्रिसंह को राज्य का उत्तरिधिकारी नियत करने की योजना बनाई थी। पर चूं कि महाराजा रायसिंह की मृत्यु दिल्णा में हुई और एलपतिसंह उस समय बीकानेर में था अतः ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण वह बिना किसी विरोध के राजसिंहासन पर वैठा। इसके जाद वह बादशाह के प्रति अपनी अद्धा प्रकट करने के लिये दिल्ली गया। वादशाह ने उसे राय का खिताब और खिलअत (सम्मान की पोशाक) प्रदान की। स्रतिसंह भी बादशाह के दरबार में उपस्थित हुवा और यह कह कर कि उसके पिता ने पहले ही उसके माथे पर राजतिलक कर दिया, बीकानेर की गही पर अपना दावा प्रस्तृत किया। बादशाह इससे रुष्ट हो गया और कहा कि तब तो वह अपने हाथ से दलपतिसंह के माथे पर तिलक करेगा। अपने निर्ण्य के फलस्वरूप उसने अपने हाथ से दलपतिसंह के माथे पर तिलक करेगा। अपने निर्ण्य के फलस्वरूप उसने अपने हाथ से दलपतिसंह के माथे पर तिलक करेगा। अपने निर्ण्य के फलस्वरूप उसने अपने हाथ से दलपतिसंह के माथे पर तिलक करेगा। अपने निर्ण्य के फलस्वरूप उसने हाथ से दलपतिसंह के माथे पर तिलक करेगा। अपने निर्ण्य के फलस्वरूप उसने हाथ से दलपतिसंह के माथे पर

त्रगस्त सन् १६१२ में बादशाह ने मिर्जी करतम को यहा का हाकिम नियुक्त कर के राय दलपतसिंह को उसके साथ जाने का न्यादेश

२. वेवरिज श्रोर राजर्स-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० २२७-२५।
मोहम्मद सैयद श्रहमद-पूर्व उद्धृत, पृ. १६४।

त्रजरतन दास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी), पृ. ३६१-६२।

श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, मोग २, पृ. ४५६।

देवीप्रसाद-जहांगीर नामा, पृ. १५२।

दिया। उसने दलपतिसंह का मनसब बढ़ाकर २००० कर दिया। लेकिन दलपतिसंह थट्टा जाने की बजाय बीकानेर चला गया ये और इस प्रकार बादशाह उस पर नाराज हो गया। बीकानेर पहुँच कर उसने चूड़ेहर (वर्तमान अनूपगढ़ के पास) नामक रेगिस्तानी स्थान में एक किला बनाने का आदेश दिया ताकि भाटियों पर अधिक नियंत्रण रखा जा सके। इससे भाटी उससे नाराज होगये। ज्योंही किले की नींव खोदी गई खारबारा के भाटीं सरदार ने लगभग ३ हजार लोगों की सैनिक सहायता से उसे वापस भर दिया और किला नहीं बनाने दिया। एक नवम्बर सन् १६१२ को भाटियों ने वहां पर स्थापित थाना भी उठवर दिया।

श्रपने प्रिय मन्त्री पुरोहित मान महेश के बहकावे में श्राकर दलपतिसंह ने फलौदी को छोड़कर श्रपने भाई स्रिसंह की सारी जागीर ग्रहण कर ली (खालसा कर ली)। है इस पर स्रिसंह ने श्रपने प्रतिनिधि पुरोहित लच्मीदास को दिल्ली भेजा। है कुछ समय उपरान्त श्रपनी माता के साथ सोरों की तीर्थ यात्रा पर जाते समय स्रिसंह रास्ते में साँगानेर में ठहरा श्रीर वहां राजा मानसिंह कछ्वाहा से मिला। वहां से वह सौरों चला गया। सोरों में उसे दिल्ली दरवार में उपस्थित होने का बादशाह का फरमान मिला। दिल्ली में बादशाह ने श्राज्ञा दी कि जियाउदीन तुरन्त सेना लेकर दलपतिसंह को गही से हटा दे श्रीर स्रिसंह बीकानेर के शासक के रूप में गदी पर वैठें। है

दलपत जियाउद्दीन का विरोध करने के लिए एक शक्तिशाली

क्रजरत्न -पूर्व ठढ्टृत (हिन्दी), पृ० ३६२ ।
 मोहस्मद सैयद श्रहमद-पूर्व ठढ्टृत, पृ० १६४ ।

२. मोहम्मद सैयद ऋहमद-पूर्व उद्धृत, पृ० १६४ ।

३. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, ७० १४० ।

४. श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, ९० ४८६ । महाराजा रायसिंह ने अपने जीवन काल में फलोदी और ५४ गांव सूरसिंह केंद्र प्रदान कर दिये थे।

प्रशालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० १४२-४३ ।
 श्यालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ४८६ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ३१ ।

६. दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० १४४ । श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४८६ ।

सेना लेकर छापर श्राया । जियाउद्दीन दलपत के जंबरदस्त श्राक्रमण के समच नहीं ठहर सका । श्रतः वह पीछे हट गया श्रीर तुरन्त सहायता मांगकर उसकी प्रतीचा करने लगा । इसी वीच स्रसिंह ने अपने श्रादमी सेज कर उन श्रनेक सरदारों को श्रपने पन्न में कर लिया जो दलपत के दुर्व्यवहार से नाराज थे । केवल ठाकुरसी जीवणदासोत, जो उस समय दलपत की श्रोर से मटनेर का स्वेदार था, श्रपने स्वामी के प्रति सच्चा बना रहा । वह ३००० योद्धाश्रों को लेकर श्राया । इन लोगों तथा कुछ दूसरे लोगों, जिनकी ईमानदारी संदेहास्पद थी, के साथ दलपतिसंह दूसरी बार जियाउद्दीन से लड़ने के लिये श्राया । दलपतिसंह हाथी पर सवार था श्रीर उसके पीछे चूक का ठाकुर भीमसिंह बलमद्रोत वैठा था । भीमसिंह दलपतिसंह से खुश नहीं था श्रीर गुप्त रूप से उसके शत्रुशों से मिला हुश्रा था । युद्ध श्रारम्भ होते ही भीमसेन ने पीछे से दलपतिसंह को पकड़ लिया श्रीर उसे एक दल को तौंप दिया जो उसे हिसार ले गया । यहां से उसे कैदी के रूप में श्राजमेर भेज दिया गया।

ख्यातों में लिखा है कि जब दलपतिसंह एक पुराने स्थान में सौ सैनिकों के निरीक्षण में कैंद्र था तो मारवाड़ का जागीरदार, हरसोलाव का ठाकुर हाथीसिंह चांपावत गोपालदासोत अपनी समुराल जाता हुआ अजमेर से गुजरा और बन्दी गृह के निकट ठहरा। जेल के सींकचों में से दलपतिसंह ने उसका तम्बू देखकर पृछ्ठताछ की और ठाकुर से मिलते की अभिलाषा प्रकट की। ठाकुर ने कहलाया कि वह समुराल से लौटते समय मिलेगा। दलपतिसंह ने व्यंग में कहा कि अपने सम्बन्धियों से मिलने जाते हुए स्वतन्त्र व्यक्तियों के पास कैदी से मिलने के लिये समय कहां है १ यह मुनकर ठाकुर का राजपूती गौरव शीव उत्तेजित हो उठा। उसने अपने साथियों से तुरन्त कहा कि राठौड़ों के लिये इससे बढ़कर और यश की बात क्या हो सकती है कि वे शत्रु द्वारा कैद एक अन्य राठौड़ को छुड़ाने के लिये लड़ते लड़ते मर जाय इस पर सबने केशिरये बाने पहन लिये और जेल पर टूट पड़े। उन्होंने रक्कों को मार कर दलपतिसंह को छुड़ा लिया और अपने घोड़ों पर सवार होकर रवाना हो गये। लेकिन अषमेर के स्वेदार ने चार हजार फीज लेकर उनका पीछा किया और उन्हें घेर लिया। ठाकुर के मुटी भर लोग

पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ३१-३२ ।
 दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, टृ. १४४६ ।
 इयामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, टृ० ४८६-६० ।

श्रापने वचन के श्रानुसार श्रापने से श्रानेक गुना श्राधिक सेना के साथ लड़ते हुयें मारे गये। पर्यासेह का उत्तराधिकारी दलपत भी, जो बुद्धिमान होने की श्रापेत्वा वहादुर श्राधिक था, मारा गया। उनकी छः रानियां जो भटनेर में थीं, श्रापने पति की मृत्यु का समाचार सुनकर सती हो गई । थ

इस प्रकार सन् १६१३ में स्रिसंह बीकानेर की गद्दी पर वैठा। उसका जन्म २८ नवम्बर सन् १५६४ में हुग्रा था। गद्दी पर वैठने के तुरन्त बाद वह बादशाह बहांगीर के प्रति सम्मान शक्ट करने के लिये दिल्ली गया। बादशाह ने उसका मनसब बढ़ा दिया।

दिल्ली में वह वीकानेर राज्य के एक भूतपूर्व मन्त्री कर्मचन्द बच्छावत के परिवार के लोगों से मिला और उन्हें बीकानेर लोटने के लिये कहा । स्वगींय कर्मचन्द के पुत्र लक्ष्मीचन्द को उसने अपना दीवान नियुक्त किया । कर्मचन्द ने मरते समय अपने पुत्रों को चेतावनी दी थी कि वे कभी बीकानेर न लोटे पर लक्ष्मीचन्द व उसका भाई भागचन्द स्रसिंह की चिकनी चुपड़ी बातों में आ गये । स्रसिंह अपने पिता के अन्तिम समय में

"तुजुक-इ-जहांगीरी" (माग १ १० २५ प्र-५६) में इसका मित्र प्रकार से उल्लेख है। इसके अनुसार ११ अगस्त सन् १६१३ को स्रिसंह के हायों दलपतिसंह की हार का समाचार वादशाह को मिला। वादशाह ने स्रतिसंह को दलपतिसंह को हटाने के लिये मेजा था। वाद में दलपतिसंह ने हिसार की सरकार में उपद्रव करना आरम्भ कर दिया जिस पर सोस्त के हाकिम और अन्य जागीरदारों ने उसे बन्दी बनाकर दरवार (दिल्ली) में मेज दिया। जू कि उसके गैर कानूनी आचरण से वादशाह पहले से उस पर काफी कुषित था अतः उसे मृत्यु दंड दे दिया गया और स्रिसंह की सेवाओं के बदले उसके मनसव में ५०० की धृद्धि कर दी गई।

नैगुसी-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ. १६६ । 💮 🚟 🔆

रं. इन सेवार्त्रों के चदले में हरसोलाव के ठाकुरों को बीकानेर के किले में सूरज पोल तक घोड़े पर सवार होकर जाने का वंश परस्परागत सम्मान मिला ।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. १४६-४५ ।
 प्रयामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ४६०--६१ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ३२ ।

इस बात का समर्थन "उमराएँ हन्द्र" पू० १६४ से भी होता है। दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० १४६। पाठलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ३२।

४. श्यामलदास-पूर्व उद्भुत, भाग २, पू ४ दह-६० ।

की गई प्रतिज्ञा याद थी कि वह उसके सारे शतुष्त्रों को नष्ट कर बदला लेगा। वीकानेर लौटने के दो महिने बाद लच्मीचन्द श्रीर उसके परिवार के सदस्यों ने श्रापने श्रापको चार हजार सैनिकों द्वारा घेरा हुवा पाया।

यद्यपि ये बच्छावत जाति से बनिये थे तो भी उन्होंने कैद होकर कष्ट उठाने की अपेना लड़ते हुए भरजाने का निश्चय किया। अतः उन्होंने अपने परिवार की रित्रयों को मार कर तथा अपने पास के हीरे जवाहरातों को पीस कर नष्ट कर अपने साथ के पांच सौ राजपूतों के साथ बीकानेर की सेना से युद्ध किया और सब के सब मारे गये। केवल उनके वंश का एक बालक, जो उन दिनों अपनी निनहाल में था, बच गया। लेकिन वह बीकानेर कभी नहीं लौटा। उसने उदयपुर को अपना निवास बनाया, जहां उसके वंशज अब भी

सन् १६१४ में राठौड़ रघुनाथ, सुदर्शन, गोकुलदास भगवान, फावी पठान श्रौर हुसैन क्यामखानी नरवर के किसानों पर श्रत्याचार करने लगे श्रौर वहां के ५२ गांवों पर श्रिषकार कर लिया । उन्होंने लोगों को मारना श्रौर लूटना श्रारम्भ कर दिया श्रौर २४ लाख दाम वस्त्ल कर लिये। जब बादशाह के पास यह शिकायत पहुँची तो उसने स्रसिंह को इसकी जांच करने श्रौर यदि शिकायत सत्य हो तो दोषी लोगों को कड़ा दंड देने हेतु भेजा। इस समय तक विद्रोहियों का साहस इतना बढ़ गया

२. जहांगीर का सन् जुनूस ६ तारीख १ खुरदाद का फरमान ।

"श्रमीरों में श्रेष्टता प्राप्त शाही कृपाश्रों तथा सम्मानों के योग्य राव सूरजिसह को मालूम हो कि नरवर परगने के बहुत से किसान विश्व के श्ररण स्थल शाही दरवार में श्राये हैं। उन्होंने शिकायत की है कि राठोड़ रघुनाय, सुदर्शन, गोकुल दास, मगवान, कावीपठान, श्रीर हुसैन क्यामखानी ने वहां के ५२ गावों पर श्रधिकार कर लिया है श्रीर उन्होंने लोगों को मारना श्रीर लूटना श्रारम्म कर दिया है उनसे २४ लाख दाम वसूल कर लिये हैं। इन फरियादियों ने न्याय की मांग की है।

 \mathbf{X}

" • • • उसे चाहिये कि वह इन ऋर विद्रोहियों को कडा दंड दे और वहां से लूटे हुए माल और गाँवों को विद्रोहियों से वापस लेकर उनके असली मालिकों को सौंप दे।"

१. दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० १४२-५३। श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ४६१-६२।

या कि उन्होंने शाही खजाने को मी लूट लिया।

उन्होंने लूिण्यां के निवासियों को भी लूटा । तब बादशाह ने हाशिम वेग चिश्ती को उनका दमन करने के लिये नियुक्त किया और स्रिसंह भी उसकी सहायता करने के लिये मेजा गया ।

इसी वर्ष चोर विद्रोही और लुटेरा चन्द्रमान केश्विलोच के हाथों कड़ा देख पाकर बीकानेर के इलाके में प्रविष्ट हो गया। जहांगीर ने स्रसिंह को लिखा कि वह उसे जिन्दा अथवा मुर्दा गिरफ्तार करे।

जनवरी सन् १६१५ में सूरसिंह को शाही दरवार में बुलाया गया। सन् १६२२ में दारावखां के साथ वह किरकी के युद्ध में था। वहां उसने बड़ी वीरता और राज्यभिक्त का परिचय दिया जिसकी वादशाह

९. सन् ज़ुनूस ६ तारीख ५ अमरदाद का जहांगीर का फरमान ।

"श्रमीरों में श्रेष्टता प्राप्त, शाही कृपात्रों के योग्य राय 'सूरजिस को मालूम हो कि ये बात हमारे यशस्वी श्रीर सम्मानित कानों तक पहुंची है कि गोकुल सुदर्शन, रघुनाथ श्रीर कुछ दूसरे विद्रोही कुंवरों ने दलपत से ३०,०००) रु० वसूल कर लिए हैं जो कि शाही खजाने के थे। लूिएया परगने श्रीर श्रासपास के निवासियों की सम्पत्ति श्रीर सामान जन्त करके इन लोगों ने गांव वालों को वहां से जवरदस्ती निकाल दिया है।"

".... उसे (सूरजिसह को) चाहिए कि वह पूर्णतः उसकी इच्छानुसार कार्य करते हुए उन विद्रोहियों से शाही घन तथा लोगों से लिया गया कर वापस वसूल करें और उन दुष्ट लोगों को ऐसा कड़ा दण्ड दे जो सारे विद्रोहियों और विस्तव कारियों के लिए एक आदर्श चेतावनी वन जाय। साथ ही उन लोगों को उस इलाके से निकाल दिया जाय ताकि वहां के निवासी पुनः अशान्ति और उनकी मूमि पर दूसरों के कब्जे से सुरिक्ति रहकर अपना खेती का काम कर सकें और आराम व विश्वास के साथ रह सकें।"

- २. सन् जुलूस ६ तारीख ३१ अमरदाद का जहांगीर का फरमान ।
- ३. सन् जुतूस ६ तारीख वहमन माहे इलाही का जहांगीर का फरमान ।

× × × × ×

"यह जरूरी है कि नव उपर्यु कत (हरराम) वहां पहुंचे श्रीर उसे (स्रजिंस को) जहांगीर के मान्य उदात्त श्रादेश के विषय का पता चले तो उसे चाहिये कि वह श्रश्रों जैसे सिंहासन की सीढ़ियों की श्रोर बढ़े तथा जमीन को चूम कर उपस्थित के सम्मान से श्रापने श्रापको सम्मानित करें।"

ने काफी प्रशंसा की। ११६२२ में उसे आमेर के निकट जालनापुर के थाने पर नियुक्त किया गया। २ सन् १८२३ में जहांगीर ने उसे सदीं की खिल अत (सम्मानित पोशाक) प्रदान की। इ

१. सन् जुलूस १६ तारीख २८ उदींबिहश्त का जहांगीर का फरमान ।

"शाही सम्मानों से सम्मानित और उल्लेखनीय, अमीरों में गौरवशाली और कृपाओं तथा उपकारों के योग्य राय स्रजिस को यह मानना चाहिये कि इन दिनों किरकी (वम्बई के निकट एक स्थान) की विजय की सुखद खबर मिली है। यह खुदा की मदद से स्वयं वादशाह के सेवकों के शुम प्रयत्नों से प्राप्त हुई है। यह प्रति-दिन वढ़ने वाला शाही यश राजमक अनुमनी और परिश्रमी सेवकों के प्रयत्न से प्राप्त होकर हमारे कानों तक साम्राज्य के स्तम्म और राज्य के स्वामीमक मित्र दाराबखाँ द्वारा भेजे गये सन्देश और सेना के लेन देन के रोजनामचे से पहुंची है।

× × × ×

श्रमीरों के गौरव (राव सूरजिसह) वाह-वाह ! खुदा उस पर रहम करे । उसने श्रपनी वीरता, इमानदारी, राजमिक श्रीर परिश्रम वही सब कुछ कर दिया है जो उसके लिये जरूरी था । खुदा ने चाहा तो इस शानदार विजय के बाद उसे विभिन्न प्रकार के सम्मानों से उन्नत किया जायेगा ।"

× × × × ×

२. हिजरी सन् १०३१ तारीख ६ ज़ीकाद का जहांगीर का फरमान ।

 \times \times \times \times

"सम्मानित और प्रमुख आदेश जारी किया गया है कि चूँ कि उसकी नियुक्ति आमेर के निकट जालनापुर के याने में की गई है अतः उसका वह स्थान छोड़ना उपयुक्त नहीं है।

सुलेमान के (सोलेमन के) सम्मान के साथ वादशाह ने अपने सेवकों को प्रतिष्ठा व गौरव के साथ एक पत्र इस वारे में भेजा है और निकट मविष्य में हमारे आदेश के उत्तर में दूसरा पत्र जारी किया जायेगा कि अमीरों में अेष्ठता प्राप्त (राव सूरजिसेंह) हमेंशा की तरह उस थाने का निरीक्तक रहे।

२. सन् जन्स १८ तारीख २६ इसफन्दरमुज इलाही का फरमान ।

"श्रमीरों में श्रेष्ठता प्राप्त श्रीर शाही कृपाश्रों तथा सम्मानों के योग्य राजासूरजिंसह को मालूम हो कि उसकी महान विनम्रता के वदले में हमने खुश होकर उसे सम्मानित करने के लिये एक सर्दी की खिलश्रत (पोशाक) मुतालिन के साथ मेजी है।

, 57 9 , 5 7

एक दूसरे अवसर पर जब यह शिकायत आई कि जोहियों तथा दूसरों ने सिरसा पर धावा किया और वहां के प्रधान राय जल्लू तथा दूसरों को मार डाला एवं कोई वारह गांवों के निवासियों को वहां से हटा कर उनकी सम्पति और पशु लूट लिये तो वादशाह ने स्रसिंह को विद्रोहियों को दएड देने और वहां के निवासियों की लूटी हुई सम्पति वापस दिलाने के लिये मेजा।

जब खुर्रम ने सन् १६२२ में अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया और दिल्ला में गड़बड़ी करनी शुरू कर दी तो जहाँगीर ने खुर्रम के विरुद्ध सेना देकर स्रिण्ड को दिल्ला मेजा। स्रिण्ड ने खुर्रम के विरुद्ध कई लड़ाइयां लड़ी और शाहजादे की सेना पर कई जबरदस्त प्रहार करके उसे वहुत कमजोर कर दिया और साम्राज्य के इस सुदूर भाग (दिल्ला) में बादशाह की सत्ता पुनः स्थापित कर दी। लेकिन खुर्रम स्रिण्ड से असन्तुष्ट नहीं हुवा जैसा कि बाद के इतिहास से पता चलता है। किसी फारसी तवारीख में इस घटना का उल्लेख नहीं है पर ओमाजी ने इसका वर्णन किया है और

सन् जुन्स १५ तारीख १७ तीर, इलाही का जहाँगीर का फरमान ।

"अमीरों में श्रेष्ठता प्राप्त शाही कृपाओं तथा उपकारों के योग्य राजा सूर को मालूम हो कि वहजाद और अलाउदीन ने सिरसा से आकर दरवार में यह शिकायत की है कि आशकरण, केशवदास और दूसरे कान्यलोत तथा मटनेर परगने के जोहियों ने उनके गाँवों पर हमला किया । उन्होंने राय जल्लू व दूसरों को मार डाला तथा लगभग १२ गाँव के निवासियों को हटाकर उन गांवों की सम्पति और पशु लूट लिये।

"यदि यह सत्य है तो यह ज़रूरी है कि वह (राजा सूर) उन्हें दंड दे और उन्होंने जो सम्पति जूटी है उसे वापस उसके मालिकों को देने के लिये विवश करे। उसे किसी को भी वहां के लोगों पर अत्याचार नहीं करने देना चाहिये।"

- २. सन् जुलूस १६ तारीखं २४ खुरदाद का जहांगीर का फरमान ।
 "शाही अभिलाषा यही है कि उस अभागे का नामोंनिशां मिटा
 दिया जाये । इस लिये इसका (सूरतसिंह) तथा अन्य राजमक व्यक्तियों का
 कर्तव्य है कि उस प्रतिकूल आचरण करने वाले अभागे को दूर करने में
 अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करें।"
- २. दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० १५२-५४ । श्यामल दास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ४६२-६३ ।

लेखक के ग्रिधिकार में सुरित्तित सन् जुलूस १६ तारीख २४ खुरदाद तथा सन् जुलूस १६ तारीख १४ ग्राबान के जहांगीर के फरमान से इसका समर्थन होता है। इन सेवाग्रों के बदले में जहांगीर ने एक घोड़ा श्रीर खिलग्रत देकर सूरिसंह का सम्मान किया।

मिलक अम्बर की सन् १६२६ में मृत्यु हो जाने पर जाहगीर ने स्रितिह को एक फरमान मेजा कि वह अवसर पर खुरम को हटाने की पूरी कोशिश करे। इसी वर्ष जहांगीर ने मुल्तान में साम्राज्य के इस इलाके पर शासन के लिये किसो योग्य आदमो को भेजना चाहा तो स्रितिसह इस कार्य के उपयुक्त माना गया। उसे दिल्जी बुलाया गया और सम्मानित करके

- सन् जुत्स १६ ता० २४ खुरदाद का जहाँगीर का फरमान। इसके लिये
 पृ० ५४ की टिप्पणी संख्या २ देखिये।
- २. "सन् जुतूस १६ ता॰ १४ आवान का जहाँगीर का फरमान।

'शाही सम्मानों से सम्मानित और प्रसिद्ध श्रमीरों में गौरवशाली शाही कृपाओं तथा उपकारों के योग्य राजा स्ग्जसिंह को मालूम हो कि उस श्रमागे के साथ युद्ध और उसकी हार व पलायन की खबर और इसके साथ ही शाही राजमकों द्वारा किये गये विलदान और प्रयत्न की बांत हमें मालूम हुई है।"

सन् जुन्स १६ ता० १४ त्रावान का जहाँगीर का फरमान ।

× × × ×

"उसके सम्मान के लिये राजा जोरावर के साथ हम घोड़ा श्रौर बिल श्रत (पोशाक) भेज रहे हैं।"

२. सन् जुल्स २१ ता० २७ खुरदाद का जहाँगीर का फरमान।

"अभीरों में श्रेष्ठता प्राप्त, शाही कृपाओं के गोग्य राय सूरजिसह को माल्म हों कि हमें अभी अभी यह खबर मिली है कि अग्बर मर गया है और इससे एक उपयुक्त अवसर आ गया हैं।

"अतः हम हुक्म देते हैं कि चूं कि यह ईमानदारी दिखाने का समय है, उसको चाहिये कि वह दूसरे सेवकों के साथ अभागे को (खुर्रम को) जड़ से उखाड़ कर नष्ट करने के लिये अपनी पूरी ताकत का उपयोग करे और इस काम को अपनी पदोन्नित का एक साधन समसे ।"

मुल्तान भेजा गया क्योंकि यह उसके इलाके के निकट था। इसी वर्ष सरित को बुरहानपुर भेजा गया क्योंकि जैसा स्वयं जहांगीर ने एक फरमान में लिखा है उस स्वे में ऐसे स्वामी-मक्त का होना जरूरी था। मालूम पहता है स्रित वीकानेर लौट गया था अतः उसे बुलाने के लिए दुवारा आरेश भेजने पड़े।

नागौर ग्रौर दूसरे परगने सन् १६२७ में जहांगीर द्वारा स्रसिंह को प्रदान किये गये ग्रौर तत्सम्बन्धी ग्रादेश राजस्व ग्राधिकारियों को दिये गये।

१. सन् जुलूस २१ ता० ११ अमरदाद का जहाँगीर का फरमान ।

"अमीरों में श्रेष्ठता प्राप्त शाही कृपांत्रों और सम्मानों के योग्य राय सूरजिसह को मालूम हो कि ऐसा कोई आदमी मुल्तान में नहीं है जो हमारे मन को सन्तोष दे सके और चूंकि उसकी जागीर मुल्तान के निकट है अतः कृपा के रूप में हम उसे आदेश देते हैं कि जिस दिन उसे यह हुक्म मिले उसी दिन वह शाही दरनार के लिये रवाना हो जाये। उसे इतनी जल्दी करनी चाहिये कि निना रनवास में जाये ही रवाना हो जाये।"

२. सन् जुलूस २९ ता॰ २७ मेहर का जहाँगीर का फरमान ।

"अमीरों में श्रेष्ठता प्राप्त, शाही कृपाओं तथा सम्मानों के योग्य राय स्रामिंह को मालूम हो कि हमने उस अमागे के विरुद्ध महावत साँ को यहा आदेश भेजा है। हम अमीरों के विकल्प स्रामिंह को आदेश देते हैं कि ज्योंही हमारी इस कृपालु आज्ञा के विषय का ज्ञान हो उसे विना जरा भी हिचक और विलम्ब के उस स्थान से खाना हो जानो चाहिये, चाहे वह उस समय कहीं भी क्यों न हो। उसे बुरहानपुर चले जाना चाहिये क्योंकि स्रामिंह जैसे स्वामी मक्त की उपस्थित उस स्वे में अनिवार्य है।

- सन् जुल्स २१ ता० १४ अजर का जहाँगीर का फरमान ।
- ४. सन् जुतूस २२ ता॰ १६ मेहर का जहाँगीर का फरमान ।

"अभी अभी हमने यह शुम और मान्य शाही हुक्न जारी किया है कि नागीर का परगना और दूसरे स्थान जो आदेश में लिखे हैं अभीरों में श्रेष्ठता प्राप्त राव सूरजर्सिंह को तुस्कान ११ की खरीफ (सियाजू) के आरम्म से अमरसिंह के हटाये जाने पर जागीर रूप में दिये जाते है।

दीवानी मामलों के प्रधान और दूसरे ऐसे लोग जो शाही आदेश से वहाँ काम कर रहे हैं, को चाहिये कि उपर्युक्त महल, उपर्युक्त व्यक्ति (सुरतसिंह) को सौंप दिये जायँ और इस परिवर्तन से इसे सुरिच्चित समस्का जाय।

२८ ग्राक्ट्रबर सन् १.६२७ को काश्मीर से लौटते समय जव भीम्भर में एकाएक जहांगीर का देहांत हो गया तो शहजादे खुर्रम ने तुरन्त ग्रपने श्रापको बादशाह घोषित कर दिया। यद्यपि जहांगीर के शासन के श्रंतिम विषो में तूरजहां वेगम ने खुर्रम के विरुद्ध षड़यन्त्र त्रारम्भ कर दिया या पर खुर्रम उन्हें मालूम करके वेगम की चालों को नाकामयाव बनाने में समर्थ हो सका। बादशाह का सबसे बड़ा पुत्र होने के कारण खुरेम ही तख्त का अधिकारी था। उसके योग्य मित्र ग्रौर उसका प्रभावशाली श्वसुर त्र्यासफलाँ उसके लिये बहुत बड़े सहायक थे। राजधानी से इतनी दूर जहांगीर की ग्राकस्मिक मृत्यु ने उसे तख्त पर ग्रिधिकार करने का स्वर्ण ग्रावसर प्रदान किया। शाहजहां के नाम से तख्त पर बैठने के बाद उसने साम्राज्य के ग्रमीरों ग्रीर श्रिघकारियों को उदारता से उपहार देकर उन्हें ग्रापने पत्त में कर लिया । इस ग्रावसर पर उपहार पाने वालों में सूरसिंह भी एक था। जहांगीर के समय उसेका मनसव ३००० जात श्रीर २००० घुड़सवार भा जो शाहजहां द्वारा वढाकर ४००० जात और २५०० घुड़सवार कर दिया गया। उसे एक खिल म्रत (सम्मानित पोशाक) एक हाथी एक घोड़ा, एक जड़ाऊ कुपाण, एक देगची, ग्रीर एक निशान (फंडा) भी प्रदान किया गया । इसी वर्ष नवम्बर मास में उसे मारोठ का किला जागीर में दिया गया । 3

मेरे अधिकार में एक ऐसा भी फरनान है जिसके अनुसार दावर । चक्स दिल्ली के सिंहासन पर बैठा और उसने सूरसिंह का अभिनन्दन

उस महल के चौषरियों, कानूनगो, मुखियों, रेंयत, और किसानों को छादेश है कि वे उसे प्रत्येक फसल और प्रत्येक वर्ष का तथा राजस्व और दूसरे असैनिक कार्यों का पूर्ण विवरण दें। वे कोई वात सा चीज उससे छुपाये नहीं।

उन्हें इस श्रादेश को हर तरह से मानना चाहिये। उन्हें इस श्रादेश से न हटना चाहिये श्रौर न विरोध करना चाहिये। उन्हें इसे अपना कर्तव्य समभना चाहिये।"

- २. व्रजस्तदास-पूर्व उद्भृत (हिन्दी), पृ० ४४६।
- २. देवीप्रसाद-शाहजहाँनामा, भाग १, ट्रू॰ ६। श्रन्दुल हमीद लाहोरी-वादशाहनामा, माग १, पृ० १२०।
- हिजरी सन् १०३७ तारीख २ रिव उस्सानी का जहाँगीर का फरमान ।

किया।

वुखारे के इमाम कुलीखां के माई नजर मुहम्मद खां ने जब काबुल पर चढाई कर किले को घर लिया तो शीव हो स्र्विह को काबुल मेजा गया। काबुल की खबर पाकर वहां की सहायता के लिये वादशाह ने एक सेना मेजी जिसके साथ स्रविह, राच रतन हाड़ा, मिर्जा राजा जयिंह, महावतखां खानखाना और मोतमिदखां को मेजा गया। इस अवसर पर उसे बादशाह को ओर से बड़े डेग द्वारा सम्मानित किया गया लेकिन इनकी २०,००० बुह सवारों की सेना काबुल पहुँचने के पहले ही काबुल के सूबेदार लश्कारखां ने शत्रु को भगा दिया। तब स्रविह व महावतखां वापस बुला लिये गये। व

इसके बाद स्रिसिंह को ऋोरछा के विरुद्ध मेना गया। जब शाह-जहां तख्त पर बैठा तो ऋोरछा का शासक जुकारिसंह बुन्देला उसकी सेवा में उपस्थित हुआ था पर बीच में बादशाह की श्राज्ञा प्राप्त किये विना ही वह ऋपने राज्य लौट गया और विद्रोह की तैयारी करने लगा। जुकारिसह के

१. सन् जुत्स २२ तागीख २० आवान का दावरवक्स का फरमान ।

"अमीरों में अ एता प्राप्त शाही कृपाओं तया सम्मानों के योग्य राय सूर्जिल को मालूम हो कि वादशाह की रूह खुदा की खुशी और मर्जी से खुदा के पास चली गई है (वादशाह का देहान्त हो गया है) इसिलये साम्राज्ञी नूरजहाँ नेगम और राज्य के दूसरे सदस्यों और दरवार के अमीरों ने यह ठीक समस्ता कि हमारे द्वारा शाहीरिकरान (तैमूर) के परिवार का यह दीपक जगमगाता रहे।

"हमने सभी स्वामी मक सेवकों को यह मान्य आदेश जारी किया है कि वे इस महान कृपा के लिये खुदा से दुआयें करें और अपना कर्तव्य स्वामी मित, सेवा और ईमानदारी की मावना से अन्जाम दें। वे अपने अपने इलाकों के समाचार हमेशा दरवार में भेजते रहें।

"हमने उसके (सूरजिंसह के) मनुष्यों के हाथ कुछ जवानी सन्देश मी भेजा है उसको हमारी ही जुवान से निकला मान कर उसे उसी के अनुसार काम करना चाहिये।"

- २. अब्दुल हमीद लाहौरी-वादशाह नामा, माग १, पृ० २९२ ।
- देवीप्रसाद-शाहजहाँनामा, माग १, पृ० १५-१४।
 ज्ञजरत्नदास-पूर्व उद्भृत (हिन्दी), पृ० ४५६।
 मुहम्मद सैयद श्रह्मद-पूर्व उद्भृत, पृ० २५७।

विरुद्ध जो सेना भेजी गई उसके अनेक सेनापतियों में सूरसिंह भी एक था। शाही सेना का मुकावला करने में असमर्थ होने के कारण जुकारसिंह ने संघि कर ली ह्यौर वादशाह से माफी मांगली । अस् १६२६ में मुगल दरवार का एक मनसनदार खान-ए-जहां लोदी निना आज्ञा के, किसी बुरे इरादे से एका-एक ग्रागरे से चला गया। उसे दएड देने के लिये जो सेना गई उसके साथ जाने का स्रसिंह को भी ग्रादेश मिला। शाही सेना ने घोलपुर में खान-ए-जहाँ को जा घेरा। उसने लड़ाई की पर ऋन्त में वह भाग गया ऋौर (ग्रहमदनगर के सुल्तान) निजामुल्मुल्क के पास पहुँच गया । सूरसिंह ग्रौर दूसरे सरदार वापस बुला लिये गये। र सन् १६३० में खान--ए--जहाँ लोदी ने जब राजौरी में शरण ले ली तो दूसरे सेनापतियों के साथ स्रसिंह पुनः उसके विरुद्ध भेजा गया। इस त्र्यवसर पर स्रसिंह का मनसव वढ़ा कर ४००० जात ग्रीर ३००० सवार कर दिया गया । ³ खान--ए--जहाँ ने कड़ा मुकावला किया पर च्रान्त में भाग गया। विजयी सेना के एक भाग ने राजौरी को लूटना आरम्भ कर दिया पर स्रसिंह के नेतृत्व में सेना के एक बड़े भाग ने भागते हुए खान--ए--जहां का पीछा किया और उसे घेर लिया। चारों श्रोर से घिर कर खान-ए-जहां ने पलट कर जोरदार युद्ध किया ग्रौर युद्ध के समय उप-युक्त ग्रवसर पाकर भाग गया ग्रौर मुगल साम्राज्य की सीमा से वाहर चला गया।

यह रमरणीय है कि रायिंसह की मृत्यु पर जब बीकानेर की गदी पर स्रिसह ने अपना दावा किया तो जहांगीर ने उसे अरबीकृत करके दलपतिसंह के माथे पर राजितलक किया था। लेकिन बाद में दलपतिसंह द्वारा अत्याचार किये जाने पर बादशाह ने स्रिसंह का पत्त लिया और उसे गदी दे दी। धीरे—धीरे उसने मुगल दरवार में रायिंसह द्वारा कायम की गई बीकानेर की प्रतिष्ठा, जिसे दलपतिसंह ने कम कर दिया था, पुनः स्थापित कर दी। जहांगीर और शाहजहां द्वारा स्रिसंह के नाम जारी किये गये लगभग ५१ फरमान हैं। इनसे प्रमाणित होता है कि साम्राज्य के स्वामी-भक्त

१. देवीप्रसाद-शाहजहाँनामा, भाग १ पृ० १४--२० । इजरत्नशस--पूर्त्र उद्धृत (हिन्दी) पृ० ४५६ ।

२. देवीप्रसार्-पूर्व उद्धृत, भाग १ पृ० २३--२६ । व्रजरत्नदास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी) पृ० ४५६ ।

श्रन्दुल हमीद लाहोरी—वादशाहनामा, माग १ पृ० २६६ ।

४. देवीप्रसाद-पूर्व उद्भृत माग पृ० २७-४० ।

रत्तक ग्रीर विश्वसनीय सलाहकार के रूप में उसका मान कितना वढ गया था । स्रसिंह को श्रनेक सैनिक श्रीर कृटनीतिक श्रिभयानों पर भेजा गया। इससे सिद्ध होता है कि जहांगीर और शाहजहां दोनों ही उसे अपना सर्वाधिक स्वामी-भक्त मानते थे। बुरहानपुर में भेजे जाने सम्बन्धी फरमान में स्पष्ट लिखा है कि ऐसे स्वामी-भक्त व्यक्ति की उपस्थिति उस सुवे में ग्रत्यन्त ग्रावश्यक है। मल्तान भेजे जाने में स्रसिंह को ही सबसे ग्राधिक उपयुक्त समभाना उसकी कृटनीतिक तीच्ण्बुद्धि का प्रमाण् है जिसे बादशाहों ने सराहा । विभिन्न सैनिक ग्रिमियानों में भेजा जाना उसके सफल सेनापतित्व के गुणों की स्वीकृति है । खुर्रम ने जब अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया तो उसके विरुद्ध लड़ने के लिये स्रसिंह का छांटा जाना एक ऐसा उदाहरण है जिससे पता चलता है कि जहांगीर का उसमें कितना गहरा विश्वास था। हम देखते हैं कि जब खुर्रम दिल्ली की गद्दी पर बैठा तो उसने भी सरसिंह को ऋपना एक विश्वासी सहायक माना । स्रसिंह ने ऋपने मधर व्यवहार से शाहजहां को इतना ग्रधिक मोह लिया कि शाहजहां ने उसे उन श्रमन्तुष्ट लोगों को दराड देने के लिये भेजा जो उसके राज्यारोहरा के विरुद्ध थे। जहांगीर के दो फरमान विशेष रोचक हैं क्योंकि उनमें उसने सूरितंह

१. तारीख प मेहर का जहाँगीर का फरमान ।

"श्रमीरों में श्रेष्टता प्राप्त श्रपने माइयों के गौरव राव सूरजिसेंह की हमारा राम राम माजूम हो ।" हाधिये में लिखा है—

"रावजी को हमारा राम राम मालूम हो। प्रेम में जो जररी था वह कर दिया गया हैं। जो सम्मव है उसे करने में कोई रोक न होगी। उसे अपने उच्च मन को सब प्रकार से शान्त रखना चाहिये और मानना चाहिये कि उसके प्रति हमारी कृपा सर्वाधिक है। अधिक क्या लिखा जाय।"

तारीख २२ अनर का नहाँगीर का फरमान ।

"राव जी को हमारा राम राम माजूम हो जैसा लिखा जा चुका है उसके अनुसार उसे वहाँ से पूर्ण आशा और शक्ति के साथ रवाना हो जाना चाहिये। उसके प्रति प्रेम दिखाने में कोई कमी न रखी जायेगी। उसका महान उद्देश्य निकट भविष्य में सफल होगा। अधिक क्या लिखा जाय शेष वातें उसे वकीलों द्वारा मौखिक रूप में माजूम हो जायेगी। उसे एक सम्मानित निजी पोशाक भी प्रदान की जा रही है। को ग्रपना राम राम लिखा है। इससे स्रसिंह की उच्च प्रतिष्ठा का पता चलता है। केन्द्रीय सत्ता के प्रति स्रसिंह का दृष्टिकोण यह था कि वास्तविक शासक के प्रति स्वामीभिक्त रखी जाय। यह बात दावरवक्स के एक फरमान से भी प्रकट होती है जबकि उसने ग्रल्प ग्रविध के लिये तख्त पर श्रिधकार कर लिया था।

जब वह वादशाह की सेवा में बुरहानपुर (दिक्ण) में था तो वहां बोहरी गांव में सूरजिसंह का १५ सितम्बर सन् १६३१ को देहान्त हो गया।

स्रसिंह के बाद कर्णसिंह १३ श्राक्टूबर सन् १६३१ को गद्दी पर बैठा। उसका जन्म श्रावण सुदी ६ सम्वत् १६७३ (३० जनवरी सन् १६१६) को हुवा था। कर्णसिंह श्रामेर के प्रसिद्ध राजा मानसिंह का पड़रोहिता था। गद्दी पर वैठने के तुरन्त बाद कर्णसिंह शाहजहां की सेवा में उपस्थित हुवा। बादशाह ने उसे २००० जात श्रीर डेट हजार सवार का मनसब दिया। कर्णसिंह के माई शत्रुसाल को भी ५०० जात श्रीर २०० सवार का मनसब दिया। प्रया। सन् १६३१ में कर्णसिंह ने वादशाह को एक हाथी भेंट किया।

दूसरे ही वर्ष सन् १६३२ में कर्णिसंह को एक मुगल श्रमियान में दिल्या जाना पड़ा । मिलक श्रम्बर की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र फतहखां उसका उत्तराधिकारी हुवा । पर श्रहमदनगर के शासक निजामशाह द्वितीय को फतहखां का विश्वास नहीं था । श्रतः उसने उसे दौलताबाद के किले में कैद कर दिया । बाद में श्रपनी बहन के प्रभाव से, जो निजामशाह द्वितीय की पत्नी थी, जेल से छूटने पर श्रौर पुराना पद प्राप्त होने पर फतहखां ने निजाम शाह द्वितीय को कैद कर लिया श्रौर शाहजहां की श्राधीनता स्वीकार कर ली । बादशाह चाहता था कि निजामशाह द्वितीय को मार डाला जाय श्रतः उसे जहर देकर मार डाला गया श्रौर हुसैन नामक एक दस वर्ष के बालक को सिंहासन पर बैठाया । शाहजहां ने तब उसे श्रादेश दिया कि वह मृत शासक की सारी

देवीप्रसाद—शाहजहांनामा, भाग १ पृ. ६३ ।
 श्यामलदास—वीरिवनोद, भा. २ पृ. ४६३ छत्री पर शिलालेख ।

२. दयालदास-पूर्व उद्भृत भाग २. पृ. १६१ ।

देवीप्रसाद-शाहजहांनामा माग १ पृ. ६१ ।
 अन्दुल हमीद लाहौरी-वादशाहनामा, भा. १ पृ. ३६८ ।

४. वही ।

प्र. देवी प्रसाद—शाहजहांनामा, १ पृ. ६६ । ऋन्दुल हमीद लाहोरी-वादशाहनामा,-मा. १ पृ. ४०६ ।

सम्पति श्रोर हीरे जवाहरात शाही खजाने में भेजदे। लेकिन फतहखां ने इस श्रादेश को मानने में श्रानाकानी की। ५ फरवरी सन् १६३२ को वादशाह ने एक पाँच हजारी मनसवदार वजीरखां के सेनापितत्व में दौलतावाद को जीतने के लिये एक सेना भेजी। इस श्रवसर पर कर्णसिंह श्रीर दूसरे प्रमुख राजपूत सरदार वजी— रखां के साथ गये। इस मोके पर कर्णसिंह को खिलश्रत श्रीर घोड़ा प्रदान किया गया। इस प्रकार की शिक्तशाली सेना देखकर फतहखां डर गया। उसने तुरने समभौता कर लिया श्रीर वादशाह को ६ घोड़े, ३० हाथी श्रीर लगभग द लाख रुपये के हीरे जवाहरात समर्पित किये। वत्र वजीरखां कर्णसिंह श्रीर दूसरे सरदार वापस दरवार में बुला लिये गये। कोकिन इतने से ही यह कथा समाप्त नहीं हुई।

श्रहमदनगर श्रीर उसके श्राखपास श्रशान्ति उत्पन्न हो रही थी। शिवाजी का पिता शाहजी श्रहमदनगर के चारों श्रोर चक्कर लगा रहा था। साथ ही बादशाह को फतहखां का भी विश्वास नहीं था श्रातः उसने श्रासफखां को दिल्ला में भेजने का निश्चय किया। लेकिन उसके इनकार करने पर उसकी जगह महावतखां भेजा गया। सन् १६३३ में जब महावतखां ने फतहखां के इलाके पर श्राक्रमण किया श्रीर दौलताबाद का किला समर्पित करने को विवश किया, उस समय कर्ण सिंह शाही सेना के साथ था। इसी समय जुफारसिंह बुँदेला जो दिल्ला में नियुक्त था, विना बादशाह की श्राता के श्रपने पुत्र विक्रमाजित को श्रपने स्थान पर छोड़ कर वहां से चला गया। श्रपने इलाके में लौट कर उसने गढ़े पर श्राक्रमण किया श्रीर वहां के जमीदार प्रेमनारायण को घोखे से मार डाला। जब बादशाह को यह बात मालुम हुई तो उसने जुकारसिंह को हुक्म दिया कि वह श्रात्म समर्पण कर दे श्रीर लूटी हुई सम्पित में से १० लाख रुपये शाही खजाने में दाखिल कर दे। जुकारसिंह ने बादशाह

१. देवीप्रसाद-शाहजहांनामा, भा. १ पृ. ६७।

व. अजरत्नदास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी) पृ. न् । अव्हेल हमीद लाहीरी-वादशाहनामा, मा. १ पृ. ४१०।

२. वनारसीप्रसाद सनसेना-हिस्ट्री आफ़ शाहजहां आफ़ देहली, पृ. १३७।

देवीप्रसाद-शाहनहाँनामा, भा. १ पृ. ६७ । वनस्तदास-पूर्व उद्भृत (हिन्दी) पृ. ५४ ।

४. व्रजरत्नदास-पूर्व उद्भृत (हिन्दी) पृ. ५४ । सन् जुज्स ६ ता. २ उदीवहिशत का शाहजहां का फरमान । अब्दुल हमीद लाहोरी---वादशाहनामा, भा. पृ. १४१० ।

की ग्राज्ञा नहीं मानी बल्कि उल्टे ग्रापने पुत्र विक्रमाजित को दिल्ण में संदेश भेजा कि वह ग्राकर उससे मिले । जब विक्रमाजित दिल्ला से भाग रहा था तो महावतखां ग्रीर कर्णसिंह ने मिलकर उस पाखंडी का पीछा किया। 19

दौलताबाद का किला लेने के बाद महावतखां ने परेन्डे के किले को कब्जे में करने की योजना बनाई और बादशाह से स्वीकृति और सहायता मांगी। बादशाह ने तुरन्त शाहजादे शुजा के साथ एक बड़ी सेना मेजी। महावतखां बुरहानपुर में शाही सेना से मिला। परेन्डे के घेरे के समय कर्णसिंह भी शाहीसेना के साथ उपस्थित था। र २८ जनवरी सन् १६३४ की रात को शाहजादे की आज्ञा से कर्णसिंह ने दूसरे लोगों के साथ शत्रु पर आक्रमण किया। बाद में जब घेरा उठा लिया गया और लौटते समय शाही सेना पर जब शत्रु ने हमला किया तो कर्णसिंह ने दूसरों के साथ कड़ा मुकाबला किया और उसे वापस भगा दिया।

पुनः सन् १६३६ में जब बादशाह ने खान-ए-दौरा श्रौर खान-ए-जमां के साथ खान-ए-जहां को श्रादिलशाह पर हमला करने के लिये भेजा तो कर्ण खिंह भी खान-ऐ-जहां के साथ था। इस समय कर्ण सिंह का जोधपुर से भगड़ा हो गया। जोधपुर के शासक गजसिंह (सन् १६१६–१६६८) का ज्येष्ठ पुत्र श्रमरसिंह उत्तराधिकर के पद से च्युत कर दिया गया। गजसिंह ने श्रमरसिंह को निर्वासित कर के उसके छोटे भाई जसवन्तसिंह को श्रपना उत्तराधिकारी नियत किया। वह शाहजहां से फरियाद करने हेतु दिल्ली गया। बादशाह उससे प्रेम से मिला, उसे राघ की उपाधि दी श्रौर नागौर जागीर के रूप में प्रदान किया। चूं कि बीकानेर श्रौर नागौर की सीमा मिली हुई थी श्रसः सीमा सम्बन्धी भगड़े श्राम हो गये। श्रमरसिंह ने बीकानेर राज्य के एक गांव जाखािण्या पर जो सीमा पर था श्रधिकार कर लिया। जब यह समाचार दिल्ली में कर्णिसिंह को मिला तो उसने बीकानेर में श्रपने मंत्रियों को श्रादेश दिया कि वे उसे वापस ले लें। जब श्रमरसिंह को दिल्ली में इस बात का पता चला तो उसने प्रत्याक्रमरण के लिथे नागौर श्राना चाहा। लेकिन कर्णिसिंह को उसकी इच्छा का ज्ञान हो गया। उसने

१. देवीप्रसाद-शाहजहांनामा, मा. १ पु. १४२-४३ ।

२. व्रजरत्नदास-- पूर्व उद्भृत. (हिन्दी) पृ. ५५ ।

२. इत्तियट- पूर्व उद्भृत भा. ७, पृ ५१–६० ।

वादशाह को सारे तथ्यों से ग्रवगत कर दिया जिसके फलस्वरूप ग्रमरसिंह को दिल्ली छोड़ने की ग्राज्ञा नहीं मिली । इसी प्रकार कर्णसिंह ग्रौर ग्रमर-सिंह दोनों को ही दिल्ली में रोककर शाहजहां ने इस मगड़े को ग्रधिक खराब होने से बचा लिया। ⁹

सन् १६४८ में कर्णसिंह का मनसन २००० जात ग्रीर १५०० सनार से बढ़ा कर २००० जात ग्रीर २००० सनार कर दिया गया तथा स्थादतखाँ की जगह उसे दीलतानाद का किलेदार नियुक्त किया गया । लग-भग एक वर्ष नाद उसका मनसन ग्रीर नढ़ा कर २५०० जात ग्रीर २००० सनार कर दिया गया । रुन् १६५२ में यह पुनः नढ़ा कर ३००० जात ग्रीर २००० सनार कर दिया गया ।

जब यह निर्ण्य लिया गया कि जवार प्रान्त शाही इलाके में मिला लिया जाय तो जवारो की जमीन्दारी कर्णसिंह के मनसब में समिलित कर दी गई और उसे कहा गया कि वह वहाँ के जमीन्दार को हटा दे। जवारी का जमीन्दार मुकाबला करने में समर्थ नही या अतः उसने इस शर्त पर अधीनता स्वीकार कर ली कि उसे जागीर का राजस्व वसूल करने का अधिकार दिया जाय। उसने कर्णसिंह को मूल्यवान मेंट दी और अपना पुत्र बन्धक के रूप में दे दिया। अपने अभियान को पूर्ण करके कर्णसिंह औरंगजेब के पास चला गया बो उस समय दित्तिण में तैनात था।

दिल्ली सिंहासन के उत्तरिकार के भगड़े में कर्णिंसिंह ने तटरथता की नीति का अनुसरण किया। सन् १६५७-५८ में शाहजहां बीमार पड़ा ग्रीर उसने शासन का काम ग्रपने ज्येष्ठ पुत्र दारिशकोह की सींप दिया। लम्बे समय से ग्रीरंगजेब ग्रपने पिता का उत्तरिक्षकारी बनने की योग्यता बना रहा था ग्रीर शाहजादा शुजा भी, जो बंगाल में था, ग्रपने पिता का उत्तरिक्षकारी बनने को उतना ही उत्सुक था। ग्रीरंगजेब ने ग्रपने भाई मुराद को, जो गुजरात में था, राजगही के लिये प्रयत्न करने के लिये उकसाया ग्रीर ग्रपनी ग्रीर सहायता का वचन दिया। इन शाहजादों की

दयालदास-पूर्व उद्भृत भाग २ पृ. १६२-६४ । पाउलेट-पूर्व उद्भृत पृ. १४ ।

२. मुहम्मद सैयद अहमद-पूर्व उद्धृत, पृ. २६५। व्रजरत्नदास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी) पृ. ५६।

३. वही।

४. व्रजरत्नदास-पूर्वं ऊद्भृत (हिन्दी) पृ. म६-म७ ।

सेनायें राजधानी पर घेरा डालने के लिये रवाना हो गई। भाई भाई के परस्पर रक्तरंजित युद्ध छिड़ने की सम्भावना से सरदारों, राजाग्रां ग्रौर सेनापितयों ने एक या दूसरे गद्दी के दावेदार का साथ देने की तैयारी की। धीकानेर के शासकों की परम्परागत नीति के ग्रनुसार केवल कर्णासिंह ने ही ग्रपने को युद्ध से ग्रलग रखने का प्रयत्न किया। वह संघर्ष के परिणाम की प्रतीत्ता करता रहा ताकि ग्रन्त में जो तख्त पर ग्राधिकार करे उसी को ग्रपनी सेवा दी जाय ग्रतः वह दित्तण से बीकानेर लीट कर घटनाग्रों के परिणाम को देखता रहा। वह ग्रीरंगजेव की ग्राग्ना लिये विना ही चला ग्राया। लेकिन ग्रीरंगजेव ऐसा ग्रादमी नहीं था जो इस ग्रपमान को मूल जाता।

लेकिन कर्णसिंह के चार पुत्रों में से दो— केशरीसिंह ग्रौर पद्मसिंह— ने उत्तराधिकार के युद्धों में ग्रौरंगजेत के पद्ध में लड़ते हुए बड़ी चीरता दिखलाई। दारा के विरुद्ध ग्रन्तिम युद्ध में उन्होंने ग्रद्भुत शौर्य का प्रदर्शन किया ग्रौर ग्रौरंगजेत ने केशरीसिंह को सोने की ग्यान वाली मीनाकारी के काम की एक तलवार मेंट की। कहा जाता है कि ग्रौरंगजेत ने ग्रपने स्वयं के रुमाल से दोनों भाइयों के कोट पर से युद्ध की धूल भाड़ी थी जत्रकि ने एक कड़े युद्ध के बाद ग्रपनी सफलता की सूचना देने लौटे। यह एक ऐसा ग्राहितीय सम्मान था जो एक बादशाह बहुत कम प्रदान करता था। के लेकिन ग्रौरंगजेत्र ने ग्रानुभव किया कि उनके पिता कर्णसिंह को दर्ख देना चाहिये। ग्रुपने पिता को कैद कर ग्रौरं ग्रुपने को बादशाह घोषित कर ग्रौरंगजेत्र ने ग्रमीरखाँ ख्वाफी को कर्णसिंह पर भेजा। लेकिन ख्यांही मुगल सरदार बीकानेर की सीमा पर पहुँचा, कर्णसिंह ग्रपने दो पुत्रों— ग्रुन्पसिंह ग्रौरं पद्मसिंह— को लेकर ग्रमीरखाँ से मिला ग्रौर सन् १६६० में उसके साथ बादशाह के दरबार में चला गया। तव बादशाह ने उसे माफ कर दिया ग्रौर उसका मनसव बहाल करके उसे दिवाण का भार सम्भालने

१. लेकिन पाउलेट अपने वीकानेर राज्य के मजेटियर (पृ. ३५) में लिखता है कि शाहजहां के पुत्रों में शाही तख्त के लिये जो संवर्ष हुवा उसमें वीकानेर के शासक ने सीमाग्य शाली औरंगजेब की पूर्ण मदद की।

२. यह तलवार वीकानेर में सुरिच्चत है।

३. दयालदास-पूर्व टड्डूत, भाग २, पू. १७६।

४. पाउलेट-पूर्व उद्भुत पृ. २५ । यह घटना एक चित्र में अंकित हैं जो इस समय वीकानेर में राजस्थान सरकार के संग्रहालय में है ।

के लिये भेज दिया।

सन् १६६६ में श्रीरंगजेब ने कर्णिसंह को दिलेरलाँ दाऊदजई के साथ चांदा के जमींदार जलालखाँ को वश में करने के लिये मेजा लेकिन जब कर्णिसंह इस काम के लिये गया हुश्रा या तो बादशाह ने उसका मनसब छीन लिया। उसके ज्येष्ट पुत्र श्रन्पसंह को बीकानेर का शासक नियुक्त कर उसे २५०० जात श्रीर २००० सवार का मनसब प्रदान किया। वादशाह द्वारा ऐसा कड़ा कदम कर्णिसंह की किस गल्ती पर उठाया गया इसका उल्लेख किसी समकालीन रेकाई में नहीं मिलता। ऐसा श्रादेश दिया गया था इसका पता बादशाह द्वारा सन् १६६७ में (श्रीरंगजेब के सन् जुलूस १० तारीख १६ रवीउलश्रन्वल) इस सम्बन्ध में जारी किये गये एक फरमान से चलता है। यह सन्भव है कि जब बादशाह ने मुगल तख्त पर श्रपने श्रापको हदता से स्थापित कर लिया तो उसने कर्णिसंह को दरह देना चाहा हो क्योंकि दिल्ली के सिंहासन के संधर्ष में बह उसकी श्रोर से नहीं लड़ा। लेकिन बीकानेर श्रीर जयपुर दोनों की ख्यातों में कुछ ऐसे तथ्य लिखे हैं जिनसे उस मुख्य कारण का संकेत मिलता है जिससे बादशाह कर्णीसंह से रूप्ट हो गया।

दयालदास के अनुसार जब औरंगजेब ने अपनी सेना ईरान के विरुद्ध मेजी तो उसने बहुत से हिन्दू राजाओं को भी शाही सेना के साथ मेजा। जब सेना अटक में डेरे डाले हुए थी तो राजाओं ने जिज्ञासा में भर कर इस अयसर पर इतने अधिक राजाओं को भेजने का कारण जानना चाहा। उन्होंने जाँच करने के लिये साहबा के सैयद फकीर को जो

देवीत्रसाद--श्रीरंगजेवनामा, भाग १ पृ. ५०।
 व्रजरत्नदास-पूर्व उद्धृत. (हिन्दी) पृ. ५०।
 सरकार-हिस्ट्री श्रॉफ श्रीरंगजेव, भाग ६ पृ. २६।

मोहम्मद सैयद अहमद-पूर्व उद्धृत, पृ. २६६ । व्रजरत्नदास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी) पृ. ५६ । श्यामलदास-पूर्व उद्धृत भाग २ पृ. ४६ । ता. ११ जनवरी सन् १६६७ का औरंगजेव का फरमान ।

३. परिशिष्ट न।

४. देवीप्रसाद-श्रीरंगजेवनामा, माग १ पृ. ६७-६८ । उसने इस चढ़ाई की तिथि ४ सितम्बर सन् १६६६ लिखी है ।

महाराजा कर्णसिंह के साथ था, भेजा। उस फकीर ने ग्रास्तालाँ से मालूम किया कि वादशाह की इच्छा हिन्दू राजात्रों को मुसलमान वनाने की है। उसने यह स्चना महाराजा कर्णसिंह को दे दी। ग्रतः हिन्दू राजाग्रों ने मुगल सेना से पहले श्रटक पार न करने को चालाकी का निश्चय किया। दूसरे दिन प्रातः उन्होंने माँग की कि उन्हें पहले नदी पार करने दी जाय। वे श्राच्छी तरह जानते थे कि मुगल इसमें ऋपना ऋपमान समभेंगे और इस माँग से सहमत नहीं होंगे तथा इस प्रकार वे पीछे रह जायेंगे । मुगल सरलता से उनके फंदे में ग्रा गये। उन्होंने स्वयं पहले नदो पार करने पर बोर दिया ग्रीर राजाग्रों का उद्देश्य पूरा हो गया । इसी बीच जयपुर के राजा की माँ की मृत्यु का समाचार भी मिला और बादशाह को अर्ज करके राजा लोग शोक मनाने के लिये र्षछे रह गये। पर इससे समस्या केवल टल गई, मिटी नहीं। जब मातम मनाने की अविधि पूरी हुई तो राजाओं ने अपने अपने राज्य लौट जाने की सोची लेकिन कोई भी ऋगुवा वनने को तैयार न था। इस पर सब राजा महाराजा कर्णांसिंह के पास गये च्रीर उन्हें उन नावों को नष्ट करने में थ्रगुवा बनने के लिये कहा जो उन्हें नदी पार ले जाने के लिये प्रतीचा कर रही थीं। महाराजा कर्णांसिंह द्वारा यह कार्य करने पर सब राजा थ्रां ने उन्हें भारत का वादशाह घोषित किया ऋौर सैयद फ़कीर को यह ऋघिकार दिया कि राज्य के प्रति घर से एक पैसा वस्त करे। राजा लोग अपने अपने राज्यों को लीट गये। 19

जयपुर की ख्यात के अनुसार राजा लोग महाराजा कर्णसिंह के एक पुत्र के जन्म की खुशियाँ मनाने की बात कह कर पीछे रह गये। जब सुगल सेना नदी पार चली गई तो महाराजा कर्णसिंह ने नावां को नष्ट

१. दयालदास-पूर्व उद्भृत भाग २ पृ. १६३-६५ ।

यह ऋषिकार दिये जाने की सनद की नकल भूतपूर्व वीकानेर राज्य की सम्बत् १८६६ की वही में प्राप्त है। यह वही अब बीकानेर में राजस्थान राज्य के पुरालेख विभाग में सुरिक्तत है। यह नकल ऋसल से उस समय की गई थी जब कि पुरानी फटने पर उसे पुनः नया किया गया। ऐसा इसमें लिखा है।

इस प्रकार का अधिकार देना उस समय राजपूताना की रियासतों में असामान्य नहीं था। हम जोधपुर के चाँदशाह फकीर का उदाहरण दे सकते हैं जिसे जोधपुर सिंहासन और राजधराने की सेवा करने पर जोधपुर राज्य में न केवल ऐसा ही विशेषाधिकार दिया गया था विलक्ष उसे पैर में सोने का कहा पहनने का उच्च सम्मान भी प्राप्त था।

करने में नेतृत्व किया। यह खबर सुनकर औरंगजेव महाराजा कर्णसिंह के डेरे में गया और उसे सचाई मालूम हो गई। इस पर उसने कहा कि चूंकि तुम सब (राजाओं) ने बीकानेर के शासक को बादशाह माना है ख्रतः ग्रागे से वह "जंगलपत बादशाह" रहेगा।

श्रीरंगजेव वहुत नाराज होकर दिल्ली लौटा श्रीर तुरन्त कर्णसिंह के विरुद्ध एक सेना भेजी। कर्णसिंह शीध वीकानेर राजधराने की इष्ट देवी करणी जी का श्राशीर्वाद प्राप्त करने के लिखे देशनोक पहुँचा। ऐसा विश्वास किया जाता है कि उसकी प्रार्थना सुनी गई क्योंकि जो सेना बीकानेर की सीमा तक श्रा गई श्री वह एकाएक वादशाह द्वारा वापस बुला ली गई। महाराजा को भी दिल्ली बुलाया गया। के काफी सोच विचार के बाद यह निश्चय किया गया कि कर्णसिंह दिल्ली जाये श्रीर उसके दो पुत्र केशारी सिंह श्रीर पद्मसिंह पहले ही चले जाये। महाराजा ने निश्चय कर लिया या कि यदि किसी प्रकार का धोखा किया गया तो वह दिखा देगा कि एक राठौड़ कैसे मरता है।

इस समय एक नई घटना घटित हों चुकी थी। कर्णसिंह के एक स्त्रनीरस (पासवानिया) पुत्र बनमालीदास ने बादशाह द्वारा बीकानेर का राज्य मिलने के बदले मुसलमान हो जाने की इच्छा प्रकट की। कहा जाता है कि बादशाह ने इससे सहमित प्रकट की और ऐसा प्रबन्ध किया कि जब राजा कर्णसिंह दिल्ली पहुँचकर दरबार में आये तो उसे मार डाला जाय। विकास यह पड्यन्त्र विफल हो गया क्योंकि कर्णसिंह दरबार में अपने दोनों जबरदस्त पुत्रों— केशरीसिंह आर पद्मसिंह के साथ आया और वे अपने पिता के दोनों और वैठ गये। औरंगजेव ने हत्यारे को हट जाने का संकेत किया। जब कर्णसिंह और उसके पुत्र विदाई के लिये खड़े हुए तो बादशाह ने अपनी लड़ाइयों में उसके पुत्रों द्वारा प्रदर्शित वीरता को प्रशंसा की। बादशाह ने केशरीसिंह की दारा के विरुद्ध लड़े गये अन्तिम युद्ध में अपनी

जयपुर के पुरोहित हरिनारायण वी. ए के संग्रह की एक हस्तिलिखित ख्यात (श्रोम्फाजी द्वारा बीकानेर राज्य के इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ २४६ पर उद्भृत ।)

२. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० १६७ ।

३. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० १६५ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ३५-३६ ।

(बादशाह की) जान बचाने के लिये विशेष प्रशंसा की। कर्णसिंह ने चालाकी से ग्रपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बादशाह की प्राण रचा भयंकर युद्ध के समय भी उसके द्वारा निरन्तर कुरान का पाठ करने से हुई है।

युद्ध के समय भी उसके द्वारा निरन्तर कुरान का पाठ करने से हुई है।

कर्णसिंह को मारा तो नहीं गया लेकिन वादशाह ने उसे बीकानेर के शासक पद और मनसब से हटाने का पहले जो आदेश दिया था
उसे रद्द नहीं किया गया। इसकी अपेद्धा उसे औरंगाबाद (दिच्छा) भेज
दिया गया। यहाँ उसके पास पान का बाग (पनवाड़ी) जागीर में था जिसमें
राजा ने अपना निवास बनाया और इसे कर्णपुरा नाम दिया। यहाँ उसने
करणी जी का एक मन्दिर बनाया जिसका खर्च उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त
तक बीकानेर राज्य के खजाने से दिया जाता रहा। अपनी मृत्यु से एक
वर्ष पूर्व कर्णसिंह ने अपने पुत्र अन्त्यसिंह को एक सन्देश भेजा कि वह
देशद्रोही (शत्रु सेवी) बनमालीदास से सावधान रहे। सन् १६७६ में कर्णसिंह
का औरंगाबाद में देहान्त हो गया।

वीकानेर के शासकों में कर्णसिंह का स्थान उल्लेखनीय है। बहु वीकानेर का प्रथम शासक था जिसने श्रीरंगजेब की धार्मिक कहरता का साहस के साथ विरोध किया। उसने केन्द्रीय मुगल सत्ता की उसके शतुश्रों के विरुद्ध वहादुरी श्रीर स्वामी भिक्त से सेवा की। एक वीर सैनिक के रूप में उसने परेन्डे के घेरे, शाहजी श्रीर फतेहखाँ के विरुद्ध युद्धों में शाहजहाँ को श्रमूल्य सहायता प्रदान की। इसके वदले में वादशाह ने उच्च सम्मान प्रदान किया। शाहजहाँ द्वारा वह इतना स्वामी भक्त 'व विश्वासपात्र माना गया कि उसे जवारी का परगना छोनने के लिये मेजा गया श्रीर बाद में उसे वहाँ का प्रशासन चलाने के लिये नियुक्त किया गया। उत्तराधिकार

8.

१. दयालदास-पूर्व उद्भृत भाग २ पृ० १६६ । पाउलेट-पूर्व उद्भृत, षृ० ३८ ।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० २०१ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ३८ ।

३. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ३८ ।

दयालदास-पूर्व उड्डृत, भाग २ पृ० २०१।
महाराजा कर्णिसिंह की छतरी पर एक शिलालेख में भी यही तिथि दी गई
है। यह कहा जा सकता है कि टॉड ने गलत लिखा है कि कर्णिसिंह की
मृत्यु बीकानेर में हुई अन्य सभी ख्यातों में कर्णिपुरा में ही उसकी मृत्यु
होना लिखा है।

के युद्ध से अपने को अलग रख कर उसने कृटनीतिज्ञता का पूर्ण प्रमाण दिया। वह जानता था कि यदि उसके द्वारा समर्थित पन्न भगड़े में हार गया तो उसे विषम परिणाम मोगना होगा। लेकिन जब उसने यह अनुभव किया कि अपने असंदिग्ध तरीकों और उद्देश्य के हठीपन से अन्त में श्रीरंगजेव संफल हो जायेगा तो उसने श्रपने पुत्रों पद्मसिंह श्रीर केशरीसिंह को श्रीरंगनेव का पत्त लेने को छूट दे दी। ये दोनो युवक राजकुमार वड़ी बहादुरी से लड़े और ग्रीरंगजेव से प्रशंसा प्राप्त की । लेकिन कर्णसिंह ने श्रीरंगजेव के चालाक श्रीर श्रसंदिग्ध चरित्र को श्रच्छी तरह समभ लिया था तथा उसके द्वारा चालाकी से किसी खतरनाक स्थिति में डाले जाने के विरुद्ध वह हमेशा सावधान रहा । जब उसने देखा कि ग्रौरंगजेव हिन्दुग्रों के विरुद्ध ग्रमहा कट्टरता धारण करता जा रहा है तो श्रमन्तुष्ट हिन्दू राजाश्रो के नेता रूप में कर्णांसिंह उसका साहस के साथ विरोध करने में नहीं हिचिकिचाया । इसके लिये हिन्दू राजाग्रों ने सर्व सम्मति से उसे "जंगलधर बादशाह" उपाधि प्रदान की जो आज भी उसके वंशज गर्व के साथ धारण करते हैं। हिन्दू धर्म श्रीर संस्कृति के लिये श्रद्धावान होने के कारण उसने कष्ट उठाया लेकिन वादशाह की वड़ी से बड़ी नाराजी भी उसे डरा न सकी।

श्रन्पसिंह श्रपने पिता के जीवन काल में ही वीकानेर का शासक वन गया था। ⁹ जैसा पहले लिखा जा चुका है वादशाह ने नाराज होकर कर्णसिंह को शासनाधिकार से च्युत कर दिया था। श्रन्पसिंह का जन्म

"श्री गणेशाय नमः स्वस्ति श्री नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत् १७२४ वर्षे शाके १५६० प्रवत्तामाने महामंगल्यप्रदं मागीसरमासे कृष्णपद्धे षष्ठी स्थितौ सौमवासरे ।)

१. सन् जुन्स १० ता० १६ रवीउल् अञ्चल का औरंगजेय का फरमान ।
"शाह देवकरण के पुत्र पासदत्ता की सतो की छतरी पर सन् १६६७
(सम्वत् १७२४) के एक शिलाकेख में महाराजा कर्णीसेंह और महाराजा
अनूपसिंह दोनों का नाम साथ साथ आया है जो इस तथ्य को प्रमाणित
करता है। लेख इस प्रकार है—

अगरचन्द्र नाहटा, वीकानेर जैन लेख संग्रह, पृ० ३६६ ।

सन् १६३८ में हुआ था और अपने पिता की मृत्यु के समय उसकी श्रायु ३१ वर्ष थी। यद्यपि राज्य से दूर अपने पिता की मृत्यु के समय अनूपित सह पहले से ही नाम के लिये बीकानेर का शासक था पर कुछ समय बाद औरंगजेब ने एक फरमान जारी करके उसे वास्तविक शासक निश्चित कर दिया। बीच का विलम्ब शाही दरबार में बनमालीदास के पड्यन्त्र से हुआ। बनमालीदास इस्लाम धर्म स्वीवार करने के बदले अपने लिये धीकानेर का शासक पद चाहता था। अनूपिसह का उत्तराधिकार स्वीकृत करने से पूर्व मुगल दरबार में कुछ बातचीत चली। यह स्वीकृति वादशाह द्वारा सन् जुलूस १२ ता॰ २२ सफर तदनुसार २२ जुलाई सन् १६६६ के फरमान द्वारा प्रदान की गई। दिल्ला में बीकानेर के शासक रूप में अनूपिसह के पास सुजावलपुर, नासरों और राखावत के परगने थे। अपने सम्पूर्ण राज्यकाल में वह औरंगजेब के दिल्ला के अभियानों से सम्बन्धित रहा।

श्रीरंगजेव श्रन्पसिंह को श्रपना सर्वाधिक विश्वसनीय सहायक मानता था। श्रीरंगजेव के दोर्घकालीन दिल्ला श्रीमयान की प्रायः प्रत्येक महत्वपूर्ण लड़ाई में उसने माग लिया। सन् १६७० में श्रन्पसिंह श्रीर कई श्रन्य राजपूत मनसवदारों को खिजश्रत प्रदान की गई श्रीर उन्हें महावत्याँ के साथ दिल्ला में शिवाजी के विरुद्ध मेजा गया। यद्यिप मुगल सेनापित कोई सफलता प्रात न कर सका पर श्रन्पसिंह ने सभी युद्धों में प्रशंसनीय वीरता दिखलाई। फलस्वरूप प्रधान सेनापित तो कई बार वदले गये

सिरसा, शिवरां, तिशां, मैयम, फतेहावाद, अहरावो, रातियो, मालोट, मरथनेर, फलोदी, सिवानी, अंगारवो, अठसेरा, भटवां और दिक्तिस के तीन परगने सुजावलपुर, नोसरा और रासावत ।

४. मोहम्मद साकी-नासीर-ए-ञ्रालमगीरी, पृ० १०७ मोहम्मद सैयद ञ्रहमद-पूर्व उद्धृत, पृ० ६३ । देवीप्रसाद-न्त्रीरंगजेवनामा, माग २ पृ० ३० ।

दयालदास-पूर्व उद्भृत. भाग २, पृ० २०४।
 स्यामलदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ४६६।

२. श्रीरंगजेव का सन् जुलूस १२ ता॰ २२ सफर का फरमान ।

दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० २०४ । वह लिखता है कि बीकानेर राज्य के इलाके के अलावा अनूपसिंह के राज्यारोहण समय निम्नलिखित परगने उसके क्षेत्र में थे—

पर श्रन्पसिंह दिल्ला में ही रखा गया । वह साल्हेर की लड़ाई में, जो सन् १६७२ में हुई, उपस्थित या । लेकिन सुगल श्रारम्भिक साधारण सफलताश्रों के बाद बुरी तरह से हानि उठा कर पीछे हटे। श्रीरंगजेब ने महावतखाँ को वापस बुला लिया श्रीर उसकी जगह बहादुरखाँ को भेज दिया ।

श्रमियान की गिति श्रीर तीन हुई तथा सन् १६७३ में वीजापुर में एक युद्ध हुवा। मराठों, वीजापुर के शासक श्रीर मुगलों के इस त्रिकोणात्मक युद्ध में मुगलों का पलड़ा भारी रहा श्रीर मुगलों के सवांच्च सेनापित वहादुरलाँ ने वीजापुर श्रीर हैदराबाद दोनों के शासकों से पेशकस (मेंट) वस्त करके शाही खजाने में मिजवा दी। इस युद्ध में जिन सरदारों ने माग लिया था उनकी सेवाश्रो से प्रसन्न होकर सन् १६७५ में श्रीरंगजेव ने उन्हें खिताव श्रीर खिलश्रत प्रदान किये। श्रन्पसिंह को महार राजा का खिताव मिला।

वाद में बहादुरखाँ के विरुद्ध शत्रु से रिश्वत लेने की शिकायत पाकर श्रीरंगजेब ने उसे वापस बुला लिया श्रीर दिलेरखाँ को दिल्ला की लड़ाई चालू रखने का कार्य सौंपा गया। श्रन्पसिंह ने नये सेनापित के श्रधीन वड़ी बहादुरी दिखाई श्रीर गोलकुरखा के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया। दिलेरखां ने बीजापुर पर श्राक्रमण करके उस पर श्रधिकार कर लिया श्रीर श्रासपास के इलाके को उजाड़ दिया। सन् १६७७-७८ में अन्पसिंह को श्रीरंगाबाद का प्रशासक नियुक्त किया गया। पर इसी वर्ष उस श्रोर शिवाजी ने श्रपने श्राक्रमण शुरु कर दिये। श्रन्पसिंह ने श्रपनी सारी सेना को तैयार किया श्रीर मराठा सरदार से लड़ने को तैयार हो गया। दोनों ही दल समान थे। पर एक च्या ऐसा श्राया जब लगा कि मराठों की जीत होगी। ठीक उसी समय बहादुरखाँ नई सेना लेकर वहाँ पहुँच गया श्रीर युद्ध का नक्शा

मोहम्मद सैयद अहमद-पूर्व उद्धृत पृ. ६३ । व्रजरत्नदास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी) पृ. ६० ।

२. देवीप्रसाद-ऋौरंगजेबनामा, माग २, पृ० ५५।

दयालदास-पूर्व उद्धृत माग २ पृ. २०५ ।
पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ३६ ।
अर्सिकन-पूर्व उद्धृत, पृ० ३२२ ।

४. अजरत्नदास-पूर्व उद्भृत (हिन्दी) पृ० ६० ।

(स्वरूप) वदल गया शिवाजी मैदान से हट गये। सन् १६७८ में अन्पित्तिह को आदूर्णी का हाकिम नियुक्त किया गया और उसे वहाँ का विद्रोह दुवाने के लिये भेजा गया। अन्पितिह शीमता से वहां पहुँचा। लेकिन वहां हुए युद्ध में वह हारने ही वाला था कि उसका वीर भाई पद्मितिह समय पर पहुँच गया और होने वाली हार जीत में बदल गई। यदि ऐसा नहीं होता तो महाराजा की बुरी तरह से पराजय होने की आशंका थी।

सन् १६७८ में जब वह दिल्ला में ब्रादूणी में था तो उसके, पास समाचार पहुंचा कि खारबारा ब्रोर रायमलवालों के माठी ठाकुरों ने विद्रोह कर दिया। महाराजा के साथ के मुकन्दराय नाम का अधिकारी जो बनिया था, उनका दमन करने को जाने के लिये तत्पर हुआ। वह बीकानेर आया। उसने लगभग चार हजार लोगों की सेना एकतित की और विद्रोहियों के विरुद्ध प्रस्थान किया। उसके साथ भागचन्द माठी भी था जो महाराजा के प्रति बकादार रहा। बीकाकोर से उत्तर की ओर लगभग १०० मील दूर चूढ़ेर के किले में लगभग दो हजार विद्रोही भाठी एकतित हुए। किले को मुकन्दराय की सेना ने बेर लिया। भाठियों ने जोहियों से सहायता मंगी। लेकिन वे कोई महायता न कर सके और मुकन्दराय के राठोंड़ों को व्यंग में कहलाया कि पहले कभी वे किले को नहीं जीत सके अतः अब उस पर दावा करने का कोई कारण नहीं। लेकिन किले में घरे हुए भूखे भाठियों के लिये यह कोई महायता नहीं थी, उन्होंने राठौड़ सरदारों द्वारा मुखा का विश्वास दिलाये जाने पर अपने दो सरदारों जगरूपसिंह और विद्वारीत को मुकन्दराय और उसके सहायक अमरसिंह थ गोत के पास समभौता करने भेजा। काफी विचार विमर्श के बाद यह तय हुआ कि माठी एक लाख रुपया देंगे जिसके बाद राठौड़ घरा उठा लेंगे आरे चले जायेंगे।

्यद्यपि किसी ने भाटियों को लिखित चेतावनी भेजी कि उनके साथ घोखा किया जायगा पर भाटी सरदार शान्ति वार्ता के लिये छाये । पांच दिन में भाटियों ने ५०,००० रुपये दिये छौर बाकी रकम शीघ ही देने का वचन दिया । उन्होंने वह चेतावनी का पत्र भी दिखाया जिसकी राहीड़ सर-दारों ने हँसी उड़ाई । छपनी बात का विश्वास कराने के लिये उन्होंने भाटियों को शेष रकम चुकाने के बारे में चिन्तित न होने के लिये कहा ।

त्रजरत्नदास-पूर्व उद्भृत (हिन्दी) पृ० ६० ।
 सहम्मद सैयद अहमद-पूर्व उद्भृत पृ० ६३ ।

२. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पूर्व ६-१०।

क्यों कि उन्हें विश्वास था कि वे इसे महाराजा से माफ करा लें गे। इससे भाटियों को विश्वास हो गया श्रीर उन्होंने जोहियों को वापस भेज दिया। श्रिय जब किले में केवल ५०० श्रादमी रह गये तो मुकन्दराय श्रीर श्रमर सिंह ने इस सिद्धांत पर — कि युद्ध श्रीर भेम में सब तरीके ठीक हैं — श्रमल करते हुए श्रपने वचन को तोड़ डाला श्रीर रात्रि में किले पर हमला कर दिया। लड़ाई में जगरूपसिंह श्रीर बिहारी दास मारे गये श्रीर किले पर राठोड़ों का श्रिषकार हो गया। श्रनूपसिंह ने जो उस समय श्रादूणी में था, इस सफलता से प्रसन्न होकर मुकन्दराय श्रीर श्रमरिंह को काफी पुरस्कार दिया श्रीर खारवारा की जागीर मागचन्द भाटी को दे दी जो महाराजा के प्रति स्वामीमक रहा था। इस किले की जगह एक श्रीषक बड़ा श्रनूपांट नामक किला सन् १६७= में बनाया गया।

सन् १६७६ में जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह की मृत्यु होने पर औरगजेब ने उसके राज्य को अपने इलाके में मिला लिया। महा-राजा अन्पतिह और रतलाम के महाराजा रामसिंह दोनों ने शाही दरवार में अपने वकीलों के माध्यम से यह प्रयत्न किया कि राज्य महाराजा जस-वन्तसिंह के ज्येष्ठ पुत्र महाराजा अजीतसिंह को दे दिया जाय । तेकिन इसमें सफलता नहीं मिली क्योंकि व दशाह को जसवन्तसिंह ने नाराज कर दिया था ; सन् १६७६ में ऋतों। के किलेदार सैयद नजावत ने वाद-शाह के पास एक संदेश शीवता से भेजा श्रौर सूचित किया कि शिवाजी का सेनापित मोरोपंत दिच्या में मुगलों के इलाके का अतिक्रमण कर चुका है और यदि मराठों की गति क रोकने के लिये शीघ ही सहायता न मेजी गई तो वे दिख्या में समस्त मुगल चेत्र पर अधिकार कर लेंगे । इस पर श्रीरंगजेंव ने श्रनूपिंह को शीव श्रादेश भेजा कि वह तुरन्त मौके पर पहुँचे श्रौर मराठों को मुगल चे त्र से हटादे। व इसी समय (सन् १६८२) त्रुन्पसिंह को ग्रापने ग्रानोरस भाई वनमालीदास से छुटकारा लेना पड़ा। पहले लिखा जा चुका है कि वनमालीदास ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था ऋौर वह वीकानेर की गृही के लिये अनूपसिंह का प्रतिद्वंदी था। वनमालीदास सैयद हसन ऋली, जिसका वादशाह पर काफी प्रभाव था, का समर्थन प्राप्त करने

१. दयालदास-पूर्त उद्धृत, मा. २ पृ. २१०-१३। पाउलेट- पूर्त उद्धृत, पृ० ३६-४०।

२. जोधपुर राज्य की ख्यात--मा. २, पृ. १६ श्रोमाजी द्वारा उद्भुत ।

३. श्रीरंगजेव के पुत्र शाह श्रालंग का सन् जुलुस २२ ता. १४ रमंजान का निशान।

में सफल हो गया। हसनग्रली बनमालीदास को बीकानेर का आधा राज्य दिये जाने का आदेश वादशाह से प्राप्त करने में सफल हो गया। इस आदेश को लेकर वनमालीदास तीन हजार सेना के साथ ब्रीकानेर ब्राया ब्रोर बीकाजी द्वारा बनाये गये बीकानेर के पुराने किले के पास डेरे डाल दिये। महाराजा बीकानेर में था। उसने वनमालीदास का बहुत श्रुच्छा सत्कार किया लेकिन मुसलमान हो जाने के कारण उसने हिन्दुओं की मावनाओं की परवाह न करते हुए लच्मीनाथजी के मन्दिर के पास वकरे और मींडे मरवाये । इसके विरुद्ध जब बनमालीदास को रोकने की कोशिश की गई तो उसने वहां गायें मरवाने की धमकी दी। इसके बाद उसने खजानचियों को बुलाकर इनसे अपनी खाताबही दिखाने को कहा ताकि वह निश्चय कर सके कि उसे अपने हिस्से में कौन से गांव लेने चाहिये। लेकिन खजान्चियों ने अपने खाते वही देने से इन्कार कर दिया। इस पर वे कैद कर लिये गये। महाराजा त्रापने त्रानौरस भाई के व्यवहार से तंग त्रा गया। पर वह कोई हल नहीं हूं द सका । एक चतुर ऋहीर उदैराम ने महाराजा की सहायता की। उसने बनमालीदास के पास जाकर उसे विश्वास दिलाया कि वह उसे समस्त ग्रावश्यक सूचना दे देगा श्रीर खजान्चियों को कैद कर रखने से कोई लाभ नहीं होगा । महाराजा के खजान्ची छोड़ दिये गये । वनमाली दास ने चंगोई में श्रपना किला वनाने का निश्चय किया। उसने उन गाँवों का भी तै कर लिया था जिन्हें वह ग्रपने हिस्से में लेना चाहता था। उदैराम महाराजा के पास भाया ग्रीर उससे ये स्थान बनमालादास को देने का एक रूक्का (ग्राधिकारपत्र) लिखवा कर उसे दे दिया ।

लेकिन यह कार्य केवल वनमालीदास को घोका देने और उसे यह विश्वास दिलाने के लिये किया गया था कि उसकी इच्छा पूरी हो गई है। तब महाराजा ने लच्मीदास सोनगर की सहायता से बनमालीदास को मारने की योजना बनाई । लच्मीदास सोनगरा एक गरीव ठाकुर था और उसकी पुत्री का विवाह अनूपिह से हुआ था। विवाह के समय इस गरीव ठाकुर ने कहा था कि चूंकि वह काफी दहेज देने में असमर्थ है अतः अपनी जान देकर भी महाराजा का सबसे कठिन काम करने को तैयार रहेगा। महाराजा को अब वह अवसर मिला। उसने बनमालीदास को मारने के लिये अपने श्वसुर को भेजा। लेकिन लच्मीदास कर्णसिंह के पुत्रों में से एक (बनमालीदास) का खून वहाने से हिचकिचा रहा था। अतः अनूपिह ने उसके साथ एक वीका राजपूत को भेज दिया ताकि बनमालीदास को

मारने में यदि कोई पाप लगे तो वह भी हिस्सेदार हो। दोनों भेप वदल कर बनमालीदास के यहां गये श्रीर बीकानेर से निर्वासित होने की बात कह कर शरण माँगी । इस बात को विश्वसनीय बनाने के लिये यह योजना बनाई गई कि महाराजा बनमालीदास के पास एक संदेशवाहक भेजकर कहलायेगा कि बीकानेर के इन विद्रोहियों को शरण न दो जाय। इस सन्देश का इच्छित प्रभाव पड़ा क्योंकि बनमालीदास ने इस तथाकथित श्ररणार्थियों को ग्रपना विश्वास पात्र बना लिया । ठाकुर लच्मीदास एक गोली को श्रपने साथ ले गया था । उसे अपनी वेटी बता कर उसने उसका विवाह वनमालीदास से कर दिया । लड़की बनमालीदास के हरम में दाखिल हो गई श्रीर ठाकर के निदेशानुसार बनमालीदास को शराव में विष मिलाकर पिला दिया । इस प्रकार ठाकुर ने अपने दामाद अनूपसिंह को उसके प्रतिद्वंदी से छुटकारा दिलाया। बनमालीदास के साथ दिल्ली से एक नवात्र भी सेना के सेनापति रूप में ग्राया था । अब उसे ग्रपनी ग्रोर मिलाने की ग्रावश्यकता थी। एक लाख रुपया देकर उसका मुंह बन्द कर दिया गया। नवाव ने दिल्ली लौटकर घोषणा की कि वनमालीदास स्वामाविक मृत्यु से मरा है। इस प्रकार महाराजा श्रानुपसिंह ने बीकानेर के श्रापने ही राज्य में श्रापनी रियति को मजबत बनाया । उसके श्वसर और उदैराम ऋहीर को काफी परस्कार दिया गया 19

शियाजी के साथ युद्धों में श्रीरंगजेव की सफलता का कुछ श्रेय श्रन्पिह की वीरता को भी है, विशेषतः बीजापुर श्रीर गोलकुएडे की लड़ाइयों का । बीजापुर का शास्क सिकन्दर एक दुवेल व्यक्ति था श्रीर श्रव्युल रऊफ श्रीर शरजाखाँ जैसे चतुर व्यक्तियों ने उसकी दुवेलता का लाभ उठाना श्रारम्भ कर दिया था । श्रीरंगजेव का इस समय बीजापुर पर हमला करने का कोई इरादा न था लेकिन जब मराठा शासक शम्भाजी की शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गई श्रीर ऐसा प्रतीत होने लगा कि यदि उसे शीध ही न रोका गया तो वह जल्दी ही बीजापुर पर श्रिष्ठकार कर लेगा तो बादशाह ने बीजापुर की रज्ञा के लिथे एक सेना रवाना कर दी श्रीर सिकन्दर को लिखा कि वह इसे सभी श्रावश्यक सहायता प्रदान करे । लेकिन सिकन्दर ने श्राज्ञा श्रीर इस सम्बन्ध में भेजे गये दूसरे पत्रों की उपेन्ना कर दी । श्रीरंगजेव को सिकन्दर की श्रसलियत पर सन्देह हुआ । श्रतः उसने ग्रावश्यक समभा कि वह हमयं श्राकर इस सेना को तत्पर रखे । बीजापुर के विरुद्ध इस चढ़ाई में

१. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० २१७-१६ ।

सन् १६८६ में वादशाह को यह जान कर बड़ी निराशा हुई कि उसका पुत्र शाह ग्रालम गुप्त रूप से शत्रु से मिला हुग्रा था ग्रौर पत्र व्यवहार करता था । बीजापुर के विरूद्ध चढ़ाइयों में ग्रन्पसिंह वरावर उपस्थित रहा। विकन्दर को ग्राधीन बनाने में उसने महत्वपूर्ण योग्य दिया। उसी वर्ष ग्रन्पसिंह को बीजापुर जिले के सागर नामक स्थान का किलेदार ग्रौर फौजदार नियुक्त किया गया।

सन् १६८७ में श्रीरंगजेव ने गोलकुएडे के हठी शासक श्रवुलहसन को वश में करने के लिये चढ़ाई की । वादशाह के श्रफसर गोलकुएडा सम्बन्धी वादशाह की नीति पर मतभेद रखते थे । इस राज्य का स्वामी एक शिया मुसलमान था श्रीर वादशाह की सेना के शिया मुसलमानों ने गोलकुएडा के विरुद्ध लड़ने की शाही श्राज्ञा का विरोध किया । कई सुन्नी मुसलमान भी उनसे सहानुभूति रखते थे । शाहजादा शाहश्रालम भी इस श्राक्रमण से सहमत नहीं था इसीलिये वादशाह की सेना पूरे मन से नहीं लड़ी श्रीर गोलकुएडा का घरा चलता रहा ।

दयालदास की ख्यात के आधार पर हम अधिकृत रूप से कह सकते हैं कि गोलकुएडा के घेरे के समय अन्पसिंह उपस्थित था और उसकी सेवाओं के बदले उसका मनसब बढ़ाया गया था। अ जुल्फिकारखाँ पेशा- घर में विद्रोही कबाइलियों के विरुद्ध ल रहा था। बादशाह ने उसे वहाँ से बुलाया। वह सक्खर से अनूपसिंह को भी लेता आया। दयालदास अपनी ख्यात में लिखता है कि गोलकुएडे का युद्ध तानाशाही के विरुद्ध लड़ा गया। सम्भवतः दयालदास का तात्पर्य अबुल हसन से हो जो तत्कालीन फारसी तवारियों के अनुसार उस समय गोलकुएडा का वास्तविक स्वामी था। नई सेना के आ जाने से औरंगजेब ने हमले की गित तीव कर दी और अन्त में अबुल हसन को आत्म समर्पण कराने में सफल हो गया। इस युद्ध में वीरता दिखाने के कारण वादशाह ने पुनः महाराजा अनूपसिंह का मनसब बढ़ाकर

१. मोहम्मद साकी मुस्तैदस्त्राँ—मासीरे त्रालमगीरी, पृ० २७७। कहा जाता है कि महाराजा ऋनूपसिंह ने वीजापुर में वादशाह से मेंट की। वादशाह ने उसे खिलऋत प्रदान की।

२. देवीप्रसाद-स्त्रीरंगजेवनामा, माग ३, पृ० ३३ ।

मोहम्मद साकी मुस्तैदखाँ-पूर्व उद्धृत, पृ० २५३ ।

४. दयालदास-पूर्वं उद्धृत, भाग २ पृ० २०६ ।

उपर्युक्त संज्ञित विवरण से यह वात काफी स्पण्ट हो जाती है कि वीकानेर के राजधराने ने मुंगल साम्राज्य के लिये एक मुख्य स्तम्भ की तरह काम किया। यद्यपि बीकानेर के शासक श्रीरंगजेव की धार्मिक कंट्ररता के सिक्य विरोधी ये तो भी उन्होंने मुगल शासन की एकता को बनाये रखने में अपनी श्रोर से पूर्ण प्रयत्न किया । भारतीय राजनैतिक गठन के श्रिधिक-वड़े हित की दृष्टि से सम्भवतः वीकानेर के शासकों का व्यवहार ऐसे समय में केन्द्रीय सत्ता को कायम रखने में सहायक हुआ जबकि मुगल सत्ता के हटने पर उसका स्थान लेने वाली कोई दूसरी शक्ति नहीं थी। बाद में जब केन्द्रीय सत्ता का विखराव अधिक नहीं रोका जा सका तो हम देखते हैं कि देश किस प्रकार महत्वाकांची व्यक्तियों की ग्रापसी लड़ाइयों से दुकड़े दुकड़े हो गया । प्रत्येक महत्वाकांची विशाल मुगल साम्राज्य का एक दुकड़ा लेकर अपने लिये एक स्वतन्त्र राज्य बनाना चाहता था। बीकानेर राजधराने के लिये यह गर्व की बात है कि उन दिनों भी उन्होंने यह बात सम्भली थी कि भारत में मुसलमान शासक ग्रीर नागरिक दोनां ही-श्रव विदेशी नहीं ये श्रीर उनको देश से बाहर निकालने की कोई भी प्रयत्न ग्रसम्भव ग्रौर हानिकर होगा।

श्रन्यसिंह श्रीर उसके भाइयों द्वारा की गई प्रभावशाली सेवा के बदले में बादशाह ने उसे "माही मरातिव" का सरमान प्रदान किया था जो मुंगल दरबार का सर्वोच्च सम्मान था।

हाउस आफ वीकानर पृष्ट २१ से उद्भुत । माही मरातिब को बहु चिन्ह सभी लेखक के अधिकार

१. दमालदास-पूर्व रद्धतं, माग २, पृ० २०६ ।

२. द्वीप्रसाद-श्रीरंगजेवनामा, भाग ३, पृ० ६४।

मोहम्मद सैयद अहमदे, उमराण हनूदं, पृ० ६३ ।
 नजरत्नदास-पूर्व उद्धृत, (हिन्दी) - पृ० - ६० ।

४. मेजर जनरल सर विलियम स्लीमैन अपने अन्य "रैम्बल्स एन्ड रिकलेक्शन्स अॉफ एन इन्डियन ऑफिशियल" में लिखता है कि यह विरल सम्मान देश के केवल कुछ सीमित महान राजाओं को और प्रथम श्रेणी के स्वतन्त्र राजाओं को ही दिया जाता था।

सन् १६६८ (रविवार, ज्येंग्ड सुदी ६ विक्रमी सम्वत १७७५) में आदूणी में अन्पसिंह की मृत्यु हो गई। राठौड़ राजपूत की मांति वह एक बीर सैनिक था लेकिन विद्वता और ज्ञान के संरच्या में उसने अपने सभी पूर्वजों को पीछे छोड़ दिया। अन्पसिंह संस्कृत का विद्वान था। भाषा पर भी उसका पूर्ण अधिकार था। जब औरगजेब ने अपना हिन्दू विरोधी अभियान आरम्भ किया तो अनेक मूल्यवान संस्कृत अन्यों को विनाश अथवा लुप्त होने से बचाने का अथ अन्यूपसिंह को दिया जाता है। ज्ञान के प्रति उसका संरच्या भाव देखकर कई विद्वान बीकानेर आये और उन्होंने विभिन्न विषयों पर अनेक अन्य लिखे। औरगजेब ने अपने साम्राज्य में संगीत जैसी सुन्दर कला पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। अतः अनेक संगीतज्ञों को अनूपसिंह के यहां शरण मिली। यदि संगीत प्रेमी अनूपसिंह न होते तो शास्त्रीय हिन्दू संगीत के अनेक अन्य या तो नष्ट हो जाते या लिखे ही न जाते। अनूपसिंह की प्रेरणा से लिखे गये अथवा उनके द्वारा संग्रहीत समस्त साहित्यक अन्यों की एक विवरण सूची बीकानेर के अनुप संस्कृत पुस्तकालय में विद्यमान है।

इस काल में बीकानेर राजधराने के कुछ सदस्यों ने जो प्रशंसनीय कार्य किये वे भी उल्लेखनीय हैं । उनके नाम केशरीसिंह पदमसिंह श्रीर मोहनसिंह थे। महाराजा कर्णसिंह के द्वितीय पुत्र केशरी—सिंह का जन्म सन् १६४१ में हुआ था। जैसा पहिले ही लिखा जा जुका है वह मुगल उत्तराधिकार के युद्ध में श्रीरंगजेत्र की स्त्रोर से लड़ा था श्रीर उसके लिए लड़ते हुए वीरता प्रकट करके वादशाह में उच्च प्रशंसा प्राप्त की थी। श्रीरंगजेत्र ने उसको जो छुन्दर तलवार भेंट की वह स्त्रत्र भी एक पारिवारिक चल सम्पति के रूप में सुरिचित है। इस राजकुमार की निडरता श्रीर पराक्रम की श्रुनेक कहानियाँ प्रचलित है। कर्नल टॉड ने राजध्यान के इतिहास में लिखा है कि एक बार इस युवा राजकुमार ने एक बाध को बाहुयुद्ध में मार डाला। इस पर बादशाह ने उसे २५ गांचों की जागीर प्रदान की। कहा जाता है कि दिच्या के युद्धों में भाग लेते समय एक बार उसने बहमनी शासक की सेना का नेतृत्व वाले एक हवशी श्रफसर का सिर एक ही प्रहार में उड़ा दिया था। सन् १६६७ में वँगाल में गड़तड़ी

में सुरिक्ति है और वीकानेर के शासकों द्वारा संग्रहीत अन्य निजी वस्तुओं के साथ वीकानेर किले के संग्रहालय में रखा हुआ है।

के समय त्रामेर के राजा रामिसंह त्रौर दूसरों के साथ वह विद्रोह का दमन करने भेजा गया । केशरीसिंह की मृत्यु सन् १६८५ में हुई ।

महाराजा कर्णसिंह का तीसरा पुत्र पद्मसिंह, जो केशरीसिंह से चार वर्ष छोटा था, अपने युग का सर्वश्रेष्ठ वीर माना जाता है। वह बीकानेर का एक निजन्धरी वीर वन गया है । इस राजकुमार में ऋदम्य साहस ऋौर महान बल था। उसकी तलवार के भयंकर प्रहार से शायद ही कोई बच सका हो । कहीं उसका क्रोध उत्तेजित न हो जाय इस डर से प्रत्येक व्यक्ति उसका उचित सम्मान करता था । कहा जाता है कि एक बार जब वह श्रीर उसका छोटा भाई मोहनसिंह श्रीरंगाबाद में बादशाह के साथ थे तो मोहनसिंह का एक पालत् हरिन डेरे से वाहर निकत गया। शाहजादे मुक्रजम के साले मुहम्मदशाहमीर कोतवाल के नौकर ने उसे पकड़ लिया ! जव मोहनसिंह ने ऋपने नौकर को भेज कर हरिन वापस माँगा तो उसे डरा कर लौटा दिया ऋौर हरिन नहीं दिया। दूसरे दिन जन मोहनसिंह नादशाह का मुजरा करने गया तो उसने कोतवाल से उसकी कुशल चेम पूछी श्रौर उससे अपना पालतू हरिन वापस माँगा । कोतवाल ने इन्कार कर दिया और उसे मिश्यावादी कहा । इससे मोहनसिंह का क्रोध भड़क उठा । पर उसके म्यान से तलवार निकालने के पूर्व ही कोतवाल एवं उसका साला मोंहनसिंह पर टूट पड़े श्रीर उसे मरणान्तक रूप में घायल कर दिया । पद्मसिंह इस ड्योढी के, जहाँ यह दुखान्त घटना घटित हुई, पास ही श्रपना हुक्का पी रहा था । उसने इस लड़ाई का शोर सुना ख्रौर वह तुरन्त मौके पर पहुँच गया । अपने भाई को रक्त में लथ-पथ पड़ा देखकर उसने अपनी ढ़ाल और वड़ी तलवार उठाई तथा कोतवाल की त्रोर तेजी से वढ़ा। कोतवाल डर कर दीवानखाने में भाग गया । पद्मसिंह ने वहाँ भी उसका पीछा किया । इस राजपूत राजकुमार को शेर के समान कुद्ध देखकर वादशाह श्रीर उसके सारे दरवारी वहाँ से शीव बाहर चले गये और पद्मसिंह ने गर्जना करते हुए एक खम्मे के पीछे छिपे कोतवाल पर तीव्रता से प्रहार किया । यह प्रहार इतना तीत्र था कि कोतवाल के दो टुकड़े हो गये और पत्थर के स्तम्म से एक वड़ा दुकड़ा कट कर ग्रलग जा गिरा । तलवार का भी थोड़ा सा हिस्सा ट्रट गया।

इस राजकुमार की असाधारण वीरता की अनेक वार्ते कही

टुकड़ा टूटी हुई यह तल बार बीकानेर के किले में करणी—संग्रहालय में रखी हुई है।

जाती है। कहा जाता है कि उसने एक नवाब के हाथों को होदे सहित खींच लिया था। इस पर नवाब और जोधपुर के राजा सवार थे। नवाब भ्रौर राजा दोनों महाराजा कर्णांसिंह को मारने का पड़्यन्त्र कर रहे थे पर पद्मसिंह की वीरता के इस प्रदर्शन ने उनको भयभीत कर दिया। उसकी प्रांसिंद तलवार ३ फीट ११ इंच लम्बी और २॥ इंच चौड़ी है तथा उसकी अभ्यास करने की २५ पौंड वजन वाली तलवार साढे चार फीट लम्बी भ्रौर २॥ इंच चौड़ी है। ये दोनों बीकानेर के सिलेखाने में सुरिच्ति हैं और प्रतिवर्ष एक विशेष दिवस पर उसकी तलवार की पूजा की जाती है।

२४ मार्च सन् १६८३ को तासी नदी के तट पर मराठों के विरुद्ध लड़ते हुए पद्मसिंह का देहान्त हुआ। विकिस मरने से पूर्व उसने शत्रुओं के सेनापित सांवतराय और जादूराय व कई अन्य सैनिकों को मार डाला। अपने साम्राज्य के इस वीर सैनिक की मृत्यु पर बादशाह ने शोक प्रकट किया और अनूपसिंह को एक संवेदना पत्र भेजा।

कर्णसिंह का चोथा श्रीर सबसे छोटा पुत्र मोहन सिंह, जैसा पहले लिखा जा चुका है, श्रीरंगजेब के कोतवाल द्वारा मारा गया। वह शाहजादे मुत्रज्म का मित्र श्रीर कृपापात्र था। बहुत से श्रप्तसर उससे ईष्यों रखने लगे श्रीर उसे खत्म करने की तलाश में थे। ऐसा सन्देह किया जाता है कि उससे छुटकारा पाने के लिये ही शाहजादे के साले मुहम्मद शाह मीर ने जान बूक्त कर एक हरिन चुराने के साधारण मामले को लेकर उससे क्रगड़ा किया।

महाराजा श्रान्पसिंह के ज्येष्ठ पुत्र स्वरूपसिंह का जन्म सन् १६८६ में हुआ था। सन् १६६८ में अपने पिता की मृत्यु के बाद जब यह बीकानेर की गद्दी पर बैठा तो उसकी आयु ६ वर्ष की थी। वह आदृशी में अपने पिता के साथ था और राजा बनने के बाद भी वह वहीं रहा। बीकानेर में राज्य का कार्य उसकी माता सीसोदणी चलाती थी। सन् १६६६ में जब वह

९. बीकानर के किले में करणी संग्रहालय में ये रखी हुई हैं।

२. वही।

६. भीमसेन बुरहानपुरी, नुस्खये दिलखुशा, पृ० १७३। "जेघ यांची शकावली"— "शके १६०५ रूघिरोदगारी संनतसरे चैत्रमासी रोहिला खान कोल वरात्न उतरोन ररणमस्त खान घाटावरी घेऊन गेला। येते वेलेस रूपाजी मोंसले यागी तिटोली याजवल लहाई केली। पद्मसिंह रजपूत घेतला। युद्ध प्रसंग होऊन पद्मसिंह व कितेक थोर थोर लोक मारिले।"

४. श्यामलदास-पूर्व उद्धृत भाग २ पृ० ५०० ।

राम राजा ग्रौर उसके बच्चों के साथ, जो जुल्फिकार खाँ की कैंद में थे, शाही दरवार में गया तो उसे एक हजार जात ग्रौर पाँच सी सवार का मनसव प्रदान किया गया। वह जुल्फिकार खाँ के साथ दरवार में रहा।

वीकानेर राज्य के अफसर दो परस्पर विरोधी गुटों में बंटे हुए थे। एक गुट में महाजन के कुंवर भीमसिंह मुकरका के ठाकुर पृथ्वीसिंह, नसाणा के ग्रमरसिंह, ललित नानिर ग्रीर दूसरे लोग थे । दूसरे गुट में मूं धड़ा असरुप, चतरभुज, मान रामपुरिया, कोठारी नैस्पिसी, कर्मचन्द श्रीर दूसरे लोग थे। दूसरे दल के मूँ धड़ा जसरुप और चतरभुज तो स्वरूपसिंह के पास थे परं मान रामपुरिया, कोठारी नैगासी ख्रीर ख्रन्य लोग राज्य कारशासन चलाने में राजामाता को योग देते थे।एक बार जब राजमाता बीमार पड़ी तो लिलत. जो उसका विश्वासी था, ने उसके मन में यह बात जमादी कि मान राम-पुरिया ग्रादि राजामाता को जहर देकर मार डालना चाहते हैं। एक विशेष दत मुकन्दराय के साथ राजमाता ने यह तथ्य स्वरूपसिंह को ज्ञात कराया । महाराजा ने निर्देश देकर उसे वापस मेजा । पर वापस लौटकर मुकन्दराय ने श्रपने साथ लाये महाराजा का पत्र दिखाने के वहाने मान रामपुरिया श्रीर दूसरों को बुला भेजा। जब वे आये तो उन्हें कैंद कर लिया और वाद में राजमाता के कहने से उन्हें मरवा डाला । जब यह समाचार दिच्या में स्वरूपसिंह के पास पहुँचा तो उसके साथ के सरदारों ने उसे यह विश्वास करा दिया कि यह काम अनुचित हुआ है। महाराजा का मन ललित से फिर,गया ।³ जव ललित को यह मालूम हुआ तो वह सुजानसिंह श्रीर ग्रानन्दिसह (स्वरूपसिंह के सौतेले भाई) से मिल गया। उसने उनकी माता राजावत रानी के मन में यह वात ज़मादी की राजमाता उनके दोनों पुत्रों को मरवाने का पड्यन्त्र कर रही है।

लित की सलाह पर राजावत रानी ने अपने पुत्रों को लित की देख रेख में बादशाह की सेवा में दिल्ली भेजने का प्रवन्य किया। यह दल दिल्ली की ओर मुश्किल से तीन मंजिल गया। या कि दल के साथ जाने वाले और शकुन जानने वाले जेसलमेर के एक भाटो ने कहा कि उन्हें १६ पहर तक वहीं रूक जाना चाहिये क्योंकि इस समय यात्रा

१. श्यामलदास-पूर्व उद्धृत माग ३, पृ० ७१७ ।

मुहम्मद सैयद श्रहमद-पूर्व उद्धृत पृ० ६३ । व्रजरत्नदास-पूर्व उद्धृत (हिन्दी) पृ० ६० ।

३. पाउनेट-पूर्व रद्भृत, पृ० ४५-४६।

के लिये शकुन ग्रच्छे नहीं है । दल १६ पहर तक वहीं रुका रहा ग्रीर उन्होंने जब यात्रा पुनः ग्रारम्भ की तब दूसरी दिशा से एक कासिद ग्राया। उसने खबर दी कि महाराजा स्वरूपसिंह का दिल्ला में चेचक से देहान्त हो गया है। इसका तात्पर्य था कि स्वरूपसिंह के जीवित दो भाइयों में बड़ा सुजानसिंह बीकानेर का ग्रगला शासक था क्योंकि स्वरूपसिंह की निःसन्तान मृत्यु हुई थी। ग्रातः यह दल बीकानेर लीट गया। वे दोवागर के रूप में ग्रव राजावत रानी राज्य की वास्तविक प्रधान थी। उसने राज्य के सारे सरदारों को महल में बुलाया ग्रीर बीकानेर की गद्दी पर ग्रापने पुत्र के राज्यारोहण की विधिवत् घोषणा कर दी।

स्वरूपसिंह का देहान्त सन् १७०० में आदूणी में हुआ। विव बीकानेर की गद्दी पर सुजानसिंह बैठा। उसका जन्म १६६० में हुआ था। उस समय औरंगजेव दिल्ला में था। उसने सुजानसिंह को वहाँ बुलाया। महाराजा अपने कई सरदारों के साथ दिल्ला गया और दस वर्षों तक वहां बादशाह की सेवा में रहा। 3

सन् १७०७ में जब श्रहमदनगर में श्रीरंगजेब की मृत्यु हुई तो श्रजीतिसिंह ने जिसे अपने पिता (जोधपुर का जसवन्तिसिंह) की गद्दी से वंचित कर दिया गया था, मुगल साम्राज्य की चीए होती हुई शिंक का लाभ उठाया। उसने जोधपुर पर श्राक्रमण किया, वहां के मुगल शासक जफर कुली खां को निकाल दिया श्रीर श्रपनी पैतृक राजगद्दी पर वैठा। इसके शीध वाद उसने बीकानेर पर श्राक्रमण किया। मुजानिसंह के दिच्छा में होने के कारण उसकी श्रानुपिस्थित में उसके मन्त्री श्रीर सरदार राज्य करते थे। इनमें से कुछ श्रजीतिसिंह से मिल गये। फलस्वरूप श्रजीतिसिंह श्रस्थाई रूप से बीकानेर पर श्रिधकार करने में समर्थ हो गया। पर श्रन्त में जब भूकरका श्रीर मलसीसर के ठाकुरों के नेतृत्व में बीकानेर की सेना ने श्राक्रमण किया तो जोधपुर वालों को हटना

१. पाउलेट-पूर्व उद्भृत १० ४६।

२. स्वरूपसिंह की स्मारक छतरी का लेख।

३. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ४६-४७।

४. सरकार-शोर्ट हिस्ट्री श्रॉफ श्रीरंगजेव, पृ० ३६७।

पड़ा। श्रुत्यधिक गर्मी श्रीर पानी की कमी के कारण भी जीधपुर की सेना को श्रिधिक नुकसान उठाना पड़ा। र

- १. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ४६ ।
- जोघपुर सीधे मार्ग वीकानेर से लगमग १३० मील दूर है। यहाँ का जलवासु वीकानेर जैसा ही है पर श्रीसत वर्षा कुछ श्रधिक होती है।

ग्रध्याय ५

मुगल साम्राज्य के पतन के समय बीकानेर

सिंहावलोकन में यह कहा जा सकता है कि लगभग सवा सौ क्यों की अवनित, जिसने दिल्ली के मुसलमानी राज्य के दुकड़े कर दिये थे, के बाद बाबर के आगमन से केन्द्र में एक शिक्तशाली राजनैतिक ढाँचे की नींव रखी गई । सन् १५६० तक मुगल साम्राज्य दृढता से स्थापित हो चुका था श्रीर ग्रगले सवा सौ वर्षों में इसके चेत्र, शिक्त ग्रीर सम्पति में वृद्धि हुई । जो समृद्धि त्राई उसके साथ कला त्रौर साहित्य का विकास हुत्रा ग्रीर एक ऐसी सभ्यता बढ़ी जो किसी ग्रान्य समकालीन सभ्यता से समानता का गर्व कर सकती थी। इसने भारत को संसार के सभ्य देशों में सबसे स्रागे कर दिया । लेकिन स्रौरंगजेव की नीति से न केवल इसका विकास ही रुका वल्कि अन्त में यह विखर कर नष्ट हो गया । उसके ईर्षालु शक्की स्वभाव के कारण उसकी राज्य पद्धति, मेकियावली द्वारा प्रतिपादित सभी धर्म ग्रधर्म विचारों से वढ़ गई थी। जीवन के प्रति जिस धर्म-निरपेन्न दृष्टिकोग्ए ने मुगलों की तीन पूर्व पीढ़ियों के शासन को इतना सफल बनाया था, त्रौरंगजेव जानव्भकर उसका विरोधी वन गया । राजपृत राजा केवल इसीलिये उसके त्राज्ञाकारी वने क्योंकि उन्होंने उसके पूर्वजों को स्वामी भिक्त की जो शपथ दी थी, वे उसे पवित्रता से निभाना चाहते थे। वे उसके प्रतिशोध के भय से भी उसकी बात मानने को विवश हुए। अपने श्रत्यधिक संकीर्ण दृष्टिकोण श्रीर सन्देह पूर्ण स्वभाव के कारण उसनें सामान्य रूप से हिन्दुत्रों व राजपूतों के विश्वास को नष्ट कर दिया था। उसकी शासन की दोषपूर्ण पद्धति श्रौर हानिकारक युद्धों ने मुगल साम्राज्य की जड़ों को खोखला कर दिया था। लेकिन साम्राज्य का नाश तुरन्त नहीं हुआ। उसके वाद जो दुर्वल और कमजोर व्यक्ति दिल्ली की गदी पर वैठे, उन्होंने साम्राज्य को श्रोर भी जल्दी मिटने दिया। यह वात सन् १७३७ तक स्पष्ट ग्रीर प्रत्यच् हो गयी।

सन् १६८० में राजसिंह की मृत्यु के उपरान्त मेवाड़ के राणा श्रों ने राजपूताना में श्रापना राजनैतिक महत्व खो दिया । कच्छवाहे प्रभावशाली बन गये थे। इन कारणों से उनमें परस्पर ईर्ष्या श्रोंर भी बढ़ गई। केन्द्रीय सत्ता के नियन्त्रण के श्रामाव में तथा प्रधानता श्रीर सत्ता प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा ने, परस्पर राजाश्रों में, श्रीर एक ही राज परिवार के सदस्यों में भी युद्धों को जन्म दिया । नियम विरुद्ध कार्य श्राम हो गये। लूट के लिये हमले सामान्य बन गये श्रीर विद्रोह व परस्पर विनाश के युद्ध एक दैनिक घटना हो गये।

सुजानसिंह जो सन् १७०० में बीकानेर की गद्दी पर बैठा, उस समय दिल्ला में था। बादशाह ने उसे वहां से बुलाया था। सन् १६७३ में जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने उसके पुत्र अजीतसिंह को जोधपुर की गद्दी से विचित कर दिया था। अब अजीतिसिंह ने विद्रोह किया। उसने जोधपुर के उप-फौजदार जफरकुलीखां को वहाँ से हटा दिया और नगर पर अधिकार कर लिया। सजानसिंह के दिल्ला में होने का लाभ उठाकर उसने अपनी सेना बीकानेर पर भी भेजी पर अन्त में उसे विवश होकर हट जाना पड़ा। व

सुजानसिंह बीकानेर लोटा । उसे विश्वास हो गया था कि डग-मगाते हुए मुगल साम्राज्य की शिक्त पर भरोसा करने से कोई लाभ नहीं है । ग्रीरंगजेब के बाद उसका पुत्र बहादुरशाह बादशाह बना । उसने शाह ग्रालम की उपाधि धारण की । उसका शासन पाँच वर्ष चला ग्रीर उसके बाद उसका पुत्र मौजुद्दीन जहांदरशाह के नाम से सिंहासन पर बैटा । लेकिन ह महिने के भीतर ही उसके भतीजे फर्र खिसपर ने उसे मरवा डाला । फर्रेखियर केवल नाम का बादशाह था । वास्तविक सत्ता महत्वाकांची सैयद बन्धुग्रों (ग्रव्दुल्लाखां ग्रीर हुसैनखां) के हाथ में थी । उन्होंने जोधपुर के महाराजा ग्रजीतिसिंह को ग्रपने साथ मिला लिया ग्रीर उसके द्वारा फर्रेखियर को मरवा डाला । उसके बाद मुगल तख्त के दो उत्तराधिकारी रफी उलदरजात ग्रीर रफी उद्दीला सात मास की ग्रल्प ग्रवधि में ही मर

१. सरकार-शोर्ट हिस्ट्री ऑफ औरंगजेव, पृ० ३६७।

पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ४६ ।
 दयालदास-पूर्व उद्धृत भाग २ पृ० ६० ।

श्यामलदास-वीर विनोद, भाग ३, पृ० ५४१-४३।

गये । उनके बाद बहादुरशाह का पोता और जहांदरशाह का पुत्र रोशन भ्राख्तर सिहासन पर वैठा । उसने श्रापना विरुद मुहम्मद शाह रखा ।

जब दिल्ली में इस प्रकार निरन्तर होने वाले परिवर्तन हो रहे थे तो उस समय महाराजा सुजानसिंह भ्रापने राज्य की लुटेरों से, जो केन्द्रीय सत्ता के कमजोर होने से स्वन्छंद हो गये थे, रच्चा करने में व्यस्त था । दिल्ली के डगमगाते तस्त पर मोहम्मदशाह ग्रापने को श्राधिक सुरच्चित नहीं समकता था। लेकिन पहले के गड़बड़ी के वर्षों में सुजानसिंह ने जो श्रेष्ट व्यवहार किया उससे बादशाह को उसकी सची मित्रता की कुछ ग्राशा वंधी। श्रतः उसने उसे दिल्ली ग्राने के लिये एक ग्रावश्यक सन्देश मेजा। लेकिन सुजान सिंह ने स्वयं राज्य से ग्रानुपश्यित हो कर खतरा उठाना उपयुक्त नहीं समका ग्रीर केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध बनाये रखने की हिन्द से खवास ग्रानंदराम ग्रीर जनद्रीय सत्ता से सम्बन्ध बनाये रखने की हिन्द से खवास ग्रानंदराम ग्रीर जसक्त को कुछ सेना के साथ दिल्ली मेजा। उसने मेहता पृथ्वीसिंह को एक दकड़ी के साथ ग्राजमेर की चौकी पर मेज दिया।

सुजानसिंह का ज्येष्ठ पुत्र जोरावर सिंह खवास आनंदराम से, जो महाराजा का विश्वास पात्र था, ईष्यों रखता था और उसे पदच्युत करना चाहता था। इसमें असफल होकर वह अपने पिता से अलग नोहर जाकर रहने लगा और आनंदराम को मरवाने में सफल हो गया। इससे सुजानसिंह चिंदु गया। जोरावरसिंह फिर भी अपने पिता से अलग ऊदासर जाकर रहने लगा। पिता पुत्र के इस विरोध से राज्य में बहुत दूपित वातावरण उत्पन्न हो गया। अनत में सुजानसिंह को समभाया गया कि वह जोरावरसिंह को वापस चुला ले और उसे चुमा कर दे। फलज्वरूप सुजानसिंह ने राज्य का शासनकार्य जोरावर सिंह को सींप दिया।

इसी वीच जोधपुर के साथ नये भगड़े शुरू हो गये। मुगल चादशाह मोहग्मदशाह के संकेत से अभयसिंह अपने पिता अजीतिसिंह को मरवाने (२३ जून सन् १७२४) में सफल हो गया और जोधपुर की गद्दी पर बैठा। विकानेर के विरुद्ध अपने पिता की नीति पर चलते हुए उसने अपने भाई चल्तिसिंह को एक वड़ी सेना देकर सन् १७३३ में बीकानेर पर भेजा। लेकिन

पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ४७ ।
 दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ६०-६१ ।

२. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ६२ । पालेउट-पूर्व उद्धृत पृ० ४८ ।

३. श्यामलदास-पूर्व उद्भृत, भाग ३ पृ० ८४२-४४ ।

जोधपुर की सेना वीकानेर की शिक्त को दशने में असफल रही और पानी व रसद की कमी के कारण उसे बहुत नुकसान उठाना पड़ा। अन्त में २० फरवरी १७३४ को जोधपुर की सेना को हटना पड़ा। कुछ महीनों के बाद वर्ष्तिसह ने पुनः बीकानेर पर आक्रमण किया। पर अन्त में उसे वापस भाग जाना पड़ा (जून सन् १७३४)। र

इस बाहरी खतरे के अतिरिक्त सुजानसिंह को आन्तिरिक भगड़ों को भी शान्त करना पड़ा। भूकरका के ठाकुर कुशलिंसेह और भाररा के ठाकुर लालिसिंह में एक भगड़ा हो गया था। जब दोनों दलों ने अपना विवाद निपटाने के लिये हिथयार सम्भाले तो सुजानसिंह उनमें मेल कराने के लिये गया और अपने प्रयत्न में सफल हो गया। जब वह रायसिंहपुर में डेरा डाले हुए था तो वह सख्त बीमार हो गया और वहीं १६ दिसम्बर १७३५ को उसका देहान्त हो गया। अअपने पिता सुजानसिंह की मृत्यु के बाद जोरावरसिंह (जन्म तिथि १४ जनवरी १७१३) सन् १७३६ में २३ वर्ष की आयु में बीकानेर की गदी पर बैठा। बीकानेर जोषपुर की सीमा पर जोषपुर की सेना ने जिन स्थानों पर अधिकार कर लिया था उसने उनको वहाँ से हटाने का कार्य तुरन्त किया। उसके पिता के शासनकाल में जोषपुर से हुई लड़ाइयों के कारण राज्य के आन्तिरक प्रशासन में दुर्वलता आ गई थी। इसके बाद ठाकुरों में कुछ असन्तुष्ट तत्व उत्पन्न हो गये थे। इनमें चूरू का ठाकुर संग्रामसिंह प्रधान था। लेकिन इसके पूर्व

१. श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २ पृ० ५००-५०१ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ४७ । दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ६१ ।

दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ६२-६३ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ४५-४६ ।
 श्यामलदास-पूर्व उद्भृत माग २, पृ० ५०१ ।

श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २ पृ० ५०९ ।
पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ४६ ।
दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ६३ ।

४. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ४६ । दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ६३ । ...

कि वह फुछ शक्ति संचय करता, युवा महाराजा ने उसे राज्य से निकाल दिया ग्रीर उसकी जगह चूरू की जागीर जुभारसिंह को दे दी । संग्रामसिंह जोधपुर चला गया । वहाँ उसे बहुत सम्मान दिया गया । लेकिन जोरावरसिंह यह बात परुन्द नहीं करता था कि उसका कोई सरदार जोधपुर में रहे । ग्रातः उसने संग्रामसिंह के पूर्व कृत्यों का चमा कर दिया ग्रीर पुनः चूरू की जागीर उसे प्रदान की गई । संग्रामसिंह सीधा चूरू चला गया । वह इतना साहसी था कि स्वयं महाराजा के समच्च बीकानेर नहीं गया इससे महाराजा ग्राप्रसन्न हो गया । महाराजा ने पुनः चूरू उससे छीन ली। संग्रामसिंह फिर जोधपुर चला गया । इस बार वह मादरा के ठाकुर लालसिंह को भी ग्रापन साथ ले गया । जोधपुर के महाराजा ग्राप्त ग्राप्त ने दोनों का बड़ा सत्कार किया ।

वीकानेर के विरुद्ध अपने पूर्व प्रयत्नों में असफल होकर भी जोधपुर के महाराजा ग्रभयसिंह ने बीकानेर पर ग्रिधिकार करने की ग्रपनी महत्वाकांचा कम नहीं की थी। ऋपने दरवार में चूरू के ठाकुर के आने पर उसे श्राशा बँधी कि यदि वह बीकानेर पर पुनः त्राक्रमण करे तो चूरू के ठाकुर का प्रभाव बीकानेर में काफी होने के कारण उसे सफलता मिल सकती है। ग्रतः उसने ठाकुर संग्रामसिंह को दस हजार सेना देकर वीकानेर पर भेजा। बिना किसी विरोध के संग्रामसिंह बीकानेए के इलाके में प्रविष्ट हो गया। जोधपुर का महाराजा अभयसिंह भी अपने साथ १५,००० और सैनिक लेकर बीकानेर पर चढ स्राया । लेकिन जोरावरसिंह कै सौभाग्य से स्रभयसिंह स्रौर उसके छोटे भाई बख्तसिंह में 'भगड़ा हो गया । बख्तसिंह ने जोरावरसिंह को सहायता देने की बात कही। जोरावरसिंह ने मेहता बख्तावरसिंह के सेनापतित्व में ८,००० सेना वख्तसिंह की सहायता के लिये भेजी ताकि वह जोघपुर पर ग्राक्रमण कर सके। ग्रपने विरुद्ध इस कारवाई से ग्रभयसिंह ग्राश्चर्यचिकत हो गया। उसने दो लाख रुपये देकर श्रपने भाई से मेल कर लिया श्रीर बीकानेर से श्रपनी सेना वापस बुला ली। वख्तसिंह ने उपहार देकर बीकानेर की सेना को वापस बीकानेर भेज दिया।

पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ४६ ।
 दयालदास-पूर्व उद्धृत माग २, पृ. ६३ ।
 इयामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ५०२ ।

२. पाउलेट-पूर्व उद्भृत पृ० ४६ । दयालदास-पूर्व उद्भृत भाग २, पृ०, ६३-६४ ।

लेकिन बीकानेर और जीधपुर में यह केवल ग्रस्थाई युद्ध विराम था। सन् १७४० में जीधपुर के महाराजा ग्रभयसिंह ने वीकानेर के कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों की सहायता से पुनः बीकानेर पर ग्राक्रमण किया। इन सहायकों में चूक का ठाकुर खंगामसिंह, भादरा का ठाकुर लालसिंह (जो खंगामसिंह के साथ जीधपुर गया था) और महाजन का ठाकुर ग्रादि थे। ये लोग देशनोक पहुँचे। वे करणीजी के मन्दिर में गये और मन्दिर के चारणों से कहा कि करणीजी का ग्राशीर्वाद प्राप्त करने के लिये वे जीधपुर के लिये उसी तरह से प्रार्थना करें जैसा वे बीकानेर के शासकों के लिये करते हैं। चारणों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। लेकिन ग्रभयसिंह की सेना इससे निराश नहीं हुई। उसने बीकानेर में घुस कर उसे बुरी तरह से लूटा और किले को घेर लिया।

ऐसा माना जाता है कि करणीजी अपने महों— बीकानेर के लोगों की रज्ञा कर रही थी। उन्होंने सफेद चील के रूप में दर्शन दिये। सर्व प्रथम दो पिइहारों ने किले में स्थित श्रूर मिन्दर से उन्हें देखा। उन्होंने इस असाधारण बात की सूचना तुरन्त महाराजा को दी। महाराजा शीघता से वहां आया। उसने उस विचित्र पत्ती को देखा, उसकी पार्थना की ओर उसे मिठाई खिलाई। दूसरे लोगों ने भी बीकानेर की सेना की विजय के लिये देवी से पार्थना की। मिठाई खाने के बाद यह शुभ पत्ती किले के चारों ओर चक्कर लगा कर देशनोक की ओर उड़ गया। किले के रज्ञक आस्वस्थ हो गये और शत्रु के विरुद्ध उन्होंने अपने प्रयत्न और बढ़ा दिये। अ

राजस्थान में चील का सम्बन्ध देवी से है विशेषतः सफेद चील का सम्बन्ध देवी करणीजी से जोड़ा जाता है। सफेद चील हमेशा शुम और सौमाग्य लाने वाली मानी जाती है। करणीजी के मन्दिर में हजारों कावा— चूहे की एक जाति जो केवल देशनोक के मन्दिर में पाई जाती है— स्वतन्त्रता से इधर—उधर दौड़ते दृष्टिगोचर होते हैं। उनमें से कुछ सफेद कावा कभी कभी दिखाई पढ़ते हैं जिनका दिखाई पढ़ना मक्तों के द्वारा उसी प्रकार सौमाग्य का चिन्ह माना जाता है जैसे कि सफेद चील का दिखाई पड़ना।

१. पाउलेट-पूर्व उद्धत, प० ५०।

सफेद चील राठौड़ों द्वारा एक पित्रत्र पद्मी माना जाता है जोधपुर श्रीर बीकानेर के राव्य चिन्हों पर भी चील श्रिकत है।

३. पाउलेट-पूर्व उद्धत, प० ५०-५१ ।

नागौर के वरतसिंह के जोरावरसिंह की सहायता यचन दियाँ । वर्ष्टतिसिंह पहले भी इंसे प्रकार का विचन दे चुका या। जोरावरसिंह[्] ने द्यानन्दराम को उसके पास भेजा है और उसे वीकानेर की रिथंति से श्रवगत कराया िजोरावरसिंह ने सुर्फाव दिया कि घेरा डालने घालों परं बाहर[ो]से दबाव पड़ने से ही वे किले की घेरावन्दी हटा सकते हैं। वख्तसिंह स्त्रीर स्त्रानन्दराम! ने जयपुर के महाराजा जियसिंह से सहायता माँगी। उसने राजामल खत्री के साथ २०,००० सेना जोधपुर को भेज दी। बाद में जयसिंह भी तीन लाख सेना लेकर जोधपुर गया । जन अभयसिंह को यह बात मालूम हुई तो वह बहुत घबराया। उसने बीकानिर का घेरा उठा लिया ख्रौर दो हजार घुड़सवारा के साथ तेजी से जोधपुर की स्रोर रवाना हुन्ना । उसे डर था कि यदि विलम्ब हो गया तो वह न्नपने राज्य को नहीं चचा सकेगा;। जब बह इस∵प्रकार वापस लौट रहा था तो∵बीकानेर∵की सेना ने उसका पीछा किया। लेकिन जयसिंह का जोधपुर पर अधिकार करने का कोई विचार न था। वह तो पूर्व स्थिति वनाये रखना चाहता था स्रौर श्रभयसिंह से पेशकस वसूल करना चाहता था। पेशकस के २१ लाख रुपये निश्चित किये गये । जोरावरसिंह जोधपुर के गाँव वणार में त्याकर जयसिंह से मिला और अपने को दी गई सहायता के लिये जयसिंह के प्रति कृतज्ञता प्रकट की..। 3.

जोधपुर पर त्राक्रमण के समयः जयसिंह द्वारा दी गई सहायता को ध्यान में रखते हुए वस्तिसिंह त्रपने लिये जोधपुर की गद्दी प्राप्त करने की त्राशा करने लगा था। लेकिन जन जयसिंह केवल पेशकसी वस्ति कर के ही वापस लोट गया तो वस्तिसिंह त्रासन्तुष्ट हो गया त्रीर जयसिंह के प्रति दुर्भावना रखने लगा। उसने त्रामयसिंह से मेल कर लिया ग्रीर दू दाइ पर चढ़ाई कर दी। यह खनर सुनकर जयसिंह भी सेना लेकर उसके विरुद्ध रवाना हुन्ना। कुछ देर को लड़ाई के बाद वस्तिसिंह भगा दिया गया। वस्तिसिंह भाग कर त्रालिएयावास गया जहाँ त्रामयसिंह उस समय डेरे डाले हुए था। जयसिंह भी त्रीर त्रागे बढ़ा। त्राजमेर पहुँच कर उसने त्रामयसिंह को लड़ने के लिये ललकारा। उसने जोरावरसिंह को भी सन्देश भेजा कि वह त्राकर उससे मिले। जोरावरसिंह ने नागोर पर त्रापनी सेना के

१. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ४१-५२।

२. वही-पृ. ५२।

साथ चढ़ाई कर दी, लेकिन जयसिंह का साथ देने ग्रजमेर नहीं गया।

कुछ समय के वाद वीकानेर के एक जागीरदार, महाजन के टाकुर भीमसिंह, ने भटनेर पर अधिकार करने की जोरावरसिंह से आज्ञा मांगी। भटनेर उस समय मला गोदारा के अधिकार में था। भीमसिंह ने धोखे से 'मला' को मरवा डाला और सन् १७४० में भटनेर पर अधिकार कर डाला। जब जोरावरसिंह को यह बात मालूम हुई तो उसने हसनखाँ भट्टी को भटनेर पर अधिकार करने के लिये कहा। कुछ लड़ाई के बाद हसनखाँ ने भटनेर पर अधिकार कर लिया। हिसार के पास के जिले में भट्टियों और जोहियों ने पुनः उत्पात आरम्भ कर दिया था। वहाँ से ये जातियां वीकानेर के इलाके में युस आती थीं। अतः जोरावरसिंह ने हिसार पर अधिकार करने का निश्चय किया। सेना को तैयार किया गया और कुँवर गजसिंह , शेखावत नाहरसिंह और मेहता बख्तावरसिंह के साथ उसे नोहर में रखा गया। हिसार पर हमला करने से पूर्व जोरावरसिंह करणीजी के मन्दिर देशनोक गया। के

जोरावरसिंह की एक रानी गंगा के किनारे सोरम घाट की तीर्थ यात्रा पर थी। इस दल को रेवाड़ी के राव श्राहीर गूजरमल के इलाके से गुजरना था। उसने प्रस्ताव किया कि वह श्रीर जोरावरसिंह दोनों मिल कर हिसार ले लें। हिसार पर श्राक्रमण को ध्यान में रखते हुए इस सरदार के साथ बीकानेर की मित्रता स्थापित करने का यह मौका उठाया गया। श्रापनी श्रोर से राव ने हमला भी किया। लेकिन कुछ श्रान्तरिक श्राशान्ति श्रीर श्रापने पुराने मित्र (जोरावरसिंह) के विरुद्ध वख्तसिंह की शत्रुता से

पाउलेट--पूर्व उद्धृत, पृ० ५३ ।
 दयालदास-- पूर्व उद्धृत, भा. २, पृ. ६७-६ ।

२: पाउलेट- पूर्व उद्धृत, पृ. ४६-५०।

३. जोरावरसिंह का पुत्र।

४. पाउलेट—पूर्व उद्भृत, पृ. ५३ ।
उसने अपने परिवार को आगे मेज दिया ताकि यात्रा की दूरी नंगे पैर पार की जाय । इसके बाद वह खाना हुआ और ओरण की सीमा से मन्दिर तक वह अपनी रानियों के साथ गठजोड़ा करके पहुंचा । करणीजी को एक सोने का छत्र चढ़ाया गया (कहा जाता है कि वह अब भी वहाँ है) और देशनोक के लोगों को मोजन धन और लोइयां (कम्बलें) वांटी । जिन चारण स्त्रियों ने चरजायें गाई उन्हें प्रत्येक को एक कठहार दिया गया ।

बीकानेर की सहायता राच गूजरमल के पास समय पर नहीं पहुँची। अन्त में बाय के टाकुर दौलतिसह और मेहता बख्तावरिसह के साथ एक सेना भेजी गई। इस सेना ने हाँसी की ओर प्रस्थान किया जबिक स्वयं महाराजा ने हिसार पर अधिकार किया। उसी समय दूसरी सेना ने फतेहाबाद के मिट्टियों के विरुद्ध कारवाई की और उन्हें अधीन कर लिया।

हिसार की चढाई से वापस लौटते समय जोशवरसिंह भटनेर के रास्ते से लौटा। वहाँ उसने भटनेर के प्रधान मुहम्मद भट्टी से पेशकसी ठहराई । जब वह अन्पपुर में ठहरा तो बीमार पड़ गया। वार दिन की बीमारी के बाद १५ मई १७४६ को उसका देहान्त हो गया। 3 कुछ लोगों का सन्देह है कि उसे विप दिया गया । इस समय तक मुगल शिक्त पूर्ण रूप से छिन्न भिन्न हो चुकी थी ऋौर केवल एक छाया मात्र थी। उसका नियन्त्रणकारी प्रभाव नहीं रह गया था स्रातः स्रान्तरिक विद्रोहों व जोधपुर के वाह्य आक्रमण के विरुद्ध मुगलों से किसी प्रभावकारी सहायता को आशा रखना मूर्खता थी । जोरावरसिंह इस स्थिति से भलोभाँति परिचित था। ऋतः श्रपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिये उसने मोका आते ही अपने पड़ोसियों को अपने पत्त में किया। यद्यपि वख्तसिंह ने एक वार बीकानेर पर आक्रमण किया था पर यही कारण था कि जब उसने जोरावरसिंह की छोर भित्रता का हाथ बढ़ाया तो इधर से भी वैसा ही किया गया। जयपुर के महाराजा जयसिंह को अपनी स्रोर करने से कार्य स्रोर भी सरल हो गया क्योंकि जयसिंह का जोधपुर के ग्रभयसिंह के प्रति शत्रु भाव था । जोरावरसिंह यह बात भी भलीभाँति जानता था कि राज्य की एकता के लिये जागीरदारों को सन्तुष्ट रखना भी जरूरी है क्योंकि उस समय की स्थितियों में जागीरदारों का नियम ग्रीर व्यवस्था पालन ग्रीर भी ग्रावश्यक था। ग्रतः हम देखते हैं कि कई बार उसे कुछ उदएड सरदारों के विरुद्ध दमन की कारवाई करनी पड़ी पर सामान्य रूप से वह उन से पेशकसी वसूल करके ग्रथवा भिइक कर छोड़ देता था।

मोहम्मदशाह अब भी बीकानेर को मुगल तख्त का एक

पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५४।
 दयालदास,-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ६ ।

२. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५४।

३. स्मारक छतरी पर शिलालेख।

विश्वसनीय सहायक मानता था, ग्रतः उसने, चाहे जैसा हो, मित्रता का परि-चय देते हुए जोरावरसिंह को विश्वास दिलाया कि ग्रमयसिंह को बीकानेर पर ग्रधिकार नहीं करने दिया जायगा। पर जोरावरसिंह ने गड़बड़ी करने वाले मट्टियों पर हाँसी ग्रौर हिसार में हमला करने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं को। वहाँ उसे बादशाह की सेना से भी लड़ना पड़ा।

- जोरावरसिंह को निःसन्तान मृत्यु हुई । उसके छोटे माई अभय-सिंह के दो पत्र थे— ग्रमरसिंह ग्रीर गजसिंह । जोरावरसिंह की मृत्य के समय ठाकुर कुशलसिंह ग्रौरा मेहता बख्तावरसिंह ने किले ग्रौर नगर का नियन्त्रण ग्रपने हाथ में ले लिया ग्रीर महाराजा के निकट सम्बन्धियों में से बीकानेर की गदी के लिये. एक उपयुक्त उत्तराधिकारी ज्यान करने में महत्वपूर्ण भाग लिया । वरुतसिंह की सहायता पा कर अभयसिंह के दोनों पुत्र राज्य पर श्रापना दांवा करने बीकानेर पर चढु त्र्याये। उन्होंने सीमा पर लांडगा में डेरें डाले ग्रीर बीकानेर के इलाके में उपद्रव करने लगे। कुशलसिंह ने एक दूत को अपनी निशानी के रूप में एक खास अंगूठी देकर उनके पास भेजा और उन्हें बातचीत के लिये गाढवाला बुलाया। यह निमन्त्रण पाकर दोनों भाई स्त्राये स्त्रीर प्रत्येक ने एक दूसरे से कुछ दूर खेजड़े (शमी वृत्त) के पेड़ के नीचे अपना डेरा किया। दोनों में छोटा भाई गजिंसह ग्राधिक योग्य था ग्रौर कुशलिंह भी उसी को पसन्द करता था। लेकिन इसका निर्णय शकुन विचारने वालों पर छोड़ दिया गया। शकुनों से पता चला कि जो व्यक्ति भूमिया खेजड़े के, जो भोम धर्णी (भूमि का स्वामी) को समर्पित है, नीचे ठहरा है उसी को महाराजा चुना जाना चाहिये। इस पर गनसिंह को चुपचाप बीकानेर बुलाया गया ग्रौर उसे इस शर्त पर बीकानेर की गद्दी पर वैठाने का निश्चय किया गया कि राज्य पाकर वह कुशलसिंह ग्रीर वरुतावर सिंह से ग्रभयसिंह द्वारा वीकानेर के घेरे के समय-रसद ग्रौर खजाने के खर्च का हिसाब नहीं माँगेगा । गजसिंह ने यह वचन दे दिया श्रीर सितम्बर सन् १७४६ में उसे बीकानेर का चौदहवां शासक बनाया गया: ! वड़ा भाई अमरसिंह निराश होकर बीकानेर से-चला गया। लेकिन : निराश होकर भी वह अपने अधिकार को छोड़ने वाला न था। वह अजमेर गया जहाँ वीकानेर से ग्रासन्तुष्ट ग्रीर भी कई लोग एकत्रितः थे। ग्रान्त में सन् 🦟 १७४७ में ग्रमरसिंह जोधपुर की सेना की सहायता से बीकानेर पर चढ त्राया। लेकिन वह महाराजां के प्रतिरोध को भंग नहीं कर सका ख्रीर असंख्य

१. नैसासी-पूर्व उद्धत, मा २, पृ. २०१।

मृतकों ग्रीर घायलों को छोड़ कर उसे पीछे हटना पड़ा। उन्हीं दिनों बीदा-यतों ने बहुत उपद्रव करना ग्रारम्भ कर दिया था ग्रतः गजसिंह ने उनके मुखियों— मुहन्वतसिंह, देवीसिंह ग्रीर संग्रामसिंह को छापर बुला भेजा जहाँ वह उहरा हुग्रा था। जब वे ग्राये तो उसने उनको भरवा डाला। इससे इलाके में शान्ति हो गई।

चू कि वस्तिसह का अभयसिंह के प्रति वैमनस्य था, उसने गजसिंह से मेलकर सहायता चाही जो उसे दी गई। जोधपुर पर अपने आगामी आक्रमण में वादशाह से भी सहायता तोने की दृष्टि से वस्तिसंह दिल्ली गया और सहायता प्राप्त की। वापस लौटते हुए वह साँभर में उहरा और उसने गजसिंह को वहीं जुलाया। यह सुनकर अभयसिंह ने मराठों से सहायता मांगी और दोनों सेनाओं ने वस्तिसंह के विरुद्ध प्रस्थान किया। लेकिन जयपुर के महाराजा ने ठीक समय पर हस्तिचेप करके स्थिति को बचा लिया। इसी प्रकार दूसरे अवसरों पर जब भी वस्तिसंह ने सहायता के लिये कहलाया तो गजसिंह हमेशा उसकी मदद में गया।

मेड़ितयों को छोड़कर मारवाड़ के शेष सरदारों ने अब बखत— सिंह पर जोर दिया कि वह जोधपुर की गद्दी लोने के लिये प्रयत्न करे। सन् १७५० में मेड़ता के पास धासर तालांब पर एक मयंकर युद्ध हुआ जिसमें रामसिंह हार गया । देद्यपि रामसिंह का काफी नुकसान हुआ था पर उसने फिर मुकावला किया। लेकिन वह असफल हो गया और जोधपुर लौट गया । या गांच में मिलकर बख्तसिंह ने जोधपुर के बचाव को सरलता से तोड़ दिया और सन् १७५१ में नगर पर अधिकार कर लिया।

बीकानेर में भाग्डासर के जैन मन्दिर के पास प्राप्त स्मारक शिला लेख जिसे डॉ. श्रोम्मा ने बीकानेर राज्य के इतिहास मा. १ पृ. ३२५ पर उद्भृत किया है। पाउलेट-पूर्व उद्भृत पृ. ४५-४६।

२. पाउलेट-पूर्व उद्धृत पृ. ५६।

श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, मांग २, पू. ५०४।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पू. ५६-५७।

४. रामिसिह (जो अभयसिंह के बाद जो घपुर की गदी पर बैठा था) के विरुद्ध गजिसिह की सेना बख्तसिंह की सेना के साथ मिल कर रेगी और फिर सूर्यावास लड़ी।

५. पाउलेट--पूर्व उद्भृत, पृ. ५५-५६ ।

श्राधे दिन तक शहर की लूट होती रही । जोधपुर का किला भाटियों की देख रेख में था। उन्होंने उसे वस्तिसह को सौंप दिया। विजयी वस्तिसह किले में प्रविष्ट हुन्ना। महाराजा गजिसह अपने मित्र को दरवार हाल में ले गया श्रीर उसे जोधपुर का महाराजा कहकर गद्दी पर वैठने के लिये कहा। वस्तिसंह ने पहले अपने चचेरे भाई मित्र श्रीर साथी महाराजा गजिसह को वैठाया श्रीर कहा कि उसी (गजिसह) के कारण वह जोधपुर का शासक वन रहा है। यह कार्य कर गजिसह बीकानेर लौट श्राया। का

सन् १७५२ में गजसिंह ने मृंघड़ा श्रमरिंह को शेखावतों का दमन करने भेजा। वख्तसिंह के कहने से दौलतपुर का नवाव भी गजसिंह की सेना में श्रा मिला। विद्रोहियों का दमन कर दिया गया श्रीर शान्ति स्थापित हो गई। र

मुगल वादशाह की सत्ता इतनी कमजोर हो गई थी कि वह दूर के इलाकों पर नियंत्रण नहीं रख पाता था। ग्रहमदशाह के कमजोर शासन में हिसार का परगना ग्रह्मवश्यत हो गया। ग्रतः सन् १७५२ में उसने इसे गजिसह को दे दिया। बीकानेर के महाराजा ने इस परगने के प्रशासन के लिये मेहता बख्तावरसिंह को नियुक्त किया।

उसी वर्ष (ग्रगस्त सन् १७५२ में) जोधपुर के महाराजा वर्ष्त-सिंह का देहान्त हो गया। इस पर गजसिंह ने उसके पुत्र विजयसिंह को जोधपुर के शासक के रूप में मान्यता प्रदान की।

वादशाह की आजा का दिल्ली में भी उल्जंघन होने लगा।
गजिसह को वादशाह अहमदशाह ने एक आवश्यक सन्देश भेजकर अपने
वजीर (मन्स्र्अलीखाँ रुफदरजंग) से, अपनो रखा के लिये बुलाया। वजीर
ने वादशाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। गजिसह ने लगभग साढ़े सात
हजार सेना देकर हिसार से वख्तावरसिंह को तुरन्त भेजा। वादशाह ने
वख्तावरसिंह का सम्मान किया। वह तुरन्त सहायता भेजने पर गजिसह
से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे सात हजार जात और पाँच हजार

१. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५६ । श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ. ५०४-५०५ ।

पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ. ६०।
 दयालदास-पूर्व उद्भृत भाग २, पृ. ७६।

मेहता वस्तावर सिंह महाराजा गजिसह का मन्त्री था।

४. पाउलेट- पूर्व उद्धृत, पृ॰ ६१। दयालदास-पूर्व उद्धृत, भा. २, पृ. ७७।

सवार का मनसब प्रदान किया। इसके साथ ही एक शानदार खिल अत और "श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराजा महाराजा शिरोमिण " उपाधि प्रदान की । यह उपाधि राज्य की मोहर पर ग्रांकित की गई । महाराजा के ज्येष्ठ पुत्र को चार हजार जात और दो हजार सवार का मनसब दिया गया। मेहता बख्तावरसिंह को राव की उपाधि दी गई और एक खिलेग्यत व ४ हजार जात व एक हजार सवार का मनसब प्रदान किया गया। महाराजा की यह नई उपाधि अब सभी आदेशों, शिलालेखों आदि में लिखी जाने लगी।

वस्तिसंह ने गजिसंह की सहायता से जोधपुर की गद्दी सन् १७५१ में रामसिंह से छीनी थी। वस्तिसंह की मृत्यु होने पर उसका पुत्र विजयसिंह सन् १७५२ में जोधपुर की गद्दी पर वैठा। गद्दी पर वैठने के शीघ बाद विजयसिंह ने गजिसेंह की सहायता माँगी क्योंकि रामसिंह मराठों की सहायता से जोधपुर पर आक्रमण करना चाहता था। गजिसेंह अपनी सेना के साथ जोधपुर पहुँचा। लेकिन रामसिंह ने आक्रमण नहीं किया। पर शीघ ही सिन्धिया ने मारवाड़ पर हमला किया। रामसिंह अपनी सेना के साथ सिन्धिया से मिल गया। इस समय जयपुर की गद्दी पर माधोसिंह था। वह आरम्भ में जोधपुर की गद्दी रामसिंह को दिलाना चाहता था लेकिन जब सिन्धिया में के हाथों विजयसिंह की हार हुई और उसने माधोसिंह से सहायता माँगी तो न केवल वह स्वयं विजयसिंह की मदद के लिये गया विलक उसने वीकानेर से भी सहायता माँगी। मेहता वख्तावरसिंह के साथ बीकानेरी सेना माधोसिंह और उसकी सेना से डीडवाणा में आ मिली। पर मराठों ने इस सेना की गित सफलता से रोक दी और

१. वादशाह श्रहमदशाह के सन् जुलूस ६ ता. २ शब्वाल का फरमान।

२. वही।

३. वही ।

४. श्यामलदास-पूर्व उद्भृत. भाग २, पृ० ५०४ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृष्ठ ५६-६० ।
 दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृष्ठ ७५ ।

५. श्यामलदास--पूर्व उद्धृत, भाग २, पृष्ठ ५०५ । पाउलेट--पूर्व उद्धृत, पृ. ६०।

६. टाड-पूर्व रहृत, भाग २, पृ० १०६१-६३ ।

विजयसिंह को भागना पड़ा। विजयसिंह ने बीवानेर में गजसिंह के पास शरण ली और कुछ समय के बाद जोधपुर पुनः प्राप्त करने में माघोसिंह की सहायता पात करने हेतु ये दोनों जयपुर गये। 📑 लेकिन - माधीसिंह का विचार फिर रामसिंह के पन्न में हो चुका था। श्रतः उसने उनकी सहायता नहीं की । इतना ही नहीं उसने फलादी के चौरासी गांव पुनः गजसिंह की। देने का आश्वासन देकर गजसिंह और विजयसिंह में मतभेद उत्पन्त कराने की भी योजना बनाई । गंजसिंह इन पड़्यन्त्रों का शिकार नहीं बना तो माधीसिंह ने विजयसिंह को मरवाने को कोशिश की 13 सन् १७५६ में गंजसिंह ने जयपुर में कच्छवाहा रघुनाथसिंह की सहायता से शेखावत ठाकुर नवलसिंह ग्रोर भूपालसिंह के त्रिद्रोह का सफलता से दमन किया। उसी वर्ष नोहर में सिक्खां का विद्रोह दवाने के लिये उसे दोलतसिंह और मेहता माधोराय को भेजना पड़ा। उसके बाद गजसिंह ने भादरा के ठाकुर के विरुद्ध श्रपनी.सेना भेजी श्रीर वाद में महाराजा स्वर्थ भी एक वड़ी फोज लेकर वहाँ गया । इस पर भादरा के ठाक़ुर ने ह्यात्म-समर्पण कर दिया छौर उसकी जागीर पुनः उसे दे दी गई। तव गजसिंह ने रावतसरं पर चढ़ाई की श्रीर रावत श्रानन्दसिंह ने भी श्रात्म-समर्पण कर दिया ।^६

man to the man and the

उस समय त्रालमगीर द्वितीय दिल्ली का वादशाह था। एक वार जब वह सिरसा त्राया ता भादरा का ठाकुर लालसिंह त्रीर वाय का टाकुर दौलतसिंह उसकी सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने गजसिंह को भी

१. श्यामत्तदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ५०५-५०६ ।पाउत्तेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ६२ ।

२. जोधपुर राज्य की ख्यात, माग २, पृ० १६६ ।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ७६-५१।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ६२-६३।
 श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ५०६।

४. पाउत्तेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ६५ । दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ५४ ।

४. पाउलेट-पूर्व उद्धत प. ६५-६६ ।

सिरसा ग्राने के लिये लिखा लेकिन उसने न ग्राने का निर्णय किया। विश्वास मार्गी इसी समय के ग्रासपास विजयसिंह ने ग्रार्थिक सहायता माँगी ग्रीर गजसिंह ने तुरन्त उसे ५०,००० रुपये भेज दिये। एक दूसरे श्रवसर पर विजयसिंह ने खींवसर के जोरावरसिंह को दवाने के लिये गजसिंह की सहायता माँगी। उपाति खींवसर गया ग्रीर जोरावरसिंह को विजयसिंह की ग्राधीनता स्वीकार कराने में सफल हो गया। अ

१७५६-६० में मिट्ट्यों श्रीर जोहियों ने पुनः उपद्रव करना श्रारम्भ कर दिया। हुसैन नामक मट्टी सरदार ने श्रमीमोहम्मद नामक जोहिया सरदार से भटनेर छीन लिया। यह खबर सुन कर गजसिंह ने तुरन्त नोहर की श्रोर प्रस्थान किया। वहाँ से उसने सेना देकर मेहता बख्तावरसिंह को भटनेर मेहा। बख्तावरसिंह ने भट्टियों श्रोर जोहियों के कंगड़े को शान्ति से निपटा दिया।

उसी समय खबर मिली कि दाउद पुत्रों ने अन्पगढ पर आक-मण करके अधिकार कर लिया है। महाराजा ने तुरन्त उनके विरुद्ध प्रस्थान किया और अन्पगढ पर अधिकार कर लिया। सन् १७६३ में पुनः दाउद पुत्रों ने अपनी जाति के इंग्लियारखां के साथ मिलकर धोंखे से नोहर पर अधिकार कर लिया। गजसिंह ने शाह मूलचन्द और दूसरों के साथ अपनी सेना भेजी। जब गजसिंह की सेना अन्पगढ पहुँची तो दाउद

पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ६६ ।
 दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ०. ५६ ।

२. वही।

इ. खींबसर जोधपुर राज्य के नागीर जिले में एक जागीर थी। वह स्थान बीकानेर श्रीर जोधपुर के बीच में है। इस गांव के ठाकुर कर्मसोत राठौड़ गोत्र के प्रधान हैं।

४. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ॰ ६६ । दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृष्ठ ५७-५५ ।

पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ६७ ।दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ६५ ।

६. भावलपुरी ।

७. दयालदास--पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ५५ । णउत्तेट-पूर्व रद्भृत, पृ० ६७ ।

पुत्रां ग्रौर जोहियां ने मेल करना चाहा। लेकिन उनके द्वारा प्रस्तुत शर्ते बीकानेर के सरदारों ने ग्रस्त्रीकृत करदी। जोहिया वापस चले गये। पर उन्होंने रात्रि में एकाएक हमला किया। इसमें बीकानेर की सेना का काफी नुकसान हुग्रा। शाह मूलचन्द को विवश होकर उनसे मेल की बात करनी पड़ी। इस पर जोहिया गह, से हट गये ग्रौर मूलचन्द ने उस इलाके में गजसिंह का ग्राधिकार पुनः स्थापित कर दिया। सन् १७६७ में जब विजयसिंह ने भरतपुर के जवाहरमल से मेल किया तो गजसिंह ग्रप्रसन्न हो गया। जब विजयसिंह ने स्चित किया कि इस मित्रता के कारण माधोसिंह विरोधी भाव रखने लगा है ग्रौर उसने माधोसिंह के विरुद्ध गजसिंह से सहायता मांगी तो गजसिंह ने कहलाया कि मैं माधोसिंह का पन्न लूंगा।

सन् १७७२ में गजसिंह नायद्वारा गया। उदयपुर का महाराणा मी वहां गया श्रीर कहा कि विजयसिंह गोड़वाड़ का परगना नहीं छोड़ता है। गजसिंह ने विजयसिंह को गोड़वाड़ छोड़ने के लिये समभाया पर सफल नहीं हुत्रा। वास्त्र में लौटकर गजसिंह को रावतसर के रावत श्रीर वास्त्र व टेकरे के ठाकुरों के विद्रोह को दवाना पड़ा। टेकरा के गढ़ पर श्रीधकार कर लिया गया श्रीर बास्त्र के ठाकुर ने श्रात्म—समर्पण कर दिया। सन् १७७३ में जब भट्टियों ने पुनः गड़बड़ी की तो गजसिंह ने उनके विरुद्ध श्रपनी सेना भेजी। मुहम्मद हुसैनखाँ ने श्रात्म—समर्पण कर दिया श्रीर सन्धि करली।

गजिसिंह ग्रीर उसके पुत्र राजिसेंह में साधारण ग्रानवन थी। रोखावत नवलिंह, चुरू के ठाकुर नवलिंह ग्रीर कुछ वीदावतों श्रीर भाटियों ने राजिसेंह की उसके पिता के विरूद्ध सिक्रय सहायता की। गजिसेंह ने इस गठवन्थन को तोड़ दिया श्रीर कुछ समय बाद राजिसेंह बन्दी

पाउलेट--पूर्व उद्भृत, पृ० ६७-६न।
 दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृः नः ।

श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ५०६ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ६८ । दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ६० ।

श्रोमा, राजपूताना का इतिहास, भाग २, पृ ६७०।

४. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ७१ । दयालदास-पूर्व टद्भृत, भाग २, पृ० ६३ ।

प्र. वही ।

चना लिया गया । राजसिंह बीमार पड़ गया ख्रोर गजसिंह भी ख्रस्वस्थ हो गया । दोनों का मतभेद अब मिट गया था । राजसिंह बाद में ठीक हो गया ! २५ मार्च सन् १७८७ को ख्रपनी मृत्यु से पूर्व गजसिंह ने ख्रपने पुत्र राजसिंह को बुलाया ख्रोर ख्रपने उत्तराधिकारी के रूप में राज्य−कार्य उसे सौंप दिया । 9

श्रपने ज्येष्ठ भ्राता की श्रपेक्षा गजिसह ने बीकानेर का शासक वनाये जाने का श्रोचित्य पूर्णतः सिद्ध कर दिया था। पूर्व विवरण से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि गजिसह एक योग्य शासक श्रीर साहसी योद्धा था। विद्रोह श्रीर विरोध को उसने दृढता से द्वाया। जो विद्रोही उसकी सेवा में श्रा जाते उन्हें चमा करने को वह हमेशा तत्पर रहता था। लेकिन जो ऐसा नहीं करते उन्हें नष्ट करने में वह जरा भी नहीं हिचिकिचाता था। श्रपने पुत्र राजिसह को कैद करने में वह नहीं हिचिकिचाया। प्रत्येक परिस्थित में वह सर्वदा श्रपने मित्रों वा साथ देता था। सभी राजपूत राजा उसका वहुत सम्मान करते थे श्रीर जब कभी उनके राज्यों में कोई कठिन समस्या उत्पन्न हो जाती तो वे उसकी सलाह श्रीर मध्यस्थता चाहते।

जब सुगल साम्राज्य कमजोर हो गया श्रीर दिल्ली का चादशाह के विव प्रतीक मात्र रह गया तो भी गजसिंह ने सुगल बादशाह को दिये गये स्वामिमित के वचन का पालन करते हुए कभी सुगल बादशाह के हितों के विरुद्ध कार्य करने की कोशिश नहीं की। इसी प्रकार सुगल बाद शाह ने भी उसके प्रति सम्मान श्रीर विश्वास का दृष्टिकोण रखा यद्यपि गजसिंह कभी दिल्ली के दरवार में नहीं गया। बादशाह ने उसे "श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज शिरोमिण " की उच्च पदवी श्रीर माही मरातिव का सम्मान दिया।

गजिसह ने हमेशा अपनी जनता को सुखी श्रीर समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया । राजस्व संग्रह अ्रीर व्यय पर कड़ा नियंत्रण करके उसने राज्य की आ्राय वढाई । दरवारी शान शौकत में अपव्यय करना तो दूर उसने स्वयं कभी भी कोई व्यर्थ खर्च नहीं किया ।

वीकानेर के पन्द्रहवें शासक राजसिंह का जन्म सन् १७४४ में हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के वारह दिन वाद ४ अप्रेल सन् १७८७

दयालदास-पूर्व उड्डत, माग २, पृ० ६४ । पाउलेट-पूर्व उड्डत, पृ. ७२ ।

को वह वीकानेर की गद्दी पर वैठा। अपने पिता के दाह एंस्कार के तुरन्त बाद ही गंजसिंह के अन्य तीन पुत्र सुल्तानसिंह, मोहकमसिंह तथा अजबसिंह बीकानेर छोड़कर जोषपुर चले गयें। उन्हें डर था कि राजसिंह अब महाराजा होकर उन्हें देखित करेगा क्योंकि पहले उन्होंने धोखा देकर उसे बन्दी बनवा दिया था। राजसिंह का एक अन्य माई स्रतसिंह जिसने दूसरे भाइयों के साथ राजसिंह को बन्दो बनाने में भाग नहीं लिया था, बीकानेर में ही रहा।

राजिसिंह एक घातक बीमारी से पीड़ित या ग्रातः वह राज्य का कार्य नहीं देख सका । उसने ग्रापने विश्वसनीय सरदार मनसुख नाहटा को राज्य की देखभाल का काम सौंप दिया । राजिसिंह महाराजा के रूप में केवल २१ दिन ही जीवित रहा । २५ ग्रापेल १७८७ को उसकी मृत्यु हो गई । राजिसिंह के दो नावालिंग पुत्रों में से बड़ा प्रताप्रसिंह ग्रापने पिता का उत्तराधिकारी बना । बह बीकानेर का सोलहवां शासक या लेकिन उसकी मी; शीघ मृत्यु हो गई । रे

स्वरूपसिंह के राज्यारोहरण से लेकर प्रतापसिंह की मृत्यु तक का समय सम्भवतः राजपूत इतिहास का सबसे अधिक अन्यकारमय रूप है । मुगल शिक्त अब केवल कहने मात्र की थी। अक्रवर से लेकर वहादुरशाह के समय तक साम्राज्य को संगठित और नियन्त्रित करने का जो कार्य मुगल सत्ता करती आ रही थी अब वह नहीं कर सकती थी।

प्रतापसिंह के राज्यारोहण की बात तारीख ५ जून १७५७ के. एक पत्र से भी प्रमाणित होती हैं। यह पत्र जोधपुर में तैनात एक मराटा अफसर इंग्णाजी ने अपने स्वामी को लिखा था। इसका उल्लेख ही. बी. पार्सनिस ने अपने 'इतिहास संग्रह" (मराठी) भाग ६, पृ० ११३-१४ पर किया है और ओम्काजी ने अपने बीकानर राज्य का इतिहास" माग २, पृ० २६३ पर इसे उद्धृत किया है।

राजिसिंह के दो पुत्र थे – प्रतापिंस और जयसिंह ।

र. टॉड-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ११३ । लेकिन दयालदास अपनी ख्यात (भाग २ पृ० ६५) में लिखता है कि प्रतापिसंह की ६ वर्ष की आयु में चेचक से मृत्यु हुई। पाउलेट-भी अपने "गजेटियर ऑफ बीकानेर स्टेट" (पृ० ७३) में लिखता है कि प्रतापिसंह अपने पिता की मृत्यु के समय जीवित था पर अपने चाचा स्रतिसंह द्वारा मार डाला गया।"

फलस्वरूप अब तक जो निजी महत्वाकां ज्ञा, राज्य विस्तार की भृष्व और राज्यों की पारस्परिक अतिरपर्धा नियन्त्रण में रखी गई थी, वह अब भड़क उटी । प्रधानता के लिये भगड़े होने लगे । विशेषतः कच्छवाहां और राज्ये के बीच हालत बदतर हो गई और राजपूताना के देशी राज्यों में अव्यवस्था और विनाश के हश्य दिखाई पड़े । यहां समय था कि इन परिस्थितियों का फायदा उटाकर मराठे अपना स्वयं का एक साम्राज्य बनाने की सोच रहे थे और विदेशी व्यापारी प्रभावित चेत्र पर अ मेजी भंडा गाड़ने की साहसी नीति अपना चुके थे । लेकिन डगमगाते हुए सुगल साम्राज्य बनाने की बात नहीं सोच सके । यद्यपि सुगल बादशाहों के समय उन्होंने दूर दूर के स्थानों को जीता था, न्यापक चेत्र पर शासन किया था और सुगल साम्राज्य को मजबूत बनाने में चेत्रपाल की सेवायें प्रदान की थीं । पर उन्होंने स्वयं स्थिति का लाम नहीं उठाया । इसका मुख्य कारण उनकी एक दूसरे के प्रति ईप्यों और राज्यों की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा थी ।

जब राजपूताना पर ये काले वादल मंडरा रहे थे तो बीकानेर के शासकों ने मुगल बादशाहों के प्रति उस समय भी अपनी स्वामीमित का सचा प्रर्शन किया। मुगल बादशाह इस समय पूर्णतः कमजोर हो चुके थे और समय के अनुसार अपने पड़ौसी राजाओं से अपना सम्बन्ध जोड़ लेते थे। बीकानेर के शासक एक प्रकार से स्वतन्त्र से थे। मुगल बादशाहों के प्रति स्वामीमित रखते हुए भी मौका पड़ने पर बीकानेर के शासक शाही सेना से लड़ने से नहीं हिचकिचाये जैसा कि उनके हिसार पर आक्रमण से पता चलता है। लेकिन मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम रखे गये। हम देखते हैं कि शाह आलम ने गजसिंह को मनसब, माही मरातित्र और उपाधि दी तथा उसके पुत्र राजसिंह और दीवान बख्तावरसिंह को भी मनसब प्रदान किया। अमयसिंह द्वारा बीकानेर पर आक्रमण के समय मुहम्मदशाह ने जोरावरसिंह को अपनी सहायता का विश्वास दिलाया। बीकानेर के शासकों ने भी अपनी और से कृतज्ञता का परिचय दिया। जब बजीर मनस्त्रज्ञलीकों ने आहमदशाह के शासन के विरुद्ध विद्रोह किया और अहमदशाह ने सहायता माँगी तो गजसिंह ने तुरन्त मेहता बख्तावरसिंह के साथ एक सेना दिल्ली मेजी।

बीकानेर के शासकों और तैमूर के वंश में जो सम्बन्ध स्थापित हुआ उसकी जाँच करने पर पता चला है कि पैतृक राज्य बोधपुर से स्वतंत्र बीकानेर की एक ग्रलग राज्य की स्थापना के समय से लेकर लग-भग दो सी वर्षों तक बीकानेर राज्य ग्रीर उसके शासकों ने पीढी दर पीढी ऊंची इज्जत, सम्मान, पद व प्रतिष्ठा प्राप्त की । केन्द्रीय सत्ता के साथ ग्रपने सम्बन्ध में उनकी राजनैतिक ग्रीर सैनिक शिक्त व प्रभाव काफो था । इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता कि राजपूताना की सुख्य रियासतों में बीकानेर की हमेशा गणना की जाती थी । मुगल राम्राज्य के समय भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रीर बड़ी रियासतों में बीकानेर का जो उच्च स्थान था, वह इतिहास के तथ्यों से सिद्ध हो गया है।

मुगल वादशाहों श्रीर वीकानेर के राटौड़ शासको में जिस प्रकार का पारस्परिक व्यवहार रहा उससे यह तथ्य स्थापित होता है कि वीकानेर राज्य का जन्म किसी वादशाह द्वारा दी गई जागीर के रूप में नहीं हुशा। सुगल काल से पहले ही, एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में वीकानेर राज्य की स्थापना विकाजी ने श्रसंख्य खतरों श्रीर गम्भीर किटनाइयों के वावजूड़ श्रपने मुज-वल श्रीर श्रदम्य शौर्य द्वारा की थी। इस प्रकार श्रपने विजय के श्रिषकार से श्रीर प्रक्रित के विरुद्ध भी एक दीर्घ व सतत संघर्ष करते हुए वीकानेर के शासक श्रपने इस परम्परागत श्रिष्म कार (विरासत) को नायम रख सके। सुगल साम्राज्य के हतिहास में बीकानेर के राठौड़ शासकों ने एक महत्व पूर्ण भाग श्रदा किया। उन्होंने श्रपना खून वहाकर स्वामी भिक्त का परिचय दिया श्रीर सुगल साम्राज्य के लिये सैनिक सेवायें दीं। उन शानदार गुणों के प्रदर्शन में जो किसी वंश को श्रपनी विजयों को स्थाई करने में सहायता करते हैं, वे किसी से कम नहीं थे। लगभग ६० विभिन्न युद्धों श्रीर चढ़ाइयों में बीकानेर के शासकों ने श्रपना व्यापक श्रिधकार रखा।

बीकानेर का प्रथम शासक जो मुगलों के सम्पर्क में आया, राव कल्याणमल था। वह बीकानेर का पांचवां शासक था। उसे २००० का मनसव प्रदान किया गया। उसे यह मनसव सन् १५७० में मिला। जोधपुर के राजा को इसके तेरह वर्ष बाद सन् १५८३ में मनसव मिला। ऐसा विश्वास किया जाता है कि हिन्दू राजाओं में केवल आमेर को छोड़ कर बादशाही मनसव सबसे पहले बीकानेर के शासक को ही मिला। साथ ही जोधपुर के शासक को राजा की उपाधि मिलने से ११ वर्ष पूर्व ही मुगल बादशाह द्वारा बीकानेर के शासक को राजा की उपाधि मिल चुकी थी। गुजरात के विरुद्ध महान अभियान में राजा रायसिंह को उच्च पद प्राप्त हुआ या। वहाँ उसने द्वंद युद्ध में गुजरात के स्वेदार मिर्जी मुहम्मद हुसैन को मारकर नगर पर जो धावा बोला उससे उसको ख्याति मिली। रायसिंह ने कई चपों तक जोधपुर पर ग्रिधकार रखा ग्रीर यह उसकी निजी मध्यस्थता का ही परिणाम था कि जोधपुर पुनः उदयसिंह को दिया गया। ग्रकबर के दरबार में केवल जयपुर के शासक को छोड़कर समस्त भारत के तत्कालीन हिन्दू राजाग्रों में बीकानेर के शासक का ग्रिधिक ऊँचा पद ग्रीर कम था। कई ग्रवसरों पर मुगल बादशाहों ने बीकानेर के शासकों को सर्वोच्च सम्मान प्रदान किये। कम से कम तीन ग्रवसरों पर दिल्ली के बादशाहों द्वारा बीकानेर के शासकों को 'भाही मरातिब'' को सम्मान मिला। यर्वाप नालकी ऐसा विरल सम्मान नहीं था पर वह भी बीकानेर के शासकों को प्रदान किया गया।

मुगलों ऋौर बीकानेर के राजघराने के बीच सम्बन्ध को पूरी तरह से समक्तने के लिये बीकानेर के लोगों ऋौर शासकों पर मुस्लिम संस्कृति का जो प्रभाव पड़ा, उसका संज्ञिप्त विवेचन ऋावश्यक है।

चीकानेर काबुल श्रौर भारत के महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित था ग्रौर उधर से गुजरने वाले यात्रियों श्रौर काफिलों के कारण विचारों के श्रादान—प्रदान के श्रनेक श्रवसर मिलते थे। बीकानेर के प्रशासन पर भी मुगलों का प्रभाव पड़ा। बीकानेर की सेनाश्रों ने जो रण नीति श्रपनायी उसमें भी यह प्रभाव है। यह प्रभाव कला, संस्कृति, साहित्य, चित्रक्ति श्रीर खेलों में— प्रत्येक जगह दृष्टिंगोचर होता है। बीकानेर दिल्ली से

पाउन्नेट-गजेटियर श्रॉफ दी बीकानेर स्टेट, पृ. १७० ।
 डे - तबकाते-ए-श्रकवरी भाग, १, पृ. ५६७ ।
 ब्लाकमैन-श्राइने -ए- श्रकवरी, भाग १, पृ. ३४७, ३५६-३६१, ३५४ ।

२. यह सम्मान (१) महाराजा अनूपसिंह (२) महाराजा गजसिंह और (३) महाराजा रत्नसिंह को प्रदान किया गया था।

३. नालकी अठपहल् या चौकोर आकार की एक पालकी है जिसमें आगे और पीछे दो या अधिक हत्ये लगे रहते हैं। स्लीमैन अपने ''रैम्वल्स एन्ड रिक्लेक्शनस ऑफ एन इन्डियन ऑफिशियल'' में लिखता हैं कि यह तीन उच सम्मानों में से एक या जो देश के वड़े भूभाग वाले प्रथम श्रेणी के शासकों और स्वतन्त्र राजाओं को दिया जाता था।

हवाई मार्ग द्वारा केवल २५० मील दूर है अतः मुगल फारस से जो संस्कृति लाये तथा भारतीय जनता के मन पर उसकी जड़ें जमाई, उसके तीन प्रभाव से वच सकना असम्भव था। अकवर ने मित्रता छोर धार्मिक सहिष्णुता की नीति का अनुसरण किया छोर विभिन्न उपायों से राजपूतों को अपनी छोर मिलाने का प्रयत्न किया। उसने उच्च सम्मान छोर मनसव देकर उन्हें प्रसन्न किया। कहीं कहीं तो मुगल वादशाहों छोर राजपूत राजकुमारियों में विवाह भी हुए। इस प्रकार राजपूत राजा मुगल वादशाहों के बहुत निकट हो गए छोर बहुधा उन्होंने वादशाह बनाने के सम्मानित कार्य में महत्वपूर्ण भाग अदा किया। अकवर की नीति राजपूताना के शासकों को युद्ध की अपेता मित्रतापूर्ण तरीकों से अपनी छोर करने की थी। इस नीति में वह बहुत सफल हुआ।

इसी काल में बीकानेर में बारूद का प्रचलन हुआ। सर्व प्रथम तोपों का उपयोग महाराजा जोरावरसिंह के शासनकाल में किया गया। मुगलों के साथ निकट सम्बन्ध होने के कारण स्थापत्य कला और चित्रकला दोनों के ही विकास में उल्लेखनीय प्रगति हुई। कई बार मुगल स्थापत्य की नकल करके और कई बार राजपूताना की मूल हिन्दू कला में मुगल कला को मिला करके एक बहुत रोचक भारत-अरबी स्थापत्य का विकास बीकानेर में हुआ। बीकानेर में शानदार भवन बनाये गये। इनमें सन् १५६४ में महा-राजा रायसिंह द्वारा बनाया गया प्रसिद्ध जूनागढ़ का किला भी समिलित है। बीकानेर के किले में स्थापत्य सीन्दर्य के अनेक ऐसे रूप हैं जिन्हें देखकर इतिहासकार को फाहपुर सीकरी और दिल्ली के लालकिले की याद आती है।

स्वयं किला उस समय के सैनिक मानदर्र के अनुसार बनाया गया है। हर मन्दिर का लकड़ी पर काम किया हुआ दरवाजा अक—वरी दरवाजों से काफो मिलता जुलता है। स्रिसंह के शासनकाल (१६१३—३१) में बने भवनों की शैली अकबर के समय के मुगल स्थापत्य का प्रतिनिधित्य करती है जैसे की स्रसागर तालाव और स्र मन्दिर। महाराजा कर्णांसिंह (सन् १६३१–६६) की देवीकुर्ण्डसागर में बनी छत्री फतहपुर सीकरी शैली का एक सुन्दर उदाहरण है। देशनोक में करणीजी का मन्दिर, विशेषतः उसका प्राचीनतम भाग जो अब भी है, अकबरी मुगल परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है। अनुपसिंह (सन् १६६६–६८) न केवल महान योद्धा था बिलक वह एक महान विद्धान और कलाओं का प्रेमी था। उसके शासन कात में

निर्मित भवनों में सजे हुए सफेद संगमरमर का उपयोग शहिनहीं ही शिली से मिलता जलता है, यह स्पष्ट है। स्रसिंह ग्रीर कर्णिरिंह के सिर्मिं में जो कमरे वने उनके ग्रागे दो मंजिले सफेद संगमरमिं के हिन्मिं पर वने मेहराव से भी यह प्रभाव स्पष्ट प्रमाणित होता है कि लिकिन स्रतिसंह के शासनकाल में (सन् १७८७-१८२८) यह प्रमीविष्टिती हिंगी दिखाई पड़ता है। कला ग्रीर स्थापत्य के प्रभाव की कि सी कि सिन्हित (सन् १७००-३६) से ग्रारम्भ होती है जब कि से लिकिन कमजोर हो गई थी ग्रीर दोनों सत्ताग्रों में राजनैतिक सम्पर्क शिथित हिंगी सिन्हित हो गई थी ग्रीर दोनों सत्ताग्रों में राजनैतिक सम्पर्क शिथित हिंगी सिन्हित हो गई थी ग्रीर दोनों सत्ताग्रों में राजनैतिक सम्पर्क शिथित हो गिर्मिंगिया कमजोर

उस समय के प्रसिद्ध उस्ता चित्रकारी हिस्स धनिये मिर्गये प्रसिद्ध बीकानेरी चित्रसंग्रह की सारे संसार के कला ग्रीमियों ने प्रग्रहिसी की प्रसिद्ध बीकानेरी चित्रसंग्रह की सारे संसार के कला ग्रीमियों ने प्रग्रहिसी की है। ये उस्ता मुगल काल में बीकानेर अपित्रप्रकेश प्रकृति कि कि मिर्गली कलम (शैली) के सुन्दर चित्र दनाये। इसी के अगि अकि मिर्गली शिली का विकास हुआ। धीरे धीरे विदेशी प्रमाव कि हैं कि कि मिर्गली शिली का विकास हुआ। धीरे धीरे विदेशी प्रमाव कि हैं कि कि मिर्गली अगिर विहासिय बीकानेर शैली के चित्रों में मिल गया। महाराज कि कि मिर्गली कि नित्रों का स्पष्ट रूप से विकास होने कि माम्बीकि के कि नित्रों का स्पष्ट रूप से विकास होने कि माम्बीकि के सिर्गली कि मिर्गली के लिए भी प्रसिद्ध था। आज भिर्मलीकि कि मिर्गली कि मिर्गली कि मिर्गली कि मिर्गली कि मिर्गली कि मिर्गली हों। से सुन्दर रोवों से बनाये का निहास कि मार्गली कि मिर्गली कि मिर्गल

ग्रन्थ हैं। इनमें कई तो दुर्लम रचनायें हैं।

बोकानेर के किले में प्रसिद्ध कर्ण महल महाराजा कर्णसिंह ने वनवाया था। यह कुछ समय पहले तक दरवार हाल के रूप में काम में श्राता था। इसे देखकर हुई। कुका ग्रांग्स निधीर विस्ति, केण्लील किलों किए एसे ही श्राता था। इसे देखकर हुई। कुका ग्रांग्स निधीर विस्ति, केण्लील किलों किए ऐसे ही श्रे

ने के किया निर्मा के प्रीतानेर के किले की दीवार नी प्रिजी के मिल हैं। जाता हुन्या ज' कित हैं। जीता हुन्या ज' कित हैं। 1 555 उनातीक मोहर उच्चितिहरू हन्म देशहर मुहणीप

दरतार हाल याद हो त्राते हैं। मुगल प्रभाव यहां के लोगों के सामाजिक जीवन पर भी पड़ा। बहुत से रिवाज और उत्सव मुगलों के अनुकरण पर चले और कायम रहे। पोशाक में न केवल यहाँ के शासकों ने बिल्क शिष्ट-जनों ने भी कुछ मुगल ढ़ंगों को अपनाया। पोशाक के कुछ रूप मुगलों से लिये गये जैसे कि अंगरला और तंग पायजामा। हिन्दू स्त्रियां साड़ी पहनती थीं जब कि मुस्लिम स्त्रियां लम्बे पायजामे या घाघरे और चोलियां पहनती थीं।

मुगलों द्वारा त्रारम्भ किये गये चौपड़, सतरंज, शिकार खेलना त्रीर बाज पालना त्रादि खेल कूद भी बीकानेर में चालू हुए। वाद्य क्रीर पेय पर भी गहरा मुगल प्रभाव पड़ा। मुगल प्रभाव से कुछ हुरे रिवाज भी प्रचलित हुए जैसे कि पर्दा प्रथा क्रीर बहु-विवाह। इन दोनों हानिकारक रिवाजों ने स्त्रियों को पराधीन बनाने में महत्वपूर्ण योग दिया। राजपूतों में पर्दा प्रथा तो राजस्थान के एकीकरण तक रही क्रीर क्राज भी इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रथा के अवशेष राजपूत परिवारों में देखे जा सकते हैं।

वीकानेर के लोगों के जीवन पर इस प्रमाव के वावजूद यह वात विशेष रूप से ध्यान देने की है कि वीकानेर अपनी मूल संस्कृति को वनाये रखने में भी काफी सौमाग्यशाली रहा। भारत के राजनैतिक मंच से मुगलों के हटते ही बीकानेर शीघता से अपनी निजी संस्कृति की श्रोर मुक गया।

वीकानेर राज्य की प्रारम्भिक राजस्व पद्धित मुगल प्रभाव से बच नहीं सकी । मुगल पद्धित बहुत विकसित थी । भू प्रवन्ध सबसे पहले शेरशाह के समय में हुआ । बाद के वधों में स्वयं अकबर ने चार या पाँच राजस्व के प्रयोग किये । राजपूताना के शासकों के इलाके मोटे रूप से दो मिन्न प्रकार के थे— (१) बतन या पैतृक राज्य और (२) मुगल बादशाहों द्वारा मनसव में प्रदान की गई जागीर । जहां तक जागीरदारी में मिली भूमि का सम्बन्ध था उन महालों या परगनों में राजस्व की बही पद्धित प्रचितत थी जैसी कि उस सूबे या सरकार के शेष भागों में जिनका कि यह अंग थी। वीकानेर की पद्धित अजमेर सूबे की पद्धित जैसी थी।

पैतृक इलाके के लिए एक तथा मनसन में मिली जागीर के लिये दूसरा इस प्रकार राजस्व वस्र्ली के लिये दो विभिन्न प्रकार के नियमों से

१. यह सम्मत है कि चौगान, जो प्राचीन पोलो का रूप है, का खेल भी वीकानर में खेला जाता था जैसा कि वीकानेर के किले की दीवार पर यह खेल खेला जाता हुआ अ'कित है।

उत्पन्न होने वाली प्रशासनिक कठिनाई से वचने के लिये यह उचित समभा गया कि जहाँ तक सम्भव हो सुगल व्यवस्था को अपना लिया जाय । इस प्रकार हम देखते हैं कि सुगल व्यवस्था के अमीनों की भांति राजपूताना में भी ऐसे ही अपसर थे जो चिरायत कहलाते थे और जिनका कार्य राजस्य वस्ल करना था । पर इन दोनों पद्धतियों में एक महत्वपूर्ण ग्रान्तर था। मुगल पद्धति, जो रैयतवारी कहलाती थी, में बीच के किसी व्यक्ति को न रखकर किसानों से सीधी वस्त्ली पर जोर दिया गया था। रियासतों में चिरायत यह कर ठाकुरों से या उनके महाजनों से वस्ल करते थे ग्रीर वे किसानों से इसको वसूल करने के लिये स्वतन्त्र थे । दुसरा ग्रन्तर यह था कि सुगल पद्धति में जमीन की पूर्ण जाँच श्रीर उसमें उपज की मात्रा और वस्तु के गुणों को ध्यान में रखते हुए जो आँकड़े तैयार किये जाते थे उनके आधार पर कर निश्चित किया जाता था। रियासतों में चिरायतों द्वारा विना किसी नियम के यों ही कर निश्चित कर दिया जाता था। यह उल्लेखनीय है कि राजपूताना के राजपूत राज्य यद्यपि ऋधिकांशतः ऋजमेर स्वे में थे, पर वे वास्तव में सूवे के एक अङ्ग नहीं थे। इन राज्यों के शासक, जिनमें बीकानेर भी था त्राजमेर के मुगल शासक के नीचे नहीं थे। उन्हें पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त थी श्रौर बादशाह से उनका सीधा सम्वन्ध था। कुछ राजपूत राज्यों का जो मुगलों को कर देते थे, केवल इतना हो सम्बन्ध था कि कर की रकम सुवे के खजाने में जमा करा दी जाती थी। बीकानेर ने कभी कर नहीं दिया ।

वीकानेर राज्य के प्रशासन पर मुगल शासन का जो कुछ प्रभाव पड़ा उसका अध्ययन भी रोचक होगा । वीकानेर का प्रशासनिक हाँचा और उस हिन्द से सामान्यतः राजपूताना के राजपूत राज्यों का ढाँचा भी वास्तव में प्राचीन हिन्दू प्रशासनिक संस्थाओं पर निर्भर था । इन संस्थाओं का उद्भव और विकास ईसा पूर्व ३०० से लेकर ईसवी सन् ११०० तक हुआ । इन संस्थाओं को कायम रखने का अय इन राजपूत राज्यों को ही है ! राजपूताना के कुछ भागों पर पहले अलाउद्दीन खिलजी और बाद में शेरशाह का जो अधिकार रहा वह अधिक समय तक नहीं चला। वह साधारण

एचिसन-पूर्व उद्भृत, भाग ३, पृ. २-३।
 राजपूताने में १६ रियासतें और २ जागीरें थीं इनमें से निम्नलिखित ११ कर देती थीं – वाँसवाड़ा, वूंदी, डूंगरपुर, जयपुर, भालावाड़, जोवपुर, कोटा, लावा, मेवाड़, प्रतापगढ़, और शाहपुरा।

या । त्रातः वीकानेर के प्रशासनिक ढांचे पर मुस्लिम पद्धति का कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ा । क़ानूनगो के ब्रानुसार शेरशाह ने प्रशासन की पद्धति में कुछ नई संस्थाओं को चालू किया लेकिन बाद के कुछ लोगों का मत है कि ग्राधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि शेरशाह केवल कुछ सुधार कर सका। शेरशाह कोई नया प्रवर्तक नहीं था बल्कि केवल एक सुधारक था । श्रकवर ने उन्हीं में सुधार किया। लेकिन चाहे यह पद्धति विदेशी सरकार के नमूने पर वनाई गई हो, यह निश्चित रूप से वहुत से रूपों में भारत में प्रचलित प्राचीन पद्धति से मिलती जुलती थी। राजतन्त्र का विचार मूलतः वैसा ही था। दीवानों या मन्त्रियों द्वारा राजात्रों को सलाह देने का स्वरूप भी ग्रांधेकांशतः वैसा ही था । इलाकों को सुवे, सरकार श्रौर परगनों नामक छोटी छोटी प्रशासनिक इकाइयों में बांटने की पद्धति भी प्राचीन हिन्दू पद्धति से बहुत कुछ मिलती थी। यह समानता इतनी ग्राधिक थी कि राजधराने के राजकुमारों को सुवेदार या शासक नियुक्त करना वैसा ही था जैसा मौर्य काल में राजकुमारों को चत्रप नियुक्त करना । महत्वपूर्ण अन्तर जो दिखाई पड़ता है वह केवल पारिभाषिक शब्दों में है जो मुगलों के माध्यम से अनेक फारसी शब्दों से प्रहण किये गये हैं। त्रातः मुगलकाल में बीकानेर राज्य की प्रशासनिक पद्धति मूल रूप में मुगल प्रभाव से ग्रप्रभावित रही।

ग्रध्याय ६

बीकानेर का त्रंग्रेजों से प्रारम्भिक सम्बन्ध

श्रव हम उस विकट स्थित में प्रवेश करते हैं जब कि घीकानेर के राजघराने का श्रंग्रेजों द्वारा स्थापित नई केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध हुन्ना। वीकानेर के राजघराने श्रौर केन्द्रीय सत्ता में जो सम्बन्ध बना उसे श्रच्छी तरह से समभने के लिये यह श्रावश्यक है कि इस काल में बीकानेर की श्रान्तिरिक पिरिश्यितियों श्रौर केन्द्रीय सत्ता द्वारा श्रपनाई गई नीति को ठीक प्रकार से देखकर समभ लिया जाय। श्रतः बाद के कुछ पृष्ठों में यह प्रयत्न किया गया है कि श्रंग्रेजों द्वारा श्रपनाई गई नीति का संत्रेप में विश्लेषण किया जाय तथा विभिन्न समयों में राज्य में जो पिरिस्थितियां थीं उनका उपयुक्त स्थलों पर विवरण दिया जाय। पर यह बात समभने की है कि श्रंग्रेजों द्वारा भारतीय रियासतों के राजाश्रों के साथ मित्रता के समभौतों को श्रलग-थलग करके श्रौर राज्यानुसार नहीं लिया जा सकता क्योंकि बहुत से मामलों में पिरिस्थितियां समान थीं जहाँ राजाश्रों को श्रपनी श्रान्तिक समस्याश्रों को सुलभाने के लिये एक श्रिषक शिकाशाली सत्ता की सहायता श्रौर संरत्त्वण श्रावश्यक था। श्रंग्रेजी सत्ता उस समय वह रही थी।

१८वीं शताब्दी के उत्तराद्ध श्रीर १६ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत की राजनैतिक स्थिति श्रस्थिर थी श्रीर राजनैतिक सन्तुलन कायम रखना कठिन था। फलस्वरूप ब्रिटिश ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने

१. थामसन—दी मेकिंग ऑफ दी इन्डियन प्रिंसेज, मूमिका पृ० ५-६ । थामसन के अनुसार मारत का राजनैतिक ढ़ाँचा सन् १७६६ से १८१६ तक टीपू सुल्तान की मृत्यु और पेशवा को हटाये जाने के बीच की २० वर्षों की अविध में ही बनाया गया । इस अविध के आरम्भ में मैसूर के मुस्लिम राज्य का विनाश हो गया और अन्त में मराठों का संव राज्य अनेक सरदारों में विखर गया । इन दोनों विजयों ने अंग्रेंजों को भारत का स्वामी बना दिया । मराठों

विजय की नीति श्रपना ली थी । यद्यपि पिट्स का सन् १७८४ का इन्डिया एक्ट पास हो चुका था जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि किसी भी नये इलाके का जबर्दस्ती नहीं मिलाया जायेगा । लार्ड कार्नवालिस ने श्राधा मैस्र कम्पनी के इलाके में मिला दिया श्रीर लार्ड वेलेजली ने तो उसका श्रीस्तव ही मिटा दिया । उसने श्रपने सहायता के समकौतों से ब्रिटिश प्रमुत्व को श्रीर भी इहता से स्थापित कर दिया । लार्ड हेस्टिंग्ज ने इस नीति को श्रीर भी श्रिष्ठक उत्साह से चालू रखा । हम देखते हैं कि सन् १८१८ के बाद भी पंजाब, श्रफगानिस्तान, सिंध, वर्मा श्रीर उत्तर पांश्चम के नये इलाके जीतने के लिये श्रीत उत्साह से प्रयत्न किये गये।

इस प्रकार अंग्रेजों ने हस्तच्चेप न करने का भाव दिखाते हुए भी विजयी की नीति का कड़ाई से अनुसरण किया और इसके लिये भार-तीय रियासतों के साथ उन्हें विभिन्न समभौते और सम्बन्ध करने पड़े। यद्यपि अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति में समय समय पर अनेक परिवर्तन हुए लेकिन इसका मूल उद्देश्य अपरिवर्तित रहा। वे भारत में ब्रिटिश आधिपत्य को स्थिर और मजबूत बनाने में लगे रहे। आरम्भ में उनका लच्य अपने समुद्रीय और व्यापारिक हितों की सुरचा करना था और बाद में भारत में अपने यूरोपियन प्रतिद्वंदियों की शक्ति और प्रभाव का मुकावला करना था। सन् १७६३ में फ्रांसिसियों की हार, जिसने उन्हें भारतीय मंच से हमेशा के लिये हटा दिया, के बाद अंग्रेजों और भारतीय शक्तियों का सम्बन्ध एक नई स्थिति में प्रविष्ट हुआ। सन् १७५७ से १८१६ तक

की अन्तिम हार के बाद ही आधुनिक भारत का निर्माण हुआ और उसका नक्शा स्पष्ट रूप में बना। आधुनिक भारत इन्हीं २० वर्षों के बीच बना, पहले तो लॉर्ड बेलेजली के शब्दानुसार "मराठा साम्राज्य" के विखरने से और तब कुछ समय की अनिश्चित और दुर्वल नीति के बाद, लार्ड हेस्टिंग्ज द्वारा उन वची रियासतों को, जो कि अपना अस्तित्व बनाये रखने में सफल रही थों, दढ़ता पूर्वक स्थापित रखना। इन २० वर्षों में भारत की राजनैतिक स्थिति अस्थिर रही और इस कारण राजनैतिक संतुलन कायम रखना कठिन था।

२४ ज्यो. ३ सी २५ ।
 के. एन. चीपड़ा— ला रिलेटिंग टू दी प्रोटेक्शन ऑफ दी एडिमिनिस्ट्रेशन ऑफ स्टेट्स इन इन्डिया, पु० ५ ।

२. वही, पृ० ७।

उन्होंने घेरावन्दी की नीति का पालन किया ग्रौर बाद में ग्राधीन त्रिग्रीर ग्रालग-थलग करने की नीति का पालन किया । सन् १८५८ से भारतीय रियासतों के प्रति अंग्रेजों का दिष्टकोण अधीन समभौते का वन गया। 9 भारतीय रियासतों के दृष्टिकोगा से ये ३ सोपान इस प्रकार थे- (१) विटिश सरचा (२) ब्रिटिश उन्नति ग्रीर (३) ब्रिटिश साम्राज्य ।

प्रथम ग्रवधि में समानता श्रौर स्वतन्त्रता के श्राधार पर समकौते किये गये ग्रीर इनमें परस्पर कार्य का विचार रखा गया था। एलिफस्टन के ग्रानुसार भारतीय रियासतों को इसलिये सहन किया गया क्योंकि वे "उन सब लोगों के लिये शरणस्थल थीं जिनकी युद्ध, षड्यन्त्र श्रीर लूट मार की ग्रादत उन्हें ब्रिटिश भारत में शान्तिपूर्ण नागरिकों के रूप में नहीं रहने देती थी। यंग्रेजों ने आशा की थी कि अधिक शक्तिशाली राज्य अधिक कमजोरों को श्रपने श्रन्दर मिला कर स्थिर राज्य वन जायेंगे पर श्रपनी इस श्राशा को सत्य न होते देखकर उन्होंने विजय श्रीर सहायक समभौते की नीति ऋपनाई । यह नीति कम या ऋधिक भारत में ऋँग्रेजों से प्रतिरूपधी रखने वाली यूरोपियन ताकतों जैसे फ्रांसिसी ग्रौर रूस के विरुद्ध ग्रपने

इन्डियन रिफोर्म ट्रेक्ट सीरीज ४, दी ने टिव स्टेट्स अॉफ इन्डिया, प० १५। थामसन्-दी मेकिंग ऑफ दी इन्डियन प्रिसेज, ए० २७१। कोलज़्क-लाइफ अॉफ एल्फिस्टन, भाग २, पू० ३१५।

सन् १८३२ में हाउस ऋॉफ कोमन्स के समद्मा भारतीय मामलों पर गवाही देते हुए एलिंफस्टन ने इसे बहुत राण्टता से प्रस्तुत किया है "इस बात में सुमे हमारा हित और साथ ही कर्तंच्य भी दिखाई पड़ता है कि हम मित्र सरकारों को सुरिचित रखने में हरेक तरीका काम में लायें। स्वतन्त्र राज्यों को अधिक संख्या में रखना भी हमारे हित में है। वे राज्य उन सब के लिये शरणस्थल हैं जिनकी युद्ध पड्यन्त्र और तूट की ऋादत उन्हें हमारे इलाके में शान्त नहीं रहने देती। हमारी सरकार का अन्तर हमारी जनता पर एक अच्छा प्रभाव डालता है। जनता इन बुराइयों का अनुमन करती है जो वास्तव में उनके सामने हैं पर वह यह भूल सकती है कि उसे किन वड़े खतरों से मुक्त किया गया है।""

रत्नास्वामी-ब्रिटिश एड मिनिस्ट्रेटिव सिस्टम इन इंडिया, पृ. ५६४। ₹. के. श्रार. श्रारती द्वारा ऋपनी पुस्तक ''इन्डियन स्टेटस'' में पृ. १८ पर उद्धत ।

चौपड़ा-पूर्व उद्भृत, पृ. ७-५ ।

ली वारनर-दी नेटिव स्टेट्स ऑफ इन्डिया, पु० ४३, ५५-५६, ६६ और ٩. १५७--१६१।

वचाव के लिये थी।

सन् १८१३ से १८५८ तक अंग्रेजों ने अलग-थलग अभीन सहायता की नीति का अनुसरण किया। हस्तचेप न करने की नीति पूर्णतः छोड़ दी गई और इस बात के लिये प्रयत्न किये गये कि प्रत्येक भारतीय रियासत एक अधीन मित्र बन जाय। लार्ड हेस्टिंग्ज इससे भी एक कदम आगे बढ़ा और उसने राजाओं को एक दूसरे से इतना अलग-थलग करने का निश्चय किया कि उनमें कोई भी मेल असम्भव हो जाय। राजा लोग इतने दुर्वल किये जाने थे कि वे ब्रिटिश सत्ता के लिये खतरा न बन सकें बल्कि अपनी रहा के लिये उस पर निर्भर भी हो जाय। ब्रिटिश रेजिडेंटों ने तानाशाहों के अधिकार प्राप्त कर लिये और राजाओं के अनेक निजी मामलों में हस्तचेप किया।

राजपूताना की रियासतों के सम्बन्ध में लार्ड वेलेजली के समय में प्रयत्न किये गये कि उन्हें ब्रिटिश प्रभाव एवं मित्रता के चेत्र में लाया जाय। पर कोई स्पष्ट परिणाम नहीं निकला। जार्ड कार्नवालिस और बारलों ने तो इन प्रयत्नों को अस्वीकृत भी किया, विशेषतः जयपुर के मामले में। सन् १८०३ में लार्ड लेक ने जोधपुर के साथ जो समसीता किया वह कभी लागू न हुआ। इस प्रकार अलवर, भरतपुर और धोलपुर को छोड़कर प्रायः समस्त राजस्थान का चेत्र लार्ड हेस्टिंग्ज द्वारा पद सम्भालने के समय अनियन्त्रित था और उसी ने राजस्थान में ब्रिटिश प्रभुसत्ता स्थापित की। विश्वप्र

१. ली वारनर-पूर्व उद्धृत, पृ: ४३-४४: ।

२. के. एन. चौपड़ा-पूर्व उद्धृत, पृ. ७-१२ । के. आर. आर. शास्त्री-इंडियन स्टेट्स पृ. १७-२०।

२. डाक्टर एम. एस मेहता-लॉर्डहेस्टिंग्ज एन्ड दी इंडियन स्टेट्स, पृ. १२६ ।

४. वही।

प्रति । जोषपुर के साथ समभौता सन् १८०३ में हुआ था और जनवरी सन् १८०४ में गवर्नर जनरल ने इसे स्वीकृति दी थी ।
 एचिसन्—ए कलेक्शन आफ्ट्रीटीज, इंगेजमेन्ट्रस् एन्ड सनद्स, माग ३, पृ० १२६-२७ ।

ली वारनर-पूर्व उद्भृत, पृ० ५६ ।

सेहता--पूर्व उद्भृत, पृ० १२६ ।ती वारनर-पूर्व उद्भत, प्० ५१--५२ ।

ली वारनर-पूर्व उद्धृत, पृ० ५१-५२ । संधियों के लिये देखें एचिसन पूर्व उद्धृत माग ३ पृ० ३४१-४४ और २८६-६९ मरतपुर के लिये । घौलपुर के लिये भाग ३ पृ० ४१६-२० और २५१-३५६ ।

राजपूताना की रियासतों में एक दूसरे से 'ऐतिहासिक परम्परा' सामाजिक स्थिति श्रीर राजनैतिक संगठन का श्रन्तर या श्रीर उनके हित मराठा से भिन्न थे तो भी वे ग्रापने ग्राप में एक ग्राभिन्न समूह वनी हुई थी। चास्तव में राजस्थान उस समय मराठों और पिंडारियों का, जो भारत में ब्रिटिश सत्ता के प्रतिद्वंदी थे, शिकार स्थल बना हुन्ना था। ने त्रातः लार्डहेस्टिंग्ज ने राजपूताना की रियासतों को अलग करने श्रीर ब्रिटिश सरकार का मित्र बनाने का प्रयत्न किया ताकि सिंधिया की बढ़ती हुई शक्ति को रोका जा सके श्रीर श्रमीरखां के पड्यन्त्रों को समात किया जा सके । यही कारण था कि राजपूताना को रियासतों के साथ विशेष व्यवहार करना पड़ा। ³ महाराजा राजसिंह के पुत्र महाराजा प्रतापसिंह को स्रपने रास्ते

से हटाकर बीकानेर का सोलहवाँ शासक महाराजा स्रतसिंह ग्रपने पैतिक राज्य का इक्कीस ग्राक्ट्रवर सन् १७८७ को उत्तराधिकारी बना। र टांड के त्रानुसार महाराजा सूरतसिंह ने, जब वह महाराजा प्रतापसिंह का संरत्नक था, वहत सी खालसा जमीन सरदारों को जागीर में दे दी ताकि वह उनकी सहानुभृति प्राप्त कर उन्हें अपने पन्न में कर सके। इससे राज्य के खजाने की आय कम हो गई पर अधिकांश जागीरदार उसके विरुद्ध विद्रोह करने की सोच रहे थे। कई स्थानों पर विद्रोह हो जाने पर उसने सर्व प्रथम सन् १७६० में चुरू के ठिकाने पर चढाई की झौर उसे झधीन कर लिया। ^६ सन् १७६१ में उसने जोधपुर के शासक विजयसिंह ऋौर सन् १७६८ में जयपुर के शासक प्रतापसिंह के साथ मेल स्थापित किया। स्रत-सिंह ने व्यास हरिशंकर को जयपुर भेजकर वीकानेर जयपुर के सीमा सम्बन्धी भगड़े का भी निपटारा कर दिया ।°

मेहता-पूर्व उद्धृत, पृ० १२६ । ۹.

मेहता-पूर्व उद्धृत, पृ० १२७।

लॉर्ड हेस्टिंग्ज का १ दिसम्बर सन् १८१५ का स्मरणीर्थ लेख, पैरा ५४। मेहता-पूर्व उद्धृत, पृ. १२७।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ६५ । पाउलेट ने ऋपने "गजेटियर ऋाफ दी वीकानेर स्टेट" (पृ ७३) में गद्दी ૪. पर बैठने की तिथि श्राधिवन सुदी १२ दी है जबिक दयालदास ने श्राधिवन सुदी १० दी है जो २१ श्रक्टूबर को पड़ती है।

^{¥.}

टॉड-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ११३८। दयासदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० ६५। ६. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ७३ ।

वही । **v**.

सन् १७६६ में मिट्ट्यों ने पुनः गड़बड़ी शुरु की। उन्हें द्वाने के लिथे रावतसर के रावत बहादुरसिंह, भूकरका के ठाकुर मदनसिंह, जैतपुरा के ठाकुर पद्मसिंह और दूसरे सरदारों के साथ एक शिक्तशाली सेना भेजी गई। जावताखाँ ने सात हजार फीज के साथ राज्य की सेना का सामना किया। लेकिन अन्त में मट्टी पराजित हो गये, डवली पर अधिकार हो गया और बीगोर में फतहगढ़ नामक एक गढ बनवाया गया।

जब जार्ज टामस नामक एक साहसिक ने मराठों की श्रोर से चोथ वस्त करने के लिये जयपुर पर श्राक्रमण किया तो श्रपने राज्य की श्रशान्त स्थिति की परवाह न करते हुए स्रतिसंह ने जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह को सहायता को । इससे टामस नाराज हो गया क्योंकि उसे युद्ध के मैदान से हटना पड़ा था। अकुछ विराम के बाद टामस ने एक बड़ी सेना के साथ बीकानेर पर चटाई करने की तैयारी की। उसने श्रपने साथ पखालों में बहुत सा पानी ले लिया श्रीर जैतपुर पर श्रपना श्रिधकार कर लिया। अपर स्रतिसंह ने उसे दो लाख रुपये देकर सुलह करनी चाही। इस रकम का एक ग्रंश नकद चुकाया गया श्रीर शेष के लिये जयपुर में स्थित बीकानेर के व्यापारियों के नाम हुएडी की गई। लेकिन ये हुएडियां सिकरी नहीं श्रीर टामस पुनः बीकानेर की श्रीर बढ़ा। उस समय स्रत-

१. दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ० ६५ । पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ७३ ।

^{2.} विलियम फ्रीकिल--मिलिटी मेनॉयर्स ऑफ मि॰ जॉर्ज टॉमस, पृ. १५१-७७। कॉम्पटन-यूरोपियन मिलिटरी एडवेन्चर्स ऑफ हिन्दुस्तान, पृ॰ १४५-५६। जार्ज टॉमस राजस्थान में ''बास्क फिग्गी' के नाम से जाना जाता है।

इ. फ्रॉकिलन-पूर्व उद्धृत, पृ० १७७-७६। काम्पटन-पूर्व उद्धृत, पृ० १५६-५७। विलियम फ्रॉकिलन लिखता है कि गद्दी पर बैठने के समय स्रतसिंह को खजानें में काफी सोना मिला पर उसने सारी सम्पति व्यर्थ के कामों में नष्ट करदी। अन्त में विवश होकर उसे निरंकुश तरीकों से धन प्राप्त करना पड़ा। जार्ज टॉमस के इस आक्रमण का दयालदास ने कोई उल्लेख नहीं किया है।

४. वर्भमपटन,-पूर्व उद्धृत, पृ० १५७ ।

प. दयालदास अपनी ख्यात (माग २ पृ० ६५) में लिखता है कि फतहगढ़ निर्माण के शीव उपरान्त मिट्टयों ने जार्ज टॉमस को बीकानर के इलाके पर आक्रमण के लिये प्रेरित किया। वालास और मंगल्ला के ठाकुरों तथा मिट्टयों की सहायता से उसने फतहगढ़ को जीत लिया और उस पर मिट्टयों का अधिकार करा दिया।

सिंह भट्टिमों को वशीभूत करने में लगा हुआ था। टामस ने सरलता से फतेहाबाद पर अधिकार कर लिया और उसे मिट्टी में मिला दिया। जिस गिति से टामस वढ रहा था उससे बीकानेर राज्य की सुरचा को खतरा उत्पन्न हो गया। सोभाग्य से पूर्व में हुई बातचीत के अनुसार पटियाला से एक हजार घुड़सवारों की सेना आ गई। इससे लड़ाई का रूप बदल गया। जार्ज टॉमस शीघता से पीछे हट गया और मज्भर को लौट गया।

बीकानेर पर टॉमस की चढ़ाई के समय फतहगढ़ का किला पुनः भिंटृयों के हाथ में चला गया था। सन् १८००-१८०१ में इसे पुनः जीता गया थ्रोर जनवरी सन् १८०१ में टीबी, भैराजकां व श्रामीर में थाने (पुलिस चौकियां) स्थापित किये गये। 3

इसके शीघ वाद स्रतिसंह ने अपनी सेना भावलपुर के खुदावक्स की सहायता के लिये भेजी। कड़े संघर्ष के बाद बल्लर, फूलड़ा, मीरगढ़ मारोठ और मौजगढ़ के किलों को जीत लिया गया। मौजगढ़ खुदावक्स को सौंपकर बीकानेर की सेना भावलपुर पहुँची। पीर जानी भावलखां ने आधा राज्य खुदावक्स को देने का बचन देकर संधि कर ली। स्रतिसंह की सेना बीकानेर लौट आईं।

सन् १८०२ में स्रतिसंह ने खानगढ़ पर सेना भेजी ताकि वहां के सुने गये ग्रसंख्य खजाने को ग्रधिकार में कर लिया जाय। यद्यपि किले पर वह ग्रधिकार करने में सफल हो गया पर उसे वह धन नहीं मिला जिसके लिये चढ़ाई की गई थी।

१. "मिलिटरी मेमॉयर्स ऑफ मि॰ जॉर्ज टॉमस" में विलियम के किलन लिखता है कि सूरतिसह ने कुछ यूरोपियन अफसरों, जो बीकानर दुर्ग में रहा करते थे, की भी सेवार्य प्राप्त की।

फ्रोंकलिन-पूर्व उद्धृत, पृ २२३-३६।
 काम्प्टन-पूर्व उद्धृत, पृ. १६५-१६६।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृष्ठ ६५-६६।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ७४।

४. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ६६ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ७४ ।

पाउत्तेट-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ०. ६६-६७।
 पाउत्तेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ७४-७५।

सन् १८०३ में चुरू के ठाकुर के विरूद्ध पुनः सेना भेजनी पड़ी। ठाकुर ने ख्रात्म समर्पण कर दिया और पेशकसी के २१,००० रुपये चुकाये। असन् १८०४ में मिट्टियों के विरूद्ध भी, जो वीच २ में गड़वड़ी करते रहते थे, एक सेना भेजी गई। ख्रन्त में मिट्टियों ने ख्रात्म-समर्पण कर दिया। उ

महाराजा स्रतिसह ने जोधपुर की गद्दी के दावेदार धोंकलसिंह का भी समर्थन किया। इस कार्य में उसके राज्य का लगभग ५ वर्षों का राजस्य खर्च हो गया। फलस्वरूप उसने लोगों से जबद्देत्ती धन छीनना ग्रारम्भ कर दिया। इससे महाराजा स्रतिसिंह तथा उसके सरदारों ग्रीर जनता के बीच दुर्भावना ग्राधिक वढ गई।

उस समय चारों ग्रोर ग्रानेक कठिनाइयां वढ रही थीं ग्रीर देश में लूट मार दवाव ग्रादि फैल रहा था। इन्हीं परिस्थितियों से विवश होकर महाराजा स्रतिसंह ने ग्रंग्रेजों से संधि करने की सोची। उसे

ही दोनों उससे मिले।

मेलिसन—ए हिस्टोरिकल स्केच ऑफ दी नेटिव स्टेट्स आफ इंडिया, पृ. ११५। दयालदास—पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ६७-६८। ध्यामलदास—पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ५०८। पाउलेट—पूर्व उद्भृत, पृ० ७५। जोधपुर की ख्यात में लिखा है कि धोंकलसिंह के उत्तराधिकार का समर्थक पोकरण का ठाकुर सवाईसिंह था। उसने ठाकुर सादुलसिंह के मार्फत महाराजा सूरतिसंह से सहायता प्राप्त की थी। बीकानेर दरबार को फलोदी देने के बारे में उसमें कोई उल्लेख नहीं हैं। इसी प्रकार जोधपुर के महाराजा मानिसंह द्वारा की गई ऐसी ही प्रार्थना के सम्बन्ध में भी ख्यात में कुछ नहीं लिखा है। जोधपुर की ख्यात में यह भी लिखा है कि जगतिसंह का सवाईसिंह के उत्साह में बहुत कम विश्वास था इसीलिये जब सवाईसिंह जोधपुर की सेना से लड़ा तब जगतिसंह

४. अर्सिकन-गजेटियर ऑफ राजपूताना, भाग ३, पू. २१२-२२४। दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पूष्ठ १०१। पाउलेट ने भी अपने "गजेटियर आफ दी बीकानेर स्टेट" (पू. ७६) में एल्फिस्टन का काबुल जात हुए बीकानेर आना लिखा है।

श्रीर सूरतसिंह मारीठ में ही रहे। जब सवाईसिंह ने गिंगोली जीत ली, उसके बाद

१. दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पृ. ६६।

२. वही । पाउलेट-पूर्वं उद्धृत, पृ० ७५ ।

यह ग्रवसर सन् १८०८ में मिला जबिक काबुल जाते हुए एलिंफस्टन चीकानेर ठहरा। महाराजा स्रतिसंह ने उसका समुचित सत्कार किया ग्रीर ग्रांग्रेजों से मित्रता के चिन्ह स्वरूप बीकानेर के किले की चाबियां उसे देनी चाही। पर चूंकि एलिंफस्टन एक ग्रन्य उद्देश्य से ग्राया था, उसने चाबियां स्वीकार नहीं की। उसने कोई वचन भी नहीं दिया क्योंकि उस समय ग्रंग्रेजों की नीति यमुना के पश्चिम की ग्रोर स्थित इलाकों के राजाग्रों से सब प्रकार का सम्बन्ध हटा लेने की थी। 9

इसी बीच चीकानेर की स्थिति ऋौर ऋधिक खराब होती गई। उस समय राज्य में विद्रोह उबल रहा था। चूरू को तीन बार घेरना पड़ा। र भूकरका ऋौर सीधमुख को भी वश में करना पड़ा। इ

जागीरदारों के बारबार विद्रोह श्रीर मराठों व मिट्टियों के निरन्तर हमलों के कारण राज्य विग्लव के किनारे पहुँच चुका था। श्रे श्रदा महा-राजा स्रतिसंह ने पुनः श्रंग्रेजों से संधि का प्रस्ताच किया श्रीर श्रपनी श्रोर से बातचीत करने कि लिये सन् १८१७ में काशीनाथ श्रोभा को मेजा। श्रे इस पर हो मीर्च १८१८ को दोनों पन्नों में संधि पर हस्तान्तर हुए श्रीर मुहर लगी। श्रंग्रेजों की श्रोर से सी. टी. मेटकाफ ने तथा महाराजा स्रतिसंह की श्रोर से काशीनाथ श्रोभा ने हस्तान्तर किये। लार्ड

श्रर्सिकन-गजेटियर श्रॉफ राजपूताना, माग ३, पृ० ३१२-- ३२४ ।
 दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० १०१ ।

२. दयालदास-पूर्वं उद्भृत, भाग २, पू० ६६ ।

दयालदास-पूर्व उड्डत, भाग २, ए० १०१ ।
 पाउलेट-पूर्व उड्डत, पृ. ७६-७७ ।

दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ. ६६ ।
 पाउलेट--पूर्व उद्भृत, पृ० ७५-७८ ।
 टॉड-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ. १९४२ ।

प्रानदास-पूर्व उद्घृत, भाग २, पृ. १०७ ।
 प्यामनदास-पूर्व उद्घृत, भाग २, पृ० ५०६ ।
 पाउनेट-पूर्व उद्घृत, पृ. ७= ।

वही ।

हेरिंटग्स ने २१ मार्च १८१८ को पतरास घाट पर इसकी पुष्टि की। इस प्रकार पहली बार बीकानेर राज्य और अंग्रेजों में सम्बन्ध स्थापित हुआ।

ं संधि का अध्ययन करने से पूर्व सम्भवतः उचित होगा कि संत्रेप में उन परित्थितियों का उल्लेख किया जाय जिन के कारण अंग्रेज संधि को प्रार्थना को मानने को इतनी जल्दी तैयार हो गये। लार्ड कार्नेवालिस द्वारा ग्रपनायी गयी हस्तचेप न करने की नीति के कारण न केवल मध्य-भारत ग्रीर राजपूताना की रियासतें पिंडारियों ग्रीर दूसरे लुटेरों की कीड़ा त्तेत्र बनी बल्कि। मराठां को शक्ति घटने से पिंडारी बहुत शिक्तशाली बन गये ग्रीर वे कई बार ग्रंग्रेजी इलाके पर भी धावा मारने लगे । ग्रतः यह ब्रानुभव किया गया कि सुरत्ता की कोई पंक्ति या सेना का प्रवन्ध अप्रेजी इलाके की रचा नहीं कर सकता। अंग्रेज पिंडारियों की लटमार की कारवाइयों के विरुद्ध एक प्रतिरोध स्थापित करना चाहते थे । यह कार्य सन १८१७ में सिंधिया के साथ हुई संघि ने श्रीर भी सरल बना दिया। इससे पहले लगाये गए प्रतिबन्व हटा कर श्रंग्रेजों को राजस्थान के राजाश्रों के साथ नये सममौते करने की छूट दी-। यही कारण है कि इस समय श्रंग्रेज राजात्रों के केवल बाह्य सम्बन्धी को वशीभूत करने के लिये लालायित थे श्रीर वे राज्यों के ग्रान्तरिक प्रशासन में हस्तचेप का कोई ग्राधिकार लेना नहीं चाहते थे। र

एचिसन-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ. २८८-६०।
 प्रिंसेप-नरेटिव ऑफ पोलिटिकल एन्ड मिलिटरी ट्रांजेक्शन्स, पृ. ४२७।
 मेलिसन-पूर्व उद्धृत, पृ. ११५।
 दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० १०७-५।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ७५।

लार्ड हेस्टिंग्ज का एक दिसम्बर सन् १५१५ का स्मरणार्थ लेख, पृ० ५४।
 मेहता—पूर्व उद्धृत, पृ० १२७।

१ दिसम्बर सन् १ ५ १ ५ के अपने स्मरणार्थ लेख में लार्ड हेस्टिंग्ज ने लिखा "उन (राजपूत रियासतों) पर हमारा प्रमाव स्थापित होने से सिक्खों और उनको सहायता देने वाली सम्मावित शिक्षयों के वीच एक शिक्षशाली प्रतिरोध वन जायगा। डा॰ मोहनसिंह मेहता के अनुसार लार्ड हेस्टिंग्ज ने राजपूत रियासतों के साथ सिन्ध में यह देखा कि इससे न केंबल सिन्धिया, होल्कर और अमीरखों की बढ़ती हुई शिक्ष ही नियन्त्रित होगी,

महाराजा सरतसिंह ग्रीर त्रांग्रेजों के बीच हुई संधि का विवेचनात्मक विश्लेषण करने से पता चलता है कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी श्रीर महाराजा स्रतसिंह, उनके उत्तराधिकारियों श्रीर क्रमानुयायियों के बीच निरन्तर मैत्री, पारस्पारिक मेल श्रीर हितों का ऐक्य रहना था श्रीर एक पद्म के मित्र तथा शत्रु दूसरे पद्म के मित्र तथा शत्रु समभे जाने थे। ग्रंग्रेज सरकार ने बीकानेर राज्य के इलाके की रचा का वचन दिया।³ महाराजा स्रतसिंह, उसके उत्तराधिकारी ख्रौर क्रमानुयायी ख्रंग्रेज सरकार के साथ ग्राधीनता पूर्ण सहयोग रखकर उसकी महता स्वीकार करनेवाले थे ग्रौर किसी दूसरे राजा या राज्य से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखने वाले थे। ³ महाराजा उसके उत्तराधिकारी ग्रौर क्रमानुयायी ग्रंग्रेज सरकार की जानकारी ऋौर स्वीकृति के विना किसी राजा या राज्य से समभौते की बात-चीत नहीं करने वाले थे लेकिन मित्रों ख्रीर सम्बन्धियों के साथ साधारण मैत्री का पत्र व्यवहार पहले की तरह जारी रहने वाला था। अ बीकानेर का शासक किसी पर ब्राक्रमण नहीं करेगा । यदि घटनावश किसी से भगडा हो जाय तो तै करने के लिये यह ऋंग्रेज सरकार की मध्यस्थता ऋौर निर्णय के लिये सौंपा जायगा । ध

महाराजा बीकानेर राज्य के कुछ लोगों द्वारा उस समय तक ग्रंग्रेजी इलाके के निवासियों से रास्ते चलते लूटी गई सम्पित को पुनः लौटाने के लिये सहमत हो गया । वह इस बात के लिये भी सहमत हो गया कि ग्रपने राज्य में डाकुग्रों ग्रीर लुटेरों का पूर्ण दमन करेगा । ग्रंग्रेज इस बात पर सहमत हुये कि डाकुग्रों ग्रीर लुटेरों का दमन करने के लिये महाराजा को जैसी सहायता की ग्रावश्यकता होगी, उसके मांगने पर दी जायेगी । पर महाराजा को उसकी ग्रीर से काम में लगी सेना का खर्च

जो उसके अनुमान से काफी महत्वपूर्ण उद्देश्य था, बल्कि इससे मध्य-भारत में कम्पनी की सैनिक और राजनैतिक स्थिति को अत्यधिक सुदृढ़ बनाने में भी सहायता मिलेगी।

१. एचिसन--पूर्व टड्टूत, भाग ३, पृ० २ - -, घारा १।

२. वही, धारा २ ।

३. वहीं, धारा ३।

४. वहीं, धारा ४ ।

५. एचिसन-पूर्व उद्भृत, भाग ३, पृ० २८८, धारा ५।

६. वही, पृ० २८५-८६, धारा ६।

देना पड़ेगा। यदि वह खर्च चुकाने की स्थित में न हो तो वह अप्रेज सरकार को ग्रपने इलाके का कुछ भाग देगा जो बाद में खर्च चुका देने पर उसे वापस सौंप दिया जायेगा । अंग्रेज सरकार बीकानेर के ठाकुरों ग्रौर दूसरे निवासियां की, जो विद्रोह कर महाराजा की सत्ता हटायेंगे, ग्राधीन कराने को सहमत हो गई। यह सहायता महाराजा के मांगने पर इस शर्त पर दी जायगी कि महाराजा सेना का सारा खर्चा दे। अंग्रेज सरकार के माँगने पर महाराजा अपने साधनों के अनुसार सेना देगा । महाराजा उसके उत्तराधिकारी एवं क्रमानुयायी श्रपने राज्य के खुदमुख्तार राजा होंगे श्रीर बीकानेर में ब्रिटिश हुकुमत का प्रवेश न होगा। महाराजा काबुल श्रीर खुरासान त्राने जाने वाले काफिलां के लिये बीकानेर त्रीर भटनेर के मागों को सुरिच्चित श्रीर श्राने जाने योग्य बनाने के लिये सहमत हो गया। यह इसलिये ताकि व्यापारी सुरचा से ग्रा जा सके । महाराजा ग्रपने राज्य से गुजरने वाले व्यापारियों से वस्तु की जाने वाली जकात की दर नहीं बढ़ायेगा । इस प्रकार अंग्रेजी सरकार ने बीकानेर के शासक के साथ जो सहायता देने वाली संधि की उससे महाराजा स्रतिसंह आधीन होकर सहायता के लिये वंध गया तथा वदले में ग्रंथेजो हुकूमत ने उसके इलाके की रचा करने और उसके विद्रोही सरदारों और जनता को उसकी आजा पालन करने वाली बनाने का बचन दिया । यह सन्धि केवल एक विशेष यात में जैसलमेर को छोड़कर राजपूताना की ग्रन्य रियासतों से की गई संधियों से भिन्न थी। बीकानेर के शासकों को श्रंग्रेजों को कोई कर नहीं चुकाना पड़ा क्योंकि वे मराठों को कोई ऐसा कर नहीं दे रहे थे। इस प्रकार यद्यपि महाराजा की रियति एक श्राधीन सहायक की थी पर बीकानेर रिया-सत को करदातृ राज्य नहीं बनाया गया था । यह स्पष्ट है कि अंग्रेजों का बीकानेर के शासक के साथ सम्बन्ध निरन्तर मैत्री, पारस्परिक मेल ग्रीर हितों की एकता पर आधारित था पर संधि से वीकानेर का शासक आधीन सहायता में वँघ गया ग्रीर ग्रंथेज सरकार की सर्वोच्चता मान्य की ग्रान्यथा वीकानेर के शासक श्रपनी रियासत के खुदमुख्तार शासक रहने वाले थे ।

१. एचिसन-पूर्व उद्धृत, माग ३, पृ० २८६ घारा ७ ।

२. वही, घारा ८।

३. वही, धारा १०।

४. वही ।

इस राज्य में अंग्रेजी हुकूमत का प्रवेश नहीं कराया जाने वाला था। इसकुत्रों का दमनं, अपने इलाके में लूटी सम्पति को उसके मालिकों को पुनः सींपना, अपने साधनों के अनुसार अंग्रेजों से ली। गई सहायती की खर्च चुकाना ऐसी शर्ते थीं जो संधि के अन्तर्गत महाराजा स्रतिसंह को स्वीकार करनी पड़ीं।

संधि में विशेष नियम थे । धारा ६ के अनुसार महाराजा ने अपने इलाके में तमाम डाकुओं और लुटेरों का दमन करने और संधि होने के समय तक अंग्रेजी इलाके से उसकी जनता के लोगों द्वारा लूटी गई सम्पति को वापस सौंपने का वचम दिया । धारा ७ के द्वारा अंग्रेज सरकार ने उसके विद्रोही सरदारों और जनता पर महाराजा की सत्ता स्था-पित करने की प्रतिज्ञा की लेकिन शर्त यह थी कि इस काम के लिये अंग्रेज सरकार द्वारा होने वाला खर्च महाराजा दें लेकिन बाद में सर्वोच्च सरकार ने संधि की इस धारा का बड़ा रोचक अर्थ लगाया अर्थात् यह कि ये धाराएँ संधि पर हस्ताच्चर के समय जो अस्थायी परिरियतियाँ वर्तमान थीं, उनसे सम्बन्ध रखती हैं और अनुनत्तिक गड़बड़ी को दबाने के लिये भारतिय रियासतों को सैनिक सहायता नहीं दी जायगी, यह सैनिक सहायता केवल अंग्रेज सरकार के सपट अधिकार से ही दी जायगी ।

श्रं ग्रें के साथ भारत की केन्द्रीय सत्ता के रूप में बीकानेर के राजघराने का सम्बन्ध सन्। १८६८ में हुई संधि से श्रारम्भ होता है। यंग्रप श्रपने शासनकाल में महाराजा स्रतिसंह का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध सामान्यतः मित्रतापूर्ण रहा पर भारतीय रियासतों के प्रति ग्रं ग्रें जों की नीति में निरन्तर परिवर्तन हो रहा था श्रीर बीकानेर उसका श्रपवाद नहीं हो सकता था। नीचे जो कई घटनायें दी गई हैं उनसे विदित होगा कि इस नीति में निरन्तर मैत्री श्रीर पारस्परिक मेल की श्रपेचा श्रधीन सहायता पर श्रिषक जोर दिया गया था। श्रीर वाद में स्रतिसंह के उत्तराधिकारियों के समय में सन्ध की धाराश्रों का श्रर्थ केन्द्रीय सत्ता के हितों को ध्यान में रखकर किया जाने लगा।

संधि पर हस्ताचर होने के तुरन्त बाद बीकानेर के कई सुरदारों

ए चिसन-पूर्व उद्धृत, भाग ३, पृ० २७८ ।
 मेलिसन-पूर्व उद्धृत, पृ० ११६ ।

ने, जो काफी समय से उद्धत थे, शान्ति मंग की। महाराजा ने संघि की यारा ७ के अनुसार अंग्रेजों की सहायता पाने के लिये मेहता अवीरचन्द को दिल्ली मेजा। जनरल एलनर एक शिक्तशाली सेना ले कर आया। इसने फतेहावाद और हिसार पर अधिकार कर लिया तथा सीधमुख जसाणा व विरकाली पर हमला कर रच्छों के कड़े विरोध को समाप्त कर दिया और उन किलों को ले लिया। एक महीने के घेरे के वाद चूरू को ले लिया गया। वाद में अंग्रेजी सेना ने मुलखिण्या व निम्ना पर अधिकार कर लिया और मुजानगढ़ से जैतसिंह बीदावत को निकाल दिया। भादरा का किला, जो सिक्खों ने ले लिया था, भी अधिकार में कर लिया गया अग्रेर वाद में महाराजा को सींप दिया गया। लेकिन भादरा के परगने को ४ साल तक अंग्रेजों ने अपने अधिकार में रखा। तब तक अंग्रेजी सेना का ७५५२५) रूपये का खर्चा उसके राजस्य से वसूल किया गया। इस चढ़ाई के समय अंग्रेजी सेना ने १२ किले जीते और वे सब के सब महाराजा को सींप दिये गये।

श्रंप्रेन सरकार ने टीवी के कुछ गाँव वृद्ध सैनिकों को दिये थे। महाराजा सुरतिसंह ने दावा किया कि ये बीकानेर राज्यान्तर्गत भटनेर के भाग हैं। सन् १८२८ में एडवर्ड ट्रिवेलियन बीकानेर की इस माँग का निपटारा करने के लिये भेजा गया। टीवी के गांवों के श्रलावा भादरा

र दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ११२। पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ७६। राजपूताना में गंवर्नर जनरल के एजेन्ट सर एडवर्ड क्रोलब्रुक ने ता. १५ मार्च १८२८ को महाराजा सूरतिसंह को लिखे अपने खरीते में इस दावे का उल्लेख किया है और वेनीवाल परगने के गाँवों सम्बन्धी दावे को अस्वीकृत कर दिया है। लेकिन उसने मादरा के उत्तर में कुछ चरागाह मूमि पर दावा स्वीकार किया है और लिखा है कि वह मूमि पठानों से जो उस समय उस पर कार्विज थें, लें ली जाय।

एक वार सिरसा और फतेहाबाद के गाँवों के लिये भी दावा किया गया पर बाद में उसे छोड़ दिया गया ।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पृ० १०५-६ ।
 श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ० ५०६ पर वह लिखता है कि अ अंजों:
की सहायता से केवल १० किले जीते गये थे।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ७५-७६।

के पास वेनीवाल परगने के, जहाँ मुख्यतः वेनीवाल जाट रहते हैं, भी चालीस गाँवों की मांग की गई थी। किसी समय कल्याणमल का इस चेत्र पर शासन था और जब मालदेव ने उसे बीकानेर से निकाल दिया था तो उसने सिरसा में अपनी दूसरी राजधानी स्थापित की थी। काफी समय तक भटनेर का किलेदार इस भू—माग का शासन करता रहा। चूं कि महाराजा स्रतसिंह ने सन् १८०५ में भटनेर जीत लिया था अतः उसने जो इलाके पहले भटनेर के साथ थे उनकी माँग की। दोनों ही मामलों में निर्णय बीकानेर के विपन्न में रहा। वाद में सन् १८५७ के गदर में भीकानेर हारा दी गई सेवाओं के बदले में इस भूमि का अधिकांश भाग बीकानेर को दे दिया गया। वाद से स्वास्त से स्वास से सन् १८५७ के गदर में भीकानेर हारा दी गई सेवाओं के बदले में इस भूमि का अधिकांश भाग बीकानेर को दे दिया गया।

सन् १८२४ में दररेवा के ठाकुर स्रजमल बीका ग्रीर सालेड़ी का सम्पतिंह दोनों श्रं भेजी इलाके के वहल गाँव में रहने लगे। र लेकिन उनकी गैर कान्नी कारवाइयों के कारण उन्हें वहाँ से निकालने की श्राव-श्यकता पड़ी। श्रं भेजी सेना द्वारा पीछा किये जाने पर ये दोनों ठाकुर बीकानेर के इलाके में घुस श्राये जहाँ बीकानेरी सेना ने उनका पीछा करना श्रारम्भ कर दिया। वे एक किले के बाद दूसरे किले में छुपते रहे पर बीकानेर की सेना ने उनके छिपने के श्राठों किलों को नष्ट कर दिया श्रीर इन लुटेरों को श्रसहाय बना दिया।

केन्द्रीय सत्ता के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बरावर रखे गये। सन् १८२७ में जब लार्ड एम्हर्ण्ट ने मेरठ में दरवार किया तो वीकानेर की ख्रोर में मेहता ख्रबरचन्द ने प्रतिनिधित्व किया और मूल्यवान वस्तुख्रों की नजर

१. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पू॰ ११२ । पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ७६ ।

२. वही।

इ. वही।

४. वही । एचिसन-पूर्व उद्भृत, भाग ६, पू. २६०-६१, ११ अप्रैल १८६१ की सनद सं. ११ ।

पालदास-पूर्व रुद्धृत, माग २, पृ. ११२ ।पाउलेट-पूर्व रुद्धृत, षृ. ७६ ।

६. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ. १९२ ।पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ. ७६ ।

की। गवर्नर जनरल ने मी महाराजा स्रतिसंह को खिलग्रत (सम्मानित Profest Later in Facility पोशाक) प्रदान की ।

संधि पर हस्ताच्चर होने के तुरन्त वाद की अवधि में बीकानेर के महाराजा को अंग्रेज राजनैतिक अधिकारियों से जो खरीते मिले उनसे स्पष्ट पता चलता है कि अधीन सहायता की नीति का कैसा प्रभाव था। १६ नवाबर सन् १८२० को मेजर जनरल सर डेविड ग्रोक्टरलोनी ने महाराजा युरतसिंह को कैप्टेन कोलविन की सहायता करने को कहा जो चितरांग नहर का निरीच् ए करने जा रहा था। 3 पुनः हेनरी मिडलटन ने महाराजा को जीहरीमल की सहायता करने की कहा जो रामगढ़ छोड़ कर चूरू में बसने के लिये आया था। अ जब भटनेर के किलेदार ने वंजर इलाके में गेहूँ बीया तो म्य प्रेजी ने एतराज किया और ७७००) रु० चुकाने पर जोर दिया । १ १२ जुलाई सन् १८२३ को सर चार्ल्स इलियट ने महाराजा को लिखा कि वह अजमेर के सेठ हमीरमल और स्रतराम के मुनीम गुलाबदास को बनदी बनाले क्योंकि उसने हुँडिया जारी करके काफी धन संप्रह कर लिया था। है २७ प्रक्तृवर सन् १८५३ को अभेजों ने महाराजा से कहा कि वह भाटी जालिमसिंह द्वारा की गई डकैती की जाँच करें।" सन् १८२४ में सर चार्ल्स इलियेट ने महाराजा को १६४००) रु० जो उसने दिल्ली खंजाने के हरनारायण से उधार लिये थे, ज्याज सहित मेजने को लिखा । ३ नवम्बर सन् १५५४ को सर चार्ल्स इलियट ने पुनः महाराजा को लिखा कि वह सुरजा डाकू को को सर चाल्स इ।लथट न अन्य नराज्या । अन्य पुरित्त से मुकावला गिरफ्तार करे जिसने बहल करवे पर हमला किया, पुरित्त से मुकावला

दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग/२, पृ: ११३.। पाउलेट-पूर्व उद्धत, पृ. ७६।

वही। ₹.

ता. १६-११-१८० का मेजर जनरल सर श्रोक्टरलोनी की (लेखक के पास सुरिचत)।

हेनरी मिडलटन का त्रिना तारीख का खरीता (लेखक के पास)।

ता. ३१-१०-१८२२ का ए. रोस. का खरीता (लेखक के प्रास) ।

ता. १२-७-१ मर३ का सर चार्ल्स इलियट का खरीता (लेखक के पास)।

ता. २७-१०-१८२३ का सर चार्ल्स, इतियट का खरीता (लेखक के पास)।

ता. २४-३-१५२४ का सर चार्ल्स इलियट का सरीता (लेखक के पास)।

किया और लोहारू में शर्ण ले ली। १ १५ जनवरी सन् १८२५ को अ में जो ने सुरजा को पकड़ने के लिये ४ तोपों के साथ पैदल सेना भेजी और बीकानेर में भेजी गई इस सेना का खर्चा महाराजा को मरना पड़ा यद्यपि महाराजा ने यह सैनिक सहायता कभी नहीं माँगी। २ सन् १८२५ में जव बीकानेर इलाके के लोगों ने पिटयाला इलाके के कुछ घरों पर नाजायज अधिकार कर लिया तो अ में जो ने इस गलती को दूर करने के लिये महाराजा को लिखा। अ जब हिसार के तिलोड़ी गांव से चार ऊँट चुराये गये तो सितम्बर सन् १८२५ में, सर चार्ल्स इंलियट ने महाराजा को लिखा कि चह अपराधियों को पकड़ कर जिलाधीश के पास भेजे। ४

शतों में लिखित निरन्तर मैत्री, प्रारम्परिक मेल और हितों के ऐक्या को हटा कर भारत में ख़ंबेजों ने हमेशा यही चाहा कि रियासतों के शासक अधी-नता की स्थिति में हो जायें।

महाराजा स्रतिसंह के बाद महाराजा रत्निसंह बीकानेर के व्यटारवें शासक के रूप में ग्रंगेल सन् १८८२ में गद्दी पर बैठे। ४ उनके शासन काल में श्रंगेजों का बीकानेर के शासक के साथ जो सम्बन्ध रहा उससे जरा मी संदेह ने रहा कि मित्रता की दर्जा बदलकर श्रंधीनता पर जोर दिया जाने लगा। गवर्नर जनरल का मलाई सन्देश (खरीता) बीकानेर में मई में प्राप्त हुआं। इसके साथ दिल्ली में स्थित ब्रिटिश रेजिडेन्ट का एक पत्र स्थाना इसमें महाराजा को स्वना दी गई थी कि जोधपुर में घोंकलसिंह बहुत एतराज पूर्ण व्यवहार कर रहा है और बीकानेर उसमें किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखे। महाराजा ने तुरन्त अपने सरदारों को सावधान कर दिया ताकि बीकानेर के इलाके में घोंकलसिंह के प्रवेश को रोका जाय।

१. ता. ३-११-१-२४ का सर चार्ल्स इलियट का खरीता (लेखक के पास)।

२. ता. १४-१-१-२५ का सर चार्ल्स इलियट का खरीता (लेखक के पास) ।

३. ता. १७-१-१ ५२ थ का सर चार्ल्स इलियट का खरीता (लेखक के पास)।

४. ता. २१-६-१८२५ का सर ज़ार्ल्स इलियट का खरीता (लेखक के पास)।

प्र. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५०। दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ११४।

६. ता. १६-५-१८८ का गवर्नर जनरल का खरीता (लेखक के पास)।

७. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ. ११४१

महाराजा के राज्यरोहण के शीघ बाद जैसलमेर के कुछ माटी बीकानेर सरकार के कुछ उँटों को पकड़ ले गये ! बीकानेर के एक अधिकारी शाह मानिकचंद ने जैसलमेर के अधिकारियों से उँट वापस लौटाने को कहा । लेकिन उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया । इससे सैनिक कारवाई करनी आवश्यक हो गई । बीकानेर और जैसलमेर की सेना एक दूसरे के विरुद्ध चल पड़ी । जैस्लमेर की सीमा में पहुंच कर बीकानेर की सेना ने लूटमार आरम्भ करदी । जब जैसलमेर की सेना से मुठभेड़ हुई तो बीकानेर की सेना चक्कर खा गई । उनका नगारा छिनने वाला ही था पर एक बहादुर सिक्ख सिगही ने अपने प्राण दे कर उसे बचा लिया ।

वीकानेर की यह कारवाई सन् १८९८ की संधि की घारा ५ का उल्लंघन थी। ग्रतः ग्रंभेज ग्राधिकारियों ने इसे पसंद नहीं किया! लेकिन बाद में मध्य-स्थता करने को कहा। दोनों पत्तों द्वारा एक दूसरे को हर्जाना देने के लिये सहमत होने पर बोकानेर ग्रौर जैसलमेर का मतमेद निपट गया। ग्रंभेजों ने इस निर्णय को मान्यता दी।

सन् १८३५ में ट्रेंबेलियन द्वारा बीकानेर श्रीर जैसलमेर के राजाश्रों में मिलाप का प्रबन्ध किया गया। वे लेफ्टिनेंट बोहलो ने, जो इस श्रवसर पर उपस्थित था, श्रपनी पुस्तक "पर्धनल नरेटिव श्राफ ए दूर ध्रदी वेस्टर्न स्टेट्स श्राफ राजवाड़ा" में इस मिलाप का सजीव वर्णन किया है। इस मिलान के समय दोनों पत्तों ने मित्रता की एक सन्धि पर इस्तात्त्रर किये। दोनों ने एक दूसरे के इलाके पर श्राक्रमण न करने श्रीर एक दूसरे के विद्रोहियों को शरण न देने का बचन दिया तथा यदि दोनों में से किसी पर शश्रु के श्राक्रमण का खतरा हो तो एक दूसरे की रत्ता करने का निश्चय किया। 3

उस समय अंग्रेजों ने संधि की धारा ५ का जो यह उल्लंधन सहन किया, वह महत्वपूर्ण है। इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। ऐसे समय जब कि हस्तचेप न करने की नीति का स्थान सक्रिय हस्तचेप ले

१. एचिसन-पूर्व उद्भृत, भाग ३, ए. २७७-७८।

ता. २४-१-१-६५ का मेजर एल्विस का खरीता (लेखक के पास सुरिचत) जिसमें सूचना दी गई है कि मिस्टर हेनरी ट्रेवेलियन बीकानेर आ रहा है और भगड़े को निपटाने के लिये मध्यस्थता करेगा।

३. दयालदास-पूर्व उद्धत, भाग २, पृ. १६।

रहा था, कुछ अंग्रेज अप्रकार भारतीय राजाओं के प्रति अशिष्टता का व्यवहार और उनके आन्तरिक, मामलों में अत्यधिक हस्तत्तेप पसंद नहीं करते थे। एलिफस्टन और मालकम दोनों ने अपनी सम्मित प्रकट की थी जो अत्यधिक हस्तत्तेप की नीति के स्पष्ट रूप से विरुद्ध थी। थामसन के अनुसार हस्तत्तेप की अंग्रेजी नीति ने भारतीय राजाओं को संरच्या देने के वावजूद उन्हें "महत्वहीनता की निम्न स्थिति" तक पहुँचा दिया। अनरों ने तारीख १२ अगस्त सन् १८१७ के अपने स्मरणपत्र में लार्ड हेस्टिग्ज को लिखा "अंग्रेज सरकार की शिक्त इस योग्य है कि वह प्रत्येक विद्रोह को दवा दे, प्रत्येक बाहरी आक्रमण को रोक दे और अपनी जनता को सुरच्या का ऐसा रूप दे जो किसी देशी शिक्त की जनता के पास नहीं था। इसके कानून और संस्थाय भी उन्हें घरेलू दमन से ऐसी सुरच्या प्रदान करती हैं जो उन रियासतों में अज्ञात हैं। लेकिन ये फायदे बड़े महरो मूल्य पर खरीदे गये हैं। ये फायदे राष्ट्रीय स्वरूप की स्वतन्त्रता और व्यक्तियों को गौरवशाली बनाने वाली प्रत्येक वस्तु का बिलदान करके प्राप्त किये गये हैं। "

इन बातों को ध्यान में रखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि संधि की धारा ५ के इस उल्लंघन की जो उपेचा की गई वह अंग्रेजों की नीति में किसी मूलभूत परिवर्तन में न थी। इस उपेचा का कारण अंग्रेज अपसरों की महाराजा से सम्बन्ध न बिगाड़ने और अप्रीतिकर स्थिति को उत्पन्न होने से रोकने की इच्छा थी। साथ ही उनका मूल लंच्य यह था कि पिंडारियों की लूट की प्रवृति और मराठों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोका जाय।

महाराजा रत्नसिंह को भावलपुर के खान के विरुद्ध अंग्रेजों के पास जाना पड़ा । खान ने फूलड़ा, बल्लर, मरोठ ग्रीर मौजगढ़ पर ग्राधि- कार कर लिया था श्रीर उसका विचार ग्रीर ग्राधिक भूमि दवाने का था। अग्रेजों की ग्रोर से सर एडवर्डकोलब्रुक ने ग्रापने १६ ग्राप्रैल सन् १८२६ के खरीते द्वारा उत्तर दिया। इसमें यह कहकर कि संघ ऐसे मामलों पर लागू नहीं होती, महाराजा के दावे को ग्रास्वीकृत कर दिया गया।

१. थामसन-पूर्व उद्भृत, पृ. २७२।

सर थोमास मुनरो का तारीख १२-प-१प१७ का लाई हेस्टिंग्ज को स्मरण पत्र जिसे एडवर्ड थामसन ने 'दी मेकिंग ऑफ दी इंडियन प्रिसेजं' में पृ. २७३ पर उद्धृत फिया है।

२. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ११६।

फलस्तर को इलाका पहले ही खान ने ग्राधिकार में ले लिया था, सिंधः में ही रहा । महाराजा से यह भी कहा गया कि यह सिंध के इलाके में इस्तकेप न करें।

श्रमें ने लूटमार करने वाले डाकुश्रों का दमन करने के लिये महाराजा रत्नसिंह से सहयोग माँगा। इन डाकुश्रों ने बीकानेर जोघपुर श्रीर जयपुर के कुछ श्रमन्तुष्ट सरदारों की सहायता से तीनों राज्यों की मिलने वाली सीमा के पास शेखावटी के निकट ही एक गैरकान्नी सरकार भी त्यापित कर ली थी। मि॰ जार्ज क्लार्क को सन् १८२६ में भेजा गया ताकि वह जयपुर जोघपुर श्रीर बीकानेर के राजाश्रों से सलाह करे, उस लेश में व्यवत्था पुनः त्थापित करने के तरीके श्रीर उपाय मालूम करे। इस श्रवसर पर महाराजा रत्नसिंह ने मेहता हिन्दूमल तथा शाह हुक्मचन्द को डाकुश्रों को दवाने में सहयोग देने हेत मि॰ क्लार्क की सेवा में भेजा। इन पारत्परिक विचार-विमर्श के फलस्वरूप यह निर्णय किया गयों कि तीनों राजा श्रपने श्रपने इलाके में इन डाकुश्रों के छिपने श्रीर रत्ना के लिये शरण लेने के स्थान नण्ट करदें श्रीर वहाँ पुलिस थाने स्थापित कर दें।

इस समय श्रासपास लूटमार मची हुई यी। इनमें से कुछ लुटेरे इतने शिक्तशाली हो गये थे कि उन्होंने जन जीवन के लिये जतरा उत्पन्न कर दिया या श्रीर श्रं शे जो के विरुद्ध जम कर लड़ाइयाँ की थीं। उन्होंने श्रंशेजी इलाके को लूटा, नसीराबाद के खजाँची को श्राश्चर्यचिकत कर दिया, पहरेदारों को मार डाला श्रीर सरकारी धन उठाकर ले गये। कजाकों के एक दल के नेता हरिसिंह ने बुड़सवार सेना को हराया श्रीर गुड़ा के डाक्ट्र सरदारों ने तो ३००० लोगों की सेना भी एकत्रित कर ली थी। त्रिटिश श्रिधकारी एन्डरसन श्रीर फोरस्टर जैसलमेर श्रीर बीकानेर की सेनाश्रों की सहायता से वड़ी मुश्किल से पुनः शान्ति स्थापित कर सके। इंडाकुश्रों का दमन करने

दयालंदास-पूर्व उद्धृत, पृ. ११६ ।
 ता. १६-४-१५२६ का सर पडवर्ड कोलब्रुक का खरीता (लेखक के पास) ।

२. दयोलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ११६।

वही ।
 पाटलेट-पूर्व द्रद्भुत, पृ. ५० ।

४. प्रो॰ एन॰ श्रार॰ खड़गावत, राजस्थान्स रोल इन दी स्ट्रगल श्रॉफ १८५७, पृ. ६-७।

के लिये बीकानेर सरकार की श्रोर से सुराणा हुक्मचन्द को रखा गया। उसने बड़े श्रम से काम किया। उसने लोहसर गांव के बीदावत सरदार को बन्दी बना लिया, उसकी गढ़ी गिरा दी श्रीर वहाँ पुलिस थाना कायम कर दिया। उसने मीगणा, बाँमणी, देवणी, चारी, सेला श्रादि डाकुश्रों के छिपने के स्थान भी गिरा दिये श्रीर वहाँ पुलिस थाने स्थापित कर दिये।

उस समय महाजन का ठाकुर वैरिशाल काफी डाकुत्रों को शरण दे रहा था ग्रौर उनकी सहायता से वीकानेर के इलाके में डाके डलवाया करता था। महाराजा रत्नसिंह ने उसको चेतावनी दी पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस पर महाराजा ने ऋपने दीवान सुराएा हुक्मचन्द को सेना देकर उसे दवाने भेजा। ठाकुर टीवी भाग गया। केवल तीन दिन के घेरे के बाद महाजन का किला सौंप दिया गया। पर अन्त में वैरिशाल ने विना शर्त त्रात्म समर्पण कर दिया । उससे ६०,०००) रू० पेशकसी के लेकर उसकी जागीर पुनः उसे सौंप दी गई। उसने यह वचन भी दिया कि वह अपना किला समर्पण करने वाले लोगों में से किसी को नुकसान नहीं पहुँचायेगा । पर वैरिशाल ने अपने वचन का पालन नहीं किया। महाजन लौट कर उसने अमरावतों और दूसरे लोगों को मरवा डाला श्रीर तव वह फूलड़ा भाग गया। श्रुतः महाजन के पुनः घेरने की योजना बनानी पड़ी। महाजन सीधे महाराजा के नियन्त्रण में रखा गया। लेकिन महाजन का ठाकुर वचकर भावलपुर चला गया। महाराजा ने दिल्ली स्थित रेजिडेन्ट को इस सम्बन्ध में सूचना भेजी। रेजिडेन्ट ने भावलपुर के खान को लिखा कि वह ठाकुर को ग्रपने इलाके से निकाल दे। पर इसी बीच वैरिशाल जैसलमेर चला गया। वहाँ उसने पूगल के राव रामसिंह ग्रौर जैसलमेर के रावल गजसिंह का समर्थन प्राप्त कर सेना एकत्रित करनी ग्रारम्भ कर दी। दीवान लच्मीचन्द्र सुराणा ग्रीर मेहता मोहनलाल को बीकानेर की सेना के साथ उन्हें दवाने भेजा गया । पर बीकानेरी सेना को सफलता नहीं मिलो और पूगल की सेना ने गहरी

१. दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ. ११६।

दयालदास—पूर्व उद्भृत, माग २, पृ. ११६-१७ ।
 श्यामलदास—पूर्व उद्भृत, माग २, पृ. ५१० ।
 पाउलेट—पूर्व उद्भृत, पृ. =०-=१ ।

उत्पन्न की। इसी समय कुछ अन्य जागीरदारों जैसे वणीरोत जोरावरिसह, लाडखानी श्रीर चाँदावत ग्रादि ने भी विद्रोह कर दिया तथा जयपुर श्रीर जोधपुर के राजपूतों की सहायता से लूटमार करने लगे। इस पर महाराजा ने पुनः रेजिडेन्ट को लिखा। रेजिडेन्ट ने महाराजा को स्चना भेजी कि अजमेर, जयपुर, जोधपुर श्रीर जैसलमेर के पोलिटिकल एजेन्टों को स्थिति से अवगत करवा दिया है श्रीर आवश्यक प्रवन्ध किये जा रहे हैं। यदि वे प्रवन्ध सफल न हुए तो इन लुटेरों की कारवाइयों को मिटाने के लिये नसीराबाद से सेना भेजी जायेगी।

इस विगड़ी हुई स्थित का फायदा उठा कर बाबरी भी पेमा श्रीर जोरा के नेतृत्व में लूटमार करने लगे श्रीर गाँवों को लूटा। उन्हें दवाने के लिये हरनाथित श्रीर सुराणा लालचन्द के साथ बीकानेर की सेना भेजी गई। लूटमार की इन कारवाइयों को पूर्णतः दवाने में श्रासफल होने पर स्वयं महाराजा रत्नसिंह श्रपनी सेना के साथ इन जागीरदारों को श्रीर श्रासन्तुष्ट लोगों को दवाने खाना हुआ। जब यह केला में था तो उसे रेजिडेन्ट का एक खरीता मिला। इसमें सूचित किया गया था कि श्रंभेजी फीज नसीराबाद से खाना हो रही है। महाराजा ने तुरन्त उसके लिये प्रबन्ध किया श्रीर उसने स्वयं वैरिशाल के विरुद्ध प्रस्थान किया। विद्रोही हटा दिये गये श्रीर जब उन्होंने किले में शरण ली तो महाराजा ने उसे घर लिया श्रीर उन्हें श्रास्म-समर्पण के लिये विवश किया। सन् १८३० में बीकानेर लौट कर महाराजा ने दिल्ली के रेजिडेन्ट को लिखा कि श्रव नसीराबाद से सेना भेजने की श्रावश्यकता नहीं है। वे

उस समय बीकानेर राज्य में जो ऋशान्ति फैली हुई थी उससे स्पष्ट पता चलता है कि महाराजा रत्नसिंह पूर्णतः ऋसहाय था ऋौर ऋंग्रेजों को उसकी सहायता करनी थी। लेकिन नसीरावाद से सेना भेजने की रेजिडेन्ट

दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पत्र ११७।
 स्यामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पृ. ५१०।
 पाठलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५१।
 ता. ३०-६-१५३० का मि. हॉकिन (गर्वनर जनरल का एजेंट) का स्रीता (लेखक के पास)।

दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पत्र ११७-११८ ।
 स्यामलदास-पूर्व उद्भृत, भाग २ पृ. ४१० ।
 पाठलेट-पूर्व उद्भृत, पृ. ५१ ।

की कारवाई को सरकारी उच्चाधिकारियों ने पसन्द नहीं किया। रेजिडेन्ट-पर यह त्र्यारोप लगाया गया कि उसने सन् १८१८ की सन्धि की धारा ६ त्रीर ७ जिनके अनुसार महाराजा अंग्रेजी सरकार से सहायता की मांग कर सकता है, गलत ग्रर्थ लगा कर काम किया है। इन धारात्रों का सम्बन्ध संधि पर हस्ताच्चर किये जाने के समय जो ऋस्थिर परिस्थितियाँ प्रचलित थीं उन्हीं से या ग्रीर उनके ग्राधार पर भविष्य में वीकानेर के शासक को ग्रापनी श्रसन्तुष्ट जनता के विरुद्ध अंग्रेजी सरकार से सहायता माँगने का कोई श्रिधिकार नहीं। या प्रेजी सरकार का मत या कि यह मामला ऐसा नहीं था जिसमें उन्हें हस्तचेप करने को कहा जाता। ऋग्रेज सरकार ने रेजिडेन्ट को सावधान किया कि सरकार के स्पष्ट आदेश के बिना किसी भी राजा को आन्तरिक गढ़कड़ी का दमन करने के लिये सैनिक सहायता न दी जाय। श्रेश जो की इस नीति से बीकानेर दरबार के प्रति उनके दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का पता चलता है। महाराजा स्रतिसंह ने श्रंश्रेजों से केवल इसीलिये पारस्परिक मेल की संधि की थी ताकि ऋपने विद्रोही ठाकुरों की लूटमार की कारवाइयों के विरुद्ध उनसे सहायता ले सके। मुख्यतः इसी लाभ की भावना ने उसे ऋ ग्रेजों के साथ मेल करने के लिये प्रेरित किया। ऋ ग्रेजों ने बीकानेर को दूसरों से श्रलग श्रीर श्रपने श्रधीन करके बीकानेर दरबार के साथ विश्वासघात किया ख्रौर ख्रापत्ति में ऐसे समय छोड़ा जबकि उसको उनकी सहायता की सर्वाधिक आवश्यकता थी । भादरा का ठाकुर प्रतापसिंह अं में जी इलाके से पूगल आया। उसने किले की दीवारों पर से चढ़ने की कोशिश की। संघर्ष में उसके पाँच आदमी मारे गये और वह भाग गया। जब महाराजा रत्नसिंह ने इस बात की शिकायत ऋ ग्रेजों से की तो उन्होंने इस मामले को बहुत सामान्य रूप में ग्रह्ण किया। रेजिडेन्ट ने केवल यह श्राश्वासन दिया कि उचित प्रवन्ध किया जा रहा है। श्रं में जो की इस उपेचा का ही परिणाम था कि इस घटना के दो महीनों के भीतर ही इन विद्रोहियों की कारवाइयां वढ़ गईं स्त्रीर सुरागा लच्मीचन्द तथा खवास गुलावसिंह को उनके विरुद्ध भेजा गया। इसी समय विद्रोही सरदारों दिल्ली से कर्नल लाकेट को भेजा गया । महाराजा ने अपने दोनों अफसरों को कर्नल लाकेट की सेवा में मेजा और उसे पूर्ण सहायता देने को

१. पचिसन-पूर्व उद्भृत, माग ३, पृ. २७८।

कहा।

सन् १८३१ में महाराजा रत्नसिंह को ग्रानेक खरीते मिले। इनमें कहा गया या कि वह विद्रोहियों को दंड दे श्रीर इलाके में पुनः शान्ति स्थापित करदे। दिल्ली स्थित रेजिडेंट सर एडवर्ड कोलव क ने वरसलपुर के जागीरदारों के विरुद्ध शिकायत की जिन्होंने जोधपुरी इलाके पर हमला किया था और जो पशु और सम्पति उठा ले गये ये। ता. २४ मार्च १८३१ को मि. डब्लू बी. मार्टिन ने महाराजा को स्चित किया कि वैलों सहित गुड़ से भरी १० गाड़ियाँ, जिनका मूल्य १४२५) रू० था लूट ली गई थीं। श्रीर बीकानेर के इलाके में कुछ लोग मार डाले गये थे। असहाराजा से कहा गया कि या तो वह सामान दिलावे या उसकी कीमत चुकाये। साथ ही वह ध्यान रखे कि भविष्य में ऐसी घटनायें न हों। २८ मार्च सन् १८३१ को मि. मार्टिन ने पुनः महाराजा को लिखा कि वह विद्रोहियों (प्रतापसिंह ऋौर लच्चमणसिंह) को सजा दे। हैं एक ऋपैल सन् १८३१ को मार्टिन ने पुनः बीकानेर जयपुर सीमा पर बड़े पैमाने पर होने वाली लूट मार का उल्लेख किया ग्रौर महाराजा को स्चित किया कि जयपुर के महा-राजा से भी अनुरोध किया गया है कि अपने इलाके में वह इन कारवाइयों को रोके। र ता. ७ अप्रैल १८३१ के मार्टिन के खरीते से पता चलता है कि बीकानेर श्लाके के कुछ लोगों ने शेखावाटी में लूटमार श्रीर हत्याएँ कीं। श्रपराधियों को दराड देने श्रीर लूटी हुई सम्पति श्रथवा पीड़ित व्यक्तियों को इसका मृल्य चुकाने की बात भी खरीते में लिखी थी। ता १८ अप्रैल १८३१ के मार्टिन के खरीते में बीकानेर के इलाके में अनाज और धी

दयालदास-पूर्व ठढूत, भाग २, पत्र ११८ ।
 पाठलेट-पूर्व ठढूत, पृ. ५१ ।
 ता. १७-१२-१५३० का मि० डब्लू. वी. मार्टिन का सरीता (लेसक के पास)।

२. सर एडवर्ड कोलतुक (रैजिडेन्ट दिल्ली) का त्रिमा तारीख का खरीता (लेखक के पास)।

ता. २४-३-१५३१ का मि. डब्लू. वी. मार्टिन का खरीता (लेखक के पास) ।

४. वहीं, ता. २६-३-१६३१।

ता. १-४-१-६२ का मि० ढच्तू० बी० मार्टिन का खरीता।

६. वही, ता. ७-४-१, नद्श का।

लूटे जाने का उल्लेख है। मार्टिन ने १८ अप्रैल १८३१ को महाराजा को स्चित किया कि गवर्नर जनरल ने लूट के हमलों के बारे में जाँच करने के लिये कर्नल अंब्राहम लाकेट को भेजा है। ता. २७ अप्रैल १८३१ के मार्टिन के खरीते में लौटसर में लूटी हुई सम्पित सहित १८ डाकुओं की गिरफ्तारी का उल्लेख है। इसी प्रकार २१ मार्च सन् १८३१ को महाराजा को कहा गया कि वह बीकानेर के इलाके में उसके द्वारा चन्दी बनाये गये अपराधियों को सौंपदे। २५ मई सन् १८३१ के मार्टिन के खरीते में महाराजा को एक विशेष निर्देश दिया गया। उसे कहा गया कि वह अनुभवी आदमी भेजे क्योंकि विसाक और सीकर के शेखावत चीकानेर के इलाके में लूटमार के लिये हमले कर रहे थे। इन हमलों के कारण कुछ गांव खाली हो गये थे और कुछ स्त्री पुरुषों को पकड़ कर ले जाया गया। था। विद्रोही सरदारों की लूटमार की कारवाइयों से सग्वन्धित मिस्टर मार्टिन के खरीतों की कोई कमी नहीं।

सन् १८३१ में महाराजा द्वारा प्राप्त इन खरीतों का विवेचनात्मक विश्लेषण करने से प्रमाणित होता है कि उपद्रवी सरदार स्थापित
सत्ता के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। तब अल्पाधिक समस्त होत्र मय की दशा
में था। इन अविनीत सरदारों और डाकुआं का दमन राजपूताना के
राजाओं और अंग्रेज सरकार दोनों के लिये एक गम्मीर समस्या वन गया
था। इन सब अविनीत सरदारों ने उस सामान्य असुरत्ता की स्थिति का
लाभ उठाया जो आमतौर पर संक्रान्तिकाल में हुआ करती है। स्थिति
इतनी गम्भीर हो गई थी कि शेखावाटी ब्रिगेड (सेना) को कई बार इन डाक्
सरदारों के किले को घरना पड़ा और बहुत अधिक कठिनाई से पुनः शान्ति
स्थापित की जासकी। विद्रोही अत्यधिक शिक्षशाली हो गये थे और ऐसा
लगता है कि आम जनता भी भय के कारण अथवा सहानुभृति के

१. ता. १८-४-१८३१ का मि. डवलू. वी. मार्टिन का खरीता।

२. वही, ता. १.न-४-३१, २७-४-३१ और २न-४-१न३१ के।

३. वही, ता. २१-५-१-३१ का।

४. वही, ता. २४-४-१ न ३१ का ।

५. खड़गावत-पूर्व टढ़ृत, पृ. ७-८।

६. वही, पृ. ६ ।

कारण उन्हें सहयोग देंती यो । इन डाकु ग्रों में से कुछ लगभग निजन्धरी (कहावती) व्यक्ति वन गये थे । वे लोगों का ध्यान ग्राकिंपत कर इतने लोकप्रिय हो गये कि वे ग्राजेय माने जाने लगे । इँगजो ग्रीर जवारजी जैसे लोकप्रिय डाकृ, जो ग्रंगेजों द्वारा डाकृ घोषित किये जा चुके थे, प्रतििग्टत नागरिकों द्वारा भी संरत्त्रण प्राप्त कर सकते थे । जब इँगजी पकड़े गये तो बहुत से रोखावत उन्हें जेल से छुड़ाने के लिये ग्रागरा गये । डाकृ इँगजी जेल से भाग निकले ग्रीर पुनः लूटमार का कार्य करने लगे । यदि इन विद्रोही तत्वों को ग्रागरा यात्रा को रोका जाता तो ऐसी घटनायें घटित न होतीं। पर उस समय भी बहुत से सरदारों ने, कुछ ने भय से ग्रीर कुछ ने सहानुभूति से, इन डाकु ग्रों को कभी नहीं रोका ।

सन् १८३४ में गवर्नर जनरल के एजेंट कर्नल एिन्यस ने महा-राज्ञ से मिलने का अनुरोध किया। यह मेंट रतनगढ़ में हुई। वहां सीमानत इलाकों में शान्ति स्थापित करने के तरीकों और उपायों का निश्चय किया गया। यह निर्णय किया गया कि वारोटियों (डाकुआ़ों) को ज्ञमा कर दिया जाय, रोखावाटी ब्रिगेड (सेना) बनाकर भूं भन् में रखी जाय और उसके खर्चे के लिये महाराजा प्रतिवर्ष २२,०००) रु० प्रदान करे। इस सेना में १०० बीदावतों की पलटन सम्मिलित की जानी थी। चिड़ावा के संग्रामिसिंह को इस सेना का रिसालदार और भोजोलाई के आवाजी को जमादार नियुक्त किया गया।

इस मुलाकात के समय महाराजा ने कर्नल एिल्यिस का ध्यान श्रा ग्रेज सरकार की इस अन्यायपूर्ण कारवाई की ओर भी आकर्षित किया जिसमें बीकानेर के ४० गांव अग्रेजों ने ले लिये थे। कर्नल ने वचन दिया कि वह अन्याय को दूर करने के लिये सरकार से लिखा-पढ़ी करेगा। तव महाराजा बीकानेर के लिये रवाना हो गया। मार्ग में उसने विद्रोही जागीरदारों से जुर्माना वस्त किया। इस इलाके में अव्यवस्था फैली हुई थो और इन असन्तुष्ट सरदारों और डाकुओं की कारवाइयां इतनी अधिक

१. सङ्गावत—पूर्व ठद्धृत, पृ. ५।

२. वही, पृ. म।

३. वही, पृ. १०।

४. पाउतेट-पूर्व उद्भृत, पृ. ५२।

पाठलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५२ ।
 दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पत्र १२३-१२४ ।

चढ़ गई थीं कि वे मेहसर, घड़सीसर ग्रीर लूग्करणसर तक म्राते थे। शिखा-वत हूँ गरसिंह ने ग्रपनी कारवाइयां सीकर के इलाके तक बढ़ा दीं ग्रीर ग्रंगे जी सेना के बहुत से ऊँट ग्रीर घोड़े पकड़ लिये। श्रंगे जों द्वारा लिखे जाने पर महाराजा ने लोढ़सर के ठाकुर को ग्रंगे जों की सेवा में भेजा। उसने हूँ गरसिंह के छिपने के स्थानों को बता दिया। ग्रंगे जों ने महाराजा को तारीख २७ मार्च सन् १८३५ को एक खरीता मेजकर उसके सहयोग के लिये बहुत घन्यवाद दिया।

सैनिक सहायता के लिये महाराजा रत्नसिंह ग्रांग्रेजों से खरीते प्राप्त करता रहा। २५ सितम्बर सन् १८३७ को मेजर फोरस्टर ने महाराजा से शाह हुकमचन्द को शीघातिशीघ भेजने का ग्रानुरोध किया ताकि निजी बातचीत के बाद प्रबन्ध किया जा सके। रे २६ जनवरी सन् १८३८ को उसने पुनः महाराजा से प्रार्थना की कि रिसालदार शेख रहीमुल्ला को सेना के साथ भेज दिया जाय। रे ताः १३ फरवरी १८३८ के फोरस्टर के खरीते में कुछ डाक्, ग्रांग्रेजों को सौपने की माँग की गई थी। मई में उसने महाराजा को स्वित किया कि ग्रांग्रेजी सेना कारवाई करने के लिये पूर्णतः तैयार है। कार्त्तिक बदी दशमी को फोरस्टर ने पुनः मारवाइ में डाकुग्रों को दबाने के लिये सेना भेजने पर कृतज्ञता प्रकट की। जनवरी सन् १८३६ में उसने मारवाइ के डाकुग्रों को दबाने के लिये सुजानगढ़ से सेना भेजने की महाराजा से पुनः प्रार्थना की। १० मार्च सन् १८३६ में उसने मारवाइ के डाकुग्रों को दबाने के लिये सुजानगढ़ से सेना भेजने की महाराजा से पुनः प्रार्थना की।

१. दयालंदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पत्र १२२ ।

२. वही, पत्र १२६।

इंगरसिंह सीकर के राव किशनसिंह के पुत्रों में से एक कीरतिसिंह के पुत्र पद्मसिंह का वंशज था। पद्मसिंह के वंशज वाठोट के जागीरदार थे।

४. मेजर फोरस्टर (शेखावाटी विग्रेड का सैनिक इ.फसर) का ता. २४-६-१-३७ का खरीता।

५. वही, ता. २६-१-१ न३ न का।

६. बही, ता. १३-२-१८३८ का।

७. वही, ता. २ - ५ - १ - ३ - का ।

वही, ता. कार्तिक बदी ९० सम्बत् १८६५ (सन् १८३८)।

ह. ता. ७-१-१-३६ का मेजर फोरस्टर का खरीता ।

के उसके खरीते में हरिसिंह ग्रीर जोधसिंह की गिरफ्तारी का उल्लेख हैं। हैं ग्रगस्त सन् १८३६ में हम पुनः फोरस्टर को महाराजा से सहायता मांगते हुए देखते हैं। इस प्रकार उस चेत्र में शान्ति ग्रीर व्यवस्था पुनः स्थापित करने के ग्रंग्रेजों के प्रयत्नों में महाराजा ने उनकी पूर्ण सहायता की।

सन् १८३६ में महाराजा ने देवीकुण्ड पर अपने पिता की छत्री की "प्रतिष्ठा" की। इसके बाद वह गया की तीर्ष यात्रा पर गया। उसके साथ एक अंग्रेज अफसर भी था जो सेवा में रहा। गया में महाराजा ने अपने सरदारों से प्रतिज्ञा करवाली कि वे अपनी कन्याओं का वध नहीं करेंगे। जो सरदार कन्यावध के दोपी पाये जायेंगे उनकी भूमि और जागीर जब्त करके उन्हें सजा दो जायेगी।

सन् १८३० से १८४७ तक बीकानेर का समस्त चेत्र ग्रल्याधिक ग्रव्यवस्था की स्थिति में रहा । बीकानेर की सेना ने ग्रंग्रेजों को हार्दिक सहयोग दिया ग्रीर उसी की सहायता से प्रसिद्ध डाकू जवाहरसिंह पकड़ा जा सका ।³ यद्यपि डाकुन्रों ने महाराजा रत्नसिंह के शासन को काफी सीमा तक ग्रशान्तं बना दिया था पर महाराजा ने ग्रपना परम्परागतं गौरव नहीं छोड़ा । समस्त राजस्थान में शर्गागत की चाहे वह उसका संबसे बुरा शत्रु भी क्यों न हो, रचा करना प्रत्येक राजपूत का धर्म माना जाता है। जवाहरसिंह ने महाराजा को त्रात्म-समर्पण करके उसके चरणों में शरण मांगी तो महाराजा रत्नसिंह ने उसे ऋंग्रेजों को देने से इनकार कर दिया। के केन्द्रीय सत्तात्रों से बीकानेर के सम्बन्ध के इतिहास में यह उदारता प्रदर्शन हमेशा एक उज्ज्वल नक्तत्र की भांति त्रालोकित रहेगा । यह घटना त्राने वाली पीढ़ियों को याद दिलायेगी कि उस पतन और विनाश के युग में भी वीकानेर के राजधराने ने, युवराज के जीवन के मूल्य पर भी, राजपूती शौर्य के गुणों की मशाल को जलाये रखा । जब अंग्रेजों ने जवाहरसिंह को सौंपने के लिये वहुत दवाव डाला तो महाराजा रत्नसिंह ने ऐसा करने से इनकार कर दिया ग्रीर ग्रंग्रेजों से कहा कि बन्धक के रूप में वह ग्रपने पुत्र सरदारसिंह

१. ता. १०-३-१५३६ का मेजर फोरेस्टर का खरीता ।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पत्र १२६-२६। पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५२।

दयालदास-पूर्व ठढूत, माग २, पत्र १५७५६ ।
 पाठलेट-पूर्व उढूत, पृ. न५ ।

४. सङ्गावत-पूर्व उद्भृत, पृ. १० ।

को सौंपने को तैयार है । श्रन्धकार युग में यह वीरता श्रौर साहस का उदाहरण त्रीकानेर के इतिहास में स्वर्णाचरों में श्रंकित है ।

उपद्रवी तत्वों के विरुद्ध सम्मिलित रूप से जो कारवाई की गई र स सबका विवेचनात्मक विश्लेषण करने से पता चलता है कि इस इलाके में अ ग्रेजों के प्रवेश करने से अराजकता और कुशासन का युग आ गया। यह संक्रान्ति युग था। प्राचीन शासन डुकड़े २ होकर बिखर रहा था और नया अभी आने वाला था। राजनीति में एक प्रकार की श्रन्थता उत्पन्न हो गई थी। असन्तुष्ट सरदारों ने क्रोधित होकर उपद्रवी तत्वों की सहायता से इतनी अधिक उलक्षनें उत्पन्न कर दी थीं कि पुनः शान्ति और स्थिरता कायम करने के लिये अंग्रेजी सेनाओं को वर्षों तक निरन्तर युद्ध करना पड़ा।

सिरसा की सीमा तक कुछ गांवों के श्रपने दावे को महाराजा ने कायम रखा। इसके निपटारे के लिये बार बार याद दिलाने पर सन् १८३७ में मेजर थार्स्वी को दावे की जाँच के लिये मेजा गया लेकिन थार्स्वी की जाँच से महाराजा को कोई लाभ न हुआ। 1°

सन् १८४४ में अंग्रेनों के कहने पर वीकानेर के शासक ने भावलपुर और सिरसा के मार्ग में बीच बीच में सरामें बनवादीं और कुएँ खुदवा दिये। इससे रास्ता सुधर गया। या प्रेंग्रेजों की सिफारिश से राज्य में से गुजरने पर लगने वाली जकात भी कम कर दी गई। अब लदे हुए ऊँट पर आठ रुपये की बजाय केवल आठ आना चुकाना पहता था। सामान की प्रति वैलगाड़ी पर एक रुपया कर नियत हुआ। भैंसा, बैल, टरटू और लच्चर पर लद कर जाने वाले सामान पर माल की कीमत का २ प्रतिशत कर रखा गया। बिना लदे पशुओं पर कोई कर नहीं रखा गया। जिस तत्परता से बीकानेर के शासक ने अंग्रेज सरकार की बात मानी उससे

दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पत्र १३२-३३ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. =३ ।
 ता. ६-१-९=३७ का सर पिल्वस का खरीता (लेखक के पास) ।

२. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पत्र १४७-४८ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ८४ ।

वह (ग्रांग्रेज) सरकार) वहुत खुश हुई। हिन्दूमल को भी इन सुधारा में भाग लेने का श्रेय मिला।

सन् १८४५ में सुजानगढ़ के पास की सीमा कप्तान जैक्सन ने तें की। वीकानेर के गांव थारड़ा और जीधपुर के गांव कानपुर का विवाद था। कप्तान जैक्सन ने जैस्लमेर और वीकानेर के दावे की भी जाँच की हन जाँचों के लिये मि॰ किन्धम स्रतगढ़ में जैक्सन से आ मिला। उन्होंने अपनी जांच आरम्भ ही की थी कि प्रथम सिक्स युद्ध के छिड़ जाने की सबर पहुँची। जांच रोक दी गई और किन्धम अपने प्रधान कार्यालय लीट गया। अ में जों ने महाराजा बीकानेर को कहा कि वह उनकी सहायता के लिये सेना, तोपें और दूसरी युद्ध सामग्री में जे ने २४ दिसम्बर को कप्तान जैक्सन हनुमानगढ़ (भटनेर) पहुंच गया और बीकानेरी सेना के साथ सक्त की ओर प्रस्थान किया। तब बीकानेर की मेंदल और सवार सेना आसववाला में ठहरी। इस सेना को सतलज पार करने की आवश्यकता नहीं बड़ी क्योंकि तब तक लाहोर के महाराजा (रणजीतसिंह का पुत्र दलीपरिंह) और अंगों के बीच ३० मार्च सन् १८४६ को संधि हो गई। पर

१. वीकानेर के वैद महता जाति के अॉलबाल खीर जैन धर्मावलम्बी हैं। उनका मूल निवास भीनमाल है। जब राव बीका अपने लिये एक नवीन राज्य की स्थापना हेतु जोधपुर से रवाना हुआ तो इनके पूर्वज वैद महता लाला और लाखगसी उसके साथ आये। लाखगसी का एक वंशज अकुरसी महाराजा रायसिंह के शासनकाल में मंत्री था। अकुरसी के एक वंशज मूलचन्द ने महाराजा स्रतिह के समय मूल्यवान सेवायें दी जिसके बदले में उसे नीरंगदेसर गांव जागीर में प्रदान किया गया। हिन्दूमल मूलचन्द का हितीय पुत्र या। मुगल दरवार में राज्य के वकील के रूप में उसकी सेवाओं, से प्रसन्त होकर महाराजा रत्निह ने उसे अपना प्रधानमंत्री बनाया और उसे वंशासुगत सहाराज को सेवाब भी दिया। महाराब हिन्दूमल को मेवाइ दरवार से ताजीम और अंगों से खिलअत भी मिली। महारावों को दरवार में राज्य के प्रधानमंत्री के तुरन्त वाद नजर मेंट करने का उच्च सम्मान प्राप्त था। वैद महता परिवर्श को पैर में सोने का कड़ा पहनने का वंशासुगत उच्च सम्मान और प्रीतिष्ठा प्राप्त थी।

२. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५४।

दयालदास-पूर्व उद्भृत, माग २, पत्र १.४१-५४ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ५४-५४ ।

सतलज़ नदी के पूर्व की ख्रोर जो लड़ाइयाँ हुई उनमें बीकानेरी सेना ने चहुत वहादुरी दिखाई। लड़ाई की समाप्ति पर कप्तान जैक्सन की सिफारिश पर महाराजा ने सेना के मुख्य अफसरों को पुरस्कार दिये। ख्यात में इन टाकुरों की एक लम्बी सूची दी गई है। बीकानेर सरकार की सेवाओं के बदले में अंग्रेज सरकार ने पूर्णतः सज्जित दो तोपें दीं। १२० अगस्त सन् १८४७ को विदेश विभाग के सचिव ने राजपूताना में गवर्नर जनरूल के एजेन्ट को लिखे एक पत्र में महाराजा की सेवाओं की बहुत २ प्रशंसा की।

हूं गरसिंह श्रीर उसके दल के कुछ लोग पहले बन्दी बनाये जाकर श्रंग्रेजों को सौंप दिये गये थे। श्रंग्रेजों ने उन्हें श्रागरा जेल में कैंद कर दिया था। लेकिन सन् १८४७ में हूं गरसिंह के सहायक मानसिंह ने जेल पर हमला किया श्रीर हूं गरसिंह को मुक्त करा लिया। जब महाराजा को यह स्वना मिली तो उसने एक श्रादेश निकाला कि जो कोई इन डाकुश्रों को पकड़ेगा उसे पुरस्कार दिया जायेगा। साथ ही उसने यह भी चेतावनी दी कि जो हूं गरसिंह श्रीर उसके साथियों के साथ सम्पर्क रखेगे था उन्हें श्ररण देंगे उनकी जमीन जब्त कर ली जायगी श्रीर उन्हें श्रन्य कड़ा दण्ड दिया जायगा। यह कदम महाराजा ने इस विषय पर श्रुग्रेज सरकार का एक पत्र श्राने पर उठाया था। श्रवचारों ने इस विषय पर श्रुग्रेज सरकार का एक पत्र श्राने पर उठाया था। श्रवचारों ने इस घटना की खबर बहुत महत्व देकर छीपी। दिल्ली के एक श्रवचार ने राव हिन्दूमल पर सन्देह प्रकट किया कि वह डाकुश्रों से मिला हुश्रा था। इससे राव हिन्दूमल बहुत घवरा गया। वह श्रंग्रेज श्रिधकारियों के समच्च श्रपनी स्थित स्पष्ट करने के लिये शीघ शिमला चला गया।

इसी बीच ट्रंगरसिंह लूटमार करता रहा । उसने ग्रौर जवाहरसिंह ने कुछ ग्रग्रवालों को पकड़कर बन्धक बनाया ग्रौर उनुसे २५०००) हु० वस्त किये। जब वे धन के साथ लौट रहे थे तो बीकानेट की सेना हो,

१. पाउत्तेट-पूर्व उद्भृत, पृ० ५४-४४ । : ं दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पत्र १५१-५४ ।

२. "गवर्नर जनरल को यह जानकर अत्यन्त सन्तोष हुआ है कि बीकानेर के महाराजा— ने अपने राज्य के समस्त साधन आपकी अधीनता में रखकर हार्दिक, सहायता प्रदान की। गवर्नर जनरल समभते हैं कि आप की अधीनता में महाराजा की सेना द्वारा प्रदर्शित वहादुरी और स्वामीमिक्त के कार्य उच्च प्रशंसा के योग्य हैं" — दी हाउस ऑफ वीकानेर, पृ. १७२।

६. दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पत्र १४६-६२ । पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. न४ ।

जो उनका पीछा करने के लिये भेजी गई थी, उन्हें घेर लिया। पर वे लूटी हुई सम्पति छोड़ कर वच निकले। यह रुपया महाराजा की सेना ने ले लिया। इ गरिसह ग्रीर उसके साथियों ने ग्रव ग्रपनी कारवाइयों का विस्तार नसीरावाद की ब्रिटिश छावनी में किया। वहां उन्होंने खजाना लूटा। जवाहरिसह के पीछे कप्तान शॉ को भेजा गया। जवाहरिसह ने बीकानेर में कहीं शरण ले ली थी। महाराजा ने कप्तान शॉ की मदद के लिये हरनाथिसह ग्रीर महता हिरिसह को भेजा। गांव घड़सीसर में जवाहरिसह वेर लिया गया ग्रीर उसे ग्रात्मसमर्पण करना पड़ा। "

सीकर का प्रधान मुकनसिंह बहुधा लूटमार किया करता था। अपनी सफलताओं से उत्साहित होकर उसने अपनी कारवाइयाँ तेज कर दीं। जनता ने इसके विरुद्ध शोर, पुकार मचाई। समाचार पत्रों ने महाराजा और महाराजकुमार पर आरोप लगाया कि वे मुकनसिंह से मिले हुए हैं। अखबारों ने महा—राजा और महाराजकुमार के विरुद्ध जो आरोप लगाये वे उन्हें दूर करने के लिये राव हिन्दूमल ने अंग्रेज अधिकारियों को पत्र लिखे। बाद में सीकर और जोधपुर के लुटेरों को पकड़ने के लिये जब बीकानेर सरकार को गम्भीर और तुरन्त कारवाई करने हेतु ताकीद के पत्र मेजे गये तो बीकानेर के सरदारों ने लूटी हुई सम्पति वापस लेने और उपद्रवियों को पकड़ने में बहुत सहायता की। इन डाकुओं के दमन में हरनाथसिंह नारनोत ने महत्वपूर्ण कार्य किया।

सन् १८४५ में गवर्नर जनरल का एजेंट कर्नल सदरलैंड वीकानेर ग्राया | एलिंकस्टन के बाद किसी उच्च ग्रंग्रेज ग्रिधकारी का बीकानेर ग्राने का यह दूसरा ग्रवसर था | महाराजा ने कर्नल का खूब स्वागत ग्रीर मनोरंजन किया । इस समय राव हिन्दूमल का स्वास्थ्य बहुत खराब था | पर उसने सभी उत्सवों पर उपस्थित रहने ग्रीर दरबार के सारे नियम ग्रीर ग्राचार पालन करने पर जोर दिया | इस प्रकार उसे पेदल

दयालदास-पूर्व उद्घृत, माग २, पत्र १५७-५६ ।
पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५५ ।

२. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० ५५।

एक प्रतियोगिता में माग लेते समय कर्नल सदरलेंड अपने घोड़े से गिर पड़ा पर उसे कोई चोट न आई। इस अवसर पर महाराजा ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के रूप में सी रुपये दान में दिये।

चलना पड़ा ग्रीर सीढियां चढनी पड़ीं। इस श्रम से उसकी दशा श्रीर खराव हो गई ग्रीर उसका देहांत हो गया ।

इस श्रागमन के समय एक बार सिंघ के बारे में चर्ची चर्ला। महाराजा ने सिंघ को श्रंगेजी राज्य में मिलाने को श्रन्याय वताते हुए त्रपनी कड़ी असहमति प्रकट की। ⁹ सन् १८४८ में मुल्तान का सिक्ख गवर्नर दीवान मूलराज विद्रोह करने पर उतार हो गया। ग्रांग्रेज सरकार ने महाराजा बीकानेर को लिखा कि वह मुल्तान मायलपुर सीमा पर थाने स्थापित करदे श्रीर मुल्तान में व्यापारियों के पास मुलराज ने जो सम्पति रखी है, वह जन्त करले। महाराजा ने मुलतान में मूलराज की सम्पति के वारे में मालूम किया । वहां उसकी कोई सम्पति न होने की बात मालूम होने पर महाराजा ने सरकार को इसकी सूचना दे दी। ग्रसन्तुष्ट सिक्ला ने मूलराज को अपना नेता बना लिया और उसके पास एकत्रित हो गये। ग्रतः इस खतरे का सामना करने के लिये ग्रंगेज सरकार को सैनिक तैयारी करनी पड़ी। वीकानेर से सहायता मांगी गई। सेना के लिये रसद दोने के लिये महाराजा से सौ ऊँट मांगे गये। ³ बाद में बावसिंह के साथ ५५ घुड़सवार श्रीर मीर मुरादश्रली के साथ ४० गोलन्दाज श्रीर तोपें श्रिशेजी सेना के साथ काम करने के लिये फिरोजपुर मेजे गये। महाराजा ने सहायता देने में जो तत्परता दिखाई ग्रीर बीकानेर की सेनाके लोगा ने जो अच्छा काम किया उसकी प्रशंसा गवर्नर जरनल ने महाराजा को भेजे गये एक खरीते में की ।

उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर काबुल के साम्राज्य में हमेशा की तरह युद्ध छिड़ गया । सन् १८४१ में जब भारत के नये गवर्नर जनरल लार्ड एलिनवरो ने काबुल सेना भेजी तो महाराजा बीकानेर को २०० ऊँट भेजने के लिये कहा गया । सन् १८४२ में जब महाराजा गवर्नर-जनरल से मिलने दिल्लो गया तो इस सहायता के लिये उसे धन्यवाद दिया

दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पत्र १६२ और ६४ । पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पृ० घह ।

दयालदास-पूर्व उद्धृत, मार्ग २, पत्र १६५-६६ ।
 पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ० न्द्र ।

३. वही।

४. वही ।

गया।

भारत में मुगल वादशाहत अब केवल प्रतीक मात्र रह गई थी।
तो भी राजपून राजा महान अकदर के वंशजों के प्रति, चाहे वे छिन्न
भिन्न सिंहासन पर बैठते हों अपना परम्परागत सद्भाव वनाये हुए थे।
सन् १८३१ में मुगल वादशाह अकवर द्वितीय ने राजा ज्वालाप्रसाद को
अपना प्रतिनिधि वनाकर खरीता, खिलअत, माही मरातिव, नगारे, हाथी,
घोड़े आदि देकर महाराजा रत्नसिंह के पास मेजा। साथ ही महाराजा को
नरेन्द्र शिरोमणि का खिताव भी दिया। महाराजा ने किले के बाहर
शामियाना खड़ा करवा कर दरवार किया और उसमें मुगल वादशाह के प्रतिनिधि
से मेंट की। दिल्ली के वादशाह की तस्वीर एक मसनद पर रखी गई और
महाराजा ने जब खिलअत अहण की तो उस तस्वीर को सलाम किया।

ग्रंग्रेज सरकार का ध्यान राजपूतों में बढ़ते हुए कन्यावध की ग्रार ग्राकपित किया गया। राजपूत सरदार ग्रपनी पुत्रियों के विवाह पर होने वाले ग्रत्यधिक खर्च को उठाने में ग्रसमर्थ होने के कारण ग्रपनी लड़िक्यों को पैदा होते ही मार डालते थे। महाराजा इस ग्रमानवीय प्रथा से पहले से ही घृणा करता था। ग्रतः इस ग्रवसर पर गवर्नर जनरल ने इसे खरीता मेजा तो महाराजा ने उसका स्वागत किया। उसने तुरन्त कन्यावध के विकद्ध कान्न लागू किया ग्रौर ग्राजा दो कि विवाहों में खर्च हैसियत के ग्रमुसार किया जाय। जिस राजपूत के पास भूमि न हो वह १००) ६० से ग्रिधक खर्च न करे जिसमें से १०) ६० चारणों को त्याग (मेंट) के दिये जायं। सुधार के सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि त्रीकांनर का महाराजा भारत का प्रथम राजा था जिसने ग्रंपेज सरकार के ग्रादेश को सहमित दी ग्रीर इस कुप्रथा को मिटाने के लिये स्वप्रेरित होकर प्रभावशाली कदम

१. दयालदास-पूर्व उद्धृत, माग २, पत्र १४२-४५ । पाठलेट-पूर्व उद्धृत, पूर्व ६३ ।

श्रकवर द्वितीय शाह श्रालम द्वित्तीय का पुत्र था । वह कार्तिक सुदी नवमी सम्वत् १८६३ को दिल्ली के तस्त पर वैठा । श्राधिवन बदी १४ सम्वत् १८६४ को उसकी मृत्यु हो गई। वह नाम मात्र का ही बादशाह था ।

दयालदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पत्र ११६ ।
 प्रयामलदास-पूर्व उद्भृत, भाग २, पृ० ५१०-११ ।
 पाठलेट--पूर्व उद्भृत, पृ. ८१ ।

उठाये ।

७ ग्रास्त सन् १८५१ को महाराजा रत्नसिंह की मृत्यु हो गई।
महाराजा के दो पुत्रों में से ज्येष्ठ महाराजकुमार शेरसिंह की उसके जीवनकाल में निःसन्तान मृत्यु हो गई थी। ग्रातः गद्दी का स्वामी उसका तेतीस
धर्णीय द्वितीय पुत्र सरदारसिंह हुग्रा। १६ ग्रास्त सन् १८५१ को सरदारसिंह
बीकानेर के १६ वें शासक के रूप में सिहासन पर वैठा।

महाराजा रत्नसिंह के शासन के पूर्वोक्त विवरण में हम देखते हैं कि महाराजा में परम्परागत स्वाम-भिक्त की भावना के साथ साथ बदलते हुए समय की माँग श्रीर राजनैतिक स्थिति की धारा को समभाने की चतुराई थी। सुगल बादशाह के प्रति वह स्वामि-भिक्त रहा यद्यपि इससे उसे कोई वास्तविक लाभ न हुन्ना। सुगल साम्राज्य के पतन श्रीर श्रंप्रेजों के उत्थान के वीच के छिन्न-भिन्न के युग में उसने सावधानी से श्रपने श्रापको सत्ता श्रीर लूट मार की लालसा से बचाया। श्रीरंगजेव की मृत्यु के बाद देश में बहुत गड़बड़ी मची पर बीकानेर राज्य न केवल इस गड़बड़ी से घचा ही रहा बिक्त उसका सम्मान राजनैतिक शिखर पर पहुँच गया। इसका श्रेय एक श्रोर महान राव बीका को है जिसने श्रगम्य प्रदेश में श्रपने राज्य की स्थापना की तो दूसरो श्रोर बीकानेर के शासकों की थोग्यता को है जो पड़ोसी राजपूत राजाश्रा की शक्त श्रीर चित्र को जान जाते थे श्रीर हढ़ संयम से श्रपने को गड़बड़ी में पड़ने से श्रलग रखते थे। यद्यपि राजनीतिक त्पान बन्द हो गया था पर राजनैतिक श्रसंतोप का युग तब भी था तथा एक श्रीर गम्मीर विश्कोट होना वाकी था।

महाराजा रत्नसिंह की मृत्यु के समय बीकानेर की स्थित में य्राधिक सुधार नहीं हुया था ख्रतः महाराजा सरदारसिंह का शासन विद्रोहीं थ्रौर उनके दमन की ग्लान कथा की छाया में ख्रारम्म हुया। फलस्वरूप ख्रंत्रेज सरकार का धीरे धीरे प्रभाव बढ़ता गया। भावलपुर, जोधपुर, जयपुर, शेखाव टी ख्रौर मारवाड़ की सीमा समस्यात्रों के कारण सेना पर खर्च बढ़

१. दयालदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, पत्र १५० । पाउलेट--पूर्व उद्धृत, पृ० ५४ ।

श्यामलदास-पूर्व उद्धृत, भाग २, ए० ५१२ ।
 पाउलेट ने गजेटियर त्राफ दी श्रीकानेर स्टेट ए. ८७ पर महाराजा सरदार सिंह का राज्यारोहण सन् १८५२ में होना लिखा है।

गया था। ग्रसन्तुष्ट सरदार शान्ति से नहीं रहते थे ग्रीर जागीरदार ग्रीर टाकुर राज्य के लिये निरन्तर चिन्ता का कारण बने हुए थे। लोगों की ग्रार्थिक दशा तो सामान्यतः ग्रीर भी खराव थी।

श्रपनी जनता की दशा सुधारने की दिशा में पहले कदम के रूप में महाराजा ने कई सुधार किये। उसने "वाछ" नामक एक स्थानीय कर हटा दिया और विवाह एवं मृत्यु के श्रवसरों पर दिये जाने वाले भोज पर प्रति-वन्ध लगा दिया। उसने महाजनों के लिये श्रानिवार्य कर दिया कि श्रपने को दिवालिया घोषित करने से पूर्व वे जांच के लिये श्रपनी बहियां सरकार के समज्ञ प्रस्तुत करें। उसने दिवालियों द्वारा कर्जा पुनः चुकाने के बारे में भी कुछ नियम बनाये।

महाराजा सरदारसिंह ने बीकानेर ऋौर श्रंशेजी इलाके के बीच सीमा विवाद निपटाने के लिये मेहता छोगमल को मि॰ एल्मूर के पास मेजा। यह विवाद सफलता से मिट गया।

जब लार्ड बेंटिक वाइसराय या तो एक कानून लागू किया गया जिसके अनुसार सती प्रथा और समाधि (जीवित साधुआं का गाड़ा जाना) पर प्रतिवन्ध लगा दिया गया। लेकिन ये प्रथायें राजस्थान में चालू रहीं क्योंकि यहां के शासक उन्हें धर्म का अंग मानते थे और उन्हें मिटाने में हिचकिचाते थे। अतः राजपूताना में गवर्नर जनरल के तत्कालीन एजेंट सर हेनरी लारेन्स ने महाराजा को एक खरीता मेजा। इसमें इन प्रथाओं को रोकने का आदेश देने और उनमें सहयोग देने वालों को कड़ा दएड देने की प्रार्थना की गई था। महाराजा ने तुरन्त ही यह अनुरोध मान लिया। सन् १८५४ में उसने आदेश जारो कर सती और समाधि प्रथा पर प्रतिवंध लगा दिया और उन्हें करना अपराध घोषित कर दिया। साथ ही यह भी कहा कि जो इस अपराध में सहयोग देगा अथवा उसे बढ़ावा देगा उसे कैद या जुर्माना अथवा दोनों की सजा दी जायेगी।

सन् १८५७ का विद्रोह जो आरम्भ में एक साधारण स्थानीय मामला लगता था, उसने वहुत वड़ा रूप धारण कर लिया और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लिये दुर्भाग्य स्चक बना। विद्रोहियों ने बीकानेर राज्य की उत्तरी स.मा पर सिरसा, हिसार और हांसी के जिलों पर अधिकार कर लिया था। महाराजा सरदारसिंह ने तुरन्त स्थिति को मांप लिया और अधिकां की सहायता

१. श्रोमा-वीकानेर राज्य का इतिहास, माग २, पृ. ४४३-४४।

के लिये ग्रपनी सेना भेजने का ग्रविलम्ब निर्णय किया ।

व्रिगेडियर जनरल पी. लारेंस ने लेफ्टिनेंट माइल्डमे को बीकानेर की सेना का नेतृत्व करने भेजा था। यह सेना सिरसा ऋौर हाँसी के विद्रोही जिलों में जनरल वानकोर्टलैंड द्वारा की जाने वाली कारवाई में सहायता देने के लिये थी। भहाराजा स्वयं ऋपनी सेना का नेतृत्व कर रहा था। लेफ्टिनेंट माइल्डमे ने उसे बहुत उत्साहित पाया। बीकानेरी सेना के ग्राने के कुछ दिन बाद वानकोर्टलैंड ने उनमें से ५०० सैनिकों को लेफ्टिनेंट पियर्स की ऋघीनता में हिसार पर ऋधिकार करने भेजा। र सैनिकों की संख्या बाद में बढ़ाकर १७०० कर दी गई। उन्होंने हिसार पर श्रिधिकार कर लिया श्रीर ३ सप्ताह तक उसे कब्जे में रखा। इस श्रविध में बीकानेर के सवार निरन्तर सैनिक ड्यूटी पर रहते थे ताकि लूटमार का भय न रहे श्रीर राजस्व वसूल किया जा सके । ता० २१ जुलाई को १००० से अधिक सैनिक और दो तोपें हाँसी की सहायतार्थ भेजी गईं। उन्होंने उसे जीत कर उस पर ३ सप्ताह तक ऋधिकार रखा जब तक कि ⊏ ऋगस्त को जनरल वानकोर्टलैंड वहां पहुँच गया। हरियाना में वीकानेरी सेना का विद्रोहियों से छः वार मुकाबला हुआ और प्रत्येक बार विद्रोही भगा दिये गये | ³ ता॰ १६ त्रागस्तं को बीकानेरी सेना ने हजमपुर के पास ३०००

१. सन् १८५७ के विद्रोह में बीकानेर राज्य द्वारा अ ग्रेज सरकार को दी गई सहायता से सम्बन्धित महाराजा बीकानेर के निजी सचिव के कार्यालय की फायल संख्या ४८, (गवर्नर जनरल के कार्य वाहक एजेंट) व्रिगेडियर जनरल पी लारेन्स द्वारा २७-७-१८५७ को मारत सरकार के विदेश विमाग के सचिव जी. एफ एडमन्सटन को लिखे पत्र के अंश, प्. १७-परिशिष्ट ६ ।

२. सन् १८५७ के विद्रोह में बीकानेर राज्य द्वारा अंग्रेज सरकार को दी गई सहा यता से सम्बन्धित महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फायल संख्या ४८, गवर्नर जनरल के एजेन्ट ब्रिगेडियर जनरल सैन्ट पैट्रिक लारेंस को ता. २४–६–१८५७ को लिखा गया लेफ्टिनेंट ए. जी होम माइल्डमे का पत्र, पृ २०–परिशिष्ट १०।

२. सन् १८५७ के निद्रोह में वीकानेर राज्य द्वारा अंग्रेज सरकार को दी गई सहायता से सम्बन्धित महाराजा वीकानेर के निजी सिचिव के कार्यालय की फायल संख्या ४८, ता० १७-१०-१६१२ को चीफ जनरल स्टाफ शिमला से महाराजा गंगासिंह को भेजा गया तार ।

विद्रोहियों को मार भगाया । बीकानेर का सारा रिसाला २३ अगस्त को हाजमपुर के जलाने में लेफ्टिनेंट माइल्डमे के साथ था। वाठूल के घेरे के समय लेफ्टिनेंट पियर्स के अधीन सेना के एक न्यिक शामपुरा के खेतसिंह राठौड़- ने शत्रश्रों की श्रोर से होने वाली गोलीवारी में श्रपने प्राणों की परवाह न करते हुए शहरपनाह पर चढ़ कर ग्रद्भुत साहस का परिचय दिया । उस समय वहाँ उपस्थित कलेक्टर मि॰ फोर्ड ने उसकी वहादुरी के कार्य पर विशेष ध्यान दिया । मंगली ख्रौर तोशाम पर ख्राक्रमण करने के लिये दो बीकानेरी तोपें भेजी गईं थीं। यद्यपि वाद में वहाँ के मुसलमान निवासियों ने उन्हें घोखे में फंसा लिया श्रीर फाटकों पर विद्रोही सेना उन पर हावी हो गई तो भी वीकानेर की सेना तहसीलदार श्रीर थानेदार को बचाने के लिये तहसील में बहादुरी से लड़ी। इसमें बीकानेर के ३ प्रधान- नीमराणा का मोहकमसिंह, कोजरा (कुंजला) का मिट्ट सिंह ग्रीर थिरकाली (विरकाली) का खुमाण्सिंह मारे गये ! विद्रोहियों के बहुत ग्रिधिक संख्या में होने के कारण हमले में गुमानसिंह जाटू भी मारा गया। विद्रोहियों के एक गढ जमालपुर के हमले में वीकानेर की सारी सेना ने भाग लिया। प्रधानतः इसी के कारण विद्रोहियों की हार हुई। 3

विद्रोह के समय महाराजा सरदारसिंह ने ग्रंग्रेजी सरकार को जो सहायता दी उसका मेरे कार्यालय के रेकार्ड के ग्रनुसार संचिप्त विवरण इस प्रकार हैं लेक्टिनेंट माइल्डमें के ग्राधीन वीकानेरी सेना जिसमें

१. मादवा सुदी ५ सम्वत् १६१४ को हांसी से मेजी गई शाह लच्मीचंद की रिपोर्ट (लेखक के ऋषिकार में)। शाह लच्मीचंद की हांसी में ज्वर से मृत्यु हुई जैसाकि लेपिटनेट माइल्डमें ने ता. २४ सितम्बर १५५७ को मेजे गये ऋपने मुरासिले (पत्र) में लिखा है।

सन् १५५७ के निद्रोह में बीकानेर राज्य द्वारा ऋ ग्रेज सरकार को दी गई सहायता से सम्बन्धित महाराजा बीकानेर के निजी सिचन के कार्यालय की फायल सं. ४५, लेफ्टिनेनेंट ए. जी होम माइल्डमे का ता. २४-६-१५५७ को न्निगेडियर जनरल पी. लारेन्स को पत्र, पृ. २०-२२।

सन् १८५७ के विद्रोह में वीकानेर राज्य द्वारा अंग्रेज सरकार को दी गई सहायता
से सम्विन्यत महाराजा बीकानेर के निजी सिचिव के कार्यालय की
फायल संख्या ४८।

सरदार मन्त्री ग्रीर ग्राधिकारी थे रखी गई थी। वे भादरा से हिसार गये। वहाँ भादवा सुदी छठ विकमी सम्वत् १९१४ को बीकानेरी सेना जनरल चानकोर्टलैंड की सेना से जा मिली। विद्रोहियों ने हिसार पर त्राक्रमरा किया और शहरपनाह के फाटक तोड़ने का प्रयत्न किया। वीकानेरी सेना ने हमलों को विफल कर दिया ग्रौर विद्रोहियों को हरा दिया।^२ इस हमले में लगभग ४०० विद्रोही मारे गये ऋौर कुछ वन्दी बना लिये गये । हमले के समय भादरा का ठाकुर बाघसिंह कांघल, वाय का ठाकुर शिवजीसिंह, साँयतखाँ पठान, साहणी जवानजी (रिसाले के साथ) मेहता शिवजीसिंह, पुरोहित चिमनराम हिसार में थे। भादरा का ठाकुर बाघसिंह बीदावतों की एक टुकड़ी के साथ हिसार की देखभाल के लिये छोड़ दिया गया श्रीर बीकानेर की शेप सेना हाँसी, फतेहावाद तथा तोशाम की स्रोर बढ़ी। तोशाम में प्रधान साँखू ग्रौर नीमा के ठाकुर रहे। हाँसीं से लगभग 🖛 मील दूर जमालपुर श्रौर उमराय के बीच एक स्थान पर बीकानेरी सेना की विद्रोहियों से मुठभेड़ हुई। इसमें विद्रोहीं हार गये। इस लड़ाई में बीकानेर की सेना के भी कुछ लोग मारे गये। लेकिन उनके नाम श्रीर संख्या ज्ञात नहीं हो सकी। पर यह लिखा है कि कक्कू का परमजी बीदावत गोली से मारा गया । इस लड़ाई में, जिसमें बीकानेर राज्य की दो तोपें ५०० सवार ऋौर ११०० पैदल थे, कनवारी के ठाकुर सगतसिंह, सारोठिया के ठाकुर नाहरसिंह, श्यामपुरा के

१. सरदार-भूकरका, सांखू, सीधमुख, जसाणा, वाय, नीमा, राजपुरा, कुं भाणा, दद्रेवा, हरदेसर, विरकाली, अजीतपुरा, मेघाणा, कान्हसर, तेहाणदेसर, कतार, मेनसर, वीदासर, गोपालपुरा, सांडवा, चाहड़वास, हरासर, लोहा, खुड़ी, कणवारी, शोभासर, पिंडहारा, काणुता, सारोठिया, कक्कू, जोगिलया, रावतसर, माणकरासर, जैतपुर, भारिया, सात्यूं, ल्होसणा, कल्लासर, धांधूसर, रायसर, घिंड्याला, खारवारा, जांगल्, हाडलां, जैतसीसर, राणासर तथा नाहरसर। अफसर—महाराव हरिसिंह महता, फौजदार ठाकुर हुकुमिंसह माटो, राव गुमानिसंह वैद, कमांडेंट गुरूसहाय, साह लच्मीचंद सुराणा, साह लालचन्द सुराणा, साह फतेहचन्द सुराणा और पुरोहित चिमनराम।

२. मादवा वदी अमावस सम्वत् १६३३ को हिसार से लिखी व्यास तेजमाल की रिपोर्ट में लिखा है—"गांव सिवानी वंगाली रो हमलो का सवार ३०० पाला ३०० दरवाजे आय भगड़ो कियो। साव दरवाजो खोलण रो हुकम दियो सो असवार सारा कितना साव साथे वारे हुआ और गोपीराम कुमेदान रो सफीलांसू गोलियां चलाई……।"

वणीरोत बींजराज, ल्होसणा के कुशलिंह, कक्कू के बीदावत प्रमिंह और भूकरका, जसाणा तथा राजपुरा के सरदारों ने भी भाग लिया। अंग्रेजी, बींकानेरी और पटियाला की इस सम्मिलित हमलावर सेना की कुल संख्या, जैसा वताया गया है, २००० सवार ३००० पैदल और तोपें थीं। बींकानेर की सेना ने विभिन्न तिथियों पर निम्नलिखित लड़ाइयां लड़ी:—

हिसार	_	भादवा सुदी ६ संवत् १९१४
तोशाम	grame	भादवा सुदी ७ सम्वत् १९१४
मंगली	***	ग्रासोन वदी २ सम्वत् १९१४
जमालपुर	_	ग्रासोज वदी ७ सम्वत् १९१४
हांसी	-	तिथि ज्ञात नहीं
सिरसा	-	33
फतेहाबाद	***	33

जनरल वानकोर्टलैंड के चले जाने के बाद भी वीकानेर के २०० सैनिक लड़ाई में लगे रहे। जमालपुर लेने के समय वीकानेर का सारा रिसाला उपस्थित था जहां उनका एक आदमी घायल हो गया। अपने प्राणों की परवाह न करते हुए महाराजा स्वयं भी कुछ समय के लिये काफी सेना के साथ मोर्चें पर उपस्थित था। इस समय जो घटनायें हुई उनसे उसकी उपस्थित का महत्व अपने आप ज्ञात हो जाता है। महाराजा की उपस्थित से मँगली, श्रीवायस और दूसरे गांवों के उत्तेजित रांघड़ उस समय शान्त रहे। एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना यह हुई कि हांसी में ज्वर से बीकानेर की लगभग सारी सेना सेवा के लिये अयोग्य हो गई थी और बहुत से लोग सर गये थे।

वीकानेरी सेना को जब भी कोई काम करने के लिये कहा गया तो उसने तुरन्त ग्रपनो पूर्ण योग्यता से उसका पालन किया । जनरल वान-कोर्टलैंड को उनके विलम्ब या ग्रानिच्छा की शिकायत करने का कोई ग्रवसर न मिला । महाराजा की सेना द्वारा पदत्त सहायता की महत्ता समक्तकर ग्रां में उसे स्वीकृति ग्रीर धन्यवाद का खरीता भेजा । वीकानेर की शीव सहायता के कारण ही पंजाब में ग्रासन्तोप फैलने से रोका जा सका । ग्रापनी संकट की घड़ी में ग्रांगेजों को बीकानेर राज्य से जो सहायता मिली उसके महत्व को उन्होंने कृतशता से स्वीकार किया। भारत सरकार को लिखे

१. ता. १-१२-१८५७, ७-१-१८५ और १८-७-१८५८ के लार्ड कैनिंग के सरीते।

गये ग्रपने सरकारी पत्र में ब्रिगेडियर जनरल पी लारेन्स ने महाराजा द्वारा की गई सेवाग्रों का उल्लेख इस प्रकार किया है-

'यदि मैंने इस मामले को श्रीमान् लाटं साहवं के सम्मुख रखने में ग्रपने कर्तव्य की सीमा का उल्लंघन किया हो तो सच्चे सहायक के प्रति न्याय बुद्धि एवं मेरा यह विश्वास कि मेरी सरकार बीकानेर के राज्य की श्रमूलय सेवायें खाली नहीं जाने देंगी, मेरे इस श्रनुरोध के कारण समभे जाय। राजपूताना में गवर्नर जनरल के एजेंट ने तारीख़ २१ दिसम्बर १८६० को भारत सरकार के विदेश विभाग के सचिव को लिखा कि विद्रोह के आरम्भ से महाराजा वीकानेर ने आंग्रेज सरकार के प्रति अत्यधिक राजमित स्त्रीर मित्रता का पूर्ण प्रदर्शन किया है स्त्रीर युद्ध में स्त्र में जो को हार्दिक सहयोग दिया है। ये महाराजा ने अनेक यूरोपियनों को शरण देने न्त्रीर बचाने में जो सेवायें दी उनसे भारत सरकार पहले ही पूर्ण परिचित थी। ³ जब पंजाब के सैनिक, जनरल वानकोर्टलैंड की अधीनता में हाँसी श्रीर हिसार में रखे गये तो महाराजा स्वयं श्रपनी सेना का नेतृत्व करते हुए बीकानेर की सीमा तक गया । वह इस बात के लिये तैयार रहा कि जहां भी, जब भी त्रावश्यकता हो वह उनके साथ हो जायं। उसने न केवल अपने वंशजों के समज्ञ बल्कि समस्त राजपूताना प्रान्त के समज्ञ एक बहुत ही उल्लेखनीय उदाहरेण प्रस्तुत किया। उसने ऐसे साहस ख्रीर शक्ति

१. सन् १५५७ के विद्रोह में बीकानेर राज्य द्वारा अंग्रेज सरकार को दी गई सहायता से सम्बन्धित बीकानेर महाराजा के निजी सन्विव के कार्यालय की फायल संख्या ४५, पृ. २५-२६, राजपूताना में गवर्नर जनरल के एजेंट द्वारा भारत सरकार के विदेश विभाग के सन्विव को ता. २१-१२-१५६० को लिखा गया पत्र (पिरिशिष्ट ११)।

२. सन् १८५७ के विद्रोह में बीकानेर राज्य द्वारा आंग्रेंज सरकार को दी गई सहायता से सम्बन्धित वीकानेर महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फायल संख्या ४८ ८. २८-२६, राजपूताना में गवर्नर जनरल के एजेन्ट द्वारा भारत सरकार के विदेश विमाग के सिचव को ता. २१-१२-१८० को लिखा गया पत्र ।

३. वही, पृ. २७ । राजपूताना में गवर्नर जनरत्व के एजेंट जनरत्व जी. सेंट पी. लारेन्स का ता. ६-१-१ न ५ का मुरासिला (पत्र) जिसका हवाला उसने अपने २१ दिसम्बर १ न ६० के पत्र में दिया है ।

का परिचय दिया जो सरलता से हिन्दिगोचर नहीं होती। महाराजा उस सर्वोच्च पुरस्कार के योग्य समभा गया जो श्रंशेज सरकार ने सर्वाधिक प्रशंसनीय राजपूत को देने की स्वीकृति दी थी।

राजस्थान में केवल महाराजा सरदारसिंह ही ऐसा राजा था जिसने विद्रोह के समय व्यक्तिगत रूप में युद्ध में भाग लिया। जब केन्द्रीय सत्ता सबसे विकट स्थिति में थी तो ऐसे समय उसकी सहायता की श्रात्यधिक प्रशंसा की गई । इन्ही कारणों से गवर्नर जनरल के एजेंट ने नयपुर सहित राजपूताना के दूसरे सभी राजायों से वीकानेर महाराजा की स्वामीभिक्त ग्रीर सेवाएँ श्रेष्ठ मानी । इन सेवाग्रों के कारण उसके मता-नुसार बीकानेर महाराजा को उसी श्रेणी में रखा जाय जिसमें रीवां ग्रौर चरखारी के महाराजाग्रों को रखा गया था ग्रौर जिन्हें खिलग्रत ग्रीर दूसरे सम्मानों के साथ जागीर भी पुरस्कार में दी गई थी । श्रतः श्रंप्रेजों ने महाराजा सरदारिंह की सेवाश्रों की प्रशंसा की श्रीर हिसार जिले के ४१ गांव जिनका राजस्व १४२६१ रू. था उसको १ मई सन् १८६२ से दिये गये । विद्रोह के समय की गई प्रशंसनीय सेवास्रों के उप-लद्य में गवर्नर जनरल ने महाराजा को खिलग्रत श्रीर उपहार दिये ।3 सरदारसिंह को गवर्नर जनरल के सहायक एजेंट कप्तान है मिल्टन, ग्राले-क्जेंडर स्किनर श्रीर दूसरों द्वारा भी वधाई के खरीते प्राप्त हुए । प्रमहा-रानी विक्टोरिया द्वारा महाराजा की सहायता की प्रशंसा का संदेश सरचार्ल्स

१. १८५० के विद्रोह में बीकानेर राज्य द्वारा ऋ छेज सरकार को दी गई सहायता से सम्बन्धित बीकानेर महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फायल संख्या ४८, पृ.२७, राजधूताना में गवर्नर जनरल के एजेन्ट जनरल सेंट पी. लारेन्स का ता० ६-१-१८५६ का मुरासिला (पत्र) जिसका हवाला उसने अपने दिनांक २९ दिसम्बर १८६० के पत्र में दिया है।

२. वही।

३. ता. २४-४-१८६० का लार्ड कैनिंग का खरीता (लेखक के पास)।

ता. १९-१२-१८६१ का कप्तान हैमिल्टन का खरीता (लेखक के पास)।
 ता. ५-७-१८६१ का अलेक्जेंडर स्किनर का खरीता (लेखक के पास)।
 ता. १०-५-१८६१ का जनरल लारेन्स का खरीता (लेखक के पास)।

बुड ने ग्रपने १५ दिसम्बर सन् १८५६ के पत्र द्वारा भिजवाया । १

महाराजा को दिये गये ४१ गांवों के लिये वीकानेर राज्य ने काफी समय से ग्रापना दावा कर रखा था। सिक्ख लड़ाई के वाद महाराजा ने हिन्दूमल के मार्फत ग्रापना दावा किया। ४५ गांव का दावा इस ग्राधार पर किया गया था कि वे ३०० वर्षों से ग्राधिक समय तक बीकानेर राज्य के ग्राधीन थे। उनका राजस्व २०,००० ६० था। मारत सरकार ने ४१ गांव जिनका राजस्व १४,२६१) ६० था देकर राज्य की सेवाग्रों को पुरस्कृत किया। वास्तव में १८६२ में इन गांवों का दिया जाना स्पष्टतः उन गांवों को वापस देना था जो जबर्दस्ती ग्रांगेजों द्वारा जब्द कर लिये गथे थे। सन् १८५६ में जब भारत का शासन सूत्र ईस्ट इण्डिया कम्पनी से महारानी विक्टोरिया के हाथों में गया तो महाराजा सरदारसिंह ने बीकानेर राज्य के सिक्कों पर से मुगल बादशाह का नाम हटा कर एक तरफ 'ग्रीरंग ग्रा रायहिन्द व क्वीन विक्टोरिया १८५६" तथा दूसरी ग्रोर ''जर्व श्री बीकानेर १६१६" खुदवाया।

सन् १८६२ में महाराजा को एक सनद प्राप्त हुई जिसमें महाराजा के दत्तक लेने के ग्राधिकार को स्वीकार किया गया था। उस्तर में लिखा था कि जब तक बीकानेर के शासक सरकार के स्वामीमक रहेंगे ग्रीर विभिन्न सन्धियों ग्रीर इकरारनामों की शतों का पालन करेंगे तब तक ग्रीरस पुत्राधिकारी न होने पर महाराजा ग्रीर बीकानेर के भावी शासक हिन्दू पद्धित ग्रीर ग्रुपनी जाति के रीति रिवाज के ग्रनुसार ग्रुपना

१. सन् १८५० के विद्रोह में बीकानेर राज्य द्वारा अंग्रेज सरकार को दी गई सहायता सम्बन्धी महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फायल संख्या ४८, पृ. ५१ । पार्लियामेन्ट्री पेपर्स, १८६०, हाटस आँफ कामन्स पेपर नं० ७७, म्यूटिनी कोरसपोन्डेन्स आदि पृ. १४४ । सर चार्ल्स बुड का पत्र अब भी बीकानेर में राजस्थान सरकार के पुरालेख विभाग में सुरक्ति है। परिशिष्ट १२ ।

२. एचिसन-पूर्व उद्धृत, भाग ३, पृ. २६०-६१।

तारीख १० अगस्त १०५० के जनरल लारेन्स के खरीते में यह स्वीकृति दी गई है (लेखक के पास) ।

४. एचिसन-पूर्वे उद्भृत, भाग ३, पृ. २७८; पृ. ३४-३६ भी देखें।

उत्तराधिकारी गोंद ले सकेंगे तथा उसे अंग्रेज सरकार स्वीकृत और पुष्ट करेगी। यहां यह उल्लेखनीय है कि लार्ड डलहीजी ने राज्यों को औरस पुत्र के अभाव में उत्तराधिकारी गोंद लेने की मनाही कर दी थी। इसे 'हड़पने की नीति' (अवसान सिद्धान्त) कहा जाता है। लेकिन यह प्रतिबन्ध केवल उन्हीं राज्यों पर लागू होते थे जो या तो ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बनाये गये थे या कम्पनी द्वारा जीत कर पुनः दिये गये थे या जो पेशवा के अधीन थे और जब पेशवा को कम्पनी ने हरा दिया तो कम्पनी के अधीन हो गये थे। अतः इस 'हड़पने की नीति' (अवसान सिद्धान्त) का बीकानेर राज्य पर कोई प्रमाव नहीं पड़ा।

उस समय राज्य कोष की खराब हालत होने से महाराजा को धन संग्रह हेतु सभी सम्भव साधन काम में लाने पड़े। राज्य के ग्राधकारियों पर यथासम्भव ग्राधक से ग्राधक धन संग्रह करने हेतु दबाव डाला गया। इसका एक परिणाम यह निकला कि राज्य के ग्राधकारियों ने बहुत ऊँची दर पर कर बस्ल किये। यह कर टीवी के उन ४१ गांवों से भी वस्ल किया गया जो उसी समय राज्य को पुनः दिये गये थे। इन गांवों के निवासियों ने ग्रांगेजों से शिकायत की। हिसार के क्रिमश्नर को जांच के लिये भेजा गया! जांच करने पर शिकायत सत्य निकली। इस पर महाराजा को लिखा गया कि सन् १८५६ के बन्दोबस्त के ग्राधीन इन गांवों के लिये जो दर निश्चित की गई है उसका पालन किया जाय। महाराजा ने न केयल इससे सहमित प्रकट की बल्कि गांव वालों द्वारा पहले उठाई गई तकलीकों की ज्ति-पूर्ति के रूप में बन्दोबस्त की ग्रावधि सात वर्ष ग्रीर बढ़ा दी। वि

१. एचिसन-पूर्व उद्धृत, भाग ३, पृ. ३५-३६।

२. शास्त्री-पूर्व उद्धृत, पृ. २०।

एचिसन—पूर्व ठढुत, भाग ३, पृ. २७५-७६ ।

४. वही, पु. २७५-७६।

प्र. ता. १६-३-१८६ का लार्ड लारेन्स का स्तरीता (लेखक के पास)।
 ता. १६-१९-१८६ का कर्नल कीलिंग (गवर्नर जनरल के पर्जेट) का स्तरीता (लेखक के पास)।

ता. ३-५-१८६६ और १८-६-१८६६ के कप्तान पाउलेट के खरीते (लेखक के पास)।

६. एचिसन-पूर्व टढूत, माग ३, पृ. २७८ ।

सन् १८६८ में बीकानेर के लिये गवर्नर जनरल के एक सहा-यक एजेन्ट की नियुक्ति की गई । उसका प्रधान कार्यालय सुजानगढ़ में रखा गया । उसका मूल उद्देश्य तो जयपुर, जोधपुर, श्रौर वीकानेर तीनां राज्यों की सीमा पर होने वाली डकैतियों को रोकना था पर उसे वीकानेर का राजनैतिक कार्य भी सम्भलाया गया । उक्त पद पर सर्व प्रथम कप्तान पी. डब्लू. पाउलेट को नियुक्त किया गया । बीकानेर के लिये पोलिटिकल एजेन्ट के रूप में कप्तान पाउलेट की नियुक्ति के शीघ बाद महाजन, जसाणा, वाय, सीधमुख, कानसर, बिरकाली, मेघाणा, हरदेशर, कनवारी, साँइसर श्रौर खारबारा के ठाकुरों ने उसे एक अर्जी दी । इसमें महाराजा के विरुद्ध निम्नलिखित श्रारोप लगाये गये थे—

(क) उनके पट्टे के कुछ गांव जब्त कर लिये गये।

(ख) नजराने के रूप में उनसे अनुचित धन वस्त किया गया।

(ग) उन पर भाँति भाँति के कर लगाये गये।

कप्तान पाउलेट तथा तत्कालीन दीवान परिडत मनफूल ने इन त्र्यारोपों की जाँच की त्र्योर यह निर्णय किया कि—

- (क) जो गांव महाराजा के राज्यारोहण के समय नियमानुसार प्रदत किसी जागीर के ऋंग थे ऋौर जो बाद में जब्त कर लिये गये वे गांव वापस लौटा दिये जायेंगे।
- (ख) दश वर्षों के लिये प्रति घोड़े की रेख २००) रु० वार्षिक निश्चित की गई। इसके वाद उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह रकम वदली जा सकेगी। इस रकम में सरदार के उत्तरा-धिकारी वनने पर जो नजराना लिया जाता था उसके अलावा सभी कुछ शामिल था।

इस निर्ण्य को सभी सम्बन्धित ठाकुरों ने मान लिया। केवल महाजन के ठाकुर ने इसे नहीं माना श्रीर सन् १८६६ में बीकानेर छोड़कर चला गया। ४ महाजन का ठाकुर इसलिये श्रसन्तुष्ट था क्योंकि एक तो

१. पाउलेट-पूर्व उद्भृत, पू. नन।

२. वही ।

रिपोर्ट श्रॉन दी पोलिटिकल एडिमिनिस्ट्रेशन श्रॉफ दी राजपूताना स्टेट्स १८००-७१, नम्बर LXXXIV- सुजानगढ़ एजेंसी रिपोर्ट, पृ. २११।

४. रिपोर्ट श्रान दी पोलिटिकल एडिमिनिस्ट्रेशन श्रॉफ दी राजपूताना स्टेट्स, १८७०-७१, नं० LXXXIV-- सुजानगढ़ एजेंसी रिपोर्ट, पृ० २१२ ।

तीन गांव वापस देने का उसका दावा नहीं माना गया और दूसरे कुछ वर्षों की अवधि के लिये मियादी पृट्टा मानने की बात कहने से उसकी स्थिति एक ठेकेदार जैसी वन जाती थी। राज्य का 'एक मुख्य सरदार होने के कारण यह बात उसकी मर्यादा के विरुद्ध थी। लेकिन पोलिटिकल एजेन्ट का मत था कि समभौता न्यायपूर्ण है अतः उसने महाजन के ठाकुर अमरसिंह को कोई रियायत देने के लिये महाराजा को सलाह देने की बात उपयुक्त वहीं समभी। दूसरी और उसने ठाकुर को जोर देकर सलाह दी कि वह इस समभौते को मान ले। पर उसका कोई लाभ न हुआ। '

सन् १८७० की सुजानगढ एजेंसी रिपोर्ट में लिखा है कि इस समय महाजन, चूल ग्रीर भाररा के ठाकुर डाकुग्रों, हत्यारों ग्रीर दूसरे ग्रपर्राधयों को शरण दे रहे थे । संरक्षण के दरले ये लोग इन ठाकुरों को काफी धन देते थे। ये लुटेरे ग्रीर ग्रपराधी लोग ग्रपनी कारवाइयों से उस इलाके में ग्रातंक फैलाये हुए थे। वे बहुत उद्गुड हो गये थे ग्रीर दिन में बाजारों को लूटने से भी नहीं हिचकते थे । ठाकुरों की ये कारवाइयाँ महाराजा के लिये निरन्तर धमें संकट का कारण बनी हुई थीं। महाराजा ग्रसहाय था क्योंकि ये ठाकुर उसकी सत्ता की उपेद्धा करते थे। महाराजा के विरुद्ध ग्रपनी तथाकथित शिकायतों को दूर करवाने के लिये जब ये टाकुर कप्तान पाउलेट से मिले तो उसने यह बात उनके समन्च बिल्कुल स्पष्ट कर दी कि ग्रंग्रेज सरकार उनकी कारवाइयों को सहन नहीं करेगी ग्रीर उन्हें ग्रपने ग्राश्रयस्थल तोड़ने पहेंगे। यह सन्तोष की बात थी कि उसकी सलाह पर ध्यान दिया गया, ग्राश्रय स्थल तोड़ दिये गये ग्रीर भविष्य में सद्व्यवहार के लिये लिखित गारन्टी दी गई।

महाराजा रत्नसिंह के शासन के श्रान्तिम दिनों में राज्य पर लगभग साढ़े श्राठ लाख रुपये का कर्ज हो गया था। सबसे श्राधिक खर्च सेना पर होता था। जागीरदारों की लूटमार की कारवाइयों श्रीर जैसलमेर, भावलपुर, ज्ञोधपुर, जयपुर श्रीर शेखावाटी से लगने वाली सीमाश्रों की रज्ञा की श्रावश्यकता होने के कारण यह सेना रखन जरूरी हो गई थी। श्रतः महाराजा

२. रिपोर्ट श्रोन दी पोलिटियल एड मिनिस्ट्रेशन श्रॉफ दी राजपूताना स्टेट्स १=७०-७१, नं० LXXXIV— सुजानगढ़ एजेन्सी रिपोर्ट, पू० २१२।

२. वही।

को लोगों से बहुत अधिक धन विष्तु करना पड़ा। कर और अधिक बढ़ गये। नये कर लगाये गये जैसे कि "नजराना" जो सर्व प्रथम सन् १८६४ में दीवान गुमानसिंह द्वारा लागू किया गया।

महाराजा सरदारसिंह के शासन के प्रथम १६ वर्षों में १८ दीवान बदले गये। प्रत्येक को इसलिए हटाया गया कि वह महाराजा की आर्थिक मांग को पूरा करने में असमर्थ रहा। नजराना वसल करने के ढ़ंग से तंग आकर उसकी निन्दा की जाने लगी। नजराने की रकम किसी नियम द्वारा संचालित नहीं थी। रकम वसल करने वाले, जो चिरायत कहलाते थे, जितना अधिक नजराना और रकम वसल कर सकते थे, वसल करने के लिये स्वतन्त्र थे। पट्टेदार को राज्य की सारी रकम के पूरे चुकाये जाने की रसीद देते समय ये लोग "विदायगी" नाम से एक वार्षिक रकम और पाते थे। इनके आलावा दीवान भी अपने पद की अस्थिरता से पूर्ण परिचित थे। उन्होंने भी अपने थोड़े से कार्यकाल में अपने लिये अधिक से अधिक धन एकत्रित करने का प्रयत्न किया।

पोलिटिकल एजेन्ट ने श्रंग्रेज सरकार को रिपोर्ट मेजी । उसने लिखा कि यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि बीकानेर राज्य में जीवन श्रोर सम्पित सुरिच्चित नहीं हैं। उसने यह भी लिखा कि रिश्वत देकर या सिफारिश करवा कर बड़े से बड़ा श्रपराधी भी बच सकता है। जागीरदारों की लूट की प्रवृति से श्रव्यवस्था हो रही थी। महाराजा की धन सम्बन्धी माँग से कर्मचारी भ्रष्ट हो रहे थे। इससे जनता की दुर्दशा हो रही थी।

रिपोर्ट श्रोन दी पोलिटिकल एडिमिनिस्ट्रेशन श्रॉफ दी राजपूताना स्टेट्स १८७०-७१, नं० LXXXIV— सुजानगढ़ एजेंसी रिपोर्ट, पृ० २१३ ।

२. पाउलेट-पूर्व उद्धृत, पृ. ५७ — १५४२, गुमानसिंह वैद और लछीराम राखेचा, १५४३ लछीराम, १५४४ गुमानसिंह, १५४४ पंडित दोजयनन्त, १५४६-६३ रामलाल द्वारकानी, १५६४ गुमानसिंह, १५६४ रामलाल, १५६६ मानमल राखेचा, १५६६ शिवलाल नाहटा, १५६७ फतेहचन्द सुरागा, १५६७ प्रतिहित गंगाराम, १५६७ शाहमल कोचर, १५६२ और १५६५ मानमल, १६६५ शिवलाल मोहता, १५६० लच्मीचन्द नाहटा, १५६५ विलायत हुसैन और १५६६ पंडित मनफूल ।

६. रिपोर्ट स्रान दी पोलिटिकल एडिमिस्ट्रिशन स्रॉफ दी राजपूताना स्टेट्स १८७०-७१, नं० LXXXIV-- सुजानगढ़ एजेंसी रिपोर्ट, पू० २०३।

ये ही परिस्थितियाँ थीं जबिक श्रंभेजों ने राज्य के श्रान्तिरिक प्रशासन में सर्वाधिक सिक्रय रूप से हस्तचेप किया । श्रंभेजों ने श्रगस्त सन् १८६६ में श्रपनी पर्जन्द के एक व्यक्ति पंडित मनफूल सी. एस. श्राई. को दीवान के रूप में महाराजा पर थोप दिया । वाद में यह देख कर कि पंडित मनफूल केयल नाम का दीवान था श्रोर श्रमली सत्ता महाराजा की सेवा में निरन्तर रहने वाले कृपा पात्रों के हाथ में थी, पोलिटिकल एजेंट ने महाराजा को उसके कर्तव्य का भान कराया । उसने महाराजा को याद दिलाया कि राज्य के ठीक प्रशासन के लिये वह श्रंभेज सरकार के प्रति उत्तरदायी है । उसने यह सुभाव दिया कि इस स्थिति को सुधारने के लिये तुरन्त कदम उठाये नायं । व

श्रं ग्रेजों श्रीर महाराजा के सम्बन्ध में एक दूसरी महत्वपूर्ण कड़ी सन् १८६९ में अपराधियों को सौंपने की संधि पर हस्ताचर होने से वनी । इस सन्धि के अनुसार कोई व्यक्ति, चाहे वह अंग्रेज या विदेशी नागरिक हो यदि अंभेजी इलाके में घृणित अपराध करे और बीकानेर राज्य के इलाके में शरण ले ले तो बीकानेर सरकार उसे पकड़ कर अं प्रेंज सरकार को सौंप देगी। इसी प्रकार बीकांनेर का कोई नागरिक बीकानेर राज्य के भीतर पृणित अपराध करके अंग्रेजी इलाके में शरण ले लेगा तो माँगने पर ग्रां प्रेज सरकार उसे पकड़ कर बीकानेर सरकार को सौंप देगी। कोई श्रादमी, जो बीकानेर की प्रजा न हो यदि बीकानेर राज्य की सीमा के भीतर पृणित ग्रापराध करे तो ऐसे व्यक्ति को पकड़ कर उसके विरुद्ध मामले की जाँच वह न्यायालय करेगा जिसे ग्रांग्रेज सरकार निर्देश दे। ऐसे मामलों की जाँच उस पोलिटिकल ग्राफसर के. न्यायालय में.. होगी. जिसके.. राजनैतिक निरीक्षण में बीकानेर राज्य रखा गया है। संधि में श्रागे यह भी कहा गया कि कोई भी सरकार तव तक अपराधी को नहीं सींपेगी जब तक कि नियमानुसार उसके लिये मांग न की जाय । ऐसे व्यक्ति अपराध की ऐसी साची उपस्थित करने पर ही सौंपे जायेंगे जिससे उनकी गिर्फ्तारी श्रीर श्रपराधों का श्रीचित्य सिद्ध होता हो। संधि में उन अपराधों का भी

रिपोर्ट श्रोन दी पोलिटिकल एडिमिनिस्ट्रेशन श्रॉफ दी, राजपूताना स्टेट्स १८७०-७१, न० LXXXIV-- सुजानगढ़ एजेन्सी रिपोर्ट, पृ० २०३।

२. वही, पृ० २०५।

३. एचिसन-पूर्व टढ्रुत, माग ३, ए० २५० और २६५।

विवरण दिया गया है जो घृणित अपराध की श्रेणी में आते हैं।

केन्द्रीय सत्ता के साथ सम्बन्ध की दृष्टि से महाराजा सरदारसिंह का शासनकाल महत्वपूर्ण है। इसी समय सर्व प्रथम ऋ ग्रेजों ने राज्य के कुशासन की जांच की थी। इसी समय कप्तान बेडफोर्ड को महाराजा ऋगीर उसके सरदारों के बीच सम्बन्ध के वारे में जांच करने ऋगेर राज्य के प्रशासन को सुधारने के प्रयत्न करने हेतु भेजा गया था। फलस्वरूप राज्य प्रवन्ध के लिये एक परिषद् की स्थापना की गई जिसमें पंडित मनफूल, मानमल राजेचा, शाहमल ऋगेर धनसुखदास कोठारी थे।

महाराजा रत्नसिंह श्रीर महाराजा सरदारसिंह श्रीर श्रंथेजों में बहुत ही मित्रतापूर्ण तथा प्रेमपूर्ण सम्बन्ध था। श्रपने पद से मुक्त होते समय लार्ड बैंटिक ने महाराजा रत्नसिंह को एक खरीता मेजा जिसमें यह भाव व्यक्त किया गया कि महाराजा श्रीर कम्पनी में जो गहरा व सुलद सम्बन्ध वर्तमान था वह श्रीर भी हुद व पुष्ट हो गया है। उसने श्राशा व्यक्त की कि उसके उत्तराधिकारी में भी महाराजा दोनों सरकारों के बीच वर्तमान एकता श्रीर श्रव्हा समभदारी उत्पन्न करने श्रीर बढ़ाने में वैसी ही तैयारी पायेगा श्रीर वह उन इकरार नामों के प्रति, जिनसे दोनों श्रद्धट रूप से जुड़े हुए हैं, श्रलंथ भिक्त दिखायेगा। सन् १८३६ में लार्ड श्राक्तेंड ने महाराजा रत्नसिंह को एक खरीता भेजा जिसमें ऐसे ही भाव व्यक्त किये गये थे। इसमें लिखा था कि दोनों राज्यों में जो एकता श्रीर मित्रता का सम्बन्ध है उसे बनाये रखने को वह बहुत उत्सुक है तथा महाराजा से उच्चतम व्यक्तिगत मित्रता का यम करना चाहता है।

इन्हीं प्रेमपूर्ण सम्बन्धां और सन् १८५७ के विद्रोह में महाराजा हारा दी गई सहायता के फलस्वरुप महाराजा सरदारिसंह बीच में पड़कर सन् १८५९ में तांतिया टोपे और उसके साथियों के लिये च्रमा प्राप्त करने में समर्थ हो सका। इसमें यह नियम जरूर रखा गया था कि यदि बाद में उनमें किसी पर हत्या का आरोप लगाया जाय तो आवश्यकता पड़ने पर उसे सजा के लिये प्रस्तुत किया जाय।

सन् १८६२ में लार्ड एल्गिन ने ऋपने कार्यकाल में महाराजा

१. एचिसन-पूर्व उद्भृत, भाग ३, पृ० २६५ ।

२. ता० २४-२-१ न इप का लार्ड वें टिक का खरीता (लेखक के पास)।

३. ता॰ ७-३-१ ८३६ का लाई आकलैंड का खरीता (लेखक के पास)।

४. मुन्शी ज्वालासहाय-लॉयल राजपूताना, पु॰ २६२।

द्वारा ग्रंग्रेज सरकार के प्रति मित्रता रखने पर धन्यवाद देते हुए पत्र लिखा ग्रोर यह ग्राशा व्यक्त की कि उसके उत्तराधिकारी के समय यह मित्रता ग्रीर भी दृद होगी। जब लाई लारेन्स ने भारत के गवर्नर जनरल के पद से ग्रंप्यकाश प्रहुए किया तो उसने भी ऐसे ही भाव व्यक्त किये। लाई नोर्थ- ग्रंप्यकाश प्रहुए किया तो उसने भी ऐसे ही भाव व्यक्त किये। जाई नोर्थ- ग्रंप्यकाश प्रकट की कि उसके कार्यकाल की ग्रंप्यधि में ये मित्रता- पूर्ण सम्बन्ध ग्रीर भी दृढ होते रहेंगे। अ

सन् १८६८ में जब गवर्नर जनरल के सहायक एजेंट को सुजानगढ़ में नियत करने का प्रश्न उठा छौर महाराजा ने उसका विरोध किया, तो गवर्नर जनरल के एजेंट ने वापस लिखा कि संधि की शतों में बीकानेर राज्य में पोलिटिकल अफसर मेजने में कोई प्रतिवन्ध नहीं है। एजेंट के मतानुसार यह संधि भारत में छंग्रेजी सत्ता के प्रति बीकानेर राज्य की छाधीनता को सूचक थी। संधिपर हस्ताक्तर होने के केवल पचास वर्षों के भीतर ही संधि की शतों की व्याख्या बदल गई थी।

१. ता० १-३-१५६२ का लार्ड एल्गिन का खरीता (लेखक के पास)।

२. ता० १९-१-६६ का लार्ड लारेन्स का खरीता (लेखक के पास)।

३. ता० ३-५-१८७२ का लाई नोर्थ ब्रुक का सरीता (लेखक के पास)।

४. गवर्नर जनरल के एजेंट कर्नल कीर्लिंग को २४-२-६ म को लिखा गया महाराजा सरदारसिंह का खरीता।

प्र. ता॰ ७-४-१८६८ का कर्नेल कीलिंग का खरीता (लेखक के पास) ।

ग्रध्याय ७

सिकय हस्तचेप का युग

महाराजा सरदारसिंह के, जिनका देहांत १६ मई १८७२ ई. में हो गया, कोई पुत्र संतान नहीं थी ग्रौर ना ही राज्य गद्दी के उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में उन्होंने कोई घोषणा की थी। यद्यपि उन्होंने ट्रंगरसिंह तथा जसवंतसिंह का, जो उनके भाई के पोते थे, पालन पोषण राज्य घराने के सदस्यों के समान किया था तथा दोनों महाराजा गजसिंह के द्वितीय पुत्र छत्रसिंह के वंशज थे।

महारानी मिटियानी क्यों कि चरिष्ठ महारानी पटरानी थी इसलिए स्वाभाविकतया उत्तराधिकारी के विषय में निर्ण्य करने का उन्हें ऋधिकार था ऋरे वह इंगरसिंह को गोद लेने के पन्न में थी। किन्तु महारानी प्रालयानीजी, यद्यपि किनष्ट थं, सरदारसिंहजी को बहुत प्रिय थी ऋरे इस चजह से उनका दरबार में यथेष्ठ प्रभाव था। वह जसवंतसिंह को गोद लेने के पन्न में थी। उसके परिणाम स्वरूप सरदारों व ऋहलकारों के ही पृथक दल बन गए, जिसमें एक इंगरसिंहजी को गोद लेने के पन्न में था तथा दूमरा जसवंतसिंह को। जसवंतसिंह को गोद लेने के लिए महारानी भिटियानीजी पर थथा सम्भव दबाव डाला गथा। किन्तु महारानी भिटियानीजी एर थथा सम्भव दबाव डाला गथा। किन्तु महारानी भिटियानीजी इस सम्बन्ध में दीवान पिएडत मनफूल की सलाह विना तथा भारत सरकार की पूर्व ऋनुमित विना कुछ भी घरना उचित नहीं समभती थी। ऋतः कप्तान वर्टन को जो गवर्नर जनरल के एजेंट के सहायक थे, महाराजा सरदारसिंह के निधन की तथा उनके उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में विवाद खड़ा हो जाने की स्त्वना करदी गई छोर वह उस मामले की छान बीन

साहीवाला अर्जु निसंह का जीवन चरित्र, माग २, पृ० २० जैसा कि श्री श्रोम्का द्वारा 'वीकानेर राज्य का इतिहास' माग २, पृ० ४६२ में उद्भत किया गया है ।

करने के लिये २२ मई १८७२ ई. को वीकानेर आये। उनको पहले से ही सारे तथ्यों का पूर्ण ज्ञान या ऋौर उन्होंने उत्तराधिकारी को गोद लेने के महारानी भाटियानीजी के ऋधिकार का समर्थन किया। इसी बीच में उदयपुर के महारागा शम्भूसिंह वे ने भी जो कि ट्रांगरसिंह के फ़फेरे भाई लगते ये गवर्नर जनरल के एजेंट कर्नल ब्रुक को एक संदेश भेजा जिसमें उन्होने हूं गरसिंह के गोद जाने के ऋधिकार का समर्थन किया था ।3 कर्नल हुक ने महारानी मटियानीजी के उत्तराधिकारी को गोद लेने के ग्रिधिकार तथा उत्तराधिकारी के लिये हूं गर सिंह के चुनाव के न्यायोचित होने के दोनों तथ्यों से पूर्ण तथा सन्तुष्ट होने के कारण टूर्गरसिंह को गोद लेने की सिफारिश लार्ड नार्थेयुक को करदी जिन्होंने ११ जुलाई १८७२ को गवर्नर जनरल के एजेंट को भेजे गये एक खरीते में ग्रपनी.. स्वीकृति की घोषणा करदी । इस प्रकार ११ अगस्त १८७२ ई. को हू गर सिंह वीकानेर राज्य के बीसवें शासक की हैसियत से बीकानेर की राज्य गद्दी पर बैठे । एवं २२ जनवरी १८७३ को गवर्नर जनरल के एजेंट द्वारा विधियत तथा त्र्योपचारिक रुग से इस तख्त-नशीनी को सम्पन्न किया गया^४ तथा २६ ऋक्ट्रवर १८७२ को वाइसराय द्वारा उन्हें एक

२. ज्यालासहाय-वकाये राजपूताना, माग २, पृ० ६३३-३७।

२. महाराजा लालिसिंह की वहन नन्द कुंबर १८४५ ई० में सादूलिसिंह की जो बागोड के महाराज शेरिसिंह के सबसे वड़े पुत्र थे, व्याही गई थी। नन्द कुंबर श्रीर सादूलिसिंह के शम्मूसिंह ने जन्म लिया, जो कि महाराजा स्वरूपिंसिंह की मृत्यु के पश्चात उदयपुर के महाराणा वने महाराणा शम्मूसिंह इस प्रकार झ्ंगरिसिंह के पिता महाराज लालिसिंह के सम्बन्धी (मांजे) थे। इसिलिए झ्ंगरिसिंह के समर्थक सहायतार्थं महाराणा शम्मूसिंह के पास पहुंचे श्रीर महाराणा ने मी जी खोज कर उनको सहायता प्रदान की।

श्रमहाराणा शम्मू सिंह द्वारा साहोत्राला अर्जु निसंह को लिखित १६२८ की वि. सं. के शुक्ल पत्त की तेरस के पत्र के अनुसार जैसा कि श्री ओक्सो ने अपने वीकानेर राज्य के हतिहास के माग २ पृ० ४६५ में उद्भृत किया है ।

४. दि॰ ११-७-१८७२ का कर्नल जे. सी बुक का खरीता तथा उसी का एक खरीता जिसकी तारीख अस्पण्ट है।

५. ज्वालासहाय-वकाये राजपूताना, भाग ३, पृ० ६४५.।

श्रिमिनन्दन का खरीता भी मेजा गया। सरदारसिंह के निधन के समय से लेकर ट्रंगरसिंह के त्रीपचारिक रूप से बीकानेर की गद्दी पर बैठने पर्यन्त राज्य का शासन एक परिषद द्वारा चलाया गया जो कप्तान बर्टन की ग्रध्यच्चता के ग्रधीन थी। जब ट्रंगरसिंह राज्य गद्दी पर बैठे तथा राज्य के शासन के पूर्ण अधिकार उन्हे प्रदान हुये तो उन्हे दीवान प. मनफूल के सहयोग से शासन कार्य चलाने की सलाह दी गई। उ

उसके शीम ही पश्चात मुख्य ठाकुरों ने तथा राज्य के कुछ ग्रन्य लोगों ने पोलीटिकल एजेंट को राज्य के त्रुटिपूर्ण शासन की शिकायत की तथा यह भी त्रारोप लगाया कि हर प्रकार के लोगों को राजकीय मामलों में हस्तक्षेप करने की श्रनुमति

पण्डित मनफूल ने ब्रिटिश भारत में अनेक पदों पर सराहनीय तथा सर्वन्यापी प्रशंसनीय कार्य किये थे। क्रमशः उनकी पदोन्नित असिस्टेंट किमश्नर के पद पर कर दी गई थी। उन्हें कम्पेनियन आफ दि स्टार आफ इण्डिया की पदवी भी प्रदान हुई थी। १८६६ ई० में बीकानेर के दीवान के पद पर उनकी नियुक्ति की गई और उन्होंने अवांछनीय गतिविधियों की रोकने का भी प्रयास किया। यह मुख्यतः उन्हीं की चतुरतापूर्ण तथा बुद्धिमतापूर्ण कार्य प्रणाली से परिस्थिति को सम्मालने का परिणाम था कि शासक और जागीरदारों के बीच में पैदा हुए करों आदि में वृद्धि के भगड़ों की विकट समस्याओं का शान्तिपूर्ण तरीकों से निपटारा हो सका। इसके अतिरिक्त हुमामगढ़ परगने में भू-प्रवन्य आदि की कार्रवाई भी उनकी देखरेख में प्रारम्म

१. लार्ड नोर्थब्रुक का ता० २३-१०-१ मण्य का खरीता (जो कि मेरे पास है)।

२. कर्नल जे. सी. ब्रुक का ता० ११-७-१८७२ का खरीता।

ज्वाला सहाय-वकाये राजपूताना, माग ३, पृ० ६४५। तथा कर्नेळ जे.
 सी. ब्रुक का एक अस्पष्ट दिनांक का खरीता।

मिल रही है। इसके परिणाम स्वरूप, गवर्नर जनरल के एजेंट ने महाराजा को एक खरीता मेजा जिसमें राज्य की दुखद परिस्थितियों के बारे में चेतावनी दी गई थी तथा उन्हें भूतपूर्व महाराजा सरदारिंसह द्वारा किये गये सुधार तथा निर्माण करने के वचनदान का स्मरण कराया गया था। उसमें द्वारािसंह को तत्काल ऐसा करने का अनुरोध किया गया था। इस पर भी भारत सरकार ने इसके साथ साथ पोलिटिकल एजेंट को यह चेतावनी भी दे दी कि वह किसी भी परिस्थिति में महाराजा के घरेलू मामलों में हस्तचेप न करे तथा सरकार द्वारा निर्धारित नीति की स्पष्ट सीमाओं का अतिक्रमण न करे। महाराजा ने खरीते की, कड़ी होने पर भी मित्रता पूर्ण भाषा से प्रभावित होकर, तत्काल ही राज्य शासन में सुधार करने के आदेश दे दिये।

स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने के कारण दिसम्बर १८७३ में पं मनफूल ने त्याग पत्र दे दिया श्रोर महाराज लालसिंह को जसबंत सिंह

हुई तथा ब्रिटिश अफसरों द्वारा इसकी यथेष्ठ सराहना भी की गई। बीकानेर से वह अलवर चले गये जहां पर वह तीन वर्ष तक महाराजा मंगलसिंह के अभिमावक रहे।

- १. कर्नल लेत्रिस पेली का ता० १-८-१८७३ का खरीता (जो मेरे पास है)।
- र. महाराज लालसिंह हूं गरसिंह के पिता तथा गजसिंह के छोटे पुत्र छत्रसिंह के परपीत्र थे। उनका जन्म ति० सं० १८८८ की मार्गशिष शुक्ला १२ को हुआ था। वह बुद्धिमान, विशाल हृदय तथा विचारवान थे। उन्होंने अनेक वर्षों तक वीकानेर राज्य परिषद के अध्यक्त के पद पर कार्थ किया तथा इस अविव में महाराजा हूं गरसिंह को उचित परामर्श भी देते रहे। महाराजा हूं गरसिंह का ३३ वर्ष की अल्प आयु में निधन हो जाने का महाराज लालसिंह को गहरा धक्का पहुंचा और उन्होंने इस घटना के एक मास के भीतर ही ५६ वर्ष की आयु में कृष्ण पद्म की १४ को श्रिर त्याग दिया। महाराजा हूं गरसिंह ने अपने जीवनकाल में शिववाड़ी में एक मन्दिर का निर्माण करवाया तथा उसका नाम लालेश्वर महादेव मन्दिर रखा जो अपने पिता के प्रति उनके स्नेह का प्रतीक है।

महाराज लालसिंह के पुत्र दूंगरसिंह बीकानेर की गद्दी के दावेदार थे। उनके प्रतिद्वन्दी उम्मीदवार थे मुकन्दसिंह के पुत्र जसवन्तसिंह। मुकन्दसिंह शक्तिसिंह के तृतीय माई सड़गसिंह के पुत्र थे। निम्नांकित वंशावली की अनुक्रमणिका से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि दूंगरसिंह के दावे से वैद के स्थान पर कौन्सिल का ऋध्यच नियुक्त किया गया।

भादरा और चुरू के ठाकुर निरंतर दृदता से उत्पात मचाने का प्रयास करते रहते थे, श्रव कानून न मानने वाले तत्वों को अपने यहां शरण देने लगे तथा उन्हें डकैंतियां व लूटमार करने के लिये अपने पास नौकर रखने लगे। महाराजा ने इस वस्तु—स्थिति की ओर गवर्नर जन—रल के एजेंट का ध्यान आकर्षित किया जिससे इन गतिविधियों को दबाने के लिये तुरन्त आवश्यक कदम उठाये गये तथा उन लोगों से भविष्य में अच्छा आचरण रखने का वचन लिया गया।

इस अविध में कुछ स्थानीय उपद्रव भी हुये। १८७३-७४ की सुजानगढ एजेंसी रिपोर्ट में इसका उल्लेख पाया जाता है कि पोलिटिकल एजेंट ने सरकार को रिपोर्ट की कि ५ अगस्त को आम जोधासर के समीप जसाना के ठाकुर मेघसिंह तथा कान्हसर के ठाकुर मानसिंह के बीच एक

जसवन्तर्सिंह के दावे को किसी प्रकार अधिक वलवान नहीं समभा जा सकता ।

•	महाराजा गर्जसिंह		•	٠ 'ټ
	· ·	•	,	
	छत्र सिंहः	•		
	.1 ~ .		\ <i>*</i>	
•	द्वेल सिंह	*	÷ 4	
\				4
1	1	1		Ī
शकिसिंह	मदनसिंह 😘	खड़गसिंह	. खुमा	गसिंह
1	1	11.		1
लालसिंह	. वेतर्सिंह	सुकन्दसिं ह	नाथ	सिंह
1	•	. 1		
इँगरसिंह		जसवन्त सिंह	,	

साहीवाला अर्जु निर्सिंह ने अपने आत्म-जीवन-चरित्र के माग २ के पृ० २० में उल्लेख किया है कि खड़गसिंह के पुत्र का नाम हरीसिंह था। किन्तु यह असत्य है क्योंकि खड़गसिंह के हरीसिंह नाम का कोई पुत्र नहीं या एवं ह्र गरसिंह के विपत्ती उम्मीदवार वास्तव में मुकन्दसिंह के पुत्र जसवन्तसिंह थे।

१. ज्वालासहाय-वकाये राजपूताना, माग ३, पृ० ६४७।

२. वही, पृ० ६६७ ।

गम्भीर भगड़ा हुन्ना। इस भगड़े का कारण भूमि का एक खंड था जिस पर दोनों ग्रापना ग्राधिकार मानते ये किन्तु वास्तव में यह खैंड ग्राम देवासर का था। पोलिटिकल एजेंट ने रिपोर्ट में श्रागे यह भी लिखा कि जसाना के पट्टेदार ठाकुर मेघसिंह ने इस भूमिखंड को जोतने के लिए दस सशस्त्र स्वारों तथा बीस सशस्त्र प्यादों के साथ कुछ हलवाहों को भेजा था। इसकी स्चना पाकर कान्हसर के ठाकुर मानसिंह ने पहले तो नौ आदिमियों को वहां भेजा तथा इसके पश्चात चालीस सशस्त्र त्रादिभयों को लेकर स्वयं घटना स्थल पर ग्रा पहुँचां । थोड़े विवाद के पश्चात भगड़ा ग्रारम्भ हुया जिसके परिणाम स्वरूप ठाकुर मेघसिंह के दो व्यक्ति मारे गये तथा चार घायल हो गये। ठाकुर मानसिंह के समृह का एक व्यक्ति मारा गया ग्रौर तीन व्यक्ति घायल हो गये । इसके न्त्रागे एजेंट लिखता है कि इस मामले को कई बार महाराजा के ध्यान में लाया जा चुका है ताकि इससे सम्बन्धित व्यक्तियों को उनके ऋपराध के ऋनुसार दिएडत किया जा सके ग्रीर ऐसा प्रवन्ध किया जा सके जिससे इस प्रकार के अगुड़े की पुनरावृति रोकी जा सके । स्रन्त में मामले की छानबीन की गई तथा सरदारों श्रीर उनके श्रनुचरों को कारावास एवं सुर्माने से दिएडत किया गया श्रीर उनके भविष्य में शान्ति बनाए रखने के लिये प्रतिपित्त्वयों को कर दिया गया । 9

बहुत से जागीरदार महाराजा के प्रति वफादार नहीं थे तथा राजद्रोही थे। जिस भूमि को किसी नियम के अधीन उनसे ले लिया गया था उसको पुनः उनके अधिकार में लौटाए जाने की उन्होंने मांग की। सन् १८७३-७४ की सुजानगढ एजेंसी रिपोर्ट के अनुसार इन मामलों का तीन श्रेणियों में वर्गीकरण किया गया। प्रथम वह शिकायतें जो ऐसे प्रार्थियों या उनके कुटुम्बियों द्वारा प्रस्तुत को गई थी जिनके पट्टे या गांव एक दीर्घ अविध पूर्व उनसे छीन लिए गए थे और इस कारण से महाराजा ने उन्हे अस्वी-कार कर दिया हो। द्वितीय श्रेणी में भूमि के उन दावों को रखा गया था जिनको महाराजा की स्वीकृति मिल चुकी थी किन्तु वह १८६६-७० के दस वर्षीय बन्दोबस्त के अनुसार अन्य ठाकुरों के कब्जे में आ चुकी थी। तृतीय श्रेणी में खालसा या अन्य भूमि के सम्बन्धित वे दावे आते ये जिन्हे महाराजा की मान्यता प्राप्त थी। पोलिटिकल एजेंट के अनुसार

रिपोर्ट क्रोन दी पोलिटिकल एडिमिनिस्ट्रेशन क्राफ दी राजपूताना स्टेट्स
 १८७३-७४, न० CXVI, सुजानगढ़ एजैन्सी रिपोर्ट, पृ० २२०।

महाराजा डूंगरसिंह ने प्रथम श्रेगी के दावेदारों को बहुत उचित ढंग से तथा ग्रत्यन्त ग्रनुकृल शतों पर भूमि प्रदान करने की पेशकश की तथा उन्हें कुछ विशेषाधिकार प्रदान करने का भी ग्राश्वासन दिया ताकि वे ग्राराम से ग्राजीविका प्राप्त करने के योग्य हो सकें। दूसरी श्रेगी के सम्बन्ध में महाराजा ने प्रार्थियों को बतलाया कि सेटलमेंट के ग्राधीनस्थ जो व्यवस्था हो चुकी है उसमें हस्तचेप करना ग्रनुचित होगा किन्तु उन्हें इस बात का पूर्ण ग्राश्वासन दिया की उनके मामले उस ग्रायोग के समज्ञ रख दिये जायेंगे जो ठाकुरों के मामलों को तय करने के लिये बैठने वाला था। तृतीय श्रेगी के दावे दारों को उनके गांव महाराजा हारा वापस दे दिये गये तथा उनकी सनदें प्रदान करदी गईं।

जागीरदारों को इस पर भी इस फैसले से संतोप का अनुभव न हो सका स्रोर राज्य के स्रम्रणीय ठाकुरों में से एक महाजन के ठाकुर श्रमरसिंह ने कुछ श्रन्य सरदारों के साथ राजधानी को छोड़ दिया श्रीर ये लोग देशनोक जाकर इकट्टे हुये। वहां से ये लोग ग्रापना कष्ट गवर्नर जनरल के एजेंट के समज्ञ प्रस्तुत करने के लिये श्राबू पहुँचे। एजेंट ने खेद प्रकट किया किन्तु आशा व्यक्त की कि जो आयोग नियुक्त किया जाने वाला है, उनके साथ न्याय करेगा। इसी बीच में महाराजा जागीरदारों द्वारा प्रस्तुत किये गये दावों की जांच करने के लिये एक आयोग नियुक्त कर चुके थे तथा पोलीटिकल एजेंट को एक खरीता भेज चुके थे जिसमें उन्हे इस त्रायोग की त्रध्यच्ता करने के लिये ग्रामंत्रित विया गया था। पोलोटिकल एजेंट द्वारा किसी भी सिक्रय रूप में अपने आप को आयोग के साथ सम्बधित करने को श्रनुचित समभा गया श्रतः उन्होंने कहा कि उनका श्रायोग को सलाह देनां ही प्रयोत मात्रा में संतोपप्रद होगा । महाजन के ठाकुर तथा ग्रन्य जागीरदार इस बात से सहमत न हुये कि उनके मामलों की जांच त्रायोग द्वारा की जाय। श्रतः उनके मामले स्वयं महाराजा द्वारा निपटाये गये तथा दूसरे मामलों को . त्रायोग ने निपटाया। यद्यपि त्र्रिधिकतर शिकायतों का बहुत ध्यान से अवलोकन किया गया या फिर भी जागीरदारों ने राजद्रोह की भावनात्रों को जारी रखा। 2

रिपोर्ट श्रोन दी पालिटिकल एडिमिनिस्ट्रेशन श्रॉफ राजपूताना स्टेट्स,
 १८७२-७४ नं CXVI, सुजानगढ़ पजेन्सी रिपोर्ट, पु० २२०।

२. ज्वालासहाय-वकाये राजपूताना, माग ३, पु० ६७०-७१ ।

२४ सितम्बर १८७४ को गवर्नर जनरल के सहायक एजेंट तथा कुछ सरदारों के साथ गवर्नर जनरल के एजेंट कर्नल लिविस पेली से मेंट करने के लिये महाराजा ने साम्मर के लिये प्रस्थान किया तथा वहां पर उनसे मेंट की।

सन् १८७५ में राज्य के एक अग्रणीय टिकाने वीदासर के नियासी महाजनों ने ठाकुर के अत्याचारों के विरुद्ध महाराजा को शिकायत की तथा वे लोग वीदासर छोड़कर लाडनू (जोधपुर राज्य में) चले गये। महाराजा ने तुरन्त जांच पड़ताल करवाई तथा इस सम्बन्ध में उचित आवश्यक कारवाई की और सेठ लोग वापस वीदासर लौट आये। इसी प्रकार भृवरका और सांखू के ठाकुरों के अत्याचारों के विरुद्ध वहां के किसानों द्वारा की गई शिकायतों की भी तुरन्त जांच करवाई गई। महाराजा द्वारा तत्परता से को गई इन कारवाइयों के फलस्वरूप जागीरदारों की खेतीहर किसानों को सताने की प्रवृति काफी कम हो गई।

महाराजा सरदारसिंह द्वारा जारी किये गये एक आदेश के अनुसार जागीरदारों से यस्त किये जाने योग्य राज्यकर को दस वर्षों के लिये निर्धारित किया जा चुका था। इस अविध में इसमें कोई वढोतरी नहीं की जा सकती थी। पर जागीरदार लोग स्वयं जो किसानों से लगान वस्त करते थे उसमें वढोतरी करने के लिये अपने अग्रमको स्वतंत्र समभते थे। किसानों द्वारा एक प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किये जाने पर किसानों के हितों की सुरक्ता के लिये महाराजा ने इस कानून को लागू करने के आदेश जारी कर दिये। इससे किसानों द्वारा चुकाये जाने याले लगान में अब दस वर्गों की समाप्ति के पूर्व कोई वढोतरी नहीं की जा सकती थी।

श्रप्रैल १८७५ के श्रासपास राज गद्दी के प्रतिद्वन्दी प्रत्याशी जसवंतिसिंह के समर्थकों द्वारा विष देकर महाराजा डूंगरसिंह की हत्या करने का प्रयास किया गया। किन्तु पड़यन्त्र का पहले से भेद खुज जाने से इसमें सफलता प्राप्त न हो सकी। गवर्नर जनरल के एजेन्ट के ध्यान में इस

१. ज्वालासहाय-वकाये राजयूताना, माग ३, पृ० ६४८ ।

२. वही, पृ० ६७२।

[.]३ वही।

घटना के लाये जाने पर असने महाराजा को एक खरीता भेजा जिसमें उन्होंने इस घटना के सम्बन्ध में हो रही जांच पड़ताल की जानकारी मांगी | दिनांक २५-८-१८७५ के एक अन्य खरीते में इस विषय पर आयोग को रिपोर्ट की प्राप्ति को उन्होंने स्वीकार किया तथा अनितम निर्णय से अवगत कराये जाने की मांग की | एजेन्ट के दिनांक १२-२-१८७६ के खरीते में उल्लेख किया गया कि फैसले की सूचना भारत सरकार को दे दी गई है तथा उसके द्वारा कोई भी हस्तच्चेप उचित नहीं होगा |

नवम्बर १८७५ में महाराजा ने, गवर्नर जनरल के सहायक एजेन्ट व कुछ सरदारों ग्रीर राज्य के ग्राफ्सरों के साथ, हरिद्वार तथा गया की तीर्थयात्रा करने के लिए प्रस्थान किया। ग्राप्ता यात्रा से वापस लौटते समय महाराजा ने बहुत से महत्वपूर्ण नगरों का दौरा किया जिनमें मुख्य मथुरा, हाथरस, प्रयाग, काशो, लखनऊ, कानपुर तथा ग्रागरा थे। २१ जनवरी १८७६ को ग्रागरा पहुँचने पर गवर्नर जनरल के एजेन्ट ने स्टेशन पर उनकी ग्रागवानी की। महाराजा जब ग्रागरा में ठहरे हुये थे उसी समय तत्कालीन प्रिस ग्राफ वेल्स (बाद में सम्राट एडवर्ड सप्तम) का भी वहां पर दौरा हुग्रा। इ गरसिंह मी उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने २५ जनवरी १८७६ को स्टेशन पर प्रिस ग्राफ वेल्स की ग्रागवानी की। २६ जनवरी १८७६ को स्टेशन पर प्रिस ग्राफ वेल्स की ग्रागवानी की। २६ जनवरी १८७६ के महाराजा ने प्रिस ग्राफ वेल्स से सौजन्य मेंट की तथा २७ जनवरी १८७६ को प्रस ग्राफ वेल्स महाराजा से मिलने के लिये ग्राये। प्रिस ग्राफ वेल्स को उस ग्रावसर पर दिये गये मोज में भी महाराजा समिलित हुये तथा उससे ग्रास्टनत प्रभावित हुये।

जब, हर मेजेस्टी महारानी विवटोरिया द्वारा 'क्यीन एम्प्रेस ब्राफ इन्डिया' (भारत सम्राज्ञी) की पदवी ग्रहण करने पर तत्कालीन वाइसराय लार्ड लिटन ने १ जनवरी १८७७ को दिल्ली में एक दरवार का ब्रायोजन किया तो उसमें महाराजा ट्रंगरिसह को भी ब्रामंत्रित किया। किन्तु वे इस दरवार में उपस्थित नहीं हो सके क्योंकि उन्हें कच्छ के महाराजा की पुत्री से विवाह करने कच्छ के लये प्रस्थान करना था। ब्रातएव भारत

१. ए. सी. ल्यॉल (गर्नार जनरल का एजेन्ट) का ता० २०-४-१८७५ का सरीता (जो कि मेरे पास है)।

२. ए. सी. ल्यॉल का ता॰ २५-५-१८७५ का सरीता (जो कि मेरे पास है)।

३. ए. सी. ल्यॉल का ता० १२-२-१८७६ का खरीता (जो कि मेरे पास है)।

४. ज्वालासहाय-वकाये राजपूताना, भाग ३, पृ० ६५०-५१।

सरकार ने उस ग्रवसर के स्मरण के लिये महाराजा को एक भएडा भेजा हैं जिसका महाराजा ने उसी ग्रामियाय के लिये विशेष रूप से ग्रायोजित एक दरबार में बड़ी धूमधाम से स्वागत किया ।

रियासतों के ज्ञान्तरिक मामलों में हस्तचेप करने की ब्रिटिश नीति से, राज्यों के जन साधारण में भ्रान्त धारणायें उत्पन्न हो गईं। वे समभाने लगे कि वास्तविक शासक तो अंग्रेज है। अतः अपने शासकों के निर्णयों के विरुद्ध वे मारत सरकार को सीधे ही अपने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने लगे। बीकानेर में पोलिटिकल एजेंट का निवास स्थान हो जाने के पश्चात तो उनकी यह धारणा और भी हद हो गयी तथा १८७७ में असन्तुष्ट सिद्धों के व्यवहार ने महाराजा एवं ब्रिटिश दोनों के सम्मुख इस परिस्थिति को पूर्णतया स्पष्ट कर दिया।

१ ग्रागस्त १८७७ को लगभग सत्तर ग्रस्ती सिद्ध, जिनके पास उस समय कई गांव थे तथा जिन्होंने हियासत के काफी विस्तृत. भूमि संडों पर भी कव्जा जमा रखा था, भागते हुए एजेंट के कार्यालय में पहुँचे तथा श्रपने नेता जसनाथ को, जिसको निश्चित श्रारोपों के श्राधार पर राज्य के श्रिधकारियों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था, छुड़ाने के. लिये कोलाहलपूर्ण प्रदर्शन किये । पोलिटिकल एजेंट ने उनको समभाने का प्रयास किया कि वे लोग श्रपना कष्ट महाराजा के समज्ञ रखें किन्तु उन्होंने पोलिटिकल एजेंट से आग्रह किया कि वह स्वयं इस मामले में हस्तचेप करके उसका निर्णय करे श्रीर यदि उन्होने ऐसा नहीं किया ता उन लोगो ने धमकी दी कि वे उनके द्वार पर ग्रात्म हत्या करके प्राण त्याग देंगे । पोलिटिकल एजेंट ने इस वस्तुस्थिति से अवगत करने के लिये बीकानेर के वकील की बुलवाया । इसके पश्चात महाराजा को स्चना देने के लिये वकील रवाना हो गया। दो दिनों तक महाराजा ऋौर सिद्धों के बीच समभौते की बातचीत होती रही। ३ अगस्त की प्रातः पोलिटिकल एजेन्ट को पता चला कि सिद्धों ने चार समाधियां खोदी हैं तथा उनमें से चार व्यक्ति ग्रात्म हत्या करने जा रहे हैं। इस पर उन्होंने ग्रपने प्रधान मुंशी को उनके पास भेजकर उन्हें ऐसा करने से बाज रहने के लिये कहलाया । परन्तु वे लोग नहीं माने श्रीर श्रपने इस हठ को त्यागने

वह मन्पडा अब भी मेरे पास है तथा प्रदर्शनार्थ बीकानेर फोर्ट स्यूजियम में रखा हुआ है ।

२. श्रोमा-वीकानेर राज्य का इतिहास, माग २, पृ० ४७५ ।

से इन्कार कर दिया। तब उन्होंने उनके कुछ मुखियों को बुला कर उन्हें चेतावनी दी कि ग्रात्महत्या को किसी भी प्रकार का सहारा या प्रोत्साहन देने वालों को कठोर दण्ड दिया जायेगा और यदि ऐसा हुआ तो सारा दोप उन लोगों का समका जायगा। उन लोगों की धमकियों से भयभीत होकर एजेन्ट किसी भी प्रकार भुक जाने को तैयार नहीं थे। इससे हतोत्साह होकर वे लोग ब्रात्महत्या न करने के लिये तो सहमत हो गये किन्तु उन्होंने कहा कि जब तक जसनाथ को मुक्त नहीं किया जायगा तब तक वे लोग अनसन रखेंगे। अन्ततः महाराजा और सिद्धों के वीच एक समभौता हो गया। जसनाथ को एक हुकमसिंह फौजदार नामक व्यक्ति के साथ जिस पर सिद्धों को पूरा भरोसा था, रहने की अनुमति दे दी गई तथा इस वात का ध्यान रखने का उत्तरदायित्व हुकमसिंह पर था कि जसनाथ उस समय तक वीकानेर के बाहर न जावे जव तक कि उसके विरुद्ध लगाये गये अभियोगों की छानबीन न करली जाय तथा उसे उनसे मुक्त न कर दिया जाय । यद्यपि सिद्ध लोग पोलिटिकल एजेंट का हस्तचेप प्राप्त करने पर हदता पूर्वक तुले हुये थे तथापि पोलिटिकत एजेंट ने महाराजा पर श्रपने प्रभाव का उपयोग करने के श्रातिरिक्त तथा उन्हें न्याय व संयम से काम लेने का परामर्श देने के अतिरिक्त कुछ भी करना उचित नहीं समभा । सन् १८७८ की जनवरी मास के प्रारम्म में इस भागड़े का मैत्रीपूर्ण समभौता हो गया और सिद्ध लोग अपने अपने घर लौट गये तथापि वे फिर विद्रोह करने लगे ग्रौर जून १८८० में जसनाथ को पुनः गिरफ्तार फरना पड़ा। उसे साढ़े तीन वर्ष का कारावास तथा पचास रुपमे जुमीने का दराइ दिया गया। पोलिटिकज एजेंट ने आशा च्यक की कि अब की बार जसनाथ के अनुयायी आन्दोलन नहीं करेंगे तथा महाराजा उनकी धमिकयों से सन्त्रस्त नहीं होंगे ।

सन् १८७८ में रूस के राजदूत काबुल आये तथा उनका वहां पर हार्दिक स्वागत किया गया। इससे यह आशंका उत्पन्न हो गई कि काबुल रूस के प्रभाव में न चला जाये। ब्रिटिश सरकार के हिण्टकोण का स्पष्टीकरण करने तथा सम्भाव्य रूसी प्रभाव का प्रतिकार करने के उद्देश्य से नैविल चैम्बरलेन ने लार्ड लिटन के निर्देश के अनुसार काबुल जाने

रिपोर्ट श्रोन दी पोलिटिकल एडिमिनिस्ट्रेशन श्रॉफ दी राजपूताना स्टेट्स
 १८७०-७८, न० CLI— सुजानगढ़ एजेन्सी रिपोर्ट, पृ० २३८-३६।

के लिये खैबर को पार करने की अनुमित मांगी । किन्तु इस मांग को अस्वीकार कर दिया गया और उसके परिणाम स्वरुप युद्ध की घड़ी समीप आ गई। महाराजा ट्रंगरसिंह ने गवर्नर जनरल के एजेंट मैजर हे डिफोर्ड को २६ नवम्बर को एक खरीता भेजकर अपनी सेना की सेवाओं को अपित किया। महाराजा द्वारा प्रस्तुत की गई इस तत्क्णिक व उदारतापूर्ण सहायता की अत्यधिक प्रशंसा करते हुये गवर्नर जनरल ने प्रथमतः भारतीय सेना को परिवहन कार्य के लिये कुछ ऊँट देने के लिये अनुरोध किया। इस पर महाराजा द्वारा भारत सरकार को आउ सौ ऊँट प्रदान किये गये।

वीकानेर राज्य के विविध स्थानों पर नमंक का उत्पादन किया जाता था, जिसमें लूर्णकरणसर व छापर कुछ एक मुख्य केन्द्रों में से थे, श्रीर इससे भारत सरकार के नमक व्यवसाय के सर्वाधिकार में वाधा उप-स्थित होती थी । यद्यपि भारत सरकार नमक उत्पादन के उद्यम को वंद करने की मांग नहीं कर सकती थी किन्तु निः सन्देह उसके उत्पादन एवं ग्रायात व निर्यात पर नियन्त्रण लागू कर सकती थी । सन् १८७६ की २४ जनवरी को वीकानेर राज्य व भारत सरकार के वीच हुये एक समकौते–िद वीकानेर साल्ट एग्रीमेंट पर हस्ताच्चर हुये तथा ८ मई १८७६ को इस समभौते का पुष्टीकरण किया गया। इस संधि में यह नियम रखा गया था कि बीकानेर राज्य में केवल छापर व लूराकरणसर में नमक का उत्पादन किया जायगा तथा इन स्थानों में नमक का सम्पूर्ण समग्र वार्षिक उत्पादन तीस हजार मन से ऋधिक नहीं होगा । इसके आगे यह मी नियम रखा गया था कि राज्य में ऐसे नमक के अतिरिक्त जिस पर विटिश सरकार द्वारा कर वसूली करली गई हो किसी भी अन्य नमक का निर्यात या आयात नहीं किया जा सकेगा। संधि में यह अनु-बन्ध भी रखा गया था कि ऐसे नमक पर जिस पर कि ब्रिटिश सरकार द्वारा कर वस्ली करली गई हो राज्य द्वारा मार्ग-कर नहीं लगाया जायगा तथा भाग, गांजा, मदिरा, ग्रंफीम एवं ग्रन्य मादक उनसे निर्मित पदायों का राज्य द्वारा ब्रिटिश शासन क्षेत्र में निर्यात निषिद्ध होगा । राज्य के नागरिकों के उपयोग के लिये ग्राविरिक्त नमक की ग्राव-श्यकता पढ़ जाने की अवस्था में राज्य को फलोदी एवं डीडवाना के नमक

१. स्मिय-आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इंग्डिया, पृ० ५७२ ।अर्सिन-गजेटिर आफ वीकानेर, पृ० ३२८ ।

उद्योगों से एक वर्ष में बीस हजार मन तक नमक उपलब्ध करने के श्राधिकार संधि द्वारा प्राप्त थे तथा इस नमक का मूल्य आठ आने मन निर्धारित किया गया था। इसके आतिरिक्त क्रय के समय नमक पर जो कर वस्ल करने योग्य होता था, राज्य से उसकी आधी रियायती दर बस्ल की जाती थी। इस संधि की शार्तों के अनुसार उसके कुछ अनुबन्धों का पालन करने के लिथे ब्रिटिश सरकार द्वारा महाराजा को छः हजार रुपये की एक वार्षिक धनराशि दिया जाना भी निश्चित हुआ था।

पोलिटिकल एजेंट ने जोधपुर सरकार द्वारा वावरियों तथा ऋन्य दरयुस्वभाव वन जातियों के सम्बन्ध में अपनाये गये उपायों तथा उनके परिणाम स्वरूप सुव्यवस्था के प्रतिपालन में होने वाली उन्नति की श्रोर महाराजा का ध्यान त्र्याकिषत किया एवं उनके समरूप उपायों का बीकानेर में प्रयोग करने के लिये महाराजा से आग्रह किया । इस मन्त्रणा का ग्रमुसरण करते हुये चेत्र में दस थानों की स्थापना कर दी गई तथा उनके मध्य एक सौ बारह सवार वांट दिये गये। इस पर भी विभिन्न राज्यों के कर्मचारियों में सहकारिता का अभाव होने के कारण यह बात ध्यान में त्राई कि ऋपराधियों द्वारा प्रयुक्त ऐसे मार्गों पर उनका पीछा नहीं किया जाता था जो मार्ग एक राज्य के शासनत्तेत्र से दूसरे राज्य के शासनत्तेत्र में जाते थे श्रौर इसके फलस्वरूप श्रपराधी लोगों के लिये बन्धन मुक्त व स्वतंत्र रह सकना सम्भव हो गया था । सन् १८८० में पोलिटिकल एजेंट ने महाराजा से इस विषय में त्रागे कारवाई करने का त्राग्रह किया तथा महाराजा द्वारा सीमावर्ती समस्त थानों व वहां के कर्मचारियों को खोजियों को पूर्ण सहयोग देने के सख्त आदेश जारी कर दिये गये। एक नया गिराई अफसर नियुक्त किया गया जिसे हर एक थाने का निरीक्त्ए करने का ग्रादेश दिया गया।

उन प्राचीन प्रचलन को जिसके अन्तर्गत महाराजा के लिये पट्टे दारों को घुड़सवार, शुतर सवार व प्यादे सिपाही जुटाने पड़ते थे, महा-राजा सरदारसिंह के शासन काल में ही नकद भुगतान करने के रूप में परिवर्तित कर दिया गया था एवं इस प्रकार निर्धारित की गई धन राशि का दस वपों की अवधि के परचात विशेष परिस्थितियों के आधार पर

१. पित्तसन-प कलेक्शन आफ ट्रीटीज, इनगेजमेन्टस एन्ड सनद्स, भाग ३, पृ० २७६--- व २६३--६५ ।

तंशोधन किया जा सकता था। श्रतः यह संशोधन सन् १८७६ में हो जाना चाहिये था परन्तु महाराजा द्वांगरसिंह ने सन् १८८१ तक इस विषय में कोई मी कारवाई नहीं की। २६ श्रागस्त १८८१ को उन्होंने गवर्नर जनरल के एजेंट के सहायक मेजर राबर्ट्स को एक खरीता मेजा जिसमें उसे श्रायत किया गया था कि जब तक मारत सरकार के किसी एक श्राधकारी द्वारा 'भू-प्रबन्ध को कार्योन्वित नहीं कर लिया जायगा तब तक मांगों का संशोधन नहीं करेंगे एवं उन्होंने उससे ऐसे किसी श्राधकारी की सेवाशों को राज्य को उधार देने की मी मांग की। इस खरीते की एक प्रति गवर्नर जनरल के स्थानापन्न एजेंट को मी मेजी गई।

इसी बीच महाराजा ने हनुमानगढ़ तहसील स्थित राजभूमि के सर्वेच्या की जिसे जून १८८२ में वस्तुतः ब्रारम्म कर दिया गया। ब्राव्ह्यर १८८२ में महाजन, चीदासर, भूकरका, रावतसर, सांखू, पूगल, वाय, सीधमुख, गोपालपुरा, सांडवा, जैतपुर, चाडवास, ब्राजीतपुरा तथा कुछ ब्रान्य जागीरों के ठाकुरों ने ब्राविदन किया कि सर्वेच्या को कार्यान्त्रित करने के स्थान पर महाराजा तथा पट्टे दारों द्वारा मनोनीत किये गये पांच व्यक्तियों की एक कमेटी द्वारा गत वर्षों के वही खातों के ब्राधार पर रेख के परिमाण में संशोधन कर दिया जाय। महाराजा ने इन प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया एवं तदनुसार एक कमेटी नियुक्त की गई जिसने इस विपय पर विचार करके ब्रापनी सिफारिशें प्रस्तुत करदी। महाराजा द्वारा ये सिफारिशें स्वीकार करली गई तथा जागीरदारों की पूर्ण सहमति से इक्कीस वर्षों के लिये 'रेख रकम' निर्धारित कर दी।

किन्तु जब सन् १८८३ की परवरी में गवर्नर जनरल के एजेंट कर्नल बेंडफोर्ड बीकानेर श्राये तो चार पट्टेदारों ने जो उपर्युक्त कमेटी के सदस्य भी थे, उनसे श्रावेदन किया कि उन्होंने दवाव से लाचार होकर सिफारिशों पर हस्ताचर किये थे। जब एजेन्ट ने महाराजा का इस श्रोर ध्यान श्राकर्षित किया तो महाराजा ने उसे विश्वास दिला दिया कि वह शिकायत निराधार थी। कर्नल बेंडफोर्ड के बीकानेर से विदा हो जाने के पश्चात महाराजा ने उन परिवादियों को बुलवाया किन्तु उनमें से केवल भ्करका के ठाकुर ही श्राये। वाकी के व्यक्तियों ने देशनोक प्रस्थान किया जहां कुछ श्रन्य पट्टेदार भी उनमें सम्मिलित हो गये। वहां से वे लोग बीदासर चले गये तथा बीकानेर श्राने से इन्कार कर दिया। महाराजा ने उन श्रनुशासनहीन पट्टेदारों को समभा बुभा कर मार्ग पर लाने की प्रवल

चेष्टा की परन्तु वह निष्फल रही । क्योंकि महाराजा व जागीरदारों के सम्बन्ध निरन्तर विगड़ते जा रहे थे, अतः उनमें पुनः मैत्री स्थापित करने के उद्देश्य से कप्तान तालबोट को नियुक्त किया गया। परन्तु वह भी इसं कार्य में असफल रहे । इसके विपरीत जागीरदारों ने कप्तान तालबोट को चुनौती दे दी तथा अन्ततः खुलमखुला विद्रोह का मार्ग अपना लिया। उन्होंने अपने गढों की रचार्थ गढसेनाएं नियुक्त कर दी तथा सशस्त्र प्रतिरोध के लिये किटवद्ध हो गये। जागीरदारों के इस प्रतिरोध का दमन करने के उद्देश्य से महाराजा ने तालबोट की सहमित से अपनी सेना को उनके गढों के विरुद्ध अन्य करने का आदेश देने का निश्चय किया। महाजन की गढी ने दो महिने के घेरे के पश्चात आतम समर्पण कर दिया और इसी प्रकार वीदासर की गढी ने मो घटने टेक दिये तथा प्रतिरोधी जागीरदारों को हिरासत में ले लिया गया। परन्तु बीदासर किर से दुराचारियों का केन्द्र न बनने पावे इस सम्भावना का निवारण करने के उद्देश्य से ब्रिटिश सैपर्स व माईनर्स द्वारा जनवरी सन् १८८४ को बीदासर की गढी को भूमिसात् कर दिया गया।

महाराजा गंगासिंह की सराहना करते हुये सर वाल्टर लारेन्स द्वारा इस घटना का संचिप्त किन्तु सुवर्णित विवरण दिया गया है जो यथा निम्नांकित है —

प्रमने शासकों को चुनौती दे दी तथा महाराजा व उनके विद्रोही जागीरदारों के बीच युद्ध रोकने के लिये भारत सरकार ने अत्यधिक अनिच्छा से एक जिगेड भेजने का निश्चय किया। यह एक शिक्तशाली ब्रिगेड थी किन्तु गहरी बालू रेत के कारण तथा पानी के दुष्पाप्य होने के कारण बीदासर तक की यात्रा बहुत दुष्कर थी। फारसी घोड़ों को प्रयोग में लाने चाले इस अन्तिम तोपखाने की तोपें बालू रेत में फंस गई तथा मंथर गित से चलने वाले हाथियों से इन्हें खिचवाया गया। रात्रि को बहुत ठएड पड़ती थी। बीदासर में बहादुरसिंह, जो प्रमुख बिद्रोहियों में से एक था, अन्य बागी जागीरदार तथा उनके अनुयायी अनिगनत शस्त्रास्त्रों से सुसिज्जित होकर गढ में एकत्रित हुये थे। नगर की दीत्रा प्राचीन शैली की बन्दूकों से मानों भरपूर लदी हुई थीं। ऐसा पुराकालीन संग्रह मैंने कभी नहीं देखा था। किन्तु वीदासर की शिक्त उन मिट्टी की ऊँची दीवारों में निहित थी जिनके शिखर बेटव कांटों से ढके हुये थे। अतः ब्रिगेडियर जनरल

गिलैर्पा ने मुफ्तें कहा कि ग्राक्रमण करके इस स्थान को जीतना कठिन होगा । सर एडवर्ड ब्रोडफोर्ड को यथार्थतः राजपूतों के निराशोन्मत शौर्य का विचार त्या रहा था तथा वे उस समय की कल्पना करके सिहर उठे ये जव राजपूत जोहर की शरण लेंगे तथा अपनी स्त्रियों को जलाने के पश्चात युद्ध करते हुये वीरगति को प्राप्त करने के लिये शत्रु पर टूट पहेंगे। जब विद्रोहियों ने समभौते को वातचीत करने से इन्कार कर दिया तो उन्हें बहुत खेद हुन्रा ग्रौर वे चिन्तित हो उठे । ग्रतः बीदासर पर ग्राक्रमण करने का निरुचय कर लिया गया । किन्तु ऋर्घरात्रि के समय विद्रोहियों के चार प्रमुख नेताय्रों द्वारा मुक्ते मेरे शिखर में जगाया गया । उन्होने विना किसी शर्त के ब्रात्मसमर्पण कर दिया । मैं शीव्रता पूर्वक सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड के शिखर में पहुँचा तथा उन्हे यह शुभ समाचार सुनाया तद्वपरांत जनरल गिलैर्या को इससे ग्रवगत कराया गया ग्रौर कुछ विचार विमर्श के पश्चात यह निर्णय किया गया कि वीदासर के गढ को गिरा दिया जाना चाहिये तथा सैन्यदल को वापस नसीराबाद कृच करने का ग्रादेश दे दिया जाय । उन चार प्रमुख विद्रोही नेतास्त्रों को बीकानेर राज्य से देश निकाला दिया जाना तय किया गया ।

त्रागामी प्रातः मैने एक विचित्र दृश्य देखा। वीदासर का गढ़ धरती से ग्राखण्ड ऊपर उठा ग्रीर फिर टुकड़े टुकड़े होकर गर्द श्रीर लपटों की गोद में गिर पड़ा। सफरमैना ने ग्रपना कार्य सम्पूर्ण निःशेषता से किया था। १७७

वीकानेर श्रीर जयपुर के बीच सीमा सम्बन्धी बहुत पुराना भगड़ा या जिसका सम्बन्ध टमकोर (जयपुर में), हडियाल (बीकानेर में), खोरी

[.] सोहनलाल-तवारीस बीकानर, पृ० २२२-२६ ।
पन्निकर-हिज हाइनेस महाराजा आफ बीकानेर, ए बायोग्राफी,
पृ० ३६०-६१ ।
महकमा सास जयपुर फाइल नम्बर १५० 'असंतुष्ट व अमक्त जागीरदारों
को बीकानेर दरबार द्वारा दिया गया दण्ड" पृ० ७४-६२ ।
इस यीसिस के लेखक को बचपन की उस घटना का अब मी मलीमांति
स्मरण है जब सन् १६३४ में सर बाल्टर लारेंस बीकानेर आये थे
और उन्होंने उनसे बातचीत की यी । सर लारेंस उस समय बहुत बयोबुद्ध
हो चुके थे । उन्होंने स्वयं लेखक को इस घटना का वर्णन सुनाया था जो
आज मी लेखक की स्मृति में बड़ी सजीवता के साथ विद्यमान है ।

(जयपुर में), तथा मानगांव (बीकानेर में) से था। पोलिटिकल एजेंट ने मध्यस्थता की ग्रीर दोनों राज्यों के सन्तोष के ग्रानुरूप इस भगड़े को निपटा दिया। इसी प्रकार हिसार के ग्राम बोर्ष व बीकानेर के ग्राम मोगाना के बीच चार बीघा भूमि के लिये जो मगड़ा चल रहा था उसका फैसला हिसार के ग्रातिरिक्त सहायक कमिश्नर व राजगढ़ के हाकिम के बीच हुई एक बैठक में फर दिया गया।

विद्रोही जागीरदारों को ग्राभिभृत कर लिये जाने. के तुरन्त बाद राज्य में प्रवर्तमान ऋशान्ति व ऋज्यवस्था को निर्मूल करने के लिये तथा प्रशासन का स्तर उन्नत करने के लिये कप्तान तालवीट को वीकानेर में स्यायी पोलिटिकल एजेन्ट के पद पर नियुक्त कर दिया गया । यहां तक कि राज्य के कुप्रशासन के सम्बन्ध में सन् १८८३ में लार्ड रिपन को महाराजा इ गरसिंह को एक खरीता भेजना पड़ा जिसमें उसने लिखा-^{रर}बीकानेर को भविष्य में ऋशान्ति व ऋन्यवस्था से उस समय तक सुरिच्चत नहीं रखा जा सकेगा जब तक राज्य के विभिन्न प्रदेशों के प्रशासन में आपका हाथ न वंटाया जाय। इसके लिये चाहे कुछ समय के लिये ही सही बीकानेर में एक ब्रिटिश अधिकारी की निरन्तर उपस्थिति व उसका समर्थन श्रनिवार्थ है।" लार्ड रिपन ने श्रागे लिखा कि क्योंकि वह भारतीय राज्यों के ज्ञान्तरिक प्रशासन में हस्तचीप करने के बिल्कुल विरुद्ध थे ज्ञतः कप्तान तालबोट को जिसको कि रेजीडैंट पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया जा रहा या उन्होंने ऐसा कोई स्रादेश नहीं दिया था जिसके फलस्वरूप वह राज्य सरकार का प्रत्यन्त नियन्त्रण श्रपने हायों में लेले किन्त हिज हाइनेस का उससे मन्त्रणा करना तथा उसके परामर्श से निर्देशित होना ग्रावश्यक था।

श्रपनी प्रजा के कल्याणकार्य करने के लिये तथा भ्रण्टाचार व भाई भतीजे वाद को निमूल करने के लिये महाराजा स्वयं बहुत उत्सुक थे। कप्तान तालबोट की सलाह से उन्होंने कच्छ के श्रमीमुहम्मद को श्रपना दीवान नियुक्त किया एवं स्थानीय व्यक्तियों के स्थान पर राज्य के बाहर से लाये हुये श्रनेक कर्मचारियों को नियुक्त किया। महाराजा में शासक की

२. कर्नल त्रार. सी. ब्रेडफोर्ड के ता० ३१--१२--१८८३ व १--६--१८८४ के खरीते।

२. लार्ड रिपन का २१ दिसम्बर १८८३ का खरीता । परिज्ञिष्ट १३ ।

जन्मजात प्रतिमा थी त्र्यौर उन्हें पड़ौस के ब्रिटिश भारतीय शासन चेत्रों में काम में लाई जाने वाली प्रशासन की ग्राधुनिक प्रणालियों के महत्व का मुल्यांकन करने में देर न लगी और उन्होंने उनको तुरन्त अपना लिया। न्यायिक मामलों की जांच करने के लिये उन्होंने पृथक न्यायालयों की स्थापना की तथा दीवानी व फीजदारी के कानूनों की विधिवद कर दिया गया । पुलिस विभाग का पुनर्गठन किया गया । कुछ जागीरदारों द्वारा उपभोग किये जाने वाले फीजदारी व दीवानी के ऋधिकारों को वापस ले लिया गया । ग्रावकारी विभाग भी खोला गया तथा उसके सफलतापूर्वक संचालन के लिये नियमों व नियन्त्रणों का गठन किया गया। इसके ग्रतिरिक्त ग्रानेक स्थानों पर डाकघर, पाठशालायें व चिकित्सालय खोले गये। यह सब कुछ ब्रिटिश नेतृत्व में किया गया। सन् १८८५ में भ-प्रवत्य को अस्तित्व में लाया गया तथा सारे सरकारी कर्मनारियों की श्रे शियों में संशोधन किया गया ताकि हर प्रकार के अध्याचार को सार्थकता से निम् ल किया जा सके। वार्षिक वजट वनाने की एक प्रणाली भी प्रहण की गई। सन् १८८६ में बीकानेर शहर में विजली का उपस्थापन किया गया। एक श्रीषधालय खोला गया जो श्रत्यन्त लोकप्रिय हुआ। प्रशासन का संचा-लन एक परिषद द्वारा होता था जो महाराजा के प्रत्यन्त निर्देशन में कार्य करती थी।

महाराज ट्रंगरसिंह के शासन काल में ब्रिटिश प्रमाव अपनी पराकाष्ठा को पहुँच चुका था। ऐसा प्रधानतः इस कारण हुआ कि महाराजा अपने विद्रोही ठाकुरों के सम्मुख विवश थे तथा ब्रिटिश सहायता के विना उनको दवाने में असफल रहे थे। इसी कारण से बीकानेर में पोलिटिकल एजेंट की स्थायी नियुक्ति की गई थी। महाराजा ट्रंगरसिंह ने राज्य सम्बन्धो सारे महत्वपूर्ण विषयों से ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट को अवगत करने को नीति को अपना रखा था तथा उसके द्वारा दी गई उचित सलाह को अंगीकार करने के लिये सदा तैयार रहते थे। पोलिटिकल एजेंट मी इस बात में बड़ी सावधानी बरतता था कि उसके द्वारा कोई मी ऐसा कदम न उठा लिया जाय जिसका यह अर्थ निकाला जा सके कि वह राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तचेप कर रहा है। पोलिटिकल एजेंट ने सर्वोज्य सरकार को रिपोंट प्रस्तुत की कि उसका व्यवहार महाराजा के साथ बहुत ही मैत्रोपूर्ण रहा तथा उसकी सलाह पर ध्यान देने के लिये महाराजा सदैव तत्पर रहे और यद्यपि यह उसका

फर्तव्य था कि वह प्रशासन की अनियमितताओं को महाराजा के ध्यान में लाये। महाराजा को उसकी ख्रोर से अनुचित हस्तचेष किये जाने की किसी भी अवसर पर कोई शिकायत नहीं हुई । पोलिटिकल एजेंट ने ख्रागे लिखा कि अत्यन्त हर्ष का विषय है कि उसके परामर्श से उत्पन्न हुये लाभ को भी महाराजा ने प्रायः अंगीकार किया है। कष्तान तालबोट से मंत्रणा करके महाराजा ने काफी बड़ी संख्या में प्रशास कीय सुधार भी किये। कच्छ के अप्रमीमुहम्मद को दीवान के पद पर नियुक्त किया तथा अनुपयुक्त स्थानीय कर्मचारियों को हटाकर उनके स्थान पर राज्य के बाहर से प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों को लाये।

इस पर भी ऐसा प्रतीत होता है कि सन् १८८७ तक परिस्थिति फिर से प्रतिकृत होने लगी अतः लार्ड डफरिन ने अपने २ फरवरी सन् १८८७ के खरीते द्वारा महाराजा का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि राज्य के कारजार का संचालन भारत सरकार की आकांचाओं के अनुरूप नहीं हो रहा था तथा बीकानेर स्थित पोलिटिकल एजेंट द्वारा दी गई सलाह का अनुसरण करने के लिये महाराज अधिकांशतः प्रवृत्त नहीं थे । वाइसराय ने सुस्पष्ट शब्दों में प्रकट किया कि महाराजा को लिखने से उसका तात्पर्य महाराजा को एक वार फिर उस कारवाई से गम्भीरता पूर्वक सावधान करना था जिसको किया जाने पर जो परिणाम निकलेगा वह महाराजा के लिये नितांत अक्चिन कर होगा।

महाराजा डूंगरसिंह के शासन की कालायिष की विशिष्टता यह थी कि इसी अविध में राज्य प्रशासन की आधुनिक शैलियों का प्रथम बार प्रयोग किया गया था तथा यहीं से उस नये युग का प्रारम्भ होता है जो उनके उत्तराधिकारी महाराजा गंगासिंह के राज्यकाल में विक—सित व पुष्पित हुआ तथा यही युग प्राचीन व नवीन शासन प्रणालियों के बीच एक विभाजक रेखा के रूप में अविस्थत है। यद्यपि विटिश चीकानेर से हुई सन् १८१८ की संधि का सम्मान करते थे किन्तु इसके वावजूद उन्होंने विद्रोही जागीरदारों के कृत्यों द्वारा उत्पन्न परिस्थिति का लाभ उठाकर संधि की शतों के विरुद्ध राज्य के आन्तरिक प्रशासन में महाराजा का पथ प्रदर्शन करने के लिये रेजीडेंट पोलिटिकल एजेंट को

१. लार्ड टफरिन का ता० २-२-१८८७ का खरीता (लेखक के पास)-परिशिष्ठ १४।

थोप दिया तथा यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह भारतीय राज्यों को मित्रराष्ट्र नहीं किन्तु ऐसी इकाई समभते हैं जिनका उनसे अधीनस्य सहकार्य
का सम्बन्ध है तथा उनके भाग्य का उनको उनकी इच्छानुसार निदेश
करने का अधिकार है। लार्ड रिपन के ता० ३१ दिसम्बर के खरीते के
भावों से यह प्रवृति स्पष्टतया प्रतीत हो जाती है तथा इसका समर्थन
लार्ड उफरिन के दिनांक २ फरवरी १८८७ के उस खरीते से होता है
जिसमें उसने इस विषय में विना किसी बनावट के एवं स्पष्ट शब्दों में
महाराजा द्वारा रेजीडेंट पोलिटिकल एजेंट की सलाह की अवहेलना करने
पर जो परिणाम निकल सकते थे उन्हें महाराजा को हृदयंगम कराने का
प्रयास किया था।

महाराजा डूंगरसिंह ने निःसन्तान होने के कारण अपने जीवन काल में अपने किनष्ठ भाता गंगासिंह को अपने अधिकारी के रूप में गोद ले लिया था। गंगासिंह का जन्म १३ अक्टूबर सन् १८८० में हुआ या। महाराजा डूंगरसिंह के १६ अगस्त १८८७ को दिवंगत होने पर महाराजा गंगासिंह सात वर्ष की आयु में राज्य- सिंहासन के उत्तराधि— कारी बने। यद्यपि राज्य रूढि के अनुसार वे औपचारिक रूप से ३१ अगस्त सन् १८८७ को बीकानेर के इक्कीसवें शासक के रूप में रज्याभिपिक हुये अर्थात् स्वर्गीय महाराजा के द्वादशा संस्कार के पश्चात। भारत शासन के राजनैतिक विमाग ने राज्य के दैनिक राज्य शासन के प्रबन्ध के लिये अविलम्ब रीजेन्सी कौन्सिल (महा प्रतिनिधि मंडल) की स्थापना

गवर्नर जनरल के प्रथम सहायक एजेन्ट द्वारा उत्तराधिकार स्वीवृत तथा पुष्टिकृत, ऋत्यावश्यक तार सं० २४२६ जी. दिनांकित आबू २५ ऋगस्त १८५७; महाराजा वीकानेर के निजी सचिव कार्यांलय फाइल सं० शून्य, उत्तराधिकार सम्बन्धी पत्राविलयों की प्रतिलिपियों।

उत्तराधिकार की स्वीकृति, कर्नल सी. के. एम वाल्टर, गवर्नर जनरल के राजपूताना के एजेन्ट, द्वारा वहन की गई थी- खरीता दिनांकित १६-६-१८-७ तथा लार्ड डफरिन (गवर्नर जनरल) का खरीता ता० २१-१०-१८-७ के अनुसार (दोनों मेरे अधिकार में)।

अर्सिकन-गजेटियर आफ वीकानेर, पृ० ३२६ ।
 एचिसन-उपर्युक्त रचना में, भाग ३, पृ० २८०।

२. श्रोमा-वीकानेर राज्य का इतिहास भाग २, पृ० ४६२।



जनरल हिज हाईनेस महाराजा श्री गंगासिहजी बहादुर, बीकानेर १८८७-१६४३

·

की। कर्नल थार्टन जो उस समय बीकानेर में रेजिडेंट पोलिटिकल एजेंट थे रोजेन्सी कौन्सिल के समापति, दीवान ग्रमी मुहम्मदस्तां उप समापित एवं ठाकुर हरिसिंह (सांडवा), ठाकुर जगमाल सिंह (बाय), मेहता मंगलचंद, कविराज भैरोंदान तथा मुंशी सोहनलाल सदस्य नियत हुये।

सन् १८८५ के पश्चात भारतीय राज्यों के प्रति, जिनके शासकों को यह ग्राश्वासन दिया गया था कि उनकी स्थित सुरिच्ति रहेगी. तथा उनके ग्रिधिकारों, गौरव एवं प्रतिष्ठा का ग्रादर होगा, ग्रेंग्रेजी शासन की नीति में परिवर्तन दर्शनीय है। परन्तु यह सुरुचा बहुत महंगी सिद्ध हुई थी क्योंकि किसी बाह्य संकट या ग्रांतरिक विद्रोह की ग्राशंका उत्पन्न हो जाने पर इन भारतीय राज्यों द्वारा ग्रायरोध का कार्य कराने का प्रयोजन इन प्रतिभूतियों में ग्रान्तिनिहत था। लगभग ग्रार्घ शताब्दी पूर्व कृत मेल व मैत्री सम्बन्धी संधियों का वल समाप्त हो चुका था ग्रीर ये सन्धियां भारतीय शासन द्वारा उन पर (राज्यों पर) थोपी जाने वाली ग्रार्थव्यवस्था के ग्राधीनस्थ हो चुकी थीं। उस समय भारतीय राज्यों के प्रति ग्रांग्रेजी राज्य

मारतीय सुधार मू खंड श्रेणी ४ पुस्तक सं० ४६१९० (वस्वई विश्व विद्यालय पुस्तकालय)।

सर यामसन मुनरो का लार्ड हेर्स्टिंग्स को स्मृति पत्र ता॰ १९-५-९५५७। इसमें वर्णन है कि घरेलू अत्याचार तथा पारदेशिक आक्रमण से सुरक्ता भारतीय नरेशों के लिये महंगी पड़ी थी। उनको अपनी स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय आचरण तथा जो कुछ मनुष्य को आदरणीय बनाता है इत्यादि का बलिदान करना पड़ा था।

कर्नल स्लीमैन की मिवप्य वाणी कि ये राजा लोग एक दिन संकट में सहायक स्वरूप प्रमाणित होंगे, सन् १८५७ की घटनाओं से पूर्णरूप में प्रमाणित हुई।

एचिसन-उपयु क्त रचना में, माग ३, पृ० २८०।
 श्रोमा-वीकानेर राज्य का इतिहास, भाग २, पृ० ४६३।
 श्रर्स किन-गजेटियर श्राफ वीकानेर, पृ० ३२६।

२. श्रीभा-बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग २, पृ० ४६३।

महारानी निक्टोरिया की सन् १८५८ की घोषणा। इसमें वचन दिया गया
 था- "हम देशी राज्यों के अधिकारों, गौरव तथा सम्मान को अपना निजी समम्म कर आदर करेंगे।"

४. थामसन -द मेकिंग ऋॉफ द इंडियन प्रिन्सेज (भारतीय राजाओं का निर्माण) पृ० २७३ तथा २८६।

की नीति में एक ग्रत्यधिक महत्यपूर्ण परिवर्तन को हुन्ना वह गारतीय राज्यों के न्नान्तरिक प्रशासन में हस्तक्षेप करने की नीति थी। वीकानर राज्य के साथ ग्रंग्रेजी राज्य के सम्बन्धों में जिस सीमा तक इस नीति का प्राहुर्माय हुन्ना उसका हम यहां पर लिहायलोकन करेंगे। इस नीति के पूर्ण प्रभाव तथा महाराजा गंगासिंह पर होने चाली इसकी प्रतिक्रिया को समभने के लिये महाराजा की शिक्षा व प्रशिक्षण का यहां पर संक्षिप्त विवरण देना संगत होगा जिन्होंने ग्राने वाले वयों में उनको राष्ट्रीय एवं ग्रन्तर्थप्रीय के सेत्रों में स्विख्यात राजनीतिश बनाया।

महाराजा गंगासिंह की प्रारम्भिक शिक्ता मेयो कालेज अजमेर के पं. रामचन्द्र दुवे की देखरेख में बीकानेर में हुई थी और उसके पश्चात सन् १८८६ से सन् १८६४ तक मेयो कालेज में एवं तत्पश्चात १८६५ से १८६८ तक सर ब्रायन इनर्टन के अधीन, जिनके व्यक्तित्व का महाराजा पर महान प्रभाव पड़ा था। उन्होंने १८६७ में लेफ्टिनेन्ट कर्नल जे. डी. वेल की देखरेख में देवली छावनी में सैनिक शिक्ता भी प्राप्त

श. यामसन—द मेकिंग आव द इंडियन प्रिन्सेज, पृ० २८६। उनकी सिन्धयों के शब्दों को ध्यान में रखते हुये यह मानना होगा कि राजाओं द्वारा व्यापक रूप से अनुभूत कष्ट आज प्रमाणित है। सर्व स्थानों में आन्तरिक कार्यों में प्रचुर मात्रा में हस्तत्त्वेष हुआ है। राजनै तिक अधिकारियों के प्राधिकार तथा उनकी उपस्थिति नाराजी से देखी जाती है। एक महान महाराजा ने (संभवतः महाराजा गंगासिंह जी ने) जिनकी सेवाएँ साम्राज्यिक तथा भारती थीं मुस्तसे कहा कि उनके स्वयं के यहां केवल एक ऐसा रेजिडेन्ट या जिसको उन्होंने नापसंद नहीं किया था।

इसका अर्थ यह नहीं है कि संधि के अनुबन्धों के अनुसार न होते हुये भी समस्त हस्तक्षेप अन्यायिक थे। • • • विगत सो वर्षों में सबोंपिर सत्ता द्वारा प्रधान हस्तक्षेप के अनेक उदाहरण हैं। बड़ोदा के एक राजा को गद्दी से उत्तरना पड़ा था तथा इन्दोर के एक शासक को भी (अन्य एक को राज्य छोहने के लिये फुसलाया गया या फंसाया गया था)। विगत समय में ही अलबर नामा तथा अन्य राज्यों से उनके शासकों को अलग कर दिया गया था। सबोंपिर सत्ता कमी कमी वर्बर दण्ड दैने पर उतारू हुई है। को। उनके शिक्तों द्वारा प्रदत्त ग्राचार शील ध्यान के कारण महाराजा ने पूर्व व पश्चिम में जो कुछ ग्रज्छा था उसको हृदयंगामी किया ग्रीर उनमें शिष्टता एवं सौजन्य की भावना का विकास हुग्रा। ग्रपने ग्रिषकारों तथा विशेपाधिकारों के लिये जहां संघर्ष ग्रावश्यक था वे एक हदनिष्ठ योद्धा थे तथा वे एक उत्साही देश मक्त थे। उन्होंने एक समय कितना उपयुक्त कहा है — "हम भारतीय मूर्ख होंगे यदि इस देश में ग्रापके राजनैतिक जीवन में जो कुछ ग्रज्छा है उसकी ग्रोर गहरा ध्यान नहीं देंगे। यह ग्रीर भी मूर्खता होगी यदि हम ग्रापके राष्ट्रीय जीवन की ग्रज्छी बातों को सममने के बाद भी जो कुछ ग्रापकी संस्थान्त्रों तथा प्रणाली में ग्रज्छाइयां है उनको हमारी परिस्थितियों के ग्रनुसार हृदयंगम करना नहीं चाहेंगे। " ध

हम देख चुके हैं कि महाराजा सरदार सिंह के शासन काल से अंगरेजों ने राज्य के आन्तरिक प्रशासन में हस्तचेप करने की नीति को अपनायां। महाराजा ड्रंगरसिंह के निधन के पश्चात् यह प्रवृत्ति और मी बलवान हो गई और महाराजा गंगासिंह को अवयस्कता की अवधि में रीजेन्सी कौन्सिल (महाप्रतिनिधि मंडल) द्वारा संचालित प्रशासन वस्तुतः एक अंगरेजी रिव्हत राज्य के रूप में अधोगत हो गया था। अवयस्कता की इसी अवधि के पर्यन्त बीकानेर से जोधपुर तक रेल पथ निर्माण करने के (सन् १८८६) तथा मुद्राओं को ढालने (१८६३) के सम्बन्ध में अंग्रेजी राज्य तथा वीकानेर राज्य के बीच समभौते हुये। सन् १८६८ से जब महाराजा ने वयस्कता प्राप्त की, सन् १६०८ तक जब महाराजा को सत्ता के समग्र सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हुये उनको अंग्रेजों के हस्तचेप करने की अत्याचार पूर्ण नीति के विरुद्ध, जिनके राजनीतिक अधिकारी अपने अधिकारों का दम्मशील प्रदर्शन करने का कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने

श्रर्सिकन—गजेटियर श्रॉफ बीकानेर, ए० ३२६ ।
 श्रोम्का—बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग २, पृ० ४६४, ४६४, ४६७ तथा ५०० ।

सहाराजा गंगासिंह का मापण ता० २४--४-१६१७ (पैरा ११), पम्पायर पार्लमेन्टरी असोसियेशन (युनाइटेड किंगडम ब्रांच) द्वारा भारतीय प्रतिनिधियों के सम्मान में हाउस ऑफ कामन्स के हारकोर्ट रूम में आयो जित मध्याह मोज के अवसर पर । बीकानेर महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल नम्बर २२७=१२६ भाग २ वी ।

देते थे, वस्तुतः एक घमेयुद्ध छेड़ना पड़ा ।

सन् १८६६ में वाइसराय के बीकानेर के दौरे के सम्बन्ध में तथा इस दौरे से सम्बन्धित कार्यक्रम के सम्बन्ध में महाराजा द्वारा संयो— गिक सुभाव भी दिये जाने के विचार का, वीकानेर स्थित तत्कालीन पोलिटिकल एजेंट कप्तान वेली समर्थक नहीं था । मध्यान्ह मोज में सम्मिलत होने वाले सरदारों की संख्या को परिसीमित करने के विपय में वह महाराजा से सहमत नहीं हुआ किन्तु आगो चल कर उसने यहां तक कह दिया कि जागीरदारों द्वारा लाये गये अनुगामियों की संख्या से तो उस आयोजन के सुन्दरतम भाग की रचना होगी । वेली ने महाराजा से यह अनुरोध भी किया कि स्टेशन से लेकर वाइसराय के निवास स्थान तक मार्ग के दोनों और सरदारों को नियुक्त किया जाय। विधि की विडम्बना देखिये कि केवल अस्सी वर्ष पूर्व की गई मेल व मैत्री की संधि की पूर्ण उपेना की जा रही थी और महाराजा द्वारा अपने अतिथि का मनोरंजन करने के विषय में भी पोलिटिकल एजेंट अपनी मनचाही थोपने की हद तक जा रहा था।

पुनश्चः श्रकाल सहायता सम्बन्धी उपायों पर विचार विमर्ष करते समय जब राज्य में निर्यात कर लागू करने का एक सुकाव सामने रखा गया तो वेली ने निर्देश किया कि वह बिनयों के सम्बन्ध में श्राव—श्यक नहीं या किन्तु इसके विपरीत बिनयों को प्रसन्न रखना श्रिषक श्रेय या ताकि व्यापार वांछनीय हाथों में रह सके । उसने महाराजा को सूचित किया कि वह उनके पास एक प्रार्थना पत्र मेज रहा है जो इस सम्बन्ध में उसे श्रार्ज नदास नामक एक व्यक्ति के भाई से प्राप्त हुआ था । पोलिटिकल एजेन्ट ने महाराजा को विश्वास दिलाया कि प्रजा के विरुद्ध वह उनका बाह्यतः समर्थन करेगा किन्तु इसके साथ साथ महाराजा से प्रजा के हितों की सुरचा करना भी उसका कर्तव्य था।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल संख्या ११६ १५-कप्तान एस. एफ. वेली का पत्र ता० १२-६-१५६६, महाराजा गंगासिंह के नाम ।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ११६।१५ महाराजा गंगासिंह को कप्तान एस. एफ. वेली का पत्र ता० १२-६-१८६।

१३ दिसम्बर १८६६ को कप्तान वेली ने महाराजा को लिखकर स्चित किया कि बीकानेर पुलिस के एक कर्मचारी लेखराम के सम्बन्धियों से उसे ग्रानेक प्रार्थना पत्र प्राप्त हुये हैं। लेखराम को भारतीय दराड विधान की धारा ३३० के अन्तर्गत एक वर्ष के कारावास तथा ५० रु. जुर्माना का दराइ दिया गया था । कप्तान वेली ने इस मामले में महाराजा की टिप्पणी मांगी। १४ दिसम्बर १८६६ को पोलिटिकल एजेन्ट ने फिर महाराजा को लिखा कि उसे मूलचन्द माली नामक एक व्यक्ति से एक प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ है। मूलचन्द माली उस समय जेल मोग रहा था! पोलिटिकल एजेन्ट ने इस मामले पर भी महाराजा को उनकी टिप्पणी मेजने के लिये ैं कहा | १ १८ दिसम्बर १८६६ को पोलिटिकल एजेन्ट द्वारा महाराजा को उन टिप्पिएयों के भेजने के लिये पुनः स्मरण कराया गया। जिस ढ़ंग से महाराजा से उन टिप्पंगियों के भेजने की मांग की गई थी वह उन्हें पसंद नहीं था अतएव अपने ता॰ १८ दिसवम १८६६ के उत्तर में महाराजा ने संकेत किया कि यद्यपि ऐसी रिपोटों का आवाहन करने से व्यक्तिगत रूप से उन्हें कोई त्रापत्ति नहीं थी फिर भी उनके विचार से यदि कोई व्यक्ति किसी भी प्रकार के कच्ट से दुःखित है तो यह कच्ट निवारण के लिये राज्य के ही उच ग्रधिकारियों के पास जा सकता था। ऐसे ग्रावेदन पत्रों की त्र्योर ध्यान

१. वीकानेर के महाराजा के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० ११६।१६-महाराजा गंगासिंह जी को लिखित कप्तान एस. एफ. बेली का पत्र ता० १३-१२-१६६ ।

लेखराम बीकानेर राज्य की सेवा में एक पुलिस जमादार था। उसकी अपील कोर्ट (पुनर्विचार न्यायालय) के जज (न्यायाधीश) द्वारा धारा २३० आई. पी. सी. के अधीन दिख्त किया गया था। इस अभियोगी ने सामन्य कार्यविधि के अनुसार कौन्सिल को अपील करने से पूर्व कप्तान बेली को आवेदन पत्र दिया था।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० १९६।१५,
 महाराजा गंगासिंह को लिखित कप्तान वेली का पत्र ता० १४--१२-१८६।

मूलचन्द माली वीकानेर राज्य के निर्माण विभाग (पी. डब्ल्यू. हो.) का कर्मचारी था। उस पर सरकारी रकम की ठमी का अभियोग या तथा अपील कोई (पुनर्विचार न्यायालय) के न्यायधीश द्वारा उसे दण्ड दिया गया था।

वही, महाराजा गंगासिंह जी को कप्तान वेली का पत्र ता० १५-११-१६६।

देने से तथा ऐसी रिपोर्टो का ग्रावाहन करने से महाराजा के प्रमुख का निरादर करने का आवेदकों का साहस बढाता है। महाराजा ने कप्तान वेली को स्मरण दिलाया कि उसके पूर्वीधिकारी ने सदैव ऐसे ग्राविदन पत्रों को उनके निर्माय के लिये उनको (महाराजा को) प्रेषित करने की नीति को ग्रपनाये रखा या। किन्तु कप्तान वेली ने इसके प्रत्युत्तर में १६ दिसम्बर १८६६ के अपने पत्र में लिखा कि यह पोलिटिकल एर्जेंट का कत्तव्य था कि जिस राज्य में वह श्राधिकार पत्र के साथ भेजा गया हो उसका शासन समुचित व ठीक ढंग से किया जा रहा है इससे वह अपने ग्राप को संतुष्ट करे अथवा वह राज्य किस प्रकार शासित हो रहा है इससे श्रपने श्राप को श्राभिज्ञ रखे । उसने तर्क किया कि एक पोलिटिकल एजेंट जिसने आवेदन पत्रों को निर्ण्य के लिये शासक को प्रेषित कर दिया हो श्रीर जिसने यह पता लगाने का कभी प्रयत्न नहीं किया हो कि वास्तविकता क्या है वह अपना कार्य नहीं कर रहा था और केवल वेतन उपार्जन करता था। इसके अतिरिक्त उसने यह भी कहा कि यदि वह उन आवेदन पत्रों की उपेचा करने लग जायेगा तो उसका परिणाम यह होगा कि आवे-दक सीघे गवर्नर जनरल के एजेंट तथा भारत सरकार के पास पहुंचेगे । तब उससे उस विषय पर रिपोर्ट मांगी जावेगी तथा उसे स्त्राधिकारिक जांच पड़ताल करनी पड़ेगी । इस श्रीर ध्यान देना रोचक होगा कि जब महाराजा ने गवर्नर जनरल के राजपूताने के लिये तत्कालीन एजेंट कर्नल विन्सेट का एक व्यक्तिगत पत्र में इस विषय की श्रोर ध्यान श्रकर्षित किया तो उसने न केवल दृढता से यह कहा कि पोलिटिकल एजेंट अपने अधि-कारों की सीमा में था विलक महाराजा को उनके विरोध पत्र को वापस लेने की सलाह दी क्योंकि महाराजा के पत्र के लिये एजेंसी की फाइलों में रहने देने को वह उचित नहीं समभता था।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ११९।१४-क्सान देली को महाराजा निगसिंह जी का पत्र ता० १५-१२-१६६।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० ११६।१५महाराजा गंगासिंहनी को कप्तान एस. एफ. वेली का पत्र ता० १६-१२-१८६।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० १२४।१५
 ए० १६ - महाराजा गंगासिंह जी को कर्नेल एच. ए. विन्सेन्ट का पत्र ता० १७-१-१६००।

एक ग्रन्य रोचक घटना का भी, जो जनवरी १६०० में घटित हुई, ग्रोर जो यद्यि एक तुच्छ प्रकार की है किन्तु पोलिटिकल एजेन्टों की वृतियों को स्पष्ट रूप में उभारती है, यहां पर उल्लेख किया जाता है। कप्तान वेली हनुमानगढ जिले के परिभ्रमण के लिये प्रस्थान करने वाला था ग्रतः महाराजा ने शिष्टाचार के नाते उसको शिकार करने वाला था ग्रतः महाराजा ने शिष्टाचार के नाते उसको शिकार करना चाहे तो उसे किसी ग्रमुखद घटना का सामना न करना पड़े क्योंकि राज्य में पशुन्त्रों का शिकार ग्रायन्त्रित था। किन्तु पोलिटिकल एजेंट ने उसे ग्राक्रमणात्मक ग्राचार समभा तथा उसने ग्रपने ता. २६ जनवरी १६०० के पत्र में लिखा कि महाराजा द्वारा उसे शिकार का लाइसेन्स (ग्रनुजापत्र) मेजे जाने पर वह ग्रत्यन्त विनोदित हुग्रा था तथा वह उसे (ग्रनुजापत्र) को मंदवा के रखेगा ग्रीर उसे वीकानेर के उन्नत राज्य के जहां पर पोलिटिकल एजेंट भी बिना लाइसेन्स (ग्रनुजापत्र) के शिकार नहीं खेल सकता उदाहरण के तौर पर ग्रपने सम्भ्राता व ग्रन्य लोगों को दिखायेगा। व

श्रंश्रेजी इस्तच्चेप तथा नौकरशाही की उद्धतत्ता किस हद तक पहुँच चुकी थी, निम्नांकित घटना से उसका हमें श्रीर भी सुस्पष्ट चित्र मिलता है। जब सन् १८६८ में महाराजा गंगासिंह की श्रठारवीं वर्षगांठ पर उनको सम्पूर्ण श्राधकारों से सुसज्जित किया जा रहा था तो उस श्रवसर पर पोलिटिकल विभाग द्वारा तीन महत्वपूर्ण नियंत्रण थोप दिये गये। यद्यपि उन नियन्त्रणों को गुप्त रखा गया था फिर भी वे एक तेजस्वी राजा को जो किसी भी प्रकार का इस्तच्चेप सहन नहीं कर सकता था कोषित करने के लिये प्रयीप्त थे। उनकी श्रद्धारवीं वर्ष गांठ से लेकर सन् १६४३ में उनकी मृत्यु तक श्रंग्रेजी इस्तच्चेप के विरुद्ध महाराजा द्वारा की गई एक

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ११६।१५- कप्तान एस. एफ. वेली को महाराजा गंगासिंह जी का पत्र ता० २४-१-१६०० ।

२. वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल संव १९६।१५- महाराजा गंगासिंह जी की कप्तान एस. एफ. वेली का पत्र ताव २६-१-१६०० ।

श्रनपेचित रूप से लम्बी लड़ाई हमें हिन्टगोचर होती है। जैसे समय बीतता गया तथा महाराजा गंगासिंह की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती गयी हस्तच्चेप के उदाहरण कुछ कम हो गये। परन्तु श्रंग्रेजी सरकार के श्रनिधकार हस्तच्चेप के विरुद्ध श्रपने तथा श्रपने भाई राजाश्रों के श्रिधकारों की सुरचा के लिये उनका जीवन सब प्रकार से एक निरंतर संग्राम था।

जो तीन गुप्त नियन्त्रण पोलिटिकल विभाग ने उन पर ग्रारोपित किये थे वे थे —

- (१) कि महाराजा की अवयस्कता की कालाविष में रीजेन्सी कोंसिल द्वारा उठाये गये कदमों या की गई करवाइयों को राज्य में अधिकार पत्र के साथ भेजे गये पोलिटिकल अफसर की सहमित के विना परिवर्तित या रह नहीं किया जा सकेगा।
- (२) कि प्रशासन में कोई भी महत्वपूर्ण परिवर्तन करने से पूर्व पोलिटिकल अफसर की स्वीकृति प्राप्त की जानी चाहिये। तथा
- (३) महाराजा साहब किसी भी महत्वपूर्ण विषय में पोलिटिकल अफसर के परामर्श के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे। परन्तु अपनी स्वतंत्र प्रभुसत्ता स्थापित करने के लिये महाराजा अटलता से लड़ते रहे और अन्ततोगत्वा अपने वैर्य, सतत् उद्यम, नीति चातुर्य तथा उच्च व्यक्तित्व के कारण सन् १६०७ में उन प्रतिबन्धों का निराकरण कराने में सफल हुये। अ

सन् १६०४-०५ में यह संघर्ष श्रापनी पराकाष्ठा को पहुँच गया जब राज्य के विरुद्ध कुमन्त्रणा करने वाले कुछ जागीरदारों के सम्बन्ध में महाराजा के श्रादेश में श्रंग्रेजों ने हस्तक्षेप करने का प्रयास किया। विभिन्न ठाकुर जिनमें विशेष रूप से बीदासर के ठाकुर हुकमसिंह, श्रजीता पुरा के ठाकुर मैरूसिंह, गोपालपुरा के ठाकुर रामसिंह, सन् १६०० से

बीकानेर के महाराजा के निजी सचिव के कार्यांतय की फाइल सं० ३७, महाराजा गंगासिंह जी को कर्नल डब्लू. स्टीवर्ट का पत्र ता० ६-४-१६०७।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ३७, महाराजा गंगासिंह जी को कर्नल एच. ए. विन्सेन्ट का पत्र ता० १६-११-१६६८ ।

वीकानर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ३७,
 महाराजा गंगासिंह जी को कर्नल एच. ए. विन्सेट का पत्र ता० १६-११-१८६८।

वीकानर के महाराजा के निजी सिचन के कार्यालय की फाइल सं० ३७, महाराजा गंगासिंह जी को कप्तान डनलप िस्मिथ का पत्र ता० १६-४-१६०७।

निरंतर ग्रापने उन दावों को मनवाने का दुराग्रह करते ग्रा रहे थे जिनका निपटारा महाराजा की ग्रवयस्कता के काल में पहले से ही कर दिया था। इसके ग्रातिरिक्त ये लोग ग्रन्य लोगों में ग्रासन्तोष व ग्राश्रद्धा की भावनाएँ भी भड़काते रहते थे। उनको दी गई समस्त चेतावनियां व्यर्थ सिद्ध हुई।

 कुछ सरदारों की मनोवृत्ति ठीक प्रारम्म से ही ऐसी नहीं थी जिसे पूर्ण रूप से वांछित समभा जा सकता हो । बीदावत जाति के सरदार इनमें विशेष रूप से प्रमुख थे ।

२४ फरवरी सन् १६०० को सात वीदावत पहेदारों ने गवर्नर जनरल के एजेन्ट को अव्यवहित कुछ विवाद अस्त विषयों पर प्रार्थना पत्र दिया, जिनमें से एक विषय का निर्णय सन् १८८५ में महाराजा ब्रूंगरसिंह के समय में किया जा चुका था। इन सरदारों ने उसी तारीख को महाराजा गंगासिंह जी को मी समरूप प्रार्थना पत्र भेजे। विगत प्रार्थना पत्रों को निर्णय के लिये महाराजा गंगासिंह जी के पास गवर्नर जनरख के मार्फत मेजा गया था। महाराजा गंगासिंह जी के पास गवर्नर जनरख के मार्फत मेजा गया था। महाराजा गंगासिंह जी के खुजानगढ़ के नाजिम के मार्फत इन सरदारों को खुजावा मेजा कि वे आकर अपने कन्टों को उनके सामने प्रस्तुत करें। किन्तु बार बार स्मरण कराने पर भी वे नहीं आये।

मई सन् १६०० में बीदासर के ठाकुर हुकमसिंह ने महाराजा गंगासिंह जी को एक प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया जिसके साथ एक स्मृतिपत्र का भी समावरण किया गया था जिसमें छत्तीस कच्टों को श्रमिन्यक किया गया था। इन कच्टों में कुछ ऐसे अन्य जागीरदारों के भी कच्ट सिमिलित थे जिन्होंने राज्य के आदेशों के विरुद्ध कभी प्रतिवाद नहीं किया था। उनमें कुछ ऐसे वाद विषय भी थे जिनसे सामान्य जनता सम्बन्धित थी। इनमें से अधिकतर विषयों का निपटारा पहले ही या तो महाराजा गंगासिंहजी की अवयस्कता के समय में या इस समय से पहले ही हो चुका था। चिन्ताशील विवेचन के पश्चात महाराजा द्वारा यह निश्चित किया गया कि इस प्रकार की कार्य प्रणाली को स्वीकार नहीं किया जायगा अथवा पूर्व निर्णीत विभिन्न विषयों पर फिर से विचार नहीं किया जायगा। अतः महाराजा गंगासिंहजी ने ठाकुर हुकमसिंह को चुलाकर ठपर्यु क्र निर्णीय से उसे अवगत किया तथा व्यक्तिगत रूप से चेतावनी दी कि वह सरदारों तथा जन साधारण के ऐसे विषय के लिये जिनसे उसका कोई सम्बन्ध न हो विवाद करने से विरत हो जाय। जहां तक अन्य तुच्छ मामलों का सम्बन्ध

था उन्हें समुचित हुंग से प्रस्तुत करने का उसे आदेश दिया गया। उसने राज्य के प्रति जो रुख अपना रखा था उसके विरुद्ध भी महाराजा गंगासिंहजी ने उसे चेतावनी दी। उसके ठिकाने में रहने वाले लोगों ने उसके विरुद्ध महाराजा गंगासिंह जी को प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किये थे। महाराजा ने इसके लिये उसे पुनः चेतावनी दी तथा उन लोगों को तुष्ट करने के लिये कहा।

सन् १६०१ में सरदारों द्वारा यद्यपि कम मात्रा में, इसके समरूप एक श्रीर प्रयास किया गया तथा श्रजीतपुरा व वीदासर के ठाकुरों को राज्य के विरुद्ध ऐसे षड़यन्त्र व मड़काने वाली कारवाइयां करने के लिये महाराजा गंगासिंहजी को उनको व्यक्तिगत रूप से चेतावनी देनी पड़ी थी। उनको श्रतीव विशदतापूर्वक कह दिया गया कि इस प्रकार की समायें करने से तथा श्रश्रद्धा उत्पन्न करने के प्रयास करने से उन लोगों पर राज्य के प्रति श्रमिक का तथा राज्य के विरुद्ध श्रसंतोष फैलाने का श्रमियोग लगाया जा सकता है जिसका परिणाम निश्चित रूप से गम्मीर होगा। जब परिस्थिति श्रीर भी बिगड़ गई तो महाराज गंगासिंह जी ने श्रपनी वर्ष गांठ के उपलद्ध में श्रायोजित राज्य मोज (१६०४) के श्रवसर पर भाषण देते हुये इसकी श्रोर संकेत किया परन्तु इसने भी, जिस कार्य प्रणाली को उन लोगों ने श्रपना रखा था उस पर स्थिर रहने से उन्हे श्रपभीत नहीं किया।

समय समय पर महाराजा के पास इस आश्रय की अफवाहें पहुंचती रहती थीं कि राज्य के कुछ सरदारों द्वारा, अन्य लोगों के बीच असतीष फैलाने का तथा उनके द्वारा मारत सरकार को राज्य के विरुद्ध निरामार शिकायतें कराने का, गम्मीर प्रयास किया जा रहा था।

महाराजा ने इस विषय को महत्व नहीं दिया तथा उन घटनात्रों पर उस समय ध्यान नहीं दिया। किन्तु महाराजा की वर्षगांठ (१६०४) के अवसर पर जो घटनायें घटित हुई उन्होंने उन विषयों पर ध्यान देने को महाराजा को वाध्य कर दिया। सुजानगढ़ व रिग्धी के नाजिमों, पुलिस की रिपोटों तथा अन्य सोतों द्वारा महाराजा को दो गई सूचनाओं से तब प्रकट हुआ कि महाराजा की वर्षगांठ के समारोह में समिमलित होने के लिये ताजीमी सरदारों के बीकानेर आने के अवसर पर, विभिन्न सरदारों के निवास स्थानों पर प्रायः नित्य समायें की गई थी जिनमें उन्होंने अपनी कार्य योजना पर विचार-विमर्श किया था तथा इस गुट में सुम्मिलित होने के लिये यथा— जब ताजीमी सरदार प्रथा के ब्रानुसार राजा को ब्रामिवादन समपर्श करने के लिये निकानेर में एकत्रित हुये तो महाराजा को यह सूचना दी गई कि वे जागीरदार उनकी श्रेणी के ब्रान्य व्यक्तियों को यथा संभव ब्राधिक से ब्राधिक संख्या में गुट में सम्मिलित करने के उद्देश्य से नियमित रूप से समायें

सम्भव अधिक से अधिक सरदारों को उकसाने का भी प्रयास किया जा रहा या। उदाहरण के लिये पुलिस की रिपोर्टों से ज्ञात हुआ कि २३ अक्टूबर १६०४ को अपनी वर्षगांठ के राज्य भोज के भाषण में महाराजा गंगासिंह जी द्वारा चेतावनी देने पर भी निम्नलिखित सरदारों के निवास स्थानों पर समार्थे की गई थीं—

- (१) २४ अक्टूबर, लगभग नौ बजे सायं, बीदासर के डेरे में।
- (२) २५ अक्टूबर सायंकाल, अजीतपुरा के डेरे में ।
- (३) २६ अक्टूबर सायंकाल के लगभग सात वजे, सांडवा के डेरे में 1.
- (४) २७ अक्टूबर सायंकाल बीदासर के ढेरे में । इस तारीख को पुलिस द्वारा यह सूचना दी गई कि जब कुछ शिकायतों को प्रारूपित किया गया तो नगर के कुछ लोग भी उपस्थित थे तथा इन लोगों को भड़काने का प्रयास भी किया गया था।
- (५) २८ अक्टूबर, सायंकाल वीदासर के ढेरे में।
- (६) २६ अन्दूबर लगभग साढे नौ बने प्रातः सांडवा के डेरे में ।
- (७) २६ अन्तूबर लगभग साढे पांच बजे सांयः सांडवा के डेरे में। इस प्रकार की गतिविधियां एक दीधे काल से चलती आ रही थी तथा अनेक वर्षों की धैर्यवान सहिष्णुता के पश्चात महाराजा को डन पटे दारों के अवांछनीय इत्यों एवं व्यवहार पर, जो अन्ततः राज्य के विरुद्ध राज-द्रोहात्मक व अमित्तपूर्ण प्रचार करने वालों के अगवाहों में प्रमाणित हुये थे, ध्यान देने के लिये वाध्य होना पड़ा।

जयपुर के महकमा खास की फाइल सं० १५० गोपनीय, राजस्थान राज्य के पुरालेख-संग्रहालय, बीकानेर— "विद्रोहशील व अमक्त जागीरदारों को बीकानेर दरवार द्वारा दिया गया दण्ड— महाराजा गंगासिंह जी के सामान्य आलेख ता० ३-११-१६०४। ग्रायोजित कर रहे थे। इस सूत्र के ग्राधार पर महाराजा ने ग्रपने तारील २१ ग्रक्ट्यर सन् १६०४ के भाषण में सरदारों को षड्यन्त्र करने के विरुद्ध चेतावनी दी तथा उन्हें सलाह दी कि यदि कोई यथार्थ कष्ट थे तो वे उनका उचित निरूपण करें, उन पर ग्रवश्य यथोचित विचार किया जायगा। किन्तु इस सलाह पर ध्यान देने तथा सुग्रवसर का लाभ उठाने

 महाराजा गंगासिंह का सामान्य त्रालेख ता० ३-११-१६०४, महकमाखास जयपुर फाइल सं० १५० गोपनीय, राजस्थान राज्य के पुरालेख संग्रहालय बीकानेर — "विद्रोहशील व त्रामक जागीरदारों को बीकानेर दरवार द्वारा दिया गया दरा ।"

जिन तारीखों, समय तथा स्थानों पर समात्रों के होने की सूचनायें प्राप्त हुई शीं वह पृष्ठ २२१ की पादिटिप्पणी १, विषयकम १ से ७ तक, के अनुरूप है।

बीकानेर के महाराजा के निजी सचिव के कार्यालय की फाइल सं० २२८८।
 माग १- दशहरा दरवार में महाराजा गंगासिंह का मावस तारीख
 २३-१०-१६०४।

"..... वर्तमान प्रकार के अवसर (जन्मदिवस आनन्दोत्सव) पर इस प्रकार के प्रसंग को छेड़ने में मुभे पूर्णतः विमुखता का अनुमन होता है किन्तु मेरी राय में एक ऐसे विषय पर ध्यान नहीं देना जो गत तीन चार वर्षों से चला आ रहा है, बुद्धिहीन होगा। अतः मेरी समभ में इस अवस्था विवरण को प्रकाशगत करने का समय अब आ गया है। मैंने प्रोत्तित किया है कि प्रत्येक वर्ष जब सरदार लोग विभिन्न

मैंने प्रोक्तित किया है कि प्रत्येक वर्ष जव सरदार लोग विभिन्न जिलों से मेरे जन्म दिवस समारोह में सिम्मिलित होने के लिये आते हैं तब उनमें से कुछ द्वारा (जिनका नाम नहीं बतलाया जायगा) राज्य के प्रति प्रतिरोध आरम्भ करने के लिये एक विस्तीर्ण संख्या में अन्य सरदारों को महकाने के प्रवल प्रयास किये जाते हैं। मुक्ते यह देखकर प्रसन्नता हुई कि ये प्रयास सफल नहीं हुये, किन्तु में चेतावनी के रूप में यह निर्देश कर देना चाहता हूं कि कहीं ऐसा न हो कि ये सरदार अपनी अज्ञानता के कारण इस गुट में फ'स जायें और इस प्रकार अपने कुलों की चिरकाल सम्मानित स्वामी मिक्त पर बट्टा लगा बैठें जविक ऐसा करना उनके स्वयं के हितों के लिये निष्टिचत रूप से तिनक भी श्र यस्कर नहीं होगा क्योंकि में उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को चुनौती देता हूं यदि वह यहां पर उपस्थित समस्त लोगों के संतोष के अनुरूप सिद्ध कर सकता हो कि राज्य के विरुद्ध जाने से अन्ततः उन लोगों को किसी प्रकार का लाम हो सकता है।"

स्यान पर जागीरदारों ने समाएं करना चालू रखा तथा अअडा व वितोप उत्पन्न करने के लिये निरंतर सचेष्ट रहे। महाराजा के पास उन गति— विधियों की विश्वसनीय स्चनाएँ पहुँचने पर उन्होंने एक अल्प जांच आरंभ करने के लिये २६ अक्टूबर सन् १६०४ को तत्काल आदेश दिया। उन जागीरदारों ने राज्य के विरुद्ध सुविस्तृत वितोष व अभिक्त उत्पन्न करने का प्रयास किया था तथा न केवल इस लच्य के लिये कुमन्त्रणा की थी अपितु अन्य व्यक्तियों को भी उनके गुट में सम्मिलित होने के लिये उक्साया था। इन आरोपों की जांच कराने के लिये ४ नवम्बर १६०४

'ऋदिश'

कुछ सरदारों द्वारा राज्य में सुविस्तृत रूप से असंतोष फैलाने के तथा अन्य लोगों को राज्य के विरुद्ध बिना किसी वास्तिविक आधार के शिकायतें करने के लिये उनके साथ सिमलित होने के लिये महकाने के प्रयास करने की सूचना दरवार को विभिन्न सूत्रों से प्राप्त होने पर, हिज हाइनेस महाराजा साहव, एक राजवी तथा दो ताजीमी सरदारों तथा दो राज्य कर्म-चारियों से निर्मित एक आयोग नियुक्त करते हैं जो इस मामले की जांच करके यथा सम्मव शीव अपनी रिपोर्ट हिज हाइनेस को आदेशों के लिये प्रस्तुत करेगा।

महाराजा को पूर्ण विश्वास है कि आयोग न्यायोचित ढंग से तथा सावधानी से इस मामले के साथ संन्यवहार करेगा ।

श्रायोग निम्नलिखित व्यक्तियों से निर्मित होगा —

अध्यत्तः - महाराज मैरू सिंह

सरदार:- (१) महाजन के ठाकुर हरीसिंह तथा

(२) मुकरका के ठाकुर कान्ह सिंह

पदाधिकारों:—(१) मुन्शी फतहसिंह, राजस्तमंत्री, तथा
(२) मुन्शी लालजीमल, नाजिम सूरतगढ।
समस्त सदस्यों के बीकानेर में उपस्थित होते ही अतिलम्ब

१. कुपया पु० २१६ की पाद टिप्पणी क्र. सं. १ देखें।

२. पश्चिमी राजपूताना के राज्यों की रेजीडेन्सी की फाइल सं० ११६ (१६०५-०८), अपने दरबार के विरुद्ध ठाकुरों के षड्यंत्र का मामला, पृ. ४१-

को महाराजा ने एक आयोग नियुक्त किया जो तीन जागीरदारों तथा दो राज्यकर्मचारियों से निर्मित या। साद्य के आलेखन के तथा उसका स्दम परीच्ण करने के परचात आयोग ने अपनी जांच का आलेख किया नामतः कि वीदासर, अजीतपुरा तथा गोपालपुरा के तीन ठाकुर उन कृत्यों के दोपी थे जिन अपराधों का संघटन भारतीय दर्ड विधान के परिच्छेद १२४ ए के अन्तर्गत आता है और यद्यपि उनके अतिरिक्त आठ व्यक्ति और भी थे जो कुमन्त्रणा के दोषी थे किन्तु उनके विरुद्ध किसी भी निर्णय का आलेख नहीं किया गया क्योंकि उन पर यथानियम आरोप नहीं लगाये गये थे।

राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र करने के पीछे इन तीन जागीरदारों का क्या लच्य था इसका पता पा लेना नितान्त श्रमुगम नहीं था। वीदासर

ग गानिवास दरवार महाकच्च में आयोग द्वारा अपनी समा की जायगी। गंगासिंह

महाराजा, मेजर, एड-डी-कैम्प

मैख सिंह

रघुवर सिंह

हरी सिंह ...

जिवराज सिंह

विवस्ति विवस्ति

बहादुर सिंह

श्रार. डी. कपूर

सालगढ ४ नवम्बर, १६०४।

१. आयोग के निष्कर्ष के अनुसार, वीदासर, अजीतपुरा तथा गोपाल पुरा के ठाकुर वीकानेर में उनके निवास स्थानों में तथा अन्य स्थानों पर राज- द्रोहात्मक समाएं करने के तथा अन्य पट्टेदारों पवं नागरिकों को भी इस अरा- जिन्छ व्यापार में सम्मिलित होने के लिये महकाने के दोषी थे। इसके अति रिक्त निम्निलिसित अभियोग भी आयोग द्वारा उनके विरुद्ध प्रमाणित पाये गये—

(१) अजीतपुरा के ठाकुर :- (१) जब वह अजीतपुरा में था तो वहां पर भी उसके द्वारा अश्रद्धा के प्रयास किये जाना । (२) रायसलाना में राज्य के विरुद्ध एक पड्यन्त्र करना। (३) राज्य के विभिन्न मागों में पट्टेदारों एवं जन साधारण में अश्रद्धा व वितोष फैलाने के लिये हूं गराना के रावतसिंह कांधल को नियुक्त करना। तथा (४) रिग्री में एक राजद्रोहात्मक समा कराने के प्रयास करना।

के ठाकुर हुकमसिंह के विषय में हम पूर्ववर्ती परिच्छेद में पहले से ही देख चुके हैं कि उसका पिता बहादुरसिंह १८८३-८४ के विद्रोह का मुखिया था तथा इसके लिये उसे दिएडत भी किया गया था । हुकमसिंह को राज्य को ७६४०) र० को एक धनराशि को भी जो उसके द्वारा उपकरों के सम्बन्ध में अवैध ढंग से अधिक मात्रा में वस्त कर ली गई थी, लौटाने का त्र्यादेश दिया गया था। र इसी प्रकार ऋजीतपुरा के ठाकुर भैरू सिंह को भी १८८३-८४ के विद्रोह में उसकी सहापराधिता के लिये दिएडत किया गया था तथा इसके अतिरिक्त कुछ दीवानी एवं फौजदारी के अधिकारों को स्वीकृत करने की मांग को भी सन् १८८६ में ग्रास्वीकार कर दिया गया था । सन् १८६६ में ऋंग्रेजी पुलिस की शिकायतों पर उसे ऋच्छे व्यवहार के लिये बाध्य किया गया या तया महाराजा ने जब उसके पट्टे का निरी-च्रण किया था उस समय महाराजा से त्राकर मिलने के प्रथागत व्यवहार व शिष्टाचार का पालन नहीं करने के लिये सन् १६०३ में उसकी मर्त्सना की गई थी। ³ गोपालपुरा के ठाकुर ने एक परिवेदना को पाल रखा था क्योंकि उसे एक बांध को तुड़वाने का ऋादेश दिया गया था जिसे उसने ऋनधि-इत रूप से अपने पट्टों में बनवायां था। है आयोग ने इनमें से प्रत्येक श्रिभियुक्त के लिये कारावास एवं श्रर्थ-दएड की सिफारिश की श

⁽२) वीदासर के ठाकुर:- स्वयं वीदासर में वितोष उत्पन्न करने का प्रयास करना ।

१. एश्चिमी राजपूताना के राज्यों की रेजीडेन्सी की फाइल सं० ११६ (१६०४-१६०८), पृ. ४, मारत सरकार के विदेश विमाग के सिचव को गवर्नर जनरल के राजपूताना के लिए कार्यवाहक एजेंट आनरेवल मिस्टर ई. जी. काल्विन का पत्र सं० १८३ तारीख ८-६-१६०४।

२. वही।

३. वही।

४. वही, पृ. ६।

वही पृ.३२ । श्रायोग नै निम्न दग्रड प्रस्तावित किये—

⁽१) गोपालपुरा के ठाकुर रामसिंह के लिये सात वर्ष का साधारण कारावास तथा सात हजार रुपए का अर्थ दण्ड। (२) वीदासर के ठाकुर हुकमसिंह तथा अजीतपुरा के ठाकुर मैरू सिंह के लिये :- प्रत्येक को दस वर्ष का साधारण कारावास तथा दस हजार रुपए का अर्थ दण्ड। इसके अतिरिक्त आयोग ने यह मी निर्णय किया कि यदि उन्हे प्रशासकीय ढंग से दिख्त करना निर्वारित

इसके ग्रांतिरिक्त यह भी कहा कि यदि उन्हें प्रशासकीय तौर से दिएडत किया जाना निर्धारित हो तो ऐसी परिस्थित में जो कोई भी दएड उपयुक्त प्रतीत होता हो प्रदान कर दिया जाये । उन ठाकुरों को क्या दएड दिया जाना चाहिये इस विषय में महाराजा द्वारा कौन्सिल से भी स्वतन्त्र रूप से मंत्रणा की गई यी । कौन्सिल ने भी इन तीनों ग्रांभियुक्तों को कारावास एवं ग्रांथंदएड देने की सिफारिश की । इसके ग्रांतिरिक्त कौन्सिल का यह मत था कि उन जागीरदारों के ग्राप्यां की गम्भीरता को हिष्ट में रखते हुये उनको ग्रांदर्शभूत दएड दिया जाना चाहिये तथा उनकी जागीरों को राज्याधिकार में ले लिया जाना चाहिये । कौन्सिल की जांच के ग्रानुसार तात्कालिक पड़यन्त्र ग्रांतित में बरती गई उदारता के परिणाम थे ।

जैसे ही ये सिफारिशें प्राप्त हुई महाराजा ने २ जनवरी

किया जाय तो ऐसी परिस्थित में जो कोई भी दर्ख उचित प्रतीत होता हो, दिया जा सकता है।

पश्चिमी राजपूताना राज्यों की रेजीडेन्सी फाइल सं० ११६ (१६०५-१६०५),
पृ. २२--२२। कौन्सिल ने निम्न दर्ण्डों की सिफारिश की --(१) बीदासर के ठाकुर हुकमिंह :-- (१) सात वर्ष का कठोर कारावास एवं
पांच सौ रुपए का अर्थ दर्ण्ड, अथवा प्रशासकीय ढंग से, पहें के आम
मूमासर को स्थायी रूप से जन्त कर लिया जाना। (२) ठाकुर हुकमिंह की
अधिकार च्युति। (३) ठाकुर हुकमिंह को जब तक वह सुधर न जाय संनिरीचर्ण में रखना। (४) मूमासर आम को छोड़कर, बीदासर उसके सबसे बड़े

पुत्र को वयस्क होने पर प्रदान कर दिया जाय ।

वर्ष के लिये संनिरीक्षण के आधीन रखा जाना ।

(२) अजीतपुरा के ठाकुर मेरू सिंह :-- (१) सात वर्ष का कठोर कारावास तथा पांच सी रुपए का अर्थ द्युड अथवा प्रशासकीय ढंग से उसकी सम्पूर्ण जागीर को स्थाई रूप से जन्त कर लिया जाना। उसको संनिरीत्त्रण के आधीन रखाजाना। (३) गोपालपुरा के ठाकुर रामसिंह :-- (१) पांच वर्ष का कठोर कारावास एवं तीन हजार रुपए का अर्थ द्युड अथवा प्रशासकीय ढंग से उसके पृष्ट के एक ग्राम को स्थायी रूप से जन्त कर लिया जाना। (२) ठाकुर रामसिंह की अधिकार च्युति। (३) राज्य सत्ता द्वारा जन्त किये गये ग्राम को छोड़कर शेष पृष्टा उसके सबसे वहे पुत्र को वयस्क होने पर प्रदान कर दिया जाय। (४) उसको पांच

सन् १६०५ को एक दरबार बुलाया जिसमें पोलिटिकल एजेंट मेजर स्ट्रेटन को भी ग्रामंत्रित किया गया था ! ग्रायोग की रिपोर्ट को ग्रिभियुकों को पढकर सुनाया गया जिसमें उन पर राजद्रोह तथा ग्रामिक के ग्रिभियोग लगाये गये थे । ग्रायोग व कौन्सिल के निर्ण्यों से सम्मत होते हुये भी महाराजा ने केवल प्रशासकीय दर्ख देने का निर्ण्य किया ग्रीर उसमें भी कौन्सिल की सिफारिशों को सदयता से ग्राकटोर बना दिया ।

- पित्रचमी राजपूताना के राज्यों की रेजीडेंसी फाइल सं० १९६ (१६०५-१६०८), पृ० ३४। निम्निलिखत अनुसार दण्ड दिये गये :-
 - (१) बीदासर के ठाकुर हुकमसिंह को :- (१) श्राम मूमासर को स्थायी रूप से राज्यसात् कर लिया जाय । (२) श्राम मूमासर को छोड़-कर शेष पट्टे का, तीन वर्ष पश्चात् उस समय तक के लिये जब तक यह निश्चित नहीं कर लिया जाता कि इसे हुकमसिंह या उसके उत्तराधिकारी को बापस किया जाय, प्रतिपालक श्रिधिकरण द्वारा पुनर्श्रहण कर लिया जाय । (३) तीन वर्षों के लिये सम्पूर्ण पट्टे का पुनर्श्रहण कर लिया जाय । (४) ठाकुर हुकमसिंह को पांच वर्ष तक सीनरीक्त्रण के श्राचीन रखा जाय । (४) श्रेणी में बीदासर को रावतसर से निम्न कर दिया जाय ।
 - (२) अजीतपुरा के ठाकुर भैंक सिंह को :- (१) ठाकुर भैंक सिंह की अधिकार च्युति । (२) ठाकुर भैंक सिंह को महाराजा की इच्छा तक संनिरीत्ताण के अधीन रखा जाय । (३) उसके पट्टे में से इतने आमों को स्थायी रूप से राज्यसात् कर लिया जाय कि उसकी आय पट्टे के समस्त आमों की आय से आधी रह जाय । (४) पट्टे के पुनर्गृहीत नहीं किये गये माग का ठाकुर भैंक सिंह के सबसे बड़े पुत्र को पट्टे दार नियुक्त किया जाय जिसके वयस्क होने तक यह पट्टा प्रतिपालक अधिकरण के अधीन रखा जाय । (५) अजीतपुरा के पट्टे को तृतीय श्रेणी की ताजीम से चतुर्थ श्रेणी की ताजीम में अवनत कर दिया जाय ।
 - (३) गोपालपुरा के ठाकुर रामसिंह को :- (१) पट्टे की मूमि से प्राम सुलखिनया का स्थायों रूप से राज्यसात् कर लिया जाय। (२) ठाकुर रामसिंह को दो वर्ष तक संनिरीक्षण के अधीन रखा जाय। (३) पुनर्गृहीत नहीं किया गया पट्टा उस समय तक प्रतिपालक अधिकरण के अधीन रखा जाय जब तक रामसिंह राज्य को इससे सन्तुष्ट नहीं कर दे कि उसने अपने आपको सुधार लिया है अथवा उसका पुत्र वयस्क न हो जाय।

मेजर स्ट्रेटन तथा गवर्नर जनरल के एजेंट सर आर्थर मार्टिन्डेल को इस मामले से पूर्णतः अवगत रखा गया या तथा जांच व परिनिर्णित दर्गडों से वे महाराजा से सहमत थे। तथापि अभियुक्तों ने विदेश विभाग एवं गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन को आवेदन पत्र भेजे। लार्ड कर्जन ने गव-नर जनरल के एजेंट से रिपोर्ट मांगी। एजेंट द्वारा महाराजा गंगासिंह की कारवाई का समर्थन करने पर भी, भारत सरकार से विदेश विभाग के सचिव

१. पिष्टिमी राजपूताना राज्यों की रैजिडेन्सी की फाइल सं० १९६ (१६०५-१६०८), १०३ एवं ६, मारत सरकार के विदेश विभाग के सचिव को गवर्नर जनरल के राजपूताना के कार्यवाहक एजेंट मिस्टर ई. जी. काल्विन का पत्र सं० १८३ ता० ५-६-१६०५।

महाराजा द्वारा इस आपदा की प्रथम विशिष्ट सूचना सर आर्थर मार्टिन्डेल (गर्वनर जनरल का एजेंट) को एक स्मरण पत्र के रूप में मेजी गई थी जिसे पोलिटिकल एजेंट द्वारा उसे ६ नवम्बर १६०४ को अग्रप्रेषित किया गया था तथा उसके पश्चात् अशासकीय पत्र व्यवहार से अनुपूरित किया गया था।

जब जनवरी १६०५ के मध्य में सर आर्थर मार्टिन्डेल बीकानेर आया, उसने तथा मेजर स्ट्रेटन (पोलिटिकल एजेंट) ने महाराजा के साथ उस निषय पर विस्तृत विचार-विमर्श किया और १८ जनवरी, १६०५ को सर आर्थर मार्टिन्डेल ने एक टिप्पणी अमिलिखित की जिसमें उसने लिखा कि वह इस अन्तिम परिणाम पर पहुंचा है कि महाराजा द्वारा की गई कारवाई पूर्ण रूप से उपयुक्त है तथा विप्लव के तथ्य का आयोग के सामने सनिश्चय प्रमाणित हो जाना प्रतीत होता है।

पूर्वांकत पत्र की आठवों किएठका में मिस्टर काल्विन आवेदकों (अमियुक्त ठाकुर) की उस याचिका में विवृत किये गये विवाद विषयों का विश्लेषण करते हैं जो उन्हें १७ मई १६०५ को मेजर ब्रूस (पोलिटिकल एजेंट) द्वारा उसके तथा पूर्वाधिकारी मेजर स्ट्रेटन के स्मरण-पत्रों तथा महाराजा की एक टिप्पणी के साथ अअप्रेषित की गई थी, तथा आर्थर मार्टिन्डेल के विचारों (यथा पूर्वोंक्त) से अपनी सहमति (दसवीं किएठका में) व्यक्त करते हैं। वह यह भी सिफारिश करते हैं कि मारत सरकार इन आवेदकों को अवगत करें कि वह इस मामले में हस्तचेष करना छोड़ दें।

के पत्र सं० ३६४३-ग्राई. ए. ता० शिमला ७ सितम्बर १६०५९, द्वारा महाराजा के ग्रादेशों को ग्रापरिवर्तित करने का निर्देश दिया गया। उस ग्रापरिवर्तन को पत्र सं० ४७८८-ग्राइ. ए. ता० २०-११-१६०५ द्वारा संशोधित

१. पश्चिमी राजपूताना के राज्यों की रेजिडेन्सी की फाइल सं० ११६ (१६०५-१६०८), पृ० ७६, गवर्नर जनरल के राजपूताने के एजेंट मिस्टर नाल्विन को मारत सरकार के विदेश विभाग के सिचव का पत्र सं० ३६४३ तारीख ७-६-१६०५।

"नारत सरकार ऐसा मार्ग अपनान के लिये उत्कंठित है जिससे यह प्रकट न हो कि महाराजा के सत्ताधिकार चीएा कर दिये गये हैं, विशेष रूप से इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये कि जो कारवाई उन्होंने की है वह यद्यपि उनके राज्य में अधिकार पत्र देकर मेजे गये पोलिटिकल एजेंट की सलाह से नहीं तो कम से कम उसकी सहमति से अपनाई गई है। अतः वह इसके लिए उद्यत है कि सरकार द्वारा अभिन्यक्ष की गई सम्मति मन्त्रणा का रूप घारण करले तथा में अनुरोध करता हूं कि यद्यपि आवेदकों को यह सूचना दे दी जाय कि उनके साथ साथ आप महाराजा को भी यह मन्त्रणा देगे कि वे एक विज्ञित प्रकाशित करके उसमें यह घोषणा करदे कि उन्होंने अपनी उदारता का प्रयोग करते हुये उन दण्डादेशों को कम कर दिया है जिनका सम्बन्ध मूमि को स्थायी रूप से राज्यसात् करने से है, तथा इसका किन्ही अन्य संदर्भों में जिन्हों आप उपयुक्त सममते हों संशोधन कर दिया जाय।"

१. पश्चिमी राजपूताना के राज्यों की रेजीडेन्सी फाइल सं० ११६(१६०५–१६०८), गवर्नल जनरल के राजपूताना स्थित पजेंट आनरेवल मिस्टर ई. जी. काल्विन को भारत सरकार के विदेश विभाग के सिचव का पत्र सं. ४७७८ आइ. ए. तारीख २०-११-१६०५।

मारत सरकार के विदेश विभाग के सिचव ने महाराजा के विचारार्थ निम्न लिखित श्रापरिवर्तनों का सुमाव देते हुये लिखा कि यह सरकार का श्रमिष्ट है कि वह सिचव श्रत्यन्त प्रवलतम श्राशा व्यक्त करे कि इन ठाकुरों के प्रति महाराजा श्रपनी व्यक्तिगत उदारता का प्रयोग किसी श्रिनिश्चित ढंग से नहीं करेंगे श्रिपत इसी ढंग से करेंगे जिसे मारत सरकार श्रपने ६ सितम्बर १६०५ के श्रादेशों में समाविष्ट करने से श्रत्यिक किटनाई से नियंत्रण मात्र रख सकी है।

(१) ठाकुर हुकमसिंह के विषय में उसकी मूमि को राज्यसात् करने का

किया गया । तथापि, क्योंकि उन दएडां को महाराजा द्वारा खुले दरबार में घोषित कर दिया गया था और क्योंकि उनमें किसी प्रकार के आपरिवर्तन से महाराजा की प्रतिष्ठा पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता या तथा कुचेण्टा-शील व्यक्तियों के इस विश्वास को बढावा भी मिल सकता था कि शासक को सर्वोच्च सत्ता का समर्थन प्राप्त नहीं है, महाराजा ने गवर्नर जनरल को व्यक्तिगत रूप से आवेदन करने की इच्छा व्यक्त की । उस निवेदन का गवर्नर जनरल के कार्यवाहक एजेंट मिस्टर ई. जी काल्विन द्वारा अभिस्ताव किया गया और इस विषय पर लिखित आवेदन पत्र पर विचार करने के लिये गवर्नर जनरल सहमत हो गया । यह आवेदन महाराजा के ३० नवम्बर १६०७ के पत्र द्वारा प्रस्तुत किया गया । अन्ततः भारत सरकार महाराजा के मूल आदेशों से भारत सरकार के विदेश विभाग के उप सचिव के पत्र सं० १०८६ आइ. ए. दिनांकित ११ मार्च १६०८ के द्वारा सहमत हो गई ।

दण्ड स्थिर रखा जा सकता है यद्यपि ठाकुर के भविष्य के आचरण के प्रकाश में हिज हाईनेस यह निर्णय करेंगे कि क्या उसकी आधी मू सम्पति तक को पुनर्प्रहीत कर लिया जाना चाहिये ?

- (२) ठाकुर हुकमिंसह की दर्यकाता कम गम्भीर है अतः तीन वर्षों की समाप्ति के पश्चात आम मूमासर को राज्यसात् करने के दर्यंड को कम कर दिया जाना चाहिये।
- (३) ठाकुर रामिसंह के विषय में ग्राम सुलखिनया को राज्यसात करने का दण्ड उसके वर्तमान अपराध को देखते हुये निस्सन्देह अधिक है अतः एक वर्ष की अविध के पश्चात इस दण्ड को घटा दिया जाना चाहिये तथा इस ग्राम का शेष पट के समान प्रतिपालक अधिकरण के आधीनस्य कर दिया जाना चाहिये।
- १. पिरचिमी राजपूताना के राज्यों की रैजिडेन्सी फाइल सं० १९६ (१६०४-१६०८), पृ० १९१, गर्निर जनरल के राजपूताना स्थित एजेंट मिस्टर ई. जी. काल्विन को भारत सरकार के विदेश विभाग के उप सचिव आर. ई. हालैन्ड का पत्र सं० १०८६ आइ. ए. ता० ११-२-१६०८।

हिज हाईनेस तथा पोलिटिकल एजेंट द्वारा स्पष्ट की गई परिस्थितियों का सचेत विवेचन करने के पश्चात मारत सरकार आपके इस अमिस्ताव को स्वीकार करती है कि— (क) वीदासर के पट्टे के आम श्रान्तरिक प्रशासन में श्रंभेजी हस्तचेंप इतना सुरपष्ट हो चुका था कि जागीरदारों को राज्य से वाहर जाने की श्रानुमित प्रदान करने के विपय तक में पोलिटिकल एजेंट को एक प्रेपण करना पड़ता था जैसा कि ठाकुर मेघिसिंह के मामले से हिष्टगत होता है जिसने राज्य के वाहर जाने की श्राज्ञा के लिये प्रार्थना की थी। यह ठाकुर इस लिये राज्य के वाहर जाना चाहता था कि वह कुछ श्रापित्तजनक पुस्तिकाश्रों को छपवाने में तथा उनका मारत व विदेश में सर्वत्र वितरण करने में समर्थ हो सके। महाराजा की इस तथ्य को पोलिटिकल एजेंट के ध्यान में लाना पड़ा एवं उन्होंने श्रपने तारीख १३ दिसम्बर १८६६ के पत्र में पोलिटिकल एजेंट को ध्यान से लाना पड़ा एवं उन्होंने श्रपने तारीख १३ दिसम्बर १८६६ के पत्र में पोलिटिकल एजेंट को स्थित की वास्तविकता की श्रोर संकेत करते हुये लिखा कि उन्हें ठाकुर की योजनाश्रों से कोई भय नहीं था तथा वे ठाकुर मेघिसिंह को श्रावश्यक श्रानुमित प्रदान करने के लिये तैयार थे किन्तु ठाकुर मैह सिंह के इसके एक समरूप विषय में श्रानुमित को वांछनीय नहीं समक्ता गया था क्योंकि उस समय उसके विरुद्ध कुछ मामलों की जांच श्रपूर्ण थी।

श्रपने तारीख १६-१२-१८६ के पत्र में पोलिटिकल एजेंट सहमत हो गया कि ठाकुर मेघसिंह को राज्य से बाहर जाने की श्रनुमित प्रदान करदी जानी चाहिये।

मियांवाली डकती के लोक विश्रुत मामले में नारायणा व खजान खिंह को न्यायालयों द्वारा मृत्युदर्ग्ड दिया गया था किन्तु पुनरावेदन करने पर परिषद ने खजानसिंह के दर्गड को घटाकर ग्राजीवन कारावास में परिच्यिति कर दिया था। पोलिटिकल एजेंट कप्तान वेली ने इस मामले की फाइल को मंगवाया ग्रीर ग्राभिस्तावित किया कि न्यायाधीश द्वारा दिये गये दर्गडादेश का ग्रानुमोदन कर दिया जाना चाहिये। कर्नल विन्सेन्ट ने भी

मूमासर को पूर्ण रूप से राज्यसात् करने के उनके मूल आदेशों को कियान्वित करने की तथा (स) बीदासर के मूतपूर्व ठाकुर बहादुरसिंह को बीकानेर से देश निर्वासित करने की महाराजा को अनुमित मिलनी चाहिये।

१. वीकानेर के महाराजा के निजी सिचंव के कार्यालय की फाइल सं० ११६११५; कप्तान वेली को महाराजा गंगासिंह का पत्र ता० १५-१२-१८६६ तथा वेली का उत्तर ता० १६ दिसम्बर १८६६ ।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचित्र के कार्यालय की फाइल सं० १३४।१५,
 पृ० २३— कप्तान एस. एफ. वेली का पत्र ता० ४-५-१६००।

ग्रपने दिनांक १६ मई १६०० के पत्र में कहा कि उनके विचार से कप्तान वेली द्वारा ग्रिभिव्यक राय को क्रियान्वित किया जाना चाहिये था।

उपरोक्त घटनात्रों से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजकीय घोषणा तथा शासकों को दिये गये नानारुप त्राश्वासनों के उपरान्त जिनके अनुसार भारतीय नरेशों के साथ की गई नियुक्तियों तथा सन्धियों इत्यादि का त्राचार निष्ठा से पालन करने का बचन दिया गया था, इनका विभिन्न श्रवसरों पर विभिन्न बहानों से उल्लंघन किया जा रहा था। अंग्रेजों के ये त्राश्वासन कि उनके (नरेशों के) अधिकार, विशेपाधिकार तथा गौरव अविकल रहेंगे ग्रीर प्रत्याभूत रहेंगे उत्तरोत्तर श्रप्रकाश्यता में पृष्ठाभिमुख होते जा रहे थे।

वीकानेर के प्रशासन के कर्णधार एक स्वतंत्र मनोवृति के आत्मा-वान तेजस्वी युवा नरेश के लिये इस प्रकार के हस्तचेपों के विरुद्ध लड़ने की स्वामाविक आकांचा रखना अववोधनीय थी। महान राठोंड़ों के युद्ध-मान कुटुम्ब के सदस्य होने के नाते इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि महाराजा गंगासिंह को राज्य के दिन प्रतिदिन के प्रशासन में केन्द्रीय सत्ता द्वारा हस्तचेप के रूप में पहुँचाई जाने वाली यह मर्मान्तक पीड़ा असह्य हो चुकी थी। हस्तचेप की इस नीति के प्रति उनकी प्रतिक्रिया ठीक आरम्भ से ही प्रकट है। कप्तान वेली को भेजे गये आखेट के अनुजापत्र के विषय में उसके व्यंगपूर्ण पत्र के प्रत्युत्तर में महाराजा ने तत्काल दिसम्बर १८६६ में उसके प्रश्न पूछा कि क्या वृंदी का पोलिटिकल एजेंट महाराजा की अनुमति विना वृंदी के चीतों का आखेट करेगा ?

यहां तक कि योग्य, श्रेष्ठतर तथा सत्वर प्रशासन के लिये कुछ श्रावश्यक सुधारों के सूत्रपात करने के विषय में भी महाराजा को पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं थी। सन १८६६ में जब उन्होंने व्यवस्था में कुछ परिवर्तन करने की योजना बनाई श्रार्थात् राज्य परिषद के स्थान पर सचिवों को नियुक्त करने की, तथा इस विषय में गवर्नर जनरल के तत्कालीन एजेंट सर श्रार्थर मार्टिन्डेल को लिखा तो उनको सलाह दी गई कि वे इस विषय में मनदर्गात से श्राप्रसर हों तथा सुधार या परिवर्तन करने में

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० १३४।१४,
 पृ० २५— कर्नल एच. ए. तिन्सैन्ट का पत्र ता० २१-५-१६०० ।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचिव के कार्यालय, की फाइल सं० ११६।१५, पृ० ८१, महाराजा गंगासिंह का पत्र ता० २-२-१६००।

एवं सर्वोपिर, श्रिष्ठकारियों की श्रदला-बदली करने में इतनी व्यग्रता न दिखावें। तथापि महाराजा गंगासिंह जैसे उत्साह, श्रोज व पराक्रम वाले व्यक्ति को उपर्युक्त प्रकार की मन्दगति की सलाह सुखद नहीं थी। महाराजा गंगासिंह ग्रपनी प्रजा की श्रिष्ठकाधिक उन्नति के लिये निरन्तर प्रयास करते रहे ग्रीर ग्रन्ततः सन् १६०३ में ग्रपने राज्य की जनता के कार्य सम्पन्न करने के लिये भारत सरकार को श्रनुमित प्राप्त करने में सफल हुये। यद्यपि सर ग्रार्थर मार्टिन्डेल को सम्बोधित महाराजा का तारीख ३१-७-१६०३ का पत्र फाइल में उपलब्ध नहीं है किन्तु सर ग्रार्थर का तारीख ३८-५१६०३ का प्रत्युत्तर उपलब्ध है जिसमें ग्रपने प्रस्तावों के लिये भारत सरकार की कृतसंकल्प सहमित प्राप्त कर लेने पर उन्होने महाराजा का ग्राभिनन्दन किया।

सरकार न केवल राज्यों के ब्रान्तरिक मामलों में हस्तचेप करती थी ग्रापित ग्रापनी ग्राय में वृद्धि करने के लिये शासकों की कल्पित उपाश्रित परिष्ठा का लाभ भी उठाती थी। भारतीय राज्यों के प्रति बिटिश रुख का रूपण वस्तुतः पहले से ही पिछड़े हुये इन चेत्रों के साधन स्रोतों के शोषण करने के मन्तन्थ के अनुकुल किया जाता था। जिस ढंग से श्रंगेनों ने भारतीय राज्यों में टेलीग्राफ लाइनें लगाना श्रारम्भ की उससे राज्यों के न्यय पर ग्रिधिक स्राय कमाने का उनका श्रिमिपाय प्रकट होता था । किसी भारतीय राज्य के चेत्र में नया टेलीग्राफ कार्यालय विभाग भ्रिधिकांशतः उस राज्य से स्रार्थिक प्रतिभूति मांगता या तथा यह जिम्मेदारी तय करता था कि वह राज्य विभाग के लिये पन्द्रह हजार रुपये प्रति वर्ष की स्त्राय को सुरचित करेगा या अपर्याप्त आय तथा नये कार्यालय में कार्य क्या के श्राभिनय से होने वाली हानि की च्तिपूर्ती करेगा । समस्त व्यय का वहन करने के पश्चात अवशिष्ट अतिरिक्त लाभ को राज्य को सौंपने के तत्संबद्ध दायित्व को स्वीकार करने के लिये टेलीग्राफ विभाग उद्यत नहीं था। वो किसी भी स्रोत को श्रस्तूता छोड़ने के विरुद्ध थे तथा टेलीग्राम के सामान्य यातायात के लिये भी रेल्वे टेलीग्राफ कार्यालय के राज्य द्वारा चलाये जाने को वो ग्रन्छा नही समभते ये चाहे उस रेल्वे पर राज्य का

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० मह-१०२११५, पृ० २, सर श्रार्थर मार्टिन्डेल का पत्र ता० २२-म-१म६६।
 वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं०

र. बाकानर के महाराजा के निजा साचित्र के कायालय की फाइल संव न्ह-१०२।१५, पृ० ४३, सर आर्थर मार्टिन्डेल का पत्र ताव ३-५-१६०३।

स्वामित्व हो ब्रिटिश सरकार की यह नीति बीकानेर राज्य के साथ उनके सम्बन्ध में स्पष्टतया प्रकट थी। १

सन् १६०४ से पूर्व बीकानेर राज्य जोधपुर राज्य के साथ साथ ग्रापने निज के रेल्वे टेलीग्राफ कार्यालयों का सन्धारण करता था जो एक प्रचुर मात्रा में सार्वजनिक यातायात का संचालन भी करते थे। किन्तु रेलवे टेलीग्राफ कार्यालयों तथा सरकारी टेलीग्राफ कार्यालयाँ के बीच कोई सम्बन्ध न होने के कारण टेलीग्रामों का आवागमन ग्रत्यन्त विलम्बित हो जाता था जिसके फलस्वरूप लोगों को बहुत असुविधा होती थी। जनता की इस असुविधा का निवारण करने के लिये वीकानेर तथा जोधपुर राज्यों ने अंग्रेरेजों से निवेदन किया कि उनकी रेल्वे टेलीग्राफ लाइनों को फुलेरा स्थित सरकारी टेलीग्राफ कार्यालय से सम्बद्ध कर दिया जाये। किन्तु इस प्रार्थना को ग्रस्वीकार कर दिया गया। दूसरी ग्रोर सरकार ने जोधपुर तथा बीकानेर के रेल्वे स्टेशन पर एक संयुक्त टेलीग्राफ कार्यालय खोलने के तथा इस प्रकार दोनों राज्यों की समस्त टेलिग्राफ त्राय पर स्वामित्व प्राप्त करने के ऋधिकार का दावा किया। इन राज्यों ने कुछ समय तक इस मांग का प्रतिरोध किया तथा मारवाड़ जंकशन में एक सरकारी टेलीग्राफ कार्या-लय, जिसकी ग्रावश्यकता का ग्रनुभव सिन्ध की यातायात के कारण होता था, खोलने का अनुरोध किया । इसके प्रत्युत्तर में महासंचालक टेली-प्राफ विभाग ने अपने पत्र तारीख ११ मार्च १६०४ में लिखा कि मारवाड़ जंकशन में मुख्यतः वम्बई व कलकत्ता से कराची तक के तारों का परीच्छा व प्रेज्य करने के ग्रिभिप्राय से सरकारी टेलीग्राफ कार्यालय खोला गया था । इस प्रकार की किसी अतिरिक्त मांग को पूरा करने के लिये वहां का कर्मचारीवर्ग व स्थान अपर्याप्त था । उसने निर्दिष्ट किया कि मारवाड़ जंकशन स्थित टेलिग्राफ कार्यालय किसी प्रकार की उदीयमानता प्रस्तुत नहीं कर रहा था ग्रतः सीघे सम्पर्क में संनिहित किसी ग्रातिरिक्त ग्रार्थ-व्यय में योगदान न करने के लिये उसने राज्यों से अनुरोध किया । राज्यों द्वारा उनके चेत्रों में संयुक्त टेलीग्राफ कार्यालय स्थापित करने पर जो अनुरोध लगा दिया गया या उसे उठा लेने का भी उसने आग्रह किया। उसने त्राने लिखा कि "विशेष रूप से मारवाड़ जैसे एक राज्य के सम्बन्ध में जहां का प्रगत तथा ज्ञानोदीप्त लोक समाज भारत के प्रत्येक कोने में हित

१. ए स्कीम आव् अरेजमेंट (व्यवस्था की एक योजना), माग ४, पुस्तक सं० ५४६, पृ॰ २१५४ (१)।

रखता है ग्रौर जहां यथेष्ट प्रयोजन तथा ग्रनुपाती प्रत्यावर्तन के साथ टेलोग्राफ पर लाभदायक व्यय निः संकोच प्रस्तावित किया जा सकता है" इस विषय को एक वित्तीय समिष्ट की भांति समभा जाना चाहिये।

राज्य की प्रजा के हितों के लिये ग्राखिल-भारतीय टेलिग्राफ विभाग की लाभ लिप्सा को चुपचाप स्वीकार कर लेने के अप्रतिरिक्त कोई उपाय नहीं था श्रतः जोधपुर के महाराज ने श्रपने प्रत्युत्तर में भारत सरकार की त्राकांचात्रों को सर्वशः कार्य सम्पन्न करने की हामी भरली किन्तु १९३९० रु प्रतिवर्ष के च्रतिपूरण की मांग की । बीकानेर जोधपुर के रेल्वे प्रवन्धक की मन्त्रणा पर कार्य करते हुये वीकानेर राज्य ने १४००० ६० प्रतिवर्ष के च्रितपूरण की मांग की । किन्तु इन मांगों को सन् १६०५ में स्रस्वीकार कर दिया गया। इन मांगों को स्रस्वीकार करते हुये भारत सरकार ने कहा कि साम्राज्य सम्बन्धी त्रावश्यकतात्रों द्वारा जब भी ऐसा त्र्रपेचित समका गया, भारतीय राज्यों को ऋपनी टेलियाफ व्यवस्था प्रदान करने का सरकार का सुपरिचित प्रचलन रहा है तथा न तो सन् १८६६ का समभौता श्रीर न सार्व-जनिक समाचारों को अपने रेल्वे के तारों द्वारा भेजने के उनके द्वारा उपयुक्त विशेपाधिकार उन्हें अन्य शासकों के साथ किये जाने वाले से भिन्न किसी प्रकार के ग्राधिमान्य व्यवहार का हकदार बनाते हैं । ग्रान्ततोगत्वा सन् १६०७ में भारत सरकार ने राज्य की टेलिग्राफ लाइन (तार-पथ) को ३२,७०८ रुपये में खरीदा जिसे ३७५ रु० प्रति मील तार के भाव से परिगणित किया गया या । किन्तु महाराजा गंगासिंह उस परिस्थिति के गतिसंग्रह करने का उसके शाश्वत रहने तक को सहन करने वाले व्यक्ति नहीं थे। उनका विश्वास था कि बुराई को उगते ही कुचल दिया जाना चाहिये। ग्रत्याचार पूर्ण नीति के विरुद्ध उन्होंने ठीक ग्रारम्भ से युद्ध किया तथा उस बुराई को पराजित करने के लिये, उनका अभ्रांत अवबोध रखने वाले पदाधिकारियों की सद्भावना सहित उन्होंने अपने अधिकार के समस्त साधनों का प्रयोग किया। इस प्रसंग की न्याख्या करने के लिये ग्रानेक उदाहरणों में से केवल एक का यहां पर

स्कीम आव अरेंजमेंट (व्यवस्था की योजना), माग ४, पुस्तक सं० ५४६,
 पृ० २१५४ (१) ।

२. वही, ए० २१५४ (२)।

३. वही, पृ० २१५४ (२)।

उल्लेख किया जा रहा है।

पूर्व निर्दिष्ट श्राखेट श्रनुमित घटना से महाराजा ने पोलिटिकल एजेंट कप्तान वेली के प्रति एक उपेन्नापूर्ण भावना श्रपना ली जो महाराजा को लिखित कप्तान वेली के पत्र तारीख २८ फरवरी, सन् १६०० से पूर्णतः व्यक्त होती है जिसमें उसने लिखा कि "किसमस के पश्चात जब से श्राप श्राबू से वापस लौटे हैं, मेरे तथा श्रीमती वेली के प्रति श्रापका मनोभाव श्रिषक सदय व स्नेहशील नहीं रहा है किसमस के कुछ समय पूर्व श्रावेदन पत्रों के सम्बन्ध में श्रापसे कुछ प्रश्न पूछ कर मैंने दुर्भाग्य से श्रापको विन्तुव्ध कर दिया श्रीर यद्यपि श्रापने लिखा था कि श्रापने मेरे स्पष्टीकरणों को समक्त लिया किसमस के पश्चात श्रापके समस्त मनोभावों ने शब्दों से मी श्रिषक सुबोध ढंग से व्यक्त किया है कि वेली परिवार के श्रातिरिक्त वीकानेर स्थित समस्त श्रूरोपियन मेरे मित्र हैं।" भी

श्रपने राज्य के श्रान्ति प्रशासन में श्रांग्ल हस्तत्तेप को समाप्त करने के प्रयासो में महाराजा गंगासिंह ने जो सफलता प्राप्त की वह परिणाम थी उनके पुरखों द्वारा की गई सिंध में दिये हुये वचनों पर दृढ रहने की उनकी नीति का तथा श्रावश्यकता पड़ने पर सर्वदा श्रांग्ल समाट की सहायता करने के लिये उनकी उद्यतता का जिससे निःसन्देह यह सिद्ध हो गया कि उन्हें (श्रंग्रेजों को) उनसे किसी भी प्रकार से भयभीत होने की श्रावश्यकता नहीं थी। न केवल भारत सरकार के साथ श्रपने सम्बन्धों में श्रपित श्रपने राज्य के प्रशासन में भी उन्होंने चरित्र बल तथा राजनीतिज्ञता प्रदर्शित की थी।

सन् १८६५ में जब ग्रांग्ल तथा चित्राल के बीच युद्ध घोषित कर दिया गया तथा पुनः सन् १८६६ में जब स्डान में युद्ध छिड़ गया तो महाराजा गंगासिंह ने ग्रापनी व्यक्तिगत सेवाएँ ग्रापित की किन्तु महाराजा उस समय केवल १५ वर्ष के थे। ग्रातः उनकी सुकुमार ग्रावस्था को तथा

२. वीकानर के महाराजा के निजी सचिव के कार्यालय की फाइल. सं० ११६।१५, पुरु ५२, कसान वेली का पत्र तारु ६-२-१६००।

बीटसन इए हिस्ट्री आत द इम्पीरियल सर्विस ट्रुपस आत नेटिव 'स्टेटस् (देशी' राज्यों क साम्राजिक सैन्य दलों का इतिहास), पृ० २१।

उत ल राइयां कोई गमीर परिमाण की नहीं थी इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये उन्हें कृतज्ञता के साथ श्रस्वीकार कर दिया गया। उसन् १८६६ में पुनः महाराजा ने बोर युद्ध के लिये श्रपनी सेवाएँ श्रपित की किन्तु उनके लिये व्यक्तिगत रूप से युद्ध में भाग लेने को सरकार ने वांछ नीय नहीं समभा। अ

सन् १६०० में महाराजा ने चीनी युद्ध के लिये अपनी तथा गंगा रिसाले की सेवाओं को अर्पित किया । १ १० अगस्त १६०० को महाराजा को रेजिडेन्ट पोलिटिकल एजेंट से सूचना प्राप्त हुई कि उनके अर्पण को सम्राज्ञी द्वारा कृतज्ञता के साथ स्वीकार कर लिया गया है । १ १ सितम्बर १६०० को महाराजा के नेत्रत्व में रेजिमेन्ट ने पोतारोहण किया तथा १४ सितम्बर को हांगकांग आ पहुँचा एवं १७ सितम्बर सन् १६०० को उसने वहां पर अवतरण किया। १ महाराजा तथा रेजिमेन्ट ने विभिन्न लड़ाइयों में सिक्रय भाग

"सर डन्जू, कर्नियम ने परिग्रित में यह आशा न्यक्त की है कि यह ज्ञात करके आपका चोम हल्का हो जायगा कि एक ऐसे गहन दुर्भिन्त तथा संकट के समय में, जैसा कि अमी राजपूताने में वर्तमान है, एक नरेश साम्रज्ञी के शत्रुओं के विरुद्ध समरभूमि में अपनी न्यिक्तगत सेना से भी, अपने निजी राज्य तथा प्रजा के हितों की देखमाल करके यथार्थतः सम्राज्ञी को कहीं अधिक मूल्यवान सेवार्ये अपित कर सकता है।"

वीटसन, ए हिस्ट्री आब द इम्पीरियल सर्विस ट्रुपस आव नेटिव स्टेटस् (देशी राज्यों के साम्राजिक सैन्य दलों का इतिहास), प्०२१।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचन के कार्यालय की फाइल सं० ११६।१४,
 कप्तान पस. एफ. बेली को महाराजा गंगासिंह का पत्र ता० २६-११-१८६।

वही, महाराजा गंगासिंह को कप्तान एस. एफ. बेली का पत्र ता० ४-११-१६००।
 कप्तान बेली लिखता है—

४. बीटसन, उपयुक्ति रचना में, प्० २९ ।

४. वही।

६. वही।

लिया जिनमें पोटिंग्यू का घेरा तथा पिटांग की विजय भी सिमिलित है । शान्ति संधि के हस्ताच्चर के पश्चात जब दिसम्बर सन् १६०० में महाराजा भारत लौटे तों भारत सरकार की ख्रोर से कलकत्ते में उनका सार्वजनिक स्वागत किया गया । रेजिमेन्ट की सेवाग्रों का ब्रिगेड के ख्रादेश तारीख कलकत्ता, २१ जून १६०१ में यथा निम्नांकित उल्लेख किया गया:—

"वीकानेर रेजिमेन्ट का विदाई श्रिमिवादन करते हुये विगेडियर जनरल कमांडिंग इस रेजिमेन्ट द्वारा उत्तरी चीन में इसके सात मास के सेवाकार्य पूर्ण पर्यटन के समय की गई विशिष्ट सेवा के लिये श्रिपनी निरमेन्न प्रशंसा श्रिभिव्यक्त करना चाहते हैं।

इस रेजिमेन्ट का स्त्राचार, स्रनुशासन, सैनिकवत् स्राचारण तथा स्वारथ्य भी स्राद्योपांत काफी संतोषपद रहा''।

इन्हीं विशिष्ट सेवाओं के बदले में भारत के सम्राट ने गंगा रिसाले के कराडे में 'चाइना १६००' का सम्मान—चिन्ह लगाने की अनुमति दो थी। ' महाराजा को, जो युद्ध के घटनात्तेत्र में जाने वाले एक मात्र मारतीय नरेश थे, जून १६०२ में सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक में उपस्थित होने के लिये जब वह इंगलैन्ड गये हुये थे, स्वयं सम्राट द्वारा 'चाइना मैडल' प्रदान किया गया।

सन् १६०२ में महाराजा ने सोमालीलैन्ड सैनिक कार्यवाइ के लिये अपनी तथा व्यक्तिगत गंगा रिसाले (बीकानेर ऊँट रिसाले) की सेवाएं अप्रिंत की । सरकार ने रेजिमेन्ट की सेवाओं को तो स्वीकार कर लिया किन्तु महाराजा के युद्ध के अग्रमाग में जाने के लिये लार्ड कर्जन सहमत नहीं हुआ । पन नवम्बर सन् १६०२ को रेजिमेन्ट ने बीकानेर से प्रस्थान किया तथा १४ जुलाई सन् १६०४ को वापस लीटे । सोमालीलैन्ड में अपने सेवा

१. श्रोभा-वीकानेर राज्य का इतिहास, भाग २, पू० ५०५।

२. वही।

३. चाइना एक्सपीडीशनरी फोर्स के चतुर्थ इन्फैन्ट्री ब्रिगेड के सेनापित मेजर जनरल जे० टी० किमन्स, डी० एस० ऋ०, द्वारा ब्रिगेड ऋदिश तारीख कलकत्ता २१ जून सन् १६०१ । दी हाउस ऋाफ बीकानेर (बीकानेर वंश), पृ० १७३–७४ ।

४. वीटसन, उपर्युक्त रचना में, पृ० १५३।

५. दी हाउस आ्राफ बीकानेर (बीकानेर वंश), पृ० ४५ ।

६. वही, पु० ४५ एवं १७४ ।

कार्य के बाद रेजिमेन्ट ने जिदशाली तथा घरातोल की लड़ाइयों में ग्रपनी विशिष्टता दिखलाई श्रीर सोमालीलैन्ड के युद्ध चेत्र की सेना के प्रधान सेनापित सर चार्ल्स इजर्टन द्वारा उसकी ग्रत्यन्त सराहना की गई। र

देश व साम्राज्य के प्रति वीकानेर राज्य एवं व्यक्तिगत रूप से
महाराजा की इन समस्त विशिष्ट सेवाग्रों के तथा उनका विभिन्न वायस—
रायों एवं शाही परिवार के साथ, उन लोगों के बीकानेर ग्राने के या महाराजा के दिल्ली तथा इंगलैएड के पर्यटन के ग्रवसरों पर, जो निकट सम्पर्क
स्थापित हो गया था उसके परिणाम स्वरूप महाराजा का सम्मान व गौरव
बहुत उन्नत हो गया जिससे हस्तचेप के विरुद्ध लड़ने में तथा सन् १६१०
में सुजानगढ स्थित पोलिटिकल एजेंट के पद के मिटाने में,
बीकानेर को पश्चिमी राजपूताना के राज्यों के रेजिडेन्ट की देखरेख में
किये जाने में तथा ग्रन्त में सन् १६१६ में वीकानेर राज्य के गवर्नर
जनरल के एजेंट के साथ सीधे सम्बन्ध स्थापित कर दिये जाने में यथेष्ट सहायता
मिली। विकानेर ही केवल एक ऐसा राज्य था जिसके इस प्रकार के सीधे
सम्बन्ध थे।

सन् १६०२ में महाराजा को एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक में उपस्थित होने के लिये लन्दन आमंत्रित किया गया तथा १५ जून सन् १६०२ को महाराजा लन्दन पहुँचे। इस अवसर पर उन्हें 'कोरोनेशन मेडल' से विभूषित किया गया तथा प्रिंस आव वेल्स, उत्तरकालीन सम्राट

१. १३ ग्रिनैडियर्स (गंगा-जैसलमेर), जिस नाम से यह रिसाला राज्यों के विलीनीकरण के पश्चात् प्रसिद्ध है, २२ अप्रेल को रैजिमेन्टल दिवस मनाता है। जैसलमेर रिसाला, गंगारिसाले के अप्रसरों, जूनियर कमीशनड् अप्रसरों तथा जवानों को लेकर सन् १६४६ में खड़ा किया गया था और 'टसका प्रशिच्तण व शस्त्रीकरण बीकानेर में हुआ था। बीकानेर गंगा रिसाला और जैसलमेर रिसाला मिला दिये गये और नई यूनिट का नाम गंगा जैसलमेर रिसाला रखा गया। रिसाले के ग्रिनेडियर्स के साथ के पुराने सम्बन्धों के कारण बाद में इसको ग्रिनेडियर्स के साथ मिलाने का निश्चय किया गया और अब यह १३ ग्रिनेडियर्स (गंगा जैसलमेर) के नाम से प्रख्यात है।

२. दी हाउस श्राफ बीकानेर (बीकानेर वंश), पुण ४४ ।

३. कर्नल ए० डी॰ मैकफर्सन (गर्नर जनरल का राजपूताने में एजेंट) का पत्र स॰ १३०८-१३०६ ता॰ २६-३-१६१६, परिशिष्ट १५।

जार्ज पन्चम का ए. डी. सी. भी नियुक्त किया गया । उनके भारत लौटने के कुछ समय पश्चात वह एक जनवरी सन् १६१३ को दिल्ली में राज्या— भिपेक दरबार में उपस्थित हुये । १ जून सन् १६०४ में एडवर्ड सप्तम के जन्म दिवस पर उन्हें के॰ सी॰ एस॰ ई॰ (नाइट कमाएडर आव् द स्टार ग्राफ इन्डिया) की उपाधि से सम्मानित किया गया।

क्योंकि राज्य के चेत्रों से सुदूरवर्ती दिल्ण में तीन गांवों— करनपुरा, पदमपुरा तथा केसरीसिंहपुरा के व्यवस्थापन में दिक्त होती थी महाराजा ने सन् १९०५ में उन्हे मारत सरकार को सौंप दिया तथा बदले में ग्राम बावलवास व ग्राम रत्ताखेड़ा एवं पच्चीस हजार रुपये की नकद धनराशि प्राप्त करली।

नवम्बर १६०५ में प्रिंस ऋाव् वेल्स (उत्तरकालीन सम्राट जार्ज पन्चम) तथा प्रिन्सेज मैरी बीकानेर ऋाये तथा विदाई के समय यह ऋभि-व्यक्त करते हुए महाराजा को लिखा कि उनके तथा महाराजा के बीच मित्रत्व ऋत्यधिक दृढ हो गया था।

तारीख १ जनवरी सन् १६०७ को महाराजा को जी सी द्राई ई. (ग्रांड कमान्डर त्राव् द इंडियन एम्पायर) की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा सन् १६०६ में उन्हे ग्रानरेरी लेक्टिनेंट कनैल (सेकिन्ड लान्सर्स) नियत किया गया। सम्राट जार्ज पंचम के सिंहासनारोहण के शीव्र परचात जून सन् १६१० में सम्राट की वर्षगांठ के ग्रवसर पर महाराजा को ग्रानरेरी कर्नल तथा सम्राट का ए डी सी नियुक्त किया गया। सन् १६११ में इंगलैंएड में सम्राट जार्ज पन्चम के राज्याभिषेकोत्सव में सम्मिलित होने के लिये महाराजा को निमंत्रित किया गया। ६ मई सन् १६१० को महाराज कुमार सादूल सिंह सहित महाराजा ने इंगलैंड के लिये प्रस्थान किया। इस यात्रा के समय केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी ने महाराजा को एल. एल. डी.

पिशिष्ट २० में महाराजा के पदकों तथा उपाधियों की सम्पूर्ण सूची दी
गई है।

२. जार्ज प्रिंस-पत्र ता० २७-११-१६०५।

^{•••• &#}x27;मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जो शुम स्मृतियां मैं तथा प्रिन्सेस मारतवर्ष से साथ ले जायेंगे, उनमें हमारे बीकानेर के अत्यन्त रमणीय निवास काल की तथा आपके और हमारे बीच अत्यिषक सुदढ़ हो नाने वार्ल मैत्री माव की स्मृतियों से अधिक प्रिय हमें कुछ नहीं होगा।"

(डाक्टर ग्राफ ला) की डिग्री से सम्मानित किया। लार्ड हार्डिंग द्वारा सरवार कमेटी का सदस्य नियत किये जाने पर सन् १६११ में दिल्ली में होने वाले राज्याभिषेक दरवार के प्रवन्ध कार्यों में महाराजा को समीपता से सम्मिलित किया गया। तारीख ७ दिसम्बर सन् १६११ को सम्राट ग्रौर सम्राज्ञी के स्वागत में महाराजा सम्मिलित हुये तथा राज दम्पित के प्रतिनिधि से भी मिले। तारीख १२ दिसम्बर सन् १६११ को न्न्रायोजित इस दरवार में सम्राट ने महाराजा को जी सी एस न्नाई (ग्रांड कमान्डर न्नाव्द स्टार न्नाव इन्डिया) के सम्मान से विभूषित किया। इस न्नवसर पर महाराजकुमार सादूलसिंह ने सम्नाट के पेज (बाल भृत्य) के रूप में कार्य किया।

सन् १९१३ में नमक समभौते को जो सन् १८७६ में किया गया था रह कर दिया गया तथा एक नया समभौता किया गया जिसे २४ जुलाई सन् १९१३ को पुष्ट किया गया।

१. एचिसन, उपयु वत रचना में, भाग ३, पृ० ३०१-३०२।

श्रांग्ल-भारतीय तथा साम्राजिक राजनीति में महाराजा गंगासिंह का भाग

जैसा कि गत परिच्छेद में वर्णित किया जा चुका है, महाराजा गंगासिंह के शासन का आरम्भिक तथा उनकी अवयस्कता का काल एक कठिन परीचा का समय था क्योंकि उन्हें सर्वोच सत्ता के बढते हुये हस्तचेप तथा राज्य के भीतर श्रराजकता व विधिहीनता का सामना करना पड़ रहा था । किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक परिस्थितियां बदल चुकी थी श्रीर उन्होंने राज्य के प्रशासन के श्राधिनक-करण की श्रपनी महान योजना का सूत्रपात कर दिया । वीसवीं शताब्दी के ऋारम्भ में चीन की लड़ाई तथा सोमालीलैन्ड सैनिक कार्यवाही के समय एक योदा के रूप में अपने उत्कर्ष को वह सिद्ध कर चुके थे। महाराजा के प्रति आंग्ल-शासन ने श्रिधिक मैत्रीपूर्ण भावना दिखानो श्रारम्भ करदी तथा उनके व केन्द्रीय त्र्याधिकारी-वर्ग के बीच स्नेहपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गये । महाराजा ने, जो अब पहले से अधिक अनुभवी हो चुके थे, यद्याप इस समय उनकी अवस्था तीस वर्ष से कुछ ही अधिक थी, बाह्य हस्तक्तेप के विना प्रमुख शासकीय व प्रशासकीय सुधारों का स्त्रपांत किया । उन्होंने एक प्रथम श्रेणी के योद्धा तथा राजनीतिज्ञ के रूप में श्रपनी प्रतिभा प्रदर्शित की श्रीर श्रपने श्रापको भारतवर्ष का एक महान देशभक्ष तथा आंग्ल-शासन का एक निष्ठावान मित्र प्रमाणित कर दिया । उनके शासनकाल का उत्तर कालीन भाग वीकानेर के इतिहास में शायद अधिकतम महत्वपूर्ण युग का निर्माण करता है जबकि उसके शासक का राष्ट्रीय एवं साम्राजिक राजनीति में प्रमुख माग लेने के लिये ब्राह्मन किया जाने लगा । गंगासिंह के कारण ही बीकानेर इतना कीर्तिमान हुआ। 🕟

प्रथम महायुद्ध के च्रारम्भ होने पर, महाराजा प्रथम राज्यकर्ता भारतीय नरेश थे, जिन्होंने ता०३ ऋगस्त सन् १९१४ को सम्राट^२ तथा भारत के वाइसराय³ को तार भेजकर, साम्राज्य के दोम, सम्मान तथा संरत्नण के लिये ग्रपनी व्यक्तिगत एवं वीकानेर शज्य की वहादुर सेना की सेवाग्रों तथा शक्ति को तुरन्त सम्राट के समादेश में प्रस्तुत किया । सम्राट ने अपने ता० ४ ग्रगस्त सन् १९१४ के तार में इस भेंट के लिये महाराजा को धन्यवाद दिया तथा लिखा कि उस समय तक सैनिक कारवाइ के विषय में कोई निर्णय नहीं लिया गया था किन्तु महाराजा की सहायता की भेंट को ध्यान में रखा जायगा। ४ युद्ध को जीतने तथा युद्ध-प्रयत्नों में सहायता के लिये ग्रपनी व्यक्तिगत एवं ग्रपने राज्य की सेना की सेवाओं की उदार भेंट के लिये, सम्राट के नाम से दीप्त ग्राभिन्यंजना शैली में महाराजा को धन्यवाद देते हये वाइसराय ने भी ता० ४ अगस्त सन् १९१४ को तार दिया। १ वाइसराय ने लिखा कि उसे विदित है कि वह महाराजा तथा उनकी बहादुर सेना पर दृढ विश्वास रख सकता है। ता०६ अगस्त सन् १९१४ को भारत के महा सेनापित ने महाराजा को यह सूचना देते हुये तार दिया कि उनकी स्वतोमावी एवं ऋत्यन्त स्वागतनीय भेंट को कभी विरमृत नहीं किया जायगा तथा यदि कोई ऐसा अवसर आया तो अवश्यमेव वह महाराजा तथा उनकी बहादुर सेना की सहायता का स्वागत करेंगे।

त्रपने बीस वर्ष के दीर्घकालीन इतिहास के कारण यह रेजिमेन्ट विख्यात हो गया था श्रतः युद्ध में प्रमुख भाग लेने के लिये गंगा रिसाला भवितन्य था। "सन् १९१४ के श्रक्टूबर में वह स्वेज पहुँचा। वहां गंगा

१. वाइसराय का खरीता जैसा कि "ए ब्रीफ स्टेटमैन्ट आव बीकानेरस् वार सर-विसेज इन द ग्रेट वार" (महायुद्ध में बीकानेर की युद्धसम्बन्धी सेवाओं का संद्धित विवरण) में संदर्भित किया गया है, पृ० १८ ।

२. परिशिष्ट १६ ।

३. परिशिष्ट १७।

४. परिशिष्ट १८।

प्र. परिशिष्ट १६।

६. ए त्रीफ स्टेटमैन्ट आव वीकानेरस् वार सर्विसेज इन द ग्रेट वार (महायुद्ध में वीकानेर की युद्ध-सम्बन्धी सेवाओं का सिन्धि विवरण) पृ० १८ ।

७. इस रिसाले को महाराजा गंगासिंह की अवयस्कता के समय उत्यापित किया

रिसाले की अत्यधिक मांग यी क्योंकि स्वेज के आस पास का भू-प्रदेश केमलकोर (ऊंट सेना-निकाय) के उपयोग के लिये विशेषतः उपयुक्त था। मिश्र में एक मात्र केमलकोर होने के कारण, युद्ध के साढ़े चार वर्षों की अवधि तक स्वेज के पूर्व में रचा, अमण एवं जास्सी देखमाल के कार्य इस विख्यात रेजिमेन्ट पर निर्भर रहे। ता॰ २० नवम्बर, १६१४ को प्रथम बार गंगा रिसाले की विर-अल-नस में शत्रु से मुठभेड़ हुई। मिश्र के जनरल आफिसर कमारिंडग जनरल सर जान मेक्सवैल ने जनवरी सन् १६१५ में अपने विचारों को सुरपष्ट शब्दों में व्यक्त करते हुये महाराजा को लिखा कि बीकानेर का केमलकोर (ऊंट सेना-निकाय) अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ तथा उसके विना वह इतनी अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता था।

सन् १६१५ के जनवरी श्रीर फरवरी महीनों में जमाल पाशा की अध्यक्ता में तुकीं सेना के अग्रसर होने पर वीकानेर गंगा रिसाले की शत्रु से निरंतर मुठभेंड होती रही तथा फरवरी के आरम्भ में नहर पर अन्तिम आक्रमण के समय वे महाराजा के निजो समादेशन में फैरो चौकी की खाइयों में थे। अप्रांस से भारत लोटते हुये मार्ग में महाराजा वहां पहुँचे थे। कातिब-अल-खेल के समीप शत्रु के साथ युद्ध में, जिसमें महाराजा स्वयं सेना का समादेशन

गया था उस समय राज्य कार्य की देखमाल रीजेन्सी कीन्सिल द्वारा की नाती थी। लार्ड एलिंगन अपने ता॰ २३-५-१-६४ के खरौते द्वारा महाराजा की इन शब्दों में अस्यर्थना करता है—

"एक अत्यन्त मूल्यवान केमल कोर (ऊंट सेना) के अधिपति होने पर महाराजा अब गर्व कर सकते हैं । अपने प्रकार को भारतवर्ष में यह केवल मात्र एक ही केमल कोर (ऊंट सेना) है ।"

गंगा रिसाला अपने वर्तमान सुन्यवस्थित एवं आधुनिक रूप में, महाराजा गंगासिंह के शासन के आरमिक काल में विकसित हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बीकानर, ऊंटों की घरती होने के कारण तथा उनके प्रविस्तारण के लिये यहां के मू-प्रदेश के अत्यधिक उपयुक्त होने के कारण शतान्दियों पूर्व से यहां केमल कोर (ऊंट सेना) का युद्ध कार्यों में उपयोग होता रहा है।

१. ए शॉर्ट हिस्ट्री आव द सर्विसेज रेन्डर्ड वाइ द इम्पीरियल सर्विस ट्रुप्स द्यूरिंग द शेट वार, १६१४-१५ (महायुद्ध १६१४-१५ में इम्पीरियल सर्विस ट्रुप्स द्वारा की गई सेवाओं का संन्धित इतिहास) ।

कर रहे थे। उन्होंने उन्नीस गोलियां चलाई जो सब खड़े होकर चलाई गई थी। जब तुर्क परास्त हो गये तो गंगा रिसाले ने महाराजा के समादेश में रात्रु का पीछा किया। मिश्र में द्रांग्ल महासेनापित सर जान मैक्सवैल के प्रेपणों में महाराजा द्वारा की हुई सेवात्रों की मी प्रशंसा की गई थी। गंगा रिसाले के द्रारयुक्तम कार्य तथा मूल्यवान सेवात्रों का लार्ड हार्डिंग प्रं लार्ड चेम्सफोर्ड द्वारा उनकी शासकीय सूचनात्रों में गुणगान किया गया था। इन प्रशंसात्रों की भारत के राज्य-सचिव तथा मिश्र स्थित द्रांग्ल महा सेनापित की सूचनात्रों द्वारा पुष्टि की ई। ता० १-१०-१६१६ तथा ता० २--६-१६१७ के प्रेपणों में भी गंगा रिसाले की सेवाद्रों का उल्लेख किया गया था।

सम्राट ने ग्रापने ४ मार्च १६१८ के तार द्वारा बीकानेर के राजवंश की ग्राप्त सम्राट के प्रति उनकी निष्ठा के लिये सराहना की । युद्ध समाप्ति के हस्ताचरण के ग्रावसर पर, तारीख १८ नवम्बर सन् १६१८ के एक ग्रान्य समुद्री तार में सम्राट ने बीकानेर की युद्ध सम्बन्ध सेवाग्रों तथा युद्ध के ठीक ग्रारम्भ से भारतीय नरेशों एवं प्रजा ने जिस भावना तथा साम्राज्य के शेप भागों के साथ उद्देश्य के स्थिर एकत्व का प्रदर्शन किया था, उसके प्रति पुनः ग्रापनी प्रशंसा को ग्राभिव्यक्त किया । इसके ग्रातिरिक्त वाहसराय ने महाराजा को स्चित किया कि बीकानेरी सेना ने मिश्र में ग्राधिकतम् वीरता से युद्ध किया जिससे बीकानेर की सेना की प्रतिष्ठा ग्रीर ग्राधिक बढी है । मिश्र तथा पैलेस्टाइन में बड़ी वहादुरी से लड़ने के लिये तत्कालीन भारत के राज्य-सचिव ग्रास्टिन चैम्बरलेन ने भी ग्रापनी प्रशंसा के दीप्त उपहार प्रस्तुत करके उनकी महिमा में चार चाँद लगाये।

इन पुद्ध सेनाश्रों के बदले में महाराजा को सन् १६१८ में

१. लॉर्ड हार्डिंग का खरीता ता० १४-३-१६१६।

२. लार्ड चेम्सफोर्ड का खरीता ता० ११≈३ –१६१८ ।

ए मीक स्टेटमैन्ट आव बीकानेरस् सर्विसे के इन द ग्रेट वार १६१४-१५
 (महायुद्ध १६१४-१५ में बीकानेर की सेवाओं का सिव्हास विवरण), पूर्ध ।

४. वही ।

५. वही, २०४।

६. बही, पृ० ६ ।

के॰ सी॰ बी॰ (नाइट कमान्डर आव् द आर्डर आव् द वाय) की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा उनकी व्यक्तिगत सलामी को बढाकर सत्रह तोषों से उन्नीस तोषों की कर दिया गया । उनको आंड कार्डन आव द नाइल' तथा क्षिटिश वार एएड विक्ट्री' के पदक भी मिले । सन् १६१६ में उन्हें जी॰ सी॰ वी॰ ओ॰ (आंड कमांडर आव द विक्टोरियन आर्डर) बनाया गया इसके अतिरिक्त दो तुर्की राइफलें, दो वायुयान , सात मशीनगनें, इक्कानवे राइफलें तथा कुछ तलवारें व पिस्तौल भी, जिन सब को शत्रु से छीना गया था आंग्ल शासन द्वारा बीकानेर राज्य को भेंट की गई।

इसी बीच इन्डियन नेशनल कांग्रेस (भारतीय राष्ट्रीय महासभा) के कार्यक्रम में एक परिवर्तन हो गया था। सन् १९१५ तक कांग्रेस, साम्राज्य के अन्तर्गत स्वराज्य पद्धति पर संवैधानिक उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने के पच् में थी । किन्तु सन् १६१४ में श्रीमती विसेंट के कांग्रेस में प्रवेश तथा गोलले व फिरोजशाह मेहता के निधन के साथ इस लच्च को वदल दिया गया तथा होम रूल आन्दोलन आरम्भ कर दिया गया। मुस्लिमलीग भी इस म्रान्दोलन में सहमत हो गई। सन १९१९ में किये गये भारते मिन्टो' सुधार, सर एस॰ पी॰ सिन्हा तथा कृष्णास्वामी जैसे भारतीय नेतात्रों का वाइसराय की एग्जीक्यूटिव कौनिसल (कार्यकारिणी परिपद) में सम्मिलित होना, वंगाल का पुनरेकन, ग्रादि यह सब कुछ जो कि भारत में राज-नीतिक ग्रान्दोलन को शान्त तथा ग्रनुत्तेजित करने की ग्रोर प्रवृत हो रहा था अब इनका अर्थ आन्दोलन के प्रतिसमर्थन के रूप में लगाया जाने लगा था।³ मित्र राष्ट्रों ने यह भी घोषित किया था कि युद्ध स्वाधी-नता की सुरत्ता करने के लिये तथा इस संसार को लोकतन्त्र के लिये न्तेम वनाने के लिये लड़ा गया था । स्रांग्ल-शासन् भारतीयों को यह प्रतीत कराने के लिये त्रातुर था, कि वह उन्हे साम्राज्य से सम्बन्ध रखने वाले विपयों में सहकारी बनाने का सदा ऋमिलापी है। सितम्बर सन् १६१५ में उसने भारत की इम्पीरियल लेजिसलेटिव कौन्सिल (साम्राजिक विधान परिषद्) में सर मोहम्मद शफी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा सन् १९१६ में निर्णय किया कि ऋघिराज्य तथा उपनिवेशों पर शासन करने

१. परिशिष्ट २०।

२. वीकानेर के किले में करनी म्यूजियम में अव प्रदर्शित है।

सर जॉन किमंग, पोलिटिकल इन्डिया (राजनीतिक मारत) १८३२-१६३२,
 पृ० ५२-६०।

वाले राज्य के बीच इस प्रकार का घनिष्ठ साहचर्य अपेद्धित है। सन् १६१७ में लन्दन में एक साम्राजिक सम्मेलन बुलाया गया तथा इस संमेलन में सम्मिलित होने के लिये जिन तीन भारतीय प्रतिनिधियों को मनोनीत किया गया उनमें बीकानेर के महाराजा भी थे।

महाराजा एक देशमित पूर्ण भारतीय के नाते साम्राज्य के ग्रान्तर्गत भारत के लिये एक उच्चतर प्रस्थित की मांग के साथ सहानुभूति रखते थे तथा ग्राप्नी स्वतन्त्रता एवं मुक्ति के लिये ग्रांग्ल भारत की जनता की व्याप्रता के मर्म को वह भलीभांति समभते थे यद्यपि उस समय जनता में कुछ इस प्रकार की भ्रांत धारणा फैली हुई थी कि राजालोग उनको महत्वाकांचात्रों के प्रति संवेदनाशील नहीं थे ।

श्रतः जैसे ही साम्राजिक सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले भारतीय प्रतिनिधियों में उन्हें मनोनीत किया गया, इस भ्रांत धारणा को मिटाने के लिये उन्होंने प्रथम अवसर को काम में लिया । यद्यपि महाराजा को राजन्य-वर्ग का प्रतिनिधित्व करने के लिये चुना गया या किन्तु उन्होंने पूर्णतया अनुभव किया कि वह बीकानेर के शासक या नरेशां के प्रतिनिधि के रूप में नहीं वरन् अपने मूलराज्य (भारत) के एक प्रवक्ता के रूप में लन्दन जा रहे थे। इंग्लैन्ड के लिये उनके प्रस्थान से पूर्व नरेशां द्वारा उनके सम्मान में वम्बई में दिये गये भोज में ता॰ ७ फरवरी १९१७ को महाराजा द्वारा दिये गये भाषण में उनकी इस अनुभूति का प्रत्यचीकरण होता है जब उन्होंने कहा कि चाहे त्राप लोग त्रांग्ल-भारत के राज्यचेत्रों से ऋाये हैं या भारतीय राज्यों के शासन चेत्रों से, ऋाप सव लोग भारतीय हैं, जो अपने सम्राट के प्रति निष्ठा तथा अनुरक्ति में, अपने मूल-राज्य के प्रति अनुराग में तथा भारत के समस्त धर्ममता एवं सम्प्रदायों के ग्रपने भ्रातृगण के प्रति ग्रपनो ग्रगाघ एवं ग्रकृत्रिम उत्सकता में पूर्ण-रूपेण एकीकृत हैं। इसी भाषण में उन्होंने ग्रपना यह दृढ विश्वास भी प्रकट किया कि युद्ध के समाप्त होने पर भारत के सम्बन्ध में दृष्टिकोण को प्रत्येक उचित व परिपक्व राजनीतिक सुधार के अनुकूल और भी अधिक परिवर्तित कर दिया जायगा तथा ब्रिटेन के मार्ग प्रदर्शन एवं संरक्तरण में श्रपने भाग्य का निर्माण करने की भारत की न्यायपूर्ण अभ्यर्थनाओं एवं

१. अन्य दो प्रतिनिधि सर जेम्स मेस्टन तथा सर एस॰ पी सिन्हा थे।

महत्वाकां जा यो भुलाया नहीं जायगा। भाराराजा हृदय से सर्वदा राष्ट्र-वादी थे किन्तु इस ग्रवसर पर उन्होंने इस तथ्य को स्पष्ट कर दिया। ऐसा प्रथम बार हुआ था कि एक बड़े राज्य के शासक ने अपने विचारों को स्पष्ट रूप से इस प्रकार के आयोजन में व्यक्त किया हो क्योंकि जब महाराजा गंगासिंह ने ऋपनी राष्ट्रवादिता-पूर्ण एवं देशमिक-पूर्ण मावनाऋौं को प्रकट किया उस समय महामोज में अनेक राज्यकर्ता नरेश उपस्थित थे तथा एक ग्रांग्ल गवर्नर उसकी ग्राध्यस्ता कर रहा था। इससे ग्रांग्ल भारत के राजनीतिज्ञों को बड़ा विस्मय हुआ तथा उन सबने इसका अभि-नन्दन किया कि इस ग्राधिघोषणा ने, क्योंकि यह महामहिम सम्राट के शासन द्वारा मनोनीत राज्यकर्ता नरेशों के प्रतिनिधि द्वारा की गई है, भार-तीय राजनीति ब्रान्दोलन के समस्त स्वरूप को बदल दिया है। जैसाकि उस समय के समाचार पत्रों से प्रतीत होता है इस युगारम्भ करने वाले व्या-ख्यान की सार्वजनिक भारतीय प्रतिक्रिया यथा निम्न लिखित हुई । भारतीय प्रतिनिधियों में महाराजा के चुनाव का अभिवादन किया गया। तथा इस तथ्य की प्रशंसा की गई कि राजालोग भी अपनी देशभक्ति के कारण साम्राज्य की समस्यात्रों की विवेचना साहसिकता एवं स्पष्ट भाषिता के साथ सार्वजनिक रूप से कर सकते हैं। महाराजा का भाषण भारतीय एकता एवं राष्ट्रीयता की भावना के विकास में एक महत्वपूर्ण अवस्था का सूचक था । उन्होंने उस पारस्परिक अविश्वास के आवरण को नष्ट कर दिया जो अब तक आंग्ल-भारत तथा देशी राज्यों के बीच सहभावना के स्वतन्त्र प्रवाह को रोक रहा था। उन्होंने तत्कालीन भारत के जीवन पर प्रकाश **डाला, राजा एवं कृषक, शिच्चित एवं अशिच्चित को सहयोगार्थ प्रेरित किया तथा एक** नवीन चेतना प्रदर्शित की जिसने आंग्ल-सम्राट के अधीन भारत को आंग्ल साम्राज्य की एक शोभा बना देने वाले एक परिपूर्ण जीवन के लिये उत्करिटत मारत के सदस्य की गहराइयों को आन्दोलित कर दिया।

महाराजा लार्ड सिन्हा सहित साम्राजिक संमेलन तथा साम्राजिक

१. महाराजा गंगासिंह के इंगलैन्ड के लिये निदा होने से पूर्व, ताजमहल्त होटल, वम्नई में मारत के राज्यकर्ता नरेशों द्वारा उनके सम्मान में दिये गये महामोज में उनके द्वारा ता० ७-२-१६१७ को दिया गया माष्णा।

२. द मद्रास टाइम्स, १-५-१६१७।

३. अमृत वाजार पत्रिका, १५-५-१६१७।

४. इन्डियन सोशल रिफॉर्मर, ११--२-१६१७।

युद्ध मंत्रि-मएडल दोनों में उपस्थित हुये तथा यद्यपि पारिभाषिक स्प से वे राज्य-सिव के मन्त्रणाकार एवं सहायक के रूप में इंग्लैएड गये थे उन्होंने किसी ग्रत्युपचारी विभेद का पालन नहीं किया। किसी ग्रन्य सदस्य के समान महाराजा को संविमर्श में भाग लेने का ठीक वैसा ही सुग्रवसर प्राप्त था। श्री चेंबरलेन ग्रवाधरूप से उनसे परामर्श लेते रहे तथा उन्हे स्पष्ट रूपेण एक सहकारी एवं सह-प्रबन्धक का स्थान दिया।

यह साम्राजिक युद्धं मंत्रिमण्डल विजय के उपायों एवं विजय-विषयक सन्धि के निबन्धनों पर विचार करने के एक मात्र उद्देश्य से समवेत हुन्ना था। यद्यपि त्रातीतकाल में साम्राजिक संमेलन में त्रान्तरिक विषयों पर विचार करने का सामान्य प्रचलन था, श्रीर सर्व सम्मति से यह निश्चय किया गया कि जिस परिस्थिति में वह सम्मिलित हुये हैं उसकी गम्भोरता को देखते हुये संमेलन अपने आप को युद्ध से सम्बन्ध रखने वाले विषयों पर विचार करने में निरत रखेगा तथा अन्य मामलों को शान्ति स्थापित हो जाने तक स्थगित किया जा सकता है। फिर भी महाराजा गंगासिंह ने प्रत्येक उस सार्वजनिक समारोह में, जिसमें उन्हें निमंत्रित किया जाता था या सार्वजनिक जीवन में महत्व रखने वाले व्यक्तियों के साथ ग्रंपने वार्तालाप में, साम्राज्य के ऋपने सह-नागरिकों को भारत की आकांचाओं एवं त्राशात्रों से परिचित कराने के किसी त्रावसर को हाथ से नहीं जाने दिया । इसी प्रकार के एक ग्रावसर पर महाराजा ने भारत को प्रथम बार साम्रा-जिक युद्ध संमेलन तथा युद्ध मंत्रि मएडल की विचारणा में भाग लेने के लिये आमं-त्रित किये जाने पर ऋगाध संतोष प्रकट करते हुये भारत के पन्न का पृष्टपोषण किया श्रीर कहा कि भारत भी ग्रेट ब्रिटेन के मार्ग दर्शन में तथा उसकी सहायता से संवैधानिक सिद्धान्तों पर राजनैतिक एवं आर्थिक दृष्टि से प्रगति करने की तथा श्रन्ततोगत्वा स्वतंत्रता एवं श्रात्मशासन प्राप्त करने की उच्चाकांचा रखता है।

उन्होंने दृढतापूर्वक कहा कि जहां तक भारत के देशी राज्यों का सम्बन्ध है, कुछ निवेशों में किये जाने वाले विश्वास के विपरीत,

१. द हिन्दुस्तान रिन्यू, ११ अगस्त, १६१७।

एम्पायर पार्लियामैन्टरी एसोसिएशन (युनाइटेड किंगडम ब्रांच) द्वारा हाउस श्राव कॉमन्स, हारकोर्ट रूप, में ता० २४--४--१६१७ को भारतीय प्रति-निधियों को दिया गया मध्याह्य-मोज।

नरेश वास्तव मे इस प्रकार की प्रगति पर हर्षानुभव करेंगे तथा किसी मी राजनैतिक उन्नति पर कदापि त्राक्रोश नहीं करेंगे तथा तत्कालीन विद्यमान परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुये, जिनको बहाना वनाकर बहुधा भारतीय महत्वाकांक्वात्रों की उपेक्वा की जाती थी, उन्होने निर्देश किया कि वे समस्याएँ ऐसी नहीं थी जिनका सामाधान करना श्रसम्भव हो । उन्होंने वताया कि जहाँ तक जातियों की विभिन्नता का प्रश्न है, इससे कोई वाधा उपस्थित नहीं होनी चाहिये श्रीर इसके उदाहरण के रूप में उन्होने कनाडा को उद्घृत किया जहां पर लगभग इतनी ही त्रिभिन्न जातियां वास करती हैं तथा इंग्लैएड तक में भी तीन विविध जातियां मौजूद हैं। उन्होंने उनको स्मरण कराया कि भारत केवल एक देश ही नहीं ऋषित विशाल द्वीप है, एक राज्य ही नहीं ऋषितु साम्राज्य के ऋन्दर एक साम्राज्य है। भारत में व्याप्त ग्रशान्ति का वर्णन करते हुये उन्होंने कहा कि यह श्रशान्ति दो प्रकार की है। एक तो वह जिसे राजसत्ताद्रोही तत्वों द्वारा प्रचारित किये जाने का प्रयास किया जा रहा है किन्तु जिसकी अत्यन्त साधारण प्रतिक्रिया हो रही है तथा जिसे सुगमता से उन्मूलित किया जा सकता है ऋौर दूसरी वह जो ''न्याय संगत'' ग्रशान्ति है जो भारत में मन्दगति राजनीतिक प्रगति से उत्पन्न हुई है। महाराजा ने कहा कि इस 'न्याय संगत' त्राशान्ति को तुष्ट किया जा सकता है यदि इस समस्या के साथ सहानुभूति, संकल्प, उदारता एवं विशाल हृदयता से बर्ताव किया जाय तथा भारतीय जनता को पर्याप्त मत प्रकाशनाधिकार व सत्ताधिकार दे दिये जाये 1⁹

केवल इसी एक अवसर पर ही नहीं अपित १० मई सन् १६१७ को 'टाइम्स' को एक मेंट में उन्होने पुनः जोर देकर कहा कि भारत जैसा विशाल देश एक न एक दिन स्वतंत्र होकर रहेगा अतः समानता के आधार पर दोनों देशों में स्वेच्छाकृत मेल बहुत लाभप्रद सिद्ध होगा तथा इन सुधारों का सूत्रपात जितना ही अविलम्ब किया जायगा उतना ही श्रेष्ठ रहेगा । इसी अवसर पर उन्होने इसके अतिरिक्त यह भी निर्देश किया कि आंग्ल शासन द्वारा अत्यधिक सावधानी वर्तना उनके लिये उतनी ही महान भूल होगी जितनी कि ठीक न सोचे गये व अदूर-दशीं उग्र प्रस्तावों को स्वीकार करना । आंग्ल भारत में किसी प्रकार की राजनीतिक प्रगति से राजा लोग अप्रसन्न होंगे, आलोचकों के हृदय से राजाओं

१. महाराजा गंगासिंह का वक्रव्य ता० २४ अप्रेल सन् १६१७, परिशिष्ट २१ ।

के प्रति इस प्रकार की प्रत्येक भ्रांत धारणा एवं निराधार संदेह को दूर करने के ग्रापने प्रयास को भी उन्होंने दुहराया । उन्होने दढता पूर्वक कहा कि ठीक इसके विपरीत भारत को आंग्ल ध्वजा के नीचे सवैधानिक प्रणाली से राजनीतिक प्रगति करते देखकर नरेश लोग अत्यन्त आनिन्दत होंगे। जो लोग महाराजा के सम्पर्क में आये उन पर उनकी तीच्याबृद्धि एवं राजनीतिज्ञता ने गहरा प्रभाव डाला तथा साम्राजिक युद्ध मेत्रिमंडल की पहली बैठक में इंग्लैन्ड के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री लायड जार्ज ने उनके कार्यों की ग्रत्यन्त विभायी शब्दों में प्रशंसा करते हुये कहा --

" 'बीकानेर' जैसा कि सहदयता एवं स्नेह से प्रायः उन्हे सम्बोधित किया जाता था - वे भारतीय नरेश - ग्रपने महान देश के पुरुषत्व के भव्य प्रतिरूप हैं । हमें शीघ़ ही यह विदित हो गया कि वह पूरव के बुद्धिमान श्रेष्ठ पुरुषों में से एक है। विशेषकर भारत से सम्बन्ध रखने वाले समस्त प्रश्नों पर उनके परामशे पर हमारी ख्रास्था ख्रिधिकाधिक होती जा रही है।""

साम्राजिक युद्ध परिपद एवं मंत्रिमंडल में प्रतिनिधि के रूप में महाराजा के चुनाव के सम्बन्ध में सर रोपर लेथबिज ने कहा कि आंग्ल प्रशासन एवं त्रांग्ल भारत के उस शिचित वर्ग का जो भारतीय उपमहा-द्वीप में वसने वाले करोड़ों मूक इन्सानों का मान्य वक्ता वनता जा रहा है तथा नरेशों का जो शेष एक तिहाई भारत के वास्तविक शासक है, महाराजा यथेष्ठ रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं । उसके विचारानुसार उस समय भारत में यह व्यापक रुप से विश्वास किया जाता था कि महाराजा से श्रिषिक उत्तम व योग्य भारतीयों का प्रतिनिधि नहीं दूँ दा जा सकता था। 3

विभिन्न सम्मेलनों में श्रंग्रेजी एवं भारतीय जनता को एक दसरे के समीप लाने के तथा भारतीय महत्वाकां ज्ञात्रों के प्रति उनके हृदय में समभ व सहानुभूति उत्पन्न करने के महाराजा द्वारा जो प्रयास किये गये थे उनका भारतीय समाचार पत्रों ने भी यथोचित गुण्गान किया । यद्यपि भारत के साथ इंग्लैन्ड के सम्बन्धों पर महाराजा को गर्व था किन्तु इसके साथ

इन्डियाज इम्पीरियल पार्टनरिशप, पु० ३५-३८, परिशिष्ट- २२ । ٧.

^{₹.}

पन्नीकर, हिल हाईनैस द् महाराजा आफ बीकानेर, ए वायोग्राफी, पृ० १७७ । एशियाटिक रिन्यू ता० १०-५-१६१७, पृ० ४६३-६८, 'साम्राजिक युद्ध सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधित्व' शीर्षक का सर रोपर लेयिन्न का एक लेख ।

साय भारत के सम्मान तथा ऋांग्ल साम्राज्य में भारत के ऋधिकार युक्त स्थान का भी उन्हें कम गर्व नहीं था। भारत को तलवार की शिक्त से ग्राधीन किया हुन्रा था - कुछ दिकयान्सी न्रांग्ल-भारतीय पदाधिकारियों के इस प्रियवाद की विवेक शून्यता एवं उपहासस्पदता को महाराजा ने ज्वलंत शन्दों में न्यक्त किया । उन्होंने उस अन्विवश्वास का मंडा फोड़ किया जिसका ग्रांग्ल भारतीय सम्पादकों तथा लाई सिडनहम जैसे प्रशासकों द्वारा ग्रत्यन्त परिश्रमशीलता के साथ दिंदोरा पीटा जा रहा था। साम्राजिक सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में उनके चुनाव के समय कुछ लोगाँ के हृदय में जो ग्रवसादकर ग्राशंकायें थीं उनको उन्होंने मिथ्या सिद्ध कर दिया । उन्होंने अपने देश के सर्वश्रेष्ठ हितों के प्रति अपने पूर्ण ज्ञान एवं सजगता का परिचय दिया । उन्होंने उन सिद्धान्तों की रूपरेखा निर्धान रित की जिनके ब्राधार पर ब्रागामी कई वर्षों तक ब्रांग्ल-भारत में प्रगति करने की सम्भावना थी। उनके कथन न केवल देशभिक्त एवं पूर्ण सम-वेदना की भावनात्रों से त्रोत प्रोत होते थे त्रापित भारतीयों एवं त्रांग्रेजों के बीच सहकारिता तथा स्नेह का सन्देश भी उनमें भरा हुआ होता था। उनके व्यक्तिगत प्रभाव, समयोचित एवं सविवेक भाषणों तथा शासकीय पत्रों के कारण अभिनव कांग्रेस ने एक प्रस्ताव द्वारा भारत में आंग्ल नीति के उद्देश्यों की अधिकृत घोपणा करने की मांग की ।3

भारत के तत्कालीन राज्य-सचिव श्री ग्रास्टिन चेम्बरलेन, महा-राजा गंगासिंह की राजनीतिज्ञता से इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने उनसे भारत की समस्त महत्वपूर्ण समस्याग्रों पर व्योरेवार विवरण लिखने का श्रानुरोध किया । क्योंकि साम्राज्य के भीतर भारत के लिये श्रेष्टतर स्थान की सम्प्राप्ति के लिये यह एक श्राधिकतम् महत्वपूर्ण प्रश्न था श्रीर इंग्लैन्ड में उनके निवास काल में महाराजा को इस विषय में लिखने का श्रावकाश प्राप्त नहीं हो सका था, इंग्लैन्ड से भारत लौटते समय रोम में उन्होंने श्रापने विश्राम को त्याग कर श्राविलम्ब इस विषय पर लिखकर ता० १५ मई सन् १६१७ को श्री चेम्बरलेन को मेज दिया । उन्होंने लिखा—

"... तथापि मैं त्राशा करता हूँ कि कुछ सम्भाव्य घटनात्रों के परिणाम स्वरूप भारत में जो गम्भीर परिस्थिति उत्पन्न

१. युनाइटेड इन्डिया एएड नेटिव स्टेटस्, मद्रास, ता० ७--६-१६१७।

२. इन्डियन प्रिंसेन ता० १४-६-१६१७।

३. द इन्डियन रिव्यू ता० १७-५-१६१७।

हो सकती है उसके बारे में सत्य निष्ठा से जो मेरे निश्चित विचार है उनको आपके समस्त प्रस्तुत करने का इससे मुक्ते अधिकार प्राप्त हो गया है! सुक्ते विश्वास है, तथा समस्त भारत को आशा है, कि आप इन समस्याओं पर एकाप्रता एवं कृपालुता से विचार करेंगे किन्तु इसके साथ साथ में पुनः आपसे साग्रह अनुरोध करने की अनुमति चाहूँगा कि साम्राज्य व भारत के हितों के लिये आप इस विषय में कोई ऐसी कारवाइ करें जो वास्तव में एक मुक्त हस्त, संवेदनिक एवं उदारमना परिमाण में हो तथा इस कारवाइ को करने का ढंग ऐसा होना चाहिये जो पूरव के लोगों की कल्पनाओं एवं भावनाओं को विजित कर ले और जो भारत तथा इंग्लैंड में एक अधिकतम घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर दे। ""

भारत में स्वराज्य के प्रश्न पर महाराजा ने लिखा:-

"इस विषय में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि मारत में आंग्ल शासन का यह लद्दय है अथवा नहीं है। में निवेदन करूँ गा कि इसका केवल मात्र एक ही उत्तर हो सकता है और वह है दृद्दा पूर्वक स्वीकारात्मक 'हां'। भारत में आंग्ल शासन का यदि उचित समय आने पर साम्राज्य के भीतर भारत को स्वराज्य प्रदान करने का लद्द्य नहीं है तो फिर यह अनुमान करना असम्भव है कि उनका लद्द्य क्या है।"

"यह कहना द्यनावश्यक होगा कि किन्हीं भी शिक्ति लोगों द्वारा स्वराज्य की त्राभिलापा करना मानवीय प्रकृति का एक स्वाभाविक एवं मूल तथ्य है तथा पाश्चात्य द्यादशों के त्रमुसार स्वराज्य का द्यर्थ है जनता द्वारा राज्य त्रार्थात् जनतन्त्र जो स्वैरतन्त्र या द्याधिकारी तन्त्र के विपरीत है

१. श्री श्रोत्तिंटन चेम्बरलेन को महाराजा गंगासिंह के पत्र ता० १५-५-१६९७ के साथ रोम से एक नोट भेजा गया था। यह नोट बहुत विख्यात हुआ तथा 'रोम नोट' के नाम से जाना गया।

२. रॉम से भेजा गया नोट पु० ४ ।

तथा दूसरे शब्दों में जिसे प्रतिनिधि शासन भी कहते

महाराजा गंगासिंह इसकी अनिवार्यता के प्रति सचेत थे अतः उन्होने स्वराज्य प्रदान करने का आग्रह किया। उन्हें विश्वास या कि ऐसा अविलम्ब करने में ही भलाई है। उनके अनुसार—

"..... इसमें विलम्ब करने से कोई सुप्रयोजन सिद्ध नहीं होगा । इसके विपरीत स्वराज्य प्रदान कर देने के अत्यन्त हितकारी परिणाम होंगे तथा असंतोष व आतंक. दूर हो जायेंगे । अतः इन बातों को ध्यान में रखते हुये यह और भी अधिक आवश्यक हो जाता है कि स्वराज्य की घोषणा तत्काल कर दी जानी चाहिये......"

इस प्रकार के निर्मीक शब्दों से भारतीय स्वतंत्रता संप्राम के नेता, जिन्होंने एक भारतीय राज्यकर्ता नरेश से इतने दृढ समर्थन की कदापि ख्राशा नहीं की थी तथा इसी प्रकार साम्राज्य के समर्थनकारी लोग भी जो विश्वास करते थे कि कम से कम भारतीय नरेश मारत में स्वराज्य का इतना प्रवल पत्त्रपोषण कदापि नहीं करेगा, दोनों स्तम्भित रह गये। यहां तक कि राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने भी इसको 'एक नूतन युग का अरुणोदय' कह कर उचित रूप से इसका अभिवादन किया।

इस नोट में महाराजा ने इस अवसर का लाभ उठा कर उन आशंकाओं का भी दमन किया जो उस समय व्यक्त की जा रही थी कि स्वराज्य के पन्न में घोषणा करने से न जाने भारतीय सेना पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ेगा। महाराजा ने जो स्वयं एक श्रेष्ठ सैनिक थे जिसने अभी अभी के महायुद्ध में अप्रिम मोचों में युद्ध किया था, निश्चय पूर्वक कहा कि यदि कोई जिम्मेदार पदाधिकारी वास्तव में ऐसा मत रखता है तो में कहूँगा कि इस प्रकार का कोई भय भारतीय मानस के लिये अनुभाव्य नहीं है तथा इसके अतिरिक्त हमें इस तथ्य को भी ध्यान में रखना चाहिये कि हमारी भारतीय सेना में जिन वगों से सैनिक भर्ती किये जाते हैं उन वगों के सभी लोग केवल सेना में ही नौकरी नहीं करते हैं।

१. रोम नोट, पृ० ५ ।

२. वही, पृ० ११ ।

जबिक उन में से कुछ लोग सेना में नौकरी करते होंगे, उनके भाई वन्धुत्रों ने कान्ती, राजनीतिक या कोई श्रन्य व्यवसाय श्रपनाया होगा तथा वे लोग निश्चय ही परस्पर विचारों का श्रादान प्रदान एवं उनकी तुलना करते होंगे। देश में शिचा तथा पश्चिमी विचार शैली के प्रवर्धन के साथ साथ सब लोग चाहे वे सेना में नौकरी करते हों या श्रन्य कोई श्रमैनिक व्यवसाय, श्रपने देश को भौतिक उन्नति करते हुये देखने की कामना करने लगेंगे। यदि श्रिष्ठकांश लोग श्रमन्तुष्ट एवं विषरण्ण रहेंगे तथा स्वराज्य की घोषणा के श्रमाव में जब उन्हें श्रपने देश का राजनीतिक भविष्य श्रंधकार मय दिखाई देगा तो जैसा कि श्रन्य देशों में हुन्ना है कमशः हमारी सेना में भी श्रसंतुष्ट एवं श्रशान्ति की भावनाएँ श्रवश्यमेव फैल जायेगी। इस प्रकार की घोषणा के प्रतिरोधन से ही भविष्य में सेना पर विपरीत प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। वि

महाराजा ने ऐसे सुधारों के सूत्रपात करने की श्रनिवार्थता एवं उपयुक्तता का पच्च पोपण किया जिनसे उचित समय श्राने पर भारत को साम्राज्य के भीतर सुविधा के साथ स्वराज्य दिया जा सके। उनके इन सब प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप भारत में उस समय चलने वाले श्रान्दोलन का श्रंग्रेजों को प्रशस्तर एवं उचित ज्ञान हो गया तथा उसके प्रति उनके विचारों में परिवर्तन श्रा गया श्रीर जिसे वे श्रव तक एक विद्रोहात्मक श्रान्दोलन समभते थे उसे श्रव वे 'लोगों की वैध महत्वाकांचाश्रों की श्रिभिव्यित भानने लगे।

२० ग्रगस्त सन् १९१७ की ऐतिहासिक घोषणा में प्रायः उन्हीं सिद्धान्तों का ग्रनुसरण किया गया था जिन्हें महाराजा गंगासिंह ने ग्रपने रोमपत्र में प्रस्तावित किया था। महाराजा ने ग्रपने रोमपत्र में विशेष रूप से यथा निम्नलिखित एक चार सूत्री कार्यक्रम पर ग्रधिक वल दिया था प्रथमतः यथा सम्भव ग्राविलम्त्र यह घोषणा करना कि भारत में ग्रांग्ल शासन का मूलभूत उद्देश्य साम्राज्य के ग्रन्तर्गत भारत को स्वतंत्रता प्रदान करना है। द्वितीय, संविधान में तथा प्रान्तीय विधान परिपदों की कार्य प्रणालों में ग्रीर ग्रधिक पर्याप्त सुधार करना। तृतीय, भारत-शासन तथा प्रान्तीय परिपदों को ग्रीर ग्रधिक स्वायत्तता प्रदान करना एवं ग्रन्ततः ग्रांग्ल शासन एवं देशी राज्यों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों के संव्यवहार के लिये नरेन्द्र परिषद की स्थापना करना।

१. रोम नोट, पू० ६--१० ।

प्रथम महायुद्ध के समय में भारत के राजनीतिक चितिज पर दो ग्रान्दोलनो के मेघ छाये हुये थे। उनमें से एक ग्रान्दोलन तो ऐसे चरम पन्थी लोगों द्वारा किया जा रहा था जो शक्ति प्रयोग से अंग्रेजों को समूल उखाड़ कर फेंक देने में विश्वास करते थे तथा दूसरा आन्दोलन भारत में स्वराज्य प्राप्त करने के पन्न में था । जब कि एक ब्रोर इन उग्रवियों ने विद्रोहात्मक एवं विष्वंसक कारवाइयां आरम्भ कर दीं दूसरी श्रोर स्वराज्य श्रान्दोलन के समर्थकों ने जिनमें वाल गंगाधर तिलक भी थे इस बात पर जोर दिया कि ऋँग्रेज लोग भारत से सम्बन्धित प्रत्येक विषय को भारतीयों पर ही छोड़ दें । अंग्रेजो को यह भय या कि कहीं इन आंदो-लनों से भारत अन्ततोगत्वा आंग्ल साम्राज्य से अलग न हो जाय। महाराजा गंगासिंह ने अंग्रेजों की इन आयंकाओं एवं भारतीयों की महत्वाकांचाओं के वीच एक सामंजस्य स्थापित कर दिया । उन्होंने प्रस्ताव रखा कि स्वराज्य प्राप्त कर लेने के पश्चात भी भारत आंग्ल साम्राज्य का एक भाग रहेगा। स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात भी ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के साथ हमारे साहचर्य द्वारा जो कुछ हमने ऋाज सम्पन्न किया है वह प्रायः उस परि-कल्पना के समरूप है जो महाराजा ने उस समय की थी।

महाराजा ३१ मई सन् १६१७ को मारत लौटे तथा २ ज्न सन् १६१७ को माउन्ट श्राब् पहुँचकर श्रपने परिवार से मिले । सन् १६१८ के जून मास में इंग्लैएड में श्रायोजित साम्राज्य युद्ध मिन्त्रमण्डल एवं सम्मे-लन की विचारणाश्रों में भाग लेने के लिये उन्हें पुनः श्रामिन्त्रत किया गया परन्तु कुछ श्रत्यावश्यक राज्य कार्यों में व्यस्त होने के कारण उन्हें बड़ी श्रानिच्छा से इस निमन्त्रण को श्रस्वीकार करना पड़ा । किन्तु जब ११ नवम्बर सन् १६१८ को श्रुद्ध विराम की घोपणा कर दी गई तथा जब श्रुद्ध विराम सिन्धि-पत्र को श्रान्तिम रूप देने का निर्णय किया गया तो वाइसराय ने तार हिया महाराजा को तुरन्त इंगलैएड के लिये प्रस्थान करने का पुनः श्राग्रह किया । शान्ति सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये एक प्रतिनिधि के रूप में महाराजा के चुनाव का सब लोगों द्वारा श्रत्यिक स्वागत किया गया । व महाराजा तथा सर एस० पी० सिन्हा जो शान्ति-सम्मेलन के लिये एक श्रन्य

१. लार्ड चेम्सफर्ड का तार ता० १३--११--१६१८, परिशिष्ट २३ i

द लीडर ता० २१-११-१६१ ।
 वॉम्बे क्रानीकल ता० २६-११-१६१ ।

भारतीय प्रतिनिधि थे दिसम्बर सन् १६१६ में इंगलैंड पहुँचे तथा उन्होंने वहां पर उस समय ग्रायोजित साम्राजिक युद्ध मन्त्रि—मग्डलं एवं साम्राजिक युद्ध सम्मेलन की समाश्रों में भाग लिया। ता॰ १ जनवरी सन् १६१६ को सम्राट ने महाराजा को शान्ति सम्मेलन के लिये एक पूर्णसत्ता युक्त महादूत नियुक्त किया। ११ जनवरी सन् १६१६ को मित्र एवं सहयोगी राज्यों के ग्रथ्यचों के साथ प्रारम्भिक वार्तालाप में भाग लेने के लिये उन्होंने ग्रांग्ल प्रतिनिधिमग्डल के साथ पेरिस के लिये प्रस्थान किया। यद्यपि सम्मेलन का निदेशन न्यूनाधिक राष्ट्रपितृ विल्सन, श्री क्लीमेन्श्यू, श्री लायड जार्ज तथा श्री ग्रारलेन्डो इन चार महान व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित था किन्तु श्री लायड जार्ज प्रत्येक ग्रवसर पर साम्राज्य के प्रतिनिधि मंडल से मंत्रणा ग्रवश्य करते थे तथा इन समन्त्रणात्रों में महाराजा सिक्रय भाग लिया करते थे।

भारतीय प्रतिनिधि मन्डल के सामने सर्वोपिर महत्वपूर्ण प्रश्न राष्ट्र-संघ में भारत के प्रतिनिधित्व का था। भारत को प्रस्तावित राष्ट्रसंघ में सिमालित करने के विरुद्ध यह तर्क प्रस्तुत किया जा रहा था कि न तो भारत स्वतंत्र देश है और न ही उसे स्वायत्त शासन के अधिकार प्राप्त हैं। यहां तक कि आंग्ल साम्राज्य के प्रतिनिधि मएडल में भी अधिकांश लोग इस तर्क के समर्थक थे। अतः लार्ड सिन्हा ने एक टिप्पणी तैयार की जिसमें उन्होने वड़े ओजस्वी ढंग से इस तर्क का खन्डन करते हुये कहा कि राष्ट्रसंघ की सदस्यता के लिये आन्तरिक स्वायत्तता को आधार बनाना उचित नहीं होगा। महाराजा गंगासिंह ने २ फरवरी सन् १९१६ को इस टिप्पणी के साथ एक स्मृति पत्र सम्मिलित किया जिसमें उन्होने राष्ट्रसंघ सदस्यता से सम्वन्धित उस परिच्छेद की ओर ध्यान आकर्षित किया जिसके अनुसार ऐसे समस्त शिष्ट राष्ट्रों के लिये इसकी सदस्यता को प्रवेश्य रखा गया था जिन पर संघ के उद्देश्यों को बढावा देने का विश्वास किया जा सकता हो। महाराजा ने वतलाया कि मारतीय जातियां लगभग एक निरा-

द हेली टेलोग्राफ ता० १५-१२-१६१५ ।
 मैनचेस्टर गार्जियन ता० २१-१२-१६१५ ।
 द् हेली टेलीग्राफ ता० २३-१२-१६१५ ।

२. द् टाइग्स ता० १६-१-१६१६।

नुमान श्रादिकालिक संस्कृति का प्रतिरूपण करती है श श्रीर केवल एक यह श्राघार ही संघ की सदस्यता में भारत के प्रवेश को श्रापित्तरिहत करने के लिये पर्याप्त होगा। ततः परं महाराजा ने जोर देकर कहा कि यि भारतीयों को उनकी प्राचीन संस्कृति एवं दाय के कारण युद्ध के विभिन्न घटनान्तेशों में श्रन्य शिष्ट राष्ट्रों के बरावर में लड़ने के ज्ञम समभा जा सकता है तो संघ की सदस्यता में भारत के प्रवेशन को श्रस्वीकार करने का कोई भी विश्वासप्रद कारण नहीं हो सकता। राष्ट्रसंघ के प्रतिश्रव का एक हस्तान्त्ररी होने के कारण जब यह स्पष्ट हो गया कि प्रत्येक श्रयस्था में भारत का प्रतिनिधित्व श्रानिवार्य हो गया है तो संघ के संविधान पर विचार करने के लिये ५ फरवरी सन् १९१६ को श्रायोजित एक समा में जब भारत के प्रतिनिधित्व का प्रश्न श्राया तो लार्ड रावर्ट सिसल ने जो श्रांग्ल साम्राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, भारत को सम्मिलित करना स्वीकार कर लिया।

किन्तु जब समभौते का मसौदा सामने त्र्याया तो ज्ञात हुन्त्रा कि अनुच्छेद ७ के अनुसार सदस्यता के लिये केवल उन्ही उपनिवेशों को वर-शीय माना गया था जो पूर्ण सत्तायुक्त थे । उस समय लार्ड मान्टेग्यू तथा लार्ड सिन्हा दोनों इंगलैन्ड वापस लौट चुके ये ग्रौर भारतीय प्रतिनिधि मंडल का सारा कार्य भार ऋकेले महाराजा गंगासिंह पर ही या तथा संघ में मारत के प्रतिनिधित्व के विषय पर भारत के विरुद्ध निर्ण्य लिये जाने की अरयिक आशंका थी । अतः महाराजा ने तुरन्त १२ फरवरी सन् १९१६ को लार्ड राबर्ट सिसल को लिखा ऋौर इससे सम्बन्धित स्पष्ट सूचना मांगी । इस विषय से श्री मोन्टेग्यू तक भी इतने विद्धुव्ध ये कि उन्होने तार द्वारा महाराजा से पूछा कि 'क्या भारत सुरिच्चत है ?' श्रीर यदि नहीं है तो मुफे गुप्तलिपि द्वारा स्चित करें जिससे कि मैं लन्दन से पेरिस आने के पूर्व प्रधानमंत्री से भेंट कर सकूं। लार्ड सिसल ने उत्तर में कहा कि त्रानुच्छेद ७ के अन्तर्गत केवल वही देश आते हैं जो संश्राव के हस्ताच्हर कत्ती नहीं है ग्रौर यदि इसके भी विरुद्ध कोई तर्क प्रस्तुत किया जा सकता हो तो भी मेरे सामने भारत को मूलारूप में सम्मिलित करने की मांग करने का मार्ग खुला रह जाता है। मृलारूप की सूची उस समय तक नहीं बनाई

श्रेसा कि पन्नीकर द्वारा 'हिज हाईनेस द महाराजा आफ वीकानेर-ए वायो-आफी' के पृ० १६५ में उद्धृत है, महायुद्ध के आरम्म होने के अवसर पर हाउस आफ लॉर्डस् में लार्ड कीव का मापण ।

२. लार्ड मोन्टेग्यू का तार, परिशिष्ट २४।

गई थी । इस प्रकार एक ऐसी परिस्थित को जो ग्रन्थथा ग्रत्यन्त विरुप सिद्ध होती महाराजा ने ग्रपनी सामयिक कार्यवाइ से टाल दिया । श्रन्ततोगत्वा भारत का नाम विशदतापूर्व उन मूल सदस्यों में सम्मिलित कर लिया गया जो युद्ध विराम सन्धि-पत्र के भी हस्ताच्चरकर्ता थे ।

टर्की के विभाजन के विषय में मित्र-राष्ट्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया सुभाव भी शान्ति सम्मेलन के सन्मुख एक अन्य महत्वपूर्ण एवं पेचीदा प्रश्न बना हुन्र्या था। यूरोप निवासी प्रमुख मुसलमानों ने इस प्रकार की कारवाइ के प्रति ग्रपना विरोध प्रकट करते हुये ग्रांग्ल पर-राष्ट्र-सचिव को एक स्मृति पत्र प्रस्तुत किया था। भारतीय मुसलमान भी इससे अप्रत्य-धिक उत्तेजित हो गये थे ग्रोर २० मार्च सन् १९१९ को हाजी छोटानी ने महाराजा को एक विशद तार भेजा जिसमें उन्होंने श्राग्रह किया था कि इस्लाम के पवित्र स्थानों को टकीं के सुल्तान के श्रिधिकार में ही रहने दिया जाना चाहिये तथा युद्धविरामसंधि इस प्रकार की होनी चाहिये जो श्रंग्रेजों एवं ससलमानों के वीच मैत्री स्थापित कर दे। इसने भारतीय प्रतिनिधि मण्डल को एक बहुत बड़े श्रासमंजस में डाल दिया, विशेष रूप से इसलिये कि तीनों प्रतिनिधियों में से कोई भी मुस्लिम नहीं था। अतः भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये. श्रुकेले महाराजा को पिछे छोड़कर जब लार्ड सिन्हा को इंगलैएड वापस लौटना पड़ा तो कुछ भारतीय समाचार पत्रों ने सुमाव दिया कि एक मुसलमान प्रतिनिधि को नियुक्त किया जाना चाहिये। महाराजा ने तत्काल श्री मोन्टेग्यू को एक पत्र लिखा श्रीर उसके साथ इस तार की एक प्रतिलिपि को भी संलग्न करके भेज दिया । महाराजा ने राज्य-सचिव से इस विषय पर मनन करने के लिये अनुरोध किया कि यदि सम्भव हो सके तो एक सार्वजनिक वक्तन्य द्वारा इस आशय की एक घोपणा करदी जानी चाहिये कि भारतीय मुसलमानों के दृष्टिकोण को सर्वदा ध्यान में रखा जा रहा है तथा मुसलमानों के पत्त का पृष्ठपोपण करने का यथा सम्भव प्रत्येक प्रयास किया जा रहा है । महाराजा ने इस तार द्वारा इसका उत्तर देने की श्रनुमति मांगी तथा इसके साथ २ श्रनुमोदनार्थ प्रारूप भी भेजा । ३ ३ अप्रैल सन् १९१९ को आंग्ल साम्राज्य के प्रतिनिधि-

१. वोन्वे ऋॉनीकल ता० २०-१-१६१६।

पन्नीकर, हिज हाइनेस द् महाराजा आव् बीकानेर-ए वायोत्राफी, पृ० २०४।
 श्री फिशर ने हाउस आव् द् कॉमन्स में कमान्डर वेजबुढ को उत्तर देते समय जोर देकर कहा कि शान्ति-सम्मेलन में मारतीय प्रतिनिधि

मण्डल की एक समा में जिसमें इंग्लैंड के प्रधान मन्त्री एवं राज्य सचिव भी उपस्थित थे भारतीय प्रतिनिधिमण्डल द्वारा इस विषय पर विचार-विमर्श किया गया । उन्होंने स्वीकार किया कि यद्यपि इस प्रकार के तारों का उत्तर देना एक असाधारण बात है फिर भी इस मामले की विशेष परिस्थितियों को घ्यान में रखते हुये महाराजा द्वारा प्रस्तावित सिद्धान्तों पर उत्तर मेज दिया जाना चाहिये । तदनुसार राज्य-सचिव ने उपर्यु क आशाय का एक वक्तव्य देने के लिये वायसराय को तार दिया परन्तु यह वक्तव्य कभी भी नहीं दिया गया ।

महाराजा के इन कार्यों से न केवल यह प्रदर्शित होता हैं कि उनको भारत के समस्त वर्गों के हित कितने प्रिय थे अपित इनसे उनकी तीच्एा बुद्धि तथा इस तथ्य का भी प्रमाण मिलता है कि इंगलैन्ड के प्राधिन कारी उनका कितना आदर करते थे।

शानित सम्मेलन के सामने एक अन्य प्रस्ताव मी आया जिसके द्वारा जापानियों ने जातीय समानता की घोषणा करने की मांग की थी। यह प्रस्ताव भारतीय प्रतिनिधि—मंडल के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। यद्यपि साम्राज्य के प्रांतिनिधि—मण्डल ने इसका विरोध किया किन्तु भारतीय प्रतिनिधि— मंडल ने, जिसमें महाराजा तथा लार्ड सिन्हा सम्मिलित थे, इसका समर्थन किया क्योंकि मारत में जातीय भेदभाव अत्यधिक मात्रा में विद्यमान था।

मजदूरों के लिये दैनिक कार्य को परिसीमित करने के विषय में लार्ड सिन्हा द्वारा प्रस्तावित प्रतिबन्ध का भी महाराजा ने समर्थन किया तथा देशी राज्यों को राष्ट्रपति विल्सन के प्रस्ताव के क्रियाचीत्र से बहिर्णत करने की मांग की । उन्होंने एक महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने कहा कि क्योंकि मारतीय नरेशों के शासन चेत्र आंग्ल भारत के बाहर पड़ते हैं और क्योंकि आंग्ल शासन द्वारा आंग्ल—भारत के लिये बनाये गये विधान देशी राज्यों पर लागू नहीं किये जा सकते हैं तथा पुनश्चः क्योंकि प्रत्येक देशी राज्यों के लिये विधान बनाने का केवल मात्र चम अधिकारी उस

मण्डल, शान्ति समभौते में मारतीय मुसलमानों के विशेष हितों के प्रति पूर्णतया सावधान है तथा श्री मोन्टेग्यू ने आश्वासन दिया कि वह तथा उनके सहकारी इस विषय में मारतीय मुसलमानों के हितों के पद्मपोषण को, जो मारत के हितों का एक अनिवार्य अंग है, अपना कर्त्तव्य समभति हैं। पन्नीकर, उपर्युक्त रचना में, पृ० २०५।

राज्य विशेष का शासन ही है अतः प्रारूप अभिसमय के अनुच्छेर १६ के बारे में यह स्पष्टतया समक्त लिया जाना चाहिये कि जिस प्राधिकारी को विधान बनाने तथा इस प्रकार की अन्य कोई कारवाई करने का अधिकार हो वह उस राज्य विशेष का ही संस्थापित प्राधिकार होना चाहिये। े इस प्रकार का सामयिक प्रतिबन्ध देशी राज्यों के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने देशी राज्यों की स्वायत्तता का, देशी राज्यों के शासन चेत्रों में स्वतः लागू हो जाने वाले इस आंग्ल अधिनियम से सार्थकता के साथ संत्राण किया।

महाराजा ने इस श्रविघ में श्री क्लीमैन्श्यू, श्री लायड जार्ज इत्यादि जैसे संसार प्रसिद्ध राजनीतिशों के साथ धनिष्ठ मैत्री के सम्बन्ध स्थापित कर लिये। यह पहला श्राश्चर्य जनक श्रवसर था कि एक भारतीय नरेश ने इस प्रकार समान भाव से श्रांग्ल भारतीय नेताश्रों के साथ कार्य किया हो। उपरोक्त वर्णन से पूर्णत्या स्पष्ट हो जाता है कि महाराजा की श्रांग्ल भारतीय नेताश्रों से विस्तृत मैत्री थी तथा भारत के हितों की उन्नति के कार्यों में उनके साथ तथा विशेष रूप से गोखले एवं लार्ड सिन्हा के साथ सर्वदा उनका पूर्ण सहयोग रहा था।

महाराजा ने २४ फरवरी सन् १६१६ को सर जेम्स डन्लप स्मिथ के साथ इंगलैन्ड प्रत्यागमन किया तथा कुछ दिनों के लिये सम्राट के साथ रहे । १ मार्च १६१६ को दोपहर में जब सम्राट ने हाइड पार्क में नई श्राधिपत्य सेना की चार विगेडों का निरीक्षण किया तो महाराजा भी एक परिसहाय के रूप में उनके साथ थे ।

उस समय भारत-ग्रांग्ल संस्था ने, जिसको भारतीय लोगों की एकता एवं उन्नति को ग्रीर ग्रागे बढाने के प्रकाशित उद्देश्य से सन् १६१६ में लन्दन में स्थापित किया गया था भारत में प्रवर्तमान तत्कालीन परिस्थिन तियों के सम्वन्ध में भ्रमात्मक प्रचार जारी कर रखा था तथा भारत में किसी भी प्रकार के सुधारात्मक एवं नवनिर्माण कार्य किये जाने के विरुद्ध एक ग्रान्दोलन छेड़ रखा था क्योंकि इस संस्था का मत था कि ऐसा

पायोनिस्तर ता० २४-४-१६१६ ।
 द्वगाली ता० १६-४-१६१६ ।

२. दु टाइम्स ता० २५-२-१६१६ ।

३. दु टाइम्स ता० १-३-१६१६ ।

करने से भारत में सम्राट के ऋाधिपत्य की जहें दुवेंल हो जाएँगी । इस संस्था ने भारतीय नरेशों के विरुद्ध भी ऋषिद्धेप किया । ऋतः श्रवसर प्राप्त होते ही महाराजा ने ७ मार्च सन् १९१६ को लन्दन में लार्ड सिन्हा के सम्मान में ग्रायोजित एक महाभोज में इस संस्था का भएडाफोड़ किया । इस संस्था ने एक यह भ्रामक धारणा भी फैला रखी थी कि भारत के उप-राज्यसचिव के पद पर लार्ड सिन्हा की नियुक्ति के तथा भारत में इस प्रकार के श्रन्य विचाराधीन सुधारों के भारतीय नरेश विरोधी हैं । महाराजा ने, जो इंग्लैन्ड में दूसरी बार नरेशों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, इस ग्रारोप का ग्रत्यन्त प्राधिकृत एवं प्रवल हंग से खंडन किया । उन्होंने एक श्रन्य ग्रारोप का भी कि लार्ड सिन्हा की नियुक्ति से भारतीय सेना में ग्राक्रोश फैल जायगा, सफलता पूर्वक खरडन किया । अ

महाराजा ने भारत में राजनीतिक एवं प्रशासकीय सुधारों की आवश्यकता से इंगलैन्ड के अभिजात वर्गीय मंडलो को सुपरिचित कराने का भी अत्यन्त उपयोगी कार्य किया। अअभिक धोषणा-पत्र का रूपांतर कराने में भारतीय प्रतिनिधियों ने प्रमुख भाग लिया तथा भारत के मुसलमानों की भावनाओं पर इसका क्या प्रतिप्रभाव पड़ेगा इसकी यथेष्ठ जांच करने से पूर्व टकीं की समस्या पर किसी भी प्रकार के निर्णय करने के विचार का भी उन्होंने प्रतिरोध किया।

सम्राट, प्रधान मंत्री, भारत के राज्य-सचिव तथा वाहसराय त्रादि सबने शान्ति सम्मेलन में महाराजा की सेवाग्रों का गुणागान किया ।

१. द् युनाइटेड इन्डिया एएड इपिडयन स्टेट्स ता० ३०-४-१६१६ । द् लीडर ता० २-४-१६१६ ।

२. द् दखन हेरल्ड ता० १३-५-१६१६ ।

इ. लार्ड सिन्हा की लार्ड के पद पर पदोन्नित के तथा मारतार्थ अवर राज्य-सिन्द के पद पर उनकी नियुक्ति के अवसर पर ता० ७-३-१६१६ की लन्दन में उनकी दिये गये महामीज में महाराजा का मापण — इन्डियन इम्पीरियल पार्टनरिश्प, पृ० १६, बीकानेर के महाराजा के निजी सिन्द की कार्यालय फाइल सं० २२७५।२६ भाग द्वितीय-बी।

४. द् वंगाली ता० ३-४-१६१६, ए लन्दनर्स नोटबुक, लन्दन मार्च ३।

द्राइम्स आव् इिष्डिया ता० २७-५-१६१६।

६. राज्यकर्त्ता नरेशों एवं मुखियों के सम्मेलन की कार्यवाही, नवम्बर १९१६, पृ० ३६। तथा लॉर्ड चेम्सफोर्ड का खरीता ता० ३० जून १९१६, बीकानेर

शान्ति सम्मेलन में महाराजा के तर्क-वितर्क का इतना असाधारण प्रभाव पड़ा कि आवसपोर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हे डाक्टर आव सिविल लाज (व्यवहार विधि महाविज्ञ) की सम्मानक उपाधि प्रदान की ।

२८ जून सन् १९१६ को युद्ध विराम सन्धि-पत्र के हस्ताच्चित हो जाने के पश्चात, महाराजा ने ३ जुलाई सन् १९१६ को मार्सेल्स से जलयान द्वारा भारत के लिये प्रस्थान किया ।

सन् १६२२ में त्रावकाश भ्रमण के लिये जब महाराजा इंगलैन्ड गये तो तत्कालीन भारत के राज्य-सचिव लॉर्ड पील ने उन्हें राष्ट्रसंघ के भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के साथ सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया। किन्तु कुछ निजी कारणों से उस समय उनके लिये इस निमन्त्रण को स्वीकार करना सम्भव नहीं हो सका परन्तु सन् १६२४ में जब उन्हें इसके लिये पुनः श्रामंत्रित किया गया तो उन्होंने उसे स्वाकार कर लिया।

इटली द्वारा कर्फ् पर ग्राधिकार कर लेने के ग्रवसर पर सन् १६२४ का श्राधिवेशन बुलाया गया था ग्रातः वह बहुत महत्वपूर्ण था। निःशस्त्रीकरण की चर्चा करते हुये महाराजा ने जो उस समय भाषण दिया था उसका यदि हम ग्राज भारत के हिमालय सीमान्त प्रदेश से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में सिंहावलोकन करें तो हमारे सामने उन शब्दों का महत्व स्पष्ट हो जाता है। ग्रापनी ग्रादूर्दाशिता के कारण तत्कालीन भारतीय समाचार पत्रों ने महाराजा के इस भाषण की ग्रानुचित ग्रालोचना की थी। उस समय उन्होंने ग्रापने भाषण में कहा कि भारत की सामरिक समस्यायें ग्रासाधारण रूप से विषम एवं जटिल हैं। उत्तर-पश्चिम के सीमान्त प्रदेश में निर्भोक, साहसी एवं उपद्रवी कत्रायली लोग वसते हैं जो वंश-शत्रुता एवं खून के बदले खून, के ग्रातिरिक्त किसी भी कान्न से परिचित नहीं हैं तथा जहां पर ग्रामी तक ग्रावैध शस्त्रों के क्रय-विक्रय पर पूर्ण नियन्त्रण नहीं किया जा सका है। सीमान्त प्रदेश के ग्रान्य भाग

महाराजा के निजी-सिच्चिव के कार्यालय की फाइल सं० २२७८।२६, माग द्वितीय-वी, विधान समा, वीकानेर राज्य की कार्यवाहियों का परिशिष्ट ए., अन्दूबर १९१६ । तथा विधान समा, वीकानेर राज्य में महाराजा गंगासिंह का संवरण भाषण, अन्तूबर १६१६ ।

महाराजा ने इंगलैन्ड तथा यूरोप की प्रायः समी यात्रायें शासकीय कार्यों के लिये की थी । केवल एक या दो अवसरों पर वैयक्तिक कारणों से (स्वास्थ्य के लिये) उन्हें विदेश जाना पड़ा था ।

प्रायः अगम्य सघन जंगलों से भरे हुये है जिनमें कवायितयों जैसी ही अन्य उम्र जातियां निवास करती हैं। अपनी विलंचिए दूरदार्शिता के साथ उन्होंने राष्ट्र संघ का ध्यान उस खतरे की ओर आकर्षित किया जो इस सीमान्त प्रदेशों से भारत की सुरचा को था। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आर्थिक दएडों या मध्यस्य निर्णय के सिद्धांतों से इस विभीषिका का सामना नहीं किया जा सकता अतः सैनिक शक्ति के मान को निर्धारित करते समय उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखना अनिवार्य है।

तृतीय समिति में भारतीय प्रतिनिधि होने के नाते महाराजा ने स्वास्थ्य संस्था में भारत के प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर विशेष वल दिया ! उन्होंने वताया कि इस संस्था को भारत की ऋोर से एक वृहत् धनराशि प्रदान की जाती है किन्तु उसके उपरान्त भी भारत को इसका तत्संबद्ध लाभ नहीं के बराबर है। तथा इस संस्था का प्रमुख कार्यचेत्र रूस तथा यूरोप तक ही सीमित रखा जा रहा है। इसके पश्चात उन्होंने महा-मारियों के प्रकोप के परिगाम स्वरूप भारतीय जनता द्वारा भुगती जाने वाली यातनात्रों की ख्रोर उनका ध्यान त्राकर्षित किया । महाराजा के ब्राटल प्रयासों के परिणाम स्वरूप समिति ने एक प्रस्ताव पारित करके स्वास्थ्य संस्था को उसके कार्यक्रमों एवं कार्यवाहियों का विवरण तय्यार करके अन्तरी-ष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यालय में प्रस्तुत करने को कहा । अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्या-लय को सन् १९१७ के रोम ग्राभिसमय द्वारा पेरिस में स्थापित किया गया था तथा भारत भी उसका सदस्य था । इस प्रस्ताव से सार्वजनिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित राष्ट्र संघ की नीतियों का निर्धारण करने में भारत को भी बोलने का ग्राधिकार प्राप्त हो गया । इसे वास्तव में एक ग्रात्यन्त महत्वपूर्ण साफल्य कहा जा सकता है।

जैसा कि निक्हम स्टीड के नवम्बर एवं दिसम्बर १६२४ के रिव्यू आव रिव्यूज से प्रतीत होता है प्रतिनिधि मएडल में महाराजा का आत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था। द्वितीय दृश्य में उन्होंने उल्लेख किया है कि महाराजा जब मंच पर गये तो समा ने वह सोचकर कोई उत्साह प्रकट नहीं

नरेन्द्र मण्डल की समात्रों की कार्यवाहियां, नवम्बर १६२४, पृ० ६५-१०४, राष्ट्र संघ की समा में अपने कार्य के सम्बन्ध में बीकानर के महाराजा का वक्तव्य ।

नरेन्द्र मण्डल की समात्रों की कार्यवाहियां, नवम्बर १६२४, पृ० १०५-१०६ ।

किया कि यथानियम 'उत्थान के कार्यों पर' एक ग्रीर उपदेश सुनना पड़ेगा किन्तु महाराजा ने जब भाषण दिया तो उनके भाषण की सुरपष्टता, संचितता, प्रासंगिकता एवं वास्तविकता से श्रोतागण विस्मित रह गये ग्रीर उन्होंने उसे दत्तचित्त होकर सुना तथा उन्हें विश्वास हो गया कि महाराजा ने जो कुछ कहा उसका ग्राभिप्राय वह मलीभांति समभते हैं। सभा में दिये गये ग्रंग्रेजी भाषणों में महाराजा का भाषण सर्वश्रेष्ठ था।

राष्ट्र संघ की समाश्रों में महाराजा गंगासिंह के कार्यों की वायसराय ने उपयुक्त प्रशंसा की तथा भारत के हित में उनके इन प्रयासों के लिये एक तार द्वारा अपना श्रामार प्रकट किया।

सितम्बर १६३० में राष्ट्रसंघ के भारतीय प्रतिनिधि मएडल में सम्मिलित होने के लिये महाराजा को पुनः त्रामंत्रित किया गया । इस वार उन्हें भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व करने के लिये आमंत्रित किया गया था। एक भारतीय नरेश को यह सम्मान प्रथम तथा ऋन्तिम बार प्राप्त हुन्ना था । सर जुल्फिकार त्राली खां, सर इवर्ट ग्रीवज तथा सर वसंत मलिक प्रतिनिधि मण्डल के ऋन्य सदस्य थे एवं सर देव प्रसाद सर्वाधिकारी, सर डेनिस ब्रे तथा सर जहांगीर कावसजी स्थानापन्न प्रतिनिधि थे। इस त्र्यवसर पर महाराजा ने तृतीय तथा चतुर्थ समितियों की विचारणात्रों में. भाग लिया । इन समितियों का क्रमशः निःशस्त्रीकरण एवं संघ के सचिवा-लय के पुनर्गठन के मामलों से सम्बन्ध था। निःशस्त्रीकरण सिमिति में श्री व्रिएन्ड ने एक ऐसी यूरोपीय सहकारिता का सुभाव रखा जो उनके मता-नुसार समभौते के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये एक प्रकार के चेत्रीय समभौते के ग्राधार पर होनी चाहिये थी। महाराजा यूरोपीय सहकारिता में ग्रन्तर्नि-हित लच्यों से तो सहमत हो गये किन्तु उन्होंने भय व्यक्त किया कि इस प्रकार की कार्यवाइ से यूरोप के बाहर के देशों में भ्रांति उत्पन्न हो सकती है तथा उसके बुरे परिणाम निकल सकते हैं।³

लन्दन में साम्राजिक सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने के

पत्नीकर, हिज हाइनेस द् महाराजा त्राव् वीकानेर, ए वायोग्राफी,
 प० ३१०--३११।

२. नरेन्द्र मण्डल की समात्रों की कार्यवाहियां, पृ० १०६ ।

३. राष्ट्र संघ की समा के एकादश ऋधिवेशन में महाराजा गंगासिंह का भाषण ता॰ १६-६-१६३०।

लिये ग्रामन्त्रित प्रतिनिधि मएडल के एक सदस्य होने के नाते महाराजा जेनेवा से सीवे लन्दन पहुँचे ग्रीर ग्रक्ट्चर तथा नवम्बर १६३० में वहां पर होने वाली सभी समाग्रों में सम्मिलित हुये। सर मोहम्मद शफी एक ग्रन्थ भारतीय प्रतिनिधि ये तथा सर जियोको कारवेट एवं सर पदमजी जिनवाला दो स्थानापन प्रतिनिधि ये।

इस सम्मेलन में साम्राज्य के विभिन्न भागों के नागरिकों की राष्ट्रीयता एवं उनकी सामान्य परिस्थित में संकल्पित परिवर्तनों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार किया जा रहा था। भारतीय नरेशों के विशेष हितों के प्रतिनिधि होने के नाते महाराजा ने इंग्लैन्ड के प्रधान मन्त्री एवं भारत के राज्य-सचिव को एक टिप्पणीं लिखी जिसमें उन्होंने उनको इस तथ्य को अभिलिखित कर लेने का अनुरोध किया कि सम्मेलन में मेरी उपस्थित तथा उस समय वहां पर भाषण नहीं देने की मेरी अभिरुचि का यह अर्थ कदापि नहीं लगाया जाना चाहिये कि भारतीय राज्यों, उनके शासकों एवं नागरिकों की राष्ट्रीयता एवं परिस्थित में किसी भी प्रकार के आपरिवर्तन को मेंने स्वीकार कर लिया है। इसके प्रत्युतर में प्रधान मन्त्री एवं भारत के राज्य-सचिव दोनों ने महाराजा को आश्वासन दिया कि वह ऐसा नहीं करेंगे।

इसी बीच भारत की राजनीतिक परिस्थितियों में एक तीन आमूलपरिवर्तन घटित हो रहा था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिता में, जिन्हें सन् १८८५ में कांग्रेस के ठीक प्रारम्भ से सांवैधानिक सिद्धान्तों पर निर्दिष्ट किया जा रहा था, सन् १६०४ में परिवर्तन आ गया और उसमें विध्नकारी तत्वों ने अपना अस्तित्व स्थापित कर लिया। सन् १६०५ में वंगाल के विभाजन तथा कांग्रेस द्वारा आंख वस्तुओं के वहिष्करण की मीति अपना लेने के फलस्वरूप और अधिक कंद्रता की भावनाओं का आविमाव हो चुका था। गोखले ने भारत के शासित्व को स्वयं भारतीयों के हितों के अनुकूल करने के तथा उचित समय आने पर जिस प्रकार का शासन साम्राज्य के अन्य स्वायत्त उपनिवेशों में प्रचलित था वैसा ही शासन भारत के लिये प्राप्त करने के कांग्रेस के लच्च की घोषणा

१. नरेन्द्र मण्डल की समात्रों की कार्यवाहियां, मार्च १६३१, पृ० ३६ ।

२. वही ।

करदी। लाला लाजपत राय ने घोषणा की कि भारतीय लोगों को ग्रापनी निजी भवितव्यता का निर्णय-कर्ता बनने का पूर्ण अधिकार है तथा स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये उनका संघर्ष पूर्णतया न्याय संगत है। यदापि कांग्रेस में वामपित्यों के एक दल का वंगाल के अराजकतावादी आन्दोलन से सम्ब-न्ध था किन्तु इसके उपरान्त भी कांग्रेस का मुख्य तथा वृहत् ऋंग ऋत्र भी संवैधानिक साधनों द्वारा उन्नति प्राप्त करने के पन्न में था। श्री वेडर-दर्न ने, जो सन् १९१० में कांग्रेस के ऋष्यच थे घोषणा की कि 'ऋंग्रेजों के साथ हाथ मिलाकर भारत पूर्ण सकुशलता से प्रगति के नूतन पथ पर पहले कदम बढा सकता है'। ³ यह वृति सन् १९१६ तक जारी रही परन्तु तत्परचात श्रीमती विसेन्ट ने, जो सन् १९१४ में कांग्रेस में सम्मिलित हो चुकी थी, स्व-शासन (होम-रूल) का सिद्धान्त विचारार्थं प्रस्तावित किया जिसे कांग्रेस ने लखनऊ ऋधिवेशन में ग्रह्ण कर लिया । मुस्लिम लीग, जिसे बंगाल के विभाजन के प्रश्न पर मुसलमानों के मतभेद के परिखाम स्वरूप कांग्रेस के ही कुछ, सदस्यों द्वारा ऋस्तित्व में लाया गया या, पुनः कांग्रेस में सम्मिलित हो गई । त्रार्थिक संकट, शान्ति सम्मेलन में टकी के प्रशन पर मुसलमानों की दुश्चिन्ता, श्रराजकता के दमन के लिये रौलेट-विलों के प्रयोग तथा संकल्पित सांवैधानिक सुधारों में स्थगन के भय के परिखाम स्वरूप सन् १६१६ में तनाव अपने चरम विन्दु तक पहुँच चुका था।

विद्रोह से पूर्व देशी राज्य एक दूसरे से पूर्णतया श्रालग थे तथा उनके शासकों पर एक दूसरे के राज्य कार्यों में हस्तत्त्वेप करने के सम्बन्ध में इतना श्राधिक कठोर नियंत्रण था कि गवर्नर-जनरल-इन-कौंसिल (सपरिपद् महाशासक) की पूर्वानुमित बिना तथा उसके माध्यम विना वे

श. मारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इक्कीसर्वे अधिवेशन की रिपोर्ट, पृ० १३ जैसा कि सर जॉन कमिंग की पुस्तक 'पोलिटिकल इन्डिया, १८३२-१६३२' के तृतीय अध्याय 'द् इन्डियन नेशनल कान्ग्रेस इन इट्स वेरियस फेजेज' में एल. एफ. रशज्नु क विलियम्स द्वारा उद्धृत किया गया, पृ० ५४ ।

२. वही ।

३. रैटिक्लिफ, सर विलियम वेडर वर्न, पृ० १५०, जैसा कि सर जॉन कमित्म की पुस्तक 'पोलिटिकल इन्डिया, १५३२-१६३२' के तृतीय झच्याय 'द् इिएडयन नेशनल कान्ग्रेस इन इट्स वेरियस फेजेज' में एल० एफ रशब्रुक विलियम्स द्वारा उद्धृत किया गया, पृ० ५८ ।

त्रापस में पत्र व्यवहार तक भी नहीं कर सकते थे ।° किन्तु विद्रोह के पश्चात यातायात के द्रुत विकास ने इस प्रकार का अलगाव कमजोर कर दिया । इसके अतिरिक्त विद्रोह ने इस अलगाव के परिणामों को स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया था तथा अंग्रेज लोग अपने तथा नरेशों के वीच ग्रीर ग्राधिक घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करने की ग्रावश्यकता का ग्रानुभव करने लग गये थे । विक्टोरिया द्वारा क्वीन एम्प्रेस की उपाधि प्रहरण करने के अवसर पर सन् १८५८ की 'सम्राज्ञी की घोषणा' से भी इसे अनुप्रेरणा मिली। इस दिशा में प्रथम कदम के रूप में विशिष्ट राज्य-कर्ता नरेशों तथा उच्चतम यूरोपीय अधिकारियों को सम्मिलित करके एक साम्राजिक प्रिविकींसिल को स्थापित करने की योजना बनाई गई। किन्तु जो भी हो बाद में इस योजना को परित्यक्त कर दिया गया। महत्वपूर्ण विपयों में भारत के नरेशों एवं प्रमुखों की मन्त्रणा एवं विचारणा प्राप्त करने, तथा इस प्रकार सर्वोपरि सत्ता से उनका सम्बन्ध स्थापित करने के उद्देश्य से श्राठ नरेशों को 'साम्राज्ञी के परामर्शदाता' के रूप में नियुक्त करके लार्ड लिटन ने सन् १८७७ में इस प्रकार की एक कौंसिल बनाने का पुनः प्रयास किया । किन्तु यह कौंसिल कभी भी एकत्रित नहीं हुई । 3 श्रपने उपराजत्व की स्रविध में लाई कर्जन ने भी इस प्रकार की कौंसिल का निर्माण करने की ग्रावश्यकता एवं उसके महत्व को समभा। उन्हें विश्वास हो चुका था कि भारतीय नरेश "एक वेढंगे एवं विषमांग पुंज में विखरे हुये कण नहीं है विल्क एक सामंजयस्यपूर्ण एवं भव्य समिष्ट में समकच इकाईयां है।"" उनको प्रतीति थी कि राजा लोग भारत में साम्रा-

किमिन्ग, पोलिटिकल इन्डिया १८३२–१६३२, अध्याय १४, "द् पोलिटिक्स आव् द इन्डियन स्टेट्स, द् चेम्बर आव् प्रिसेज, तथा द् फेडरल आइडिया", सर रॉबर्ट इर्सकिन हॉलेन्ड द्वारा प्रदत्त, पृ० २६१ ।

भारत शासन में देशी राज्यों के प्रतिनिधित्व तथा नरेन्द्र मण्डल बनाने के विषय पर महाराजा गंगासिंह द्वारा विवरण ता० ५-४-१६९४, पृ० ३-४।

द् निटिश क्राउन एएड द् इन्डियन स्टेट्स, पृ० ७५ |
 किन्न, उपर्यु करचना में, अध्याय १४, "द् पोलिटिक्स आव् द् इन्डियन स्टेट्स,
 द् चेम्बर आव् प्रिन्सेज तथा फेडरल आइडिया" सर रावर्ट इसीकिन हॉलैन्ड
 दारा प्रदत्ता, पृ० २६२ ।

४. भारत शासन में देशी राज्यों के प्रतिनिधित तथा नरेन्द्र परिषद बनाने के प्रश्न पर महाराजा गंगासिंह का विवरण ता॰ ५-१-१६१४, पृ० ४।

जिक संगठन के ग्रिमिन्न ग्रंग बन चुके हैं तथा देश के प्रशासन से उनको भी इतना ही सरोकार है जितना कि वायसराय को ग्रतः वह उन्हें ग्रिपना सहकारी एवं साथी मानते थे। नरेशों की कौंसिल बनाने का सन् १६०४ में उन्होंने भी समर्थन किया ग्रीर कहा कि साम्राज्य के दायित्व में राजालोग ग्रिधिकाधिक दिलचस्पी रखते हैं तथा ग्रपने ग्राप को उसमें सम्मिल्लित करने के लिये लालायित हैं। किन्तु ग्रांग्ल-शासन ने इस योजना को स्वोकार नहीं किया। उ

कर्जन के पश्चात आंग्ल विरोधी आन्दोलन के प्रभाव को अधि-काधिक महसूस किया जाने लगा और २८ मई सन् १६०६ को लार्ड मिन्टो ने लार्ड मार्लो को लिखा कि कांग्रेस के संकल्पों का कोई साध्य-प्रतिसंतुलन खोजने के विषय पर वह निरन्तर सोच विचार करते रहे हैं तथा उनके विचार से नरेशों की परिषद द्वारा वह इस समस्या का समाधान कर सकते हैं। सन् १६०८ में लार्ड मिन्टो ने मारत में बढते हुये राजद्रोह

१. लार्ड कर्जन इन इन्डिया १८६८-१६०५, ता० २६-११-१८६ को मालियर में राजकीय महामोज में लार्ड कर्जन का मालिए। तथा ता० २८-११-१६०२ को जयपुर में राजकीय महामोज में लार्ड कर्जन का मालिए।—

[&]quot;महाराजा ने मुक्ते स्मरण कराया है कि तीन वर्ष पूर्व मैंने वलपूर्वक कहा था कि भारत के प्रशासन कार्यों में भारतीय नरेशों को मैं अपना सहकारी एवं साथी समकता हूं। तब से ठीक इसके अनुसार मैंने सदा उन्हें उनके विभिन्न गौरव पदों पर अपना सहकार्यकर्त्ता समक्ता है। अनेक अवसरों पर उनके निजी शासनों की परिस्थितियों एवं दशाओं के विषय पर मैंने उनके साथ विचार विमर्श किया है तथा कुछ अन्य अवसरों पर जैसा कि महाराजा को भलीभांति ज्ञात है मैंने उनका सहयोग एवं परामर्श प्राप्त किया है। "

२. जैसा कि सर रावर्ट अर्सिकन हॉलेन्ड द्वारा 'द् पोलिटिक्स आव् द् इन्डियन स्टेट्स, द् चेम्बर आव् प्रिन्सेज तथा फेडरल आइडिया" में जो सर जॉन किमिना की 'पोलिटिकल इन्डिया १८३२–१६३२' के चौदहवें अध्याय की रचना करता है, उद्देत किया गया।

३. वही ।

४. मैरी, काउन्टेस श्राफ मिन्टो, 'इन्डिया मिन्टो एएड मार्ले' १९०५-१९१०, पृ० २६ ।

के सम्मन्ध में नरेशों से अलग अलग मंत्रणा करके वास्तविक रूप से उनमें अपना विश्वास प्रकट किया । किन्तु इसका कोई अधिक ठोस परिणाम नहीं निकला और उनकी आकाचाएँ केवल मात्र एक सुन्दर स्वपन वन कर रह गई । सन् १६१३ में लाई हाईंग ने कुछ नरेशों को उन्हीं की श्रेणी से विशेष रूप से सम्वन्धित शिचा के एक विषय पर उनके साथ समंत्रणा करने के लिये आमंत्रित किया तथा इसी उद्देश्य से सन् १६१४ में नरेशों तथा प्रमुखों की पुनः एक सभा बुलाई गई।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक चतुर्थीश में जब भारत में इस प्रकार की राजनीतिक परिस्थितियां प्रवृत्त थीं और अंग्रेज लोग एक ग्रत्यन्त कठिन समय से गुजर रहे थे, नरेशों की भी ऋपनी समस्याएँ थीं। एक ग्रोर तो उनकी संधियों का यह ग्रर्थ लगाया जाने लगा था कि वह उस सर्वोपरि सत्ता की सुविधात्रों के ब्रानुकल हैं जिसने एक संमित्र एवं साथी की स्थिति से धीरे धीरे तथा अगोचर रूप से अपने आप को एक निश्चित राजनीतिक सत्ता की स्थिति में स्थापित कर लिया है। इस सर्वो-परि सत्ता का किया जेत्र ग्रात्यन्त विशाल एवं सर्वतोमुखी बनाया गया था। लार्ड कर्जन ने तो यहां तक कह दिया कि "सम्राट की प्रमुतत्ता सर्वत्र प्रश्नातीत है। स्रपने निजी परमाधिकारों की सीमास्रों को इसने स्वयं ही निर्घारित किया है। " तथा एक अन्य भाषण में उन्होने, अंग्रेज लोग अपने कर्तव्यों तथा नरेशों के तत्संबद्ध दायित्वों के प्रति जो दृष्टिकोण रखते थे उसको ऋत्यन्त स्पष्टार्थ ढंग से सूत्रबंद किया । उन्होने कहा कि जब सर्वोपरि राज्य-शिक्त ने किसी राज्य तथा उस राज्य के नरेश को सभी शत्रग्रों के विरुद्ध बचाने के कर्तव्य को निमाने का बीड़ा उठा रखा हो तो उस नरेश का यह तत्संबद्ध दायित्व हो जाता है कि वह अपने प्रत्येक व्यवहार में सर्वप्रधान सत्ता के प्रति निष्ठावान रहे एवं ऐसे प्रत्येक आचरण से विरत रहे जो सरकार के लिथे अनिष्टकर हो तथा अपने राज्य के कार्यों का सचरित्रता एवं सम्मान के साथ निर्देशन करे। रे संधियों के निबन्धों के विरुद्ध राज्यों के ब्रान्तरिक मामलों में हस्ते होप करने की ब्रांग्ल वृति का यह एक स्पष्ट प्रत्यन्तीकरण या । भारतीय राज्यो से सम्बन्धित विषयों के

मावलपुर के नवाव के श्रमिषेक दरवार में १२ नवम्बर १६०३ को लार्ड कर्जन का माष्ण, 'लार्ड कर्जन इन इन्डिया', पृ० २२६ ।

ता० १०-१२-१६०३ को श्रलवर के महाराजा के श्रमिषेक पर लार्ड कर्जन का माषण, 'लार्ड कर्जन इन इन्डिया', पृ० २३० ।

कुछ विद्वान इन संधियों को अप्रचलित (पुरानी) समसने लग गये थे। राजनीतिक आचार में एक परिवर्तन आ चुका था और राजालोग उससे प्रसन्न नहीं थे।

दूसरी ग्रोर ग्रांग्ल विरोधी ग्रान्दोलन ने राजाग्रों के हृदय में कुछ ग्रागंकाएँ उत्पन्न करदी थी। देश की भावी व्यवस्था से वे चिन्तातुर रहने लगे ये तथा ग्रपने ग्रास्तित्व तक के पूर्ण मिटने की सम्भावना से वे त्रस्त थे। उनके शासन के विरुद्ध ग्रांग्ल भारतीय नेताग्रों की समालोचना से वे ग्रत्यधिक व्यप्न हो उठे थे। उनको डर था कि कहीं ये ग्रान्दोलनकारी सत्ता हथिया लेने के पश्चात उनके वर्ग को पूर्णत्वा निष्ट न करदें। ग्रातः ग्रपनी ग्रान्तिक प्रभुसत्ता को बचाने के लिये सर्वोपिर राज्य-शिक्त के साथ ग्रपने राज्यों के प्रत्यन्त सम्बन्ध की ग्रांग्ल शासन से मुस्पन्ट स्वीकृति प्राप्त करने की उनमें प्राकृतिक उत्सुकता उत्पन्न हो गई थी।

बीकानेर राजवंश तथा केन्द्रीय सत्ता के बीच में जो सम्बन्ध थे उन्हें स्पष्ट समझ्ने के लिये हमें उपयुक्त पृष्ठभूमि में, तथा राज्य-मिक्त के प्रति जो महाराजा, का हिण्टकोण था उसके प्रकाश में उनकी पश्चाहर्ती कियाग्रों का ग्रवलोकन करना होगा। महाराजा, सम्राट एवं साम्राज्य, ग्रपने राज्य के रूप में भारत के ग्रात निष्ठा रखते थे। सम्राट के प्रति उनकी निष्ठा के राजसीवर्ग इन सब के प्रति निष्ठा रखते थे। सम्राट के प्रति उनकी निष्ठा ने साम्राज्य को किंद्र्यों को ग्रह्ट तथा सम्राट की सर्वोच्चता को ग्रह्मरण बनाये रखने के ग्रदम्य उत्साह से उन्हें ग्राभिमृत कर दिया। राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा ने उन्हें ग्रपने देश के लिये स्वराज्य प्राप्त करने के लिये ग्रपनी सम्पूर्ण शिक्त लगा देने के लिये वाध्य कर दिया ग्रतः सम्राट के

१. किमंग, उपयुक्त रचना में, अध्याय १४ "दू पोलिटिवस आव् दू इन्डियन स्टेट्स, द् चेम्बर आव् प्रिन्सेज एएड दू फेडरल आइडिया" सर रॉबर्ट अर्सिकन हालैन्ड द्वारा प्रदत्त, पू० २६४।

२. हाउस आव् कॉमन्स के हरकोर्ट कक्त में मारतीय प्रतिनिधियों को एम्पायर पार्लियामेन्ट्री एसोसियेशन (युनाइटेड किंगडम ब्रांच) द्वारा दिये गये मध्यान्ह मोज के अवसर पर महाराजा गंगासिंह का माषण, ता० २४-४-१६९७ — बीकानेर के महाराजा के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० २२७८१६, भाग २ वी ।

प्रति ग्रपनी निष्ठा के स्वामाविक परिणाम के रूप में उन्होंने भारत की संवैधानिक प्रगति के मार्ग में वाधा डालने की कभी इच्छा नहीं की ग्रीर स्वतंत्रता ग्रान्दोलन को सर्वदा गतिशक्ति ही दी। वह ग्रपनी तथा ग्रान्य नरेशों की ग्रान्तिरक प्रमुसत्ता को भी सुरिच्चित रखना चाहते थे।

इस प्रकार ऋांग्ल-शासन एवं नरेशों के मध्य में हितों की एक तद्रूपता उत्पन्न हो गई थी । ग्रांग्ल शासन को राजसत्ता द्रोही एवं विध्वंसक कार्यवाहियों को व्यर्थ करने के लिये राजात्रों का सहयोग त्राभीण्ट या तथा राजालोग ग्रपनी सुरज्ञा को निरापद करना चाहते थे। महाराजा गंगासिंह ने इस सुल्म अवसर का लाम उठाकर राज्यकर्ता नरेशों के इस निमित्त का त्र्यत्यधिक योग्यता से पृष्ठपोषण किया कि राज्यों से चीणतम सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक विषय पर भी राज्यकर्चा नरेशों का एक सम्मेलन बुलाकर उनसे मन्त्रणा की जानी चाहिये। र मार्च १६१४ को दिली में स्रायोजित प्रमुखों के महाविद्यालय सम्मेलन के अवसर पर भी उन्होने अपनी इस मांग की पुनरावृति की ग्रीर कहा कि जिस प्रकार महाविद्यालय के विषय में यह सभा बुलाई गई है में त्राशा करता हूँ कि राज्यों से समीपी सम्बन्ध रखने वाले ग्रान्य विषयों पर भी सोच-विचार करने के लिये वायसराय इस प्रकार की सभात्रों का शीव ही समाहान करेंगे तथा भविष्य में इस प्रकार की समात्रों को नियमित रूप से संयोजित किया जा सकेगा और उनके कार्यक्रमों का मुव्यवस्थापन किया जा सकेगा । इन वचनों के महत्व का यथोचित गुणगान १६ मार्च १९१४ के 'टाइम्स आफ इएडिया' में प्रकाशित हुआ ।3 सन् १६१५ में महाराजा ने पुनः वायसराय को भारतीय राज्यों तथा उनके शासको से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों पर एक सामान्य त्रालेख प्रस्तुत किया। इस सामान्य त्रालेख में ग्रन्य प्रश्नों के ग्रातिरिक्त उन्होंने राजनीतिक शब्द रचना, त्रवस्यकता प्रशासन एवं नरेशों की परिषद त्रादि में परिवर्तनों के प्रश्न भी उठाये। यहां पर यह कहना सुखकर होगा कि अक्टूबर सन् १९१६ में लार्ड चेम्सफोर्ड ने नरेशों के सम्मेलन का तृतीय ग्राधिवेशन

भारत सरकार में देशी राज्यों के प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर महाराजा गंगासिंह.
 का सामान्य त्रालेख ता० ५-१-१६१४ ।

वहीं, पृ० १३, दिल्ली में प्रमुखों के महाविद्यालय सम्मेलन में ता० ३-३-१६१४ को महाराजा गंगासिंह का माष्ण ।

द् टाइम्स आफ इन्डिया ता० १६--३-१६१४ ।

(सन् १६१३ एवं सन् १६१४ में शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर संयोजित सम्मे-लनों को पहले दो सम्मेलन मानकर) बुलाया । इस सम्मेलन का उद्घाटन करते समय उन्होंने घोषणा की कि राजाश्रों, उनके राज्यों तथा उनकी प्रजा से सम्बन्धित कुछ विषयों पर भारत सरकार को परामर्श देना इस सम्मेलन का उदिण्ट लन्द्य है। "

इस सम्मेलन की कार्य सूची में दो महत्वपूर्ण विषय थे, देशी पालित किया जाने के सम्बन्ध में भारत सरकार के राजनीतिक सचिव द्वारा परिचारित एक ज्ञापन तथा भारतीय राज्यो में अवयस्कता प्रशासन का रूप । रीतियों से सम्बन्धित यह ज्ञापन इस नियम को निर्धारित करने का अभिप्राय रखता था कि प्रत्येक राजसिंहासन के उत्तराधिकार के लिये सरकार की स्वीकृति एवं उसका अनुमोदन प्राप्त करना अनिवार्य होना चाहिये। महाराजा गंगासिंह ने इस मनस्कोण का इसके विभिन्न पत्तों में परीत्त्रण किया । उन्होंने निर्देश किया कि एक भारतीय शासक ऋपने पूर्वजों द्वारा विजित एवं निर्मित राज्य का दायाधिकारी होता है तथा उसे यह स्वामि-त्वाधिकार किसी अनुदान द्वारा प्राप्त नहीं होता है जिसके लिये अनुमति लेना त्रावश्यक हो । उन्होंने त्रागे कहा कि भारतीय शासक त्रपने जन्म-सिद्ध त्र्राधिकार से ऋपने पूर्वजों का दायाधिकारी होता है । उन्होंने इंस तथ्य की त्रोर भी ध्यान त्राकर्षित किया कि यदि स्वीकृति को त्रानिवार्य बना दिया जाता है तो उसके प्राप्त होने तक उस राज्य की गद्दी रिक्त पड़ो रहेगी श्रीर यह चिरकाल-सम्मानित प्रथाश्रों एवं परम्पराश्रों का एक श्रतिक्रमण होगा । उन्होंने कहा कि यह, प्रत्यत्त उत्तराधिकारी तथा सम्भाव्य उत्तराधिकारी के उन ग्राधिकारों को ग्रापदग्रस्त कर देगा जो उद्भृत होने

१. दिल्ली में राज्यकर्ता नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन के प्रारम्मण में वायसराय का माषण ता० २०--१०-१६१६— दिल्ली में अक्टूबर-नवम्बर, १६१६ में हुये नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन की कार्यवाहियां, पृ० १६ ।

२. देशी राज्यों में श्रमिषेक एवं प्रतिष्ठापन दरवारों के श्रवसर पर कुछ नियमों के पालित किये जाने के सम्बन्ध में राजनीतिक सिचव द्वारा परिचारित एक ज्ञापन, श्रक्टूबर-नवम्बर १९१६ के राज्यकर्ता नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन की कार्यवाहियों में उिह्निखित, पृ० १६ ।

से भी पूर्व उसके द्वारा श्रार्जित कर लिये जाते हैं। महाराजा ने पूर्णतया सिद्ध कर दिया कि राजनीतिक सचिव द्वारा प्रतिपादित मनस्कोण श्रासमर्थनीय है, तथा उत्तराधिकार के विषय में यह धारा निर्धारित करते हुये एक प्रस्ताव पारित करने में वह सफल हुये कि हिन्दू राज्यों में उत्तराधिकार हिन्दू विधान एवं परिपाटियों के श्रनुसार होगा तथा मुस्लिम राज्यों में उन राज्यों के कानून एवं रिवाजों के मुताबिक होगा। व

सुदीर्ध वादविवाद के पश्चात् जिनमें, श्रापनी श्रवयस्कता की श्चविध में श्रपने व्यक्तिगत श्रनुभवों के श्राधार पर महाराजा ने प्रमुख भाग लिया था, परस्पर में मान्य समभौतों को द्यंगीभूत करते हुये, एक प्रस्ताव अमिस्वीकृत कर लिया गया । इस प्रस्ताव में अभिसंविदित किया गया कि प्रशासन में ग्रांग्ल प्रणालियों का उपस्थापन करने के लिये राजाग्रों पर किसी प्रकार का दवाव नहीं डाला जाना चाहिये तथा सुधारों का उद्मव स्वयं राजात्र्यों की स्वेच्छा से होना चाहिये। इसके द्वारा, उन शासकीय श्रिधिकारियों (पोलिटिकल अफसरों) को, जिनको अस्थायी रूप से किसी राज्य के प्रशासन का ऋाभार सौंपा हुऋा था उस राज्य की स्थानीय परम्पराऋों को सुरिच्चत रखने का निदेश दिया गया । केवल प्रशासकीय कुशलता की श्रोर ध्यान देना ही एक मात्र अभीष्ट लच्य नहीं था ! इसके अतिरिक्त उसमें यह भी निर्धारित किया गया था कि एक शासक की ख्रवयस्कता के यावत् उस राज्य का प्रशासन साधारणतः एक परिषदं स्रथवा एक प्रति-शासक को सौंपा जाना चाहिये, यदि ऐसा करना उस राज्य की प्रथात्रों के ययार्थतः स्रनुरूप हो, तथा उन प्रथास्रों एवं परम्परास्रों का नियम निष्ठा से रक्षण एवं पालन किया जाना चाहिये । इसके ऋन्य प्रावधान यथा निम्नां-कित थे- प्रतिशासन परिषद द्वारा यथा सम्भव स्थानीय प्रतिभा की ही सेवा नियुक्ति की जानी चाहिये, वैयक्तिक सम्पत्ति में हस्तचेप नहीं किया जाना चाहिये, जैवरों का विक्रय नहीं किया जाना चाहिये, राज्य के किसी भूखएड या प्रदेश का विनिमय, स्वत्वत्याग अथवा विक्रयण नहीं किया जाना चाहिये तया शासक का शिच्णा एवं प्रशिच्णा, उस प्रयोजन के लिये समाहूत

राज्यकर्ता नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन में महाराजा गंगासिंह का भाषण ता० २-१९-१६१६— राज्यकत्तां नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन की कार्यवाहियां, अक्टूबर-नवम्बर, १६१६, पृ० ६६-६ ।

२. वही, पृ० १०७।

समिति के ग्रभिस्ताव के ग्रनुसार होना चाहिये।

इस प्रकार इस सम्मेलन की उत्पत्ति एवं सफलता का श्रिषिकतम श्रेय महाराजा के अश्रांत प्रयासों तथा उनकी राजनीतिक विदग्धता को ही है। इस तथ्य को सम्मेलन में भी यथोपयुक्त रूप से अभिस्वीकृत किया गया।

सन् १६१७ में जब महाराजा युद्ध सम्मेलन एवं साम्राजिक युद्ध मन्त्रीमएडल की सभात्रों में सम्मिलित होने के लिये इंग्लैन्ड गये हुये ये तो उस समय भारत के राज्य-सचिव श्री ग्रास्टिन चेम्बरलेन ने उनसे ग्रानुरोध किया था कि वे कुछ महत्वपूर्ण भारतीय प्रश्नों पर एक टिप्पणी लिख कर उन्हें भेजें। ग्रातः महाराजा ने १५ मई १६१७ को रोम से एक सामान्य ग्रालेख मेजा। इस टिप्पणी में महाराजा ने साम्राज्य के ग्रान्तर्गत भारत को स्वराज्य प्रदान करने के सम्बन्ध में घोषणा करने की ग्रावश्यकता पर वल दिया था। इसके ग्रातिरिक्त सामान्य ग्रालेख में जिन ग्रान्य विश्वयों का विवेचन किया गया था वह यथा निम्न हैं - 'साम्राजिक विधान परिषद तथा प्रान्तीय विधान परिषदों में ग्रार ग्राधिक सुधार करना,' 'मारत शासन तथा प्रान्तीय शासनों में हस्ततेप की मात्रा को न्यूनतम करना तथा उन्हें ग्रीर ग्राधिक स्वायत्तता प्रदान करना,' तथा नरेशों की एक परिषद या सभा की सुष्टिट करना। ध

भारतीय संवैधानिक सुधारों पर वायसराय तथा भारत के राज्य सचिव के संयुक्त प्रतिवेदन के दसवें प्रकरण में देशी राज्यों से सम्बन्धित विषयों पर सोच विचार किया गया था तथा प्रस्तावित सुधारों की रूप रेखाएं एवं उनका सूत्रपात करने की अनुशंसा भी उसमें सम्मिलित की गई थीं। नरेन्द्र परिषद के जनवरी १९१६ के अधिवेशन में इस महत्वपूर्ण

ए. पी. निकल्सन, 'स्क्रेप्स आव् पेपर', पृ० ३३५-४३ ।
 राज्यकर्ता नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन की कार्यवाहियां, नवम्बर १६१७,
 पृ० १०६--९२ ।

राज्यकर्ता नरेशों एवं प्रमुखों के दिल्ली सम्मेलन में नावानगर के जाम साहव का मापण ता० २--११-१६१६, राज्यकर्ता नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन की कार्यवाहियां, श्रक्टूबर-नवम्बर १६१६, पृ० १०२ (नावानगर के जाम साहव द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव) ।

२. इसका सम्बन्ध विख्यात 'रोम नोट' से है जिसका उल्लेख पीछे ू० २५२ पर श्रा चुका है ।

४. 'रोम नोट', पृ०४।

४. वही ।

प्रलेख पर विमर्श किया जाने वाला था, परन्तु क्योंकि महाराजा को शान्ति सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये लन्दन बुला लिया गया था ग्रातः उन्होंने विभिन्न विवादास्पद विषयों पर ग्रापने विचारों को प्रकट करते हुये एक टिप्पणी लिख कर वायसराय की भेज दी।

वायसराय तथा राज्य-सचिव के संयुक्त प्रतिवेदन में नरेशों के लिये मूलभूत महत्व रखने वाले अनेक प्रश्न उठाये गये थे जैसे नरेशों की एक स्थायी परिषद स्थापित करने, राज्यों तथा सर्वोपिर राज्य-शिक्त के सम्बन्धों का परीक्षण करने तथा उन शासकों को, जिन्हे आन्तरिक प्रशासन के पूर्ण अधिकार प्राप्त ये तथा अन्य शासकों के बीच में विभाजन रेखा खींचने आदि के प्रश्न । अपनी टिप्पणी में नरेशों की एक स्थायी परिपद स्थापित करने की मांग को स्वीकार कर लेने के प्रस्ताव का स्वागत किया । किन्तु प्रस्तावित नरेन्द्र परिषद में छोटे राजाओं के साम्प्रतिक प्रतिनिधित्व के पक्त में महाराजा का शिक्तशाली तर्क इस टिप्पणी की अत्यन्त सजीव बात है । महाराजा ने तर्क प्रस्तुत किया कि यदि इन छोटे राजाओं को परिषद में सिमलित नहीं किया जायगा तो न तो वह आंग्ल-भारत में उपस्थापित सुधारों का लाम उठा सकेंगे और न ही परिषद में अपने मामलों का प्रतिनिधान कर सकेंगे । ऐसी स्थिति में वह पीछे रह जायेंगे और शृंखला की अशक्त कियां वन जायेंगे । अतः उन्होंने, नरेन्द्र परिषद में छोटे राजाओं के समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्त्पोपण किया । श्राजाओं के समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्त्पोपण किया । श्राजाओं के समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्त्पोपण किया । श्राजा को समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्त्पोपण किया । श्राजा को समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्तपोपण किया । श्राजा को समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्तपोपण किया । श्राजा को समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्तपोपण किया । श्राजा का समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्तपोपण किया । श्राजा का समुची सम्बन्धों के समुचित एवं अनुपातानुरूप प्रतिनिधित्व का पक्तपोपण किया । श्राजा सम्बन्धित सम्बन्ध समुची समुची सम्बन्ध सम्बन्ध समुची स

उस समय इंग्लैन्ड में, नरेन्द्र मएडल को संस्थापित करने के विषय पर विचार करने के लिये भारत के राज्य सचिव द्वारा नियुक्त सिमिति का अधिवेशन चल रहा था। अ्रतः वहां पर महाराजा की उपिर्यिति का लाम उठाया गया और उन्हें इन विचारणाओं में भाग लेने के लिये आमंजित किया गया। उन्होंने ७ जून १९१९ को सिमिति में भाषण दिया तथा एक टिप्पणी भी प्रस्तुत की। इन दोनों में उन्होंने राज्य के विशेष हितों से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों को संदर्भित किया नामतः प्रत्यन्त् राजनीतिक

वायसराय तथा मारत के राज्य-सिचव के संयुक्त प्रतिवेदन के दसवें प्रकरण (देशी राज्यों के सम्बन्ध में) पर महाराजा गंगासिंह की टिप्पणी, पू० ४-५, परिशिष्ट २५ ।

 ^{&#}x27;इन्डिया त्राफिस कमेटी' के लिये वीकानेर के महाराजा गंगासिंह की टिप्पणी, १६१६ ।

सम्बन्ध, सलामियों का संशोधन, संधि ऋधिकारों का प्रश्न, राज्यकर्ती नरेशों की प्रतिष्ठा एवं उनके विशेषाधिकार, तथा सर्वोपरि सत्ता द्वारा हस्तचेप । नरेशों की अधिराज परिष्ठा एवं नरेन्द्र मएडल को अस्तित्व में लाने के लिये ग्रावश्यक साधनों से सम्बन्धित विचार्य विषयों पर महाराजा के विचारों को ग्रंगीकार कर लिया गया तथा नरेशों की जिस ग्रंधिराज परिष्ठा के लिये उन्होंने त्राग्रह किया था उसे मान लिया गया। नरेन्द्र मण्डल को ग्रस्तित्व में लाने के लिये ग्रावश्यक साधन के सम्बन्ध में ग्रानुभव किया गया कि संसदीय विधान द्वारा ऐसा करना सम्भव नही संसद को इस प्रकार का कोई अधिकार नहीं है, और न ही भारत सरकार प्रशासकीय क्रिया द्वारा इस विषय में कुछ कर सकती है। महाराजा ने श्रपने विशिष्ट राजनीतिक सुमेधत्व के साथ तुरन्त सुमाव दिया कि इसके लिये एक राजकीय घोषणा करदी जानी चाहिये श्रीर इस प्रकार दोनों कठिनाइयों का समाधान कर दिया । यह न्याय रूप से कहा जा सकता है कि महाराजा ने न केवल एक स्थायी नरेन्द्र परिषद स्थापित प्रस्ताव को ही प्रवर्तित किया था तथा उसकी विस्तृत योजना निष्पादित करके उसको मान्यता देने के लिये भारत, सरकार को प्रतीति कराई थी , श्रपितुः उसके संघटन को ऋन्तिम रूप देने का ऋधिकतम श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है।

इस प्रकार, ऋटल एवं ऋविराम प्रयासों के परिणाम स्वरूप अन्ततः नरेन्द्र मएडल को स्थापित करने का निर्णय किया गया और प्र फरवरी १६२१ को दिल्ली में पुराने किले के भीतर दीवानेश्चाम में सम्राट की ऋोर से कनोट के ड्यू क द्वारा इस मएडल का ऋधिकारिक उद्घाटन किया गया | महाराजा को, जिन्होंने मएडल को ऋस्तित्व में लाने के लिये इतने कठोर प्रयास किये थे तथा जो राज्यकर्ता नरेशों एवं प्रमुखों के सम्मेलन के महामन्त्री रह चुके थे, मएडल का प्रथम चाँसलर चुना गया। सन् १६२६ में, इस पद पर पांच वर्ष तक कार्य करने के पश्चात, महाराजा ने नरेन्द्र नाइडल के चाँसलरपद से ऋवकाश ग्रहण किया।

उस समय भारत सरकार के साथ राजपूताना के राज्यों के जो सम्बन्ध थे तथा उनको सुधारने के लिये महाराजा गंगासिंह ने जो सहयोग दिया था इस स्थान पर उनका संद्यित वर्णन करना ऋसंगत नहीं होगा ।

पन्नीकर, 'हिज हाइनैस द् महाराजा आफ वीकानेर, ए वायोग्राफी,'
 पृ० २२७-२८ ।

भारत सरकार तथा राजपूताना के नरेशों के सम्बन्धों के सरलीकरण का प्रश्न सर्व प्रथम सन् १९१५ में विवादास्पद हुआ था तथा भारतीय सरकार द्वारा उसकी जांच भी की गई थी। भारत सरकार के राजनीतिक-सचिव ने उस समय इस विषय पर सात नरेशों के विचारों से अपने आपको अवगत किया था किन्तु उनमें से केवल तीन नरेश परिवर्तन के पत्त में थे अतः इस ग्रुप्त को वहीं समाप्त कर दिया गया । वाद में, लार्ड चेम्सफोर्ड तथा श्री मान्टेग्यू के संयुक्त प्रतिवेदन के दसवें प्रकरण (देशी राज्यों से सम्बन्धित) पर ग्रपनी टिप्पणी में महाराजा ने इस प्रश्न को पुनः उठाया ग्रीर कहा कि राजायों का कम से कम बड़े राजायों तथा भारत सरकार के वीच में प्रत्यक्त सम्बन्ध स्थापित करना, साम्राजिक शासन तथा नरेशों, दोनों के लिये हितकर होगा । र सन् १९१८ में प्रकाशित मान्टेग्यू-चेम्सफोर्ड प्रति-वेदन के ऋभिस्तावों में इस तथ्य को स्वीकार कर लिया गया । इस प्रति-वेदन में कहा गया था कि एक सामान्य नियम के रूप में समस्त महत्वपूर्ण राज्यों के भारत सरकार के साथ प्रत्यक्त सम्बन्ध स्थापित कर दिये जाने चाहिये क्योंकि केन्द्रीय शासन के साथ दो या इससे अधिक मध्यवर्ती अधि-करणों के श्रन्तरेण सम्पर्क स्थापित करने की कार्यप्रणाली से उचित श्रव-बोधन एवं सत्वर कार्य संचालन में बाधा पड़ती है। ³ 'इन्डिया आफिस कमेटी' ने, जिसका ऋायोजन सन् १९१६ में इंग्लैन्ड में हुआ या तथा निसने मान्टेग्यू-चेम्सफोर्ड प्रतिवेदन पर विचार-विमर्श किया या, अभिस्ताव

१. राजपूताने के राज्यकर्ता नरेशों को राजपूतान में गवर्नर जनरल के पर्जेट श्री श्रार. ई. हॉलैंन्ड का अजमेर से भेजा गया गोपनीय परिपत्र ता० २७ मार्च १६२० जो सरकार तथा राजपूताने के राज्यों एवं नरेशों के बीच में राजनीतिक सम्बन्धों के सरलीकरण? के विषय पर महाराजा गंगासिंह की सन् १६२२ की टिप्पणी में दितीय परिणिष्ट के रूप में पृ० ११६ पर उद्धत ।

वायसराय तथा भारत के राज्य-सिचव के संयुक्त प्रतिवेदन के दसवें प्रकरण (देशी राज्यों से सम्बन्धित) पर महाराजा गंगासिंह की टिप्पणी, पृ० ६-१० ।

२. राजपूताने के राज्यकर्ता नरेशों को राजपूताने में गवर्नर जनरल के एजेंट श्री श्रार. ई. हॉलेंग्ड का गोपनीय परिपत्र ता० २७ मार्च १६२० जो सरकार तथा राजपूताना के राज्यों एवं नरेशों के राजनीतिक सम्बन्धों के सरलीकरण' के विषय पर महाराजा गंगासिंह की सन् १६२३ की टिप्पणी में द्वितीय परिशिष्ट के रूप में पृ० ११६ पर उद्घृत ।

किया कि क्योंकि मारत सरकार ने इस प्रकार के सम्बन्धों को सुगम करने की नीति को अंगीकार कर लिया है अतः उसके लिये अनिवार्थ हो गया है कि वह राज्य-सचिव के अनुमोदनार्थ एक योजना प्रस्तुत करें किन्तु कमेटी के प्रस्तावों को प्रस्तुत करने के पूर्व नरेशों के विचारों को जानना आवश्यक है। महाराजा, गवर्नर जनरल के एजेंट के पद के अन्तकरण तथा विभिन्न वर्ग के राज्यों में एकाकी माध्यम के रूप में अधिकार पत्र के साथ मेजे गये आवासी प्रतिनिधियों के सातत्य के पत्त में ये 1 किन्तु राजपूताने में गवर्नर जनरल के एजेंट श्री आर. ई. हालैयड ने एजेंट के पद के रज्ञा- करण का पत्त्रपोषण किया। अतः ६ मई १६२० को महाराजा ने श्री हालैयड के पत्र का व्यक्तिगत रूप से प्रत्युक्तर दिया तथा राजपूताना के नरेशों द्वारा गृहीत मनस्कोण को न्याय संगत सिद्ध करने के लिये सन् १६२३ की अपनी टिप्पणी में शिक्तिशाली तर्क प्रस्तुत किया।

सन् १६२६ के लगभग, त्रांग्ल-भारत में प्रवर्तमान त्रास्थिर दशात्रों का त्रप्रत्यक्त प्रभाव राज्यों पर भी पड़ रहा था क्रीर वे राजनीतिक त्रान्दोलन में त्रान्तर्प्रस्त होते जा रहे थे। राज्यों के मामलों में सर्वोपिर सत्ता द्वारा किये जाने वाले हस्तक्तेगों तथा विशिष्ट नरेशों, उदाहरणार्थ उदयपुर के महाराणा फतहसिंह, के विरुद्ध की गई कुछ कार्यवाहियों के परिणाम स्वरूप शासकों के हृद्य में त्रागंकार्थे उत्पन्न हो गई थीं। उन्होंने त्रान्त्र किया कि भारत में किये जाने वाले प्रत्येक राजनीतिक त्वरण के साथ उनके प्रतिश्रुत त्राधिकारों एवं विशेषाधिकारों का हास हो रहा है। उस समय क्योंकि लार्ड हर्विन त्रांग्ल-भारत में सुधार कार्यों को त्वरित करने की समस्या को कुलभाने में त्रात्यन्त गम्भीरता से कार्यरत थे, इन राजात्रों ने, जो त्रांग्ल शासन के साथ त्रापने राजनीतिक सम्बन्धों का यथातस्य

२. 'इन्डिया आफिस कमेटी' के लिये महाराजा गंगासिह की टिप्पणी, १६१६, पु० १४-१६।

२. श्रांग्ल शासन तथा राजपूताने के नरेशों एवं राज्यों के बीच राजनीतिक सम्मन्धों के सरलीकरण पर महाराजा गंगासिंह की टिप्पणी, १० १०।

राजपूताना के राजात्रों को श्री श्रार. ई. हॉलैंग्ड का परिपत्र ता० २०-३-१६२०,
 ५० ११५–२६।

४. श्रांग्ल शासन तथा राजपूताना के नरेशों एवं राज्यों के बीच राजनीतिक सम्बन्धों के सरलीकरण के प्रश्न पर महाराजा गंगासिंह की टिप्पणी, पू० १०।

श्रववोधन एवं यथोचित मूल्यांकन कराने के लिये दीर्घकाल से संप्रयास कर रहे थे, साग्रह ग्रान्रोध किया कि उनकी इस मांग को तुरन्त स्वीकार किया जाना चाहिये । अतः नवम्बर १६२६ में नरेन्द्र मण्डल की सभा का उद-घाटन करते समय वायसराय ने ऋपने भाषण में, इस विषय पर उनकी स्थायी समिति के साथ स्पष्ट एवं स्वतन्त्र विमर्श करने का संकेत किया। महाराजा गंगासिंह ने सन् १९२२ में जब वह नरेन्द्र मण्डल के चाँसलर थे, ऐसा ही एक सुकाव रखा था। र इसे ग्रविलम्ब स्वीकार कर लिया गया । मई सन् १६२७ में वायसराय ने नरेन्द्र मण्डल की स्थायी समिति से सम्बन्धित शासकों को उनके साथ विचार-विमर्श करने के लिये शिमला बुलाया । वहां पर नरेशों ने ऋविलम्बय रूप से इस विषय पर विचार करने के लिये एक कमेटी नियुक्त की जाने की अपनी मांग की पुनरावृत्ति की। इस मांग को स्वीकार कर लिया गया श्रीर वायसराय ने भारत के राज्य-सचिव को भारतीय राज्यों की एक समिति नियुक्त करने की ऋनुशंसा की । वायसराय को उनके इस सहानुभृति प्रकाशक संकेत के लिये राजान्नों द्वारा घन्यवाद . दिया गया । इस प्रकार की सिमिति का सुमाव सर्वेष्रथम महाराजा गंगासिंह द्वारा जब वह नरेन्द्र मण्डल के चाँसलर थे, सन् १६२४ में ही दे दिया गया था।³ इस प्रकार, भारतीय राज्यों की एक सिमति जिसे लोकप्रसिद्ध रूप से 'वटलर कमेटी' कहा जाता है, नियुक्त हुई।

वटलर कमेटी के समस्त राजाओं के मामले को सुन्यक्त एवं सुचिष्ट रूप से प्रस्तुत करने के लिये, तथ्यों एवं वास्तविकताओं को संग्रहीत करना तथा मामले को प्रस्तुत करने के उचित ढंग को निर्धारित करना त्यावश्यक था। ग्रातः महाराजा गंगासिंह ने १६ ग्रागस्त १६२६ को वीकानेर में विभिन्न राज्यों के मंत्रियों की एक सभा बुलाई। सभा में उन्होने सबसे ग्राधिक महत्व नरेशों के उन नये उत्तरदायिखों को दिया जिनको संतोषप्रद ढंग से निमाने पर ही उनके राज्यों का भविष्य निर्भर करता था। तद—नन्तर उन्होने इसके लिये ग्रहणीय कार्यविधि प्रस्तावित की। उन्होने कहा कि हम लोग ग्रामी एक ग्रात्यन्त कठिन समग्र से गमन कर रहे हैं तथा इस

नरेन्द्र मण्डल दिल्ली में वायसराय का मामण ता० २२-११-१६२६, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, नवस्वर १६२६, पृ० १४ ।

नरेन्द्र मण्डल दिल्ली में महाराजा गंगासिंह का भाषण तार्व २३-२-१६२८, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, फरवरी १६२८, पृ० ७३।

३. वही, पृ०ं ७२-७३ ।

तथ्य को भी मानना ही पड़ेगा कि देश में राजनीतिक विचारधारा का एक वर्गविशेष हमारे पन्न में नहीं है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि यह भलीभांति हृदयंगम कर लेना चाहिये कि समय बदल रहा है और हमें अपने आपको नई परिस्थितियों के अनुयुक्त करना होगा और कहा कि में अनुभव करता हूँ कि कुछ राज्य वास्तव में प्रगतिशील हैं किन्तु कुछ राज्यों में अभी सुधारों की अतिमात्र आवश्यकता है और अनुरोध किया कि ऐसे किसी भी कार्य को जिसे कर्त्तव्य एवं मनीषा ने अधिप्रेरित किया हो, अहत नहीं छोड़ना चाहिये। इस विषय पर विचार करने के लिये महाराजा ने

१. बीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यां लय की फाइल सं० २२७८। XXXVI, भाग III C, बीकानेर में संयोजित मिन्त्रयों की समा में महाराजा गंगासिह का भाषण ता० १६-५-१६२६।

''कोई भी व्यक्ति जो गम्भीरता एवं चित्तासिक के साथ चिन्तन करता है वह इस तथ्य को श्रनदेखा वहीं कर सकता कि वास्तव में हम लोगों का मविष्य यदि अनन्य रूप से नहीं तो विशद रूप से स्वयं हम शासकों पर ही निर्भर करता है ऋर्यात हम राजा लोग हमारे महान उत्तरदायित्वों को कहां तक समभते हैं तथा हमारे उन समाहत कर्तव्यों को कहा तक चिरतार्थ करते हैं जिनका हमें सर्वशिक्तमान ईश्वर ने अवघाता वनाया है, किस दंग से हम लोग श्रपने राज्य कार्यों का निदेशन करते हैं तथा हमारे राज्यों श्रोर प्रजाश्रों के कल्याण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण विषयों की श्रीर हम कितना ध्यान देते हैं। श्राने वाला युग हमारे लिये निर्झान्त रूप से अत्यन्त विषम होगा • इस तथ्य की श्रोर ध्यान नहीं देने से कोई भी लाम नहीं होगा कि कुछ विशिष्ट राजनीतिक सिद्धान्तों के समर्थक समुदायों (आंग्ल-भारत में) की प्रवृत्ति हमारे पत्त में नहीं है • • • • जमाना बदल रहा है तथा राजाओं श्रीर राज्यों को भी अपने आप को नवीन परिस्थितियों के अनुयुक्त करना होगा। हमारे कुछ राज्य अपनी अत्युत्तम सिद्धियों के लिये तथा अपने महान लच्यों के लिये निनको प्राप्त करने के लिये वह इतनी उद्योगपरायणता से संघर्ष कर रहे हैं, प्रत्येक प्रकार से न्याय संगत गर्व कर सकते हैं। किन्तु दूसरी ओर कुछ राज्यों में सुधार कार्यों की आवश्यकता प्रतीयमान है। यह राजाओं तथा उनके मन्त्रियों, हम सभी के लिये आवश्यपालनीय है कि हम यह दढ़ संकल्प करलें कि कर्तव्य एवं मनीषा द्वारा अधिप्रेरित किसी मी कार्य को हम उपेद्वित नहीं करेंगे । इसमें कोई सन्देह नहीं कि मारत के राज्यों एवं उनके राजाओं के भावी प्रारव्य का निर्णय तो ईरवरेच्छा के अनुसार ही होगा किन्तु

सन् १६२७ में नरेशों की भी एक समा बुलाई । फरवरी १६२८ में बटलर कमेटी का स्वागत करते हुये नरेन्द्र मगडल में एक प्रस्ताव में महाराजा गंगासिंह ने कहा कि राज्यों के साथ जो साम्राज्य के सम्बन्ध हैं उनको नियंत्रित करने वाले तन्त्र को सुधारने की तथा उसे अद्यावधिक करने की आवश्यकता अतिदेय है । उनका मत था कि यह समस्या चाहे कितनी ही दुःसाध्य क्यों न हो किन्तु सहानुभूति, सद्भावना तथा सत्यनिष्ठ एवं मुक्त राजकौशल के साथ यदि इस समस्या को सुलभाने के प्रयास किये जायें तो इसे अवश्यमेव सुलभाया जा सकता है । १६ अगस्त १६२६ को बीझानेर में मन्त्रियों की सभा में महाराजा ने राजाओं की, उनके अपने अपने राज्यों एवं प्रजा के प्रति जिन जिम्मेदारियों के प्रति संकेत किया था, उनमें उन्होंने अपने इद विश्वास को पुनः प्रकट किया । उन्होंने कहा कि किसी शासक एवं उसके राज्य को सुरद्धा एवं सत्त्व को सर्वदा आंग्ल-सेना के अवलम्बन पर नहीं रखा जा सकता अपितु उस शासक को अपने शासन को अपनी प्रजा की अभकामना, राजमित एवं सन्तुष्टि पर आधारित करके ही उसे स्थायी रूप से सुरिह्तत एवं संधारित करना होगा। विश्वतः उन्होंने

उचित रूप से हमारे कर्तव्यों का पालन करें तथा हमारे उत्तरदायित्वों को ध्यान में रखें तो आश्वासित रूप से ईश्वर अपनी अनन्त अनुकम्पा के साथ हमें अपना अभयहस्त एवं सन्दर्शन प्रदान करेगा । "

१. नरेन्द्र मण्डल दिल्ली में महाराजा गंगासिंह का भाषण ता० २३-२-१६२५, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, फरवरी १६२५, पृ० ७५ । " अहेर न ही आप श्रीमानों को मेरे द्वारा यह स्मरण कराने की आवश्यकता है कि एक राजा एवं उसके राज्य की सुरत्ता एवं शक्ति सदा के लिये आंग्ल-सेना पर या उसकी निजी सेना पर निर्मर नहीं कर सकती किन्तु वह अपने शासन को केवल अपनी प्रजा की उन्मुखता, राज्य मिक संतुष्टि एवं सहकारिता पर आधारित करके ही उसे स्थायी रूप से सुरित्तत एवं संपोधित बना सकता है । अतः, जहां भी आवश्यक हो, अनिवार्य एवं अनुपेत्त रूप से हमें अपने राज्यों के आन्तरिक मामलों को सुव्यवस्थित कर लेना चाहिये " सर्वनाशी परिणामों के अनेक दृष्टान्त हमारे सामने हें " केवल व्यक्तिगत रूप से सर्वसत्ताधिकारी के लिये ही नहीं किन्तु मेरी नम्न राय में, राज्य तथा समाज के लिये मी कई प्रकार से सर्वनाशी. " इस संसार के कुछ महानतम् राज्यों एवं सम्राज्यों के अत्यन्त शिक्त-

राय दी कि यह परम ग्रावश्यक है कि राजा लोग सर्व प्रथम ग्रपने ग्रान्ति रिक मामलों को सुन्यवस्थित करें । उन्होंने राज्यों की ग्र्रथं व्यवस्था पर भी संज्ञित प्रकाश डाला ग्रीर कहा कि राज्यों के विज्ञीय साधनों को विकलांग करने से तथा घाटे का वजट प्रस्तुत करने से ग्रहितकर राजनीतिक प्रभाव पड़ता है । उन्होंने कहा कि यदि राजा लोग ग्रपनी प्रजा की समृद्धि को प्रोन्नत करें तथा 'विधान की परमेष्ठिता' के सिद्धान्त का पालन करें तो प्रजा के किसी भी भाग द्वारा प्रतिरोध की मावनाग्रों को व्यक्त किये जाने का कोई कारण ही नहीं हो सकता । प्रत्युत उन्हें भारतीय पत्रकारों का सम-र्थन प्राप्त हो सकता है । तथापि, उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि नरेशों को, इस विपय में कि उनके राज्यों के लिये क्या ग्रज्छा है या क्या बुरा है, बाहर के किसी भी व्यिक्त की राय नहीं माननी चाहिये ।

किन्तु जब बटलर कमेटी की संरचना का पता लगा तो एक व्यापक असंतोष फैल गया क्योंकि उसमें कुछ नरेशों एवं उनके मंत्रियों को सिमिलित ही नहीं किया गया था। कुछ तथाकथित मित्रों ने समाचार पत्रों के माध्यम द्वारा तर्क प्रस्तुत किया कि राजाओं के लिये इस कमेटी का बहिष्कार करना एक अत्यन्त बुद्धिमानी का काम होगा, किन्तु महा राजा ने इस सुभाव का अत्यन्त हढता से विरोध किया और कहा कि यदि उन्होंने कमेटी का बहिष्कार किया तो यह केवल मूर्खता की पराकाष्ठा होगी तथा प्रत्येक रीति से यह राजकौशल का ठीक प्रतिवाद होगा।" उन्होंने नरेशों से अनुरोध किया कि जो सुअवसर उन्हें प्राप्त हुआ है उसका वे लाभ उठायें तथा आशा एवं निश्वास के साथ भविष्य की प्रतीक्ता करें। र

उस समय, आंग्ल-भारत में समाचार पत्रों में एवं सार्वजिनिक, मंचों से ये आलोचनायें की जा रहीं थी कि आंग्ल-भारत में संवैधानिक

मान् श्रधीश्वरों का भी यही दारुण श्रन्त हुश्रा है जिन्होंने समय के लक्त्णों की श्रवहेलना की श्रीर उसके परिणाम स्वरूप शीव्र ही विनाश को प्राप्त हो गये श्रयवा जो श्रपने श्रविवेकी स्वेच्छाचारी शासन के द्वारा श्रपनी संतित के लिये विनाश का कारण वन गये।"

१. नरेन्द्र मण्डल दिल्ली में महाराजा गंगासिंह का भाषण ता० २३--२-१६२८, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, फरवरी १६२८, पू० ७२-८६।

वीकानेर विधान समा का संस्थान करते समय महाराजा गंगासिंह का माषण ता० २०-१-१६२८, 'द त्रोध आव् पोलिटिकल फोरसेज इन इन्डिया', पृ० २० ।

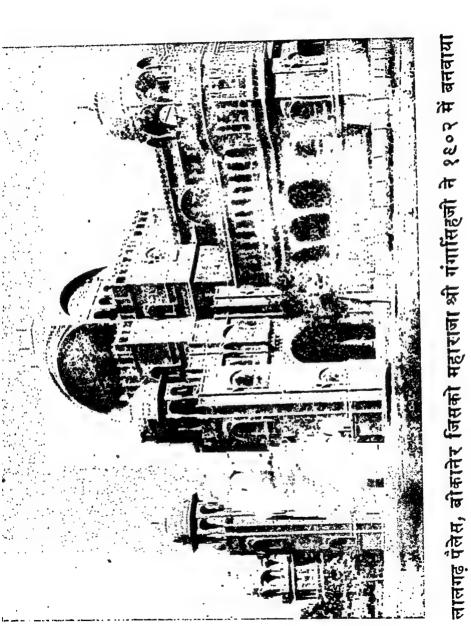
प्रगति का गतिरोध करने के लिये राजा लोग अंग्रेजों के साथ पड़्यन्त्र में सिम्मिलित हो गये हैं। महाराजा ने अत्यन्त हढ़ता से इन आरोपां का खराइन किया और निर्देश किया कि ठीक इसके निपरीत नरेशों ने सामूहिक रूप से अनेक अवसरों पर यह पूर्णत्या स्पष्ट कर दिया है कि ने न केवल आंग्ल-भारत में अपने देशवासियों की राजनीतिक एवं संवैधानिक प्रगति के प्रति सहानुभूतिक हैं अपित उन्होंने उनके प्रति अपना अनुमोदन एवं पत्त-पोषण भी व्यक्त किया है, और उन्होंने सन् १६१७ में लन्दन में दिये गये अपने भाषणों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया।

फरवरी १६२८ में कमेटी वीकानेर आई तथा महाराजा एवं बीकानेर के प्रधान मन्त्री सर मनु भाई एन मेहता ने, राज्यों से सम्बन्धित मामलों पर उसके साथ विचार—विमर्श किया | सितम्बर १६२८ में बटलर कमेटी के साथ विमर्श करने के लिये नरेन्द्र मण्डल की आरे से कई राज्यकर्ता नरेशों ने इंग्लैंग्ड के लिये प्रस्थान किया | किन्तु महाराजा नहीं गये | उन्होंने अपने स्थान पर अपने प्रधान मन्त्री को प्रति—नियुक्त किया |

क्योंकि देशी राज्यों के मामलों का आंग्ल-भारत के लिये स्वीकृत किये जाने वाले सुधारों से एक विशेष सम्बन्ध था, आंग्ल-भारतीय नेता राजाओं की मांगों के प्रति अमनीयोगी नहीं थे। लखनऊ में आयोजित 'आल पार्टीज कान्क्रोन्स' ने अपने प्रतिवेदन में एक वाक्यांश निवेशित किया कि "स्वतन्त्र राष्ट्र भी देशी राज्यों के सम्बन्ध में उन्हीं अधिकारों का प्रयोग करेगा तथा उनके प्रति, संधियों से आविभूत होने वाले अथवा अन्य उन्हीं दायित्वों का पालन करेगा, जिन अधिकारों एवं दायित्वों को मारत सरकार द्वारा एतत्कालपर्यन्त प्रयुक्त एवं पालित किया गया है।" 'आल पार्टीज कान्क्रोन्स' की एक रिपोर्ट को, जिसे लोक प्रसिद्ध रूप से 'नेहरू रिपोर्ट' के नाम से जाना जाता है, उसके नेता द्वारा प्रकाशित कर दिया गया तथा यह प्रत्याशा व्यक्त की गई कि राजा लोग इसे स्वीकार कर तिया गया तथा यह प्रत्याशा व्यक्त की गई कि राजा लोग इसे स्वीकार कर तिया गया तथा यह प्रत्याशा व्यक्त की गई कि राजा लोग इसे स्वीकार कर तिया गया तथा यह प्रत्याशा व्यक्त की गई कि राजा लोग इसे स्वीकार कर लोगे।

१. वीकानर विधान सभा का संस्थान करते समय महाराजा गंगासिंह का भाषण ता० २०-१-१६२५, 'द श्रोध आव् पीलिटिकल फोरसेज इन इन्डिया', पूर्व २१-२२।

६ सितम्बर १६२५ को सर मनुमाई एनं महता को उनके इंग्लैन्ड विदा होने के पूर्व अवसर पर दिये गये एक सायमीज में महाराजा गंगासिंह का भाषण, 'द् ग्रीय आव पोलिटिकल फोरसेज इन इन्डिया' पृ० ४६।



					,
,					
			٠.	·	
,	,				
	•	-			

महाराजा ने सम्यक् रूप से अभिज्ञात किया कि आंग्ल-भारत में ऐसे 'सच्चरित्र एवं भले' व्यक्ति भी हैं जो चाहते हैं कि नई व्यवस्था में देशी राज्यों के साम भी निरपेच व्यवहार होना चाहिये। किन्तु यह एक ऐसा विषय है कि इसके वैधिक एवं ग्रन्य पत्तों की उचित जांच किये विना ही इसके साथ श्रगम्भीरता से व्यवहार नहीं किया जा सकता। "एतत्काल-पर्यन्त प्रयुक्त एवं पालित" की शब्द योजना से प्रतीत होता है कि राजाश्रों द्वारा अपने संश्रावित अधिकारों एवं विशेषाधिकारों के विरुद्ध उत्तरोत्तर बढ़ते हुये अतिचारों को दूर करने के लिये जो सतत उयास किये जा रहे हैं, उनका ऋरवीकरण एवं प्रतिक्रमण किया जा रहा है। महाराजा ने हदता-पूर्वक कहा कि यह त्रारोप दुर्भावनापूर्ण है कि मान्टेग्यू-चेग्सफोई के प्रतिवेदन के दसवें प्रकरण में राज्यों से सम्बन्धित जिन प्रस्तावों को सम्मिलित किया गया है वे राजाओं तथा अंग्रेजों के एक पड़यन्त्र का परिणाम हैं। इस विषय पर अपनी संमत्रणात्रों के यावत् राजात्रों ने अपने प्टियाला सम्मेलन में भारत के अनेक प्रमुख नेताओं को विशेष रूप से आमिन्त्रित किया था तथा लार्ड सिन्हा, परिडत मदन मोहन मालवीय, श्री श्रीनिवास शास्त्री, सर श्रली इमाम, सर एन. एम. समर्थ एवं श्री चिन्तामणि ने इस सभा में भाग लिया श्रीर उनमें से कुछ लोगों ने वास्तव में बहुमूल्य सुभाव भी दिये।

वटलर कमेटी के प्रतिवेदन को, जिसे अप्रैल १६२६ में प्रकाशित किया गया था, देखकर राजाओं को अत्यन्त विद्योम हुआ। इसमें केवल एक इसी तथ्य को अंगीकार किया गया था कि देशी राज्यों के संधि-विपयक सम्बन्ध क्योंकि सम्राट के साथ है अतः उनको देशी राज्यों की सहमित विना किसी भी ऐसी अन्य सत्ता को नहीं सौंपा जा सकता जिस पर कि सम्राट का पूर्ण नियंत्रण न हो। प्रतिवेदन के शेष भाग में मुख्यतः भारत सरकार को विगत एवं वर्तमान कार्यवाहियों का औचित्य समर्थन किया गया था। यद्यपि तत्कालीन कार्यकारी राजनीतिक—सचिव श्री रावर्ट अर्थिकन हालैन्ड ने स्वयं यह स्वीकार किया था कि "राज्यों के साथ सम्बन्धों को प्रभावित करने वाली कुछ रीतियां एक ऐसी क्रियाविध द्वारा प्रवर्तित हो गई है जिसका

६ सितम्बर १६२ को सर मनुमाई एन. मेहता को उनके इंग्लैन्ड विदा होने के पूर्व अवसर पर दिये गये एक सायंभीज में महाराजा गंगासिंह का भाषण— 'द ग्रोय श्राव् पोलिटिकल फोरसेज इन इन्डिया' पृ० ५०-५१।

२: वही, पु० ५४-५५।

त्रांशय भले ही उपकारी रहा हो फिर भी वह कुछ हद तक यथेच्छ अवश्य है", तो भी वटलर कमेटी की राय थी कि इन रीतियों ने संधियों के अन्धकारमय कोनों को प्रकाशमान कर दिया हैं। प्रतिवेदन में इसके आगे निर्दिष्ट किया गया था कि इन कियाविधियों की परिभाषा देना या उनको परिसीमित करना अनावश्यक एवं अवांछनीय है। राजाओं की इस मांग के प्रति, कि सर्वोपरि सत्ता को अवहित रूप से सीमांकित किया जाना चाहिए, प्रतिवेदन में कहा गया था कि "सर्वोपरि सत्ता सर्वदा सर्वोपरि ही रहनी चाहिये।"

फरवरी १६३० में नरेन्द्र मण्डल के ऋधिवेशन में महाराजा गंगासिंह ने राज्यों के ऋान्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के ऋाधार की परिमाषा के सम्बन्ध में प्रस्ताव रखते हुये, इस विषय में बटलर कमेटी द्वारा ऋपनाई गई विचार पद्धति की तीव्र भर्त्सना की। उन्होंने स्वीकार

नरेन्द्र मण्डल दिल्ली में महाराजा गंगासिंह का माषण ता० २७-२-१६३०, — नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, फरवरी १६३०, पृ० १४१-४२ र '' • • • नयों कि आंग्ल सत्ता ने देश को एक समन्वित समिष्ट में संयोजित कर दिया है अतः नवीन परिस्थितियों के दवाव से पिछ्छे दिनों एक संवैधानिक सिद्धान्त का निरन्तर विकास होता रहा है। इस सिद्धान्त को, उदाहरणार्थ (विभिन्न मामलों में) सर्वोपरि राज्य-शक्ति के साथ अनेक राज्यों के मौलिक सम्बन्धों पर यद्यपि अधिरोपित किया गया है किन्तु यह सिद्धान्त, मारतीय राज्य-संस्था की आवश्यकताओं के सामंजस्य से विकसित हुआ है न कि भारतीय नरेशों की प्रभुसत्ता की परिसीमित करने की किसी स्पृहान से । इस प्रकार के नये सिद्धान्त के प्रति अतीत में शासकों की सम्मति अशतः तो इस कारण से नहीं ली गई कि वहुधा अलग अलग राज्यों को प्रमानित करने वाले पूर्वादशों से इस सिद्धान्त को खण्डशः निकसित किया गया था तथा अंशतः इसलिये कि एक यथोचित कालाविध में संयुक्त सम्मति प्राप्त करना अन्यवहार्य था । यदापि इन नवीन कार्यों की न्याययुक्तता एवं अनिवार्यता अनुपेद्दय थी किन्तु फिर मी मानना पड़ेगा कि संधियों, पर इनके प्रमान का अनुमान उस समय नहीं लगाया गया जिसके परिगाम-स्वरूप राज्यों के साथ सम्बन्धों पर प्रमाव डालने वाली कुछ रीतियां एक ऐसी प्रक्रिया से प्रवर्तित हो गई जो आशाय में उपकारी होते हुये भी कुछ सीमा तक निरंकुश अवश्य है।"

िकया कि, क्योंकि सर्वोपिर सत्ता ने बाह्य त्राक्रमण एवं त्रान्तरिक विद्रोह के विरुद्ध राज्यों के सामान्य संरत्त्रण का दायित्व ले रखा है, उसे हस्तत्त्रेप करने का ग्रिधिकार है किन्तु यह ग्रिधिकार कुछ सुनिश्चित मामला तक ही सीमित है। उन्होंने निर्देश किया कि कभी कभी तो, मामले की स्थिति तथा वास्तविकता की ग्रोर ध्यान दिये विना ही, केवल राजप्रतिनिधियों की सत्ता एवं उनके अधिकारों का प्रदर्शन करने के उद्देश्य से ही यह हस्तत्तेप किया गया है । ग्रातः सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न, सर्वोपरिसत्ता द्वारा उसके हस्त-च्रेप करने के स्रधिकारों का परिसीमन करने का तथा उन चेत्रों को सूचम तथा निर्धारित करने का है जहां इस प्रकार का हस्तच्चेप किया जा सकता है। महाराजा ने स्पष्ट किया कि प्रत्येक वायसराय राजनीतिक सचिव तथा यहां तक कि राजात्रों के राजदरवार में नियुक्त राजनीतिक-ऋधिकारियों के साथ ही नीतियां एवं राजनीतिक त्राचार भी वदल जाते हैं। यह सिद्ध फरने के लिये भी उदाहरणों का स्त्रभाव नहीं है कि एक नरेश को घोर श्रपमान सहना पड़ा तथा उसकी प्रतिष्ठा एवं महिमा को गम्भीर ज्ति पहुँचाई गई । इसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण चरित्र पर पड़ा । महाराजा ने कहा कि कमेटी द्वारा जो ग्राभिस्ताव प्रस्तुत किये गये हैं वह भारत सरकार द्वारा घोषित स्त्रभिस्तावों के सीमातीत हो गये हैं। उन्होंने कहा कि जब विभिन्न प्रान्त ग्राधिकतर स्वायत्तता के लिये तथा नये श्राधिकारों के उपहार के लिये दुहाई मचा रहे हैं, राजा लोग भी अपनी मूल आन्तरिक स्वायत्तता के पुनः स्थापन की प्रत्याशा करते हैं।°

नरेन्द्र मण्डल में महाराजा गंगासिंह का मापण ता० २७-२-१६३०,
 नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, फरवरी १६३०, ए० १२३-२६

[&]quot; • • • • • एक श्रिषिकतम् महत्वपूर्ण विषय जो समारवत रूप से उपयुक्त है, वह यह है कि प्रत्येक राजा तथा उससे सम्बन्धित शासन को इस विषय पर श्रिपना श्रिमेवदन प्रस्तुत करने का पूर्णे रूप से श्रवसर दिया जाना चाहिये • • वायसराय या राजनीतिक-सचिव के परिवर्तन के साथ तथा यहां तक कि कुछ श्रवस्थाश्रों में श्रपने राजदरवारों में नियुक्त राजतीतिक—श्रिषकारियों के परिवर्तन के साथ भी बहुधा नीतियों एवं राजनीतिक श्राचारों में परिवर्तन श्रा जाने की सम्भाव्यता है। तथा दुर्भी यवशात् भूतकाल में ऐसी भी घटनायें हुई है जबकि न केवल सम्बन्धित शासक का श्रनादार विया गया है—
इसका उद्देश्य चाहे उपकारी रहा हो या श्रपकारी— परन्तु बहुधा उस शासक

वटलर कमेटी द्वारा किये गये श्रमिस्तावों से महाराजा श्रिषक संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने इस श्रमंतोषजनक निष्मत्ति को विवादास्पद प्रश्नों की श्रत्यिक विपम प्रकृति पर श्रारोपित किया श्रीर इस प्रतिवेदन को इन समस्याश्रों को हल करने की दिशा में पहला कदम समभते हुये श्राशा प्रकट की कि इस मामले पर श्रीर श्रिषक विमर्श करने से राज्य के पर्च में न्याय एवं उचित परिणाम निकल सकते हैं। उनके विचार में प्रतिवेदन में स्वोंपरि सत्ता के सम्बन्ध में कुछ ऐसे नवीन सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया गया था जो श्रांग्ल-शासन के प्रतिज्ञात वचनों एवं विभिन्न साम्राजिक घोषणाश्रों के प्रसंग में श्रसमर्थनीय थे। उनका विश्वास था कि यदि इस समस्या को, विगत पूर्वांदशों से निरपेक्त होकर तथा उचित एवं श्रमुचित के निरूपण के

के साथ धोर अन्याय किया गया तथा उसकी प्रतिष्ठा एवं महिमा को ही क्यों वरन् उसके सम्पूर्ण चरित्र को अप्रतिकार्य क्ति पहुंचाई गई " • • • • • • इसके अतिरिक्त, कमेटी ने वास्तव में एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है. टसने, स्वयं मारत सरकार द्वारा अब तक अध्यर्थित हस्तद्वेप के क्रियाद्वेत्र के दीवांकरण का सुमान रखा है। • • • यह वास्तव में नए सिद्धान्त एवं नवीन श्रध्यर्थनायें हैं। यह धातक सिद्धान्त हैं क्योंकि यह हस्तत्त्वेप को उन परिस्थितियों पर त्राक्षित करते हैं जिन पर हो सकता है कि शासक का कोई वश ही न हो … … अवश्यमेव, इमारे परम्परागत प्रतिष्ठानों को तथा प्रथाओं को श्रज्ञानी सनक एवं महारव द्वारा श्रम्यर्थित परिवर्तनों के सामने अरिदार्त नहीं छोड़ा जा सकता • • • विभिन्न प्रान्त, अधिकतर प्रान्तीय स्वायत्तता के लिये, केन्द्रीय शासन के हस्तद्वोप से अधिकतर मुक्ति के लिये तथा अपने निज के सत्ताधिकार पर अल्पतर आयन्त्रण के लिये, चित्कार कारी दुहाइयां मचाते रहे हैं। वह नवीन अधिकारों का परिदान मांगते हैं। राज्य अपनी उस श्राद्य परिष्ठा के परावर्तन की मांग करते हैं जिस पर वास्तव में उनका स्वामित्व था। यदि आंग्ल-मारतीय विधान मण्डलो तथा प्रान्तीय शासनो की, उनके श्रान्तरिक प्रशासन में केन्द्रीय शासन के हस्त दोप की मात्रा को न्यूनतम करने के ठदेश्य से, अधिकतम स्वायत्तता दी जानी है तो देशी राज्य और मी अधिक न्यायं संगति के साथ, अपनी आद्य आन्तरिक स्वयत्ताता के प्रत्यर्पण की, मांग कर सकते हैं ताकि वें इसका निकटवर्ती या दूरवर्ती मर्विष्य में अनिधिकार हस्तचेपों से संत्राण कर सकें।"

श्राधार पर निर्णीत किया जाता तो हितकारी परिणाम निकल सकते थे। इसी वीच एक परिनियत श्रायोग को नियुक्त किया गया। यह श्रायोग जो 'साइमन श्रायोग' के नाम से विख्यात है, इस तथ्य की जांच करने के लिये भारत श्राया कि भारत में श्रीर श्राधिक संवैधानिक प्रगति करने की कहां तक श्रावश्यकता है। इन सभी क्रमिक उद्घाटनों— विशेष रूप से जैसा कि नेहरू प्रतिवेदन में परिकल्पित किया गया था श्रांगल—भारत हारा श्राखिल भारत के लिये श्राधराज्य प्रतिष्ठा की भांग, वटलर कमेटी के निष्कर्ष तथा साइमन श्रायोग की नियुक्ति के परिणाम स्वरूप राजा लोग स्वभावतः उद्घान हो उठे थे।

लार्ड इविंन का, जो छुट्टी पर इंग्लैन्ड जा रहे थे, विचार था कि वह इस अवसर का लाभ उठा कर, भारत की समस्याओं पर और अधिक विस्तृत रूप से विचार करने की आवश्यकता को साम्राजिक शासन के हृद्यस्त करेंगे। राजाओं ने अनुभव किया कि उनके लिये भी वायसराय से मिलकर अपनी मांगों को उन्हें पूर्ण रूप से समभा देने का यह उपयुक्त अवसर है। अतः नरेन्द्र मण्डल के चांसलर ने वम्बई में प्रतिनिधि राजाओं की एक सभा बुलाई। महाराजा गंगासिंह ने उस सभा की अध्यत्तता की। ७ जून १६२६ को यह सभा आरम्भ हुई तथा इसमें, वटलर कमेटी के अभिस्तावों पर राजाओं तथा राज्य के विचारों को स्पष्टार्थ ढंग से सूत्रबद्ध कर दिया गया ताकि भारत सरकार को राजाओं के अभिप्राय अभान्त रूप से ज्ञात हो जायें।

नरेन्द्र मण्डल में भाषणों का लहना वदल चुका था। इससे न केवल भारत सरकार को ऋषितुः श्रांग्ल-भारत की जनता को भी भारी विस्मय हुश्रा। वटलर कमेटी की योजनाश्रों के विरोध का वल स्पष्ट था। नरेशों के स्थान को सुरिच्चत करने की तथा एक सुनिश्चित विचार पद्धति श्रापनाने की श्रावश्यकता थी।

सर जान साइमन ने ईंग्लैन्ड के प्रधानमन्त्री को संकेत किया कि भारत के शासन के उस अन्तिम रूप के बारे में, जिसमें राज्यों को भी सम्मिलित किया जाना है, केवल राजाओं की सहमित से ही कोई संकल्प करना सम्भव है। अक्टूबर १६२६ में जब लार्ड इर्विन वापस भारत लीटे

नरेन्द्र मण्डल, दिल्ली में महाराजा गंगासिंह का भाषण ता० २७-२-१६३०, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, फरवरी, १६३०, पृ० ६२-६३ ।

तो उन्होंने स्चित किया कि महामान्य सम्राट लन्दन में एक गोल मेज सम्मेलन बुलाना चाहते हैं ताकि सभी सम्बन्धित पत्तों के पारस्परिक विचार विमर्श द्वारा भारत की समस्याओं के समाधान को दूं दने का प्रयास किया जा सके। महाराजा ने इस प्रस्ताव का सोत्साह स्वागत किया और कहा कि राजा लोग अपने ग्रांगल-भारत निवासी भ्रातृगण के साथ अपने बन्धनों को भलीभांति समभते हैं तथा हम सबको उनकी संवैधानिक प्रगति ग्राति- प्रिय है। महाराजा ने उन्हें ग्राश्वासन दिया कि राजा लोग भारत को दो विसंवादी दुकड़ों में विभक्त करना कदापि नहीं चाहते हैं। उन्होंने उनकी महत्वाकां ज्ञां में प्रति राजाओं के पूर्ण समर्थन एवं स्वभाव का पुनर्वचन दिया। व

गोल मेज सम्मेलन को नवम्बर १९३० में सम्मिलित होने के

".... राजा लोग इस तथ्य को मलीमांति सममते है कि वह ऋपने आंग्ल मारत निवासी बन्धुओं के साथ रक्त, जाति एवं धर्म के बन्धनों से वंधे हुये हैं अतः वह आंग्ल-भारत द्वारा अधिराज्य प्रतिष्ठा की सम्प्राप्ति में रोड़े अटकाने की अथवा उसकी संवैधानिक उन्नति में बाघक वनने की किंचित् मात्र भी इच्छा नहीं रखते हैं। राजालोग इस बात की इच्छा तो क्या कल्पना भी नहीं कर सकते कि देश की भ्रात धांतक वैमनस्य से एक दूसरे के साथ निरन्तर लड़ते रहने वाले दो विषम दुकड़ों में विभाजित कर दिया जाय तथा वह भी देश की एकता के लिये उतनी ही अनन्तरिकता के साथ आशा करते हैं जितनी कि उसके मित्र आंग्ल-मारत के राजनीतिक नेता • • • • • • • • • श्रृतीत में भी उन्होंने श्रुपने श्रांग्ल-मारत निवासी स्वदेश वासियों की न्याय संगत महत्वाकांद्वाओं के साथ अपनी सहात् भूति को पुनः पुनः अभिन्यक किया है । यही नहीं, गत जून मास में वर्म्बई सम्मेलन में उन्होंने, आंग्ल-साम्राज्य के ऋमिन्न आंग के रूप में ऋषि-राज्य प्रतिष्ठा प्राप्त करने के ब्रांग्ल-भारत के लच्च का भी हार्दिक स्वागत किया है " इसके अभि उन्होंने कहा कि "इस प्रकार के सम्मेलन (गोल मेज सम्मेलन) में राजाओं का समर्थन एवं सहयोग एक अस्यन्त यथार्थ एवं व्यावहारिक ढंग से प्राप्त हो सकेगा । "

१. 'गजट त्राफ् इन्डिया एक्सट्रा त्रार्डीनरी' ता० ३१ त्रक्टूबर, १८२६ ।

२. ता॰ २-११-१६२६ को 'एसोसिएटेड प्रेस आफ इन्डिया' के साथ महाराजा का समालाप —

लिये इंग्लैन्ड बुलाया गया तथा १२ नवम्बर १६३० को 'हाउस स्राफ् लार्डस्' में महामान्य सम्राट द्वारा उसका उद्घाटन किया गया। स्रपने उद्घाटन भाषण में सम्राट द्वारा इस सम्मेलन के उद्देश्यों की संतिष्त स्रावृत्ति की गई जैसे भारत की भावी शासन पद्धति पर विचार-विमर्श करना तथा उनके (सम्राट के) संसद के मार्गदर्शन के लिये उन स्राधारों के बारे में पारस्परिक मतैक्य को हूं द निकालना, जिन पर इस शासन पद्धति को स्थापित किया जाना है। सम्मेलन में, स्रांग्ल प्रतिनिधि, स्रांग्ल भारतीय प्रतिनिधि तथा भारतीय राज्यों के प्रतिनिधि, ये तीन प्रत्यर्थी दल थे। भारतीय राज्यों के प्रतिनिधि मण्डल में स्रावयर, बड़ोदा, भोपाल, बीकानर, घोलपुर, कश्मीर, नावानगर, पर्टियाला, रीवां तथा सांगली के शासक तथा सर प्रभाशंकर पहनी, सर मनुभाई मेहता, सरदार साहिबजादा सुल्तान स्राहमद खां, नवाब सर मोहम्मद स्रक्वर हैदरी, सर मिर्जा एम. इस्माइल तथा कर्नल के. एन. हक्सर, सिमिलित थे। सम्मेलन की पश्चाद्वर्ती समार्ये सेन्ट जेम्स पैलेस में हुईं।

श्रभाग्य वश सर लेस्ली स्काट के परिकल्प³ के श्रसत्य निर्देश के परिणाम स्वरूप इस सम्मेलन से सम्बन्धित श्रांग्ल-भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की यह धारणा वन गई कि भारतीय राज्यों के प्रतिनिधि श्रांग्ल भारत की श्रध्यर्थनाश्रों का विरोध करेंगे तथा श्रांग्ल-भारत को स्वराज्य एवं श्रिधराज्य प्रतिष्ठा से वंचित रखने में श्रांग्ल-शासन का साथ देंगे। परिस्थित श्राशंका एवं श्रिवश्वास से भरी हुई थी। श्रांग्ल भारतीय प्रतिनिधि भारतीय राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा श्रपनाये जाने वाले रख के प्रति सशंक थे। भारतीय राज्यों के प्रतिनिधियों के लिये एक किंकर्तव्यविमूद वना देने वाली स्थित उत्पन्न हो गई थी। यदि श्रांग्ल-भारत की महत्वाकां ज्ञां के प्रति वह किसी प्रकार के वाधक सिद्ध होते तो श्रपनी

भारतीय गोल मेज सम्मेलन का उद्वाटन करते समय सम्राट का मापण ता०
 १२ नवम्बर १६३० 'प्रोसीडिन्गस् स्त्राफ प्लेनरी सेशन स्त्राफ द्राउपड टेबल कान्फ्रोस, १६३०-३१, पृ. ११।

२. वह वाद में वीकानेर के प्रधानमंत्री वन गये थे।

२. राज्यों के सिन्ध सम्बन्ध सर्वोपिर राज्य-शिक्त के साथ होने के कारण, उन्हें, राज्यों की सहमित बिना किसी ऐसी श्रांग्ल भारतीय सत्ता को नहीं सौपा जा सकता था जिस पर सम्राट का पूर्ण रूप से नियंत्रण न हो।

मातृभ्मि के प्रति निष्ठावान नहीं होने का श्रारोप सम्भवतः उन पर लग सकता था। दूसरी श्रोर यदि श्रांग्ल-भारत के हक तकाजों के साथ वे श्रपने श्रापको पंक्तिवद्ध करते तो उनको श्रपने स्वयं के उस विशिष्ट स्थान को, श्रापदग्रस्त करने का खतरा मोल लेना पड़ता, जिसकी रक्षा सम्राट पर निर्भर करती थी। श्रतः राज्यों के विशिष्ट स्थान की रक्षा करते हुये श्रांग्ल-भारत की यथार्थ मांगों का भी समर्थन करना किसी भी प्रकार से सहज कार्य नहीं था। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये भी महाराजा गंगासिंह ही भवितव्य थे। श्रतः इंग्लैन्ड में महाराजा के निवास स्थान, कार्ल्यन होटल, में पूर्णिधिवेशन के श्रारम्भ होने से पूर्व एक श्रसाधारण हलचल रहा करती थी। महाराजा ने सभी मतों के श्रांग्ल-भारतीय नेतांश्रो को श्रामंत्रित किया तथा इस समस्या पर मतेक्य प्राप्त करने के उद्देश्य से उनके साथ विस्तत विचार-विमर्श किया।

ता० १७ नवम्बर १६३० को सम्मेलन के पूर्णाधिवशन में सर तेज वहादुर समू ने भारत की छोर से वाद श्रारम्भ किया तथा भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने के पन्न में अत्यन्त शिक्षशाली तक प्रस्तुत किये, "विटिश राष्ट्रमण्डल के एक अभिन्न छंग के रूप में हमारी निज की सीमांत रेखाओं के भीतर हमें स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये।" उन्होंने राजाओं के प्रति कहा कि राजा लोग पहले देशभक हैं और बाद में राजा और उनसे अनुरोध किया कि वे एक ऐसे संयुक्त भारत की रचना करने के लिये प्रस्तुत हो जायें जिसका प्रत्येक भाग आतम शासित हो, जो अपनी सीमाओं के भीतर निरमेच स्वतन्त्रता का उपभोग करता हो तथा जो शेष भाग के साथ यथोचित सम्बन्धों से विनियमित हो। द इस व्यवस्था में नरेशों के सिम्मलन का उन्होंने तीन कारणों से स्वागत किया, प्रथमतः इसलिये कि उनको सम्मिलित करने से राज्य संघटन में एक स्थिरता उत्पन्न हो जायगी, दितीयतः इसलिये कि इससे एकीकरण की प्रक्रिया तुरन्त आरम्भ हो जायगी और अन्ततः इसलिये कि प्रतिरन्ता से सम्बन्ध रखने वाले विषयों में उनका अनुभव अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

गोल मेज सम्मेलन, लन्दन के पूर्णाधिवेशन में सर तेज वहांदुर सप्रू का भाषण ता० १६ नवम्बर, १६३०—' प्रोसीडिन्गस् आफ द् राउण्ड टेबल कान्फ्रोस १६३०—३१, पृ. २३ ।

२. वही, पृ. २४।

३. वही, पृ. २५।

ठीक इसके बाद भाषण देते हुये महाराजा ने श्रांग्ल राज्य निशारदों से अनुरोध किया कि वे इस सुअवसर पर अपनी राजनीतिज्ञोचित च्नमता का परिचय दें तथा किन्हीं भी कठिनाइयों के कारण धैर्य न क्योंकि कुछ भी हो यह कठिनाइयां ग्राखिरकार दुरत्य नहीं है। उन्होंने कहा कि "इस कार्य की अपिरमेयता ही इस कार्य को उत्तम रूप से किये जाने के योग्य बना देती है।" उन्होंने निर्देश किया कि भारत द्वारा श्रन्ततोगत्वा ग्रिधराच्य प्रतिष्टा की उपलिष्ध, सन् १६१७ की घोषणा में श्रन्तर्निहित है तथा श्रनित प्राचीन काल में भी इसका पुनर्वचन दिया गया है। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक कहा कि ऐसी परिस्थिति में किसी भी प्रकार की ग्रन्यमनस्क कार्यवाहियों से तथा किसी भी प्रकार के त्रानाड़ी एवं ग्रापरिष्कृत ढंग से संविधान का जीर्ग संस्कार करने से पार नहीं पड़ेगा । इसके साथ साथ उन्होंने सम्राट के प्रति राजाओं की निष्ठा तथा श्रपने संधि श्रधिकारों पर राजात्रों द्वारा ग्रहण की गई अवस्था एवं अन्य सभी ऐसे विषयों पर जोर दिया जिनका नरेश प्रतिनिधित्व करते थे । उन्होंने निश्चय पूर्वक कहा कि राजा लोग भारतीय हैं तथा वे लोग ऋपने देश की उन्नति के पच में हैं श्रीर समस्त भारत की श्रिधिकतम समृद्धि एवं संतुष्टि में भाग लेने की तथा उसमें त्रपना योग दान करने की इच्छा रखते हैं। श्रतः उन्होंने

"हम राजा लोग मारतीय हैं— उसके प्राचीन इतिहास से हमारा गहरा सम्बन्ध है, हम उसकी मिट्टी के वन हुये हैं। उस प्रत्येक वस्तु से जिससे भारत को गौरव व समृद्धि प्राप्त हो हमें अत्याधिक लगन है। वह प्रत्येक वस्तु जो हमारी समृद्धता को धक्का पहुंचाती है अथवा हमारी संस्थाओं की स्थिरता को कमजोर करती है, हमारी तरकी में वाधक हैं और हमारे गौरव को कम करती है।"
"हम मारतीय राज्यों के निवासी, समस्त भारत की अधिकतम समृद्धि एवं संतुष्टि में भाग लेने तथा उसमें अपना योगदान करने की इच्छा रखते हैं। मुक्के विश्वास है कि मारतीय राज्यों तथा आंग्ल—मारत से संरचित एक संवीय प्रणालो के शासन द्वारा हम यह योगदान सवाँतम हंग से कर सकते हैं।"

शेल मेज सम्मेलन के पूर्णाधिवेशन में महाराजा गंगासिंह का मापरण ता०
 २७--११-१६३०-- गोल मेज सम्मेलन की कार्रवाहियां, १६३०-३१,
 प्. २८--३०।

२. वही, पू ३१-३२, —

राज्यों के हित में न्याय संगत सुरज्ञ्णों सहित एक सन्धान राज्य स्थापित करने की योजना का स्वागत किया तथा नरेशों की महानता के साथ भारत की महानता में ग्रपनी ध्रुव श्रद्धा की ग्रिमिपुष्टि की। उन्होंने निर्देश किया कि इस कारण से हमें सर्व प्रथम इस विभिन्नता को स्वीकार करना चाहिये। हमें ग्रसम्भव एकरूपता में नहीं वरन् सम्मिलित विभिन्नता में एकता को हूं दना चाहिये। उन्होंने सम्मेलन को विश्वास दिलाया कि राजा लोग ग्रपनी मातुभूमि की ग्रधिकतम समृद्धि एवं संतुष्टि में भाग लेने के लिये तथा उसमें ग्रपना योगदान करने के लिये उदात हैं। उन्होंने ग्रपनी इस दृद घारणा को भी व्यक्त किया कि राज्यों तथा त्रांग्ल-भारत से संरचित एक संघीय प्रणाली के शासन द्वारा ऐसा किया जा सकता है यद्यपि दोनों सह-भागियों की परिस्थिति भिन्न है- राज्य पहले से ही प्रभुत्व सम्पन्न एवं श्रातम शासित हैं जबकि आंग्ल-भारत को उसकी सत्ता निचेपण द्वारा प्राप्त है, फिर भी इन दोनों को सम्बद्ध करने के उपाय को खोजना सम्भव है। किन्त उन्होंने चेतावनी दी कि इस अवस्था परिवर्तन के मध्य में एक पर्याप्त अन्तर्वतीं अवधि अनिवार्य रूप से होनी चाहिये तथा इस सहमागिता को वलप्रयोग द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता अतः इसका उद्भव मुक्त संकल्प एवं स्वेच्छा से ऐसी शतों पर होना चाहिये जिनसे राज्यों के समचित श्रिधिकार सुरिचत रह सर्के । इस विषय पर राजाश्रों द्वारा प्रस्तुत की गई युक्ति को विशाद करते हुये उन्होंने निर्देश किया कि राजाओं के सन्धि श्रिधिकारों की विद्यमानता को मीलिक रूप से मान्यता देना श्रत्यावश्यक है तथा इन ग्रिधिकारों का सम्मान किया जाना. चाहिये ग्रीर राजाग्रों की सहमति विना किसी एक पत्तीय कार्यवाही से इनको इस्तान्तरित नहीं किया जाना चाहिये । उन्होने विभिन्न सन्धियों के अन्तर्गत राजाओं के अधिकारों एवं दायित्वों से सम्बन्धित समस्त न्याय योग्य विषयों पर विचार एवं निर्ण्य करने के लिये एक पूर्ण अधिकार प्राप्त सर्वोच्च न्यायालय स्थापित करने की मांग की । इसके अतिरिक्ष उन्होंने साधिकार कहा कि उनके राज्यों के नितान्त त्र्यान्तरिक मामलों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों में, उन राज्यों की त्रानुपरियति में उनके पत्त के विरुद्ध मामला नहीं चलाया जाना चाहिये।

गोल मेज सम्मेलन के पूर्णिधिवेशन में महाराजा गंगासिंह का भाषण ता० १७-११-१६३०-गोल मेज सम्मेलन के पूर्णिधिवेशन की कार्यवाहियां, १६३०-३१, पृ. ३१-३२ |

इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये उन्होंने, राजनीतिक सचिव के साथ कार्य करने के लिये तथा वायसराय को परामर्श देने के लिये भारतीय राज्यों की एक परिषद बनाने की सिफारिश की । श्रपने भाषण के समाप्त करने के पूर्व उन्होंने सम्राट के प्रति राजाश्रों की निष्ठा तथा मातृभूम के प्रति उनकी मिक्त पर एक बार फिर जोर दिया ।

नरेशों द्वारा इस प्रकार के मत को ग्रहण किये जाने की प्रत्याशा किसी को नहीं थी ख्रतः इससे सबको विस्मय हुआ। भारत को हर्ष हुआ तथा इंग्लैएड के प्रतिक्रिया वादियों को आश्चर्य । आग्ल-प्रधान मन्त्री ने भी कहा कि संघ के पत्त में राजाओं की घोषणा ने न केवल हमारे हृदयों को हिंपत किया है बरन् हमारे कर्तन्यों को भी सुलम बना दिया है। तथा भारत सरकार ने न्यक्त किया कि इस प्रकार की स्थिति का सामना करने के लिये उनके सचिवालय के पास कोई प्रस्तुत योजना नहीं है। यहां तक कि महात्मा गांधो ने भी, जब सन् १९३१ में वे गोलमेज सम्मेलन के ख्रिधेवेशन में उपस्थित हुये, कहा कि में अनुभव करता हूँ तथा मुक्ते विदित है कि राजा लोगों को अपनी प्रजा के हित सर्वप्रिय हैं। मैं जानता

गोल मेन सभा के पूर्णाधिवशन की कार्यवाहियां १६३०-३१, पृ० १७३।

श. गोल मेज सम्मेलन के पूर्णाधिवरान में महाराजा गंगासिंह का भाषण,
 ता० १७-११-१६३०, गोल मेज सम्मेलन के पूर्णाधिवरान की कार्यवाहियां,
 १६३०-३१, पृ० ३१-३२।

सर जॉन कर्मिंग की 'पोलिबिकल इन्डिया १८३२-१६३२' में सर रॉबर्ट अर्सिकेन द्वारा प्रदत्त १४ वें अध्याय 'द् पोलिटिक्स आफ द् इन्डिया स्टेटस, द चेम्बर आफ प्रिन्सेज एन्ड द् फीडरल आइडिया' के पृ० २६६ पर वे कहते हैं:---

[&]quot;नरेशों की घोषणा ने परिस्थित को आमूल परिवर्तित कर दिया है " दसने एक साथ ही न केवल हमारी राजनीतिक दूरहिष्ट को असीमित कर दिया है, न केवल हमारे हृदयों को हिर्फत कर दिया है, न केवल हमें हमारी आंखें उठा कर एक विभायी चितिज को दिया है। एक स्थार्थतः संश्वह संघवद मारत के इप्टप्रदेश तक पहुंचाने वाले मार्ग को उठ्घाटित करने मे नरेशों ने अधिकतम् मूल्यवान अंशदान दिया है।"

हूँ कि उनके हितों को सुरित्तत रखने के लिये वह कहरता से दावा करतें हैं ... में उनका शुभ चिन्तक हूँ, में उनके लिये अधिकतम् ऐश्वर्थ की कामना करता हूँ तथा में यह भी वन्दना करता हूँ कि उनका ऐश्वर्थ एवं उनका त्रेम उनकी अपनी प्यारी जनता, उनकी अपनी प्रजा के त्वरण के लिये उपयुक्त हो।"

राजाग्रों के मनोभाव में इस प्रकार के परिवर्तन के कारणों को हूं दने के लिये ग्राधिक दूर जाने की ग्रावश्यकता नहीं हैं । कुछ ज्ञानोदीत नरेशों तथा विशेष रूप से महाराजा गंगासिंह द्वारा ग्रहण की गई विचार-पद्धित विश्वासरूपेण इस परिवर्तन का एक मुख्य कारण थी । उन्होंने सदैव एक ऐसे संयुक्त स्वायत्त भारत का मानसदर्शन किया था जिसमें नरेशों के ग्राधिकारों एवं परमाधिकारों को सुरिक्त रखा गया हो । इस महत्वपूर्ण वक्तव्य ने सम्मेलन के स्वरूप को पूर्णतया बदल दिया। राज्यों के प्रति केन्द्र के उत्तरदायित्वों तथा नरेशों के साथ केन्द्र के सम्बन्धों के प्रश्न को बहाना बना कर ग्रंग्रेज केन्द्र के उत्तरदायित्व पूर्ण शासन स्थापित करने के विषय में टाल-मटोल कर रहे थे किन्तु श्रव उनका यह बहाना श्रसमर्थनीय हो गया। ऐसे दो भारत होने की युक्ति को, जो एक दूसरे से स्वतन्त्ररूप से विकसित हो सकते हों, महाराजा का समर्थन कभी भी प्राप्त नहीं हुन्ना या तथा एक देशमक भारतीय के नाते उन्हें ग्रपनी मातृस्मि की महानता तथा भारत के साथ देशी राज्यों की ग्राविकल एकता में ग्रगाध श्रद्धा थी।

संघीय उत्तरदायित्व को सिद्धान्त रूप में विनिश्चित कर लिये जाने के पश्चात, इसका विवरण निष्पादित करने के लिये, लार्ड चांसलर लार्ड सेन्की की अध्यक्ता में एक कमेटी, जिसे 'फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी' के नाम से जाना जाता है, नियुक्त की गई। इस कमेटी में कार्य करने के लिये भारतीय प्रतिनिधि मण्डल में से जिन सदस्यों को मनोनीत किया गया या उनमें महाराजा गंगासिंह, भोपाल के नवाव, सर अक्रवर हैदरी तथा सर मिर्जा इस्माइल सम्मिलित थे। राज्यों के विचारों को कमेटी के समक्त रखने के कार्य में महाराजा ने प्रमुख भाग लिया तथा उनके कार्यों की कमेटी में तथा उसके वाहर लार्ड सेन्की द्वारा सराहना की गई। उन्होंने इसके लिये

122

१. गांधी, 'द् इन्डियन स्टेटस् प्राव्लम', पृ० ५५-५६।

इसे सेन्की कमेटी भी कहा जाता है।

महाराजा को धन्यवाद देते हुये कहा कि यदि मुक्ते महाराजा की सहायता एवं मन्त्रणा प्राप्त नहीं होती तो फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी के ऋध्यत्त के रूप में मेरा स्वयं का कार्य दूना किन होता। भारत के राज्य-सिचव ने भी सम्मेलन में महाराजा द्वारा किये गये ऋत्युत्तम कार्यों के प्रति ऋपनी प्रशंसा व्यक्त की और कहा कि इस तथ्य को कोई भी व्यक्ति ऋरवीकार नहीं कर सकता कि महाराजा ने सम्मेलन में सर्वाधिक प्रमुख माग लिया और उन्होंने न केवल भारत में एक संघीय प्रणाली का शासन स्थापित करने के पत्त में ऋत्यन्त महत्वशाली निर्णय लिया ऋपित भारत के लिये सन्धान राज्य के पय को एक छादर्श पथ मान कर उस पर चलने के लिये ऋपने ऋन्य नरेश भातृगण को भी प्रोत्साहित किया। व

जनवरी १६३१ में प्रथम गोल मेज सम्मेलन को सितम्बर १६३१ तक के लिये स्थिगत कर दिया गया। प्रतिनिधियों ने भारत प्रत्यागमन किया। इन्डियन नेशनल कांग्रेस जैसी प्रमुख भारतीय राजनीतिक पार्टी द्वारा प्रथम गोल मेज सम्मेलन में सम्मिलत होने से इन्कार कर देने का महाराजा को खेद था। कांग्रेस के अधिकांश विरुठ नेता उस समय कारावास में थे। इनमें से कुछ नेता जैसे महात्मा गाँधी, महाराजा के निजी मित्र ये तथा महाराजा उनका अत्यधिक आदर करते थे। कुछ अन्य भारतीय नेताओं के साथ साथ महाराजा भी इस तथ्य को यथार्थ रूप से महसूस

१. महाराजा गंगासिंह को लार्ड सेन्की का पत्र ता० २२-१-१६३१-- नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, मार्च १६३१, परिशिष्ट 'जे', पृ० ३१-- ''मैं आशा करता हूं कि जब तक यह पत्र आपके पास पहुंचेगा मारत में आपके अपने देशवासी आपका हार्दिक स्वागत कर चुके होंगे । इस स्वागत के आप पूर्ण रूप से अधिकारी हैं।

श्रापन गोल मेज सम्मेलन में जो महत्वपूर्ण माग लिया है उसके लिये कृपया मेरा सद्मावी घन्यवाद स्वीकार करें। प्रारम्भ से श्रन्त तक श्रापने हम सवका श्रत्युत्तम श्रिशणीत्व किया। श्रापके सहयोग एवं परामर्श विना फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी के श्रध्यद्ध के रूप में मेरा स्वयं का कार्य दुगना कठिन होता। इसके लिये मैं श्रापका श्रामारी हूं • • • । " महाराजा गंगासिंह को भारत के राज्य-सिचव डब्जू. वेजबुड वेन का पत्र ता॰ २१-१-१६३२, — नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, मार्च १६३१,

परिशिष्ट 'आई', पु० ४२ ।

करते ये कि जब तक सम्मेलन में कांग्रेस माग नहीं लेगी तब तक उसके विचार-विमशों का कोई लामदायक परिणाम नहीं निकल सकेगा । अतः कांग्रेस को सम्मेलन में सम्मिलित करने के महत्व को सरकार के हृदयस्य करने में उन्होंने ग्रपने कुछ ग्रांग्ल-भारतीय मित्रों के साथ प्रत्येक सम्भव प्रयत्न किये । ग्रान्ततोगत्वा यह प्रयत्न सफल हुये । कांग्रेसी नेताओं को मुक्त कर दिया गया । गांधीजी ऋौर वायसराय के वीच में विचार गोष्ठी हुई ग्रीर श्रन्त में महात्मा गांघी को श्रपना एक मात्र प्रतिनिधि मनोनीत करके कांग्रेस ने सम्मेलन की विचारणात्रों में भाग लेने का निर्ण्य कर लिया । तथापि गांधीजी द्वारा इंग्लैन्ड के लिये प्रस्थान करने तक इस सम्बन्ध में अनेक प्रकार की वाघायें उपस्थित होती रहीं किन्तु महाराजा ने, वायसराय, गांधीजी तथा कांग्रेस में अपने निजी मित्रों व अन्य व्यक्तियों के साथ अनौपचारिक विचार विमशों द्वारां द्वितीय गोल मेज सम्मेलन में कांग्रेस के भाग ग्रहण को सुनिश्चित करने के लिये प्रत्येक कदम पर भरसक प्रयत्न किये । १० जून १९३१ को महात्मा गांघी महाराजा से भेंट करने वस्त्रई में महाराजा के निवास स्थान 'देवी भवन' गये तथा दोनों ने देर तक स्पष्ट हंग से बातचीत की । इसी बातचीत के मध्य में महाराजा ने गांधीजी की इंग्लैन्ड यात्रा के लिये ग्रापनी देखरेख में उचित व्यवस्था करने की इच्छा व्यक्त की श्रीर गांधीजी ने विनोद में महाराजा को वाष्य-पोतों का रसदपूरक कहा । वाद में गांघीजी की इंग्लैंड यात्रा का प्रवन्ध, 'मुलतान' नामक जलयन की पीछे की छत पर गांधीजो की पाकशाला के लिये विशेष सुविधा के साथ, वस्तुतः महाराजा के हाउस-होल्ड विभाग द्वारा ही किया गया । महाराजा ने गांधीजी के साथ अपनी भेंट में कांग्रेस द्वारा गोल मेज सम्मेलन में भाग लेने के महत्व पर तथा ' सम्मेलन में गांधीजी की उपस्थिति की ग्रानिवार्थता पर श्राध क्तम वल दिया। ^२ गांधीजी के साथ इस श्रवसर पर 'वातचीत के विषयों' की एक प्रतिलिपि से ऐसा प्रतीत होता है कि एक दूसरे के पारस्परिक हिता से सम्बन्धित अनेक अन्य विषयों पर भी विचार-विमर्श किया गया था।3 २२ जुलाई १६३१ को महाराजा ने गोल मेज सम्मेलन की फेडरल स्ट्रकचर

२. वीकानेर के महाराजा के निजी सिचित्र के कार्यांजय की फाइल सं० ६१४।२८, महाराजा गंगासिंह का पत्र ता० ४-७-१६३१।

२. वही, ता० ६-७-१६३१ ।

३. वही, पू० ११-१५ ।

कमेटी के नये सदस्यों में महात्मा गांघी के नाम को देखकर इस पर हर्ष प्रकट करते हुये गांधीजों को पत्र लिखा। महात्मा गांधी तथा महाराजा की मुलाकात का यह एकमात्र अवसर नहीं था। इससे पूर्व भी दोनों अनेक बार मिल चुके थे। इससे प्रकट होता है कि महाराजा गांधीजी में कितनी श्रद्धा रखते थे तथा यह भी संदेहातील रूप से सिद्ध हो जाता है कि वे देश के लिये स्वतंत्रता प्राप्त करने के महान कार्य में अपना सहयोग देने के लिये कितने अधिक आतुर थे।

द्वितीय गोल मेज सम्मेलन ने सितम्बर १६३१ में अपना कार्य आरम्म किया। संविधान बनाने का मुख्य कार्य फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी के पास या जिसमें अब महात्मा गांधी एवं पं मदनमोहन मालवीय भी सम्मिलित थे। इसी बीच नरेशों में परस्पर कुछ मतमेद उत्पन्न हो गये अतः महाराजा ने यद्यपि द्वितीय गोल मेज सम्मेलन में भाग लिया तथा इसके विस्तृत विचार-विमशों में उनका योगदान अत्यन्त मृल्यवान सिद्ध हुआ फिर भी उन्होंने इसमें प्रथम गोल मेज सम्मेलन जितनी दिलचस्पी नहीं ली। किन्तु महाराजा निराश होने वाले व्यक्ति नहीं थे और इंग्लैएड से वापस भारत लौटते ही उन्होंने अपने नरेश आतृगणों में एकता लाने के लिये अपनी समस्त शिक्त लगादी। सन् १६३२ में नरेशों तथा मंत्रियों के दिल्ली सम्मेलन में वे पटियाला के महाराजा भूपेन्द्रसिंह के साथ इस अभीष्ट एकता को प्राप्त करने के कार्य में सफल हुथे। इस सम्मेलन में उन अनिवार्य सुरन्त्यों को निर्धारित कर दिशा जिनके अन्तर्गत नरेश लोग संघ में मिलने के लिये तथ्यार थे।

इस मुख्य कार्य के सम्पन्न ही जाने पर तथा इस विषय में मुख्य सिद्धान्तों को ग्रहण कर लिये जाने के पश्चात नरेशों के लिये तृतीय गोल मेज सम्मेलन में भाग लेना आवश्यक हो गया। आतः नरेशों के स्यान पर राज्यो के वरिष्ठ मंत्रो संयुक्त प्रवार समिति में भाग लेने के लिये इंग्लैन्ड गये जिनमें बीकानेर के प्रधान मंत्री सर मनुभाई मेहता भी सम्मिलित थे।

१. बीकानर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ६१४।२८, महाराजा गंगासिंह जी का पत्र ता० २२-७-१६३१।

नरेन्द्र मण्डल द्वारा पारित प्रस्ताव (कार्य-सूची सं० १०) ता० १-४-१६३२, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, मार्च-अप्रेल, १६३२, पृ० १०१, ४७-७४।

सन्धिवार्ता की अविध में महाराजा ने छोटे राज्यों के लिये पर्यात प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने के कार्य की ओर विशेष ध्यान दिया तथा यह संतोपप्रद धात है कि संधीय विधान मण्डल में सदस्यता के विनिधान का अन्तिम निर्ण्य लेते समय महाराजा की इस मांग को यथा सम्भव पूर्ण किया गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि संघ बनाने की योजना का ऋंकुरण बहुत पहले सन् १९१४ में ही हो गया था जब उस दूरदर्शी वायसराय लार्ड हार्डिगं ने इस प्रकार के संयुक्तिकरण की साध्यता को अभिज्ञात कर लिया या विशेष रूप से एक ऐसे तन्त्र को विकसित करने की योजना जिसके द्वारा दोनों भारतों (त्रांग्ल-भारत तथा राजसी-भारत) के बीच में एक सतत एवं सहज सहकारिता स्थापित हो सके जो कि स्वराज्य प्राप्त करने के लिये नितान्त स्त्रनिवार्य थी । जनवरी १६१४ में महाराजा गंगार्सिंह ने वायसराय को एक मसविदा प्रस्तुत किया था जिसमें उन्होने सुभाव रखा था कि समस्त देशी राज्यों का प्रतिनिधान करने वाले एक एक संघीय मएडल का क्रमशः विकास किया जा सकता है तथा यदि स्त्रावश्यक हो तो इस मण्डल में ग्रांग्ल-भारतीय प्रांतों का भी उनके तत्सम्बधी राज्यपालों तथा उप-राज्य-पालों द्वारा प्रतिनिधान किया जा सकता है। इस प्रकार आंग्ल-भारत तथा भारतीय--भारत को एक प्रकार से संघवद्ध करने की योजना विचार विषय बनी श्रौर महाराजा के इस वक्तव्य की, वायसराय तथा भारतीय समाचार पत्रों दोनों द्वारा उच्च स्वर से प्रशंसा की गई । लार्ड हार्डिंगं ने कहा कि महाराजा द्वारा व्यक्त किये गये विचारों के साथ, उन्हे पूर्ण सहानुभूति है। उसमाचार पत्रों ने विवेचना की कि कुछ लोगों में देशी राज्यों की सर्वया उपेचा करने की प्रवृति है तथा वे लोग इस तथ्य को भूल जाते हैं कि देशी राज्यों के शासक ग्रापने हितों को सम्पूर्ण देश के हितों से भिन्न नहीं समभते हैं। समाचार पत्रों ने इसके आगे लिखा कि शासकों द्वारा

१ भारत सरकार में देशी राज्यों के प्रतिनिधान तथा नरेशों के परिषद का निर्माण करने के विषयों पर महाराजा गंगासिंह का मसविदा ता० ५-१-१६१४।

२. 'चीफस् कॉलेज कान्फ्र न्स', दिल्ली, में महाराजा गंगासिंह के माषण के प्रत्युत्तार में लार्ड हार्डिंग का भाषण ता॰ ३--३-१६१४। "में आपको विश्वास दिलाता हूं कि वीकानेर के महाराजा द्वारा उनके भाषण में व्यक्त किये गये भावों को मेरी सम्पूर्ण सहानुमूति प्राप्त हैं।"

उनके शासनद्वेत्रों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों में, उनके तथा सरकार के बीच में श्रौर श्रिधिक समीपस्य विचार विनिमय की मांग पूर्ण्रूप से न्याच्य है तथा इसके ग्रातिरिक्त इस प्रकार के विचार विनिमय सम्भवतः साम्राजिक शासन के लिये भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। ता ०१६ मार्च १९१४ के 'टाइम्स आफ इन्डिया' ने सम्मेलन का विवरण देते हुये लिखा कि महाराजा द्वारा की गई अधिघोषणा, जिसका बाद में वायसराय ने समर्थन किया, ध्यान देने योग्य है। इस पत्र ने ग्रागे लिखा कि नरेशाँ की एक परिषद बनाने की योजना तो लार्ड लिटन के समय में हो बन गई थी किन्त उसे श्रव्यवहार्य मानकर ग्रव तक उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया था। उस समय उस योजना पर जो श्रापत्ति उठाई गई थी उसकी प्रामाणिकता को समस्तना कठिन नहीं है। किन्तु अब जो प्रस्ताव महाराजा द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं वे उचित एवं नम्र हैं क्योंकि उनमें भारत के शासन में किसी भी प्रकार का सहभाग प्राप्त करने की अभिलाषा नहीं की गई है वरन नरेशों, उनके राज्यों तथा उनको प्रजा से सम्बन्ध रखने वाले विषयों पर केवल उनसे परामर्श करने की मांग की गई है। महाराजा ने कहा कि कोई भी व्यक्ति जो इस स्थिति को यथार्थ रूप से समस्ता है मेरे इन शब्दों की श्रापरिहार्यता पर सन्देह नहीं कर सकता।

प्रथम महायुद्ध के उद्भेद ने तथा देश एवं साम्राज्य के प्रति नरेशों की ग्रटल ग्रासिक एवं घ्रुवक परायणता ने ग्रांगल-शासन की चिन्तन शैली को यथेष्ट मात्रा में प्रभावित किया ग्रौर शासन के विषयों में नरेशों को सम्मिलित करने की नवीन नीति का ग्रंगीकरण ग्रौर ग्रधिक सुनिश्चित हो गया। युद्ध समाप्ति के शीध बाद जब सन् १६१७ में लाई सान्टेग्यू भारत की तत्कालीन परिस्थितियों का ग्रनुशीलन करके उनका विवरण लिखने भारत ग्राये तो उन्होंने ग्रपने प्रतिवेदन में प्रस्तावित सुकावों में नरेशो तथा भारत सरकार के बीच में दोनों के सामान्य हितों के विषयों पर समन्त्रण करने के किसी साधन का प्रावधान रखने का ग्रामित्ताव किया। सन् १६१७ में वीकानेर में ग्रायोजित नरेशो एवं मन्त्रियों के सम्मेलन में भी इस योजना को विचार विषय बनाया गया।

तथापि आंग्ल-भारत में एक ऐसा समुदाय या जो नरेशों से

१. 'पायोनियर' ता० ११-३-१६१४।

२. महाराज कुमार रघुवीरसिंह, 'इन्डियन स्टेट्स एरख ट् न्यू रिजीम', पृ० ७०-७१ ।

कुपित या तथा उन लोगों की घारणा थी कि स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये ग्रायश्यक सुधारों के मार्ग में देशी राज्य तथा उनके नरेश वाधक हैं । भारत सरकार के गृहमन्त्री सर मेल्काम हेली जैसे कुछ प्रमुख ग्रांग्ल ग्राधिकारियों का भी यही मत था। देशी राज्यों में ग्रांग्ल-भारत से विचारों का ग्रन्तःसरण, ग्राधिकांश राज्यों में उस समय विशेष रूप से प्रवर्तमान परिस्थितियों में, संक्रामक सिद्ध हो रहा था । १६ त्रागस्त १६२६ को बीकानेर में मन्त्रियों के सम्मेलन का उद्घाटन करते समय महाराजा गंगासिंह ने इस स्थिति का ग्रत्यन्त जीवन्त वर्णन किया । उन्होंने कहा कि इस तथ्य के बारे में दो राय नहीं हो सकती कि नरेशों का भविष्य विशद रूप से स्वयं नरेशों पर तथा उस सीमा पर निर्भर करता है जिस सीमा तक वे अपने राज्यों तथा अपनी प्रजा के प्रति अपने कर्तव्यों को समभते हैं तथा इन कर्तव्यों का पालन करते हैं। उन्होंने नरेशों को चेतावनी दी कि युग बदल रहा है तथा उन लोगों को इस तथ्य के प्रति विस्मरणशील नहीं रहना चाहिये कि कुछ विशिष्ट विचारधारास्रों के समर्थक समुदायों की प्रवृत्ति उनके पत्त में नहीं हैं स्त्रीर उन्हें स्त्रव स्त्रपने स्त्रापको नवीन परिस्थितियों के अनुयक करना होगा।

परिस्थितियां लगभग गितहीन ही रहीं तथा इस आदर्श का आंगीकरण केवल विचार विमर्श का विषय ही बना रहा परन्तु जब आंग्ल—मारत में और अधिक सुधार करने के प्रश्न को विचाराधीन किया गया तथा जब विभिन्न समितियों एवं सम्मेलनों ने भावी शासन के रूप पर विमर्श करना आरम्भ किया तो इस की ओर अधिक ध्यान दिया जानेलगा।

सर्वदलीय सम्मेलन की कार्यवाइयों ने, जिनमें नरेशों के प्रति
"निर्मानत रूप से विद्रेष की भावना" की प्रकट किया गया था तथा जिनमें
"एक अतिन्याप्त ढंग से सभी प्रकार के अपशब्दों एवं कट्टिक्तयों का विना
किसी मर्यादा के प्रयोग किया गया था", नरेशों की आंखें खोलदीं।

महाराज कुमार रघुवीरसिंह, 'इन्डियन स्टेटस पन्ड द् न्यू रीजीम',
 ९० ११५ ।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० २२७८।२६,
 माग तृतीय सी., महाराजा गगासिंह का भाषण ता० १६-८-१६२६।

वीकानेर के महाराजा के निजी सिचिव के कार्यांलय की फाइल सं० २२७८।२६, माग तृतीय—सी., सर मनुमाई मेहता के इंग्लैन्ड विदा होने के अवसर पर उनके सम्मान में महाराजा गंगासिंह का माषण ता० ५—६—२६२८।

इसके श्रांतिरिक्त महाराजा गंगासिंह, संघीय केन्द्रों द्वारा इकाइयों के श्रानन्य कार्यचेत्रों में श्रानिधकार हस्तचेष करने की दुर्नोमा प्रवृत्ति से पूर्णतया परिचित ये श्रातः उन्होंने दूरदर्शिता से काम लिया श्रीर ठीक श्रारम्भ से ही इस बात पर बल दिया कि प्रान्तों के साथ किसी भी संघ में राज्यों को सम्मिलित करने से पूर्व शर्त के रूप में कुछ श्रावश्यक सुरच्लाों को उपविचित किया जाना चाहिये। ये शर्ते, जैसा कि श्रप्रेल १६३२ में नरेन्द्र मगडल द्वारा पारित एक प्रस्ताव में घोषित किया गया, इस प्रकार हैं— कि श्रावश्यक सुरच्लाों को संविधान में समाविष्ट किया जाना चाहिये, कि राज्यों के सिन्धयों, सनदों तथा प्रतिज्ञाश्रों से उद्भूत होने वाले श्रिषकार श्रच्त रहने चाहिये, कि राज्यों के प्रति सर्वोपर राज्य शक्त के दायित्व श्रपरवर्तित रहने चाहिये तथा राज्यों के प्रति सर्वोपर राज्य शक्त के दायित्व श्रपरवर्तित रहने चाहिये।

सितम्बर १६३२ में गोलमेज सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन में इन मांगों को सुसम्पादित करने के लिये तथा संघ की नवीन योजना में इनको अतिभृत कराने के लिये राज्यों द्वारा सर मनुभाई मेहता तथा सर लियाकतह्यात खां को प्रतिनिधि नियुक्त किया गया। सर मनुभाई ने महाराजा गंगासिंह तथा अन्य नरेशों की ओर से प्रतिनिधित्व किया। वहां से वापस लौट कर उन्होंने जो अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया उसमें उन्होंने इन शर्तों का यथा निम्नलिखित

नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, मार्च-श्रप्रैल, १६३२, ए. १०१-कार्यसूची
 सं. १०-गोलमेज सम्मेलन के लिये देशी राज्यों के प्रतिनिधि मण्डल के कार्य सम्बन्ध में प्रस्ताव —

[&]quot;यह मण्डल घोषणां करता है कि भारतीय राज्य यह मानकर अखिल भारतीय संघ में सम्मिलित होंगे कि सर्वोपिर राज्य-शिक्त उनके लिये निम्निलित प्रति-भूतियों को उपलब्ध करने के उत्तरदायित्व की स्वीकार कर लेगी:—

⁽क) कि त्रावश्यक सुरत्ताणों को संविधान में सिन्नहित किया जाएगा, (स) कि संविधान के अन्तर्गत, सिन्धयों, सनदों या प्रतिज्ञाओं से उद्भूत होने वाले उनके अधिकार अनुल्लंघनीय एवं अनुल्लं चित रहेंगे। (ग) कि उनके राज्य की प्रसुसत्ता एवं आन्तरिक स्वतन्त्रता अनुएण रहेगी तथा उसका पूर्णतया आदर किया जायगा और राज्यों के प्रति सवांपित राज्य-शिक के दायित्व अपित्विर्तित रहेंगे......

संचित विवरण दिया--

- (१) भारतीय राज्यों की ग्राखराडता, उनकी ग्रान्तरिक प्रमुसत्ता तथा उनकी पूर्ण स्वायत्तता के प्रतिपालन के लिये ग्रानिवार्थ समक्ते जाने वाले सभी ग्रावश्यक सुरक्त्णों को नवीन संविधान में प्रतिभूत किया जाय।
- (२) विधान परिषद में राज्यों के प्रतिनिधित्व के बारे में पचास प्रतिशत के ऋधिप्रतिनिधित्व के बारे में उनकी मांगों को पूरा किया जाय।
- (३) नरेन्द्र मण्डल के सदस्य प्रत्येक राज्य को, अवशिष्ट राज्यों के लिये सामृहिक प्रतिनिधित्व की थोड़ी गुंजाइश छोड़ते हुये, संघीय विधान मण्डल में वैयितिक रूप से एक मत का स्वयमेव अधिकार प्राप्त होना चाहिये।
- (४) राज्यों के सन्धि अधिकारों को श्रक्त रखा जाय तथा उनकी स्वयं की अविमुख अनुमित विना उनमें किसी भी प्रकार का पन्नान्तर या प्रकारान्तर नहीं किया जाये तथा राज्यों के इस प्रकार के सन्धि अधिकारों की रन्ना करने के सवोंपरि राज्य-शिक्त के अधिकार को सुरन्नित रखा जाय।
- (५) संघीय विषयों के कार्य चेत्र को इस प्रकार से सीमावद्ध कर दिया जाय कि भविष्य में किसी भी संघीय विधान मगडल को राज्यों की अविमुख सम्मित के विना इस कार्यचेत्र को, संविधान में संशोधन करके, बढाने का कोई अधिकार न रहे, और
- (६) भविष्य में किसी भी समय संघ की सदस्यता से पृथक होंने के राज्यों के अधिकार को मान्यता दी जाय।

उन्होंने कहा कि इनमें से, पहले, चौथे तथा पांचवें वाक्यांशों की मांगों के वारे में विश्वस्त रूप से समभा जा सकता है कि वह सम्पन्न हो गई हैं किन्तु शेष तीन मांगों के विषय में कोई प्रगति नहीं की जा सकी है। तथापि उन्होंने दिल्ली समभौते के मंत्रियों के श्रिभिस्तावों का समर्थन

१. नरेन्द्र मण्डल द्वारा सूत्र बद्ध की गई शतों को तृतीय गोल मेज सम्मेलन में सुसम्पादित की गई संघ की नवीन योजना में प्रतिमूत करने के लिये लन्दन मेंजे गये मंत्रियों की गोपनीय रिपोर्ट ता० ६-३-१६३३, पृ० २-३।

किया । इन मंत्रियों ने सर्वसम्मित से ग्राभिस्ताव किया था कि श्राखिल भारत संघ में सम्मिलित होकर देशी राज्य बुद्धिमानी का परिचय देंगे।

इन प्रस्तावित संवेधानिक सुधारों से सम्बन्धित श्वेत पत्र को जो एक वर्ष से भी अधिक समय की विचारणाओं के पश्चात् निर्गत हुआ था, मार्च १६३३ में प्रकाशित कर दिया गया । नरेशों ने अनुभव किया कि श्वेतपत्र में परिकल्पित योजना में तथा उस योजना में जिसे गोल मेज सम्मेलन में संकल्पित किया गया था, मारी अन्तर है। अतः राजसी वर्ग में बढ़ते हुये अविश्वास को देखकर वायसराय ने उन्हें इस विषय में पुनः आश्वस्त करना आवश्यक समका । नरेन्द्र मण्डल के मार्च १६३३ के अधिवेशन में उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि इन प्रस्तावों को सब प्रकार से पूर्ण नहीं समका जाना चाहिये तथा ऐसी कोई भी वस्तु को विवेयक में सम्मिलित नहीं किया जायगा जिस पर श्वेत पत्र द्वारा विचार न कर लिया गया हो और यदि इस पर भी राजा लोग सुरज्ञणों तथा अन्य वाद विषयों के सम्बन्ध में कुछ और तथ्यों को इसमें समाविष्ट करने की इच्छा रखते हैं तो वे अपने दृष्टिकोण को संयुक्त प्रवर समिति के समद प्रस्तुत कर सकते हैं।

इसी बीच, विशेष रूप से विधान मण्डलों में प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर राजसी वर्ग में फूट पड़ गई। दूसरी त्रोर त्रांगल-शासन ने त्रानी स्थिति को हट कर लिया क्रोर उन्होंने न केवल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विरुद्ध क्रापित नरेशों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों में भी क्रापने रख को कठोर कर लिया। त्रांगल-शासन द्वारा प्रहण किये गये मनस्कोण का सारांश लार्ड विलिंगडन के इस कथन में विशद रूप से मिलता है कि- "संघ के रूप के बारे में यदि ऐसा निर्णय करना है जो सभी पत्तों के लिये उचित एवं न्याययुक्त हो तों हम किसी भी विशिष्ट वर्ग के मतों को स्वीकार नहीं कर सकते क्रीर महामान्य सम्राट की सरकार केवल एक

१. नरेन्द्र मण्डल द्वारा सूत्र वद्ध की गई शर्तों को तृतीय गोल मेज संस्मेलन में सुसम्पादित की गई संघ की नवीन योजना में प्रतिमूत करने के लिये लन्दन भेजे गये मंत्रियों की गोपनीय रिपोर्ट ता० ६-३-१६३३, पृ०३-५।

२. नरेन्द्र मण्डल में वायसराय का मापण ता॰ २०-३-१६३३, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाहियां, मार्च १६३३, पृ० ३।

निष्णक्त एवं न्याय संगत समभौता प्राप्त करने में दिलचरपी रखती है।" इसके परिणाम स्वरूप 'गवर्नमेन्ट ग्राफ इन्डिया एक्ट १६३५' तथा संविलयन का संशोधित प्रारूप विलेख उत्पन्न हुये। इसको स्वीकृत के लिये प्रस्तुत करते हुये वायसराय ने कहा कि इसमें घोषित शतों के लिये समभा जाना चाहिये कि राज्यों के मन्तव्यों को तुष्ट करने के लिये यह दूरतम सीमा है जहां तक महामान्य सम्राट की सरकार जा सकती थी। इसी बीच, क्योंकि भारतीय ग्रास्थाओं में दुतगित से एक विषम सीमा तक परिवर्तन हो चुका था ग्रतः राज्यों के लिये समस्त स्थित पर प्रनर्विचार करना ग्रावश्यक हो गया।

सामान्यतया तथा विशेषतया बीकानेर राज्य के संविलयन के विषय में महाराजा गंगासिंह के विचार, ता॰ २७-१-१६३६ के लार्ड लिनलिथगों के पत्र के उनके प्रत्युत्तर में विशद रूप से प्रदर्शित हैं। उन्होंने लिखा कि राज्यों को उनकी संधियों तथा समभौतों से उद्भृत होने वाले उनके अधि-कारों के सम्बन्ध में पर्याप्त संरच्या नहीं दिया गया है तथा राज्य इन अधिकारों को त्यागने के लिये उद्यत नहीं हैं। संधीय विषयों की सूची को अनल्प मात्रा में वढ़ा दिया गया है तथा राज्यों द्वारा संधीय कानूनों की व्यवस्था करने के जो श्रान्तिम प्रस्ताव रखे गये हैं वे न केवल समभौते

१. नरेन्द्र मण्डल में वायसराय का मावण ता० २०-२-१६३३, नरेन्द्र मण्डल की कार्यवाइयां, मार्च, १६३३, पृ० ४ ।
"प्रयमतः यदि इस प्रकार के निर्णयों (संघ के आकार के सम्बन्ध में) की सभी पत्तों के प्रति उचित सिद्ध करना है तो सरकार किसी भी विशेष वर्ग था समुदाय के मत को स्वीकार नहीं कर सकती तथा द्वितीयतः महामान्य सम्राट की सरकार केवल एक निष्पत्त एवं न्याययुक्त समभौता प्राप्त करने में दिलचस्पी रखती है।"

२. महाराजा गंगासिंह को लार्ड लिनलियगो का पत्र ता० २७-१-१६३६। "इस समय घोषित की गई शतों के बारे में वास्तिवक रूप से समम लिया माना चाहिये कि अब इनमें और अधिक शिथिलीकरण की गुंजाइश नहीं है क्योंकि ये शतों उस दूरतम सीमा का प्रतिनिधान करती हैं जहां तक, समस्त बाद विषयों पर, जिनमें राज्यों के कल्याण एवं हितों को सुरिच्चित करने के विषय को प्रमुखरूप से ध्यान में रखा गया था, अधिकतम् गम्मीर चिन्तना करने के पश्चात्, राज्यों द्वारा व्यक्त की गई आकांचाओं एवं आश्काओं को तुष्ट करने के लिये महामान्य सम्राट की सरकार ने जाना सम्मव पाया।"

की वार्तात्रों की विभिन्न त्रावस्थात्रों में प्रतिपादित किये गये प्रस्तावों से मूल रूप से भिन्न हैं त्रपित तत्वतः भी भिन्न हैं। इसके त्रागे त्रपने पत्र में महाराजा गंगासिंह ने त्राग्ल-भारत में गतवर्ष से प्रवर्तमान विध्वंसक प्रवृत्तियों की त्रोर निर्देश करते हुये कहा कि एक संघीय राज्य-व्यवस्था में त्रानिवार्य रूप से इकाइयों के बीच में सामंजस्य होना चाहिये तथा इस व्यवस्था को, प्रत्येक इकाई द्वारा परस्पर एक दूसरे की पूर्ण त्रान्तिरिक स्वायत्तता को मान्यता देने पर ही केवल त्राधारित किया जा सकता है। उन्होंने खेद प्रकट करते हुये कहा कि तथापि ऐसा नहीं किया गया प्रत्युत् कुछ मुख्य प्रान्तों के त्रान्दर विध्वंसक प्रवृत्तियों को इस ढंग से कार्य करने के लिये प्रोत्साहित किया गया जिसके परिणाम स्वरूप समीपवर्ती राज्यों की सत्ता को त्राज्ञात रूप से ज्ञति पहुँची। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की स्थिति की त्रावहेलना नहीं की जा सकती क्योंकि इस वात की भी क्या प्रतीति है कि तत्काल या भविष्य में किसी समय मेरे स्वयं के राज्य पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा।

२. वही, पैरा १२ तथा १३।

"श्रांग्ल-मारत के साथ संघवद्ध करने की किसी मी योजना के निर्धारण में राज्यों के लिये प्राण्मृत महत्व के एक तथ्य की श्रोर मैं श्राप महामिहम का मद्र ध्यान श्राकित करूं गा। मैं उन प्रवृत्तियों को संदर्भित कर रहा हूं जो श्रांग्ल-मारत में, विशेष रूप से गत वर्ष के यावत् प्रकट हुई हैं। प्रान्तीय स्वायत्तता के वास्तिवक कार्यकरण के श्रनुमव से यह स्पष्ट हो गया है कि वहां पर मुख्यतः सहकारिता की मावना का पूर्ण श्रमाव है। जैसा कि श्राप महामिहम भली मांति समभते हैं कि इकाइयों का सामंजस्य एक संधीय राज्य-ध्यास्था का श्रनिवार्थ रूप से परम सिद्धान्त होना चाहिये तथा इस व्यवस्था को केवल, प्रत्येक इकाई द्वारा श्रन्य इकाइयों की स्वतन्त्रता एवं श्रान्तिक स्वायत्तता को मान्यता देने पर ही श्राधारित किया जा सकता है।"

"दुर्माग्यवश, मारत में गत एक वर्ष के यावत् कुछ मुख्य प्रान्तों ने राज्यों के प्रति विद्वेष की निष्टिचत भावना को प्रदर्शित किया है। उन्होंने न केवल, दूसरी इकाइयों की श्रान्तरिक स्वायत्तता के आदर को प्रतिमृत करने के जिये संविधान में निर्दिष्ट सुरद्ताणों को ही कार्योन्वित नहीं किया है श्रिपेतु

१. लार्ड जिनलियगो को महाराजा गंगासिंह का पत्र ता० १७-७-१६३६, पैरा १०।

इन परिस्थितियों ने कम से कम कुछ समय के लिये महाराजा व सामान्यतः दूसरे राजाय्रों का भी दृष्टिकोण वदल दिया । इसकी य्रिभ-व्यक्ति वायसराय को लिखे गये उपर्युक्त पत्र में मिलती है। इसमें महाराजा ने कहा कि यदापि संघ के कानूनी ढाँचे को ऐसा बनाया गया है कि इकाइयों को पूर्ण ग्रान्तरिक स्वायत्तता रहे लेकिन यह स्पष्ट है कि जिन राजनेतिक दलों के कार्यक्रम में राजाओं ग्रीर उनकी रियासतों को कोई स्थान नहीं है, उनके दवाव में आकर कुछ प्रान्तीय सरकारों द्वारा यह मूल वात हटाई जा सकती है ग्रौर बचाव निरर्थक किये जा सकते हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि यह अनुभव किया जा रहा है कि रियासतों के अधिकारों का जान युभ कर ग्रातिक्रमण करने की इस नीति की जड़ इस बात में है कि राजात्रों को डरा कर उनको ब्रिटिश भारत के राजनैतिक दलों की नीति के साथ एक कर दिया जाय । त्रातः उन्होंने तर्क दिया कि ऐसी परिस्थितियों में संघ में सम्मिलित होना उस विनाशकारी त्रान्दोलन को बढ़ावा देने के समान होगा, जिसका उद्देश्य रियासतों के लोगों को ऋपने शासकों के प्रति नो राजभिक्त है, उससे विमुख करना है। उन्होंने इस वात की त्रोर व्यान दिलाया कि त्रागर उन्हें संघ में सम्मिलित होने का विकल्प मानना पड़े तो इसका मतलब उनका ऐसे लोगों के साथ काम करना होगा जिसका उद्देश्य पूर्ण स्वतन्त्रता है श्रौर जो खुले रूप में विटिश साम्राज्य के विरोधी हैं। ऐसा करना उनके दृढ़ विश्वास के विपरीत होगा। ग्रतः उन्होने नहा कि उनके लिये इसके सिवाय ख्रीर कोई चारा नहीं है

निश्चित रूप से अपने अधिकार च्रेत्रों के भीतर से विनाशक गतिविधियों को इस ढंग से कार्य करने के लिये प्रोत्साहित किया है जिससे समीपवर्ती राज्य सरकारों के प्रभुत्व की नीवें खोखली हो सकें। यद्यपि यह हुई का विषय है कि मेरा स्वयं का राज्य अब तक इस वैरपूर्ण नीति के प्रभाव से बचा हुआ है किन्तु जैसा कि आप महामहिम यथार्थ रूप से अनुमान कर सकते हैं कि अन्य स्थानों पर घटित होने वाली इन घटनाओं के प्रति में अपनी आखें वन्द नहीं कर सकता विशेष रूप से जब इस बात की भी कोई प्रतीति नहीं है कि मिन्य में किसी समय ये प्रवृत्तियां मेरे पर तथा मेरे राज्य पर भी प्रभाव नहीं डालेंगी।"

कि वे संघ में सम्मिलित होने से अलग रहें।

तो भी व्यवस्थित राजनैतिक विकास की नितान्त श्रावश्यकता में उनका विश्वास जरा भी कम नहीं हुआ और दूसरे ही पैरा में उन्होंने भारत के व्यवस्थित राजनैतिक विकास में अपने विश्वास को दोहराया जिसे राजा लोग भी उतना ही चाहते थे जितना ब्रिटिश मारत के लोग । किसी प्रकार के संघ से ही केवल यह हो सकता है और उन्होंने यह श्राशा प्रकट की कि भारत के राजनैतिक विकास की समस्या ऐसे तरीके से मुलभायी जायेगी जो सबको ठीक लगे।

भारत में एक शान्ति पूर्ण राजनैतिक समभौता कराने के अपने प्रयक्तों में राजा लोग निराश हो चुके थे त्र्यौर ब्रिटिश भारत के राजनैतिक दलों के शत्रुतापूर्ण रूख से दुःख अनुभव करते थे। लेकिन महाराजा गंगासिंह के कथन से यह स्पष्ट था कि राजाओं ने यह स्राशा कभी नहीं छोड़ी कि उनके इच्छित उद्देश्य की प्राप्ति के लिये श्रीर अच्छी परिस्थितियां श्रायेंगी । श्रागे महाराजा गंगासिंह ने श्रपने राजनैतिक जीवन में श्रनेक श्रवसरों पर महान दूरदर्शिता का परिचय दिया । भारतीय राजाश्रों के श्रध-कारों और विशेष अधिकारों के लिये कड़ा संघर्ष करने वाले होते हुये भी उनमें देशभिक्त की कमी कभी नहीं रही। महाराजा भविष्य के ज्ञाता थे। सन् १६३७ में ही उनके द्वारा जोघपुर राज्य के दीवान कर्नल डी. एम. फील्ड को लिखे एक पत्र³ में महाराजा ने स्पष्ट शब्दों में यह बात बताई कि रिया-सतों के शासन की जिम्मेदारी जल्दी ही इस समय के आन्दोलनकारियों के फन्घों पर स्राने वाली है स्रीर केवल वे ही इसे निभायेंगे । स्रातः यह भी लिखा कि यह वांछनीय है कि इनमें से ईमानदार लोगों की मदद फरके उन्हें बचाया जाय ताकि समय आने पर वे जिम्मेदारी उठाने को तैयार हों त्र्यन्यथा जिम्मेदारी संदिग्ध लोगों के पास चली जायेगी। ऐसा लिखते समय महाराजा के मन में श्री जयनारायण व्यास का मामला था।

ता० १७-७-१६३६ को महाराजा गंगासिंह द्वारा लार्ड लिनलिथगो को लिखे गये पत्र के पैरा १४-१६ ।

२. वही, पैराग्राफ १७, परिशिष्ट १६।

ता० २१-२-१६३७ को महाराजा गंगासिंह द्वारा कर्नल डी. एम. फील्ड
 को लिखा गया पत्र, परिशिष्ट १७।

श्री जयनारायण न्यास उस समय अत्यधिक आर्थिक किठनाई में ये और उनके साथियों ने उनके साथ विश्वासधात किया था। अतः यह पता चला कि वे जीवन निर्वाह के लिये सिनेमा लाईन अपनाने की सोच रहे थे। इसिलये महाराजा ने कर्नल फील्ड पर जोर डाला कि वह इस वात का ध्यान रखे कि श्री जयनारायण न्यास जोधपुर में रह सके और राजनीति से सम्पर्क बनाये रख सके। इससे श्री न्यास रियासत के भावी शासन में जो निश्चित रूप से तत्कालीन आन्दोलनकारियों के हाथों में जाने वाला था, भाग लेने का अवसर प्राप्त कर सके। इस सम्बन्ध में यह बात ध्यान में रखने की है कि श्री जयनारायण भारतीय रियासतों के शासकों एवं उनकी प्रशासन पद्धति के सामान्य रूप से तथा महाराजा गंगासिंह के विशेष रूप से, कड़े आलोचक थे तो भी महाराजा गंगासिंह के हृदय में श्री न्यास के प्रति कोमलता का भाव था। इस बात से जहां महाराजा की उदारता प्रवट होती है वहां यह भी पता चलता है कि महाराजा के मन में देश का हित ही सर्वोपरि था।

श्रतः यह दुःख की वात थी कि ब्रिटिश भारत के राजनैतिक दलों की प्रतिक्रियावादी श्रीर शत्रुतापूर्ण प्रवृति ने राजाश्रों के मन में एक स्वामाविक श्रविश्वास श्रीर सन्देह उत्पन्न कर दिया। न केवल श्रपने श्रस्तित्व की रत्ता के लिये, जो एक मूल प्रवृत्ति है बल्कि संध की श्रपनी मूल धारणा को पूर्ण न होते देख कर भी राजा लोग निराश हो गये। तो भी महाराजा गंगासिंह ने यह श्राशा कभी नहीं छोड़ी कि इच्छित उद्देश्य की प्राप्ति के लिये श्रीर परिस्थितियां श्रायेंगी।

यद्यपि हमारा विषय बीकानेर राजधराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध बताना है पर महाराजा गंगासिंह द्वारा किये गये ब्राधिकाधिक प्रसान्यकीय सुधारों पर दृष्टिपात किये बिना हमारा ऐतिहासिक विषय पूर्ण नहीं हो सकता, विशेषतः ऐसे समय जबिक भारतीय रियासतों में सुधारों पर गम्भीरता से विचार नहीं होता था। इससे एक ज्ञान प्राप्त राजा पर पश्चिम का गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

महाराजा गंगासिंह का हमेशा यह विश्वास रहा कि जिस राज्य की सरकार श्रापनी जनता का जितना ही मला करेगी उसकी स्थिरता श्रीर शिक्त उतनी ही श्रिधिक होगी। यह बात बहुधा उन्होंने श्रापने भाषणों में जोर देकर कही 1° उन्होंने ग्राच्छी सरकार के लच् एों में श्रिधकांश लोगों द्वारा मान्य सात वातें वताई—

- (१) शासक का निजी खर्च (प्रिवीपर्स) अञ्छी तरह से निश्चित होना चाहिये ।
- (२) जीवन ग्रौर सम्पति सुरित्तत होनी चाहिये।
- (३) कानून का शासन होना चाहिये।
- (४) राजकीय सेवाएं स्थिर होनी चाहिये ।
- (५) प्रशासन श्रेष्ठ श्रीर निरन्तर चालू रहना चाहिये ।
- (६) सरकार को आम जनता की मलाई का ध्यान रखना चाहिये।
- (७) उसे लोगों को सन्तुष्ट रखना चाहिये।

ये सिद्धान्त आधुनिक राजा का आदर्श प्रकट करते हैं। ये आज भी एक अच्छो सरकार के मार्ग दर्शक सिद्धान्त माने जाते हैं। उन्होंने इसका अनुसरण करने का प्रयत्न किया और अपने साथी राजाओं को भी ऐसा ही करने को कहा। वे जैसा मानते थे वैसा ही करते थे। अपने राज्य की जनता को सुरद्धा और सन्तोष प्रदान कर उन्होंने लोगों से कुतज्ञता पाई।

महाराजा डूँगरिसंह के शासन काल में राज्य के सभी महत्वपूर्ण विभागों का गठन किया गया था। नियमित न्यायालय की स्थापना की गई। एक उत्तरदायी श्रोर योग्य पद्धति को सरकार बनाई गई श्रीर शिचा की एक अच्छी पद्धति की नींव रखी गई। रीजेंसी कौंसिल के

पु० २५-२६ ।

१. वीकानेर विवान समा को स्थिमित करते हुथे महाराजा गंगासिंह का ता० २०-१-१६२८ का भाषणा। साथ ही नरेन्द्र मण्डल में ता० २३-२-१६२८ को उनका भाषणा।

महाराजा हूँ गरसिंह की प्रस्तर मूर्ति का अनावरण करते समय महाराजा गंगासिंह का भाषण —

ग्रध्यक्त सर चार्ल्स येली ने रीजेंसी के प्रशासन काल में न्यायिक प्रशासन पद्धित को ग्रोर गठित किया । १८० वर्ष के सुवक के रूप में जब महाराजा गंगासिंह ने पूर्ण ग्रधिकार प्राप्त किये तो उन्होंने देखा कि ये सुधार काफी नहीं थे । उनमें ग्रोर सुधार किया जा सकता था ग्रातः उन्होंने यह कार्य एक निश्चित ग्रोर योजना बद्ध तरीके से किया ।

दिसम्बर सन् १८६८ में महाराजा द्वारा राज्य के पूर्ण श्रिषकार प्राप्त करने पर रीजेंसी कोंसिल स्टेट कोंसिल के रूप में बदल दी गई। रीजेंसी कोंसिल का श्रध्यद्व दीवान बना। श्रमी मोहम्मदलाँ बीकानेर राज्य का प्रथम दीवान था। राज्य का मुख्य कार्यालय महकमा खास नव- निर्मित किया गया यद्यपि महाराजा ने सेना, उपचार व स्वास्थ्य श्रीर सार्वजिनक निर्माण जैसे कुछ विभाग ले लिये। पर उन विभागों की देख- माल करने वाला व्यक्ति श्रपने विभाग पर नियन्त्रण रखता रहा। पर शीध ही यह श्रमुभव किया गया कि उस पद्धति में बहुत सुधार करने की श्राव- श्यकता है क्योंकि सदस्यों के श्रिधकारों की व्याख्या ठीक से नहीं की गई यी श्रीर कोंसिल के सदस्यों तथा महकमा खास के दोहरे रूप से विलम्ब श्रीर गड़बड़ी होती थी।

सन् १६०२ में महकमा खास को एक सचिवालय में बदल दिया गया। सचिव सीचे महाराजा के प्रति उत्तरदायी थे। दीवान का पद समाप्त कर दिया गया। पर कोंसिल काम करती रही। ग्रव वह एक न्यायिक ग्रौर सलाहकार रूप लिये हुये थी ग्रौर महाराजा स्वयं उसकी कारवाई की श्राध्यक्तता करता था।

इसी वर्ष महाराजा ने ग्रालग प्रिवीपर्स ग्रौर ग्राच्छी तरह से निर्धारित सिविल लिस्ट की पद्धित चालू की। प्रिवीपर्स की रकम राज्य की सामान्य ग्रामदनी का पांच प्रतिशत निश्चित की गई। इसका श्रेय महा-राजा गंगासिंह को ही है कि वह भारत के राजाग्रों में सर्व प्रथम थे जिन्होंने श्राच्छी सरकार के ग्रापने विचारों के ग्रानुसार ऐसा किया।

प्रशासन में ग्रिधिक श्रेष्ठता लाने ग्रीर उसे व्यक्तिगत सम्पर्क का रूप देने की दृष्टि से सन् १६०५ में एक वार्पिक भू-राजस्व सम्मेलन

महाराजा के वीकानेर राज्य के शासन की मुख्य वातों से सम्बन्धित टिप्पणी,
 १८६८-६६ से १६३०-३१, पृ० १५ ।

२. फोर डिकेंड्स आफ प्रोग्रेस इन बीकानेर पु० १२६ ।

करने की पद्धति लागू की गई। इन सम्मेलनों में नाजिम (कलेक्टर) श्रीराविभागों के प्रधान बुलाये जाते थे। यह भी श्रनुभव किया गया कि जिले के श्रिषकारियों श्रीर उन्हें साथ साथ बुलाने से प्रशासन की श्रेष्ठता भी बहेगी श्रीर लोगों की खुशहाली के लिये श्रिषक काम किया जा सकेगा। श्रतः सन् १६०८ में महाराजा ने इसमें कुछ गैर सरकारी सदस्य जोड़ कर सम्मेलन का रूप व्यापक बना दिया। यद्यपि सम्मेलन के नाम से विदित होता है कि इसका सम्बन्ध केवल राजस्व से था पर इसकी मीटिगों में प्रशासन के सभी प्रश्नों पर विचार किया जाता था। इससे महाराजा की जनता के विभिन्न वगों श्रीर जातियों की स्थित सुधारने के लिये बहुत से महत्व-पूर्ण परिवर्तन श्रीर सुधार-किये-गये-।

श्रिषक विकेन्द्रोकरण करने की दृष्टि से श्रीर कार्यपालिका से श्रिसम्बद्ध एक न्यायपालिका स्थापित करने की दृष्टि से महाराजा ने सन् १६१० में एक मुख्य न्यायालय की स्थापना की । इसमें एक न्यायाधीश श्रीर उसके सहायक दो दूसरे जज रखे गये । बीकानेर बड़े गर्व के साथ कह सकता है कि यह राजपूताना में प्रथम राज्य था जिसने कार्यपालिका से न्यायपालिका को श्रुलग करने का ऐसा कदम उठाया।

सन् १६१२ में महाराजा के शासन की रजत जयन्ती मनाये जाने के अवसर पर जो अनेक सुधार किये गये उनमें दो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। रीजेन्सी कौंसिल के समय उद्दे सरकारी भाषा बना दी गई यी यद्यपि जनता को इससे काफी असुविधा और असन्तोष था। बीकानेर के लोगों की बोलचाल की भाषा हमेशा से मारवाड़ी या राजस्थानी रही है। यह ऐसी लिपि में लिखी जाती है जो देवनागरी का राजस्थानी रूप कहा जा सकता हैं। असराजा ने घोषणा की कि हिन्दी पुनः सरकारी

२. महाराजा के बीकानर राज्य के शासन की मुख्य वार्तोः से सम्बन्धित टिप्पणी १९६५-६६ से १६३०-३१, ५० १८ ।

२. वही, पृ० २६-३० ।

३. महेन्द्र पाल प्रतिहार (५५५-६०५ ई०) के गुरू राजेश्वर के अनुसार ६ वीं श्रीर १० वीं शताब्दी में राजस्थान में अपभ्रंश बोली जाती थी। इसीसे वह माषा वनी जिसे डाक्टर एल. पी. टेसीटोरी ने "पिष्चमी राजस्थानी कहा है। इसी से राजस्थानी का विकास हुआ। मारवाड़ी इसकी मुख्य बोली है अनूप संस्कृत लॉयब्रेरी में सँकड़ों ख्यातें (लेखक के अधिकार में) तथा प्रादेशिक वीर गीत और प्रगीत मुक्तक इसके प्रमाण है।

काम काज की भाषा वनाई जायेगी। यह आदेश सन् १६१४ में पूर्ण रूप से लागू हुआ। इससे जनता को वड़ी राहत मिली। दूसरी घोपणा महाराजा के प्रगतिशील विचारों की द्योतक थी। यह एक प्रतिनिधि सभा स्थापित करने के बारे में थी। अपनी इच्छा घोषित करते हुये महाराजा ने कहा कि यह उनका हट मत है कि राज्य की भलाई में शासक और शासित दोनों का समान हित है। ज्योंही जनता अपने को थोग्य प्रमाणित करे तो सरकार में उसका भी भाग होना चाहिये और उसे भी अपनी वात कहने का अवसर दिया जाना चाहिये। इस दिशा में एक उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये उन्होंने अंग्रेज सरकार की प्रशंसा की। महाराजा द्वारा

महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० २२७८।३६
 माग १-ए, महाराजा गंगासिंह का माषण ता० २४-६-१६१२ ।

''प्रगतिशील राष्ट्र श्रौर सरकार तथा प्रत्येक विवेकशील राजा या शासक का यह कर्तव्य है कि वह केवल वर्तमान श्रौर भूत को ही न देखे बिल्क मिष्य को भी देखे । प्रत्येक को समय के श्रनुसार चलना चाहिये श्रौर श्रपना शासन इस प्रकार प्रेरित श्रौर गिर्टत करना चाहिये, श्रपने कार्य ऐसे बनाने चाहिये कि उनसे केवल वर्तमान की श्रावश्यकता ही पूरी न हो बिल्क श्रागे बढ़ाये जाने में भी समर्थ हो । इससे श्रागे उत्पन्न होने वाली किसी स्थित का योग्यता से मुकावला कर सकेंगे । कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता । जो पीछे रहेगा वह श्रपने लच्च्य तक कभी नहीं पहुंचेगा ।''

× × ×

"इन वरदानों में सबसे महत्वपूर्ण घोषणा प्रजा प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध रखती है। इसका कारण सुधारों की घोषणा के गजट की सूधना में पहले ही वताया जा चुका है। यह कारण मेरा यह विश्वास है कि राज्य की मलाई में शासकों और शासितों दोनों का समान हित है अतः ज्योंही ये अपनी थोग्यता का प्रमाण दें तो शासितों को सरकार में प्रगतिशील प्रतिनिधित और माग लेने का अधिकार होना चाहिये।"

''अपने महान गौरव और सम्मान के अनुरूप अंग्रेज सरकार ने इस दिशा में समस्त आधुनिक विश्व के समज्ञ एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया । समी सरकारों का उद्देश्य और लच्च जनता का भला है और होना चाहिये। वही सरकार सर्वश्रेष्ठ है जो अपने यहां के अधिक से

महाराजा के बीकानेर राज्य के शासन की मुख्य वार्तों से सम्बन्धित टिप्पणी
 १८६८-८६ से १६३०--३१, पृ० १७ ।

१० नवम्बर १६१३ को प्रतिनिधि स्मा का उद्घाटन किया गया। प्रतिनिधि समा की स्थापना की बड़ी प्रशंसा हुई। उस समय इसमें कुल ३५ सदस्य थे। इनमें से ६ कोंसिल के सदस्य, ३० चुने हुये सदस्य ऋोर १६ मनोनित सदस्य थे। सन् १६३७ तक यह संख्या बढाकर ४५ कर दी गई। इनमें ६ सदस्य कार्यकरिंगी परिषद के, २० चुने हुये ऋोर १६ मनोनीत थे। सन् १६१७ में प्रतिनिधि समा को विधान समा नाम दिया गया था और

अधिक लोगों का अधिक से अधिक मला कर सके। मैं पूर्ण ईमानदारी के साथ कहता हूं कि जब कभी आवश्यकता पड़ी है पिछले १४ वर्षों में मेंने विभिन्न श्रेणी व वर्गों के नेताओं से सलाह ली है। मेंने न केवल उनसे स्वतन्त्र सलाह ली बिल्क उनकी खरी सलाह और ईमानदारी से की गई आलोचना का स्वागत किया है। यह बात कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि मैंने और राज्य के प्रशासन ने इस प्रकार की सलाह और आलोचना पर पूर्ण रूप से विचार किया है और उसे महत्व दिया है।

१. वॉम्बे क्रोनिकल ता० ७-११-१६१३।

"कई देशी रियासतों में विधान परिषदें हैं। हैदराबाद में विधान परिषद् तो काफी समय से है पर उसके बारे में बहुत कम ज्ञात है। बढ़ौदा में सीमित ऋषिकारों वाली एक छोटी विधान परिषद् है। मैसूर में प्रतिनिधि समा है पर यह केवल परामर्शदात्री है " " पर बीकानेर में ज्यापक ऋषिकारों वाली परिषद् बनाई जा रही है। इससे राज्य की जनता को जो प्रेरणा और नियन्त्रण प्राप्त होगा, यह बराबर प्राप्त रहेगा, इसे भी ब्यवहारतः सुरिच्चत कर दिया गया है।

दी द्रिन्यून ता० १४-११--१६१३।

"यह केवल बीकानेर राज्य के लिये नहीं चिलक उत्तरोत्तार सारे भारत के लिये महत्वपूर्ण घटना है। यह जनतांत्रिक उन्नति के निश्चित सोपानो का चिन्ह है • • • बीकानेर में संवैधानिक सुधार के बुद्धिमतापूर्ण श्रोर लामकारों कार्य का हम स्वागत करते हैं।"

टाइम्स श्रॉफ सीलोन, कोलम्बो, ता० १२-११-१६१३।

"कल वीकानेर के महाराजा ने नई प्रतिनिधि समा का उद्घाटन किया । यह समारोह शानदार या इसमें जनता ने बहुत रुचि ली।

२. फोर डिकेड्स श्राफ प्रोग्नेस इन बीकानेर, पृ० ७४।

इसके चुने हुये सदस्यों की संख्या विंदों कर १० से १५ कर दी गई थी।

इसी वर्ष श्रीर सुधार किये गये। इनमें नगरपालिकाश्रों को श्रिधिक श्रिधिकार श्रीर स्वतन्त्रता दी गई थी। राज्य की नगरपालिकाश्रों द्वारा दिये गये श्रिमिनन्दन का उत्तर देते हुये महाराजा ने कहा कि नई पद्धित के श्रिधीन नगर पालिकाश्रों को श्रीर श्रिधिक स्वायत्तता प्रदान की गई है तथा नगर के श्राकार के श्रिनुसार चुने हुये सदस्यों की संख्या भी बढ़ा दी गई है। उन्होंने यह भी कहा कि नगरपालिकाश्रों को श्रुपने श्रिये पर व्यवहारतः पूर्ण नियन्त्रण तथा श्रिपनी श्रावश्यकताश्रों को पूर्ण करने के लिये धन एक-त्रित करने का श्रिधिकार भी दे दिया गया है। स्वायत शासन के विकास की हिन्द से निश्चय ही यह एक महत्वपूर्ण कदम था।

महाराजा के हृदय में किसानों श्रीर दूसरे लोगों की भलाई की गहरी भावना थी। श्रामीणों के कर्ज को मिटाने श्रीर उनमें मितव्ययता व श्रपनी सहायता श्राप करने की श्रादत डालने की श्रावश्यकता श्रनुभव करके सन् १६२० में विधान सभा में सहकारी समिति कानून पास हुआ। । राज्य में प्रथम सहकारी समिति ने कार्य श्रारम्भ किया । श्रेक्ट्रवर १६३० के श्रन्त तक राज्य में ऐसी ६ समितियों वन गई थीं । इनकी सदस्य संख्या १६४२ थीं । श्राज सहकारी समितियों को मौरत सरकार द्वारों वहुत ही महत्व दिया जाता है । महाराजा गंगासिंह ने राज्य की श्रामीण श्रंथ व्यवस्था में सहकारी समिति के कार्य का महत्व सन् १६२० में ही श्रनुभव कर लिया था । महाराजा को यह देखकर सन्तोष हुआ। कि सहकारी समितियों का कार्य सफलता से हो रहां ।

किसानों की आवश्यकताओं और अभिलापाओं को ठीक से समभने की दिन्द से महाराजा गंगासिंह ने सन् १६२१ में एक जमीदार बीर्ड की स्थापना की ताकि किसान-और सरकार एक दूसरे के और भी निकट आ जाय। जब गंगानगर एक अलगं प्रशासनिक डिवीजन बन गया तो सन् १६२६ में इन जमीदार बीर्डों की संख्या बढ़ा कर २ कर दी

महाराजा के बीकानरें राज्य के शासन की मुख्य बातों से सम्बन्धित टिप्पणी,
 १ नहन-हहे से १६३०--३१, ५० २०।

२. वही, पृष्टि ।

३. वही, पु० ३७।

गरें। इनमें से एक बीकानेर तथा दूसरा गैंगानगर डिवीजन के लिये था।

सन् १६२२ में महाराजा ने एक राजकीय घोषणा पत्र द्वारा एक उच्च न्यायालय की स्थापना की ताकि न्याय और अधिक अच्छी तरह से मिल सके। लेकिन न्यायाधीशों की नियुक्ति, पद वृद्धि और उन्हें हटाना पूर्णतः महाराजा की इच्छा और खुशी पर निर्भर था।

सन् १६२४ में कार्यकारिणी परिषद के सदस्यों का नाम बदल कर मन्त्री कर दिया गया । मन्त्रीमण्डल का निर्माण प्रथम विश्वयुद्ध के समय से किया गया था । उस समय उसमें केवल ३ सदस्य थे । लेकिन इस समय इसमें परिषद के सभी सदस्य शामिल थे । सन् १६२४ में इसे खत्म कर दिया गया ।

राज्य के जो कर्मचारी श्रमामयिक मर जाते थे उनके घरवालों को बाद में श्रनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। प्रजाहित की दृष्टि से महाराजा ने राज्य कर्मचारियों के लिये सन् १६२७-२८ में जीवन बीमा श्रीर धन समपर्ण बीमा योजना को लागू किया। बचत की भावना बढ़ाने की दृष्टि से एक बचत बैंक भी चालू किया गया।

सन् १६२८ में ग्राम पंचायतों को दीवानी, फीजदारी श्रीर प्रवन्ध सम्बन्धी निश्चित श्रिधिकार प्रदान किये गये । यह बात उल्लेखनीय है कि श्राज जिस विचार को इतना श्रिधिक महत्व दिया जाता है उसे महाराजा गंगासिंह ने श्रपने शासन के इतने श्रारम्भ में ही लागू कर दिया था।

इस प्रकार पूर्ण श्रिषिकार प्राप्त करने के समय से ही महाराजा ने राज्य को श्राधुनिक बनाने और राज्य सरकार में प्रजा का प्रगतिशील सम्बन्ध जोड़ने में सफलता से प्रयत्न किया । ध्यान देने की बात यह है कि महाराजा ने यह सब श्रिपनी स्वेच्छा से किया । ब्रिटिश भारत की तरह जनता की किसी मांग पर उन्होंने ऐसा नहीं किया । इससे विदित होता है कि भारत में राजा

महाराजा के बीकानेर राज्य के शासन की मुख्य वात से सम्बन्धित विषयी, १८६८-१८६ से १६३०-३१, पृ० २४।

२. वही, पृ० ३०।

३. वही, पु० १६।

४. वहीं, पं ४३-४६ ।

५. कोर डिकेड्स श्रॉफ प्रोग्नेस इन बीकानेर, पृ० ७७।

का जो उच ग्रादर्श है उसे प्राप्त करने के लिये उन्होंने कितने उत्साह से प्रयत्न किया। उनके ग्रनुसार यहां के राजा के ग्रादर्श ग्राधिक उन्नत देशों के ग्रादर्श से भिन्न नहीं है ग्रीर उनका विश्वास या कि लोग ग्रापने उत्तर-दायित्व का सफल निर्वाह तभी कर सकते हैं जब उन्हें शिचा का लाभ भिले। इसीलिये चिकित्सा ग्रीर जन स्वास्थ्य के ग्रातिरिक्त वे शिचा का वहुत ग्राधिक ध्यान रखते थे।

वीकानेर के रेगिस्तानी इलाके में गाँव विखरे हुवे श्रीर एक दूसरे से काफो दूर हैं। ग्रतः शिचा का प्रसार यहां निश्चय ही एक कठिन समस्या थी । पर महाराजा के लिये कोई भी कठिनाई ऋजेय नहीं थी। उनका वत या कि किसी भी सूरत में हार न मानी जाय। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने ग्रापने राज्य में सब जगह शिचा संस्थाश्रों का जाल बिछा दिया। सन् १९४३ तक राज्य में १४१ सरकारी स्कूल, १३७ सरकारी सहायता प्राप्त स्कल ग्रीर १६१ मान्यता प्राप्त निजी स्कुल तथा एक डिग्री कालेज या । इसके त्रालावा महाराजा गंगासिंह का वनारस हिन्दू विश्व विद्यालय से गहरा सम्बन्ध था। उन्होंने समय समय पर चन्दा देकर हमेशा इसकी सहायता की। महाराजा सन् १९२२ से १९२८ तक इस विश्व विद्यालय के प्रोचांसलर थे। सन् १६२६ से लेकर सन् १६४३ में अपनी मृत्यु के समय तक वे इसके कुलपित रहे। सन् १९४२ में स्वातन्त्र्य ग्रान्दोलन के समय यहां के विद्यार्थियों ने अनुशासन होनता और तोड़ फोड़ की कारवाई की। फलस्वरूप विश्वविद्यालय वन्द कर दिया गया। इसके जल्दी खुलने को कोई ग्राशा न थी। तब महाराजा गंगासिंह के प्रयत्नों से ही विश्व विद्यालय पुनः ग्रारम्भ हुन्ना । इस सम्बन्ध में महाराजा ने लार्ड लिनलिथगो, सर मौरिस हैलेट (यू. पी॰ का गवर्नर) श्रौर डाक्टर सर्वेपली राघाकृष्णन् (वनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के उपकुलपति) से लम्बा पत्र व्यवहार किया । पंडित मदन मोहन मालवीय से महाराजा का

२. रिपोर्ट ऑन दी एडिमिनिस्ट्रेशन ऑफ दी बीकानेर स्टेट, १६४२-४३, १०१०।

महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं LXV,
 महाराजा गंगासिंह को लिखा लार्ड लिनलिथगो का पत्र ता० ३०-१०-१६४२।

[&]quot;में श्रापसे पूर्णतः सहमत हूं कि यथाशीव इन युवकों को उनके काम में लगाया जाय। मैं सर मौरिस हैलेट के पत्र की प्रतिलिपि संलग्न कर रहा हूं। इसमें जो वातें लिखी हैं उनसे मैं समस्तता हूं कि उन्होंने

वहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध था। मैं उस समय छोटा बालक था। मुक्ते स्पष्ट याद है कि हम बच्चों को उस महान नेता के सामने बुलाया गया। हमसे कहा गया कि उनके चरण छू कर उनसे आशीर्वाद मांगें। तब से उनकी दयालुता हमारे मन पर अमिट छाप डाले हुये है।

महाराजा निरन्तर इस बात का ध्यान रखते थे कि उनकी प्रजा को मुक्त इलाज सुलभ हो । सन् १८६७-६८ में राज्य में केवल १४ सरकारी ग्रस्पताल थे । सन् १६२३ तक उनकी संख्या बढ़कर ४६ हो गई। प्रिंस विजयसिंह जी मेमे।रियल जनाना ग्रौर मर्दाना ग्रस्पताल तो राजस्थान ग्रौर उत्तरी भारत के सर्वश्रेष्ठ ग्रौर सर्व सुसज्जित ग्रस्पतालों में से एक था।

महाराजा इस बात से मली-भाँति परिचित थे कि ये सुविधायें श्रीर सुधार तभी स्थायी हो सकते हैं जब साथ साथ राज्य का श्रार्थिक विकास हो त्रौर इसकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ हो । त्रातः प्रथम त्रावश्यक कदम भू-राजस्व पद्धति को ठीक प्रकार से गठित करने के लिये उठाया गया जो कि किसान के भी हित में था। राज्य का प्रथम नियमित बन्दोबस्त सन् १८६२-६३ में सर पैट्रिक फैंगन द्वारा किया गया। बन्दोबस्त की अवधि १० साल थी। लेकिन सन् १८६६--१६०० के ऋकाल के कारण दुवारा बन्दोबस्त ६ वर्ष के लिये स्थिगत कर दिया गया। इसके अनुसार बन्दोबस्त श्रीर जाँच कार्थ सन् १६०६ में ग्रीर सन् १६१४ में पूरा हुआ। इससे राज्य को ६०४४५५) ६० की ब्राय हुई। वन्दोबस्त के सम्बन्ध में ब्रांतिम . श्राज्ञा प्रदान करने से पूर्व उसकी श्रीर श्रागे जाँच करने हेतु महाराजा ने सन् १६४२ में पंजाब सरकार से मि॰ जी॰ डी॰ रडिकन, ब्राई॰ सी॰ एस॰ की सेवायें प्राप्त की। मिस्टर रडिकन ने वन्दोवस्त में एक सामान्य संशोधन करवाया श्रोर विना किसी बड़े परिवर्तन के मालगुजारी की दर स्वीकार कर ली गई। भू-राजस्व पद्धति का पूर्णतः पुनर्गठन किया गया। ऋधिकार ऋौर मालिकाना हक स्वीकार किये गये ग्रौर राजस्व के कई श्रोतों का एक उचित

उपकुलपित द्वारा सुभाये गये कार्यक्रम को मान लिया है। इसके अनुसार सारी कत्तायें ११ नवम्बर से पूर्व पुनः खुल जायेगी। " यह कहने की आरयकता नहीं कि आपने इस मामले में जो रुचि ली और कष्ट उठाया है उसके लिये में श्रीमान का वहुत कृतज्ञ हूं। एक किन समस्या को निपटाने में सुभे और सर मीरिस हैलेट को आपके सुभावों से बहुत ही अधिक सहयोग मिला है।"

रिपोर्ट ऑन दी एडिमिनिस्ट्रेशन ऑफ बीकानेर स्टेट, १६४२-४६, पृ० १९४।

वर्गीकरण किया गया जैसे कि दत्तक श्रौर उत्तराधिकारी शुल्क, लावारिस की सम्पति का राष्य को मिलना, श्रचल सम्पति की विक्री पर कर श्रादि।°

राज्य की आय का दूसरा महत्व पूर्ण साघन चुंगी और कर से था। इन महक्सों का पुनर्गठन करने के लिये और उनके सम्बन्ध में नियम बनाने के लिये महाराजा ने सन् १९१० में पंजाब सरकार से मि. जे. एच. कोक्स की सेवायें उघार ली। उसकी सिफारिस के फलस्वरूप चुंगी और जकात विभाग को मिलाकर एक कर दिया गया। सन् १९११ में जकात कानून और चुंगी कानून व चुंगी दर सूची बनाये गये। सन् १९१२ के अन्तर्राष्ट्रीय अफीम समभीते को ध्यान में रख कर बाद में जैसे जैसे आवश्यकता हुई इन कानूनों और सूचियों में भी संशोधन किया गया। इस मद में रीजेंसी के प्रशासन में कुल आमदनी आठ लाख बयासी हजार चार सौ तेइस रुपये थी जो सन् १९२६-२७ में बढ़ कर बीस लाख पिचानवे हजार दो सौ पिचानवे रु० हो गई।

किसी भी श्रादर्श राज्य में यातायात श्रीर संचार की सुरिच्चत सस्ती श्रीर पूर्ण सुविधा होनी श्रावश्यक है। इससे जनता को श्राराम मिलता है। व्यापार श्रीर उद्योग को बढ़ाने में यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है ग्रतः इसी से राज्य का श्रार्थिक विकास भी होता है। महाराजा बहुत समभदार थे। श्रपनी प्रजा की भलाई की इच्छा उनमें निरन्तर बनी रहती थी। श्रतः उन्होंने इन विषयों पर भी पूर्ण ध्यान दिया। राज्य की भूमि दुर्गम ग्रीर जगह जगह रेतीले टीलों वाली है श्रतः यहां लम्बी सड़कें बनाना श्रार्थिक हिंद से कठिन है। रेगिस्तानी श्रांधियाँ चलने पर कोई भी पक्की सड़क रेत से दब जाती है श्रीर तब उस सड़क पर चलना श्रसम्भव हो जाता है। महाराजा के पूर्ण श्रधिकार पाने के समय सड़कों की लम्बाई लग भग २६'१३ मील थी जो सन् १६४३ में बढ़कर १३५ मील हो गई।

त्रातः दूर त्राने जाने का साधन एक मात्र रेल थी । महाराजा.. के नावालिंग काल में सन् १८८६ में भारत सरकार त्रीर वीकानेर व जोधपुर राज्यों के बीच जोधपुर से बीकानेर तक रेल लाइन बनाने का एक समकौता

महाराजा के वीकानेर राज्य के शासन की मुख्य वार्तों से सम्बन्धित टिप्पणी, १म्हम-हह से १६३०-३१, पृ० ३१-३६ ।

२. वही, पृ० ३५-३६।

३. फोर डिकेंड्स ऑफ प्रोग्रेस इन वीकानेर, १० १०८।

हुन्ना था। जोधपुर राज्य की सीमा से वीकानेर तक रेल लाइन सन् १८६१ तक शुरू हुई। सन् १८६८ तक वीकानेर से दुलमेरा तक भटिंडा की ग्रोर ४२ मील लम्बी रेल लाइन ग्रीर बनाई गई। इससे रेल लाइन की कुल लम्बाई ८६ ७५ मील हो गई। सन् १८६६ की १३ दिसम्बर को महाराजा ने एक समकौता किया। इसके ग्रनुसार रियासत में रेलों द्वारा ग्राधिकृत ग्रथवा बाद में ग्राधिकार में ली जाने वाली समस्त भूमि पर ग्रंभेज सरकार का पूर्ण ग्रीर एक मात्र ग्राधिकार ग्रोर चेत्र माना गया। सन् १६०२ में वीकानेर भटिंडा लाइन पूर्ण होकर चालू हुई।

इस रेल लाइन के खुलने से व्यापार की वृद्धि में एक महत्वपूर्ण विकास हुआ क्योंकि यह बम्बई और पंजाब के बीच एक सीधा और
कम दूरी वाला सम्पर्क वन गया । यद्यपि डिगाणा-हिसार रेल लाइन की
योजना सन् १६०२ में ही बन गई थी पर आवश्यक स्वीकृति प्राप्त करने
में कठिनाइयाँ होने के कारण यह कार्य सन् १६०७ में ही हाथ में लिया जा
सका । सन् १६११ में यह लाइन पूरा हुई और चालू हुई । राज्य के
भीतर जो दूसरी महत्वपूर्ण रेल लाइनें चालू हुई वे वीकानेर-रतनगढ़,
रतनगढ़-सरदारशहर, कैनाल-लूप लाइन, और हनुमानगढ़-सादुलपुर लाइनें
थीं । दूसरी महत्वपूर्ण रेल लाइन, जो सादुलपुर को रेवाड़ी से मिलाती है,
की योजना सन् १६३० में बनाई गई लेकिन इसकी स्वीकृति सन् १६३७
में मिली और यह काम सन् १६४० में पूरा हुआ । सन् १६४३ में महाराजा की मृत्यु के समय राज्य में रेल लाइनों की कुल लम्बाई प्र्यः ०५

१. पिचसन-पूर्व उद्भृत, माग ३, पृ० २६६-२६७।
१३ जुलाई सन् १८८६ को अंग्रेज सरकार, जोधपुर राज्य और बीकानेर राज्य में जो सममौता हुआ उसके अनुसार वीकानेर और जोधपुर को जोड़ने के लिये रेल लाइन निर्माण का कार्य शुरू हुआ। उस समय जोधपुर रेलवे और इस नये विस्तार को मिला कर इसे जोधपुर-वीकानेर रेलवे नाम दिया गया। कुछ समय के लिये इसका प्रवन्ध जोधपुर रेलवे के मैनेजर (प्रवन्धक) के अधीन रखा गया और उसके पद का नाम बदल कर मैनेजर, जोधपुर वीकानेर रेलवे कर दिया गया। १ नवस्वर सन् १६२४ से वीकानेर स्टेट रेलवे का प्रवन्ध अलग कर दिया गया।

२. वही, पृ० ३०१।

३. यह बीकानेर से दिल्ली तक का सबसे कम दूरी का मार्ग है।

मील हो गयी यी छौर इससे ७१७६३१४) रु वार्षिक आय होती यी। पन् १६३६-३७ में भी रियासत में प्रति १००० वर्ग मील के पीछे ३४.१३ मील लम्बी रेल लाइन यी। वड़ौदा को छोड़कर भारतीय रियासतों में रेल यातायात के विकास में बीकानेर का प्रथम स्थान था। जब बीकानेर का राजस्थान में एकीकरण हुआ तो ६ करोड़ रू. की लागत पूंजी की रेल सामग्री राजस्थान सरकार को सौंप दी गई।

भूतपूर्व बोकानेर रियासत के दूर दूर तक फैले इलाके का काफी माग रेगिस्तान के मध्य में है। सम्भवतः यह मार्त के सबसे स्खे मागों में से एक है। यहाँ की ग्रोसत वर्षा १२ इंच है। कुछ इलाकों में तो इससे भी कम वर्षा होती है। यहाँ निदयाँ नहीं हैं। पानी के साधन बहुत ही कम ग्रोर काफी दूरी पर उपलब्ध हैं। भूतकाल में बीकानेर के शासकों की यह इच्छा रही कि इस इलाके को काफी मात्रा में पानी मिले। उनका मुख्य लच्य हमेशा यही था कि लो ों का कष्ट दूर करने के लिये ग्रोर राज्य के यथा सम्भव ग्राधिक से ग्राधिक भाग को सिंचित करने के लिये मीठे पानो के साधन ज्ञात किये जायँ।

सतलज नदी से सिंचाई के लिये त्रीकानेर में पानी पहुँचाने का विचार सबसे पहले पंजाब के इन्जिनियर कर्नल डायस द्वारा सन् १८८५ में प्रस्तुत किया गया। लेकिन कोई व्यावहारिक कदम इस बारे में तब नहीं उठाया गया। के महाराजा डूंगरिसह के शासन-काल में सन् १८८४ में इस बात के लिये प्रयत्न किये गये थे कि अबोहर नहर का विस्तार करके पानी बोकानेर इलाके में लाया जाय। के लेकिन पंजाब सरकार ने यह कह कर

रिपोर्ट ऑन दो पडिमिनिस्ट्रेशन आफ दो बीकानेर स्टेट फॉर १६४२-४३,
 ६६-६७।

फोर डिकेड्स श्रॉफ प्रोग्रेस इन बीकानेर, पृ० १०३ ।

फोर डिकेड्स आफ प्रोग्रेस इन वीकानेर, ए० ६२ ।

४. राज्य परिषद् द्वारा ता० २०-११-१५५४ को पोलिटिकल एजेंट को लिखी गई कैफियत । इसे राजस्थान सरकार के पुरालेख विभाग के निदेशक श्री नायुराम खड़गावत ने स्मरण पत्र के मसौदे में उद्भुत किया है ताकि अकाली दल द्वारा गंगानगर जिले को प्रस्तावित पंजावी माधी राज्य में मिलाये जाने के लिये की गई माँग के त्रिरुद्ध राजस्थान सरकार अपने पत्त का वचाव कर सके। परिशिष्ट 'जी'

इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि नहर पूरी वन चुकी है और केवल अति-रिक्त पानी ही नहर में से दिया जा सकता है। लेकिन यह पानी भी कभी ही मिलता था।

सन् १८८७ में बीकानेर राज्य सरकार ने इस प्रश्न को पुनः पोलिटिकल एजेंट के सम्मुख उठाया। लेकिन वहाँ से यह उत्तर मिला कि जो नहरें पहले बन चुकी हैं उनका पानी केवल अंग्रेजी इलाके के लिये ही काफी होगा अतः उनसे पानी दिये जाने की कोई आशा नहीं। रीजेंसी कोंसिल के समय भी ये प्रयत्न जारी रहे पर कोई परिणाम नहीं निकला। सन् १८६८-६६ और १८६८-१६०० के भयंकर अकाल में जब राज्य के लोगों ने अकथ्य कष्ट उठाये तभी केन्द्रीय सरकार की आँखें खुलीं और उन्होंने स्थित की गम्भीरता अनुभव की। उन्हें इस तथ्य की महत्ता विदित हुई कि अब तक सिंचाई की जिन योजनाओं को दोत्रीय या प्रान्तीय हित की संकीर्ण दृष्टि से देखा जाता था उनमें अधिक लोगों को अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक लाभ मिले यह दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिये। इस पर भारत की नदियों का पानी इसी प्रकार काम में लाने के लिये एक आम योजना बनी।

- २. ता० १-३-१८५७ का कौंसिल का पोलिटिकल एजेंट को पत्र, वही ।
- ३. ता॰ २१-५-१८५७ का पोलिटिकल एजेंट का कोंसिल को पत्र, वही।
- ४. सन् १६०९ में लार्ड कर्जन ने एक कमेटी नियुक्त की । उसके अध्यक्त सर कोलिन स्कॉट मॉक्रिफ थे । इसका उद्देश्य अकाल को मिटाने के लिये सिंचाई के प्रश्न पर विचार करना या । इस कमेटी ने सन् १६०३ में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की ।
- ४. सतलज के पानी का कुछ माग वीकानेर को दिये जाने के प्रश्न पर पंजाब सरकार के वित्तीय श्रायुक्त सर लेविस तूपर ने ता॰ २४-१०-१६०५ के श्रपने नोट में लिखा, "में इस बात पर बहुत जोर दूँगा कि नदी के अग्रमाग का श्रिकार किसी को उससे पानी लेने का दावा करने का श्राधार नहीं माना जाना चाहिये श्रीर नदी से श्रितिरिक्त पानो

१. ता० १४-३-१८५ का पोलिटिकल पर्जेंट का उत्तर, इसे राजस्थान सरकार के पुरालेख विमाग के निदेशक श्री नाथूराम खड़गावत ने स्मरण पत्र के मसौदे में उद्धृत किया है ताकि अकाली दल द्वारा गंगानगर जिले को प्रस्तावित पंजावी माषी राज्य में मिलाये जाने के लिये की गई माँग के विरुद्ध राजस्थान सरकार अपने पत्त का वचाव कर सके। परिशिष्ट 'जी'।

सन् १६०३ में महाराजा गंगामिंह ने चीफ इन्जिनियर के रूप में मिस्टर ए० डब्लू० ई० स्टेन्डले की सेवायें प्राप्त की । उसने बीकानेर के बहुत से बंजर भू—भाग को सतलज द्वारा सींचे जाने की सम्भावनायें वतायीं । उस समय राजपूताना के सिंचाई परामर्शदाता इन्जिनियर सर स्विटन जैकव ये । उन्होंने भी इन प्रस्तावों का पूर्ण समर्थन किया ।

भारत सरकार भी इस मामले में सिक्रय थी। मि॰ श्रार॰ जी. केनेडी ने सन् १६०५ में प्रथम सतलज घाटी योजना तैयार की। इसके श्रमुसार बीकानेर रियासत के उत्तर का काफी भाग सिंचित होना था। वेलेकिन भावलपुर राज्य (जिसका शासक उस समय नावालिंग था) की स्वार्थी नीति इस योजना की स्वीकृति में एक बहुत बड़ी बाधा थी। यद्यपि सन् १६०६ में एक निर्णय हुत्रा पर योजना केवल १६१२ में ही स्वीकृत हुई। भावलपुर राज्य का मुख्य एतराज यह था कि चूंकि सतलज नदी बीकानेर की सीमा में नहीं है श्रतः बीकानेर को नदी के पानी में हिस्सा बँटाने का श्राधकार नहीं है। इंग्लैंड ग्रीर ग्रमरीका में नदी तट सन्वन्धी जो कान्न थे उनकी समानता पर यह एतराज ग्राधारित था। बीकानेर सरकार ने पश्चिमी राजपूताना स्टेट्स के रेजीडेन्ट को ता॰ २ फरवरी १६१६ को लिखे श्रपने पत्र में इस एतराज का खरडन किया।

माँगने का हक तो निश्चय ही नहीं माना जाना चाहिये।"

भावलपुर राज्य की रीजैंसी कौंसिल के ज्ञापन पर रिपोर्ट के पैरा १४ में उद्भुत (सतलज घाटी नहर योजना) सर ढेंजियल इवेट्सन द्वारा महाराजा गंगासिंह को ता॰ १६-१०-१६०६ को लिखा गया पत्र— "नहर के सम्बन्ध में मेरा सिद्धान्त यह है कि पानी का उपयोग भारत के लोगों के सर्वोत्तम लाभ की दृष्टि से होना चाहिये। इसमें इस बात का भेद नहीं करना चाहिये कि वे एक भारतीय राजा की प्रजा है अथवा अ ग्रेजी इलाके में रहते हैं।"

- गंगनहर के शिलान्यास के समारोह में ता॰ ५-१२-१६२५ को महाराजा गंगासिंह का भाषण ।
- गंगनहर के घिलान्यास के समारोह में ता० ५-१२-१६२५ को महाराजा गंगासिंह का भाषणा ।
- महाराजा बीकानर के निज़ी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० २६६६ A-LIV (२२४७)- सतलज नहर बोजना के सम्बन्ध में ज्ञापन, १६१६, पु० ६ ।
 परिजिष्ट २८ ।

इसी बीच पंजाव सरकार का दिष्टकोण भी असहानुभृतिपृर्ण हो गया था । भावलपुर का रुख ग्रीर भी कंड़ा हो गया श्रतः किसी समभौते पर हस्ताच्चर नहीं हो सके। तभी प्रथम विश्वयुद्ध से इस कार्य में चाधा पड़ गई। इन वाधात्रों से न घवराते हुये महाराजा इसके लिये निरंतर प्रयत्न करते रहे । इन निरन्तर प्रयत्नों के फलस्वरूप तथा महाराजा गंगासिंह के केन्द्रीय सरकार से सम्बन्धों के कारण वे वीकानेर राज्य के दावे का श्रीचित्य भारत के समच सिद्ध कर सके। सन् १९१८ में तत्कालीन पोलिटिकल सेक्रेटरी मि॰ हॉलेन्ड ने महाराजा को लिखा कि सभी सम्भव भागी-दारों के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखते हुये ऋतिरिक्त प्राप्त जल का उप-योग किया जाना चा हिये ऋौर इसमें ऋंग्रेजी इलाके ऋौर भारतीय रियासतों की सीमात्रों का कोई ख्याल नहीं किया जाना चाहिये। उसने यह भी लिखा कि सरकार को ऐसा कोई कारण नजर नहीं त्राता जिससे कि वीकानेर को सिंचाई की योजनात्रों के लाभ से केवल यह कहकर वंचित कर दिया आय कि राज्य में से कोई नदी नहीं बहती। भारत सरकार का मत था कि किसी नदी का पानी अंग्रेजी इलाके की जनता और पड़ौसी रियासतों की जनता में इस प्रकार बाँटा जाना चाहिरे कि उससे सार्वजनिक हित पूरा होने में सर्वोत्तम प्रतीत हो ।°

प्रस्तावित योजना के तकनीकी पहलू पर विचार करने के लिये दिल्ली में एक त्रिपचीय सम्मेलन अलाया गया। जैसा कि महाराजा गंगासिंह को प्रतीत हुआ, उन्होंने अपनी यह आशंका प्रकट की कि सम्मेलन तो केवल तकनीकी प्रश्नों पर विचार के लिये ही बुलाया गया है पर मावलपुर राजनीतिक प्रश्न को खुला रखने का विचार लिये हु है है। अला महाराजा ने सर

बीकानेर महाराजा के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल संख्या प्रद्र-LIV (२२३५) — सर रोवर्ट अर्सिकन हॉलैंड के पत्रांक १५५३ IB ता॰ १७-१०-१६१ प्रते संलग्न स्मरण पत्र, पृ. ४।

२. यह सम्मेलन १० श्रौर ११ दिसम्बर सन् १६१६ को हुआ।

महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्याजय की फाइल संख्या प्रह्—LIV (२२३६)— महाराजा गंगासिंह का कौंसिल के मेम्बर सर क्लॉड हिल के नाम ता० २३-१०-१९१६ का पत्र—

[&]quot;सामान्यतः ऐसे सम्मेलन में सम्मिलित होकर हम वहुत ही प्रसन्न होंगे। पर यहं स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह तकनीकी प्रश्नों पर विचार के लिये बुलाया जा रहा

क्लॉड हिल को पत्र लिखा। उसने उत्तर में यह त्राश्वासन दिया कि इस मामले के राजनैतिक पहलू पर विचार करने का कोई प्रश्न नहीं है। यदि किसी ने ऐसे विचार का ऋतुरोध किया तो वह निश्चित रूप से निषेधाधिकार का प्रयोग करेगा। क्लॉड हिल ने यह भी लिखा कि सन १६१८ के सम्मेलन में जो मूल सिद्धान्त स्वीकार किया गया, उससे हटने का उसका कोई इरादा नहीं है। सर जान डैंटन के साथ तकनीकी पहलुश्रों पर विचार करने से इसके. राजनैतिक पहलू की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होगा । उसने आगे लिखा कि वह स्वयं बहुत श्राशावान नहीं है कि तकनीकी पहलुओं में जो मतभेव है वह अधिक कम हो सकेगा । पर चूं कि पंजाव सरकार ने सभा का सफ व दिया है ग्रतः उसने सम्मेलन करना ही सर्वोत्तम समभा। उसने यह श्राशा भी प्रकट की कि श्रगले १५ दिनों में वह इस मामले में ग्रिग्रिम सुभाव देने की स्थिति में होगा । ४ सितम्बर सन् १६२० को ही एक समभौता हो सका। इस पर हस्तान्तर हुये श्रीर यह योजना स्वीकृति के लिये राज्य मन्त्री के पास भेज दी गई। पर सन् १९०५ की मूल योजना से इसमें काफी परिवर्तन कर दिया गया था। मूल योजना में वीकानेर इलाके की १८ लाख एकड़ भूमि सिंचाई के अन्तर्गत रखी गई थो पर परिवर्तित योजना के अनु-सार फेवल एक हजार वर्ग मील ही सिचाई के अन्तर्गत रखी गई। यह एक बहुत वर्दा योजना थी । इसमें ८० मील लम्बी पक्की नहर व १५७ मील लम्बी रेलवे ल इन का निर्माण तथा मन्डियों, स्कूलों, ग्रस्पतालों, पुलिस चौकियों श्रौर दूसरे कार्यालयों की स्थापना की जाने वाली थी। इस योजना पर लगभग गाढ़ेपांच करोड़ रुपये खर्च होने का श्रनुमान था। यह घनराशि जुटाना भी कोई साधारण वात न थी।

है। मावलपुर राजनैतिक प्रश्न को खुला रखने का इरादा रखता है। वह मानों यह दिखाना चाहता है कि गत वर्ष वह किसी वात पर सहमत नहीं हुआ। वास्तव में निमन्त्रण के अपने उत्तर में उसने ऐसा लिखा भी है। पर अपने उपस्थित होने की शर्त में यह स्पष्ट किया है कि अपने पूर्व शापन में विणित तकनीकी प्रश्नों के अलावा कोई पूर्वाग्रह नहीं रखेंगे। इसमें यह बात भी लोड़ दी गई है कि वे सारे मामले को अन्तिम रूप से निपटाने के पूर्ण पद्म में हैं।"

महाराजा बीकानेर के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० ८६८— LIV (२२३६)— सर क्लॉड हिल का महाराजा को लिखा गया ता० २६-१०-१६१६ का पत्र ।

यह योजना सन् १६२७ में पूर्ण हुई। नहर के उद्घाटन का समारोह २६ ग्रक्ट्रबर सन १६२७ को लार्ड इर्विन के करकमलों से हुग्रा। उस समय ग्रनेक विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। ग्रपनी एक महत्वपूर्ण ग्रिमलाणा पूर्ण होते देखकर उस दिन निश्चय ही महाराजा गंगासिंह को ग्रपार हर्ष हुग्रा। इस ग्रवसर पर लार्ड इर्विन ने ग्रपने माषण के ग्रन्त में कहा था—

महाराजा ने जो स्वप्न देखे थे, गंग नहर योजना तो केवल उसका एक भाग थी । उनकी ऋभिलाषा थी कि राज्य के ऋौर श्रिष्क इलाके सिचित हों । उन्होंने इसके लिये प्रयत्न किया । यह योजना भाखरा बाँध योजना के नाम से प्रसिद्ध है । यद्यपि इस प्रस्ताव पर सर्व प्रथम सन् १६१६ में मि. एच. डब्लू. निकलसन ने विचार किया । पर सन् १६२७ तक इसका कोई स्पष्ट परिणाम नहीं निकला । महाराजा को यह कितनी प्रिय थी इसका ऋनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जिस दिन लार्ड इविन ने गंगनहर का उद्घाटन किया उसी दिन महा—राजा ने भाखरा बाँध योजना के बारे में ऋपनी ऋगशा के बारे में उन्हें स्मरण दिलाया । यह योजना पंजाब सरकार की सिचाई की योजनाऋों में प्रतीचित स्ची में थी ऋौर लार्ड इविन के कार्यकाल में ही स्वीकृत की जाकर कार्यनिवित किये जाने वाली थी। अमहाराजा ने पंजाब सरकार ऋौर केन्द्रीय सरकार से इस प्रश्न पर बात की। २० मार्च सन् १६२६ को उन्होंने पंजाब के राज्यपाल को एक निजी पत्र लिखकर पूछा कि यह योजना कब आरम्भ होने की सम्भावना है। उत्तर लिखकर पूछा कि वह योजना कब आरम्भ

ता० २६–१०–१६२७ को शिवपुर (बीकानेर राज्य) में लार्ड इर्विन का भाषणा ।

२. पन्नीकर, हिज हाइनेस दी महाराजा ऑफ बीकानेर, ए बायोग्राफी, पृ० २६ = ।

३. महाराजा गगासिंह का शिवपुर में ता० २६--१०--१६२७ की भाषणा।

४. महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं॰ २६६६ – A-LIV (२२४७), महाराजा गंगासिंह का ता॰ २०-३-१६२६ का पत्र ।

एक बाधा खड़ी कर दी है और वह उस सवाल की जाँच करवा रहा है। "
महाराजा ने ग्रपने प्रधान मन्त्री को कहा कि वह योजना से सम्बन्धित
ग्रधिकारियों से सम्पर्क कायम करें ताकि उचित कदम उठाया जा सके।
प्रधानमन्त्री ने तुरन्त ग्रम्बाला के उप-ग्रायुक्त से सम्पर्क स्थापित किया।
वहां से बहुत महत्वपूर्ण स्चना प्राप्त हुई । सन १६३० में महाराजा ने पंजाब
के राज्यपाल को पुनः एक निजी तार मेजकर यह जिज्ञासा प्रकट की कि
इस मामले में क्या हुन्ना। "राज्यपाल ने उत्तर दिया कि बम्बई सरकार
ग्रव भी बाधक बनी हुई है और पटियाला के साथ एक कष्टदायक विवाद
खड़ा हो गया है। " सन् १६३१ में राज्यपाल ने पुनः महाराजा को स्थिति
से ग्रवगत कराया। उसने लिखा कि बुछ ग्रपूर्ण प्रस्ताव तैयार किये गये
हैं ग्रीर सम्बन्धित कई राज्यों को उनके जांच हेत् भेजे गये हैं।

३० नवम्बर सन् १९३२ को लाहीर में एक मीटिंग हुई । इसमें पंजाब ग्रीर पटियाला, फरीदकोट व नामां रियासतों के प्रतिनिधि शामिल हुये। उन्होंने इस बात का समर्थन किया कि योजना का लाम केवल पंजाब की रियासतों तक ही सीमित रखा जाय। १

इस बाँध से विलासपुर का काफी इलाका पानी में डूबने वाला था। लेकिन इस इलाके को पाने के लिये जो वातचीत हुई वह आसानी से सफल होने वाली नहीं थी। यद्यपि मूलतः यह मामला पंजाब सरकार और विलासपुर रियासत को ही ते करना था पर महाराजा गंगािंह ने स्वयं विलासपुर के राजा से सारी जानकारी प्राप्त की और अपनी राय सर

महाराजा बीकानेर के नीजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं २६६६-LIV (२२४७), पंजाब के राज्यपाल का ता॰ २३-३-१६२६ का पत्र।

महाराजा गंगासिंह द्वारा पंजाव के राज्यपाल सर ज्योफ़ द मोन्मोटरेन्सी की ता० १५-७-१६३० को मेजा गया तार ।

महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० २६६६ A-LIV, महाराजा गंगासिंह की लिखा गया पंजाब के राज्यपाल का ता० १५-७-१६३० का पत्र

४. पटियाला, नामा, जीन्द, फरीदकोट ऋीर विलासपुर ।

मीटिंग की कारवाई, विषय सं० २ ।

सिकन्दर हैयातखाँ (पंजाब के प्रधान मंत्री) को मेज दी। सर सिकन्दर हैयातखाँ ने वापस लिखा कि पंजाब सरकार के जो श्रिधकारी विलासपुर वातचीत के लिये मेजे जा रहे हैं उन्हें इस मामले से श्रवगत करा दिया गया है श्रीर महाराजा के सुभावों से मिलते जुलते निर्देश उन्हें दिये गये हैं। महाराजा ने जो इतना लम्बा पत्रव्यवहार किया, निजी विचार-विमर्श श्रीर पहुँच की, उसी का यह परिणाम था कि उन्हें सर सिकन्दर द्वारा इस योजना से सम्बन्धित फाइल पर एक टिप्पणी लिखवाने में सफलता मिली। इस टिप्पणी में कहा गया है कि जब यह योजना पूर्ण हो तो बीकानेर रियासत को श्रपने हिस्से का उचित मात्रा में जल मिलना चाहिये। दुर्भाग्य से महाराजा श्रपने इस श्रम को फलीभूत देखने के लिये जीवित न रहे।

सन १८६७-६८ में जब महाराजा ने पूर्ण श्रिषकार सम्भाले थे तो राज्य की साधारण श्राय १६,१५,३१६) ६० थी। इन विकास कायों के फलस्वरूप सन् १६३६-३७ में वह उत्तरोत्तर बढ़कर १,३५,१६,०२१) ६० हो गई। रियासत ने वड़ो रेल श्रीर नहर योजनाश्रों के लिये जो श्रूण लिये थे वे सब भी सन् १६३६-३७ तक पूर्णतः लौटा दिये गये थे। वे सन् १८६७ से १६३६-३७ की समस्त श्रवधि में रियासत का बजट वचत का रहा, केवल सन् १८६९-१६००, जो कि श्रकाल का वर्ष था, व १६२०-२१ श्रीर १६२१-२२ के वजट में ही वचत नहीं थी। सन् १६३६-३७ के वजट में ३४,४८,०००) ६० की वचत थी।

सन् १६३८ में जब जर्मनी ने चेकोस्लोवािकया के समन्न अपनी माँगें प्रस्तुत की तो योरोप में स्थिति बहुत ही तनावपूर्ण हो गई। महाराजा ने एक सैनिक की अन्तःप्रेरणा और एक राजनीतिज्ञ की दूरदर्शिता से चितिज पर उमड़ती इस कालीघटा को शीध पहचान लिया। उन्होंने तुरन्त विटिश सम्राट को एक तार भेज कर लड़ने के लिये अपनी अपनी

१. महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० २६६६ A—. LIV (२२४७) महाराजा गंगासिंह का ता० ५-१२-१६३५ का सर सिकन्दर हैयातखाँ के नाम पत्र ।

२. वही, सर सिकन्दर हैयातलों का ता॰ ११-१२-१६३८ का महाराजा गंगासिंह के नाम पत्र।

३. फोर डिकेड्स आफ प्रोग्रेस इन वीकानेर, पृ० १२२-२५ ।

४. वही, पृ० १२० ।

सेना की ग्रीर रियासन के समस्त साधनों की सेवायें उन्हें श्रार्पित की । महाराजा ने वाइसराय को भी एक तार भेजा श्रीर ये सेवायें श्रीर सहायता श्रापित की । सम्राट ग्रीर वाइसराय ने इसकी वहुत प्रशंसा की । महा—राजा सादूलसिंह ने भी, जो उस समय युवराज थे, लड़ने के लिये ग्रापनी सेवायें सम्राट को ग्रापित की । अगस्त सन् १६३६ में जर्मनी से युद्ध ग्रावश्यमभावी हो गया । भारत के राजाश्रो में सब से पहले महाराजा गंगा—सिंह ने ही २६ श्रागस्त को सम्राट को समुद्री तार तथा वाइसराय को तार भेजकर गतवर्ष के सितम्बर में सेवायें श्रापित करने की बात को पुनः दोहराया। सम्राट ग्रीर वाइसराय ने पुनः इसकी सराहना की । प्रा

३ सितम्बर सन् १६३६ को युद्ध की घोषणा की गईं। ४ सितम्बर को महाराजा ने पुनः सम्राट को समुद्रो तार भेजा श्रीर श्रपनी सेवाश्रों की वात दोहराई । ५ सितम्बर सन् १६३६ के समुद्री तार में स्वयं सम्राट ने धन्यवाद देते हुये निजी रूप से तार की पहुँच स्वीकार की। ७ युवराज सादूलसिंह ने भी लड़ने के लिये २ सितम्बर को सम्राट को श्रपनी सेवायें श्रपित की लेकिन श्रंभेज सरकार के लिये उनका श्रनुरोध स्वीकार करना श्रसम्भव था। ६ सितम्बर को महाराजा ने वाइसराय को एक तार भेज कर

१. महाराजा गंगासिंह का ता० १६-६-१६३८ की सम्राट की समुद्री तार।

ता० १७-६-१६३८ का सम्राट का समुद्री तार— "आपके कल के तार के लिये में बहुत कृतज्ञ हूं। इस चिन्ताजनक घड़ी में आपने स्वामी—मिक और श्रद्धा के जो माव व्यक्त किये हैं, मैं उनकी बहुत सराहना करता हूं।"

३. ता० १७-६-१६३८ का वाइसराय का तार ।

४. बीकानेर एन्ड दी वार (१६२६-४५), पु० २ ।

५. 龍, रू०३।

६. वही, पृ० ३।

७. वही, पु० ४ ।

[&]quot;श्रापके सन्देश के लिये में श्रापको हार्दिक धन्यवाद देता हूं इससे मुर्फें श्रत्यिक सन्तोष हुत्रा है। इस संकट के समय श्रापने स्वामी-मिक्त श्रीर श्रद्धा की मावनां से प्रेरित होकर सहायता देन का जो मूल्यवान श्रनुरोध किया है मैं उसकी बहुत श्रधिक सराहना करता हूं।"

प. बीकानेर पन्ड दी बार (१६३६-४४), पु० ५।

युद्ध कायों में लगाने के लिये सम्राट को डेढ़ लाख रुपये श्रीर १००० पौंड भेंट किये। वाइसराय ने यह भेंट कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार की श्रीर महाराजा को स्चित किया कि वह इस सहायता की स्चना राज्य मन्त्री को दे रहा है। व

महाराजा ने बीकानेर की शुतर सेना (गंगा रिसाला) में तीन कम्पनियों की वृद्धि करके उसकी लड़ने की शक्ति को लगभग हुगुना करने, भारत में सेवाओं के लिये एक दूसरी पैदल सेना बनाने, सेना की संख्या बढ़ाकर पाँच पैदल बटालियन करने, बीकानेर रेलवे वर्कशाप में हिथियार बनाने, विशेष रूप से युद्ध में घायलों के लिये बनाये गये अस्पताल में ४०० घायल सैनिकों को रखने और यातायात के लिये खच्चर देने की बात भी कही। वाइसराय ने कृतज्ञतापूर्वक इस बात को स्वीकार करते हुये कहा कि महाराजा के लिये सबसे उत्तम काम यही होगा कि वे बीकानेर राज्य की सेनाओं के विस्तार के प्रस्तावों को लागू करने में निजी रूप से देख भाल करें। रें

ग्रव काम का समय था श्रीर महाराजा ने युद्ध प्रयत्न में सिक्रिय भाग लिया। १७ श्रगस्त सन् १६४० को गंगारिसाला वीकानेर से रवाना होकर लड़ने के लिये मध्यपूर्व में पहुँचा श्रीर दिसम्बर सन् ४२ के श्रन्त में भारत लौटा। अ जब रिसाला मध्य पूर्व में था तो महाराजा गंगासिंह ने इसका निरीक्षण किया। उस समय लेखक भी उनके साथ था। इसी यात्रा के समय महाराजा गंगासिंह ने ग्रदन में गंगारिसाले को देखा। इस रिसाले ने जो काम किया उसकी सभी ने सराहना की। लार्ड वेवल ने ग्हाराजा को लिखा कि गंगारिसाले ने सर्वश्रेष्ठ काम किया है श्रीर बीकानेर की उच्च परम्परा को योग्यता से कायम

१. एक लाख रु० राज्य द्वारा श्रीर पचास हजार रु० महाराजा के निजी कोष से दिये गये थे। एक हजार पींड स्वर्गीय महारानी दादीजी श्री मिट्यानीजी साहिवा द्वारा दिये गये थे।

२. ता० ६-६-१६३६ का वाइसराय का तार ।

महाराजा गंगासिंह का वाइसराय को ता० १५-६-१६३६ का तार व १५।१५-६-१६३६ का पत्र ।

४. ता० २०-६--१६४० का वाइसराय का पत्र ।

प्र., बीकानेर एन्ड दी बार, (१६३६-४४), पृ० १४ और १६ ।

रखा है। असके नीचे गंगारिसालें ने जिस अनुशासन और प्रभावपूर्ण ढ्रंग से शानदार काम किया उसकी प्रशंसा करते हुये एयरवाइस मार्शल रीड ने महाराजा को एक सराहना का पत्र लिखा।

भारत लौटकर गंगारिसाले ने जून सन् १६४४ के अन्त तक सिन्ध में अपनी सेवायें दी और दिसम्बर सन् १६४५ में वीकानेर लौटा। इस अविध में रिसाले ने हूरों की गड़बड़ी को दबाने और टिड्डी मारने के अभियानों में भाग लिया। यहाँ भी रिसाले के काम की बड़ी प्रशंसा की गई। खिंघ के राज्यपाल ने रिसाले के सेनापित को एक प्लेट भेजी जिस पर उसकी और खैरपुर के नवाब की प्रशंसा अंकित थी। उसरी कमान के मुख्य-

- १. ता॰ १३-५-१६४९ की महाराजा के नाम लार्ड वेवल का पत्र ।
- एयर वाइस मार्शल जी. त्रार. एम. रीड का ता० २४--६--१६४१ की महाराजा के नाम पत्र ।

"श्रदन में ब्रिटिश सेनाओं के वायु सेनापित के श्रपने पद को छोहने के श्रवसर पर में विशेष रूप से श्रीमान को श्रापकी प्रसिद्ध रेजीमेन्ट गंगारिसाला की प्रशंसा में लिखना चाहता हूं। मेरे श्रधीन उन्होंने जो शानदार काम किया उसके लिये में उन्हें वधाई देता हूं।

मैंने बहुधा सुना है कि आपने और आपकी समस्त प्रजा ने सम्राट को हमेशा महान मदद दी है। अतः मैं अनुमव करता हूं कि समस्त रियासतों की सेनाओं में जो एक सर्वश्रेष्ठ सेना है उसके कार्य के बारे में आप जानना चाहंगे। मैं ईमानदारी के साथ कहता हूं कि उनके अदन में होने से बहुत प्रसन्नता हुई है। यद्यपि उनके शीर्य प्रदर्शन के अवसर यहाँ कम थे तो मी उनके व्यवहार और अनुशासन ने उन्हें प्रशंसा का पात्र बना दिया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस सेना ने समुद्र पार की अपनी इस चौथी कार्य अवधि में अपनी परम्पराओं को योग्यता से कायम रखा है।

लेपिटनेंट कर्नल खेमसिंह जी श्रीर गंगारिसाले के सभी लोगों को अब विदा करते हुये मुक्ते हादिक हु:ख हो रहा है।"

इ. राज्यपाल का ता० १७-६-१६४४ की महाराजा साद्वलिंह के नाम पत्र— "अब चू कि बीकानेर गंगा रिसाला सिंघ से बिदा हो चुका है अतः"में अपनी तथा अरनी/सरकार की ओर से अभी हाल की हुरों की गहबड़ी के समय रिसाले कार्योलय के सेनापित ने भी २५ नवम्बर सन् १६४४ को गंगारिसाले के सेना-पित को एक पत्र लिख कर रिसाले द्वारा किये गये शानदार कार्य की प्रशंसा की ।

वीकानेर की एक दूसरी सेना-सादूल लाइट इन्फेन्ट्री-समुद्र पार सेवा के लिये ता० १८ नवम्बर १६४० को वीकानेर से रवाना हुई । समुद्र पार जाने से पूर्व इस सेना की संख्या बढ़ाकर ३ से ४ कम्पनी कर दी गई थी श्रीर उसका यन्त्रीकरण भी कर दिया गया था । श्रारम्भ में इस सेना को श्रड्डों की मशीनों की निगरानी रखने श्रीर तेल खेत्रों की रखा करने के लिये लगाया गया । बाद में इसे रूस को रसद पहुँचाने के मार्ग को खुला रखने का काम सौंपा गया । यह सेना दिसम्बर सन् १६४५ में भारत लीटी ।

बीकानेर की विजय वैटरी का भारतीय रियासतों की सेनाश्रों के पहाड़ी तोपखाने के अनुसार पुनर्गठन किया गया। यह सेना शाही सेना के साथ समुद्र पार सेवा के लिये ता॰ मित्र स्वरूप रह ४१ को बीकानेर से रवाना हुई । पैदल सेनाश्रों की सहायता करने में इस सेना ने अराकान में एक महत्वपूर्ण कार्य किया। जब जापानी सेनाश्रों ने मित्र राष्ट्रों की सेना पर आक्रमण किया तो विजय वैटरी ने शत्रु को गहरी च्रति पहुँचाई श्रीर उसे श्रामे बढ़ने से रोक दिया। जब जापानी मिण्पुर की श्रोर बढ़े तो विजय वैटरी को हवाई जहाजों से वहाँ पहुँचाया गया। पाँचवीं डिवीजन के साथ मिल कर इसने दुश्मन को करारी हार दी। इसके कार्यों की बहुत प्रशंसा हुई । वीकानेर राज्य की सेनाश्रों के प्रधान सेनापित को लेक्टिनेन्ट कर्नल प्यू ने लिखा कि जापानी तोपखाने की गोलावारी के समय भी सारे लोगों

द्वारा की गई अमूल्य सेवाओं के वदले प्रशंसा करना चाहता है।

×

×

X

X

में कर्नल खेमसिंह को एक छोटी प्लेट भेज रहा हूं। इस पर मैंने और खैरपुर के शासक ने अपनी प्रशंसा अंकित कर दी है। मैं आशा करता हूं कि रिसाला इसे सिन्ध में अपनी सेवाओं की स्मृति के रूप में स्वीकार करेगा ••• ••• । ••

१. बीकानेर एन्ड दी वार (१६३६-४५), ए० १८।

२. वही प० १६-२०।

का व्यवहार, साहस छोर प्रसन्नता सराहनीय थी। युद्ध में विजय बैटरी ने जो वीरता दिखलाई छौर उल्लेखनीय कार्य किया उसकी प्रशंसा करते हुये लेफ्टिनेन्ट जनरल सर मोन्टेग्यू स्टोप्फोर्ड ने महाराजा को पत्र लिखा। लेफ्टिनेंट जनरल सर छोलियर लीज ने भी विजय बैटरी द्वारा किये गये प्रशंसनीय कार्य की सराहना करते हुये महाराजा को लिखा। 3

महाराजा गंगासिंह के शासन-काल में बीवानेर के राजधराने का केन्द्रीय सत्ता - ग्रंथेजों - के साथ सम्बन्ध बहुत ही मधुर था । दोनों के पारस्परिक हितों की हिण्ट से इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हुई । महाराजा गंगासिंह के ग्रारिमक दिनों में पोलिटिकल ग्राफसरों के हस्तक्षेप से स्थिति विकट हो जाती थी। महाराजा ने सफलता से इसका विरोध किया । लेकिन ग्रापने सद्य्यवहार के कारण महाराजा ने इन इस्तक्षेपों के कारण केन्द्रीय सत्ता के

ता० २६-६-१६४४ को लेफ्टिनेंट कर्नल एल. एच. त्रो. प्यू, त्रार. ए., द्वारा ٧. बीकानेर राज्य की सेनाश्रों के प्रधान सेनापति को लिखा गया पत्र--" • • • • • • इस मामले में मेजर किशनसिंह, उसके अफसरों और सैनिकों ने मुभे जो सहायता श्रीर श्रद्धा प्रदान की है, मैं उसकी बहुत श्रिषक सराहना करता हूं । सुक्ते निर्वाघ सहायता प्राप्त हुई है । सुक्ते यह कहते प्रसन्नता होती है कि अब मेरा सम्पूर्ण सेना का कार्यालय विजय बैटरी के खच्चरों पर ही चलता है। पीछे रहने की अपेत्ता विजय वैटरी के डाइवरों और अनेक तोपिचयों ने ढ़ाइवरों का सराहनीय कार्य करने का निश्चय किया है। पिछले महिने में सभी लोगों का व्यवहार, साहस, प्रसन्नता और श्रम सराहनीय रहा है, चाहे जापानी तोपखाने की गोलावारी हो रही हो और चाहे ६ हजार फीट से ऊँचे जंगल से द्की पहाड़ियाँ पर मानसून में कारवाई करते समय श्रसुविधा हो, वे वैसे ही रहे हैं। मुक्ते गर्व है कि ऐसे लोग मेरे नीचे काम करते हैं। मैं विशेष रूप से इस बात से प्रसन्न हूं कि विजय वैटरी के सैनिकों और जिन वैटरियों में वे इस समय काम कर रहे हैं उनके सैनिकों में परस्पर गहरी मित्रता श्रीर सहयोग की मावना है। ये लोग आपस में वह ही प्रेम से रहते हैं।"

ता० १२--१०--१६४५ को दिल्लिणी पूर्वी एशिया कमान की १२ वीं सेना के सेनापित ले० जनरज सर मोन्टेग्यू स्टोफोर्ड का महाराजा साद्लिसिंह के नाम पत्र ।

ता० १३-६-१६४५ को ले० जनरल सर श्रोलिवर लीज का महाराजा . सादूलसिंह के नाम पत्र ।

साथ त्रपने सम्बन्धों को विगड़ने नहीं दिया । राज्य के त्रान्तरिक प्रशासन में पोलिटिकल एजेंट को इस्तचेप करने का कहां तक ऋधिकार है, इस वारे में महाराजा और कप्तान वेली में कुछ मतभेद था । पर महाराजा ने ग्रपंने नाबालिंग काल में न्यायपालिका के पुनर्गठन का सारा श्रेय उसी को दिया। भहाराजा ने विभिन्न पोलिटिकल एजेंटों 🚃 गवर्नर जनरल ग्रौर वाइसराय के एजेंटों के साथ जो वृहद् पत्र व्यवहार किया वह उनके मित्रतापूर्ण सम्बन्धों का पुष्ट प्रमाण है। हम देखते हैं कि सन् १६०० में ही कप्तान वेली के साथ मतमेदों के सम्वन्ध में महाराजा को कर्नल विन्सेंट ने लिखा कि मुक्ते खुशी है कि आपने मुक्ते साफ साफ लिख दिया है। सन् १६०२ में लार्ड कर्जन ने महाराजा को स्चित किया कि राज्या-भिषेक के अतिथि राजाओं में वे भी चुने गये हैं। लार्ड कर्जन उनको अपनी सलाह दी और ऐसा करते समय उनको लिखा कि सच्चे मित्र के नाते में एक निजी पंक्ति पहले ही लिखना चाहता हूँ क्योंकि मुक्ते विश्वास है कि मैं जो कुछ कहूँगा छाप उसे ध्यान देकर सुनेंगे। ³ तत्र से यह मित्रता श्रीर भी दृढ हो गई। श्रपना पद छोड़ने से पूर्व लार्ड कर्जन ने महाराजा को लिखा कि मेरे दिल में आपके प्रति श्रद्धा हो गई है श्रतः मैं श्रापके जीवन की पत्येक घटना को बहुत ही रुचि से श्रीरं ध्यान पूर्वक देखता हूँ । भारत छोड़कर जाने पर भी मेरी यह भावना नहीं मिटेगी ।

कोलगढ़ में हुये एक दरवार में ता० २६-६-१६९० को महाराजा गंगासिंह
 का भाषण, वीकानेर स्टेट राज पत्र— असाधारण, ता० २६-६-१६९०।

२. महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल स॰ १२४-XV, ता॰ १६-१-१६०० का कर्नल एच. ए. विन्सेन्ट का पत्र— "आपके ता॰ २० के पत्र से मुक्ते कुछ चिन्ता हो गई है। मुक्ते डर है कि आप चिढ़े हुये हो। आप जानते हैं मुक्ते इस बात से बहुत खुशी होगी कि आप मुक्ते अब की तरह हमेशा साफ साफ लिखें • • • • ।"

२. महाराजा वीकानेर के निजी सचिव के कार्यालय की काइल सं० ३-VIII, तां० २४-५-१६०२ का लार्ड कर्जन का महाराजा के नाम पत्र--- "भावलपुर के नवाब की जगह राज्याभिषेक अतिथि के रूप में सम्राट की अपने नाम की सिफारिश करते हुये मुक्ते वड़ी प्रसन्नता हुई। पर एक सच्चे मित्र के रूप में में आपको एक निजी पंकि पहले से ही लिखना चाहता हूं क्योंकि मुक्ते विश्वास है कि मैं जो कुछ कहूंगा आप उसे ध्यान देकर मुनेंगे।"

४- वही, ता० १-६-१६०५ का लार्ड कर्जन का पत्र।

सन् १६०५ तक ये सम्बन्ध इतने दृढ हो गये कि जब उस वर्ष प्रिंस ग्रॉफ वेल्स भारत त्राया तो उसकी श्रमण सूची में वीकानेर भी शामिल किया गया । बीकानेर से विदाई के समय प्रिंस त्राफ वेल्स ने महाराजा को लिखा कि भारत से मैं जो मधुर स्मृतियां ले जाऊँगा उनमें बीकानेर का निवास सबसे अधिक स्मरण रहेगा । आपमें और सुक्तमें जो गहरी दोस्ती हुई है उसकी मधुर स्मृति भी मुक्ते सदा रहेगी।

महाराजा ने श्रापनी रियासत के शासन का प्रवन्ध बहुत वृद्धिमानी से किया । सम्राट के प्रति उनमें श्रविचल स्वामी-भिक्त थी । श्रंग्रेज ग्रविकारियों के साथ उनके गहरे सम्बन्ध थे। फलस्वरूप केन्द्रीय सत्ता की हिट में उनका सम्मान निरंतर बढता गया । उपर्यु क कारणों से तथा श्रपने निजी उत्साह ग्रीर योग्यता से सन् १९१० में वे उन प्रतिबन्धों को हटवाने में समर्थ हुये जो कि उन पर पूर्ण शासन श्रिधकार प्राप्त के समय लगाये गये थे।

श्री गोखले ने महाराजा को जो पत्र लिखे उनमें एक से विदित होता है कि दोनों गहरे मित्र ये श्रीर दोनों का एक दूसरे में पूर्ण विश्वास था। इस पत्र में गोखले ने महाराजा की इस इच्छा का स्पष्ट संकेत दिया है कि गोखले को वाइसराय के श्रीर श्रिधक निकट श्राना चाहिये। इसमें एक घटना का भी उल्लेख है जिससे वे दोनों निकट श्राये। केन्द्रीय सत्ता श्रीर महाराजा में मित्रता का जो गहरा सम्बन्ध था, उसी से प्रभावित होकर महाराजा ने वाइसराय तथा इस महान राष्ट्रीय नेता के वीच निकट सम्पर्क तथा श्रिधक सद्भाव बढ़ाया। भारत की राष्ट्रीय प्रगति के लिये महाराजा की यह सेवा शानदार थी।

महाराजा ने अपनी जनता के लिये दूरगामी सुधार करके अपनी गहरी समभ का परिचय दिया। सन् १९१३ में उन्होंने एक प्रतिनिधि सभा की स्थापना की। इससे वे अपनी प्रजा के प्रिय बन गये। इससे केन्द्रीय सत्ता की दृष्टि में उनका गीरव और भी बढ़ गया। सन् १९१४ के महायुद्ध में

१. दी आउस आफ वीकानेर, पृ० ४१, ता० २७-११-१६०५ का प्रिंस ऑफ वेल्स (जार्ज पंचम) का पत्र ।

२. महाराजा वीकानर के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० ६५५-XVIII (२६१A), ता० २५ फरवरी १६१२ का महाराजा के नाम श्री गोखले का पत्र, पिरिशिष्ट २६।

महाराजा ने लड़ने के लिये बारबार अपनी सेवायें अपित कीं । उन्होंने इसमें धन और जन की सहायता दी। इससे सम्राट के प्रति उनकी सहानुभूति और भी दृढ़ रूप में मानी जाने लगी। महाराजा की असाधारण योग्यता और अविचल स्वामीभित इस प्रकार सिद्ध होने से यह स्वामाविक ही या कि शाही युद्ध सम्मेलन और युद्ध मन्त्री मण्डलों में भाग लेने के लिये एक प्रतिनिधि के रूप में उनका चयन किया गया। वहाँ उनके सही निर्णय और तीव बुद्धि की वड़ी प्रशंसा हुई। महाराजा के मन में अपने देश का हमेशा ध्यान रहता था। श्री गोखले के पत्र से यह बात प्रमाणित होती है। महाराजा स्पष्ट रूप से अपनी मातृभूमि के लिये संघर्ष करते रहे और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में मांग की कि भारत में भी एक ऐसी सरकार बनाई जानी चाहिये जिससे कि इसका दर्जा भी साम्राज्य के दूसरे स्वशासित राज्यों जैसा हो जाय।

राज्य मन्त्री द्वारा स्पष्ट शब्दों में इच्छा प्रकट किये जाने पर महाराजा ने उन्हें भारत से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रश्नों के बारे में एक नोट १५ मई सन् १६१७ को दिया । यह नोट बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुआा । २० सितम्बर सन् १६१७ को अंग्रेज सरकार ने एक ऐतिहासिक घोषणा की जिसने भारत के राजनैतिक विकास के प्रवाह को मोड़ दिया । महाराजा ने अपने द्वारा लिखित नोट में न केवल ऐसा ही चाहा था बल्कि परोच् रूप से उसका संकेत भी कर दिया था ।

सन् १६१८ श्रीर १६१६ में भारत के प्रतिनिधि रूप में महाराजा का चयन संधि सम्मेलन श्रीर राष्ट्र संघ के लिये किया गया । वास्तव में उनके प्रयत्नों से ही इनमें भारत का प्रतिनिधित्व स्वीकार किया गया था। इससे भी बीकानेर के राजधराने श्रीर केन्द्रीय सत्ता के बीच मित्रता श्रीर हरा सम्बन्ध होने का प्रमाण मिलता है। पर इससे भी श्रिधिक उल्लेख-र्य बात यह है कि महाराजा के प्रयत्नों से ही राष्ट्र मंडल में भारत को समान सामेदार का दर्जा मिला। फलस्वरूप शाही सम्मेलनों श्रीर राष्ट्र-संघ में भारत को स्थायी रूप से प्रतिनिधित्व मिल गया।

महान गंगनहर की योजना बनाने और दीर्घ वातचीत के वाद र से लागू वरने में महाराजा की दूरदर्शिता, शक्ति और लच्च की एकाव्रता तो थी ही पर साथ ही इसमें केन्द्रीय सत्ता द्वारा महाराजा को प्राप्त सहयोग भी एक मुख्य कारण था। यह सहयोग उन्हें लार्ड कर्जन, सर डेंजिल इवट्-सन, सर क्लॉड हिल, सर मालकम हेली और अन्य अनेक लोगों द्वारा प्राप्त

हुग्रा था। चीन ग्रीर सीमलीलेंड के संघषों में तथा दोनों महायुद्धों में उनके द्वारा प्रदत्त सहायता इस बात का प्रमाण है कि सम्राट के प्रति उनकी त्वामीभिक्त बड़ी दृढ़ थी। सभी लोगों ने इसे स्वीकार किया है, यह बात हम कई ग्रवसरों पर देख चुके हैं।

दूसरी त्रोर महाराजा का ब्रिटिश मारत के राष्ट्रवादियों से, को भारत के लिये ब्रिटिश साम्राज्य के त्रान्तर्गत स्वराज्य या स्वतन्त्रता की मांग कर रहे थे, गहरी दोस्ती थी। श्री गोखले महाराजा के प्रति जो सम्मान का भाव रखते थे त्रोर महाराजा गंगासिंह ने श्री गोखले को जो सहयोग दिया था उसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। सन् १६२६ में पंडित मदनमोहन मालवीय ने महाराजा को सुमाव दिया कि मातृभूमि त्रौर भारतीय रियासतों के समान हित की हिट से यह वाँछनीय है कि वटलर समिति की सिफारिशों पर नरेन्द्र मसडल की स्थायी समिति पहले ब्रिटिश भारत के कुछ नेतात्रों से विचार-विमर्श करें। इसके बाद ही महाराजा गंगासिंह अपने विचार वाइसराय को बतायें। महाराजा ने परिडत मदन मोहन मालवीय को विश्वास दिलाया कि राजा लोग न तो अपने देश के हितों को खतरे में डालेंगे त्रौर न ब्रिटिश भारत की उचित राजनैतिक त्राकां सो बादक होंगे। व

सन् १६३० में गोलमेज सम्मेलन के विचार—विमर्श में कांग्रेस द्वारा भाग न लेने से महाराजा गंगासिंह खुश नहीं थे। गोलमेज सम्मेलन में महाराजा ने जोरदार शब्दों में इस बात की मांग की कि भारत को बिटिश सम्राज्य के ग्रान्तर्गत स्वशासित राज्य का दर्जा दिया जाय तथा ब्रिटिश भारत व भारतीय रियासतों का एक संघ बना दिया जाय। लेकिन उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण शर्ते भी चाही। जैसा पहले लिखा जा चुका है, सबसे महत्वपूर्ण शर्ते भी चाही। जैसा पहले लिखा जा चुका है, सबसे महत्वपूर्ण शर्ते यह थी कि सम्राट के साथ राजाग्रों के समस्तीते के ग्राधिकारों को माना जाय ग्रीर उनकी इच्छा के बिना उन्हें बदला न जाय। भारत लोट कर उन्होंने यह प्रयत्न किया कि गोलमेज सम्मेलन के ग्राग्ले ग्राधिन वेशन में कांग्रेस ग्रावश्य ही भाग ले। ५ मार्च सन् १६३१ को पंडित मदन

१. महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ३५५— XVIII (२६१), पं० मदन मोहन मालवीय का महाराजा को ता० १५-६-१६२६ का तार।

वही, महाराजा गंगासिंह का पंडित मदन मोहन मालवीय को ता० १५--६-१६२६ का तार ।

मोहन मालवीय ने महाराजा को एक तार दिया। इसमें उन्होंने महाराजा को लिखा कि कांग्रेस ग्रीर सरकार में हुये संतोषजनक सममौते की ग्रापको स्चना देते हुये मुक्ते खुशी होती है। इससे स्पष्टतः अनुमान लगाया जा सकता है कि इस मामले में महाराजा का कम से कम कुछ हाथ ग्रावश्य या। १० जून १६३१ को महाराजा ने वम्बई के ग्रापने निवास स्थान पर महात्मा गाँधी से मेंट की। इसमें उन्होंने महात्मा गांधी पर जोर दिया कि गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के भाग लेने ग्रीर महात्मा गांधी के उसमें सम्मिलित होने की ग्रावश्यकता है। उन्होंने इस वात का भी वचन दिया कि वे गांधीजी की इंग्लैएड यात्रा का प्रवन्ध करेंगे ग्रीर साथ ही जहाज पर उनके लिये एक ग्रालग रसोई घर का भी प्रवन्ध कर देंगे।

इससे स्पष्ट है कि उनमें निरन्तर तीन निष्ठायें साथ साथ काम कर रही थीं। उनकी प्रथम निष्ठा सम्राट के प्रति थी। यह उनमें धार्मिक पित्रता का रूप धारण कर चुकी थी ख्रतः वे एक च्रण के लियें भी नहीं सोचते थे कि भारत सम्राट से ख्रपने सम्बन्ध तोड़ ले ख्रयवा साम्राज्य से ख्रलंग हो जाय। उनका हढ़ विश्वास था कि भारत राष्ट्र मण्डल का एक सदस्य रहकर ही उन्नित कर सकता है ख्रीर सुरच्चित रह सकता है। उनका मत था कि भारत की सीमायें दूर दूर तक फैली हुई हैं ख्रीर वे ख्रंग्रेजी समुद्री वेड़े ख्रीर सेना की शिक्त से ही सुरच्चित रह सकती है। साथ ही भारत का व्यवस्थित ख्रीर शान्तिपूर्ण विकास ब्रिटिश संमाज्य द्वारा प्रदत्त सुविधाओं ख्रीर साधनों पर काफी निर्भर है।

श्रपनी मातृभूमि के प्रति उनकी निष्ठा उनके हृदय में सर्वदा सर्वोपिर थी। वे सच्चे मन से चाहते थे कि भारत को उसका पूर्ण राजनैतिक दर्जी प्राप्त हो। विदिश भारत को उचित श्राकां हा श्रों के प्रति उनकी सहानुभूति थी। जब कभी श्रवसर श्राया उन्होंने उसकी वैधानिक प्रगति को बढ़ाने में उदार ररीके श्रपनाने पर जोर दिया। सन् १९१७ में श्रपनो इंग्लैंड यात्रा के समय

१. महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल संख्या ३५५— XVIII (२६१), ५डित मदनमोहन मालवीय का महाराजा गंगासिंह के नाम त ० ५-३-१६३१ का तार ।

२. महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ६१४— XVIII, महात्मा गाँघी के नाम महाराजा गंगासिंह का ता० ६-७-१६३१ का पत्र, परिशिष्ट ३०।

३. वहीं, ता० ४-७-१६३१ का पत्र, परिशिष्ट ३१।

उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता की मांग का समर्थन प्राप्त किया। इससे वाद में होने वाली घटनान्नां पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा। ग्रांग्रे को यह विश्वास करा दिया गया या कि भारतीयों की ग्राकां लायें केवल विद्रोही ग्रान्दोलन का परिणाम हैं। जब महाराजा ने, जिनकी सम्राट के प्रति ग्राह्ट श्रद्धा ग्रसंदिग्ध रूप से प्रमाणित हो चुकी थी, भारत के राजनैतिक विकास की मांग की तो ग्रंग्रेजों का यह मत ग्राधिक समय तक न रह सका। उन्होंने ही स्पष्ट शब्दों में इस बात की ग्रावश्यकता बताई कि विटिश सरकार को सीधे ग्रीर ग्राधिकत रूप में यह घोषणा कर देनी चाहिये कि उसका मूल उद्देश्य भारत को स्वराज्य प्रदान करना है। उन्होंने इस मय का निराकरण किया कि राजा लोग ऐसी कारवाई को नापसन्द करेंगे। राजान्नों में से एक होते हुये उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि भारतीय राजा इसी घरती के सपूत हैं। वे इसके सुधार के मार्ग में बाधक बनने की ग्रपेद्धा उसमें ग्रानन्द को ग्रानुभव करेंगे। उन्होंने इस बात से ही संतोप नहीं किया बल्कि इस बात पर भी जोर दिया कि मारत में सुधार उदार एवं सहानुभूति की भावना के साथ साथ शीव्रता से किये जायं। उनका मत था कि 'श्रामस्य शीव्रम्'।

राजतन्त्र, अपनी रियासत और अपनी प्रजा के प्रति मी उनकी निष्ठा बिल्कुल स्पष्ट थी । उनका कहना था कि मुगलों से पूर्व भी भार-तीय रियासतों का अस्तित्व या स्रोर वे पूर्णसर्वाधिकार सम्पन्न थीं । उनका मत या कि युग की विचित्र परिहिथतियों के कारण अंग्रेज सरकार के साथ जो समकौते हुये वे शब्दवद प्रतिज्ञायें थीं जिनका पालन किया जाना चाहिये। जव उन्होंने देखा कि राजनैतिक व्यवहार ग्रीर परम्परा द्वारा उन समभौतों की घिज्यां उड़ाई जा रही हैं तो उन्होंने स्वयं सर्वोच्च सत्ता की उच्छ -खलता से संवर्ष करने का निश्चय किया। मारतीय रियासतों की रियति के सम्बन्ध में उन्होंने अपने विचार वहुत ही हदता और स्पष्टता के साथ श्रंगेज सरकार के समज्ञ रखे । श्रंगेज सरकार ऐसे शब्द सुनने की श्रम्यस्त नहीं थी। महाराजा गंगासिंह को ही इस बात का श्रेय है कि वे राजनीतिक व्यवहार में परिवर्तन कराने में सफल हुये । इससे रियासतों के प्रति सर्वोच्च सत्ता की नीति बदल गई छौर राजाछों को हमेशा के लिये लाभ हुछा। त्रातः यह स्वभाविक ही था कि जन नई व्यवस्था वनने वाली थी तो उन्होंने मंधि में दिये गये ग्राधिकारों के उपयुक्त बचाव पर जोर दिया ताकि मविष्य में उन्हें न मिटाया जा सके। उनका भय निर्मृल नहीं था। मारतीय रियासतों के प्रति निंदा और अप-शब्दों का एक अन्धाधुं ध आन्दोलन

चल रहा था।

ब्रिटिश भारत के आन्दोलनकारियों की हरकतों से वे अशान्त थे। महात्मा गांधी ने अपनी विलक्षण पद्धित में राजाओं को अपनी ओर से सलाह दी कि वे "एक ऐसे संगठन (कांग्रेस) से जो भविष्य में बहुत जल्दी, हमें आशा करनी चाहिये कि दोस्ती की तरह, सर्वोच्च सत्ता का स्थान लेना चाहता है, मेल करे।" कांग्रेस का कहना था कि रियासतों के साथ ब्रिटेन के सम्बन्ध भारत पर उसके अधिकार के फलस्वरूप थे और ज्योंही वह अधिकार समाप्त होगा त्योंहो उन सम्बन्धों का भी कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। यही कारण था कि महाराजा को बचाव की माँग करनी पड़ी। वे पूर्ण आन्तरिक स्वायत्तता की वैधानिक गारन्टी और समभौते में दिये हुये अपने अधिकारों को चालू रखना चाहते थे। वे यह भी आश्वासन चाहते थे कि किसी भी भावी संघ में राजाओं का प्रवेश उनकी स्वेच्छा से होना चाहिये और उनकी स्थित समान मागीदार जैसी होनी चाहिये। आत्म जीवन की मूल मानवीय प्रवृति की हिंग्ट से भी महाराजा द्वारा रखी गई शर्तों को अनुचित कहकर उनकी आलोचना नहीं की जा सकती।

इन परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली निष्ठान्नों के प्रति लगाव के कारण कई वार गलतफहमी पैदा हुई। एक न्नोर महाराजा गंगासिंह राजनैतिक (विदेश) विभाग के लिये उलक्षन थे। वह उनके मन की गहराई को नहीं जान सका। उनमें सम्राट के प्रति न्नाती स्वामीमिक्त थी। यदि कोई उनके न्नाधिकारों को छीनने का प्रयत्न करता तो वे उसके लिये संवर्ष करते। स्वातन्त्र्य न्नान्दोलन के प्रति वे न्नपनी देशमिक्त पूर्ण भावनावों को निडरता न्नौर न्नातन्त्र्य न्नान्दोलन के प्रति वे न्नपनी देशमिक्त पूर्ण भावनावों को निडरता न्नौर न्नातन्त्र्य न्नान्दोलन के प्रति वे न्नपनी देशमिक्त पूर्ण भावनावों को निडरता न्नौर न्नात्र्य उत्ति उत्ति हो मानदारी में सन्देह प्रकट करते कि वे निटिश भारत की प्रगति का समर्थन सन्चे मन से करते हें या नहीं। पर ये त्राकेले महाराजा गंगासिह हो थे जिन्होंने तीनों को एक मधुर योजना में जोड़ दिया। सम्राट के उत्त्रण में उन्होंने एक ऐसे संघ की कल्पना की जिसमें भारतीय रियासतें समान जागीरदार के रूप में मानी जाने वाली थीं श्रीर राजान्नों को सीधे वाइसराय की देख रेख में रखकर उनके विशेषा-धिकार न्नौर समसीते के न्नाधिकार सुरिक्त रखे जाने वाले थे।

१. माइनेल एडवर्डस्, दी लास्ट इयर्स ऑफ ब्रिटिश इन्डिया, टु॰ १८९ ।

कुछ काल ग्रस्वस्य रहने के उपरान्त महाराजा गंगासिंह का २ फरवरी सन १६४३ को प्रातः ५-२५ पर ग्रपने वम्बई के निवास स्थान पर स्वर्गवास हो गया। ग्रपनी ग्रन्तिम श्रद्धांजिल ग्रपित करने हेतु वम्बई के राज्य पाल का एक प्रतिनिधि ग्रीर काश्मीर, ग्वालियर ग्रादि कई रियासतों के राजा ग्राये। प्रातः ६ वजे एक विशेष विमान द्वारा शव बीकानेर लाया गया जहां उनका ग्रन्तिम संस्कार किया गया। उनके स्वर्गवास से हमें, विशेषतः मुक्ते जो हानि हुई उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि मेरे प्रति उनका बहुत ही दुलार ग्रीर घान या। हमें यह देखकर बहुत धैर्य मिला कि हमारे शोक में बोकानेर का प्रत्येक नागरिक सम्मिलित है। महाराजा की मृत्यु का शोक केवल उनके परिवार ग्रीर उनकी प्रजा को ही नहीं हुग्रा बल्कि समस्त भारत ग्रीर विदेशों में भी ग्रनुभव किया गया।

वनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में एक शोक सभा हुई । भारत के वर्तमान राष्ट्रपति श्रं। सर्वपल्ली राधाकृष्णन् उस समय हिन्दू विश्व-विद्यालय के उपकुलपित थे। उन्होंने उस शोक सभा में कहा "इस विद्यालय में उनकी ग्रसीम रुचि थं। जहां तक इस विश्वविद्यालय श्रीर हिन्दू ग्रादशों के वढाने का प्रश्न था वे ग्रपने उत्साह में ग्राहितीय थे। उनके रूप में हमने इस विश्वविद्यालय का एक महान संरक्षक, एक महान मित्र जिसके प्रीट निर्ण्य ग्रीर मधुर ग्रानुभय का हम हमेशा विश्वास कर सकते थे, खो दिया। उनका ऐसा उत्तराधिकारी पाना रूरल नहीं होगा जो विश्व-विद्यालय में इतनी गहरो रुचि ले सके। "

इस अवसर पर भारत सरकार द्वारा काली रेखाओं से घिरा एक असाधारण गजट निकाला गया। महाराजा को अद्धांजिल अर्थित करते हुये वाइसराय ने वहा, "उनका जीवन कठिन और वैविध्यपूर्ण प्रवृतियों का था। महाराजा साहब ने अपने अनुपम गुणों और प्रभावशाली व्यक्तित्व से जीवन में प्रसिद्धि और ख्याति का एक असाधारण स्थान आस किया। अपनी रियासत में उन्होंने प्रगति और समृद्धि के एक नये युग वा स्त्रपात किया नरेन्द्र मण्डल में उन्होंने महान कार्य किया जिसका भारतीय इतिहास में अपना स्थान होगा। हाम्राज्य और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के अधिक व्यापक च्लेत्र में

१. स्टेट्समेन ता० ५-२-१९४३।

उन्होंने केवल ग्रंपनी इंज्जत ही नहीं बढ़ाई बिल्क ग्रंपनी मातृभूमि के लोगों घ राजाग्रों का भी सम्मान बढ़ाया। '' वाइसराय ने महाराज कुमार सादूलसिंह को संवेदना का एक तार भी भेजा। इसमें कहा गया था कि महाराजा की मृत्यु केवल राजाग्रों की ही नहीं बिल्क भारत ग्रौर साम्राज्य की भी हानि है। '

भारत के राज्य मन्त्रो मि॰ एमरी ने कहा, "वोकानेर के महाराजा की मृत्यु से भारत ने ऋपना सर्व प्रसिद्ध सार्वजनिक व्यक्ति तथा साम्राज्य ने प्रथम श्रेणी का एक सैनिक राजनीतिश खो दिया है।"

लार्ड वेवल के एक निजी तार के अतिरिक्त सर्वोच सेनापित ने भी महाराज कुमार को एक संवेदना का तार भेजा । इसमें उसने कहा कि श्रीमती वेवल और भारतीय सेना, जिसके महाराजा आनरेरी कर्नल थे, अपनी संवेदना उसके साथ ही भेज रहे हैं।

लंदन डेली टेलिग्राफ में एक पत्रकार ने लिखा "रजत जयन्ती समारोह में घोड़ा गाड़ी में सेंट पाल्स जाते हुये उनके महान व्यक्तित्व को लंदन याद करता है। तत्र ग्रमंदिग्ध रूप से यह वही राजा थे जिनके सर विलियम ग्रापरेन, ग्रीर सर जैम्स गैटिन ने युद्ध नेताग्रों के बीच सुन्दर ढ़ंग से वर्णन किया है। वे तब भी गौरव ग्रीर सुन्दर ग्रामहित वाले थे जो एक उच्च राजकुल की द्योतक थी। उनकी भूरी ग्रीर सुन्दर ग्रामंखें ग्रानन्द-मग्न भीड़ का ग्रमिवादन ग्रपनी चमक द्वारा स्वीकार करती थी।"

सर एडवर्ड ड्यूरांट ने "फील्ड" में लिखा, "उनके स्वर्गवास से ब्रिटिश साम्राज्य का एक सर्वाधिक निष्ठावान सलाहकार, श्रीर शिकार का एक सर्वाधिक निष्ठावान श्रीर चतुर नायक खो गया है। निजी मित्रों को उनकी मृत्यु से कभी पूर्ण न होने वाली चृति हुई है।" ^१

"टाइम्स ग्राफ इन्डिया" द्वारा महाराजा का जीवन बहुत ही सुन्दर ढ़ेंग से इस प्रकार व्यक्त किया गया है "महाराजा का जीवन वीरता

१. स्टेटसमैन ता० ४-२-१६४३।

र. वही, ता० ४--२-१६४३ ।

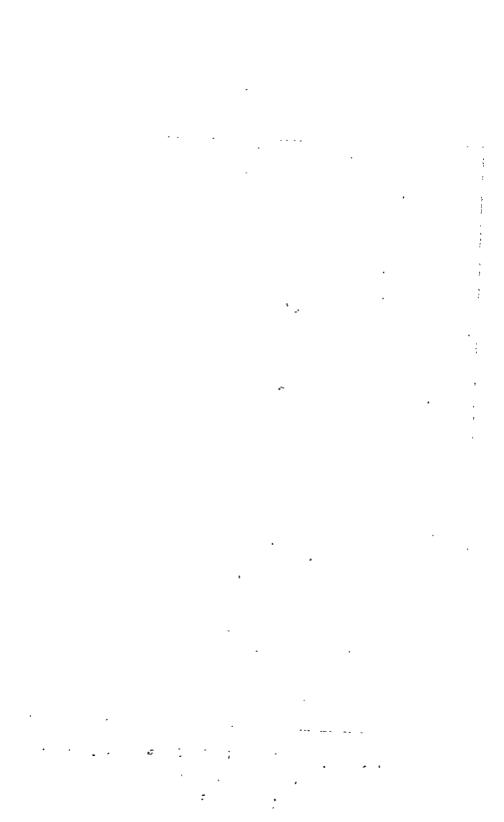
३. दी टाइम्स श्रॉफ इन्डिया ता० ४-२-१९४३ ।

४. स्टेटस्मैन ता० ६-२-१६४३।

दी हिन्दू ता० ७-२-१६४३।

६. दी फील्ड ता० २०-२-१६४३।

श्रीर स्थायी उपलिष्धियों का एक शानदार रेकार्ड था । श्रपने जीवन के ६३ वर्षों में उन्होंने श्रिषकांश, एक श्रादर्श एकाश्रता से श्रपनी जनता की सेवा के लिये, श्रपने देश की सेवा के लिये श्रीर ब्रिटिश राष्ट्र मंडल की सेवा के लिये विताया। ऐसा कर के उन्होंने बीकानेर को प्रसिद्ध कर दिया श्रीर स्वयं भी विश्व में प्रसिद्ध हो गये। ""





लेफ्टिनेन्ट जनरल हिज़ हाईनेस महाराजा श्री सादृलसिंहजी बहादुर, बीकानेर (राजस्थानी साफे में) १९४३-१९४६

भारत के एकीकरण में बीकानेर का योग

महाराजा सादूलसिंह का जन्म ७ सितम्बर सन् १६०२ को हुआ।

था। २ फरवरी सन् १६४३ को महाराजा गंगासिंह का स्वर्गवास होने पर
वे वीकानेर के २२ वें शासक के रूप में गद्दी पर बैठे। १८ वर्ष के वालिगहोने से पूर्व उन्हें विभिन्न मंत्रियों और उच्चाधिकारियों के साथ रखा गया
ताकि उन्हें प्रशासन का व्यावहारिक शिच्चण प्राप्त हो सके। जब यह वालिग
हुये तो महाराजा गंगासिंह ने विधिवत् दरबार करके उन्हें मुख्यमंत्री के
अधिकार प्रदान किये। इस पद पर वे साढ़ेचार वर्ष रहे। इस प्रकार जब
वे बीकानेर के शासक हुये तो राज्य प्रशासन का उन्हें पूर्ण ज्ञान था।

महाराजा सादूलसिंह के ६ वर्ष के राज्य – काल में रियासतों श्रीर ब्रिटिश भारत में महान राजनैतिक उथल – पुथल श्रीर क्रांन्ति— कारी परिवर्तन हो रहे थे। स्वयं बीकिनर रियासत में सरकार के रूप को श्रीर श्रिषक जनतान्त्रिक बनाने के लिये श्रानेक कदम उठाये गये। इसी श्रवांध में भारत को द्वितीय महायुद्ध के संकट में से निकलना पड़ा श्रीर भारत इसी समय मन्दगति से, पर निश्चित रूप से, स्वतन्त्रता प्राप्ति की श्रोर बढ़ा।

महाराजा सादूलसिंह का शासन काल बीकानेर राजधराने और

महाराजा बीकानर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० २२७५— XXVI, भाग २ – बी, महाराजकुमार सादूलसिंह के वालिंग होने पर ता॰ ६-६-१६२० को महाराजा गंगासिंह का माष्ण ।

सन् १६२५ के आरम्म में महाराज कुमार सादूलसिंह ने प्रार्थना की कि उन्हें मुख्य मन्त्री के पद से मुक्त कर दिया जाय । अनिच्छा होते हुये मी उनका यह आहरीय मान लिया गया ।

केन्द्रीय सत्ता के बीच राजनैतिक सम्बन्ध की घटनात्रों से मरा हुत्रा था। महाराजा के राज्यारोहण के बाद की प्रथम घटना भारत सरकार का वह निर्णय था जिसके अनुसार अन्य रियासतों की तरह वीकानेर का राजनैतिक सम्बन्ध पोलिटिकल एजेंट के माध्यम से कायम रखना था। पहले यह सम्बन्घ सीघा राजपूताना के रेजीडेंट के माध्यम से या। इसे बदल कर ग्रव पनः पोलिटिकल एजेंट के माध्यम से कर दिया गया । बीकानेर के लिये पोलि-टिकल एजेंट पश्चिमी राजपुताना की रियासतों का रेजीडेंट था । भारत सरकार का राजनैतिक विभाग महाराजा गंगासिंह की इस सफलता से प्रसन्न नहीं या कि वे सीधे राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित कर लें। सारी रियासतों में केवल बीकानेर को हो यह विशेषाधिकार मिला हुन्ना था । ग्रातः मिला राजनैतिक विभाग ने सीधे सम्बन्ध का विशेषाधिकार समाप्त कर दिया। वास्तव में ७ मार्च १६४३ का एक स्मरण लेख मिलता है। इसमें रेजी-डेंट के साथ होने वाली बात के विषय लिखे हैं । इससे पता चलता है कि मार्च सन् १९४३ को महाराजा के राज्यारोहरण पर उन्हें वाइसराय का खरीता भेंट करने से पूर्व ही इस विषय में उनकी सहमित माँगी गई थी ख्रीर उन्हें देनी पड़ी थी। यह केवल ग्रीपचारिकता के कारण था कि इस परिवर्तन को लागु करने की ग्राधिकृत सूचना कुछ समय बाद दी गई ।2

खरीता भेंट करते समय रेजीडेंट ने अपने भाषण में कहा कि महाराजा विश्व इतिहास के एक विकट समय में गद्दी पर ठैठें हैं। श्रीर रियासत ग्रिधिक समय तक वाहरी प्रभावों से ग्रिछूती रहने की ग्राशा नहीं रख

१. महाराजा वीकानर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ४६-XXVI, माग ३। इसका समर्थन महाराजा सादूलसिंह द्वारा जोधपुर स्थित पिरचमी राजपूताना रियासतों के रेजीडेंट मेजर पिलंग्टन को ता० २३-३-१६४३ को लिखे गयं पत्र से भी होता है— महाराजा बीकानर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ११०-XV।

२. महाराजा वीकानेर के निजी सिचिव के कार्यांलय की फाइल सं० १८४० XIV, कर्नल जी. वी. वी. गिलन (राजपूताना के रेजीडेंट) का महाराजा सादूलसिंह के नाम पत्रांक सी/२१-४३ ता० २५-३-१६४३ । महाराजा वीकानेर के निजी सिचिव के कार्यांलय की फाइल सं० १०-XV, मेजर पन. एस. पिलेंग्टन (पिश्चिमी राजपूताना की रियासतों का रेजीडेंट) का महाराजा सादूलसिंह के नाम ता० २१-३-१६४३ का पत्र । महाराजा बीकानेर के निजी सिचिव के कार्यांलय की फाइल सं० १८४८ का पत्र । महाराजा बीकानेर के निजी सिचिव के कार्यांलय की फाइल सं० १८४२ का पत्र ।

सकती । उसने ग्रागे कहा कि ग्रायिक ग्रन्तिर्भरता, यातायात की सुविधान्नों ग्रीर गित में वृद्धि, समाचारपत्रों ग्रीर रेडियों द्वारा बाह्य विचारों का प्रभाव, ग्रादि कारणों से रियासत ग्रिधिक समय तक स्वसीमित या ग्रात्मिनिर्भर नहीं रह सकती । उसने ध्यान दिलाया कि भारत के लोगों का विकास समस्याएँ उत्पन्न करेगा । ऐसी स्थित में ग्राशा है कि महाराजा नये राजनैतिक विचारों के विकास के साथ साथ लाभकारी का उपयोग करना ग्रीर हानिकारक का त्याग करना जान जायेंगे ।

स्रपने उत्तर में महाराजा ने कहा कि मैं जानता हूँ कि विश्व एक श्रद्धितीय स्रपार संकट से गुजर रहा है स्रीर संघर्ष के बाद यह निश्चय ही दूरगामी स्रीर सबको प्रभावित करने वाले परिवर्तन लेकर सामने स्रायेगा। उन्होंने कहा कि मुक्ते विश्वास है कि नये स्रीर शक्तिशाली विचारों के प्रवाह से तथा बाह्य प्रभावों से रियासतें स्रधिक समय तक स्रप्रमावित नहीं रह सकतीं। मैं स्रतुभव करता हूँ कि शासक के लिये दूरदर्शी होना बहुत स्रावश्यक है।

श्रपने राज्यारोहण पर महाराजा ने "प्रजाहित व्रतिनो वयम्" (श्रपनी प्रजा की सेवा में) को श्रपना लच्च श्रौर मार्ग दर्शक सिद्धांत घोषित किया। ता॰ प्रमार्च १६४३ के श्रपने भाषण में उन्होंने इस बात को दोहराया कि वैधानिक सुधार लागू करने के मामले में में श्रपने यशस्वी पिताजी का श्रनुसरण करूँगा। उन्होंने यह प्रवल श्राशा प्रकट की कि राज्य की जनता राज्य के प्रशासन से उत्तरोत्तर श्रधिक सम्वन्धित हो।

जब महाराजा सादूलसिंह गद्दी पर विराजे तो द्वितीय महायुद्ध बड़े जोरों से चल रहा था। युवराज काल में उन्होंने पहले भी लड़ने के लिये अपनी सेवायें अपित की थीं। अब उन्होंने पुनः युद्ध में जाने की इच्छा व्यक्त की। महाराजा बनने के बाद उन्होंने ता० २५ जुलाई सन् १६४३ के पत्र में फिर यह बात दोहराई। इस बार उनकी इच्छा स्वीकृत हुई। अपने द्वितीय पुत्र महाराज कुमार अमरसिंह के साथ महाराजा ता० २६ अक्टूबर सन् १६४३

महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ४१— XXVIII, माग ३। वीकानेर में खरीता दरवार में ता० ५-३-१६४३ को राजपूताना के रैजीडेंट का माष्या।

२. वही, ता॰ ५--३--१६४३ को महाराजा सादूलसिंह का माषण ।

३. वही।

४. वही ।

को बीकानेर से रवाना हुये। उन्होंने ईरान स्थित सादूल-लाइट इन्फेन्ट्री, इराक रिथत बीकानेर की ४६ जी. बी. टी. कम्पनी तथा अन्य रियासतों की सेनाओं, शाही सेना और मित्र राष्ट्रों की सेनाओं का निरीक्षण किया। इसमें चीयी मारतीय डिवीजन और ३१वीं मारतीय और वख्तरबन्द डिवीजन समिलित है। नवम्बर सन् १६४३ में वे मारत लौटे और बीकानेर लौटते समय मार्ग में उन्होंने गंगारिसाले का निरीक्षण किया जो उन दिनों सिन्ध में नियुक्त था।

नवम्बर सन् १६४४ में महाराजा पुनः श्रासाम-वर्मा युद्ध मोर्चे पर गये । वहाँ बीकानेर विजय वैटरी जापानियों के विरुद्ध युद्ध-रत थी । दिसम्बर सन् १६४४ में महाराजा बीकानेर लौट श्राये । वीकानेर लौटते समय जब महाराजा कलकत्ता से गुजरे तो वहाँ न्यापार के लिये वसे हुये बीकानेर के एक लाख से श्राधिक लोगों ने श्रापका महान स्वागत किया । महाराजा श्रीर उनके स्टाफ को १६३६--४५ का स्टार, बरमा स्टार, डिफेंस मेडल श्रीर वार मेडल प्राप्त हुये । व

वीकानेर ने युद्ध में जो दूसरे महत्वपूर्ण योग दिये उनमें दूसरी श्रीर तीसरी इन्फेन्ट्री बटालियनों का गठन है, एक इन्फेन्ट्री प्रशिच्या केन्द्र, एक तोपखाना प्रशिच्या केन्द्र श्रीर एक गार्ड बटालियन का गठन है। इसके श्रितिरक्त बीकानेर में एक युद्ध बंदी शिविर खोला गया श्रीर युद्ध में षायलों श्रीर वीमारों के लिये दो सैनिक श्रस्थताल खोले गये। फरवरी सन् १६४४ में लार्ड श्रीर लेडी वेवल ने तथा सन् १६४५ में लेडी माउन्ट-वेटन ने इन सैनिक श्रस्थतालों का निरीच्या किया श्रीर उनकी बहुत प्रशंसा की। श्रीर छोटे टैंक श्रीर वायुयान खरीदने, भारतीय श्रीर श्रीज सैनिकों को

ч.

१. वीकानेर पन्ड दी वार (१६३६--४५),पू० न ।

२. वही, पृ० ६ ।

महाराजा साद्र्लसिंह को मिली उपाधियाँ, पदक, सम्मान आदि की एक सूची परिशिष्ट ३२ में दी गईं-है-।

४. दूसरी इन्फेन्ट्री वटालियन का नाम बाद में करणी इन्फेन्ट्री कर दिया गया था।

लार्ड नेवल ने अपनी सम्मित इस प्रकार लिखी है—
"मेरी पत्नी और मैंने ३ फरवरी को सैनिक अस्पताल सं० १ का निरीक्षण
किया। रोगियों की सुविधा और उपचार के लिये यहाँ जो कुछ किया जाता
है उससे तथा इसकी कार्य कुशलता से हम बहुत प्रमानित हुये हैं।"

सुविधायें देने, लंदन के लोगों की सहायता करने तथा रैडक्रॉस जैसे ग्रन्य सहायता कायों के लिये महाराजा के निजी कोष ग्रीर रियासत की ग्रीर से १५,१६,०६३ ६० ६ ग्राने २ पाई की ग्रार्थिक सहायता दी गई। महाराजा ग्रीर वीकानेर राज्य की सेनाग्रों ने विभिन्न युद्ध सेवाग्रों में जो योग दिया उसके उपहार स्वरूप सर्वोच्च सेनापित ने महाराजा को २३ दिसम्बर सन् १६४६ को एक तोप मेंट की। बीकानेर में यह तोप लेफ्टिनेंट जनरल सर फ्रांक मैसरवी द्वारा प्रदान की गई। इस ग्रवसर पर भाषण देते हुथे उसने बीकानेर राज्य की विभिन्न सेनाग्रों द्वारा प्रदत्त सहायता की भूरि-भूरि प्रशंसा को। दिल्ली पूर्वी एशिया की

लेडी माठनट बैंटन ने इस प्रकार लिखा-

"रोगियों का जो अत्यधिक ध्यान रखा जाता है उससे तथा सर्वोत्तम निवास एवं शानदार सामग्री से मैं बहुत प्रमावित हुई हूं। मुक्ते ज्ञात है कि स्वयं श्रीमान् की गहरी और निजी रुचि से इन अस्पतालों में बहुत अन्तर आ गया है। इससे यहाँ काम करने वालों और उपचार कराने वालों का उत्साह बहुत बढ़ गया है। अन्य कई वातों के अलावा इससे युद्ध प्रयत्नों में जो महान योग मिला है, मैं उसकी चर्चा सम्राट और सम्राजी से करूँगी।" ——बीकानेर एन्ड दी वार (१६३६--४५), पृ० ४६।

- १. बीकानेर एन्ड दी वार (१६३६--४५), पृ० २६-७५।
- २. वीकानेर बुलेटिन, वर्ष ४ अंक ४, जनवरी १६४७, पृ० ७-५, २३ दिसम्बर सन् १६४६ को वीकानेर में दिया गया लेफिटनेंट जनरल सर फ्रेंक मैसरवी का माषण— "सन् १६३६-४५ के विश्वबुद्ध में श्रीमान ने और वीकानेर राज्य की सेनाओं ने जो सेवायें प्रदान की हैं उनके उपहार स्वरूप महामना सर्वोच्च सेनापित और भारतीय सेना की ओर से यह तोप भेंट करते हुये मुक्ते बड़ी इसन्नता होती है।

× × × ×

भारतीय रियासतों की सेना त्रों में गंगारिसाला सबसे पहला था जो रियासत से बाहर समुद्र पार लड़ने के लिये गया। साढ़े चार वर्षों तक यह सेना समुद्र पार देशों में और हूरों के विरुद्ध सिंघ के रैगिस्तान में कारवाई कर के राज्य में लीट क्राई।

वाहर जाने वाली दूसरी सेना सादूल लाइट इन्फेन्ट्री थी। इसने रियासत से वाहर पाँच वर्षों से अधिक समय तक सेवार्ये दी। इसने अपने अनेक सैनिक कार्य उत्साह और योग्यता से किये। इसके वाद मैं विजय वैटरी विजय में बीकानेर के योगदान के उपहार स्वरूप महाराजा को जापानी श्रफसरों की एक तलवार भी भेंट की गई। यह तलवार जापानियों द्वारा दिल्णी पूर्वी एशिया कमान में मित्र राष्ट्रों की सेनाश्रों को समर्पित की गई थी। दिल्णी पूर्वी एशिया कमान की श्रोर से महाराजा को एक युद्ध स्मारिका भी भेंट की गई।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि बीकानेर के राजघराने ने हमेशा ग्रापने वचनों का पालन किया है ग्रीर संघि को शतों के श्रानुसार बराबर सम्राट का साथ दिया है। जब कभी श्रावसर श्राया है सम्राट की सेवा में वीकानेर रियासत की सेनायें ब्रिटिश साम्राज्य की सेनाश्रों के कंधे से कंधा लगा कर लड़ी हैं। महाराजा सादूलसिंह के शब्दों में "जब से सम्राट के साथ बीकानेर का समस्तीता हुशा है तब से साम्राज्य की शायद ही कोई ऐसी बड़ी सैनिक कारवाई हो जिसमें बीकानेर की सेना ने श्रापना महत्वपूर्ण

का श्रवश्य उल्लेख करूँ गा। इसने सन् १६४१ से सन् १६४५ तक पहले उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त में तथा वाद में सातवीं मारतीय डिवीजन में वर्मा में सेवायें दी। मैं डेढ़ वर्ष तक सातवीं मारतीय डिवीजन का सेनापित रहा। उस श्रविष में विजय वैटरी को श्रपने सेनापितत्व में पाकर मुभे गर्व हुआ। जिन श्रमेक युद्धों ने सातवीं मारतीय डिवीजन को ख्याति दी उनमें विजय वैटरी की वीरता श्रीर योग्यता के प्रति मैं व्यक्तिगत रूप से श्रद्धा—नत हूं।

इन प्रसिद्ध सेनात्रों के त्राति एकत ४६ जी. टी. कम्पनी और वीकानेर रियासत के काफी लागों द्वारा भारतीय सेना में भर्ती होकर बहुत शानदार काम किया गया।

इन वहादुर सेनाओं के पीछे हर समय श्रीमान और बीकानर रियासत के लोगों की शक्ति थी जो अपने अधीन प्रत्येक उपाय से युद्ध प्रयत्नों को बढ़ावा दे रहे थे। युद्ध के विभिन्न मोर्चों पर श्रीमान् ने अपने निरी-च्लिए के समय वीकानेर रियासत के और मारतीय सेना के बीकानेर रियासत के लोगों को जो उत्साह प्रदान किया, वह मुक्ते ज्ञात है।

श्रीमान् ने श्रौर श्रापकी जनता ने हमें जो वहुमूल्य सहायता दी उसके लिये में महामना सर्वोच सेनापित श्रौर समस्त भारतीय सेना की श्रोर से श्रामार एवं कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

२. वीकानेर बुलेटिन वर्ष ४ श्रंक ६, अप्रैल १६४७, पृ० १७।

भाग ग्रदा न किया हो।

युद्ध की सफल समाप्ति में यथासम्भव महत्वपूर्ण योग देने की महाराजा की गहरी इच्छा थी। साथ ही वीकानेर को जनता की भलाई ग्रीर राज्य के प्रशासन के साथ उसे सम्बन्धित करने का अपना वचन भी हमेशा उनके ध्यान में रहता था । ये वातें उनके मन में सदा सजग रहती थीं। चीकानेर का ग्राधिकांश भाग 'थार' रेगिस्तान के ग्रान्तर्गत है। यहां पानी सुलभ कराने श्रीर यहां के निवासियों के लिये पीने के पानी का प्रवन्धं करने के प्रश्न को महाराजा ने प्राथमिकता प्रदान की । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सर्व प्रथम महाराजा ने सम् १६४३ में 'सादूल जल प्रदाय ऋौर प्रामीण पुनर्निर्माण कोष" वनाकर उसमें ४० लाख रुपये दिये। ³ राज्य के विकास में वीकानेर के लोगों को समर्थ बनाने की दृष्टि से उन्हें शिच्चित करना भी उन्हें बहुत प्रिय था। सन् १९४५ में महाराजा ने शिक्ता विस्तार की वृद्धि में प्रेरणा देने हेत दो छात्रवृत्तियाँ ग्रारम्भ कीं। ये रहकी इन्जिनियरिंग कालेज में पढ़ने के लिये थी श्रीर बाद में यहाँ से वीकानेर के योग्य विद्यार्थियों को ग्रमरीका में प्रशिक्ण की भी सुविधायें प्रदान की गईं थीं। इसके लिये पाँच हजार पौंड की रकम प्रदान की गई। वहुद् भारत छात्र-ष्ट्रित्तयों के लिये महाराजा ने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय को भी ४ लाख रुपये प्रदान किये। इस रकम से ७५) रुपये प्रति मास की १३ छात्रवृतियाँ दी जाने वाली थीं। इनमें से 🗕 छात्रवृतियाँ तो विश्व के विभिन्न भागों में बसें भारतीय विद्यार्थियों के लिये यीं श्रीर शेष पाँच कम्बोडिया, स्याम, इराडी-नेशिया, लाग्रोस ग्रौर बाली द्वीप समूह के एक एक विद्यार्थी के लिये यीं। १ इसके अतिरिक्त बनार्स हिन्दू विश्व विद्यालय को गंगा भवन नाम

१. बीकानेर बुलेटिन, वर्ष ४ अ क ६, जनवरी १६४७ । १६३६-४५ के विश्व युद्ध में दी गई सेवाओं के वदले में सर्वोच्च सेनापित द्वारा मेंट की गई तोप को अहग्य करते समय २३ दिसम्बर सन् १६४६ को महाराजा साद्लिसिंह का भाषण ।

२. महाराजा सादूलसिंह का ता॰ २६-५-१९४५ को विधान सभा को संदेश।

महाराजा के शासन के प्रथम १८ महीनों की कुछ मुख्य वातों पर टिप्पणी,
 पृ० २ ।

४. वीकानेर बुलेटिन वर्ष ४ अंक ६, जनवरी सन् १६४७, पृ० ३२।

बीकानेर बुलेटिन, वर्ष ४ अंक ६, अप्रैल १६४७, पु० १५ ।

से एक छात्रावास ग्रीर सादूलवाटिका नाम से एक मन्दिरोद्यान बनाने के लिये १ लाख रुपये प्रदान किये गये। वीकानेर रियासत में तेजी से राजनेतिक परिवर्तन हो रहे थे। इन्हीं के कारण ग्रागे चल कर बीकानेर का भारतीय संघ में विलय हुग्रा। इन से सम्बन्धित ऐतिहासिक घटनाग्रों का वर्णन करने से पूर्व यह ग्रावश्यक है कि विषयान्तर होते हुये भी महाराजा गंगासिह व महाराजा सादूलसिंह के पूर्वार्द्ध शासन काल में रियासत पर ग्रंग्रेजी प्रभाव की संदोप में समीद्या की जाय।

शेप भारत की भाँति ऋाधुनिक वीकानेर ऋंग्रेजों से ऋपने सम्पर्क के कारण गहरे रूप में प्रभावित हुन्ना था। राज्य में ऋंग्रेजी शिक्ता के प्रसार ग्रीर यहाँ की राजनीति में ब्रिटिश विचारों के म्राने के कारण न केवल राज्य के प्रशासिनक ढांचे में बिलक यहाँ की संस्कृति में भी तेजी से परि-वर्तन हुआ। रियासत के शासन को आधुनिक और पाश्चात्य ढुंग का वनाने में भारतीय ग्रीर विदेशी ग्रफसरों ने निष्ठा से महाराजा गंगासिंह को योग दिया । बीकानेर राज्य के प्रशासन में विदेशी प्रतिभाग्रों का उप-योग कुछ ग्रालोचना का विषय रहा है। महाराजा गंगासिंह ने स्वयं ग्रपनी हियति को स्पष्ट किया है। अपने सम्मान में दिये गये भोज के भाषण के उत्तर में उन्होंने कहा- " ' ' मुक्ते ज्ञात है कि हमारी रियासत से बाहर कुछ चेत्रो में इस सम्बन्ध (रियासत के प्रशासन में अंग्रेज अफसरों को लगाने) में कुछ नाराजी है लेकिन जहाँ तक प्रशासन के हितों का सम्बन्ध है, में ग्रन्य किसी बात की परवाह नहीं करता । जब मैं ग्रनुभव करता हूँ कि ग्रंगेज ग्रफसरों की नियुक्ति से योग्यता ग्रोर उपयोगिता ग्रधिक बढ़ जायेगी, जब मेरी परिपद् के सदस्य महसूत करते हैं कि अंग्रेज अफसर बहुत ही योग्य ग्रीर इन परों के लिये बहुत ही उपयुक्त हैं तथा उन्हें सींपे गये कार्य को वे सन्तोषजनक ढंग से करते हैं तो यह स्वामाविक है कि उनकी सेवाग्रों का लाभ स्ठाया जाय अन्यया रियासत के प्रति ग्रपने कर्तव्य पालन में हम ग्रासफल रहेंगे।" बीकानेर राज्य के कुछ ग्राफारों ने जो विदेशी ये, गंगनहर योजना वनाते समय रेगिस्तान में तम्बू में निवास किया या छौर राजपृताना में भीष्म ऋतु की मयंकर रमीं के समय ऊंट पर यात्रा की। इनमें एक य्रांग्रेज नागरिक मि॰ जी॰ डी॰ रडिकन का नाम

बीकानेर राज्य के प्रधान मन्त्री के कार्यालय की सन् १६४६ की फाइल सं० म (राजस्थान राज्य पुरालेख विभाग, बीकानेर में उपलब्ध)।

लिया जा सकता है जो राज्य में राजस्व मन्त्री थे। यह मि॰ रडिकन के ज्राथक परिश्रम का ही परिगाम था कि गंगनहर योजना को थोड़े ही समय में ग्रान्तिम रूप दिया गया ग्रोर उत्तरी बीकानेर की बंजर भूमि हरी भरी बन गई। बाद में इसे राजस्थान का ग्रान्न चेत्र कहा गया। यहाँ कुछ श्रान्य प्रसिद्ध विदेशी ग्राफ्सरों के नाम लिखे जाते हैं—

- १. मि॰ ए॰ डब्लू॰ ई॰ स्टेन्डले, सचिव सार्वजनिक निर्माण विभाग।
- मि॰ हैमिल्टन हार्डिंगं, पुलिस के इन्सपेक्टर जनरल श्रीर बाद में गृहमन्त्री ।
- ३. मि॰ जे॰ फेयरफील्ड, मैनेजर वीकानेर स्टेट रेलवे ।
- ४. मि० ग्रार० एच० टी० मैकेंजी, चीफ इन्जिनियर, सार्वजिनिक निर्माण विभाग ।
- मि॰ चार्ल्स टांड ह्न्टर, सलाहकार ।
- ६. मि॰ वी॰ ए॰ इंग्लिश, संचालक शिक्ता, विभाग।
- ७. मि॰ एस॰ सी॰ कुक, इलेक्ट्रीकल व मैकेनिकल इंजिनियर ।
- डा॰ वेन गार्टन, प्रधान चिकित्सा अधिकारी (जर्मेन यहूदी)।
- डा॰ वान एलेन, चीफ सर्जन (श्रमेरिकन) ।

मन्त्री नियुक्त किये जाने लगे छौर थोड़े ही समय में बीकानेर रियासत का प्रशासनिक ढ़ांचा ऋषिकांशतः ब्रिटिश भारत के समान ही कार्य करने लगा । मन्त्रियों के नीचे बहुत योग्य ऋषिकारी काम करते थे । यद्यपि कार्यपालिका के समस्त मुख्य ऋषिकार महाराजा के पास थे तो भी सन् १६१२ में ही विधान सभा स्थापित कर दी गई थी । यह भारत के साथ ऋंग्रेजों के सम्पर्क के ही कारण थी । रियासत के एकीकरण तक विधान सभा ने बहुत ऋच्छी तरह से काम किया ।

बीकानेर में सरकारी काम काज की भाषा उदू थी। बाद में उसका स्थान हिन्दी ने प्रहण किया तो भी अंग्रेजी भाषा को सर्वाधिक महत्व दिया जाने लगा। राज्य में समस्त पत्र व्यवहार अंग्रेजी में किया जाने लगा। विधान सभा की अधिकांश कारवाई हिन्दी में थी। न्यायपालिका को कार्य पालिका से अलग करने का विचार भी ब्रिटिश राजनैतिक पद्धति से किया

१. वीकानेर के अधिकारियों की योग्यता के कारण पक्षीकरण के समय यहाँ के बहुत से अफसर राजस्थान सरकार में उच्च पदों पर नियत किये गये। परिशिष्ट ३३।

गया या त्रीर बीकानेर में सन् १९१२ में ही लागू कर दिया गया था।

त्रिटिश भारत की तरह बीकानेर की स्कूलों में भी अंग्रेजी को शिद्धा का अनिवार्य माध्यम बना दिया गया । शहरों में भी लोगों को अंग्रेजी में बातचीत करते पाना सामान्य बात न थी लेकिन अंग्रेजी के आरम्भ करने से गांवों की स्कूलों के लड़के लड़कियां अंग्रेजी पढ़ना, लिखना और बोलना सीख गये।

महाराजा गंगासिंह को अपने यहां के अस्पतालों पर वड़ा गर्व या। मानवता की सेवा के लिये उन्होंने इन अस्पतालों में अमेरीका, इंग्लैंड स्रोर जर्मनी के काफी डाक्टर रखे।

दितीय महायुद्ध के बाद बीकानेर राज्य ने भी कुछ वायुयान प्राप्त किये। स्वयं महाराजा सादूलसिंह ऋपनी हवाई यात्रा के लिये 'डव' नामक एक ऋ'ग्रेजी वायुयान का प्रयोग करते थे। बीकानेर में एक फ्लाइंग क्लब कायम करने का प्रस्ताव सरकार के समज्ञ स्वीकृति के लिये था पर बीकानेर के एकीकरण के कारण यह कार्य रूप में परिणित नहीं हुआ। लेखक पहला बीकानेरी था जिसने निजी वायुयान चालक का लाइसेंस प्राप्त किया।

क्लव जीवन श्रीर विदेशी खेल काफी लोकप्रिय हो गये। सभी श्रीर से उन्हें बढ़ावा मिला। स्कूलों श्रीर कालेजों में भी विदेशी खेल खेले जाने लगे। महाराजा गंगासिंह के विदेश भ्रमण का ही सम्भवतः यह प्रभाव या कि उनके शासन काल में श्राधिनक पाश्चात्य पोशाक का बीकानेर में प्रचलन हुआ। सरकारी श्रफसर श्रीर राजपरिवार के सदस्य बहुधा श्राधिनक पाश्चात्य ढ़ंग की पोशाक पहनते थे। लेकिन उत्सवों के श्रवसर पर भारतीय पोशाक श्रचकन श्रीर साफा धारण किये जाते थे।

वीकानेर राज्य में खेती के नये तरीकों श्रीर सिंचाई का प्रचलन
महाराजा गंगासिंह द्वारा किया गया जो बहुत ही लामकारी हुश्रा। यदापि बीकानेर
'यार' रेगिस्तान में राजस्थान के एक सुखे भाग में स्थित है तो भी उसे हमेशा
श्रपने सुन्दर पुष्पों का गर्व रहा है। लालगढ़ श्रीर गजनेर व सार्वजनिक बागों
में सुन्दर उद्यान बने हुये हैं। शरद ऋतु में इनके पुष्प दर्शनीय होते हैं।
गंगनहर श्राने के बाद गंगानगर में विभिन्न प्रकार के खटाई वाले फल
लगाने का प्रयोग बहुत ही सफलता के साथ किया गया है। ऋषि प्रदर्शनियों में गंगानगर के माल्टों ने श्रिखल भारतीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं।
भारत के किसी भी एक जिले में इतने ट्रेक्टर नहीं हैं जितने श्राज गंगानगर

' जिले में हैं।

श्री श्री गीकरण को भी बहुत बढ़ावा मिला । महाराजा सादूलसिंह के श्रासनकाल में वीकानेर का श्री शोगिक विकास बड़ी तेजी से हुआ । महाराजा गंगासिंह श्रीर महाराजा सादूलसिंह के समय यातायात श्रीर संचार में काफी सुधार हुआ । रेल की लाइनों का विस्तार किया गया श्रीर श्री काफी सुधार हुआ । रेल की लाइनों का विस्तार किया गया । नगरों का विद्युतीकरण महाराजा गंगासिंह के समय ही श्रारम्भ हो चुका था । यहाँ के रोशनीघर की विजली केवल बीकानेर नगर में ही नहीं विलक्ष रतनगढ़ श्रीर चूक भी पहुँचाई जाती थी । चूक, दिल्ली श्रीर बीकानेर के मध्य में स्थित है । महाराजा सादूलसिंह की योजना एक विद्युत केन्द्र बनाने की थी । वे चाहते थे कि पाँच हजार श्रीर उससे श्रीषक श्रावादी वाले हर एक नगर में विजली हो । बाद के वर्षों में, विशेषतः महाराजा सादूलसिंह के समय स्थापत्य योजना में भी तीवता से परिवर्तन हुश्रा । बीकानेर में मि॰ मेकेन्जी श्रीर ब्रूमफील्ड जैसे श्रंगेज श्रीर योरोपियन शिल्पकारों का इस पर प्रभाव पडा । १

खाने पीने में श्रंप्रेजी श्रोर फ्रांसिसी पराधों ने पाकशाला (रसोवड़ा) विभाग में प्रवेश कर लिया। परचात्य हुंग के भोज, जिनके मेन्यू (व्यंजनों की सूची) फ्रेंच भाषा में लिखे हुये होते थे, यहां भी सामान्य वन गये। पारचात्य संगीत का भी बीकानेर के सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव पड़ा। क्लवों में श्रीर महलों में होने वाले बड़े भोजों में पारचात्य तृत्य कोई श्रसाधारण वात न रही। गंगारिसाले का सैनिक वैंड भारत के सर्वोत्तम वैंडों में से एक था। कई बार प्रीष्मकाल में इसे श्राबू बुलाया जाता था जो कि राजपूताना में गवर्नर जनरल के एजेंट का निवास था। महाराजा सादूलिसह सात वाद्यों का एक श्राकेंस्ट्रा भी रखते थे। यह पारचात्य समवेत संगीत श्रीर पारचात्य तृत्य संगीत बजाता था। सन् १९४६ में जव लार्ड माउन्ट वेटन वीकानेर श्राये तो उन्होंने इस श्राकेंस्ट्रा को सुनकर उसकी बहुत प्रशंसा की। दोपहर श्रीर रात्रिकालीन

१. महाराजा साद्लसिंह की नगर निर्माण योजना में गहरी रुचि थी। उन्होंने कई नये नगर वसाने की योजना बनाई। राज्य का एकीकरण हो जाने के कारण इनमें से ऋषिकांश केवल कागजों पर नक्शे के रूप में ही रहे। एकीकरण के बाद विकास का सारा महत्व जयपुर को दिया जाने लगा जो राजस्थान को राजधानी है। मूतपूर्व ऋन्य रियासतों की राजधानियों का विकास एकाएक रुक गया।

मोज के समय इस ग्राकेंस्ट्रा ने पाश्चात्य समवेत संगीत श्रीर भारतीय शास्त्रीय संगीत दोनों ही बजाये। सादूल लाइट इन्फेन्ट्री के वैग पाईप (मशक) वैंड ने भी सार्वजिनक जुलूसों ग्रीर सेना के प्रयाण के समय जनता द्वारा काफी सराहना प्राप्त की। रेगिस्तान की शुष्कता में यह हृदय में रस का संचार करता था।

महाराजा का जनतन्त्र में गहरा विश्वास था। वे ग्रपनी प्रजा का हित चाहते थे ग्रतः उन्होंने बीकानेर के शासन को ग्रीर भी जनतान्त्रिक बनाने की ग्रीर ध्यान दिया।

वीकानेर विधान समा का ऋषिक लोकप्रिय ऋाधार पर पुनर्गठन करने के लिये महाराजा साहव ने सन् १६४६ में " एक घोषणा पत्र द्वारा ऋपना निर्णय घोषित किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये संविधान समिति ऋरीर मताधिकार निर्वाचन चेत्र समिति की नियुक्ति की घोषणा की गई। इन्हें क्रमशः संविधान का मसविदा बना कर पेश करने और निर्वाचन चेत्रों की सीमा निर्धारित करने का काम सौंपा गया।

सामान्यतः इस घोपणा पत्र का जनता द्वारा स्वागत किया गया पर श्रिक्त भारतीय कांग्रेस के प्रति-रूप वीकानेर प्रजा परिपद ने कुछ शंकायें श्रोर सन्देह प्रकट किया । तो भी इसके नेताश्रों ने समाचार पत्रों में घोपित किया कि प्रजा परिप्रद की कार्य समिति श्रीर कार्यकर्ता सम्मेलन ने संविधान श्रोर मताधिकार समितियों में वीकानेर सरकार से सहयोग करने का निर्ण्य किया है श्रीर वे घोपणा पत्र को सीघे श्रस्वीकार नहीं करेंगे । काफी सोच विचार के बाद दिसम्बर सन् १६४७ में "बीकानेर संविधान एक्ट १६४७" प्रकाशित किया गया । इसके श्रमुसार महाराजा के संरच्या में कार्य करते हुये जनता के प्रति उत्तरदायी सरकार चननी थी । श्रगस्त १६४६ के घोपणा पत्र श्रीर इस एक्ट के प्रकाशन के बीच श्रिधक प्रतीत होने वाली श्रवधि का कारण मताधिकार श्रीर संविधान के सम्बन्ध में विभिन्न वर्गों की राय मालूम करने का भारी कार्य या । इसके श्रलावा एक कारण यह भी या कि विशेषतः बीकानेर सरकार को विभाजन के फलस्वरूप देश में हुई महान उथल-पुथल के कारण लाखों विस्थापितों को श्रपने

महाराजा सादूलसिंह की दिनांक ३१-५-१६४६ की घोषणा ।
 दी स्टेंट्समैन ताः ४-६-१६४६ ।

२. महाराजा साद्लसिंह की दिनांक ३१-५-१६४६ की घोषणा ।

३. हिन्दुस्तान टाइम्स ताः २७-६-१६४६ ।

इलाके में से (बीकानेर एक सीमा राज्य होने के कारण)भारत से पाकिस्तान ग्रौर पाकिस्तान से भारत सुरिच्चत पहुँचाने का कठिन कार्य करना पड़ा। भागते हुये भानवों का यह विश्व का सबसे वड़ा ग्रौर सबसे विशाल विस्थापन था।

सन् १६४७के एक्ट से व्यापक मताधिकार पर श्राधारित एक दो सदन वाली व्यवस्थापिका श्रास्तित्व में श्राई । कुछ, बातों को छोड़कर सारा शासन एक परिषद को सौंप दिया गया जो कि व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी थी । यह भी विचार किया गया कि दो वर्षों के भीतर ही महाराजा के संरत्त्त्एा में एक पूर्ण उत्तरदायी सरकार बनाई जाय।

पूर्ण उत्तरदायी सरकार और भी जल्दी कायम करने की दृष्टि से महाराजा ने २ फरवरी सन् १६४८ को अपने इस निर्णय की घोषणा की कि अप्रैल १६४८ में उत्तरदायी सरकार वनाई जायेगी । वीकानेर संविधान एक्ट १६४७ में सोचे गये अन्तरिम प्रवन्ध को भी उन्होंने हटा दिया । मार्च १६४८ में महाराजा ने अपने जनवरी सन् १६४८ के इस निर्णय को फिर दोहराया कि चुनावों के बाद नई व्यवस्थापिका संविधान एक्ट में संशोधन कर सकेगी । उन्होंने मताधिकार व एक्ट में और परिवर्तन करने की अपनी इच्छा भी व्यक्त की । उन्होंने कहा कि इससे चुनाव कुछ समय के लिये स्थगित करना आवश्यक हो जायगा । पर तुरन्त कदम उठाने की दृष्टि से महाराजा ने अपनी मन्त्री परिषद् की जगह १८ मार्च १९४८ से एक मिला जुला अन्तरिम मन्त्रिमएडल वनाने की घोषणा की । इसका काम बीच की अवधि में राज्य के दैनिक शासन को चालू रखना था।

मिले जुले मन्त्रिमण्डल में कांग्रेस के प्रतिनिधियों श्रीर महाराजा द्वारा मनोनीत राज्य के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों की संख्या वरावर वरावर रखी गई । कांग्रेस में सरकार के सम्मिलित होने की शतों श्रीर विभागों के वंटवारों के बारे में कांग्रेस तथा महाराजा में काफी सलाह मशविरा श्रीर विचार विमर्श हुश्रा । श्रन्त में १८ मार्च १९४८ को एक मिलीजुली सरकार

१. महाराजा सादूलसिंह की दिनांक ४-१२-१६४७ की घोषणा ।

२. महाराजा सादूलसिंह की दिनांक २-२-१६४५ की घोषणा

३. महाराजा सादूलसिंह की दिनांक १५--३-१६४५ की घोषणा।

४. वही ।

बनाई ग	ई। इसमें ये लोग शामिल ये —	
		मधान मन्त्री
(ə) चौधरी हरदत्तसिंह (कांग्रेस) उ	उप प्रधान मन्त्रो
ξ)) पंडित [ा] गौरीशंकर (कांग्रेस)	मंत्री
(8) सरदार मस्तानसिंह (कांग्रेस)	53
(પ્ર	.) चौवरो कुम्माराम (कांग्र [े] स)	27
(ξ) रिक्त, नाम का घोषणा बाद में की जानी थी	27
('u) ठाकुर कुमेरसिंह, माण्करा सर	?? .
(=	:) सेठ कुशालचन्द डागा	>>

(६) पंडित स्रजकरण त्राचार्य "

(१०) मोहम्मद ग्रहमद वक्स सिंधी "

मिले जुले मन्त्री मण्डल के निर्माण के समय यह मान लिया गया था कि कांग्रेस २३ सितम्बर सन् १९४८ ऋौर उसके बाद के दिनों में होने वाले श्राम चुनावों में भाग लेगी श्रीर इस बीच मन्त्री मण्डल चालू नियम पद्धति से हो काम करेगा।

कुछ समय तक कार्य ठीक चलता रहा । पर थोड़े समय उप-रान्त यह बात देखी गई कि कांग्रेस का ग्रसन्तुष्ट दल जो मिले जुले मंत्री मएडल निर्माण के पन्न में नहीं था राज्य के विरुद्ध ग्रान्दोलन करने लगा।

श्रान्दोलन कारियों के श्रारोपों का खरडन करने के लिये बीका-नेर में सुनारों की गवाड़ में एक सार्वजिनक सभा की गई । उसमें प्रधान मन्त्री कुँवर जसवन्तसिंह ने भाषण दिया । इसमें श्रन्य मन्त्री तथा कांग्रेस

श. कुं वर जसनन्तिसिंह दाउदसर ठाकुर मेजर पृथ्वीराजिसिंहजी के पुत्र हैं। उन्होंने सन् १६२७ में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीद्या उत्तीर्ण की। १६-७-१६३१ से वे महाराजा गंगासिंह के सहायक निजी सिचव तथा १६३१-३६ व १६३७-४० की अविध में निजी सिचव रहे। सन् १६४० में वे विदेश और राजनैतिक सिचव बने और सन् १६४१ में सार्वजनिक निर्माण मन्त्री नियुक्त किये गये। इस पद पर वे सन् १६४० तक रहे। सन् १६४० में वे प्रधानमन्त्री नियुक्त किये गये। जब महाराजा गंगासिंह शाही सम्मेलन, राष्ट्रसंव और गोलमेज सम्मेलनों में माग लेने के लिये इंग्लैंग्ड व योल्प गये तो सन् १६३० और सन् १६३१ में कुँवर जसवन्तिसिंह उनके साथ गये। वे महाराजा के निकट सम्पर्क में रहे।

द्वारा मनोनीत मंत्री भी थे। पर यह सभा शोरगुल में खत्म हो गई श्रौर कांग्रेसी मन्त्री- उपद्रची तत्वों को शान्त करने की कोशिश करने एवं व्यवस्था कायम करने की वजाय सभा छोड़कर खिसक गये।

ग्रान्दोलन चलता रहा। ग्रसन्तुष्ट कांग्रेसियों ने श्रव रियासत के एकीकरण की ग्रावाज उठाई ग्रौर महाराजा ने इन ग्रसन्तुष्टों की ये कारवाइयाँ सरदार पटेल को बताई । बीकानेर रियासत कायम रहने योग्य इकाई मान ली गई थी। महाराजा ग्रधिक उत्तरदायी सरकार बनाने के लिये उत्सुक ही नहीं थे बाल्क उसके लिये ग्रावश्यक कदम भी उठा चुके थे। ग्राम चुनाव भी निकट थे ग्रातः महाराजा ने ग्रान्दोलन तुरन्त बन्द कराने के लिये सरदार पटेल को कहा। फलस्वरूप ग्रान्दोलन वन्द हो गया।

कुछ समय उपरान्त महाराजा को हलाज के लिये इंग्लेंड जाना पड़ा । उनकी अनुपस्थित में युवराज होने के नाते इन पंक्तियों के लेखक को अपनी माता — राजमाता सुदर्शना कुमारी जी — की सलाह से उनका काम देखना पड़ा । महाराजा ने यह प्रवन्ध भी कर दिया कि महाराजा के तत्कालीन सलाहकार श्री मेहरचन्द महाजन की सलाह लेखक को उपलब्ध हो सके । यह बात देखने में आई कि कांग्रेसी मन्त्रियों ने चालू नियम पद्धित की शीघ्र ही उपेज्ञा करनी आरम्भ कर दी । इस बारे में एक उदा- हरण काफी है— एक कांग्रेसी मन्त्री ने एक विभागाध्यक्ष को मौके पर तुरन्त वर्खास्त कर दिया । नियमानुसार वह केवल महाराजा की आज्ञा से ही हटाया जा सकता था । इतना ही नहीं, वह अफसर एक निश्चित अविध के लिये था और अपनी अविध को समाप्ति से पूर्व नहीं हटाया जा सकता था । मन्त्री के इस कार्य से प्रधान मन्त्री सहमत नहीं हुआ । कांग्रेसी मन्त्रियों ने इसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रशन बना लिया । चूंकि महाराजा इंग्लैंड में थे अतः उनकी जगह काम कर रहे युवराज ने यह मामला उनके

१. जिन रियासतों के विधान निर्मात्री परिषद में अलग प्रतिनिधि थे उन्हें कायम रहने योग्य इकाई माना गया था। अलग प्रतिनिधित्व के अलावा १० लाख से अधिक आवादी और १ करोड़ या उससे ऊपर आय वाली रियासत को भी कायम रहने योग्य राज्य मोना गया था। एकीकरण के समय वीकानेर की आय २ करोड़ थी। सन् १६४१ की जनगणना के अनुसार इसकी आवादी १२ लाख से कुछ अधिक थी। सन् १६५१ में वीकानेर की आवादी १४, ५३, ७३५ और १६६१ में २९,४०,६४६ थी।

पास इंग्लंड मेजा। महाराजा ने ग्रादेश दिया कि मेरे बीकानेर लौटने तक इस मामले को विचाराधीन रखा जाय। महाराजा ने वापस लौटकर इस मामले की परिस्थितियों की पूर्ण जांच करवाई ग्रीर बाद में ग्राफसर को उसके पद पर पुनः स्थापित कर दिया।

यह घोषणा कर दी गयी यी कि बीकानेर राज्य में श्राम चुनाव २३ सितम्बर सन् १६४८ ग्रौर उसके बाद के दिनों में होंगे । चुनाव की तैयारी का काम टीक प्रकार से चल रहा या। पर त्रागस्त १६४८ में स्टेट कांग्रेस कमेटी ने चुनावों को स्थगित करने की मांग की । महाराना उस समय योरूप में थे । लेप्तक ने उन्हें इस माँग से अवगत कराया । लेखक के पास महाराजा के स्पष्ट ग्रादेश ये कि निश्चित तिथि पर उत्तरदायी शासन सींपने का कार्य किसी भी कारण से रुकने न दिया जाय । चूंकि कांग्रेस ने चनाव स्थिगत करने की अपनी इच्छा का कोई प्रवल कारण नहीं बताया या ग्रतः जनतन्त्र की गति में रुकावट पैदा करने की उनकी प्रार्थना को लेखक स्वीकार नहीं कर सका । जनतन्त्र में दृढ विश्वास होने के कारण तथा ग्रपने पिता के समय पर बीकानेर में चुनाव कराने ग्रौर यथासम्भव शीव जनतान्त्रिक सरकार कायम करने के दृढ़ निश्चय से सहमत होकर चुनाय का समय कायम रखा गया । लेखक को श्रव भी श्रच्छी तरह से याद है कि राजस्थान कांग्रेस के नेता श्री हीरालाल शास्त्री श्रीर श्री गोकुल भाई भट्ट बीकानेर ग्राये वे ग्रीर चुनाव स्थगित करने के प्रश्न पर उन्होंने मेरे से लम्बी बातचीत की थी। वीकानेर स्टेट कांग्रेस कमेटी ने चुनाव

१. यह वड़े श्राष्ट्रचर्य की बात है कि चार वर्ष बाद राजस्थान विघान समा के प्रथम श्राम जुनावों में श्री गोकुल माई मट्ट श्रीर श्री जयनारायण व्यास हार गयें। श्री हीरालाल शास्त्री ने जुनाव ही नहीं लड़ा । बृहद् राजस्थान के निर्माण पर कुछ समय के लिये हीरालाल शास्त्री प्रथम मुख्य मन्त्री वने पर जनवरी १६५१ के श्रासपास उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया । उनके बाद श्री सी. एस. वेंकटाचार्य कुछ काल तक इस पद पर रहें । श्रिप्रेल सन् १६५१ में श्री जयनारायण व्यास मुख्य मन्त्री वने । बाद में प्रथम श्राम जुनाव में हारने के कारण उन्होंने मार्च १६५२ में यह पद रिक्त कर दिया । लेकिन बाद में सितम्बर सन् ५२ में किशनगढ़ से एक टप-जुनाव में जीत कर वे पुनः मुख्य मन्त्री वन गये श्रीर इस पद पर १६५४ तक रहे ।

स्यगित करने की अपनी मांग का चाहे जो कारण वताया हो, वापस लौटकर महाराजा सादूलसिंह ने एक प्रेस विज्ञिति में उसका खरडन भी किया।
पर असली कारण यह या कि बीकानेर स्टेट कांग्रेस कमेटी को जनता पर
अपने प्रभाव का विश्वास नहीं था। अतः वह कुछ अधिक समय प्राप्त करना
चाहती थी। चुनावों में अपनी सफलता पर उसे गहरा सन्देह था। चुनाव
न लड़ने और शिक्त परीच्या का मुकावला करने की उनकी इच्छा ध्यान देने
योग्य थी। विशेषतः ऐसे समय जविक स्टेट्स पीप्ल्स कॉफ से ने विश्व को
यह विश्वास दिलाने की कोशिश की थी कि रियासतों में जनमत पर इसका
पूर्ण अधिकार है। बीकानेर और जोधपुर के सम्बन्ध में उनका यह दावा
उचित था अथवा नहीं यह वात संदेहास्पद है। चार साल बाद ही सन्
१६५२ के प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस बीकानेर के संसदीय चुनाव में हार
गई। कांग्रेस यहाँ से सन् १६५७ में भी हार गई और सन् १६६२ में
तो उसने बीकानेर से कोई उम्मीदवार ही खड़ा नहीं किया। बीकानेर नगर
से राजस्थान विधान सभा के लिये अब तक कोई कांग्रेसी उम्मीदवार नहीं
जीता।

यहाँ श्राम चुनावों में राजस्थान विधान सभा के परिणाम लिखने रोचक होंगे--

	१९५२	१६५७	१९६२
कांग्रेस	দ্ৰ	१२०	*==
निर्दलीय	ર્પ	-	२१
जनसंघ	5	४६	<i>५५</i>
स्वतन्त्र			३६
श्रन्य	3 4		<i>१५</i>
	*********	••••••	****
	१६०	१७६ -	१७६

★सन् १६६२ में जब जुनावों का परिणाम घोषित हुआ तो विघान समा में कांग्रेस के मम तया अन्य सभी दलों के मम सदस्य थे लेकिन वाद में एक निर्देलीय सदस्य कांग्रेस दल में सिम्मिलित हो गया। राजस्यान के लोक सभा और राज्य सभा के लिये आम जुनावों में इस प्रकार सदस्य

१. महाराजा साद्लसिंह की ता॰ १-६-१६४न की प्रेस विज्ञप्ति।

वीकानेर स्टेट कांग्रेस कमेटो ने रू अगस्त १६४८ को एक प्रस्ताव पास किया। इसमें कहा गया कि कांग्रेस आम चुनाव में भाग न ले और मिले जुले मन्त्रिमण्डल में से अपने प्रतिनिधियों को त्याग पत्र दिलवाकर वापस बुला ले। इससे एक विकट स्थिति पैदा हो गई। महात्मा गांधी के विचार चुनाव स्थिति करने की इस मांग के जिल्कुल विरुद्ध थे। उन्होंने श्री एन. सी केलकर को लिखा था कि में चाहता हूँ कि रियासतों में वहाँ की जनता को स्वायत्त शासन मिले और राजा लोग अपने आपको जनता का संरच्छक समसें। तो भी जब महाराजा सादूलसिंह अपनी रियासत में पूर्ण उत्तर-दायी सरकार बनाने का प्रयत्न कर रहे थे तो कांग्रेस द्वारा संचालित प्रजा परिपद इसके कार्य में रोड़ा अटकाने का पूर्ण प्रयत्न कर रही थी। इससे स्थिति खराब हो गई। युवराज द्वारा महाराजा को वरावर स्चना दी जा रही थी। अतः वे ३१ अगस्त १६४८ को बीकानेर लौट आये। उन्होंने शीव इस

चुने गये	1					,
लोकसमा			राज्यसमा	•	•	
	कांग्रेस	विरोधी दल	कुल	कांग्रेस	विरोधीदल	कुल
१९५२	१२	4	२०	દ્	३	3
<i>६६५७</i>	१८	3	२१	3	ع	१०
१६६२	१५	દ્	२१	9	3	१०.

- १. एम. के गाँधी— दी इन्डियन स्टेट्स प्रोबल्म, पू० ६५ । ता० २-७-१६३४ के अपने पत्र में महात्मा गाँधी ने श्री एन. सी. केलकर को लिखा— "में चाहूंगा कि रियासतें अपने यहाँ की जनता को स्वायत्त शासन प्रदान करें और राजा लोग अपने आपको अपनी प्रजा का सच्चा सरक्षक सममें । वे अपने लिये राज्य की आय का एक अल्प और निष्ठिचत प्रतिशत ही लें । मेंने यह आशा नहीं छोड़ी है कि राजा लोग अपनी जनता के सच्चे संरक्षक वनकर गर्व का अनुमव करेंगे । में उनकी रियासतों को नष्ट करना नहीं चाहता ।"
- र. सन् १६४६ में दिल्ली से स्नातक वन कर लेखक अपने पिता महाराजा साद्लसिंह और उनके शासन के, राज्य के एकीकरण होने तक, निकट सम्पर्क में रहा । लेखक बीकानेर और दिल्ली में होने वाली कुछ सर्वाधिक महत्व-पूर्ण वैठकों में भी सम्मिलित हुआ और वह अपने निजी ज्ञान के आधार पर यह प्रमाणित कर सकता है कि वीकानेर राज्य में अधिकाधिक राजनैतिक सुधार करने में महाराजा साद्लसिंह की गहरी रुचि थी।

गतिरोध को दूर करने का प्रयत्न किया। महाराजा ने अध्यक्त, बीकानेर स्टेट कांग्रेस कमेटी को एक पत्र लिखा। इसमें कांग्रेस द्वारा उठाये गये विभिन्न प्रश्नों का स्पन्टीकरण मांगा गया था। उन्होंने यह भी लिखा कि उत्तर ४ सितम्बर सन् १९४८ तक मेज दिया जाय तािक चुनाव की नियत तिथि मं कोई बाधा न पड़े। यदि जनतािन्त्रक सिद्धान्तों की दृष्टि से देखा जाय तो जनतन्त्र के निर्माण में जो दल भाग न ले उसे छोड़ दिया जाना चािहये और पूर्ण जनतािन्त्रक शासन लागू करने के लिये चुनाव करा दिये जाने चािहये लेकिन कांग्रेस ने स्वातन्त्र्य संग्राम में जो कार्य किया था उससे बहुत से लोगों का विचार था कि बीकानेर में होने वाले चुनावों में कांग्रेस भी अवश्य भाग ले। अतः महाराजा ने सरदार पटेल से मेंट का समय निश्चित किया और दिल्ली गये। सरदार पटेल के निवास पर दोपहर के भोजन के समय महाराजा ने उनसे इस विषय में विचार विमर्श किया। सरदार पटेल ने उन्हें सलाह दी कि वे इस मामले में बी० पी० मेनन, हीरालाल शास्त्री, जयनारायण व्यास और गोकुल भाई मह से, जो उस समय दिल्ली में थे, और विचार विमर्श करें। अन्त में महाराजा को चुनाव स्थिगत करने की सलाह दी गई।

६ सितम्बर सन् १६४८ को महाराजा बीकानेर लौटे। कांग्रेस मिन्त्रयों ने अपने त्याग पत्र दे दिये थे। महाराजा के पास इसके अलावा श्रीर कोई चारा न था कि वह उन्हें स्वीकार करे, अन्तरिम मिन्त्रमण्डल को मंग करे और चुनावों को स्थिगत करे। ७ सितम्बर सन् १६४८ को अस विज्ञप्ति में इस निर्ण्य की घोषणा की गई। साथ ही महाराजा ने अपनी यह इच्छा भी व्यक्त की कि वे राज्य के बाहर के व्यक्ति को प्रधान मन्त्री नियुक्त करना चाहते हैं ताकि किसी को शिकायत करने का कोई मोका न मिले। जब तक भारत सरकार से ऐसे अफसर की सेवायें ऋण रूप में प्राप्त न हों तब तक के लिये महाराजा सादूलसिंह ने कँवर जसवन्तसिंह दाउदसर को ही प्रधान मन्त्री रखने का निश्चय किया। अवस्थल प्रशासनिक आदेशों द्वारा ८ सितम्बर १६४८ में ये परिवर्तन लागू हुये। अक्टूबर १६४८ में जोधपुर के भूतपूर्व दीवान श्री सी. एस. वेंकटाचारी, आई. सी. एस., द्वारा प्रधान मन्त्री का पद सम्भालने तक कंवर जसवन्तसिंह इस पद पर कार्य करते रहे।

१. ता॰ १-६-१६४८ की महाराजा सादूलसिंह की प्रेस विज्ञिति ।

ता० ७-६-१६४ न की महाराजा साद्लसिंह की प्रेस विज्ञिप्ति ।
 वीकानेर राजपत्र-- असाधारण, ता० न-६-१६४ न ।

बीकानेर कांग्रेस द्वारा की गई इस जल्दवाजी की कारवाई ने शेष मारत के पहले ही बीकानेर में पूर्ण उत्तरदायी सरकार बनाने का अवसर खो दिया । कम से कम बीकानेर के लिये उनका यह दावा आत्मग्लानि पूर्ण सिद्ध हुआ कि बीकानेर के विलय के लिये उन्हें जनता का समर्थन प्राप्त था ।

यहां यह बात उल्लेखनीय है कि जापानी आक्रमण के बाद जब मारत में संकट की स्थित पैदा हो गई तो ११ मार्च १६४२ को चिंल ने हाउस आँक कॉमन्स में एक घोषणा की थी। उसने कहा कि युद्ध मंत्री-मंडल सर स्टैफोर्ड किप्स को भारत मेज रहा है ताकि ब्रिटिश सरकार ने उनकी इच्छाओं के अनुसार जिन सुधारों का प्रस्ताव किया है उनके बारे में भारतीयों के मय और शंकाओं का निवारण किया जाय। यह प्रस्ताव या तो सम्पूर्ण रूप में स्वीकार करने थे या सम्पूर्ण रूप में अस्वीकार करने थे । सर स्टैफोर्ड किप्स २२ मार्च सन् १६४२ को भारत आया। जहां तक भारतीय रियासतों का प्रश्न या इन प्रस्तावों में पहले के समभीते के पुनर्परीच् की बात कही गई थी। २ अप्रैल सन् १६४२ को राजा लोग सर स्टैफोर्ड किप्स से मिले। राजाओं के प्रतिनिधि रूप में किप्स से मिले। राजाओं के प्रतिनिधि रूप में किप्स से पिलने वालों में महाराजा सादूलसिंह, नवानगर के जाम साहब और पिटियाला के महाराजा थे। काफी विचार विमर्श के बाद भारतीय रियान सतों के प्रतिनिधि मंडल ने एक प्रस्ताव पास किया। इसमें कहा गया कि अपनी रियासतों की अख्वएडता और प्रभुसत्ता के अनुरूप राजा लोग

वी० पी० मेनन— दी स्टोरी ऑफ दी इन्टीग्रेशन ओफ दी इन्डियन स्टेट्स,
 प० ४८।

२. मारतीय रियासतों के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा ता० १०-४-१६४२ की पास किया गया प्रस्ताव--

[&]quot;मारत के लिये एक संविधान बनाने में अपनी मातृभूमि के हित में भारतीय रियासतों रियासतों की अखण्डता और प्रभुसत्ता के अनुरूप प्रत्येक उचित तरीके सं अपना योग देने में हमेशा की तरह प्रसन्न होंगी पर रियासतों को इस बात का निश्वास दिलाया जाय कि जिन रियासतों के लिये अलग रहना सम्भव न होगा तो इस प्रकार की रियासतों या रियासतों का समूह अपनी इच्छा के अनुसार अपना एक संघ बना सकेंगे। इस संघ की इस उद्देश्य के लिये बनाये गये उपयुक्त और स्वीवृत तरीके के अनुसार पूर्ण प्रभुसत्ता का दर्जा प्राप्त होगा।"

देश के हित में सभी सम्भव सहयोग देने को तैयार होंगे । लेकिन सर स्टैफर्ड क्रिप्स जो प्रस्ताव लेकर आये थे उन्हें कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने टुकरा दिया अतः राजाओं द्वारा उसे मानने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं हुआ । .

वाद में समय के प्रवाह को ध्यान में रखते हुये, शीघ ही परि-वर्तन करने की आवश्यकता अनुभव करते हुये और भारतीय रियासतों के प्रशासन के विरुद्ध ब्रिटिश भारत के नेताओं द्वारा बहुधा निंदा वचन सुन कर सन् १९४४ में नरेन्द्र मण्डल की स्थायी समिति ने राजास्रों की एक छोटी समिति बनाई । महाराजा सादूलसिंह इसके ग्राध्यक्त थे । इसका काम श्रच्छे शासन के मानदर्ड के लिये प्रस्ताव तैयार करना था। इस समिति को सामान्यतः बीकानेर समिति कहा जाता था। राजाग्रों की स्थाई समिति में इस समिति की रिपोर्ट पर बोलते हुये महाराजा साद्लसिंह ने कहा कि रियासतों ने ऋपने को एक "व्यवस्था" के रूप में मानने की माँग की थी श्रीर यह मान ली गई थी। फलस्वरूप रियासती व्यवस्था की तुलना श्रेष्ठ शासित राज्यों की योग्यता से नहीं की जाती । रियासतों के शासन के लिये उन रियासतों का उदाहरण दिया जाता है जो अपना कोई दोप न होते हुये भी साधनों के श्राभाय में श्रापनी जनता की सेवा ठीक प्रकार से करने की स्थिति में नहीं। महाराजा ने आगे कहा कि अव अलग-थलग रहने के सिद्धान्त से चिपके रहना सम्भव नहीं । उन्होंने राजात्रों से त्रानुरोध किया कि वे समय रहते ही चेत जायं श्रीर कुछ, व्यावहारिक कदम उटायें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने सुभाव दिया कि छोटी छोटी रियासतें परस्पर मिल कर ग्रथवा बड़ी रियासतों के साथ मिलकर इस प्रकार की इकाइयाँ वनायें जो त्राधिनिक परिस्थितियों में त्रानिवार्य त्रावश्यकतात्रों की पूर्ति करने

१. राजात्रों की स्थाई सिमिति की दिनांक ३०-६-१६४५ की त्रनोपचारिक बैठक में महाराजा सादूलसिंह का भाषण — "इन रियासतों की वर्तमान परिस्थितियों से जनमत सही या गलत सभी रियासतों को समान समभतो है।"

वही ।
 इस अंतिम क्त्रण में भी यदि हम सचा प्रयत्न नहीं करते तथा यहां और अभी कुछ न्यावहारिक कार्य करने के बारे में हम अविलम्ब आपस में सहमत नहीं होते, तो बाद में शायद कुछ न हो सके ।"

में समर्थ हो सके । उन्होंने यह भी कहा कि यदि सिंद्धान्त रूप में यह बात मान ली जाय तो उनके पद की सुरचा के लिये एक योजना बनाई जा सकती हैं । वाइसराय और भारत सरकार के राजनैतिक सलाहकार इस बारे में विचार विमर्श के लिये सहमत हो गये हैं । एक अन्य दिष्टकोण से भी महाराजा ने अपनी बात का औचित्य बताया । उनका विश्वास था कि शींघ ही राजाओं के सामने यह समस्या आयेगी कि भारत के भावी ढ़ाँचे में रियासतों का क्या रूप हो । उन्होंने चेतावनी दी कि यदि छोटी छोटी रियासतों ने समृह बनाकर जनता को आवश्यक सुविधायें प्रदान न कीं और

२. राजात्रों की स्थाई सिमिति की दिनांक ३०-६-१६४५ की अनीपचारिक बैठक में महाराजा सादलसिंह का भाषण—

""" समय समय पर श्राप में से कुछ श्रीमानों ने शिकायत की है कि राजनैतिक त्रिमाग या राजनैतिक श्रफसर श्राप पर श्रमुचित दबाव डालते रहे हैं। श्रकेले या सामूहिक रूप में रियासतों के किसी समूह पर डाले जाने वाले किसी श्रमुचित दबाव से यदि हम बचना चाहते हैं श्रीर यदि हम चाहते हैं कि राजनैतिक विमाग श्रपनी योजना पर, जिसे छोटी रियासतों के बहुत से शासक पसंद नहीं करते, श्रपने तरीके से श्रमल न करें तो मुक्ते इस बात में जरा मी सन्देह नहीं है कि हम को भी सहमत होकर ऐसी योजना बनानी चाहिये जिसे हम उनके सामने रख सकें। यदि हम ऐसी योजना बना सके तो मैं सोचता हूं कि इन मामलों के बारे में राजनैतिक विभाग की नीति का कुछ सीमा तक संशोधन कराने में श्रिधक कठिनाई नहीं होगी। इससे वास्तिक श्रापत्तियों का निराकरण हो सकेगा।"

वीकानेर बुलेटिन, वर्ष ५ अंक १, अगस्त १६४७ ।
 वीकानेर वाणिज्य मंडल के उद्घाटन पर दिनांक ७-८-१६४७ को श्री के. एम.
 पितकर का भाषण—

"वटना प्रवाह को पहले से ही देखने वाले लोगों में महाराजा एक हैं। युद्ध समाप्ति से महीनों पूर्व जबिक तुरन्त स्वतन्त्रता देने की कोई वात न थी, अप्रैल सन् १६४५ में ही महाराजा ने अपने वन्धु राजाओं से यह कहा कि वे एक ऐसा संगठन बनायें जो बिटिश मारत के साथ, उसे उनकी दूरहिंट के अनुसार शीव मिलने वाली आजादी में हिस्सेदार बनने के लिये सहयोग देने की योजना बनायें।"

चे समय के साथ नहीं चली तो वे समाप्त हो जायेंगी। इसके शीव बाद महाराजा ने अपने विचारों को राजाओं को भेजे गये एक गुप्त परिपत्र में पुनः दोहराया। इसमें उन्होंने कहा कि समय बीतने के साथ ही उनको विश्वास होगा कि महाराजा के विचार सही थे या नहीं। उन्होंने जोर देकर यह बात कही कि दुविधा और विलम्ब की नीति उनके लिये विनाशकारी होगी। उनकी भविष्यवाणी शीघ ही सत्य हो गई।

फरवरी सन् १६४६ में महाराजा ने एक बार फिर यह बात कहीं कि विधान निर्मात्री परिषद् में रियासतों के भाग लेने के प्रश्न पर दो मत नहीं हो सकते । बीकानेर विधान सभा को दिये गये एक सन्देश में पूर्वाभिव्यक्त विचारों को उन्होंने पुनः दोहराया । उन्होंने कहा, "ब कानेर द्वारा हमें भारत पर गर्व है । भारत की महानता की कामना करने में, श्रपनी मातृभूमि के प्रति श्रपनी देशभिक्त दिखाने में हम किसी के सामने नहीं भुकते । हमारी भी यह कम इच्छा नहीं कि भारत पूर्ण उत्थान कर राष्ट्रों के परिवार में श्रपना उचित श्रीर सम्मानित स्थान प्राप्त करे ।" उदयपुर में हुये भारतीय रियासती प्रजा सम्मेलन में पंडित जवाहरलाल नेहरू के इस कथन का उन्होंने स्वागत किया कि राजाश्रों के प्रति दोस्ती का भाव रखा जाना चाहिये । बीकानेर को किसी बात का डर नहीं था। बीकानेर रियासत पहले

दिनांक ३०-६-१६४५ को राजात्रों की स्थाई सिमिति की अनौपचारिक वैठक में महाराजा सादूलसिंह का भाषण्--

[&]quot;दूसरी महत्वपूर्ण बात मुभे यह लगती है कि शीष्ठ ही हमें यह विचार करना होगा कि मारत के मावी संविधान में रियासतों का क्या रूप होगा। ब्रिटिश भारत के राजनीतिक दलों की ख्रोर से जनमत ख्रीर दवाव डालकर तथा शिक्ता के थोड़े ख्रीर विस्तार के साथ शीष्ठ ही हमारी ख्रपनी रियासतों के जनमत द्वारा ख्रीर श्रिधिक ख्रच्छे शासन तथा ख्रीर अधिक ख्रच्छी जीवन स्थिति की मांग की जायेगी। •••••• एक महान लहर ख्रायेगी ख्रीर उन रियासतों को मिटा देगी जो समयानुसार नहीं चलतीं।"

दिनांक २४-१०-१६४५ को राजा आँ को मेजा गया महाराजा साद्लसिंह का परिपत्र ।

^{4.} महाराजा के पौत्र होने की खुशी में बीकानेंर हुर्ग के गंगा निवास महल में श्री के. एम. पित्रकर द्वारा महाराजा साद्लिसिंह के सम्मान में दिये गये एक मोज में दिनांक १२-२-१६४६ को महाराजा का माष्या ।

से ही युग के साथ चल रही थी और सभी आवश्यक सुधार लागू किये ना रहे थे। श्री के एम पिनकर के अनुसार "अपने दूरदर्शी शासक के नेतृत्व में वीकानेर भविष्य का सामना करने को तत्पर और तैयार था।" पिनकर को विश्वास था कि वीकानेर को अपने ऐतिहासिक महत्व, भौगो-लिक रियति, आकार, जनसंख्या, राजस्व और भविष्य की सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुये वह ऐसे स्थान का अधिकारी होगा जिससे उसे आन्त-रिक प्रभुसत्ता और खायत्तता के साथ साथ भारतीय मामलों में अपनी वात कहने का अवसर दिया जायेगा।

मार्च सन् १६४६ में मन्त्री मएडल मिशन की नियुक्ति की गई। इसका उद्देश्य एक छोर छंग्रेजों छोर भारतीयों तथा दूसरी छोर कांग्रेस छोर मुस्लिम लीग के बीच गतिरोध को दूर करने का पूर्ण प्रयत्न करना था। अ छंग्रेजों ने भारत को रवतन्त्र करने का जो वचन दिया था उसकी इमानदारी का भारतीयों को विश्वास दिलाने के लिये मिशन को मौके पर ही निर्णय करने का ऋधिकार दिया गया। २३ मार्च सन् १६४६ को यह मिशन भारत छाया।

राजात्रों को पहले ही यह श्राश्वासन दिया जा चुका था कि सम्राट के साथ उनके सम्बन्धों या उनके साथ की गई रुधियों श्रीर समभौतों में दिये गये श्रिधकारों में उनकी सहमित के बिना कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा । १२ मार्च सन् १९४६ के श्रपने पत्र में लार्ड वेवल ने इस श्राश्वासन को पुनः दोहराया । इस पत्र में यह कहा गया कि 'वातचीत के श्रातिरिक्त श्रीर किसी श्राधार पर रियासतों को भारतीय ढांचे में मिलाने के प्रस्ताव बनाने की कोई इच्छा नहीं है ।" नरेन्द्र मण्डल श्रीर इसके प्रतिनिधियों के साथ पत्र व्यवहार श्रीर विचार विमर्श के बाद

महाराजा सादूलसिंह के सम्मान में श्री के. एम. पित्रकर द्वारा दिये गये मोज में दिनांक १२-२-१६४६ को पित्रकर का मामणा।

इस मिशन में लार्ड पैथिक लॉरेंस, सर स्टैफोर्ड किप्स और मि. प. वी एलेक्जेंडर थे।

३. लियोनार्ड मोसले, दि लास्ट डेज़ श्राफ दी ब्रिटिश राज, पृ. २०।

४. मारतीय रियासतों के बारे में श्वेत पत्र, पू॰ २८।

भिन्त्रमण्डल मिशन के साथ वातचीत में माग लेने हेतु महाराजा सादृलसिंह को मी निमन्त्रित किया गया था। इसके लिये वे २६ मार्च सन् १६४६ को बीकानेर से दिल्ली के लिये खाना हुये।

मन्त्रिमएडल मिशन ने १२ मई सन् १६४६ को एक स्मरण पत्र जारी किया। इसमें कहा गया कि नरेन्द्र मएडल ने यह बात पुष्ट कर दी है कि तुरन्त ही भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति की ऋभिलाषा में भारतीय रियासतें पूरी तरह देश के साथ हैं। स्मरण पत्र में त्रागे कहा गया कि सम्राट के साथ ग्रपने सम्बन्ध द्वारा रियासतों ने जो ग्रिधिकार प्राप्त कर रखे हैं वे ग्रव श्रागे नहीं रहेंगे। रियासतों ने सम्राट को जो श्रिधिकार सौंप रखे हैं वे उन्हें वापस मिल जायेंगे । भारत से ब्रिटिश सत्ता के हट जाने पर जो रिक्तता होगी उसको पूर्ति रियासतों को नये सम्बन्ध जोड़कर करनी होगी । स्मरणपत्र में ग्रागे चलकर उल्लेख किया गया कि भारतीय रियासतें उपयुक्त मामलों में काफी बड़ी प्रशासनिक इकाइयाँ वनाने या उनमें शामिल होने की इच्छा रखती हैं ताकि संवैधानिक योजना में वे उपयुक्त वन सकें श्रीर श्रांग्ल-भारत के साथ वातचीत कर सकें। र १६ मई सन् १६४६ को मन्त्रिमएडल मिशन की योजना घोषित की गई। भारतीय रियासतों से सम्बन्धित प्रस्तावों में कहा गया कि भारत एक संघ होगा जिसमें ब्रिटिश भारत स्त्रीर भारतीय रियासतें दोनों होंगे । यह संघ रियासतों के विदेशी मामले, रत्ता श्रीर संचार की देखमाल करेगा। भारतीय संघ को सौंपे गये इन विषयों ऋौर ऋघिकारों के ऋलावा शेष सभी विषय श्रौर श्रिविकार रियांसतों के पास ही रहेंगे। विधान निर्मात्री परिषद में रियासतों के प्रतिनिधियों की संख्या ६३ से ग्रिधिक नहीं होगी ऋौर यह वातचीत द्वारा तै की जायेगी। रियासतों ने सर्व सम्मति से योजना को स्वीकार किया। लेकिन इसमें त्रान्तरिक कठिनाइयाँ थीं । महाराजा सादूलसिंह के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही ये ब्रान्तरिक कठिनाइयां दूर हुई ब्रौर एक सर्व सम्मत निर्णय सम्भव हो सका।3

ता॰ ७-प-१६४७ को बीकानेर वाणिज्य मंडल के उद्घाटन पर श्री के. एम. पतिकर का भाषण—

१. मारतीय रियासतों के वारे में श्वेत पत्र, पु॰ १५२-५३ ।

२. वही, प० २६।

२. वीकानेर चुलेटिन, वर्ष ४, श्रंक १--- श्रगस्त १६४७।

[&]quot;यह नहीं सोचना चाहिये कि यह निर्श्य विना किसी आ्रान्तरिक कठिनाई के लिया गया। राजाओं और मिन्त्रियों का एक ऐसा प्रमावशालो समूह था जो भारतीय संघ के प्रश्न को इसी रूप में नहीं देखता था। उसका विचार मार—तीय रियासतों का एक अलग संघ वनाने का था। यह भारत का तीसरा विभाजन होता। इससे हिन्दुस्तान के टुकड़े र हो जाते और वह कमजोर और असमर्थ होता। इस खतरनाक विचार को महाराजा सादूलसिंह और उनके मित्रों की हढ़ता ने आरस्म में ही खत्म कर दिया।"

१६ मई सन् १६४६ को इस योजना की स्वीकृति की प्रशंसा करतें हुये महाराजा ने इसे भारत की स्वतन्त्रता के लिये सबसे महान कदम बताया। उनके ग्रनुसार स्वतन्त्र भारत में राजाग्रों को ग्रपने पद की चिन्ता नहीं करनी चाहिये, उन्हें परिवर्तन का महत्व ग्रनुभव करना चाहिये ग्रीर उसके ग्रनुसार ग्रपने को ढ़ालना चाहिये। जहां तक बीकानेर रियासत का सम्बन्ध था, उन्होंने कहा कि कुछ समय पूर्व मुक्ते महात्मा गांधी, सरदार चल्लभभाई पटेल ग्रीर पंडित नेहरू से मिलने ग्रीर मेरे द्वारा किये जाने वाले सुघारों के बारे में वातचीत करने का ग्रवसर मिला। उनकी प्रतिक्रिया उत्साह वद्ध क ग्रीर मैत्रीपूर्ण है। इ

- १. ता० २७-७-१६४६ को महाराजा सादूलसिंह का मापण-"१६ मई की योजना, जिसमें रियासतों श्रीर प्रान्तों दोनों को मिलाकर
 संघ बनाने का प्रस्ताव है, की स्वीकृति मारत की स्वतन्त्रता के लिये उठाया
 गया सब से महान कदम हैं। मैंने यह सदा श्रमुमव किया है कि यदि
 राजा लोग श्रीर रियासतें इस समय भारत में होने वाले परिवर्तनों की
 वास्तिविक महत्ता को पूरी तरह ध्यान में रखें श्रीर श्रपने मन श्रीर नीति को
 उसके श्रमुसार बनायें तो स्वतन्त्र मारत में र्झपने उपयुक्त स्थान के बारे में
 उन्हें कोई डर नहीं होना चोहिये। यह बात स्पष्ट रूप से समम लेनी
 चाहिये कि जो कुछ हो रहा है वह बहुत गम्मीर रूपान्तर है।"
- बीकानेर संविधान एक्ट १६४७ के अन्तर्गत जिनका उल्लेख है।
- २. ता० २७-७-१६४६ को महाराजा सादूलसिंह का मापण--"श्राप में से कुछ लोगों को विदित है कि श्रमी वम्बई से लौटने के पूर्व मैं
 महारमा गाँधी, सरदार वल्लममाई पटेल श्रौर पंडित नेहरू से मिला। इनसे
 मिलकर मुम्ने बड़ी प्रसन्नता हुई । मैंने इनसे भारत की वर्तमान राजनीतिक
 स्थिति श्रौर सामान्यतः रियासतों की स्थिति के बारे में खुल कर लम्बी
 वातचीत की। इस श्रवसर पर मैंने उन्हें संवैधानिक सुधारों के बारे में बताया
 जिन्हें बीकानेर राज्य में करने की मेरी इच्छा है। जैसी मुम्ने श्राशा थी, मुम्ने
 यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि सब मिला कर उनकी प्रतिक्रिया उत्साह वर्डक
 श्रीर मैत्रीपूर्ण थी। उन्होंने मेरे द्वारा उठाये जाने वाले इस साहिसक कदम
 पर मुम्ने वधाई दी। साथ ही मैं श्रपने साथ यह मधुर स्मृति मी लाया कि वे
 रियासत की घटनाश्रों को गहरी रुचि से देख रहे हैं श्रीर मैंने जो महान प्रयोग
 करने का निश्चय किया है उसके सफल होने की उत्सुकता से प्रतीक्ता कर
 रहे हैं।"

मन्त्रि मएडल मिशन की योजना में यह प्रस्ताव किया गया था कि भारत में एक ही सरकार होगी जो केवल सुरज्ञा, विदेशी मामले श्रौर संचार के लिये उत्तरदायी होगी। अन्य बातों के लिये देश तीन वर्गों में विभाजित किया जायेगा— 'ग्रा' वर्ग में हिन्दू बहुल भाग, 'व' वर्ग में मुस्लिम बहुल भाग ग्रीर 'स' वर्ग में वह भाग होगा जहाँ मुसलमानों का बहुमत ग्राल्य हो । मुस्लिम लीग ने इन प्रस्तानों को स्पष्ट श्रीर संचिप्त रूप में ग्रहण किया। वह इन्हें स्वीकार करने को तैयार थी लेकिन ज्योंही जुलाई सन् १९४६ में पंडित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के ऋष्यच्च वने, उन्होंने एक सम्वाददाता सम्मेलन में यह राय प्रकट की कि योजना में संशोधन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस समभौतों से वंधी हुई नहीं है ग्रौर जैसी भी परिस्थिति उत्पन्न हो उसका सामना करने को स्वतन्त्र है। १ इस घोषणा के फलस्वरूप २७ जुलाई सन् १९४६ को मुस्लिम लीग ने मन्त्रि-मण्डल योजना की ऋपनी स्वीकृति वापस ले ली। १६ ऋगस्त का दिन सीधी कारवाई का दिन घोषित किया गया । फलस्वरूप कलकत्ता में हिन्दुन्नां का करलेत्राम हुन्ना जिससे साम्प्रदायिक उन्माद की न्नाग भड़क उठी । श्रगले एक वर्ष में यह भारत के उपमहाद्वीप में फैल गई श्रौर सीमा के दोनों स्रोर लाखों पुरुष, स्त्रियाँ श्रीर वच्चे वर्वरता से कत्ल कर दिये गये । व लार्ड वेवल घवरा गया । कांग्रेस में मुस्लिम लीग का विश्वास जमाने के लिये उसने पंडित जवाहरलाल नेहरू स्रीर महात्मा गाँधी को एक घोषणा पर हस्ताच्चर करने के लिये कहा । यह घोषणा इस प्रकार थी-

"साम्प्रदायिक मेल के हित में कांग्रेस १६ मई की घोषणा (मन्त्रि-मण्डल मिशन की घोषणा) की इस भावना को स्वीकार करने को तैयार है कि यदि वर्ग या विभाग बने तो प्रान्तों को उनमें शामिल होने की तब तक कोई छूट नहीं दी जा सकती जब तक कि १६ मई की घोषणा के पैरा १६ (VII) के अनुसार नई संवैधानिक व्यवस्था लागू होकर और प्रथम आम

मौलाना श्रवुल कलाम श्राजाद, इन्डिया निन्स फ्रीडम, पृष्ठ १४५ श्रीर १६२ ।

इसके फलस्वरूप मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की अपनी मांग दोहराई और अन्त में मारत का विमाजन हुआ। मौलाना आजाद के अनुसार "सन् १६४६ की गलती और भी अधिक मेंहगी सिद्ध हुई"।

२. लियोनार्ड मोस्ले, दी लास्ट डेज़ आफ दी बिटिश राज, पृ० ३३-३५।

चुनाव कराकर नई व्यवस्थापिका निर्णय नहीं लेती।" लेकिन इसका परिणाम यह निकला कि अविश्वास तथा विद्वेष बढ़ गया । लार्ड वेवल, भारत में कांग्रेस और इंग्लैंड में मि॰ एटली दोनों का विश्वास खो चुका था। मि॰ एटली ने लार्ड वेवल की बात न मान कर उसे ग्रादेश दिया कि ग्रविलम्ब ग्रन्तरिम सरकार की स्थापना की जाय । २ सितम्बर सन् १९४६ को अन्तरिम सरकार ने शपय ग्रहण की। ह दिसम्बर सन् १९४६ से विधान निर्मात्री सभा काम करने लगी। नरेन्द्र मएडल की स्थायी समिति अपनी १० जून सन् १९४६ की घोषणा के अनुसार इस बात पर सहमत हो गई कि मन्त्रिमण्डल योजना विधान निर्मात्री सभा में रियासतों के प्रतिनिधित्व तथा संघ में उनकी ऋन्तिम स्थिति के बारे में बातचीत के लिये उपयुक्त ग्राधार प्रस्तुत करती है श्रौर फलस्वरूप वातचीत करने के लिये रियासतों की वार्तालाप समिति का गठन किया । २ २१ दिसम्बर सन् १९४६ के अपने प्रस्ताव द्वारा विधान निर्मात्री सभा ने भी एक ऐसी ही सिमिति नियुक्त की । रियासतों की वार्तीलाप समिति का ब्रिटिश भारत की ऐसी ही समिति के साथ न और ६ फरवरी तथा १ मार्च १९४७ को विचार विमर्श हुआ ।

२० फरवरी सन् १६४७ को मि॰ एटली ने हाउस आफ कामन्स में घोषणा कर दी थी कि जून १६४८ तक भारत की एक उत्तरदायी सरकार को सत्ता हस्तान्तरित कर दी जायेगी। लाई वेवल ने त्याग पत्र दे दिया और २४ मार्च १६४७ को लाई माउन्ट बैटन ने उनका पद सम्भाला। महाराजा सादूलसिंह, जो दिल्ली में थे, शपय ग्रहण समारोह में शामिल नहीं हुये। वे लेकिन उसी दिन बाद में वे जाकर बाइसराय से मिले। उन्होंने अपनी अनुपियित का कारण बताया और कहा कि भोपाल का नवाब अन्तरिम सरकार के प्रति अपने दृष्टिकोण के कारण राजाओं में विवादास्पद मामले खड़े कर रहा है। महाराजा ने विश्वास प्रकट किया कि उनके समूह द्वारा विधान निर्मात्री सभा में सम्मिलित होने से नया शासन काफी मजबूत हो

१. लियोनार्ड मोस्ले, दी लास्ट डेज़ आफ दी ब्रिटिश राज, पृ. ४३।

वीकानेर के विदेश और राजनैतिक मन्त्री श्री के. एम. पिक्षकर इस सिमिति में वीकानेर के प्रतिनिधि थे।

भोपाल का नवाव भी इस समाराह में शामिल नहीं हुआ ।

४. वीकानेर, जयपुर, जोषपुर, पटियाला श्रीर म्वालियर ।

जायेगा। भोपाल का नवाब उस समय नरेन्द्र मण्डल का अध्यक्त था। वह इस बात पर जोर दे रहा था कि रियासतें अलग अलग कोई कारवाई न करें विलंक वे सब सामृहिक रूप से और अध्यक्त की सहमित से ही कारवाई करें। भारत की स्वतन्त्रता के समय तीनों सम्बन्धित दलों द्वारा जो बातचीत चल रही थी उसकी सदस्यता को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि मारत का आरम्भ से ही धर्म निरपेक्ता में हद विश्वास रहा है। कांग्रेस, मुस्लिम लीग और भारतीय रियासतें तीनों की ओर से बातचीत करने वाले मुसलमान थे। कांग्रेस की ओर से मौलाना आजाद, मुस्लमलीग की ओर से जिन्ना तथा राजाओं की ओर से भोपाल के नवाब हमीदुल्ला खाँ थे।

न्नप्रैल सन् १६४७ में राजात्रों की स्थाई समिति की वैठकें हुई। इनमें दोनों वार्तालाप समितियों (रियासतों की वार्तालाप समिति श्रीर विधान निर्मात्री सभा द्वारा नियुक्त ऐसी ही समिति) द्वारा किये गये समभौते पुष्टि के लिये रखे गये श्रीर स्वीकृत हुये। लेकिन रियासतें कत्र विधान निर्मात्री सभा में समितित हों इस प्रश्न पर अध्यन्न और महाराजा साद्लसिंह में मतमेद हो गया । श्रध्यक्त श्रीर वहुत से राजा इस पक्त में थे कि रियासते संघीय संविधान वनने के समय विधान निर्मात्री सभा में सम्मिलित हों। महाराजा सादूलसिंह श्रीर उनके समूह के राजा तुरन्त सम्मिलित होने के पच में थे। यह देख कर कि राजात्रों को समस्या की गम्भीरता त्रातुभव कराना उनके लिये सम्भव नहीं है, महाराजा ने ग्रपना ऐतिहासिक बहिर्गमन (सभा त्याग) किया। उन्होंने श्राध्यक्त के लिये एक टिप्पणी लिख कर छोड़ दी। इसमें उन्होंने कहा कि स्थाई समिति में ग्रीर ग्राधिक न रहने के लिये मुक्ते च्रमा किया जाय क्योंकि इसमें मेरी स्थित बड़ी कठिन हो जायेगी। उन्होंने यह भी लिखा कि इस समय राजात्रों श्रौर देश के सामने जो समस्यायें हैं उनके बारे में मेरे विचार श्रध्यच श्रौर स्थायी समिति के बहुमत से बिल्कुल भिन्न हैं। न तो में चुन रह सकता हूँ ऋरिन ऋपने दृष्टिकोण के वारे में, जिसे में श्रीमानों के समद श्रनेक बार स्पन्ट कर चुका हूँ, श्रीर श्रधिक कहना चाहता हूँ ।

महाराजा ने उसी दिन अपने साथी राजाओं के नाम एक

१. कैम्पवैल, मिशन विद माउन्ट वैटन, पु० ४४।

२. वही पु० ४७।

२. महाराजा वोकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल संख्या १३२०-XXI-A, ता॰ १-४-१६४७ की महाराजा सादूलिसेंह की टिप्पणी।

अपील निकाली। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अंग्रेजों के हटने से को रिक्तता उत्पन्न होगी उसकी जगह भारत के यथा—सम्भव वड़े से बड़े भाग के निर्माण के लिये कार्य करना ही रियासतों के लिये एक मात्र सुर-चित नीति होगी। यह भाग रियासतों और ब्रिटिश भारत दोनों की रच्चा करेगा और शान्ति, व्यवस्था और अञ्छी सरकार बनाये रंखेगा। यह असैनिक गड़वड़ी भी रोकेगा। उन्होंने आगे लिखा कि यदि राजाओं द्वारा "प्रतीच्चा करों और देखों" की नीति अपनाई गई तो यह उनके घोषित विचारों के अनुसार नहीं होगी जो स्वतन्त्रता प्राप्ति में भारत की सहायता करने के लिये थे। अतः उन्होंने जोर दिया कि राजा लोग इस अवसर पर आगे आयें और भारत की स्वतन्त्रता और महानता के सहनिर्माता कहलायें। व

महाराजा के वहिर्गमन श्रीर श्रपील के फलस्वरूप एक समभौता तैयार किया गया। श्रंत में यह ते हुश्रा कि दोनों वार्तालाप समितियों के बीच हुये समभौतों की विधान निर्मात्री सभा द्वारा पुष्टि के बाद रियासतें किसी भी समय विधान निर्मात्री सभा में शामिल हो सकती हैं। महाराजा के इस ऐतिहासिक वहिर्गमन से एक तीसरी शक्ति बनाने का "मोपाल के नवाव का खेल" खत्म हो गया। महाराजा की इस कारवाई की केवल सारे समाचार पत्रों ने ही प्रशंसा नहीं की बिल्क ब्रिटिश भारत के प्रसिद्ध नेताश्रों ने भी सराहना की। सरदार वल्लभभाई पटेल ने महाराजा के बारे में लिखा कि "वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने वातचीत में इतना महत्वपूर्ण भाग लिया है जिससे राजाश्रों के भारतीय संघ में मिलने का मार्ग खुल गया। महाराजा ऐसे व्यक्ति हैं जो इद्ध स्वामी भिक्त के साथ देश के साथ रहे।" स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति ने महाराजा की देशभिक्त पूर्ण कारवाई की

१. ता॰ १-४-१६४७ की महाराजा सादूलसिंह की गुप्त अपील ।

दी टाइम्स ऑफ इंडिया ता० २-४-१६४७ और ७-४-१६४७।
नेशनल स्टेंडर्ड ता० २-४-१६४७।
वाम्वे सेंटिनल ता० २-४-१६४७।
फी प्रेस जरनल ता० २-४-१६४७।
दी वाम्वे क्रोंनिकल ता० ४-४-१६४७।

महाराजा बीकानेर के निजी सिचिव के कार्यांतय की फाइल सं० १२५२—IX, महाराजा सादूलसिंह के नाम सरदार पटेल का ता० २७-१-१६५० का पत्र ।

मूरि भूरि प्रशंसा की । उन्होंने कहा--

"भारत के एकीकरण का महान कार्य मूलतः इसिलये हो सका क्योंकि उसमें महाराजा सादूलसिंह जैसे राजाओं ने संविधान निर्माण में भाग लेने और भारत की विधान निर्मात्री सभा में अपने प्रतिनिधि मेजने की सद्भावना और तत्परता दिखाई। यह एक कठिन कार्य था। इस कठिनाई का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। यदि इस प्रकार का हार्दिक सहयोग नहीं मिलता तो भारत शायद कई टुकड़ों में विभाजित रहता। बीकानेर के स्वर्गीय महाराजा सादूलसिंह को ही इस बात का श्रेय है कि अपने साहसी निर्णय से उन्होंने दूसरे राजाओं का ठीक और समय पर मार्ग प्रदर्शन किया। इसके फलस्वरूप अन्त में केवल बीकानेर रियासत ही भारत में सम्मिलित नहीं हुई बिलक दूसरी रियासतें भी सम्मिलित हुई। अतः भारत उनका ऋणी है श्रीर रहेगा।"

" जब उस काल का इतिहास लिखा जायगा तो उसमें यह उल्लेख होगा कि जब एक स्रोर भारत के समच विभाजन का संकट या स्रोर दूसरी स्रोर इसके छोटे २ इकड़े होने की खतरनाक सम्भावना थी तो दूरदर्शिता स्रोर महान देश भिक्त से प्रभावित होकर महाराजा सादूलिसंह चट्टान की तरह स्रटल रहे स्रोर उस सम्भावना को मिटा दिया।"

महान देशभिक्त की भावना से प्रेरित होकर महाराजा सादूलसिंह ने भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होते देखने का अपना वचन निभाया। साथ ही अपने साथी राजाओं को, जो अपने विचार निश्चित नहीं कर पा रहे थे, अल्यावश्यक साहस प्रदान किया। आरम्भ से ही उन्होंने राजाओं को प्रभावित किया कि जिस मन्त्रिमंडल मिशन योजना का समर्थन करने के वारे में राजा लोग पहले ही

१. वीकानेर में ता॰ २--६-१६५४ को डा॰ राजेन्द्र प्रसाद का माषण जब कि व महाराजा सादूलिसिंह की मूर्ति का अनावरण करने आये। यह मूर्ति ऐतिहासिक थी क्योंकि सन् १६५० में महाराजा के स्वर्गवास के तुरन्त वाद और एकीकरण के कुछ समय वाद वीकानेर के लोगों ने स्वेच्छा से अपने आप धन संग्रह किया और इस विशाल अश्वारोही मूर्ति को बनवा कर नगर के एक मुख्य स्थान पर स्थापित किया।

प्रतिज्ञा कर चुके हैं उसे लागू करने में सहयोग दें। मि॰ लियाकत अलीलों ने ग्रारोप लगाया कि महाराजा ने यह कारवाई दवाय में ग्राकर की है। महाराजा ने तुरन्त इसका खएडन किया ग्रीर कहा कि मैंने जो निर्णय लिया है वह एक मात्र देशमित की भावना से प्रेरित होकर ग्रीर राष्ट्र के सर्वोत्तम हित के लिये किया है। महाराजा के इस खएडन की समाचार पत्रों ने बहुत प्रशंसा की। २ २८ अप्रैल सन् १९४७ को बीकानेर के प्रतिनिधि के. एम. पिनकर ने विधान निर्मात्री सभा में ग्रापना स्थान ग्रहण किया।

१. मि० लियाकत अली खाँ के इस आरोप का कि रियासतें कांग्रेस के दवाव से वशीभूत हो गई थाँ, ता० २४-४-९६४७ को महाराजा ने पशोसिये-टेड प्रेस ऑक इण्डिया को दिये गये अपने कथन में उत्तर दिया था। महाराजा ने कहा—

"में कह सकता हूं कि जहाँ तक बीकानेर रियासत का सम्बन्ध है श्रीर दूसरी रियासतें मी जिन्होंने विधान निर्मात्री समा के काम में माग लेने का निर्चय किया है, यह निर्णय किसी के दवाव से निरिचत रूप से नहीं किया । कांग्रेस के दवाव से तो विल्कुल नहीं । हमने यह निर्णय इसलिय किया कि हम इसे हमारे एवं साथ साथ मारत के सर्वोत्तम हित में सममते हैं । इसके श्रितिरिक्त हम श्रपनी मातृभूमि के प्रति पूर्णतः देशमिक्त की मावना से भी प्रमावित हुये ताकि इस विकट घड़ी में जब ब्रिटिश मारत श्रीर रियासतों को प्रमावित करने वाले दूरगामी निर्णय जल्दी से लेने हैं तो हम भी इस काम में जहाँ तक वन सके श्रपने देश की मदद करें।"

- इिख्यन न्यूज झानिकल ता० २७-४-१६४७ । लोकनाणी ता० २६-४-१६४७ ।
- वो ० पी० मेनन, दी स्टोरी ऑफ दी इंटीग्रेशन ऑफ दी इंडियन स्टेट्स, पु० ७६ । वाद में कंत्रर जसवन्तिसिंह जी दाउदसर ने भी विघान निर्मांत्री समा में वीकानर का प्रतिनिधित्व किया ।

वीकानेर विघानसमा के सदस्यों की एक सिमिति मी नियुक्त की गई जिसका काम विघान निर्मात्री समा में रियासत के प्रतिनिधि के साथ निकट सम्बन्ध रखना और इसके काम के साथ सम्पर्क कायम रखना था। ये ६ सदस्य इस प्रकार थे—

२. पंडित बद्री प्रसाद व्यास, २. सॉख् के ठाकुर हीरसिंह, ३. सरदार दरवारा सिंह, ४. चौघरी मोतीराम, ५. सेठ लहरचन्द सेठिया, ६. शेख निसारश्रहमद्र । इसी बीच काश्मीर में एक गम्मीर स्थित उत्पन्न हो गई थी। शेख ग्रव्हुला ने काश्मीर छोड़ो ग्रान्दोलन शुरू कर दिया था। फलस्वरूप वह वंदी बनाया गया ग्रीर उसके विरुद्ध एक मुकदमा ग्रारम्भ हुन्ना। महाराजा सादूलसिंह एक शिक्तशाली ग्रीर संगठित भारत में विश्वास रखते थे। काश्मीर में स्थिति सुधारने में उन्होंने ग्रपना योग देने का प्रयत्न किया। जून सन् १६४७ में उन्होंने महात्मा गांधी को पत्र लिखा। ऐसी खबर थी कि गाँधीजी काश्मीर जाने वाले थे। महाराजा ने महात्मा गांधी को सुमाव दिया कि वे शेख द्वारा ग्रपनाई गई मूल स्थिति से उसे हटाने में ग्रपना प्रभाव काम में लावें। उन्होंने यह भी सुभाव दिया कि यदि यह सम्भव न

१. सन् १६६४ में जेल से छूटने पर, शेख अब्दुला प्रथम मारतीय राजनीतिज्ञ था जिसने मारतीय संघ में किसी मारतीय रियासत के शामिल होने के बारे में सन्देह प्रकट किया । लेखक ने संसद सदस्य और बीकानेर के महाराजा के रूप में समाचार पत्रों को दिये गये एक कथन में कहा कि "वीकानेर रियासत तथा जम्मू और काश्मीर के सम्मिलित होने में कोई कानूनी अन्तर नहीं था क्योंकि ज्योहों शासक ने सम्मिलित होने के समम्मीते पर हस्ताक्तर किये यह हमेशा के लिये दोनों पत्तों पर कानूनी हिट से लागू और पूर्ण हो गया । कमी कमी यह बात कही जाती है कि भारतीय संघ में सम्मिलित होने के समय भूतपूर्व रियासतों की जनता की सलाह नहीं ली गई। यह वात सच नहीं है क्योंकि "मारतीय स्वतन्त्रता कानून" में ऐसी कोई धारा नहीं है। असली माव यह था कि अग्रेजी सत्ता समाप्ति के वाद प्रत्येक रियासत के शासक को यह अधिकार था कि वह दो नव निर्मित देशों—मारत और पाकिस्तान—में से किसी एक के साथ सम्मिलित हो जाय । यहीं मामला खत्म हो जाता था।"

मैंने यह भी कहा कि "अपने व्यक्तिगत अनुमन से मुक्ते ज्ञात है कि मेरे पिता महाराजा साद्लसिंह भारतीय संघ में इसलिये सम्मिलित हुये क्यों कि वे जानते थे कि रियासत के १५ लाख लोग यही चाहते हैं। यही वात अन्य सेंकड़ों रियासतों पर भी लागू होती है। मुक्ते विश्वास है कि काश्मीर कोई अपवाद न था।"

मैंने यह मी कहा कि "स्वयं शेख अञ्दुल्ला ने जम्मू और काश्मीर रियासत के मारत में विलय की जोरदार मांग की और वाद में मारत सरकार से सहायता मांगी। यह तथ्य सभी प्रकार के सन्देह को मिटा देता है।" हो तो दोनों पन्नों में "बोती ताहि विसारदे ग्रागे की सुघ लेय" के ग्राघार पर समभौता कराने का प्रयत्न किया जाय। महाराजा ने समय की ग्रावश्यकता पर ज़ोर दिया ग्रीर देश की विशेष परिस्थित को ध्यान में रखते हुये एक समभौते के हल का समर्थन किया। महारमा गांघी ने पत्र की प्राप्ति स्वीकार की ग्रीर लिखा कि यदि मैं काश्मीर गया तो इस पत्र की बात ध्यान में रखूँगा। इससे महाराजा की देश के प्रति हढ़ देशमिक्त ग्रीर कर्तव्य भावना का पता चलता है। साथ ही इससे यह भी प्रकट होता है कि जो लोग राष्ट्र के भाग्य का निर्माण कर रहे थे, उनके साथ महाराजा के सम्बन्ध कितने मैत्रीपूर्ण थे।

भारत विभाजन का दुष्परिणाम सामने दिखाई पड़ने लगा।
२० फरवरी १६४७ को मि० एटली की ब्रिटिश सत्ता के भारत से हटने
सम्बन्धी घोपणा के बाद यदि रियासतें सहयोग देने के स्थान पर दूसरा
मार्ग जुनतीं तो वास्तव में ही भारत के कई खएड होने की खतरनाक
सम्भावना थी। ग्रातः नई सरकार ने पहला कदम ५ जुलाई सन् १६४७
को रियासती विभाग को बनाकर उठाया ताकि भारतीय रियासतों के साथ
ग्रापने सम्बन्ध को चालू रखें। असरदार बल्लम भाई पटेल इस विभाग के
मन्त्री नियुक्त किये गये ग्रीर उन्होंने बी० पी० मेनन को ग्रापना सचिव
बनाया। रियासती विभाग के सामने तुरन्त समस्या यह थी कि भारत को
ब्रिटिश साम्राज्य के ग्रान्तर्गत स्वराज्य प्राप्त देश का दर्जा मिलने की घोषणा
की तिथि से पहले जो थोड़ा सा समय बीच में है उसमें राजाग्रों के साथ

वीकानेर महाराजा के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ६१४--XVIII, महात्मा गांघो के नाम महाराजा सादूलिसिंह का ता० १५-६-१६४७ का पत्र । परिशिष्ट ३४

२. वही, महत्मा गांघी का महाराजा सादूलसिंह के नाम १६-६-१६४७ का पत्र।

३. / मारतीय रियासतों के बारे में श्वेत पत्र, पू. १३।

४. वही ।

सरदार पटेल, सरदार अब्दुल रव निश्तर के साथ सलाह करके काम करने वाले थे और मि. इकरामठल्ला को संयुक्त सचिव नियुक्त किया गया। विचार यह या कि जब भारत और पाकिस्तान दो अलग अलग राष्ट्र वन जांय तो इस विमाग को सरलता से विमाजित किया जा सके और बिना किसी गढ़बड़ी के दोनों देशों में यह विभाग काम करता रहे।

प्रत्येक व्यवस्था, जिन्हें श्रंग्रेजों ने रह करना श्रारम्भ कर दिया है जैसे सेना, डाक श्रादि, के सम्बन्ध में सफलता से कैसे वातचीत की जाय। सरदार पटेल इस वारे में चिन्तित थे। इससे राजाश्रों के साथ फिर से सारी वातें श्रारम्भ करनी पड़तीं लेकिन श्री मेनन ने तुरन्त सरदार पटेल की चिन्ता दूर करदी। उन्होंने सुमाव दिया कि राजाश्रों से केवल तीन विषयों में ही विलय के लिये कहा जाय। ये तीन विषय रक्षा, विदेशी मामले, श्रीर संचार थे। सरदार पटेल ने श्रपने विभाग की नीति वताने का प्रथम श्रायसर प्राप्त किया। उन्होंने राजाश्रों से श्रपील की कि इन सामान्य हित वाले तीन विषयों को वे भारत सरकार को सौंप दें। उन्होंने विश्वास दिलाया कि श्रन्य विषयों में उनका स्वायत्त श्रस्तित्व निःसन्देह रूप से कायम रखा जायेगा। उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि रियासतों के घरेलू मामलों में किसी भी तरह से किसी प्रकार का हस्तचेप करने की कांग्रेस की इच्छा नहीं है श्रीर रियासतों के साथ वर्ताव में मेरे विभाग की नीति श्रिषकार की नहीं होगी। हम चाहेंगे कि राजा लोग श्रच्छी तरह से रहें। हम राजाश्रों के शत्र नहीं है। "

महाराजा ने यह श्रनुभव किया कि यदि राजा लोग भारत के स्वराष्ट्र से बाहर रहने का निर्णय करते हैं तो उसके बुरे परिणाम होंगे। उन्होंने सरदार पटेल की इस घोषणा का तुरन्त स्वागत कियां। उन्होंने

१. हिन्दुस्तान टाइम्स ता० ७-७-१९४७।

श्री वीकानेर बुलेटिन, वर्ष ५ श्रंक १— श्रगस्त १६४७, ए० ११-१२ । मारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति की खुशी में किये गये दिनांक १५-५-१६४७ को एक राजकीय मोज में महाराजा सादूलसिंह द्वारा दिया गया मापए। — "विटिश सत्ता समाप्ति के साथ मारतीय रियासतों को यह छूट थी कि वे श्रलग रहें श्रीर नये स्वराष्ट्र के साथ सम्बन्धित होने से इन्कार कर दें। कानूनी दिष्ट से श्राज हम सभी स्वतन्त्र हो सकते थे क्योंकि हमने विटिश साम्राज्य को श्राधिपत्य का जो श्रिधिकार सौंपा था वह मारतीय स्वतन्त्रता कानून के श्रन्तर्गत हमें वापस मिल गया था। हम श्रलग रह सकते थे श्रीर भारतीय स्वराष्ट्र में विलय नहीं करते। एक च्हाए के विचार से ही यह स्पष्ट हो जायेगा कि इसका परिएगम कितना विनाशकारी होता। शुरू से ही मेरे दिमाग में यह वात श्रा गई थी कि इससे मारत छोटे २ हकड़ों में वंट जायेगा। इसके परिएगम का पूर्ण ज्ञान रखते हुये मैंने विना हिचकिचाहट



सरदार पटेल ने महाराजा द्वारा प्रदत्त सहायता श्रीर सहयोग के लिये भी सराहना की । सरदार पटेल ने कहा कि जब सारी योजना तोड़ी फोड़ी जा रही थी तो बीकानेर के महाराजा ने ही संयुक्त भारत के लिये ग्रपनी ग्रटल स्वामिभिक्त द्वारा स्थित को बचाया । उन्होंने कहा —

ŀ

"ः हेदराबाद ख्रीर जूनागढ़ को छोड़कर सभी पूर्ण श्रिधकार प्राप्त रियासतें, जिन्हें भारतीय संघ में सम्मिलित होने के लिये कहा गया था, विलय के समभौते पर हस्ताचर कर चुकी हैं जिसे राजाओं श्रोर रियासतों के प्रतिनिधियों की वार्ता-लाप समिति ने त्रांतिम रूप दिया था। मैं त्रपने साथियों की स्रोर से, ऋपनी स्रोर से तथा रियासती विभाग की स्रोर से, श्रीमान ने उन कठिन दिनों में जो सहायता श्रौर सहयोग दिया उसके लिये ऋत्यधिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ । श्रीमान से बढकर ग्रीर कोई इसंबात को नहीं जानता कि हम सब को किस प्रकार के वातावरण में काम करना पड़ा श्रीर किन पड़-यन्त्रों का सामना करना पड़ा । ये कठिनाइयाँ ऋौर षड्यन्त्र न केवल जाते हुये प्रायः समस्त विदेश विभाग द्वारा, बल्कि, मुक्ते श्रफसोस है कि, हमारे कुछ देशवासियों द्वारा भी उपस्थित किये गये। इनमें राजा लोग श्रीर उनके मंत्री भी शामिल हैं। वारवार सारी योजना को नष्ट करने के प्रयत्न किये गये ताकि हमारे भावों के अनुसार एक मजबूत, संगठित और शक्तिशाली भारत न बन पाये । लेकिन हम सबके सौभाग्य से वे प्रयत्न ऋसफल हो गये। इसका श्रेय, संगठित भारत के लिये, श्रीमान ग्रीर दूसरे देशभक्त राजाश्रों श्रीर मन्त्रियों की ब्राटल ब्रास्था को है। राजाश्रों को गलत राह पर ले जाने के लिये जान वूमकर जो सन्देह श्रीर गलतफहमियाँ उत्पन्न की गईं उन्हे मिटाने में ब्रापने जो कण्ट किया उससे मैं भलीभाँति परिचित हूँ । उस समय ग्रापसे प्राप्त सहायता को इस त्र्यवसर पर स्मरण कर निश्चय ही मुक्ते खुशी होती है।"

" ग्रापसे कठिन कार्य में मुक्ते ग्रापसे जो बहुत मूल्यवान सहायता श्रीर सहयोग मिला उसके लिये भी श्रापको घन्यवाद है। श्रापका नेतृत्व निश्चय ही समयानुकृत श्रीर

जानते थे, जिन्हें परिस्थितियों से विवश होकर अवश्यम्मावी के प्रति भुकना पड़ा । इस स्थिति के समय लेखक अपने पिता महाराजा साद्लसिंह के बहुत निकट सम्पर्क में या जो कि भारतीय नेताओं के साथ अनेक महत्वपूर्ण मुलाकार्ते कर रहे थे और महाराजा के हमारे नेताओं के प्रति चास्तविक सद्भाव और विश्वास से लेखक सहमत था ।

पंजाव के विभाजन से बोकानेर के बहुत सहस्वपूर्ण हित खतरे में पड़ गये । फिरोजपुर हेडवर्कस से ही गंगनहर को पानी मिलता श्रीर नियन्त्रित होता था। यह त्रारांका थी कि यदि हैडवक्स पाकिस्तान में गया तो सतलज के पानी में रियासत के हितों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा । इस प्रकार जब निजी सूत्रों से यह बात मालूम हो गई कि मुस्लिम लीग फिरोजपुर हैडवक्से से पानी दिये जाने पर नियन्त्रण का दावा कर सकती है तो वीकानेर के प्रधान मन्त्री ने सरदार पटेल को एक पत्र लिखंकर इस स्थिति से अवगत कराया श्रीर उन्हें बताया कि राष्ट्र के विभाजन के बाद फिरोजपुर निश्चित रूप से भारतीय च्लेत्र में रहना चाहिये । उसने यह भी लिखा कि सतलज घाटी नहरों से बीकानेर के इलाके की एक हजार वर्ग मील से श्रधिक भूमि सींची जाती है। यदि मुस्लिम लीग के दावे को स्वीकार किया गया तो रियासत के हितों को वहुत हानि पहुँचेगी। रियासती विभाग के मन्त्री श्रीर विभाजन के उच्च परिषद् के सदस्य होने के कारण सरदार पटेल पर उसने जोर दिया कि वे यह निश्चय कर दें कि फिरोजपुर हैडवर्क्स पूर्णतः भारत द्वारा नियन्त्रित हो। पहाराजा ने भी ७ जुलाई सन् १९४७ को वाइसराय, पंडित जवाहरलाल नेहरू डा॰ राजेन्द्र पसाद और सरदार पटेल को तार भेजे । इन तारों में यह अनुरोध किया गया कि जो व्यवस्था की जा रही है, उसमें इस बात का पूरा ध्यान रखा जाय कि वीकानेर रियासत के हितों में हस्तच्चेप न हों तथा रियासत के अधिकार पूरी तरह से सुरचित रखे जायं क्योंकि इन्हीं ग्राधिकारों पर बीकानेर रियासत की पूर्ण त्रार्थिक स्थिति क्रौर समृद्धि निर्भर करती है। वसदार पटेल ने उत्तर दिया कि इस वारे में उपयुक्त कदम उठाये जा रहे हैं। उन्होंने महाराजा को श्राश्वासन दिया कि श्रापसी हितों (भारत श्रीर वीकानेर रियासत के) की पूर्ण

महाराजा वीकानर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० २६६६-वी,
 LIV, भाग २— माखरा वाँच योजना, के० एम० पन्निकर का सरदार पटेल
 के नाम पत्रांक ४६४-सी/३५६ ता० ५-७-१६४७ ।

२. वही, महाराजा साद्लसिंह के तार ७-७-१६४७ के तार ।



यी क्योंकि रियासत का ग्रार्थिक जीवन पूर्णतः इसी पर निर्भर या । महाराजा ने वाइसराय से ग्रनुरोध किया कि मेरे प्रधानमंत्री ग्रौर सिंचाई विभाग के चीफ इं जिनियर को ग्रापके सामने तथ्य रखने का एक ग्रवसर प्रदान किया जाय । समी सम्बधित लोगों, विशेषतः लार्ड माउन्ट वैटन को इसका श्रेय दिया जाना चाहिये कि ग्रन्त में वीकानेर महाराजा के प्रयत्न सफल हुये ग्रौर एक न्यायोचित वात मानी गई । फिरोजपुर भारत में रहा ।

लम्बे संघर्ष के बाद १४ त्रागस्त १६४७ की मध्यरात्रि में भारत ने स्वशासन प्राप्त किया और स्वतंत्र हो गया । लार्ड माउन्ट बैटन इसके प्रथम गवर्नर जनरल बने । नेहरू ने कहा— "बहुत वर्ष पहले हमने भाग्य के साथ त्राभिसार किया था । त्राव समय त्रा रहा है जब हम त्रापनी प्रतिज्ञा को पूरी करेंगे, पूर्णतः या पूरे रूप में नहीं बल्कि धीरे धीरे । मध्यरात्रि का घंटा वजने के समय जब कि संसार सोता है भारत जीवन और स्वतन्त्रता में जागेगा।"

स्वतन्त्रता ग्रव भारत के लिये एक प्राप्त तथ्य था। श्राजादी की लड़ाई के फलस्वरूप विना खून खरावी के सत्ता परिवर्तन हो गया था। लेकिन ये खुशियां श्रल्पकालीन थीं। एक वर्ष पहले जिन्ना ने सीधी कार-वाई दिवस मनाने का जो ग्रावाहन किया था, उसने साम्प्रदायिक घृणा

- १. महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० २६६६-बी-LIV, माग २, माखरा बांघ योजना, महाराजा सादूलसिंह का लार्ड माउन्ट बैटन के नाम ता० १०-५-१६४७ का तार ।
- २. कैम्पवेल, भिशन विद माउन्ट वैटन, पृ० १५७, विधान निर्मांत्री समा में ता० १४-५-१६४७ को पंडित जवाहरलाल नेहरू का माषण ।
 - श्री कियोनार्ड मोसले, दी लास्ट डेज ऑफ दी ब्रिटिश राज, पु० २६-३२ । ''श्राज हमने जो कुछ किया है वह हमारे इतिहास में सर्वाधिक ऐतिहासिक कार्य है । लीग के सारे इतिहास में हमने वैधानिक तरीकों और वैधानिकता के सिवा कभी कुछ नहीं किया । लेकिन अब हमें इस स्थित के लिये मजबूर किया गया है । इस दिन हम वैधानिक तरीकों को हमेशा के लिये छोड़ते हैं-- श्राज हमने एक पिस्तील धारण कर ली है और हम इसे प्रयोग करने की स्थित में हैं ।''-- जिन्ना

ता॰ ५-५-१६४६ के स्टेट्समैन में सुहरावदीं ने एक लेख में लिखा— 'यदि अच्छे काम के लिये किये नायं तो खून खरावी और अन्यवस्था अनिवार्यतः अपने आप में दोष नहीं हैं।"

बचाने का छिति मानवीय कार्य पूरा किया । यह कार्य उन्होंने ऐसे समय में किया जबिक जीमाओं के पार बिटिश भारत में और उससे भी छिषक पाकिस्तान में, शरणार्थियों के जीवन का कोई मूल्य न था । इस विराट समस्या का मुकावला करने के लिये किये गये प्रवन्ध ने वीकानेर के स्थानीय निवासियों के लिये बहुत सी दूसरी समस्यायें उत्पन्न कर दी। भारत से पाकिस्तान छाने वाले शरणार्थियों के लिये काफी भोजन छौर छावास की व्यवस्था करनी पड़ी क्योंकि छिषकांश शरणार्थियों के पास वास्तव में कुछ भी न था। बीकानेर रियासत में यह कार्य सम्भवतः इसलिये छिषक सरलता से हुछा क्योंकि सदियों से बीकानेर में विभिन्न सम्प्रदायों के लोग पूर्ण प्रेम से रह रहे थे। शेष भारत में जो साम्प्रदायिक घृणा की भावना भड़की उसने राजपूताना की बड़ी रियासतों पर, किसी उल्लेखनीय सीमा तक, कोई प्रभाव नहीं डाला।

जब पाकिस्तान से हिन्दुश्रों का निकालना प्रारम्भ हुआ श्रीर वे मारत में श्राये तो मारत सरकार ने बीकानेर रियासत से श्रनुरोध किया कि यदि सम्भव हो तो उन्हें श्रस्थायी तौर पर श्रपने यहां तब तक रखा जाय जब तक कि उन्हें कुछ समय में पुनः स्थापित न किया जाये। कुछ श्रवसरों पर पाकिस्तान से भारत श्राने वाले शरणार्थी हवाई जहाज से भी श्राये श्रीर बाज मौकां पर विशेष वायुयानों द्वारा भी। भावलपुर श्रीर उसके श्रासपास के स्थानों से जो हिन्दू सीधे बीकानेर में प्रविष्ट हुये उनका मुक्त हस्य से स्वागत किया गया। लेकिन दूसरे ऐसे हिन्दू भी थे जो पूर्वी पंजाब में प्रविष्ट हुये श्रीर जिन्हें श्रस्थायी रूप से रखा जाना था। बीकानेर रियासत ने भारत सरकार को सहयोग देना श्रपना कर्तव्य समका श्रीर इन हिन्दू शरणार्थियों को रखने के लिये सहमत हो गई। उनके लिये कई स्थानों पर शिविर खोले गये। कोलायत , जहाँ काफी धर्मशालायें थी, शरणार्थियों

उस समय कँवर जसवन्तिसिंह दाउदसर शरणार्थियों के लिये प्रवन्य कर रहे
 धे । शरणार्थियों के आने जाने और उनके लिये किये गये प्रवन्य का विवरण कँवर जसवन्तिसिंह के कथन पर आधारित है ।

२. बीकानेर को इस बात का गर्व था कि यहाँ के हवाई श्रद्दे की पटरी सीमेंट की बनी हुई श्रीर २१०० गज लम्बी थी। यहाँ बढ़े से बढ़े विमान उत्तर सकते थे।

६. कोलायत शब्द कपिलायत से बना है। कोलायत नगर बीकानेर के दिल्ला पश्चिम की श्रोर लगमग ३० मील पर स्थित है। गाँव में एक तालाव

का एक केन्द्र वन गरा। पर्नशालाकों के मालिकों से यहा गया कि वे उन्हें को तक प्रकार को की मीद हैं। भोजन और जीवन की अन्य आवश्यकताओं के निके की करेड़ महतार में वस्त सम्भव पूर्व प्रवन्य किया। जिले के एक नगर अजनगर में का राज्य साम्लिक्ष में आने स्वयं का भवन और उसके कारवान का बाद में का प्रान्तिक से आने वाले सरगार्थियों को तींव दिया।

जन भारतपुर से खाने वाले शरणार्थी पास के गंगानगर जिले में हमकरे तमे हो उन्होंने बीरानेर रियासत में खाते समय मार्ग में हुये जन-राम जीर खास्त काएउ की हदयस्पर्शी कहानियाँ सुनाई । इन्हें सुनकर रणनीत निर्धां खीर सिक्त इतने कोवित हुये कि वे बदले की तैयारी करने तमे । महाराखा की इसकी ख्याना मिली। उन्होंने बीकानेर की सेना गंगानगर मेरे आने की तुरना खाशा दी ताकि उनके किसी मुस्लिम प्रजाजन की हानि न पहिंदे ।

जब पाकिन्तान के भावलपुर तेत्र से ग्राने वाले हिन्दुश्रों की रोगण बर्त श्रांघक बट्ने लगी श्रीर उन पर हुये ग्रत्याचारों की कहानियाँ पै परे लगी तो बीकानेर रियासत द्वारा यह उचित समभा गया कि गंगानगर के उला है में बचने पाले मुसलमानों को श्रन्त में पाकिन्तान मेजने के लिये एक वा दो स्थानों पर जमा किया जाय । थोड़े ही समय में यह श्रनुभव िया गया कि सीमा तेत्र में बचने वाले मुसलमानों के लिये वहाँ रहना श्रमभव दिया गया कि सीमा तेत्र में बचने वाले मुसलमानों के लिये वहाँ रहना श्रमभव है । उन्हें क्यास दी गई कि वे भावलपुर चले जायं । उन्हें रियासत की श्रेम के गंरत्या में मुस्तित पहुँचाने का भी बचन दिया गया । बीकानेर सरकार की बसी सावधानी श्रीर इस मामले में इसके कहे हिस्टकीण के पलनाव करने की केवल एक ही हुट युट पटना हुई । इस एक घटना के धारिता कीर कोई घटना नहीं हुई श्रीर सीमा पर रहने वाले हजारों मुसलमान कृत्याय प्रांचे गये।

देश में हो छान उथल-पुथल हो रही थी उसका प्रभाव वारानेर के छन्द्र मार्गा पर भी, उहाँ मुसलगान काफी संख्या में बसे हुये थे,

[े] निपाने निवारे पर करिल सुनि का महिदर है। यह तालाब अजमेर के निवार पुण्य के समान है, पनित्र सामा जाता है। यहाँ एक वार्षिक मेला क्षेत्र के निवार देख के सभी मार्गों से हजारों लोग आते हैं।

पड़ने लगा । यहाँ चूरू का उल्लेख किया जा सकता है जहाँ सेठ श्रीर लाहूकारों के यहां काफी मुसलमान नौकरी किया करते थे। जब साम्प्रदायिक चृणा से वातावरण दूषित हुत्रा तो चूरू के सेठों स्त्रौर स्त्रन्य उत्तरदायी नागरिकों ने मुसलमानों का विहिष्कार ग्रारम्भ कर दिया। इससे उनका जीवन वहुत कठिन हो गया। पाकिस्तान जाने से पूर्व ये हजारों की संख्या में बीकानेर आये। उन्होंने महाराजा को ग्रपनी दुखभरी कहानी सुनाई । महाराजा को यह जानकर वड़ा दुःख हुग्रा कि बहुमत सम्प्रदाय ने ऐसा व्यवहार किया । चूरू के इन इजारों मुसलमानों को शरण श्रौर मोजन दिया गया। एक विशेष माग खोला गया ताकि बीकानेर के शिविरों में दोनों तरह के शरणार्थियों — पाकिस्तान से श्राने वाले हिन्दुश्रों श्रोर पाकिस्तान जाने के लिये बीकानेर श्राने वाले मुसलमानों--- की देखभाल की जाय। महाराजा ने सार्वजनिक निर्माण मन्त्री कंवर जसवन्तसिंह को चूंरू भेजा कि वे महाजनों को कहें कि जो मुसल--मान काम छोड़ चुके हैं उन्हें वापस लगायें श्रौर इस वात का ध्यान रखें कि उन्हें किसी प्रकार तंग न किया जाय । महाजनों ने महाराजा की वात मानली । चूरू के मुस्लिम निवासी विशेष रेलगाड़ियों द्वारा वापस भेजे गये श्रीर उनकी सम्पति उन्हें पुनः दिलादी गई

इसी प्रकार गंगानगर जिले की सीमा की एक तहसील के मुख्य कार्यालय अन्पाद में मुसलमान बसे रहना चाहते ये क्योंकि उनकी संख्या काफी थी। लेकिन पास के गांव के हिन्दु ओं ने कुछ संकीर्णियचारों के अफसरों की उपेक्षा का लाभ उठाकर उन्हें तंग करना शुरू कर दिया। अपनी सम्पति पीछे, छोड़ वे भी भावलपुर में चले गये। भावलपुर का हलाका बीकानेर रियासत के अनूपगढ़ कस्वे से केवल ६ मील दूर था। पुनः कंवर जसवन्तसिंह को भेजा गया कि वे अनूपगढ़ से जाने वाले मुसलमानों को विश्वास दिलाये कि यदि वे अपने घरों को वापिस लीटने का निर्णय करें तो उनकी पूरी तरह से सुरक्षा की जायेगी और इसके लिये विशेष सेना के लोग वहां लगाये जायेंगे। जिन अफसरों को दोषी पाया

१. चूरू वीकानेर से लगमग १०० मील दूर पूर्व की श्रोर स्थित है। यह नगर ज़िले का प्रधान कार्यालय है। यहां की श्रावादी लगमग ४०,००० है जिसमें कई करोड़पति हैं। कहा जाता है कि सम्वत् १६२० के श्रासपास चूहड़ नामक जाट ने इसे वसाया था। इस नगर में श्रनेक सुन्दर मवन श्रीर कुर्ये हैं।

को सुरिक्तित पाकिस्तानी सीमा तक पहुँचाया गया । जब दोनों देशों में साम्प्र-दायिक नर-संहार कम होने लगा तो बीकानेर रियासत इस विराट मानवीय कार्य को इतनी अच्छी तरह से करने के लिये सन्तोप श्रीर गर्व के साथ विगत पर दृष्टिपात कर सकती थी । कंवर जसवन्तसिंह के अनुसार महाराजा के इस महान कार्य के लिये भारत के नेताओं और पाकिस्तान के प्रधान मंत्री दोनों ने उन्हें वधाई दी ।

पिछले श्रध्याय में यह बात पहले कहो जा चुकी है कि श्रपनी जनता के कच्टों को श्रीर कम करने की हिन्द से तथा रियासत का श्राधिक विकास करने की हिन्द से महाराजा गंगासिंह भाखरा बांध योजना को मूर्त रूप देने के लिये निरन्तर प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन यह योजना उनके जीवन काल में सम्पन्न नहीं हो सकी। महाराजा सादूलसिंह श्रपनी जनता का कल्याण बहुत चाहते थे। श्रतः उन्होंने इस काम को वहां से श्रपने हाथ में लिया जहां उनके महान पिता ने इसे छोड़ा था। पंजाव सरकार का हिन्दकोण पुनः बदल गया था। यह बात मालूम हो गई कि राय बहादुर खोसला द्वारा सन् १६४० में जो योजना तैयार की गई थी श्रीर जिसमें बीकानेर को एक निश्चित भाग देने का श्राश्वासन दिया गया था, श्रव परित्याग की जा रही थी। श्रतः महाराजा ने इस विषय में पंजाब के प्रधानमंत्री को एक पत्र लिखा। उत्तर में उन्हें यह बताया गया कि इस योजना के श्रन्तर्गत मिलने वाले पानी के लिये इतने श्रधिक दावे हैं कि पानी की मात्रा निश्चित करना श्रीर देना कुछ कठिनाई पैदा करता है।

महाराजा ने पंजाब के राज्यपाल सर ईवन जेनिकन्स को भी

१. लियोनार्ड मोसले, पूर्व उद्भृत, पृ० २४४ ।
"६ लाख मरे, १ करोड़ ४० लाख अपने घरों से निकाले गये, दोनों स्रोर से
१ लाख जनान लड़ कियों का अपहरण किया गया, जनर्दस्ती उनका धर्म
परिवर्तन किया गया या निलामो कर उन्हें वेचा गया ।

महाराजा बीकानेर के निजी सिचित्र कार्यालय की फाइल सं० २६६६-ची-LIV, भाग २, सर खिजर हयात खीं के नाम महाराजा सादूलसिंह का ता० ५--१०-१६४६ का पत्र ।

२. वही, महाराजा के नाम सर खिजर हयात खाँ का पत्र सं• ७१- पी. पम ता• नवस्वर सन् १९४६।

किया था। बीच के समय में दोनों ने निकट सम्पर्क रखा। पत्र व्यवहार में दोनों एक दूसरे को प्रेम से आरम्भिक नामों से ही सम्बोधित करते थे। लाई माउन्ट बैटन महाराजा को "हीक" लिखता था। यह नाम महाराजा गंगासिंह ने प्यार से रखा था। महाराजा सादूलसिंह लाई माउन्ट बैटन को "डिकी" लिखते थे। लाई माउन्ट बैटन के वाइसराय काल में यह निजी दोस्ती और भी बढ़ गई। 9

स्वागत भाषण का उत्तर देते हुये लार्ड माउन्ट वैटन ने महाराजा को श्रपने श्राजीवन मित्रों में से एक बताया। उसने कहा कि हमारी मित्रता पहले पहल उस समय हुई जब महाराजा ५ वर्ष के थे श्रीर में ७ वर्ष का या। वाइसराय के श्रपने कार्यकाल का उल्लेख करते हुये कहा कि भारत श्राकर उसकी पहली सरकारी मुलाकात मार्च सन् १६४७ में महाराजा से ही हुई। उसने यह भी कहा कि उस समय महाराजा ने जो समक्क, सहयोग श्रीर सहायता का दृष्टिकोण प्रदर्शित किया उससे भारत के भावी दृष्टि में रियासतों की रिथित का संतोषजनक समाधान निकाल सकने का मुक्ते नया विश्वास हुआ। रिथित का संतोषजनक समाधान निकाल सकने का मुक्ते नया विश्वास हुआ। रिथित वा इसराय के शब्दों में—

"महाराजा साहव प्रथम शासक थे जिन्होंने भारत का नया संविधान बनाने में मदद देने के लिये विधान निर्मात्री सभा में प्रतिनिधि भेजकर यह अनुभव कर लिया कि भविष्य में राजा लोगों को क्या करना है। इसी प्रकार महाराजा साहब पहले शासक थे जिन्होंने रियासतों के अपने पास के संघ में शामिल

१. ता॰ १५-१-१६४० को महाराजा सादूलसिंह का माषण—
"" लार्ड माउन्ट बैटन के साथ मेरी जो जीवन मर की दोस्ती है
उसका मैंने संकेत किया है । यह उस समय की बात है जब हम दोनों
खिलोनों से खेलने वाले वच्चे थे। उस समय हम दोनों साथ हो गये। यदि
मैं यह बात कहूं कि हम दोनों में जो प्रेम और मित्रता हुई वह आगे के
वर्षों में और मी बढ़ी, तो अनुचित न होगा। सुमे इस बात में कोई
सन्देह नहीं है कि इंग्लेंड के साथ हमारे देश के चाहे जो राजनैतिक सम्बन्ध
हों, और सुमे विश्वास है कि व बहुत ही गहरे होंगे, हम दोनों की निजी
मित्रता मृत्यु पर्यन्त बनी रहेगी।"

२. ता॰ १४-१-१६४८ को लालगढ़ पैलेस वीकानेर में हुये दरवार में लार्ड माउन्ट वैटन का भाषण ।

होने के मेरे प्रस्तावों का समर्थन किया ।"

"वह बात याद रखनी चाहिये कि सत्ता परिवर्तन के दिन है ही रियासतों का ब्रिटिश भारत के साथ जो सम्बन्ध था, वह दूर हो गया नयोंकि वह सम्बन्ध ब्रिटिश सम्राट की सर्वोच्च सत्ता पर निर्भर था। उस दिन मैंने दो विल्कुल ख्रलग ख्रलग काम हों। दिये। इसमें एक वाइसराय का काम था ख्रीर दूसरा सम्राट के प्रतिनिधि का। प्रथम रूप में में रियासतों के साथ व्यवहार करना था। यह बात सही है कि ये दोनों पद हमेशा एक ही व्यक्ति के पास रहे हैं जिसने कि वास्तव में रियासतों का सम्पर्क ब्रिटिश भारत के साथ रखा। इन दोनों पदों की समाप्ति से तुरन्त यह खतरा पैदा हो गया था कि भारत के दुकड़े २ हो जायेंगे।"

" विना एक क्या सन्देह किये महाराजा बीकानेर ने भारतीय संघ में अपनी रियासत के शामिल होने की घोषणा करके जिस देश भिक्त ग्रीर कुशल राजनीति का परिचय देकर दूसरे राजाग्रों का पय प्रदर्शन किया वह कम प्रशंसा की बात नहीं है।"

"मेरी सरकार विशेष रूप से महाराजा साहब के छुशल राजनीतिश जैसे कार्यों की प्रशंसा करती है। मुक्ते इस बात से श्रीर भी खुशी है कि महाराजा साहब के पहले के कामों तथा इन कार्यों से खुश होकर सम्राट ने इन्हें "नाइट ग्रांड कमान्डर श्राफ दी मोस्ट इक्जाल्टेड श्रार्डर श्राफ दी स्टार श्राफ इन्डिया" यनाया है।"

लाई माउन्ट बैटन का दौरा गननेर में शिकार शिविर के बाद समान हुआ। गननेर में बुटबड़ों का शिकार किया गया जिसका बाइसराय ने बहुत आनन्द उठाया। बाइसराय स्वयं एक अच्छे, निशानेबाज हैं। लाई माउन्ट बैटन के गाय उनकी परनी लेडी माउन्ट बैटन और उनकी दो लड़-दिया बैट्रिश्या हो बोर्न तथा पमेला माउन्ट बैटन भी थीं।

१. क्षेत्रके में ता० १४-१-१८४२ की लाई माउन्ट बैटन का मापण ।

की मानेर की बड़ी बुटबड़ी का शिकार विश्व प्रसिद्ध होगया है। महाराजा संगत्ति श्रीर महाराजा सादृत्वसिंह के राज्यकाल में प्रत्येक नया बादसराय गजनेर में

वाइसराय के दौरे के शीघ बाद राष्ट्र पर एक महान संकट आ गया। ३० जनवरी सन् १९४८ को राष्ट्रिपता महात्मा गांधी को गोली मार दी गई। एकाएक सारा देश ऋसीम दुःख में डूव गया। ज्योही महाराजा ने यह दुःखद खबर सुनी उन्होंने लार्ड माउन्ट बैटन, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सर-दार पटेल ग्रीर दूसरों को शोक संवेदना के ग्रानेक तार भेजे। उन्होंने अपने मास्टर श्राफ दी हाउसहोल्ड लेफिटनेंट कर्नल ठाकुर किशनसिंह श्रीर विदेश व राजनैतिक सचिव, बीकानेर सरकार, कैंप्टेन के॰ पी॰ यू॰ मेनन को तुरन्त तार द्वारा त्रादेश भेजा कि वे महाराजा साहव की त्रोर से महात्मा गाँधी के दाह संस्कार में शामिल हों। ये लोग उस समय दिल्ली में थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने राजकीय शोक भनाने का आदेश दिया और ३१ जनवरी सन् १९४८ को ४ वजे स्टेडियम में सामृहिक प्रार्थना करने को कहा। महाराजा ने स्वयं प्रार्थना का नेतृत्व किया ऋौर वे शोक मग्न हो गये। इस अवसर पर महाराजा ने सफेद साफा वाँघा जो कि शोक का प्रतीक है स्त्रीर राजा इसे तभी घारण करता है जब उसके अपने ही परिवार के किसी बड़े की मृत्य हो जाती है। श्रन्य किसी के लिये शासक सफेद साफा नहीं वाँधता। परम्परा से इस प्रकार हटना यह सिद्ध करता है कि महाराजा सादूलसिंह त्रौर वीकानेर के लोग गाँधीजी के प्रति कितनी ऋघिक श्रद्धा रखते थे।

भारतीय रियासतों के भारतीय संघ में शामिल होने के प्रथम सोपान को पार कर भारत सरकार ने ग्रव रियासतों के पूर्ण एकीकरण के कार्यक्रम को ग्रारम्भ किया। उनका तर्क था कि रियासतों के लोग भी प्रान्तों के लोगों

बड़ी बुटबड़ों का शिकार करने के लिये बीकानेर आया। गजनेर वीकानेर से केवल २१ मील दूर है। यहाँ नखिलस्तान की तरह एक भील और सुन्दर महल तथा वड़ी शिकारगाह है। एक बार मजाक में यह बात कही गई कि "वीकानेर ने बड़ी बुटबड़ों की कृपा से" इतनी उन्नति कर ली। प्रिंस ऑफ वेल्स, जो वाद में सम्राट अण्टम एडवर्ड वने, सम्राट जार्ज पंचम और राजकुमार आर्थर सभी महाराजा गंगासिंह के मेहमान बनकर वीकानेर आये और बड़ी सुटबड़ों का शिकार किया। इन प्रसिद्ध शिकारों में माग लेने के लिये प्रति वर्ष २०० महत्वपूर्ण विदेशी और मारतीय मेहमान आना कोई वड़ी वात न थी। इन मूल्यवान सम्पर्कों का लाम उठाकर महाराजा गंगासिंह वीकानेर रियासत और यहाँ के लोगों का हित साधन करते थे।

९. वीकानेर राजपत्र ता० ३१-१-१६४८।

ये बराजा हो स्वत्याता प्राप्त करना चाहते हैं। यह कहा गया कि जनता की यह इन्हा दिनाएकों में बहु रहे विभिन्न राजनैतिक छान्दोलनों से स्वस्ट होती है। दूनता तर्क यह दिया गया कि छोटी रियासतों के शासक इन्छित प्रशास हीत सुनार नहीं कर सकते क्योंकि छावश्यक कार्य करने के लिये उनके यहाँ साधनों का छाभाव है। इसलिये यह स्थिति की माँग है कि या हो में पास के प्रान्तों में मिल कर अपने छापको एक बड़ी इकाई में गठित करनों या छापस में मिल कर एक केन्द्रीय प्रशासित चेत्र का स्वयं भारण करनों !' नमय बीतने के साथ साथ इस पद्धति का विस्तार करके वही रियासतों को मी लपेटे में लिया गया छोर रियासतों के संघ बना कर उनकी नई पूर्ण इकाइयां बनाई गई । इन संघों की एक याम विशेषता यह थी कि ऐसे राज्य का वैधानिक प्रधान राजप्रमुख बनाया गया जो बाद में बहुत सी जगह छाजीवन था। छाजीवन राजप्रमुख का उत्तराधिकारी राजाछों की परिषद में से ही जुना जाता था। होतन सीमाग्य से यह गैर जनतन्त्रीय पर छाधिक समय तक नहीं रहा।

यह बात उस श्राश्वासन के विरुद्ध थी जो रियासतों के मंच में शामिल होने के समय दिया गया था। समय का प्रवाह बदल लुगा था। एकीकरण का कार्य स्पष्ट रूप से राजाश्रों की इच्छा से श्रारम्भ किया गया। लेकिन यह सहमित परिस्थित वशा थी जिसे वे इन्कार नहीं कर गक्षते थे। इस सम्बन्ध में राष्ट्रियता महात्मा गांधी के विचार उद्धृत परना रोशक होगा। एक बार उन्होंने कहा कि जब स्वराज्य की प्राप्ति होगी हो पारस्थिक महायता श्रीर सहयोग का सम्बन्ध होगा श्रीर विनाशकारी गंधर्ष श्रातित की वस्तु बन जायगा। स्वराज्य श्राने पर ब्रिटिश भारत

शास्तीय रियासती के एकीकरण के तुरन्त बाद रियासतों के संघ 'ख' भाग राज्य बन गये। राजस्थान कुछ वर्षों तक एक राजप्रसुख के शासन में 'ग' भाग राज्य रहा। बाद में राजप्रसुख का स्थान राज्यपाल ने लिया। राजस्थान व कुछ अन्य संवों को 'क' माग राज्य के समान बना दिया गया। गुछ 'ग' भाग राज्य भी थे जैसे श्रिपुरा, अजमेर और हिमाचल प्रदेश। यह 'ग' माग राज्य केन्द्र द्वारा शासित थे।

भागनीय विवासनों के सम्बन्ध में श्वेत पत्र, पू० १७४-७७ ।
 १६-१२-१६४७ का सरदार पटेल का कथन; पू० ६८-३६ मी ११० ।

भारतीय रियासतों को मिटाना नहीं चाहेगा बल्कि उनका सहायक होगा।"

ग्रारम्भ में भारत सरकार ने यह घोषणा की थी कि १८ रियासतें ऐसी हैं कि वे भारतीय संघ की पूर्ण इकाई की शतों को पूरी करती हैं। विधान निर्मात्री सभा के समझ रखे गये संविधान के मसौदे के सम्वन्धित भाग में इन १८ रियासतों के नाम भी दिये गये थे। लेकिन ज्यों २ एकीकरण ग्रौर रियासतों को मिला कर एक करने का काम ग्राग बढा तो इन रियासतों ने ग्रपना ग्रपना स्वरूप खो दिया। संविधान स्वीकार होने से काफी पूर्व ही ऐसा हो चुका था। बीकानेर रियासत इन १८ पूर्ण राज्यों में से एक थी।

सन् १६४८ के वर्ष में महाराजा सादूलसिंह को दिल्ली श्रानेक बार जाना पड़ा। वे लगभग प्रतिमास दिल्ली जाते ये श्रीर ऐसे श्रवसरों पर लेखक भी उनके साथ गया। कुछ यात्रायें तो वाइसराय के बुलाने पर की गईं। कुछ श्रवसरों पर तो महाराजा को लाने के लिये वाइसराय ने श्रपना वायुयान भी भेजा। एक बार की बात तो लेखक की श्रव्छी तरह याद है। मई सन् १६४८ में महाराजा सादूलसिंह के साथ जाने वाला दल काफी बड़ा था। श्रतः दो वायुयानों का उपयोग करना पड़ा। दूसरा मौका जून सन् १६४८ में श्राया। इस बार फरीदकोट के शासक के विद्ध श्रारोपों की जाँच के सम्बन्ध में ग्वालियर, बोकानेर, जयपुर श्रीर पिटयाला के राजाश्रों को दिल्ली बुलाया गया था। लेखक को श्रव्छी तरह से याद है कि इस वैठक में वाद में गवर्नर जनरल बनने वाले चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भी उपस्थित थे। बैठकों में महाराजा सादूलसिंह ने यह बात कही कि जब तक फरीदकोट के शासक को गई। से न हटाया जाय तब तक न तो गवर्नर जनरल श्रीर न कोई दूसरा व्यक्ति ही उसे गिरफ्तार कर सकता है।

१४ दिसम्बर सन् १६४७ और बाद की तिथियों में छत्तीसगढ़ श्रीर उड़ीसा की रियासतों ने समभौतों पर दस्तखत करके भारतीय संघ को श्रपने शासन के पूर्ण श्रधिकार सौंप दिये । इससे एकीकरण का काम श्रारम्म हुआ । १ जनवरी सन् १६४८ को इन रियासतों का शासन मध्यप्रदेश और उड़ीसा की सरकारों को सौंप दिया गया। रियासती

१. एम. के गाँधी, दी इविडयन स्टेट्स प्रोनलम्, पृ० ६-१०।

२. कॅंबर जसवन्तर्सिह दाउदसर का हलफनामा।

३. भारतीय रियासतों के सम्बन्ध में श्वेत पत्र, पु० ४०-४९।

इस्तार भी ग्रांतिक्स मी नीति की जह इस्तारों में कह ह्यालोचना हुई तो स्वर्थ पहेल से बो॰ पी॰ मेनन को गाँधोजी छोर पंछित नेहरू के पास देल लाहि हुन्हें इस काम्बाई के छोनित्य में विश्वास करा दिया जाय। भी नेहन के हार्यार गाँधोजी को इस काम से पूरी तरह मंतोप था। भागत स्वर्ध की इस वास्वाई से राजाछों के मन में भय उत्पन्त हो राष । ७ जनपी सन् १६४८ को जब एक सम्मेलन में कुछ राजा लाई शाहरू बैदन में मिले तो उन्होंने यह स्वाल उठाया। इस सम्मेलन में स्वार्थ बाहुल्यित भी उपस्थित थे। सम्मेलन में बी॰ पी॰ मेनन ने क्या कि एकीइरण का खिलांत उन स्थासतों पर लागू नहीं किया व्ययेगा जिनके विधान निर्मात्री सभा में झलग प्रतिनिधि हैं। लेकिन बाद में जो हुआ उसने इस कथन को मिर्या बना दिया।

मारतीय रियासर्वे तीन स्पष्ट श्रेणियों वाली थीं। कुछ रियासर्वे प्राचीन काल से स्थापित थीं। ये भारत में मुस्लिम श्रायवा श्रां भेजी राज्य से भी पत्ते थीं। दूसरी श्रेणी मुख्यरूप से मुस्लिम राज वंशों की रियासतों की थीं। श्रीर जिनका निर्माण विदेशी शासकों के सरदारों या चत्रपों द्वारा किया गणा था। तीमर्थ श्रेणी बहुत बाद में बनी रियासतों की थी। इन्हें श्रां भेजों से श्रपनी गणा दह करने के लिये श्रन्तिम काल में मान्यता दी थी। वीकानेर प्रथम श्रेणी के श्रन्तर्गत थीं।

राजपूताना की श्रिधिकांश रियासतें प्राचीनकाल से स्थापित थीं । किटिश सम्राट के साथ इनका पारस्वरिक मेल श्रीर सुरचात्मक सिंध का समर्भावा था । यह बात ध्यान देने की है कि समस्त मारत में केवल ४० ही ऐसी रियागर्वे थीं जिन्होंने ब्रिटिश सम्राट के साथ इस प्रकार का समर्भीया किया था । श्रवः यह स्वामाविक था कि नई सरकार की इस परिष्वित गींव से यानी रियासवों के एकीकरण श्रीर संघ बनाने के कार्य को गांव देने थी नीति में गांवाश्री को गहरा धक्का पहुँचा । राजपूताना भी इससे बन नहीं गहा क्योंकि यह काम तेजी से बढ़ रहा था । इसका एकीकरण भार गींवानों में पूरा हुआ ।

शंक शंक मेनन, दी रहोरी ऑफ दी इन्टीग्रेशन आंफ दी इस्टियन स्टेट्स, पुरु १६३ ।

^{2. 3/3, 50 158 1}

प्रथम संयुक्त राजस्थान राज्य का जिसमें दिल्ला पूर्व की नी के छोटी रियासतें थीं, २५ मार्च सन् १६४८ को उद्घाटन हुआ। कोटा के महाराव मीमसिंह इसके राजप्रमुख बने और कोटा इस संघ की राजधानी वनाई गई। थोड़े समय बाद मेवाड़ (उदयपुर) के महाराखा भूपालसिंह ने भी राजस्थान संघ में सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की। मेवाड़ (उदयपुर) राजपूताना की सबसे प्राचीन और बड़ी रियासतों में से एक थी और एक पूर्ण इकाई थी। दूसरे राजस्थान संघ का उद्घाटन १८ अप्रैल सन् १६४८ को हुआ। मेवाड़ के महाराखा इसके आजीवन राजप्रमुख बने और कोटा के महाराव वरिष्ठ उप-राजप्रमुख बनाये गये। तब उदयपुर नये संघ की राजधानी बना।

श्रलवर, भरतपुर, घोलपुर श्रीर करोली इन चार रियासतों को मिलाकर मत्स्य नाम से एक नया संघ बनाया गया। इसका उद्घाटन १८ मार्च सन् १६४८ को हुन्ना। घोलपुर के महाराणा मत्स्य संघ के राजप्रमुख हुये श्रीर भरतपुर राजधानी बनाई गई। १५ मई सन् १६४६ को मत्स्य संघ को बृहद् राजस्थान में मिला दिया गया।

जैसलमेर की प्राचीन रियासत के साथ जयपुर, जोधपुर श्रीर बीकानेर तीनों की प्राचीन, वही श्रीर श्रलग रहने लायक रियासतें श्रन्त तक श्रलग रहीं। श्रीय श्रातः रियासती मंत्रालय ने शीव ही बातचीत श्रारम्भ की ताकि

१. मारतीय रियासतों के सम्बन्ध में श्वेत पत्र, ०० ५३।

२. वाँसवाङा, बूंदी, हूँगरपुर, भालावाङ, किश्तनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा स्रोर टींक ।

कोटा के महाराव मीमसिंह का विवाह लेखक की भुत्रा श्रीर महाराजा गंगासिंह को पुत्री के साथ हुआ है।

४. लेखक की वहिन का विवाह उदयपुर के वर्तमान महाराणा मगवतिसंह जी के साथ हुआ है। महाराणा भूपालसिंह का स्वर्गवास होने पर ये सन् १९५५ में मेवाड की गदी पर विराजे।

पी० पी० मेनन, दी स्टोरी ऑफ दी इन्टीग्रेशन ऑफ दी इविडयन स्टेट्स पृ० २५० ।

[&]quot;जयपुर जोधपुर और वीकानेर के शासकों की यह वही इच्छा थी कि वे अपनी रियासतों को अलग रखें। लेकिन उनकी रियासतों से वड़ी रियासतें या तो प्रान्तों के साथ मिल गई थीं या दूसरों के साथ मिलाकर संघ वना दी गई थी। अतः इन रियासतों को अलग छोड़ना कठिन था।"

इन सीर पूर्ण इस्पर्व पाली रियासती की मिलाकर एक बृहद् राजस्थान संघ कर दियां स्वीत सात के नात के नात है। दिल्ली, बीकानेर, जवपुर श्रीर हेरपुर में तियमहों मंतात्वय के प्रतिनिधि औ बी॰ पो॰ मेनन श्रीर इन हिपारणों के शासकी के बीच छालग छालग छीर साथ साथ सई बैठकी हुई। इन्हें में व्यक्तिकार बैठवी में लेखक उपस्पित था। यह बात शीन सम्बद्धी र्द्ध कि इन स्थापने का मिलन अवस्यम्भावी है और इस आशा से कि यह (रामार्थ प्रमुख तथा देश के ब्यानक हित में होगा ये चारों शासक बृहद् राज्यान मंत्र बनाने में सहमत हो गये। १४ जनवरी सन् १६४६ को उपायर में एक छाम सभा में सरदार पटेल ने घोषणा की कि जयपुर भेषपर खार बीकानेर के शासक सिद्धान्ततः एकीकरण के लिये सहमत हो मो है। १ ३० मार्च सन् १६४६ को सरदार पटेल द्वारा बृहद् राजस्थान गंग या उद्यादन किया गया । उदयपुर के महाराणा इसके श्रानीवन महा राजप्रसार यने । यह पद, जिसका कि कोई कार्य नहीं था, केवल महा-गना के निये ही बनाया गया या । जयपुर नरेश इसके स्त्राजीवन राजवरार वे बने । कोटा के महाराय भीमखिंह वरिष्ठ उपराजप्रमुख तथा जीघपुर श्रीर य दी के शासक ख़र्य उपराजयसुख बनाये गये । पर दोनों ही कनिष्ठ उपराजपसुखीं रे अपने पद की रापथ बहुना नहीं की । जयपुर संयुक्त राजस्थान की राजधानी धर्म: । यह एक विनित्र बात है कि बृहद् राजस्थान संघ के निर्माण का श्रारम दी मन्त्रीर वायुवान दुर्वटनात्र्यो से हुत्रा । इसमें राजस्थान बनाने वाले मुख्य व्यक्ति प्रस्त हुये । बीकानेर, जयपुर, जोधपुर श्रीर जैसलमेर के बृहद् राजस्थान

१. नी॰ पी॰ मेनन, दी स्टोरी ऑफ दी इन्टीग्रेशन ऑफ दी इपिडयन स्टेट्स, पू॰ २५१।

२. राजप्रमुख राजस्थान की सेनाश्रों का सर्वोच सेनापित भी था। राजप्रमुख का पद सनाय हो गया श्रीर इसके साथ ही राजस्थान में राजाश्रों की परिषद् भी गरम हो गई। उन तक राजस्थान 'क' माग राज्य नहीं बना श्रीर राजप्रमुख का पर नियास नहीं गया तब तक राजप्रमुख प्रति वर्ष राजस्थान के राजाश्रों की बैटर हुएलना था। परिषद् के शासकों की कानूनी रियति बहुत सन्देह जनक है स्वोठि सन्ध्यीतों में इस प्रकार के संघ बनाने की बात तो लिखी है लेकिन मार में इस परिषद् को हटाया नहीं गया है। राजप्रमुख के पद की समाति के मार न तो परिषद् की बैटर हुलाई गई है श्रीर न इसका श्रय्यस्त ही छुना गया है।

में मिलने से कुछ ही सप्ताह पूर्व जयपुर के महाराजा एक दुर्घटना में मरते मरते बचे । उनका वायुयान नष्ट हो गया । दूसरी घटना में वायुसेना के एक हवाई जहाज को जिसमें सरदार पटेल और जोधपुर के महाराजा सवार थे, विवश होकर एक नदी की तलहटी में उतरना पड़ा । ये लोग वृहद् राजस्थान संघ का उद्घाटन करने जा रहे थे और वाल वाल बचे । ७ अप्रैल सन् १९४६ को बीकानेर रियासत का प्रशासन राजस्थान की नई सरकार को सौंप दिया गया । इस अवसर पर नये बने संयुक्त राजस्थान को बीकानेर रियासत द्वारा ४ करोड़ ८७ लाख ६० की नकद पोतेबाकी सम्मलाई गई । यह रकम राजस्थान को सभी रियासतों द्वारा दी गई रकमों से सर्वाधिक थी । इसके अतिरिक्त बीकानेर स्टेट रेलवे की सारी सम्पति भी सौंप दी गई । केन्द्रीय सरकार को सौंपी गई लगभग एक करोड़ की इस सम्पति में रेलवे लाइन, रेल के डिव्वे, इञ्जन, आदि थे ।

एकीकरण के समभौते में यह कहा गया कि सत्ता शासकों के पास से राजप्रमुख के पास हस्तान्तरित हो जायेंगी, राजा लोग अपनी निजी सम्पति रख सकेंगे, उनकी गद्दी का उत्तराधिकार बना रहेगा, उन्हें उनकें अधिकार और विशेषाधिकार प्राप्त रहेंगे। तथा उन्हें व उनके उत्तराधिकारियों को एक निश्चित प्रिवीपर्स मिलती रहेगी। उत्तराख्यों की प्रिवीपर्स निश्चित

- १. सन १६४८ की बीकानर के प्रधानमन्त्री के कार्यालय की फाइल सं० ४६ (राजस्थान राज्य पुरालेख विमाग बीकानेर में), महाराजा द्वारा वस्वई से राजप्रमुख, जयपुर को ता० ७-४-१६४६ का तार । "समभौते की धारा ६ के अनुसार संयुक्त राजस्थान का पुनर्गठन करने के लिये में ७ अप्रैल १६४६ से बीकानेर रियासत का प्रशासन श्रीमान को सौंपता हं।"
- २. कुछ मुख्य रियासतों द्वारा दी गई नकद पोते वाकी इस प्रकार है-
 - (१) वीकानेर ४ करीड़ ५७ लाख
 - (२) जोघपुर ४ करोह ७५ लाख
 - (३) जयपुर ४ करोड़ ४ म लाख
 - (४) कोटा ३ करोड़ ३४ लाख
 - (५) उदयपुर श्रॉकड़े उपलब्ध नहीं
- तेलक के राज्यारोहण के समय जो उत्ताराधिकारपत्र और प्रिवी पर्स निर्णात करने का
 पत्र प्राप्त हुआ वह रोचक हो सकता है । परिशिष्ट ३८ और ३६ ।

करें। फीर इनकी निजी सम्पति को रियासत की सम्पति से स्पष्टतः खलग परने के लिये कावश्यन कदम उठाये गये। निजी सम्पति का निपटारा मन्दे के लिये यह मिद्धान्त छपनाया गया कि सजा द्वारा तैयार की गई निजी मन्दित की सुनी पर वह, राजप्रमुख (संघ बनाने वाली रियासती के निजी) क्रयमा प्रान्तीय सरकार का एक प्रतिनिधि (प्रान्तों में मिलने वाली रियासती के लिये) छीर रियासती मंत्रालय का एक प्रतिनिधि मिलकर विचार करें। मार्गजनिक विती का पूर्ण ध्यान रखते हुये मेल की भावना से समसीता रिया जाय। रियासती मंत्रालय ने महाराजा सादूलसिंह को ता॰ १७-२-१६४६ को को पत्र भेजा उसमें निजी सम्पति की वह स्वीकृत सूची है जो महाराजा के खनिकार में रोशी।

राजाओं की प्रिवीनर्स, जो कि उनके द्वारा शासनाधिकार छोड़ने के एनज़ में दी गई थी , एक सिद्धान्त पर तै की गई थी यानि शासक की छीमन वार्षिक छाय के प्रथम एक लाख का पन्द्रह प्रतिशत, बाद के नार लाम का दस प्रतिशत छोर पाँच लाख से ऊपर साढ़े सात प्रतिशत हो किन यह सारी दस लाम क वार्षिक से छाधिक नहीं हो सकती थी। अ छुछ

रिराबाद ४० लाग, बड़ीदा २६ लाख ४० हजार, मैसूर २६ लाख, गालियर २४ लाग, मेबाड २० लाख, त्रावनकोर १८ लाख, जयपुर १८ लाग, जोगपुर १७ लाख ४० हजार, बीकानेर १७ लाख, पिटयाला १७ लाग, इन्दीर १४ लाख, भावनगर १० लाख, भोषाल ११ लाख, कोल्हापुर १० लाख, नावानगर १० लाख, रीवां १० लाख।

राजस्यान के राजाश्रों का प्रिवीपर्स इस प्रकार निश्चित किया

श्रास ६ लाग २० हजार; भरतपुर ६ लाख २ हजार; घीलपुर १ लाख २६ ६मार; बृदी २ लाख २१ हजार; द्वारपुर १ लाख ६६ हजार; भण्यास १ लाख २६ हजार; विमानगढ़ १ लाख २६ हजार; कोटा ७ साम: भराष २० लाख; प्रतापगढ़ १ लाख २ हजार; शाहपुरा ६० हजार; टीह २ लाग ७२ हजार; जबपुर १२ लाख; जीवपुर १७ लाख ४० हजार;

१. भारतीय प्रियासतों के सम्बन्य में श्वेत पत्र, पुरु ६३-६४ ।

२. नरी, हु० १२३-२४ ।

तिन राजाकों का त्रिवीपर्स पकीकरण के समय दस लाख और उससे ऊपर निविचन किया गया वह इस प्रकार है—

वही ग्रीर ग्रलग रहने वाली रियासतें इसका श्रयवाद थीं । उनका प्रिवीपर्स १० लाख से ग्रिधिक निश्चित किया गया ग्रीर वह भी समभौते पर हस्ताच्चर करने वाले शासक के जीवन काल तक ही था । उसके बाद उसके उत्तरा-धिकारी को प्रिवीपर्स कम करके केवल १० लाख दिया जाना था। चूं कि वीकानेर एक वड़ी ग्रीर पूर्ण इकाई वाली रियासत थी ग्रतः यहां के शासक का प्रिवीपर्स १७ लाख ग्रीर उसके उत्तराधिकारी का १० लाख निश्चित किया गया।

इस प्रकार वीकानेर के ५०० वर्ष के इतिहास का पटाचेप हो गया | इस अविध में बीकानेर के राजधराने और केन्द्रीय सत्ताओं में गहरे प्रेमपूर्ण सम्बन्ध रहे | यहाँ के अन्तिम दो शासकों ने हमारे देश के एकीकरण

जैसलमेर २ लाख ५० हजार; बीकानेर १७ लाख; लावा १२ हजार ५००।

मेवाड़ के महाराणा को २० लाख रु० प्रिवीपर्स देना निश्चित हुआ। इसमें से ५ लाख दान घर्म के लिये, ५ लाख राजप्रमुख पद के लिये और १० लाख रु० निजी प्रिवीपर्स के रूप में थे।

- १. मारतीय रियासतों के सम्बन्ध में श्वेत पत्र, पृ० १२९ ।
- २. एकीकरण के वाद बीकानेर पहली वड़ी रियासत थी जहाँ के शासक महाराजा सादूलसिंह का ता० २५-६-१६५० को स्वर्गवास हो गया। भारत के राष्ट्रपति ने बीकानेर रियासत की गद्दी के उत्तराधिकार का जो मान्यता पत्र मेजा वह पढ़ना मनोरंजक होगा।

महाराजा साद्लसिंह को मिलने वाले प्रिवीपर्स की रकम समसौते की शतों के अनुसार घटाकर १० लाख कर दी गई। यह पहला उदाहरण या जब पकीकरण के बाद १० लाख से अधिक प्रिवीपर्स पाने वाले एक शासक का स्वर्गवास हुआ या और प्रिवीपर्स की अधिक रकम कम करके १० लाख रु० कर दी गई थी पर श्वेतपत्र में लिखा है कि जिन राजाओं को १० लाख से अधिक प्रिवीपर्स मिल रहा है उनका प्रिवीपर्स वाद में निश्चित किया जायेगा। बहुत से शासक जिनका स्वर्गवास होगया उनके उदाहरण और परम्परा से यह बात विदित होती है कि जिन राजाओं को १० लाख से अधिक प्रिवीपर्स मिल रहा था उनके स्वर्गवास के बाद उनके उत्तराधिकारियों को १० लाख मिलने लगा। यह नियम सर्वत्र समान रूप से लागू हुआ। पर हैदरावाद के निजाम के मामले में अपवाद रहा। उसके पोते का प्रिवीपर्स सन् १६६४ में २० लाख रु० निश्चित किया गया है। परिशिष्ट ३० और ३६।

चंग विद्या सन्दर्ध के मन्दर में भारत की उत्तरत पूर्ण गीरवशाली रूप प्राप्त नगरी में महारमुर्ग भाग खदा किया । महाराजा गंगासिंह ने यह कार्य उस रमा हिम वर पेंद्रे दूसरा राजा ऐसा नहीं फर सकता था। जहां भी कीर एवं भी धायमर मिला वे इसके लिये लड़े । इस शानदार कार्य को महाराज सह्लानिङ ने चालू रहा। इस उदेश्य को शीव प्राप्त करने में रायत अधेक कार्य का उन्होंने गुलकर समर्थन किया। उन्होंने श्रापने प्रभाव चीर कारों से चितार निच राजाओं को प्रेरित ग्रीर विवश किया कि वे बदलते मन के प्रतिगार वरलें और भारत की आजादी के लिये लड़ने वालों कें पत्ना सहयोग हैं। इस प्रकार जब देश के समदा एक श्रीर विभाजन या गराम समा दूसरी छोर उसके छानेक हुकहे होने की सम्भावना थी तो उन्होंने उमरी एएका बनाये रणने में सहायता की 1° खतः इसमें कोई खारचर्य नहीं हि उनके देशभंत पूर्ण भावी छीर कायों की पूर्ण प्रशंसा न केवल भारत के प्रयम राष्ट्रपति छा० राजेन्द्र प्रसाद श्रीर सरदार पटेल जैसे नेताश्री ने की यांतर राजरात मारत के प्रथम गवर्नर जनरल लाई माउन्ट वैटन ने भी की। प्यामनीर में प्रवाशों में भी इन कार्यों को सराहा गया। बीकानेर के गाजपराने के लिये कर बंध गीरव की बात है कि जब भारत के राजनैतिक मंच पर भारत की आजादी का नाटक रोला जा रहा था तो बीकानेर के शासकों ने व्यक्तिय देशमहित दिखाई।

भी होनेर राज्य की प्रमुगत्ता मिटने पर यहां की सेना श्रानिवार्थ रूप में भारतीय संग की सेना के साथ मिला दी गई क्योंकि राजस्थान की रिकास में की मेना श्रद्धमायी तीर से ही एक साथ की गई थी। बीकानेर की हमेशा श्रपनी रियासत की सेनाश्रों का बड़ा गर्व रहा है। रियासतों की सेना श्रीर भारतीय सेना योगों के ही कुछ शानदार लड़ाके बीकानेर रियासत श्रीर राजपूत्रमा के निवाकी रहे हैं। राजपूत, जाट, सिक्ख श्रीर क्यामखानी जैसी

प्रथम थेगी की लड़ाक सेना हुये बिना बीकानेर स्थिति का प्रक्रित ही सम्भव न होता। सन् १८१८ की मंधि के बाद खंब्रेजी प्रभाव के प्रकारत श्रीकोर स्थिति की सेनाखी का उत्तरीतर खाधुनिकरण खारम्म हुखा

भीनाना में गतागात महिल्लीह की अस्तानक मूर्ति का अनावरण करते.
 ति ता॰ २-६-१६५४ की दा॰ राजेन्द्र प्रसाद का मापण ।

चीकनेर में गड़वड़ों को दवाने के लिये ग्रंग्रेजी सेना ने जो कई वार कारवाई की उसकी बीकानेर के चैनिक प्रशासन पर ग्रामिट छाप पड़ी । ग्रंग्रेजों द्वारा रियासतों पर नियंत्रण करने का ग्रवश्यमभावी फल था कि रियासतों की सेना पर भी उनका ग्राधिक नियंत्रण हो । । ग्रानेक ग्रवसरों पर बीकानेर रियासत की सेना ग्रंग्रेजी सेना के साथ कन्धे से कन्धा लगाकर लड़ी जैसे कि सन् १८५७ का विद्रोह, चीन का युद्ध, वोर-युद्ध, सोमाली लैंड ग्रामियान, प्रथम विश्व युद्ध ग्रोर द्वितीय विश्व युद्ध । इससे रियासतों की सेनाग्रों में ग्रार भी सुधार करने ग्रीर उन्हें ग्राधुनिक बनाने में सहायता मिली । महाराजा गंगासिंह के समय बीकानेर की सेना रियासतों की सेनाग्रों में सबसे शानदार लड़ाकू सेनाग्रों में से एक थी । महाराजा गंगासिंह स्वयं भारतीय सेना में एक पूर्ण ग्रानरेरी जनरल थे। सेनापित के रूप में बहुधा उन्होंने गर्व के साथ ग्रपनी रियासत की सेनाग्रों का परेड में नेतृत्व किया ।

बीकानेर की प्रसिद्ध ऊँट सेना— गंगारिसाला 1—सम्भवतः जैसलमेर रिसाले को छोड़कर जो गंगारिसाले के काफी बाद में बना, अपनी तरह की एक ही सेना थी जो बीकानेर रियासत के बाहर सेवा के लिये जुनी हुई थी। फिर भी हमेशा यही इच्छा रहती थी कि रियासत की दूसरी सेनाओं को हमेशा तैयार रखा जावे ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे रिजर्व सेना का काम हैं।

महाराजा ने हमेशा इस वात पर वहुत जोर दिया कि रियासत की सेना श्रो श्रोर भारतीय सेना तथा विदेश व राजनैतिक विभाग में सम्बन्ध रहे हमेशा उनकी यही इच्छा रहती थी कि भारत सरकार का सेना विभाग कभी सीधे बीकानेर रियासत की सेना श्रो पर नियन्त्रण न रखे। वाइसराय श्रोर सम्राट द्वारा भारतीय श्रीर विटिश सेना के व्यक्तियों को जैसे सजा दी जाती थी श्रीर पुष्ट की जाती थी उसी प्रकार रियासतों की सेना श्रों के बारे

१. महाराजा गंगासिंह की आज्ञानुसार सन् १८८६ में गंगा रिसाले का पुनर्गठन किया गया और भारत सरकार द्वारा इसे शाही सेवा की सेना माना गया। उस समय इसकी संख्या ५०० थी। इसने १६०२-१६०४ में सोमाली लेंड में, १६१४-१६ के प्रथम विश्वयुद्ध में और १६४० से ४२ तक द्वितीय विश्वयुद्ध में सिक्तय माग लिया। सन् १६५१ में इसके साथ जैसलमेर रिसाला मिलाकर इसे १३ वीं ग्रेनेडियर्स में बदल दिया गया। अब यह १३ वीं ग्रेनेडियर्स — गंगा जैसलमेर — नाम से जाना जाता है और गणतन्त्र दिवस की सभी परेडों में गर्व के साथ माग लेता है।

है क्यामुला मारव का फहना या कि इस प्रकार के दएड देना उन रिया-रात के सामनी का कांग्रिकार है ।

कारमहा गंगसिंह हमेशा इस बात पर जोर देते ये कि सम्राट की क्रान्त में सेना करने के लिये यह ग्रावश्यक है कि बोकानेर रियासत की सेनाकी की ग्राप्तिकतम ग्रीर ग्रन्थे हथियार दिये जाये। उन्होंने ग्राप्तिक ती की काने पर बल दिया जो कि उस समय भारतीयों के नीचे जान करने वाली भारतीय सेना को भी नहीं दी जाती थीं। काश्मीर के लीक के केवल बीकानेर रियासत ही ऐसी थी जहाँ रियासत की महत्वपूर्ण भित्रित की पान में रखकर तोषें ग्रीर तोपखाना रखने की छूट दी गई थी। इसके बाद पटियाला रियासत की तोषें मिलीं। महाराजा गंगासिंह ने यह बात भी पत्री कि बीकानेर रियासत की सेनाग्री ग्रीर उस हिन्द से भारतीय विवासकी भी सेनाग्री पर ग्रपनी स्थानीय सेना के नियम ही लागू किये वाल के वारामी में सभी कामों के लिये भारतीय सेना कानून ग्रीर सेना पानृत की जारायें भी शामिल की जायें। लेकिन ग्रांभेज सरकार ने ग्राग्त थी विवासतों के स्थासतों के कारखानों में हथियारों की मरम्मत की इजाजत कभी नहीं वो ग्रन्था ग्रावश्यकता पड़ने पर इससे रियासतों की सेनाश्रों के लिये हथियार बनाने में भी मदद मिलती।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद एक छोर सेना के प्रधान कार्यता के छानसरों तथा दूसरों छोर राजाओं द्वारा यह विचार किया गया कि यांद भारतीय रियासतों की सेनाछों का छाचछी तरह से गठन होता तो सुद्ध के नैरान में वे छाधिक सफलता से योग देतीं छोर छापना प्रभाव प्रधान फरतीं। राजा लोग निश्चय ही सेना रखने में स्वतन्त्र ये पर वे उतनी ही नेना रख सकते ये जितनों से उनकी छार्थिक स्थिति पर कोई गम्भीर प्रभाग न पहला। सेना मुख्य का से सेवा, छान्तरिक मुख्या छोर रिजर्व राजों के लिये गठित की जा सकती थी। राजाछों को यह छूट नहीं थी कि जिना सेना के प्रधान कार्यालय को स्वित किये वे छापनी सेना को मंग अप दे था उसकी संख्या बढ़ा दें। इसके लिये तर्क दिया गया कि छानता का राज्य ही हिस सुद्धा की होता की सामलों में मुख्य सैनिक सलाह- एए सिन्द्रीय जिरेश छीर हिप्यार देने जैसे सर्मा मामलों में मुख्य सैनिक सलाह- एए सिन्द्रीय विदेश छीर राजनैतिक विभाग के द्वारा भारतीय रियासतों की सेना को अप राजीय सेना के बीच सम्बन्ध जोड़ने वाले छफसर का काम सन्तर था।

सन् १६४६ में जब बीकानेर रियासत राजस्थान में मिली तो वीकानेर रियासत के सैनिकों की कुल संख्या ३,५०० थी। यह वात सभी सम्बन्धित लोगों के लिये खेदजनक थी कि राजपूताना की रियासतों के एकी-करण के तुरन्त वाद विभिन्न रियासतों की सेनात्रों का भी एकीकरण हुत्रा। रियासती सेनात्रों के शानदार लड़ाकों के साथ त्रशोभनीय व्यवहार हुत्रा। ग्रारम्भ में राजस्थान का राजप्रमुख रियासती सेनात्रों का सर्वोच्च सेनापति वनाया गया। राजप्रमुख के बाद दूसरे वरिष्ठतम त्रधिकारी बीकानेर रियासत की सेनात्रों के प्रधान सेनापति जनरल जयदेवसिंह थे। इसके बाद जब सन् १६५१ में राजस्थान की सेनात्रों को भारतीय सेना में भिलाकर एक करने का निर्ण्य किया गया तो इन सेनात्रों की संख्या कम कर दी गई त्रीर सेना के काफी लोगों को शारीरिक योग्यता के बहाने नौकरी से छुटी दे दी गई। भारत पर क्रभी हाल में चीन ने जो त्राक्रमण किया उसको ध्यान में रखते हुये यदि हम पीछे दृष्टिपात करें तो यह बात दृद्रता से कही जा सकती है कि सीमात्रों की रज्ञा के लिये उक्त शानदार लड़ाकू सैनिकों ने भारत की काफी सहायता की होती।

किसी कारण भारतीय सेना ने निर्णय किया कि वरिष्ठता निश्चित करने या भारतीय सेना में पदोन्नित के लिये रियासती सेना के अपसरों की नौकरी की अविध घटा दी जाय। यह बात उन छोटी रियासतों के लिये तो तर्क पूर्ण हो सकती थी जहाँ की सेनायें भारतीय सेना के वरावर नहीं रखी गईं। लेकिन यह नियम बीकानेर, जयपुर, जोषपुर, हैदराबाद, पिटयाला, कोटा और उदयपुर जैसी रियासतों के लिये दुर्भाग्यपूर्ण था, क्योंकि इन रियासतों में प्रथम श्रेणी की सेना थी। इस प्रकार भारतीय सेना में जो अपसर लिये गये उनमें से बहुत सों की बाद में पदावनित कर दी गई और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ी। इस बात से एकीकरण हुई रियासतों, और इस नियम से बुरी तरह से प्रभावित सेना के लोगों, दोनों, के ही हृदय को कष्ट हुआ। राजस्थान की सेनाओं के भारतीय सेना के साथ मिलने से राजप्रमुख भी राजस्थान की सेनाओं के सर्वोच सेनापित न रहे।

भारत के एकीकरण के नाम पर भारतीय रियासतों के ऋलग

१. ट्रेकोमा, श्राँखों में दाने पड़ जाना, राजस्थान में एक श्राम नेत्र रोग है। यह सेनाके लोगों के लिये श्रयोग्यता का एक कारण माना गया श्रीर इसके श्राधार पर उन्हें नौकरी से छुटी दे दी गई।

राक्त के क्रियाने के इस दूसरे दीर की ठीन तरह से समक्तने के लिये पर ना महाम है हि सहा समय पहले की घटनाओं के संदर्भ में उन लोगों की रक्षात्र । की जोन की जान की उस समय स्थितिती विभाग में सर्वेसकी थे । जब रक्त केंद्र के भागीत विवासनों के राजाओं के भारतीय संघ में सम्मिलित होने के उन्हें कामते कि बारे में इंधा हुई तो उन्होंने इस बारे में अपना सन्देह प्राचीक पीठ मेनन की बदाया । शी वीठ पीठ मेनन ने तुरन्त कहा कि राजा लोग महिन्द्र होते में इनकार नहीं कर सकते। मेनन का कहना या कि सर्वीच गुला की गुलाति भारत के लिये छिपे रूप में एक वरदान है। क्योंकि इसके मध्य ही राजावी के बहुत से विशेषाधिकार भी समाप्त होगये हैं जो कि एके (अनिका महिनायी) छीर समफीती के छान्तर्गत प्राप्त थे। यदि सर्वेचिच र रह रहत हो को इस्तान्तरित की जाय तो। सन्धियों में विशेषाधिकारी के साथ ऐसे पर्शत्य भी है जिनका पालन राजाश्रों को करना होगा। महत्त्र परंत्र की यह भी कहा कि रियासतों में राजनैतिक या साम्प्रदायिक क्षान्द्रेक्टन होने पर, लोगो द्वारा विद्रोह कर श्राजादी मांगने पर, या भारत में मिलने की सांग करने पर या जन श्रान्दोलन श्रारम्भ करके द्यापन और राजाओं के जीवन को खतरा पैदा होने पर राजा लोग भारत सरसर यो छोड़ बचाव के लिये थाँर किसके पास जायेंगे । उसने कहा ि शाब हमारी बारी है कि हम राजाओं से कहें कि वे कैसा व्यवहार में इस बात को समफते में सरदार पटेल ने विलम्ब नहीं किया। स्तरे शहरों में इसका यह तात्वर्थ <mark>या कि इच्छित परिणाम प्राप्त करने</mark> के लिये इनमें से कोई भी स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। ग्रीर इसके उदाउरण भी कन नहीं है। जब त्रायनकोर का दीवान बाइसराय को का महीरत परने प्राचा कि बायनकोर का महाराजा ख्रपनी रियासत की स्राप्त्रया भी गीतामा करना चाहता है तो बाइसराय ने उसे बी. पी. शंतन में भितने के तिये कहा । मैनन ने तुरन्त दीवान को याद दिलाया ि पायनवेर में तो साम्यवाद बढ़ रहा है श्रीर इन परिस्थितियों में यदि पाइ हाला तो भारत गरकार भरद नहीं कर सकेगी। घटनाश्री ने इस ६८९ धरे सत्य सिंड कर दिया । रियासत की कांग्रेस समिति **ने** तुरस्त भागनार के महाराख के विरुद्ध प्रदर्शन संगठित किया । दीवान को भी र या उसे गम्भीर रूप से पायल कर दिया गया । त्रात्रनकोर के महाराजा में तुरत भारत में सार्शिता होने के समभीते पर हस्ताचर कर

९, जिल्लेसर्व होस्से, क्ष्री बहुत, पृत्व **१६६-७० ।**

दिये। दूसरा प्रत्यत्त उदाहरण जोधपुर का हैं। यह बात जान कर कि जोधपुर का महाराजा श्री जिन्ना से मिल चुका है श्रीर पाकिस्तान के साथ मिलने की सम्भावना पर सोच रहा है, बी. पी. मेनन तुरन्त महाराजा से मिलने के लिये दिल्ली में उनके होटल पर गया। वह उन्हें वाइसराय भवन में ले गया। वहां वाइसराय ने उसकी प्रशंसा की श्रीर श्रन्त में वह भारत में मिलने के समभौते पर हस्तात्त्र करने के लिये सहमत होगया। मोपाल का नवाब श्रीर मैसूर का महाराजा श्रन्त तक समय को देखते रहे पर श्रन्त में उन्हें भी भुकना पड़ा।

जब रियासतें तीन विषयों—सुरज्ञा, विदेशी मामले श्रीर संचार — ्की दृष्टि से भारतीय संघ में सम्मिलित हो गई तो इसके बाद में शीव ही ५०० से ऋधिक रियासतों के भारत में पूर्ण विलय के दूसरे ऋंक का पड़ी उठाया गया । इससे लोंगों के मन में यह संदेह उत्पन्न हुन्ना कि स्वतंत्र भारत के निर्मातात्रों ने राजात्रों के प्रति पूर्ण ईमानदारी नहीं दिखाई थी। उन्होंने अपने मन के भाव छिपा कर पहले तो भारतीय संघ में मिलने की ही वातचीत की ताकि थोड़े समय बाद रियासतों का पूर्ण एकीकरण कर दिया जाय। यह बात तो समभ में स्राती है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लोग जैसा उच्च श्रीर ग्रच्छा प्रशासन चाहते थे वैसा बहुत छोटी रियासतें नहीं प्रस्तुत कर सकती थीं ग्रातः छोटी रियासतों को मिलाकर समूह बनाये जायं या उन्हें पास के प्रान्तों या केन्द्रीय शासित प्रदेश में मिलाया जाय। वास्तव में महाराजा सादूलसिंह ने तो बहुत पहले ही रियासतों की बड़ी इकाइयां बनाने का समर्थन किया था ताकि वे श्रपने त्राप को प्रशासकीय सुधारों के साथ चला सकें। यह बड़े खेद की बात है कि उनकी बात समय पर नहीं सुनी गई । लेकिन वड़ी ग्रौर श्रलग रहने लायक इकाइयों को मिलाने का प्रश्न एक विल्कुल भिन्न नात थी।

भारतीय संघ में मिलने और एकीकरण दोंनों वातों का अन्तर अच्छी तरह समक्त लेना चाहिये। रियासतों के भारतीय संघ में मिलने का तात्पर्थ भारत के एक तिहाई और भाग को भारत के कंडे के नीचे लाना था। वह भी ऐसे समय जबिक एक तीसरी शिक्त सम्भव थी और विभाजन की उथल-पुथल

१. लियोनार्ड मोसले, पूर्व उद्धृत, पू॰ १७४ श्रीर ७६।

२. वही, पु० १७६-५०।

तथा जो ले द्वारा मारहेती की महा सैंपे जाने के कारण केन्द्र कुछ कमजोर मा । दम प्रदेश महागजा सार्विति ने भारतीय संघ में मिलने के लिये ले उपर्यंत्र मेहत दिया यह एक गहन देशभिक्ति का कार्य या। लेकिन एक्टिया मामला विस्तृत भिन्न सवाल या क्योंकि इससे देश के भीतर की मेटा में परिवर्तन होता या खाँर एक राजा एक रियासत के प्रधान मे बहल पर शालीयन राज्यम्य बनता या। वास्त्रय में इस बात को गाँधीजी, प्रमाहम्माल नेतर खाँर मरदार पटेल दीसे खाजादी के लिये लखने वाले मुना मेटाही ने मान निया या कि यदि जनता स्वीकार करे तो राजाखों को नैधानिक प्रधान रूप कर सरकार काम कर सकती हैं।

प्रसंगरा गहाँ इस का उल्लेख किया जा सकता है कि विभाजन के फापरपक परिणामी से होने वाली घटनात्रों को ध्यान में रख कर जून गन १९४७ में लोहार के नवाब ने सम्राट के प्रतिनिधि की सहमति से यो तानेर रियागत के साथ प्रशासकीय प्रबन्ध का सम्भीता कर लिया था। यह प्रयस्य विभाजन के कुछ समय बाद तक चालू रहा । विभाजन के तुम्रत धार देशा में जो गतबड़ी हुई श्रीर जिसके फलस्वरूप श्राह्य संख्यक लोग बहुत बही संस्था में एक देश से दूसरे देश गये, बीकानेर ने लोहारू को रियागत ग्रीर यहाँ की जनता को पूर्ण संरक्षण प्रदान किया । दिसम्बर १६४० में जब छुंटी स्थासतों के विलय का प्रश्न उटा तो लोहारू के नवाय में यह इच्छा प्रकट की कि लोहारू को बीकानेर रियासत के गाय मिला दिया जाये । जब यह मामला रियासती मंत्रालय को बताया गपा तो यह पहा गया कि उन्हें कोई एतराज नहीं है तथा बातचीत चाल रगो जा सम्ती है। लेकिन जनवरी १६४८ में जब बीकानेर रियासत कं प्रधानमन्त्री श्री पाननकर रिल्ली गये तो वे श्रापने साथ इन प्रस्तावी के वरों में रिपामती मंत्रालय का जो समभीता ले गये वह तुरस्त नहीं माना गया । उन्होंने महाराजा को सलाह दी कि जब वे अगली बार ।दस्ती रापे हो इस मामले के बारे में निजी रूप से वहां बात करें। महारामा ७ फरारी १९४८ को दिल्ही गये। उन्होंने इस बारे में सरदार पटेल भे बात की । सरवार पटेल ने कहा कि मुक्ते बीकानेर के माथ लोहारू के मिलने प को परमान नहीं है लेकिन लोहारू के कुछ लोग ऐसा नहीं चाहते श्रातः यह बरा नहीं मानी जा सकती। इस पर महाराजा ने बताया कि प्रस्तावित रित्य है। विवस में केवत लोगों का एक छोटा सा भाग है। महाराजा इस को पर सहस्त है। गर्य कि वे इस बारे में प्रतीचा करेंगे छीर जनता की

राय देखेंगे। दूसरे दिन प्रातः परवरी सन् १६४८ को महाराजा ने श्री वी॰ पी॰ मेनन को सरदार पटेल से हुई ग्रापनी बात चीत से ग्रावगत कराया। श्री मेनन ने महाराजा को विश्वास दिलाया कि उनकी सलाह लिये बिना लोहारू के विलय के सम्बन्ध में कोई कारवाई नहीं की जायेगी।

महाराजा उसी दिन दोपहर के भोजन से पूर्व हवाई जहाज से वीकानेर के लिये खाना होगये श्रीर दोपहर के तीन वजे तक श्रर्थात् कुछ ही घंटों में लोहारू के नवाब को, जो उस समय दिल्ली में थे, रियासती मंत्रालय के एक वरिष्ठ सचिव श्री सी॰ सी॰ देसाई ने हस्तान्तर के लिये एक मसौदा दिया। इसमें लिखा कि नवाब श्रपनी रियासत का प्रशासन केन्द्रीय सरकार की सौंपने के लिये सहमत है। नवाब ११ फरवरी सन् १६४८ को बीकानेर लौटे। उन्होंने महाराजा को सारी स्थिति समकाई। महाराजा ने तुरन्त सरदार पटेल को एक पत्र लिखा। इसमें सारे तथ्य बताये गये स्त्रीर इस बात पर श्राश्चर्य प्रकट किया गया कि महाराजा ने भारत सरकार श्रीर रियासती मंत्रालय को हमेशा पूर्ण सहयोग दिया लेकिन उनके साथ इस मामले में ऐसा व्यवहार किया गया। केलिकन इसका कोई परिणाम न निकला। सरदार पटेल ने महाराजा को उत्तर में लिखा कि रियासती मंत्रालय के ऋधिकारियों ने किसी प्रकार का दवाव नहीं डाला है। इसी पत्र में लोहारू के नवाव द्वारा विलय के समभौते पर हस्ताच्चर करने की सूचना भी महाराजा को दी गयी थी। यह दूसरा उदाहरण है जिससे पता चलता है कि विलय का काम किस तरीके से किया गया।

यह बात समकानी बड़ी कठिन है कि जिन बड़ी रियासतों की संविधान के मसौदे³ में श्रलग रहने योग्य इकाइयां मान लिया गया थाः श्रीर जो श्रपना श्रलग श्रस्तित्व रख सकती थीं उनके बारे में भारत की नयी सरकार की नीति में एकाएक परिवर्तन क्यों हुआ।

महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० १२४२/IX सन् १६४७ । महाराजा साद्लिसिंह का तो० १२--२-१६४५ का सरदार बल्लममाई पटेल के नाम पत्र ।

२. वही, सरदार वल्लम भाई पटेल का महाराजा के नाम ता॰ २०--२-१६४ म का पत्र ।

कँवर जसवन्तर्सिंह दाउदसर का हलफ़ नामा। सन् १६४८ से वे संविधान निर्मात्री समा में वीकानेर के मनोनीत प्रतिनिधि थे।

(११) पार एक कि मारवीय नेवाश्री श्रीर इन मामलों से सम्बन्धित करन व्यक्तिमी की पीतिश मीति इस बारे में बिल्कुल सम्ब भी। कटा मा गाँ। ने एक बार सर मिजाँ इस्माइल को कहा या कि वे हें रागाची से देवल यंगी चाहते हैं कि वे अपनी रिवासतों के वैधानिक प्रचान चन होत छीर उनकी देख रेख में उनकी जनता छपना शासन लागारे । पं जवाहरलाल नेहरू ने दिसम्बर सन् १९४६ में विधान िकाती सभा में स्वय्ट शब्दों में कहा या कि रियासतों में कैसी सरकार बर्ने यह बात यहां के लोग मोनों । ग्रागर वे राजतंत्र को परांद करते हैं तो उन्हें इम बात की हाट है और में इसमें इस्तत्तेष नहीं करूंगा 🕴 श्राप्रेल सन् ११४० में ५० नेइस ने पुनः उसी जगह कहा कि सारे भारत के लिये रागुतन्य होने का निर्णय लिया जा रहा है पर इससे किसी राज्य में राज-टरकीत सरहार चालू रहने में बाधा नहीं पहेगी यदि यह स्वतन्त्रता के व्यापक रूप में टीर बैठ जाय । अधुलाई सन् १६४७ के अपने कथन में सरदार पटेटर ने राजाकों को क्यारवासन दिया था कि जिन विषयों में रियासतों को भाग्यीय संघ में मिलने के लिये कहा गया है, उनके श्रातिरिक्त दूसरे मामले में रियायती का स्वायत्त रूप पूरी तरह से कायम रक्ला जायेगा। सरदार पटेल ने यह बात महाराजा साद्वासिंह को लिखे गये अपने पत्री^क में भी बिल्कुल राध्य कर दी थी कि विलय का कोई प्रस्ताव रियासती मंत्रालय तभी स्वीकार वरेगा जब उसे विश्वाम हो जायेगा कि ऐसे प्रस्ताव को शासक छीर जनता दोनों का समर्थन प्राप्त है । श्री बी० पी० मेनन ने भी २६ मार्च १६४८ को दिल्ली में श्रपने सम्बाददाता सम्मेलन में बताया कि कोचीन, त्रावणकोर, ैष्ट, बोधपुर, जयपुर, बोकानेर श्रीर भोषाल जैसी बड़ी २ रियासतें स्वतन्त्र

९. मर निजां द्रमाहल-मार् पिलक सारम, पु॰ १३३ ।

शियान निर्माणी सभा की बहस, पृ० ४६--६१। १३ दिसम्बर सन् १६४६
 शो मिरियान के उद्देशों के सम्बन्ध में प्रमृत ४० जवाहरलाल नेहम का प्रस्ताव ।

३० वरी, पू॰ ३४१- १म अप्रैल सन् १६४७ को रियासती सम्बन्धी कमेटी की भिन्ने पर प्रस्तार प्रस्तुत करते हुये ६० जवाहरताल नेहरू।

४. मार्गता की हानेर के निजी मिचित के कार्यालय की फाइल सं० १२४२/IX गर्१५४१ और सं० ४१२-ची० पन० XXV, महाराजा साद्वसिंह के नाम स्वराग परेल के ता० ५-१-१६४५ और २०-२-१६४५ के पत्र जो क्षेत्र के अधिकार में हैं।

इकाइयों के रुप में अलग रहेंगी और ऐसे संघों और इकाइयों की संख्या २५ होगी। १५ मार्च १६४८ को रियासती मंत्री की ओर से संसद में बोलते हुये श्री गाडगिल ने सरकार की घोषित नीति पुनः दोहराई। उन्होंने कहा कि जिन रियासतों के विधान निर्मात्री समा में अलग प्रतिनिधि थे, उन्हें अलग रहने योग्य इकाई माना जायेगा और यदि वे चाहें तो उनके अलग स्वायत्त इकाइयों के रुप में रहने पर कोई एतराज न होगा।

इस दृष्टि से बीकानेर हर तरह से ऋलग रहने योग्य इकाई थी । यह त्राबादी, राजस्व ग्रौर विधान निर्मात्री सभा में ग्रलग प्रतिनिधि होने की सभी शर्तें पूरी करती थी। इसका प्रशासन प्रगतिशील श्रीरं प्रजातांत्रिक था। यहाँ शासक हमेशा गहन देश भक्ति की भावना से परिपूर्ण था । उसने हमेशा भारत की स्वतंत्रता का समर्थन किया। चीकानेर के लिये यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि ऋधिक ऋच्छी सरकार बनाने की जनता की मांग पर यह कदम उठाया गया क्योंकि यहाँ पहले से ही, सन् १६१३ से ही, विधान सभा थी जो कि न केवल राजपूताना की रियासतों में अपनी तरह की सर्व प्रथम विधान सभा थी बल्कि भारत की सारी रियासतों में से उन कुछ रियासतों में जिनमें सर्वेप्रथम विधान समायें बनाई गई, एक थी। यहाँ पर न्यायपालिका अलग थी जो एक अच्छी सरकार का एक रूप है। इसके ऋतिरिक्त रियासत में ऋस्पतालों और श्रीषधालयों का जाल विछा हुआ था। बीकानेर को इस वात का गर्व था कि यहाँ के अस्पताल उत्तरी भारत के सबसे विद्या श्रौर सुसिष्जत श्रस्पतालों में से थे। लोगों की शिचा की स्रोर पूरा ध्यान दिया नाता था, बीकानेर में स्रनेक कालेज थे श्रीर सभी स्तर की श्रनेकं स्कूलें थीं । रियासत के सभी मुख्य नगरों में नगरपालिकायें व जिला बोर्ड थे श्रीर पंचायतें व सहकारी समितियाँ भी काम कर रही थीं । बीकानेर को इस बात का विशेष गर्व था कि यहाँ रेलां श्रीर संचार का व्यापक जाल विछा हुआ या और नगरों व गाँवों में विजली का प्रकाश था। बीकानेर रियासत के उत्तरी भाग की सिंचाई होने से यहां के लोगों की स्थिति ऋौर भी सुधर गयी थी। यह सम्भावना थी कि निकट भविष्य में ही भाखरा नहर के ज्ञाने से बीकानेर की वार्षिक ज्ञाय ५ करोड़ रुपये हो जायेगी। रियासत समृद्ध थी ऋौर जनता की सुविधा ऋौं के लिये लर्च करने को उसके पास काफी धन था। इस की पुष्टी इससे होती है कि बीकानेर रियासत द्वारा राजस्थान के खजाने में चार करोड़ ⊏६ लाख रु॰ दिये गये । यह रकम राजपूताना की रियासतों द्वारा दी गई रकमों

है है है जो जो । सन् १६०२ से ही शासक की प्रिन्नी पर्स झलग है। है हैं भी जीर पढ़ एक डॉनत प्रतिशत (राज्य की श्राय की) पर है हैं हैं हैं। दी। इस प्रशास त्यासत न्यावसारिक है कि से एक जाही हैं कन्यापक प्रजृति से खाम कर रही थी। यहां नागरिक स्वतंत्रता है हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं।

एक्एक नवस्वर सन् १९४८ में रियासती मंत्रालय श्रीर इसके वं नितंत भी मी॰ पें। मेनन द्वारा चातचीत चालू की गयी । पहले ें बान्यों। इन शांते के बारे में भी जो यहां के शासक की मंजूर रा गाँद यह यह इस सम्यान के साथ एकोकरण का निर्णय ले। तत्र दिसम्बर १६८८ में भारो॰ पी॰ मेनन बोकानेर ह्याये। यहां वे कुछ मुख्य नागरिकी रे विते और वीतानेर के एकीकरण के सम्बन्ध में उनकी इच्छा मालूम में इस शिटिंग की कार्यवाई से सम्बंधित रिपोर्ट से पता चलता है कि इसमें मी हारोर के तत्त्वालीन प्रधानमंत्री श्री सी॰ एस॰ वेंक्टाचार भी प्राध्यत थे। इस मीटिंग में श्री मेनन ने रियासत के एकोकरण से रोने गाने लामी से श्रीताश्री को परिचित कराया । उन्होंने कहा कि इसमें प्रशासन का रान्यों कम हो जायेगा। उन्होंने यह बात जोर देकर कही ि पं॰ जनातालाल श्रीर सरदार पटेल जैसे देश के नेता ही इस बात का मरी निर्माय कर सकते हैं कि लोगों की भलाई किस में है। उन्होंने छान यहा कि जब ये नेता कहते हैं कि रियासत का एकीकरण करों के लोगों के दित में है तो यह बास्तव में दित में ही है श्रीर रोंगों की उनके कथन का विश्वास करना चाहिये। रिपोर्ट में लिखा है कि

मर् नात शान में रहानी चाहिये कि बीकानेर 'बार' रेगिस्तान में है। जब रूप् १८८० में महाराज गंगासिंह गदी पर विराजे तो रियासत की आय १८ राम थी। महाराजा गंगासिंह और महाराजा साद्ज्ञसिंह के शासन काल में मर्जाम बहार सादे तीन करोड़ के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच गयी। यह केवल रूपिन अन और अवदी योजना से ही सम्मव या। प्रकृति और भूमि समी गमुदि के गिरुद थे। लेकिन इट निर्चयी लागों ने इस समृदि को पाने में गम्पा प्रात की।

महामास बीसानेर के निजी सचित्र के कार्यालय की फाइल सं० ४१२—XXV,
 मत २- माजाताना की स्थिसनों का पक्षीकरण । लेखक ने भी दरवार हाल के नसमदे के मह दिखार विमर्श हुना था।

ओंता ह्यों में उपस्थित बीकानेर के एक प्रसिद्ध वकील ह्योर प्रतिष्ठित नागरिक पं॰ लच्मीनारायण ने यह सवाल उठाया कि जनमत संग्रह द्वारा लोगों की राय मालूम की जाय तो वी० पी० मेनन ने इस बात का विरोध किया। उन्होंने कहा कि ग्रन्य किसो भी रियासत में ऐसी माँग नहीं की गयी है। उन्होंने एक बार फिर श्रोताग्रों से कहा कि वे ग्रपने नेताग्रों में विश्वास रक्खें श्रीर जैसा नेता चाहते हैं वैसा करें। एकीकरण के विरुद्ध यह भावना इस बात से समभ में ग्रा जाती है कि बीकानेर एक सुसंचालित रियासत थी। केवल एक महीने पहले सरदार पटेल ने स्पष्ट रूप से कहा था कि किसी रियासत के लोगों की सलाह लिये विना एकीकरण नहीं किया जायेगा। यह बात इसके बिलकुल विरुद्ध थी। श्रोतात्रों में से एक अन्य व्यक्ति पं सूरज़करण श्राचार्य ने, जो कि बहुत बड़े वकील थे, पूछा कि क्या एकी-करण का मामला पहले ही तय किया जा चुका है ग्रथवा ग्रमी उनकी सलाह लेनी बाकी है। रिपोर्ट में लिखा है कि इस पर श्री मेनन ने उत्तर दिया कि यह मामला पहले ही तय किया जा चुका है ऋौर भारत सरकार एकीकरण की योजना को पूरा करेगी। श्री वी॰ पी॰ मेनन ने यह भी कहा कि सुविधा के लिये ही ब्रारम्भ में भारत सरकार रियासतों का भारतीय संघ में सम्मिलित होना चाहती थी। भारत सरकार ५६० रियासतों को स्वतन्त्र छोड़ना नहीं चाहती थी।

भारतीय संघ में स्मिलित है ने के समभौतों का उल्लेख करते हुये श्री वी॰ पी॰ मेनन ने कहा कि कोई भी जनतांत्रिक सरकार इस प्रकार के त्राश्वासनों से देश का भविष्य नहीं वाँध सकती। जब यह प्रश्न किया गया कि जब इस मामले में इकतरका फेसला किया जा चुका है तो इस पर महाराजा के हस्ताच्चर कराने क्यों जरूरी हैं। वहा जाता है कि श्री मेनन ने बताया कि काननी हिष्ट से हस्ताच्चर कराने जरूरी हैं।

यह सम्भव है कि अलग रहने योग्य गियासतें राज्यपालों के नीचे रह सकती
 थीं । इससे जीवन को अस्त व्यस्त किये बिना उनके प्रशासकीय दोत्र की सीमा कायम रक्खी जा सकती थी ।

इसकी जगह आरम्म में कुछ वर्षों के लिये अलग रहने योग्य इकाइयों के राजाओं को नियुक्त राज्यपालों के रूप में रनखा जा सकता था। हम मैसूर की ओर देखें तो पता चलेगा कि कैसे मैसूर के महाराजा को वहाँ का राज्यपाज बनाया गया और वे इस रूप में १५ वर्ष तक रहे। इसी तरह का दूसरा उदाहरण जम्मू और काश्मीर के सदरे रियासत का है। इन तस्यों से कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि रियासती के साथ वैधानिक सम्पर्क कायम करने और ब्रिटिश सत्ता के हटने से उत्पन्न किता को मरने के लिये को नीति अपनाई गयी थी उसमें एकाएक परिवर्तन करके विधारतों के पूर्ण एकीवरण की नीति अपनायी गयी। विदित होता है कि यह पूर्व निर्धारित नीति थी और भारत के नये संघ को, मन में कुछ और भाव रलकर यचन देने से, रोकने वाला कोई न था। लेकिन यह सम्भव है कि दुछ रियासतों को अलग इकाइयों के रूप में चालू रखने के स्थान पर उनके पूर्ण एकीवरण का भारत सरकार ने जो एकाएक दृष्टिकोण बदला यह धैदराबाद, ज्नागढ़ और जोघपुर में हुई दुर्माग्य पूर्ण घटनाओं के कारण जरूरी हो गया हो। व

ग्रलग रहने योग्य इकाइयां को रखने के स्थान पर उनके एक्षीकरण के बारे में सरकार की परिवर्तित नीति से महाराजा खादूलसिंह को ग्राश्चर्य हुग्रा । यह बात उनकी गुप्त टिप्पणी से बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है । उसमें महाराजा सादूलसिंह ने स्पष्ट लिखा है, "बीकानेर को ग्रलग रहने योग्य इकाइयों की श्रेणी में सम्मिलित किया गया है । ग्राब तक यह ऐसी ही मानी जाती रही है । एकाएक यह परिवर्तन कैसे हो गया है ? तब यह बलपूर्वक नियंत्रण क्यों ?'' सूची में लिखी ग्रान्य वातों से पता चलता है कि ग्राणिल भारतीय रियासती जनता की राजपूताना प्रादेशिक परिपद ने एकीकरण की मांग पर वल दिया था। संयोग से उसमें बीकानेर का एक ही प्रतिनिधि शी रनुयर दयाल गोयल या ग्रीर वह भी बीकानेरी नहीं था। इस प्रादेशिक परिपद में सिरोही के गोकुल भाई भट्ट ग्रीर जयपुर के हीरालाल शास्त्री का

२. लियोनार्ड मोसले, पूर्व उद्धत, पु॰ १७३।

[&]quot;सत्ता परिवर्तन के बाद नये संघ को रोकने वाला कोई न था रियासती विभाग के द्वारा अपने कार्यों को बढ़ाकर यह इन प्रतिवद्धताओं और अधिकारों को योड़े ही समय में ब्यर्थ बना सकता था, बास्तव में शीव्र ही ऐसा हो गया।

२. वी॰ पी॰ मेनन, दी स्टोरी आफ दी इन्टीग्रेशन आफ दी इचिडयन स्टेटस् ९०११२-११३।

२. महाराजा निकानर के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं॰ ४१२-जी॰ एन-XXV ।

४. प्रयम आम जुनाव से पूर्व श्री गोयल राजस्थान मन्त्री मयडल में एक मन्त्री थे। वे प्रयम आम जुनाव में हार गये।

गहरा प्रभाव था। गोकुल भाई मट्ट प्रथम त्राम चुनाव में हार गये। बीकानेर के लोगों के प्रतिनिधि रूप में श्री गोयल को लोग कितना कम चाहते थे इसका प्रमाण सन् १९५२ के प्रथम त्राम चुनाव के परिणाम से मिलता है। इसमें बीकानेर — चूरू संसदीय चेत्र से लेखक को १,१७,६२६ बोट मिलें जब कि उसके विरुद्ध खड़े हुये श्री गोयल को केवल ६००० बोट मिलें।

सरदार पटेल श्रौर श्री मेनन के साथ ५ दिसम्बर श्रौर २१ दिसम्बर १६४८ को श्रौर ग्रागे बातचीत हुयी। केवल दो महीने बाद ही फरवरी १६४६ में एकीकरण का पूर्ण निश्चय कर लिया गया। ७ श्रप्रैल सन् १६४६ को बृहद् राजस्थान में बीकानेर रियासत का एकीकरण हो गया। रियासती मन्त्री के रूप में सरदार पटेल की इस घोषणा की कि श्रलग रहने योग्य इकाइयाँ चालू रहेंगी, श्रौर सन् १६४६ में रियासतों के एकीकरण के मध्य, कुल १८ मास ही लगे।

रियासतों के एकीकरण के प्रश्न पर पीछे की छोर दृष्टिपात करते समय हम रियासतों के एकीकरण की ख्रालोचना नहीं करते। हम तो भारत के चोटी के नैता छों द्वारा छपनी जन्नान से दिये गये छाश्वासन के विरुद्ध जिस तरीके से एकीकरण किया गया, उसकी ख्रालोचना करते हैं।

स्वयं लेखक भारतीय रियासतों में जनतांत्रिक संस्थायें प्रविष्ट कराने का ग्रौर एकीकरण पद्धति का पक्का समर्थक रहा है। लेकिन विना उनकी सलाह लिये रियासतों की जनता पर एकीकरण थोपना जनतांत्रिक नहीं। यह बात ग्रौर भी उचित होती यदि भारत सरकार रियासतों के भारतीय संघ में सम्मिलित होने के समय ही ग्रपनी नीति घोषित कर देती कि चाहे शोघ या धीरे २ उनका लच्च रियासतों का एकीकरण है। यह मानना होगा कि इससे कुछ कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती थीं पर सरदार पटेल जैसे कुशल राजनीतिज्ञ के लिये इन कठिनाइयों को पार करना ग्रौर भारत का पूर्ण एकीकरण करना कठिन न था।

हमारे देश में जो तीव परिवर्तन आया, भारत में जो रक्त हीन

१. लेखक १६५२ से १६५७ तक बीकानेर-चूरू च्लेत्र से संसद सदस्य रहा है। सन् १६५७ में वह बीकानेर, चूरू और गंगानगर के दि—सदस्यीय चुनाव च्लेत्र से पुनः चुना गया। इसमें उसने अपने कॉंग्रेसी प्रतिद्वन्दी को लगमग ६६,००० वोटों के अन्तर से हराया। सन् १६६२ में लेखक बीकानेर — चूरू चुनाव च्लेत्र से पुनः चुना गया। इस बार कॉंग्रेस ने उम्मीदवार खड़ा नहीं किया। तीनों आम चुनाव लेखक ने निर्देलीय रूप में लड़े और वह तीनों में जीता।

कार्ति से आजादी आयी, संसार का एक सबसे महान् परिवर्तन हमारे यहाँ
हुआ, इन मबके बाद हमारी राष्ट्रीय सरकार के गौरव के लिये अनिवार्य
था कि लोगों को दिये हुये बचन निभाकर देश मक लोगों के मन में
विश्वाम उत्पन्न किया जाता l जिन लोगों ने अपने देश की मिक से सेवा
करनी चाही थी, उन्हें शीध परिवर्तनों, बचन भंग, और अरिथर वैधानिक
परिवर्तनों से सरकार के अति विश्वास न रहा।

हम जानते हैं कि पं॰ जवाहरलाल नेहरू एक स्पष्ट वक्ता श्रौर पूर्ण इमानदार व्यक्ति थे । रियासतों के भविष्य के बारे में १३ दिसम्बर गृन् १९४६ को जब विधान निर्मात्री सभा में उन्होंने श्रपने मन की बात करी तो हम उससे प्रभावित हुये । श्रतः यह जानने का प्रयत्न करना बड़ा रोचक होगा कि किस समय भारत सरकार की विचार घारा में परिवर्तन धारम्भ हुश्रा श्रीर श्रलग रहने योग्य इकाइयों को कायम रखने की नीति को बदल कर पूर्ण एकीकरण की नीति को श्रपनाया गया। पं॰ नेहरू ने विधान निर्मात्री सभा में कहा—

"रियासतों के सम्बन्ध में हमारी इच्छा श्रच्छी तरह से समभी जानी चाहिये। यह (प्रस्ताव) रियासतों पर उनकी इच्छा के विबद्ध कुछ नहीं थोपता। " यह सम्भव है कि लोग श्रपने राजाश्रों को रखना चाहें। यह निर्णय उन्हें ही करना है। " यदि इस (गणतंत्र) के भीतर का कोई भाग श्रपने खुद के तरह का प्रशासन चाहता है तो उसे ऐसा करने की स्वतन्त्रता होगी। " यदि रियासतों में जनता सच्चे श्र्य में देख रेख करने वाली हो, वहाँ पूर्ण स्वतन्त्रता श्रोर उत्तरदायी सरकार हो तो किसी विशेष प्रकार के प्रशासन के लिये यह श्रयोग्यता या श्रसम्भवता की वात न होगी। यदि किसी विशेष रियासतों है तो में निश्चय ही उसमें हस्तचेष नहीं पर्णं स्वतन्त्रता श्रासन करें विशेष रियासतों है तो में निश्चय ही उसमें हस्तचेष नहीं पर्णं स्वतंत्रा करें गा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा स्वतंत्रा चारे में उसे पसंद कर्ल या न कर्ल । '' विश्व स्वतंत्रा स्वतंत्रा स्वतंत्रा चारे में स्वतंत्रा चारे स्वतंत्

साढ़े चार महीने बाद रियासती समिति की रियोर्ट पर ता॰ २८

श्रमहाराजा बीकानेर के निजी सचिव के कार्यालय की फाइल सं० ४१२~ G.N. XXV, राज्युताना की रियासतों का एकीकरण । निभान निर्मान्ती समा को बहस ता० १३ दिसम्बर १६४६, १० ४६, ६०, ६१ ।

श्रप्रेल १६४७ को प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुये उन्होंने फिर कहा-

" • • • • यद्यपि हम सारे भारत के लिये एक गणतन्त्र का निर्णय ले रहे थे पर इससे किसी रियासत में राजतन्त्र की सरकार चालू रहने में कोई रुकावट नहीं पड़ेगी लेकिन शर्त यह है कि जहां तक उसका सम्बन्ध है वे रियासतें स्वतन्त्रता के व्यापक चित्र में उचित लगें ग्रौर वहां पर उतनी ही ग्राजादी तथा उत्तरदायी सरकार हो।" 9

केवल ६ हम्ते बाद ५ जुलाई सन् १६४७ को सरदार पटेल ने श्वेत पत्र के एक कथन में इस प्रकार कहा—

> "रियासतों ने पहले ही इस मूल सिद्धांत को मान लियां है कि सुरत्वा, विदेशी मामले और संचार में वे भारतीय संघ में सम्मिलित होंगी । देश के सामान्य हितों से सम्वन्धित इन तीन विषयों में सम्मिलित होने के ग्रालावा हम उनसे ग्रीर कुछ नहीं चाहते । ग्रान्य मामलों में हम उनके स्वायत्त ग्रास्तित्व का निसंदेह सम्मान करेंगे।"

६ महीने बाद ५ जनवरी सन् १९४८ को महाराजा सादूलाँसंह को लिखे एक पत्र में सरदार पटेल ने स्थिति को श्रीर स्पष्ट किया—

"मैं श्रीमान को यह वात साफ वता देना चाहता हूँ कि हम स्वयं एकीकरण के किसी प्रस्ताव को प्रेरणा या वढ़ावा नहीं देते। हम ऐसे किसी प्रस्ताव को तब तक स्वीकार नहीं करते जब तक हमें संतोष न हो जाय कि इसे सम्बन्धित जनता श्रीर शासक दोनों का समर्थन प्राप्त है।"3

७ जनवरी १६४८ को श्री वी॰ पी॰ मेनन ने कहा कि प्रत्येक रियासत के लिये एक कसौटी बनायी गयी है जिसमें उसकी आय, आजादी और विकास की सम्भावना को ध्यान में रक्खा जायेगा और यह कसौटी लागू की जायेगी। जिन रियासतों के विधान निर्मात्री सभा में आजग प्रतिनिधि थे उनको एकीकरण में शामिल करने के सुमाव का

महाराजा वीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ४९२- G. N. XXV, राजपूताना की रियासर्तों का पकीकरण।

२. मारतीय रियासतों के वारे में इवेत पत्र, पृ० १५५। परिशिष्ट ५।

६. महाराजा वीकानेर के निजी सचिव के कार्यालय की फाइल सं० ४९२-

परन ही नहीं उडता ।"

६ हनते बाद २० फरवरी सन् १९४८ के अपने पत्र में सरदार पटेल ने बीकानेर के महाराजा को लिखा—

"में इस बात को एक से श्रिधिक बार स्पष्ट कर चुका हूँ कि रियासती मंत्रालय एकीकरण की योजना का तभी समर्थन करेगा जब इस विषय पर बनता श्रीर शासक दोनों सहमत हों। हमने लगातार इस स्थिति को बनाये रक्खा है।" र

लगभग ३ सप्ताह बाद १५ मार्च १६४⊏ को संसद में रियासती गंत्री की श्रोर से बोलते हुये श्री एन० बी० गाडगिल ने कहा—

"जिन रियासतों के विधान निर्मात्री सभा में श्रलग प्रतिनिधि हैं, उन्हें समय-समय पर भारत सरकार ने श्राश्वासन दिया है कि वे श्रलग रहने योग्य इकाइयाँ मानी जायेंगी " " " " विलय या एकीकरण के लिये श्रपनी श्रोर से किसी प्रकार का दबाव डालने या डराने की हमारी कोई इच्छा नहीं है ।" 3

दो सप्ताह बाद २६ मार्च १६४८ को एक सम्बाददाता सम्मेलन में भी दी॰ पी॰ मेनन ने कहा—

''कोचीन, त्रायणकोर, मैस्र, जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, मोपाल ग्रादि बड़ी २ रियासतें स्वतन्त्र इकाइयों के रूप में रहेंगी ग्रार इन संघों ग्रार इकाइयों की संख्या २५ होगी। '''कोचीन, त्रायणकोर, मैस्र, जोधपुर, बीकानेर, भोपाल, पिटयाला जैसी बड़ी रियासतों में से किसी को छूने का सरकार का इसदा नहीं या। '''सरकार रियासती मंत्रालय द्वारा दिये गये इस वचन को मानती है कि ग्रालग रहने योग्य इकाइयों को ग्रापने ग्राप में ग्रालग रहने दिया जायेगा जब तक कि वे

१. महाराजा बीहानेर के निजी सिचित्र के कार्यालय की फाइल सं० ४१२ – G. N. XXV, ता० ७-१-१६४५ की माननीय गर्वर्नर जनरल के साथ राजाओं श्रीर प्रतिनिधियों की बैठक की कार्यवाई।

महाराजा बीकानंर के निजी सिचित्र के कार्यांतय की फाइल सं० १२५२-IX, सन् १६४०।

मदाराजा बीकानेर के निजी सिचिव के कार्यालय की फाइल सं० ४१२—
 G. N. XXV, ता० १५ मार्च १९४० का संसद में वक्टव्य ।

स्वेच्छा से शामिल न हो"

१५ मार्च १६४८ के ऋपने पूर्व कयन के केवल साढ़े ऋाठ महीने बाद १४ नवम्बर १६४८ को श्री मेनन ने दिल्ली में विचार विमर्श के समय बीकानेर, जोधपुर, जयपुर ऋादि के विलय का प्रश्न उठाकर ऋपनी ही बात का खरडन कर दिया।

महाराजा सादूलसिंह ने रियासती मंत्रालय के साथ बातचींत के लिये ता॰ ६-११-४८ को प्रस्तुत बातों की एक गुप्त सूची³ बनायी। इससे पता चलता है कि लगभग इसी समय रियासत के विलय का सुभाव दिया गया था। इस सूची में नम्बर २ में लिखा है--

"२- बीकानेर ऋलग रहने योग्य इकाइयों की श्रेणी में सिम्मिलित की गयी है ऋौर ऋब तक ऐसी ही मानी जाती रही है। एकाएक यह परिवर्तन कैसे हो गया १ तब यह दबाव क्यों १"

रिकार्ड से पता चलता है कि बीकानेर, जयपुर श्रीर जीधपुर के राजाश्रों के साथ हुयी बैठकों में जब रियासती मंत्रालय ने विलय का प्रश्न रक्खा तो ६ दिसम्बर सन् १६४८ को महाराजा बीकानेर ने श्री वी० पी० मेनन को शतों की एक सांकेतिक सूची दी। यदि ये राजा एकीकरण के लिये सहमत हो जांय तो इन शतों को मानने की मांग की गयी थी। श्री वी० पी० मेनन सहमत हो गये। ७ दिसम्बर १६४८ को श्री वी० पी० मेनन ने बीकानेर में लालगढ़ पैलेस के दरबार हाल में यहां के कुछ मुख्य नागरिकों से बात चीत की। इस बैठक के समय उन्होंने जो कुछ कहा उससे स्वष्ट पता चलता है कि भारत सरकार ने श्रलग रहने योग्य रियासतों के बिलय के सम्बन्ध में भी पहले ही एक तरका फैसला कर लिया था। श्रव केवल इतना ही करना बाकी या कि राजाश्रों से विधिवत श्रीर कान्ती स्वीकृति ले ली जाय। दिसम्बर सन् १६४८ श्रीर उसके बाद के महीनों में कुछ श्रीर बैठकें हुयीं तथा श्रन्त में बीकानेर, जोधपुर, जयपुर श्रीर जैसलमेर का विलय तय कर दिया गया। ७ श्रप्रैल १६४६ को उनका विलय हो गया।

१. महाराजा बीकानेर के निजी सिचव के कार्यालय की फाइल सं० ४१२-G. N. XXV ।

२. वहीं, दिल्ली में ता॰ १४-११-१६४ को श्री वी॰ पी॰ मेनन के साय महाराजा सादूलसिंह की बैठक की टिप्पियाँ।

३. वही ।

मारत सरकार ने राजाओं से विलय स्वीकार कराने के लिये उनके स्वामिमान की हुने वाले जो तरीके अपनाये उन्हें देखकर एक इतिहामकार को बहुत आप्त्रचर्य हो सकता है। उदाहरण के लिये भारत में राजाओं को तोषों की सलामी दो जाती है। तोषों को सलामी न दी जाने वाली रियासतों को छोड़कर कम से कम ह और अधिक से अधिक २१ तोषों की सलामी वालो रियासतों थीं। ऐसा विश्वास है कि अधिक २१ तोषों की सलामी वालो रियासतों थीं। ऐसा विश्वास है कि अधिक २१ तोषों की सलामी वालो रियासतों थीं। ऐसा विश्वास है कि अधिक २१ तोषों की सलामी मंजर करके एक प्रकार का लालच देने का काम किया था। बहुत से मामलों में आजीवन राजपमुख का पर देना एक शासक के लिये विलय रवीकार करने का बहुत बड़ा प्रलोमन था। ये आजीवन राजप्रमुख के पद भी बाद में केवल कुछ ही वर्षों तक रहे। राजाओं ने स्पष्ट क्य से इस बात को जान लिया था। लेकिन सवाल यह था कि सबसे पहले कीन विलय को स्वीकार करे और इस प्रकार आजीवन राजप्रमुख के

٦,,	_		के शासकों	की तोपों की सलामी की संख्या।
	१६ ताम	की सलामी	-	 उदयपुर के महाराणा
	१७ तोगों	की सवामी	-	१. बीकानेर के महाराजा
				२. भरतपुर के महाराजा
				३. बूंदी के महाराजा
				४. जयपुर के महाराजा
				थ. जोधपुर के महाराजा
				६. करीली के महाराजा
				७. कोटा के महाराव
				टोंक के नवाब
	१४ तोत्रो	की सलामी		१. श्रलवर के महाराजा
				२. वींसवाड़ा के महारावल
				३. धोलपुर के महाराज-राण्य
				४. ह्रॅंगरपुर के महारावल
				५. जैसलमेर के महारावल
				६. किशनगढ़ के महाराजा
				७, प्रतापगढ़ के महारावल
			•	न. सिरोही के महाराव

२. भालावाड़ के महाराज-रागा

११ तोनों की सलामी

रूप में, शायद कुछ अधिक प्रिवीपर्स के रूप में, मुफ्त विजली और पानी जैसी कई प्रकार की सुविधायों के रूप में त्र्ययवा निजी सम्पति की सूची में कछ ग्रीर ग्रधिक महलों के रूप में कुछ लाभ प्राप्त करें। कुछ राजाग्री को, जिनका स्वास्थ्य खराब था, विशेष प्रिवीपर्स दी गयी। यह ऋतिरिक्त रक्तम भी वार्तालाप के लिये खुली रक्खी गयी । बीकानेर श्रीर कुछ श्रन्य उन्नत रियासतों से भिन्न बहुत सी ऐसी रियासतें थीं जिनकी एकीकरण के समय तक रियासत के खजाने से ऋलग कोई निश्चित प्रिवीपर्स न थो। की निजी सम्पति की श्रेगी में क्या हो स्रोर रियासत की रकम मानी जाय, यह मामला विशुद्ध रूप से बातचीत द्वारा तय होना था। इसके श्रातिरिक्त यह बात भी बातचीत द्वारा तय होनी थी कि दोवागर महारानियों को कितना भत्ता दिया जाय । समभौते के अनुसार उन्हें रियासत से अलग भत्ता मिलना था। महाराजकुमारों को राज्य की रकम में से रकम देना भी बात चीत द्वारा तय किया जाने वाला था, विशेषतः उन रियासतों में जहां निश्चित प्रिवीपर्स निर्धारित नहीं थीं । दोवागर महारानियों को रियासत से स्रालग भत्ते दिये गये। लेकिन वे सब महारानियां जो एकीकरण के बाद दोवागर हुयीं, उनका भत्ता राजाश्चों के निजी प्रिवीपर्स में से मिला। चाहे जो हो इससे कुछ राजास्रों को, जो पीढ़ियों से वरिष्ठता के लिये प्रतिस्पर्धा कर रहे थे श्रौर जो राजप्रमुख बन कर स्त्रपने संघ की सारी रियासतों के राजास्रों से श्रापने श्राप को ऊँचा राजा मानते थे, ग्रापने दीर्घकालीन श्रहं को सन्तुष्ट करने का मौका मिला। स्पष्टतः यह इच्छा पूरी हुयी क्योंकि आजीवन राजप्रमुख की पारिभाषिक स्थिति इसी रूप में स्वीकार की गई थी। सौभाग्य से यह अजनतांत्रिक, एतराज-जनक और अवांछनीय पद बड़ी जल्दी समाप्त हो गया ।

निष्पत्त निष्किष पर पहुँचने के लिये हमें भारत सरकार श्रीर इसके नये नेता श्रों द्वारा दिये गये विभिन्न श्राश्वासनों की सावधानी से जांच करनी होगी। इससे पता चलता है कि भारतीय रियासतों के भारतीय संघ में भिलने के कार्य को पूरा करके भारत सरकार श्रीर श्रिधक हद्ध स्थिति में होगयी थी जिससे कि रियासतों के एकीकरण के सम्बन्ध में वह श्रपनी शर्तें मनचा सके। इतिहास के विद्यार्थी के रूप में हमें स्थिति को निष्पत्त हर्षिट से देखना पड़ेगा। इस बारे में दो मत नहीं कि शेप ब्रिटिश भारत के साथ रियासतों को बराबर लाने के लिये जनतांत्रिकरण का सिद्धान्त ठीक था। लेकिन जो रियासत या रियासतें सिद्यों से श्रिस्तित्व में थीं उनका बने रहना भी उतना ही उचित था जितना श्राजादी के बाद

भारत के किसी नये राज्य का बने रहना। एक राष्ट्र के इतिहास में परिवर्तन होते रहते हैं । किसी विरोप समय जो बात सामान्य लगती है वही कालान्तर में ग्रममान्य मानी जा सकती है ग्रयवा इसके विपरीत बात हो सकती है। इसी प्रकार यदि बड़ी रियासतों को कायम रहने दिया जाता श्रीर ये मेसूर की तरह बाद में "क" भाग राज्य बनकर देश के दूसरे राज्यों की भोति होती तो यह कथन अनुचित न होगा कि जनमत उन्हें तुरन्त मान सेता । बहुत सी सुशासित छालग रहने योग्य रियासतों में जनमत विलय के पद्म में नहीं था। इस बात का प्रमाण त्राम चुनाव से मिलता है । हम देखते हैं कि सन् १६५२ और उसके बाद के श्राम चुनावों में प्रायः प्रत्येक राजा जिसने जुनाव लग्ना अपने शिक्तशाली कांग्रेसी विरोधी को इराकर विजयी प्रया । जनतन्त्र में ग्राम चुनाव के ग्रतिरिक्त जनता की इच्छा जानने का श्रीर कोई श्रच्छा साधन नहीं हो सकता । रियासतों के एकीकरण के कुछ महाने बाद जब महाराजा सादूलसिंह इंगलैंड से लौटे और श्री लच्मी-नाथ जी के मन्दिर में दर्शनों के लिये गये तो जनता ने उनका इतना जीरदार भन्य स्थागत किया जैसा बहुचा देखने में नहीं स्राता। लेखक स्थपने िता महाराजा साद्लसिंह के साथ मोटर में या । लोगों का उत्साह श्रीर यम इतना अधिक था कि सामान्यरूप से मार्ग में जहां आधा घएटा लगता वहां पांच घएटे लगे ।

सरदार पटेल ने बहुधा कहा था कि सरकार विलय के प्रस्तावों को तब तक नहीं मानेगी जब तक उसे विश्वास न हो जाय कि उन्हें सम्बन्धित जनता थ्रीर राजा दोनों का समर्थन प्राप्त है। यह देखकर श्राश्चर्य होता है कि राजाश्रों पर एकीकरण स्वीकार करने के लिये, जहां दबाव डाला गया थ्रीर प्रलोभन दिया गया वहाँ सम्बन्धित जनता की कभी सलाह नहीं ली गयी। ऐसा कोई उपयुक्त साधन भी नहीं या जिसके द्वारा भारत सरकार बनता से सलाह ले सकती थी। यह तर्क कि प्रजापरिषद जनता की

१. पंजाब को पंजाबी सूत्रे और हिरयाना राज्य में अलग करना सरदार पटेल के एकीकरण के कार्य से बिल्कुल विपरीत है। पंजाबी सूत्रा और हिरयाना राज्य दोनों का ही च्लेंत्रफल बीकानेर से कम है, दोनों का अलग कायम रहना बहुत सन्देह पूर्ण है पर सिद्धांततः इसे सन् १६६५ में लोकसमा के अध्यक्त की अध्यक्ता में नियुक्त संसदीय सिमिति जैसे महत्व पूर्ण अंग न स्वीदार किया है। लेखक भी इस सिमिति का एक सदस्य था।

त्र्यावाज थी, प्रथम त्र्याम चुनावों के परिणामों से बिल्कुल घरासायी हो जाता है । प्रथम त्र्याम चुनाव में प्रजा परिषद् के बड़े २ नेता राजस्थान में हार गये ।

श्रलग रहने योग्य इकाइयों के पास श्रपनी रियासतों को विकसित करने के लिये काफी श्राय थी जिससे कि वे भारतीय संघ के श्रन्य श्रिष्क उन्नत राज्यों के समान वन जाती । यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि एकीकरण के बाद इन राज्यों के विकसित करने के लिये केन्द्र पंचवर्षीय योजना की धनराशि श्रीर दूसरे खोतों से केन्द्रीय सहायता के रूप में करोड़ों रुपये दे रहा है । यह तर्क भी गलत सिद्ध हो गया है कि रियासतों के विभिन्न प्रशासकीय सीगों बनने पर जो धन बरबाद होता था वह एक संयुक्त राज्य से बच जायेगा । राजस्थान बनने के बाद यहाँ की सरकार के पास प्रति वर्ष धन की कभी रहती है । यह वात ध्यान में रखने की है कि किसी भी भारतीय रियासत को चाहे वह बड़ी हो या छोटी भारत सरकार से केन्द्रीय सहायता या पंचवर्षीय योजना की राशि के रूप में कोई सहायता नहीं मिलती थी।

यदि ऋलग रहने योग्य इकाइयां कायम रहतीं ऋौर उन्हें भी ऋन्य राज्यों वितनी ही केन्द्रीय सहायता मिलती तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि ये दोनों प्रकार के राज्य समान रूप से उन्नत न होते।

दूसरी स्रोर राजाश्रों की ईमानदारी स्रोर देश के व्यापक हित में उनका त्याग, विशेषतः महाराजा सादूलसिंह का, भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय डा॰ राजेन्द्र प्रसाद से बढ कर किसी श्रन्य के शब्दों में नहीं

१. यह बात स्मरणीय है कि सन् १६२७ में गंगनहर योजना की पूरी रक्षम बीकानेर रियासत ने ही लगाई थी। उस समय इसकी आय बहुत कम थी। केन्द्रीय सहायता सम्मव न थी। आज राजस्थान नहर का खर्च बहुत सीमा तक केन्द्र द्वारा किया जाता है। पहले रियासतों की रैलें केन्द्र के आधीन न थीं। उस समय बिना किसी केन्द्रीय सहायता के रियासत के खजाने से बीकानेर रियासत की लगमग १ हजार मील रैलवे लाइन का खर्चा दिया गया। यही बात रियासत की सेनाओं के लिये भी थी। राजस्थान संव के लिये अब ये बोम्म बहुत कम हो गये हैं क्योंकि रैलों, स्वरन्ता और कुछ बड़ी सिंचाई और दूसरी योजनाओं को केन्द्र ने अपने हाथ में ले लिया है।

२. भूतपूर्व प्राँत।

बताया जा सकता । डा॰ राजेन्द्र प्रसाद ने कहा —

"श्रपने निजी हितों से ऊपर देश के हित को रख कर राजाशों ने भारत के एकीकरण में एक स्मरणीय कार्य किया। इस सम्बन्ध में स्वर्गीय महाराजा सादूलसिंह जी ने जो सहायता प्रदान की वह तत्कालीन रियासती मन्त्री श्रीर महान् भारतीय नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा कृतज्ञता से स्वीकार की गयी है।"

स्वर्गीय महाराजा श्रापनी जनता के कल्याण का प्रयत्न करते हुये श्रसमय स्वर्ग सिधारे । श्रापनी मातृ भूमि के महान् गौरव के लिये श्रापनी प्राचीन वंशा परम्परा को निभाते हुये वे इस संसार से चले गये। बीकानेर के लोगों ने स्वेच्छा से धन संग्रह कर उनकी स्मृति में, यह मृतिं स्थापित की। इस प्रकार ५०० वर्ष पुराना बीकानेर का गौरव पूर्ण इतिहास समाप्त होता है। बीकानेर की मरूघरा ने सच्चे श्रीर शिक्तशाली योद्धा उत्पन्न किये। श्रतः भारत की एकता में बीकानेर ने जो काम किया, वह हम सबके लिये गौरव की बात है।

शेशानेर में ता॰ २-६-१६५४ को महाराजा साद्लसिंह जी की मूर्ति का अनावरण करते हुये टा॰ राजेन्द्र प्रसाद का भाषण ।

ईश्वर महान् है स्रक्षकर

मोहर - ईश्वर महान् है ः । । । ;

साम्राज्य के महत्व पूर्ण अंग, महान् साम्राज्य के स्तम्भ, शाही कृपाओं के योग्य राय रायसिंह को मालूम हो कि हमें ज्ञात हुआ है कि वह (राय रायसिंह) अभी तक जैतोर के इलाके में है। यह बात वड़ी विचित्र और आश्चर्यजनक लगती है। उसकी सचाई, काम की लगन, श्रद्धा और मित्रता को क्या हो गया है? उसको स्वयं को क्या हो गया है? क्या कुछ गड़बड़ी है अथवा अधिक शराब पीने से वह अयोग्य हो गया है? क्या किसी बीमारी से उसकी काम करने की सारी शिक्त और उत्साह चला गया है अथवा अपने आरामतलब स्वभाव के कारण वह मिट्याणी के वश में होगया है अथवा नौकर तीजिया ने उसको गुमराह कर दिया है।

श्रगर वास्तव में वह काम करने से थक गया है तो उसे सारी बात स्पष्ट रूप से लिख देनी चाहिये ताकि हम उसके पुत्र को भेजदें श्रीर उसके (राय रायसिंह के) सेवकों के साथ उसका पुत्र काम कर सके।

चाहे जो बात हो हम ग्रापने विश्वासपात्र (नौकर) मोहनदास को भेजते हैं कि वह हमें सही स्थित बताये। हम एक हकीम भी भेजना चाहते थे पर चूं कि उक्त व्यक्ति डाक चौकी से भेजा गया है ग्रातः हकीम उसके साथ नहीं भेजा जा सका। लेकिन यदि उसका स्वास्थ्य सब प्रकार से ठीक हो ग्रीर वह दिल्ला के ग्राभियान पर जाना चाहता हो तो हम उसकी सफलता की कामना करते हैं। ग्रान्यथा शाही कृपापात्र सभी सैनिक, राजपूत ग्रीर दूसरे लोगों के साथ, हर कीमत पर राय मालवा तक पहुँच जाय। वहाँ उज्जैन में वह शाही ग्राज्ञा से भेजी गयी विश्व विजयिनी सेना के पहुंचने की प्रतीक्षा करे ग्रीर उन्हें दिये ग्रादेश के ग्रानुसार काम करे।

सन् ४० ता० २२ अस्फन्दारमज, (फरवरी, १५६५)

इंश्वर महान् है

हुमायूं के पुत्र ग्रमगर के पुत्र सुल्तान सलीम की मोहर। विजयी मुल्तान सलीम जहाँगीर गाजी, जिसके पिता का ग्रादेश विश्व मानता है।

साम्राज्य के विश्वास-पात्र, शाही सम्मानों के योग्य राय रायसिंह ने जिसे शाही कृपायों तथा उपकारों की प्रतिष्ठा प्राप्त है, अपनी गत सेवाय्रों को भूलकर शाह को ख्रापनी स्मृति दिलाना बन्द कर दिया है।

तथापि (उसकी लापरवाही का कुछ भी विचार न करके) शाह के इदय में साम्राज्य के सबसे बड़े शुभिचन्तक (रायसिंह) की प्रायः हरेक शुभ भवसर पर स्मृति श्राती रही है।

श्रतर्य, रायसिंह को उचित है कि गत समय के श्राचरण के विरुद्ध का श्रम से सदैव पत्र भेजा करे जिनके उत्तर में उसे शाही कृपा पत्रों से सम्मानित किया जायेगा।

उस हितैपी (मित्र) को स्चित किया जाता है कि एक जोहरी हमें भेंट देने के लिये एक मानिक ला रहा था लेकिन उसे उसने (राय रायसिंह ते) श्रनजान में उससे खरीद लिया। यद्यपि हम उस विश्वास-पात्र की राम्पत्ति को हमारी ही समभते हैं पर यदि वह उस मानिक को भेंट करना न चाहे तो उसे हमारे विश्वास-पात्र (नोकर) लालमियां द्वारा इसकी कीमत नुका दी लावेगी।

हमें हमारे प्रति उसकी श्रद्धा में पूरा विश्वास है कि वह लालिमयां को का मानिक उसी दिन (जिस दिन वह वहां पहुंचे) सौंप देगा ताकि वह उसे हमारे पास ला सके।

इसके साथ रेशमी खिल अत मेजी जा रही है।

इलाही सन् ४७ ताः ४ श्राजर (नतम्बर, १६०२)

ईश्वर महान् है जहाँगीर

हुमायूँ के पुत्र अकबर शाह के पुत्र सुल्तान सलीम की मोहर । चिजयी सुल्तान सलीम, जहाँगीर गाजी, जिसके पिता का आदेश चिश्व मानता है ।

साम्राज्य के आधार-स्तम्भ, शाही कृपाओं के योग्य तथा बहुत से उपहारों से सम्मानित रायसिंह को स्चित किया जाता है कि शहंशाह गत कुछ दिनों से बहुत कमजोर हो गये हैं और उनकी कमजोरी अब तक वैसी ही बनी हुई है।

श्रतएव यह श्रावश्यक है कि साम्राज्य का श्राधार (रायसिंह) शाही दरवार में शीव्रातिशीव रात श्रीर दिन श्रधिक से श्रिधिक चलकर पहुँच जावे। किसी भी कारण से उसे क्कना नहीं चाहिये।

> इलाही सन् ४० तां० २६ मेहर (सितम्बर, १६०५)

ईश्वर महान् है

हुमाय्ं के पुत्र श्रकवर के पुत्र चुल्तान सलीम की मोहर । विजयों मुल्तान सलीम जहांगीर गांजी, जिसके पिता का श्रादेश विश्व मानता है ।

शाही कृपा तथा उपकार के योग्य, शाही प्रतिष्ठा प्राप्त रायसिंह को माल्म हो कि हमने सुना है कि ढीठ दलपत ने उसके (रायसिंह के) प्रति बहुत ही खराब, नीचता पूर्ण और दुर्भाग्यपूर्ण व्यवहार किया है, और फलस्वरूप उसने (रायसिंह ने) सेना लेकर उसे घेर लिया है।

हम यह वर्शरत नहीं कर सकते कि कोई पुत्र अपने पिता के मित ऐसा अभद्र व्यवहार करें । हमारे मन में आया कि हम अपनी विजयी सेनाएँ भेज कर उसे ऐसा दएड दें जो दूसरे ऐसे दीठ लोगों के लिये भी एक सबक हो ।

लेकिन इस मामले में हमें उसकी (रायसिंह की) छोर से कोई खगर नहीं मिली छातः हमने सोचा कि शायद यह बात ऋठ हो। इसीलिये हमने छापनी विजयी सेनाएं नहीं भेजीं।

यदि वास्तव में यह खबर सत्य हो कि दलपत गड़बड़ी करना चाहता है तो उसे (रायिंवह को) फरमान मिलने के दिन ही सारे हालात हमें भेज देने नाहिये ताकि हम यहां से शाही सेना भेज दें जो दलपत को हरा कर उसे कड़ा दगड़ दें।

हमने बहा उद्दीला के वंशज को शाही क्या के योग्य रायसिंह को दरशर में लाने के लिये नियुक्त किया था लेकिन बीभार होने के कारण उसके ग्राने में कुछ दिनों का विलम्ब हो गया है। उसे यह भी ग्राज्ञा दी गयी थी कि यह इस मामले की रिपोर्ट करे ताकि उसके नाम से ग्रादेश जारी किया जाय कि वह शाही सम्मानों के योग्य रायसिंह को ग्रापने साथ शाही दरवार में ले ग्राये।

उसे (रायसिंह को) यह हमेशा विश्वास रखना चाहिये कि ऐसे मामलों में इम उसी का पच लेंगे।

> ता० २ स्रावान रतव-उत्त-मुरज्जव, हिजरी सन् १०१५ (नवम्बर, १६०७)

ग्रक्षवर

त्रमीर तैमूर साहिब किरन के पुत्र मीरा शाह, उसके पुत्र सुल्तान ऋबू सैयद मिर्जा, उसके पुत्र ऋमर शेख मिर्जा, उसके पुत्र वाबर, उसके पुत्र हुमायूँ वादशाह उसके पुत्र जलालुद्दीन मुहम्मद ऋकबर बादशाह की मोहर।

हमने ग्रामी-ग्रामी यह हुक्म जारी किया है कि इलाही सन् ४१ के बीची-इल की खरीफ (सियालू) की फंसल के ग्रारम्म में ताहाड़, कस्र ग्रीर ग्राटगढ़ के परगनों के बदले में साम्राज्य के सार तत्व राय रायसिंह को निर्याद का परगना जागीर के रूप में दिया जाय। जैसा कि इस फरमान के पीछे लिख दिया गया है। उसे इसकी उपज लेकर ग्रापना कर्त्तव्य पूर्ण निष्ठा से पालन करना चाहिये।

उक्त परगने के चौधरियों, मुखियात्रों, कान्तगों, रैयत ग्रौर किसानों का यह कर्तन्य है कि वे इस लिखित ग्रादेश का पालन कर राय- सिंह को ग्रपना जागीरदार सममें तथा उसके वकीलों (प्रतिनिधियों) के कथन ग्रौर सुमावों की उपेचा न करें। उनके कथन ग्रौर सुमाव सर्वमान्य शाही ग्राज्ञा के पूर्णतः ग्रानुकूल हैं ग्रौर प्रशासकीय कार्यों की हिष्ट से हैं।

उन्हें बिना कोई बहाना या सावधानी किये सारे आवश्यक कर भी चुका देने चाहिये और उनके चुकाने में विलम्ब या कमी नहीं करनी चाहिये। उन्हें इसे बहुत ही महत्वपूर्ण समभना चाहिये और बिना विवाद के इसके पालन का उद्यम करना चाहिये।

हमारी ग्रुम आजा के समान उन्हें चाहिये कि वे इस आदेश को मानें और उससे हटें नहीं।

> इलाही सन् ४१ ता० ५ उदीं विहिश्त (अप्रैल १५६६)

ग्रकवर

जलालुदान मेहरमद श्रक्तवर वादशाह वल्द हुमायूं वादशाह वल्द वावर वादशाह वल्द ऊमर शेल मिर्जा वल्द सुल्तान श्रव् सैयर मिर्जा वल्द भीरांशाह वल्द श्रमीर तैमूर साहिच किरन को मोहर ।

अपरिचितों के प्रति नम्रता दिखाना और दोषियों को स्मा करना नृंकि शासक का प्रशंधनीय गुण है अतः हमने शाही प्रतिष्टा प्राप्त और कृपाओं के योग्य रायिष्ट का अपराध स्मा कर दिया है। जैसा इस फरमान के पीछे लिखा है इलाही सन् ४३ की रबी की फसल के आरम्भ से हमने उसे ज्नागढ़ और दूसरे जिलों की जो जागीर दी यो वह उसे वापस लौटाने के बाद उसे जाने की छूट दी जाती है।

गुजरात प्रांत के लिपिकों तथा विशेषतः सीरट के जागीरदारों या कर्नेत्य है कि ज्योंही उन्हें इस शाही आज्ञा का ज्ञान हो त्योंही वे इसका पालन करें और फरमान के पीछे दिये गये विवरण के जिले उस (रायसिंह) के आदिमियों को सींप दें। लिखित और प्रमाणित आज्ञा के अभाव में उन्हें इस आदेश के पालन में हिचिकचाहट नहीं दिखानी चाहिये क्योंकि इसके पृग्हें होने पर वह आजा भी शीध ही जारी की जायेगी।

उक्त प्रगनों के किसानों को रायसिंह को अपना जागीरदार समगतना चाहिये और सभी राजस्य देने और दूसरे कामों में उसकी आजा माननी चाहिये।

> लाहीर, राजधानी से प्रेपित सन् जुनूस ४२ ता० ६ द (फरवरी १४६७)

ईश्वर महान् है

जलालुदीन मोहम्मद श्रकवर बादशाह वल्द हुमायूं बादशाह वल्द बावर बादशाह वल्द ऊमर शेख मिर्जा वल्द सुल्तान श्रवू सैयद मिर्जा वल्द मीरांशाह वल्द श्रमीर तैमूर साहिव किरन। जलालुदीन मोहम्मद श्रकवर वादशाह-ए-गाजी का फरमान।

इस महत्वपूर्ण तथा शुभ हुक्मनामे के जारी किये जाने के लिये श्रमी श्रमी यह श्राज्ञा दी गई है कि श्रब से शमसाबाद के परगने के दो भाग होंगे— एक पहले की भांति शमसाबाद कहलायेगा व दूसरा नूरपुर कहलायेगा । गंगा नदी के इस श्रोर के गांव नूरपुर परगने में होंगे श्रीर उनको इसी नाम से पुकारा जायेगा श्रथवा उनके लिये लेखों में यही नाम प्रयोग होगा । गंगा के दूसरी श्रोर के गांव शमसाबाद के परगने में होंगे ।

ये दोनों परगने मालगुजारी के लिहाज से सामंतों में श्रेष्ठ राय रायसिंह राठौड़ को बतौर जागीर वखरो जाते हैं श्रौर सब प्रकार के परिवर्तनों से मुक्त समभे जाने चाहिये।

क्यों कि यह महल (जिले) बहुत काल से राठौड़ों की जागीर में सम्मिलित थे, हमने हमारी कृपा के चिन्ह स्वरूप ये दोनों परगने उस को बतौर रिहायशी जागीर बक्शे हैं।

माननीय स्वेदार, प्रतिष्ठित एवम् योग्य दीवान, कर वस्ल कर्ता, जागीरदार, दीवानी के मुख्तार खास व सर्वोच दीवान के पेशकार, इस आजा को प्रमाणित मानकर इसका अमलदरामद अपने रिजस्टरों में करें और इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन व कमी न होने दें।

चौधरी लोग, कान्त्रगो, मुखिया, किरायेदार व काश्तकार हमारी पवित्र त्राज्ञा के ऋनुसार ऋौर उसके पालनार्थ ऋव से इस महल (जिले) को ऋपनी हिसाब की किताबों में इनका दो भागों में उल्लेख करेंगे ऋौर रायसिंह को ऋपना जागीरदार मानकर वाजिब लगान उसको देंगे।

उन्हें इस आजा की अवहेलना नहीं करनी चाहिये।

—ता॰ २१ खुर्दाद इलाही ४६ मई, १६०४

परिशिष्ट-द

श्रीरंगजेब

समकालीनों में श्रेष्ठ, श्रन्पसिंह, इस्लाम के सामने नत होने वाले श्रीर शाही कृपाश्रों को इच्छा रखने वाले, को यह मालूम होना चाहिये कि श्रपने सीभाग्य से वनमालीदास, उसका माई, हमारी स्वर्ग के समान ड्योदी पर हाज़िर हुश्रा तथा उसे हमें कोर्निश करने का सीभाग्य प्राप्त हुश्रा श्रीर शाही कृपापात्र बना । साम्राज्य के प्रवन्धकर्ता, सब वजीरों में से श्रात्यधिक विश्वस्त, उच खानों में सर्वोच्च, साम्राज्य श्रीर शासन के प्रवन्धकर्ता, उन्नति श्रीर गीरव के पथ का दिग्दर्शक, श्रानेक कृपाश्रों का पात्र, श्रानेक इञ्ज्त के गीम्य, खुशिक्सित प्रधान, साम्राज्य में श्रेष्ठतम श्रीर मुदार—उल—मुहम (विशेष कार्यों का कर्णधार) जफर खां के द्वारा उसकी (श्रान्पसिंह की) श्रविचलित श्रदा व स्वामिमित्त के विषय में हमें ज्ञात हुश्रा ।

हमें यह भी ज्ञात हुन्ना कि राव करण्सिह सामन्तों में श्रेण्ठ (ग्रन्पसिंह) के विषय में सन्देहशील हो गया है ग्रीर उससे नाराज़ हो गया है ग्रीर उसे नुकसान पहुँचाने की चेष्टा में रत है ग्रीर यह कि कृपा पाने योग्य वह (ग्रन्पसिंह) प्रार्थना करता है कि यदि उसे ग्रपने पिता का उत्तरा- धिकारी बनाये जाने की कृपा हुई तो वह सदा श्रद्धावान व स्वामिमक बना रहेगा।

श्रतः हमने श्रपने मिन्त्रयों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मन्त्री (जफर खां) को श्राश दी यी कि वह हमारी श्राश के पालन में उसकी पत्र लिख कर इस विपय की जानकारी प्राप्त करें । उच्च पदों को भ्रुशोभित करने वालों में से इस पुचक (युवक राजा श्रन्पसिंह) ने लिखा कि यदि उस पर बादशाह सलामत की इपा हुई श्रीर यदि शुभ पंजा लगा हुश्रा फरमान उसके नाम में जारी किया गया तो वह इस इलाके के प्रशासन को सुन्यवस्थित करने श्रीर बीकानेर के गढ़ की सुरज्ञा करने में सफल होगां। इससे हमारी महर-वानियां श्रीर भी वह गई।

जब कि पूर्व उल्लिखित राव करंग ने इन दिनों कोई कार्य नहीं किया और अपने अमान्यवरा हमारी आज़ाओं के पालन करने में शिथिन नगा प्रदेशित की और एक वार फिर से दौषी बना, अतः हमारी कृपाओं में हमने सामतों के नेता (अन्पतिह) की २००० जात व १५०० घोड़ों का मनसब बख्शा जो कि राव करण को राव सूर की मृत्यु के बाद बादशाह फिरदौस ग्राशियानी (स्वर्गीय शाहजहां), जो कि ग्रब बहिश्त में निवास कर रहे हैं, के राज्यकाल में वख्शा गया था।

इसी प्रकार हमने उसकी परोन्नति राव की पदवी देकर, खिलग्रत, फंडा लेकर चलने वाला घोड़ा व बीकानेर श्रीर उसके श्रासपास के जिले, जो कि पहले राव करण की जागीर थे, देकर की है श्रीर जिसके लिये श्रलग फरमान जारी किया गया है जो इसी फरमान के साथ भेजा जायेगा।

उस सामंतों में श्रेष्ठ की तसल्ली के लिये व उसकी पदोन्नित करने के विचार से हमने इस प्रकाशमान फरमान पर अपना पंजा लगाया है। उसे कृपाओं के पात्र और शाही दरबार के विश्वस्त कर्मचारी सैफ़ल्ला के साथ भेज रहे हैं।

यह श्रेष्ठ फरमान मिलने पर श्रीर हमारी कुपाश्रों का ध्यान रख कर उसको इन उपहारों व कुपाश्रों के लिये धन्यवाद देना चाहिये। उसको करण के नौकरों को चुप करने व श्रपनी श्रोर मिलाने का श्रीर वहां के गढ़ श्रीर बीकानेर के जिलों की सुरक्षा के लिये भरसक प्रयत्न करना चाहिये।

उसको अपने आपको हर प्रकार से सन्तुष्ट रखना चाहिये तथा अपने आपको विश्वास के मार्ग पर दृढ़ रखना चाहिये और निरन्तर स्वामि-मक्त बना रहना चाहिये। फतहपुर और क्र्मिन् के परगने के जागीरदार अलफ खां, समृद्धिशाली नगर अजमेर के फीज़दार अमानत खां और चकला हिसार के मृतसद्दी रसकदास को एक आदेश जारी कर दिया गया है कि युद्ध के समय कृपाओं के पात्र (अनूपसिंह) की मदद के लिये वे वड़े लश्कर के साथ तैयार रहें।

साम्राज्य के विश्वस्त (जफर खां) के द्वारा भेजे गये ग्रीर सैफुल्ला द्वारा बताये गये दूसरे विषयों की जानकारी प्राप्त होने पर उसे वैसा ही करना चाहिये ग्रीर ग्रपना उत्तर शाही दरवार में उनके द्वारा भेजना चाहिये।

कृपा के पात्र (अन्पिंह) की सिफारिश पर उसके भाई बनमालीदास को शाही कृपा का पात्र बनाकर ढाढस दिया गया है और छुट्टी दे दी गई है।

> —६ रवी-उत्त-स्रव्यत, १० ११ जनवरी १६६७

राजपूताना स्थित गवर्नर जनरल के कार्यवाहक एजेंट विगेडियर जनरल जी॰ सेन्ट॰ पी॰ लारेन्स के ता॰ २७ जुलाई १८५८ के भारत सरकार के विदेश विभाग के सचिव जी॰ एफ॰ एडमॅसटन के नाम पत्र का ग्रंश ।

× × ×

२८. १ जून को आबू छोड़ने पर मैंने सहायक लेफ्टिनेंट माइल्डमें को जिसका स्वास्थ्य ठीक न था, कार्यालय की देखरेख के लिये छोड़ दिया था। लेकिन १५ दिन बाद जब उसका स्वास्थ्य सुधर गया तो मैंने उसे वीकानेर मेज़ा ताकि वह उस रियासत की सेनाओं का नेतृत्व करें। यह सेना सिरसा, हिसार और हांसी के विद्रोही जिलों में जनरल बान कोर्टलेंड को पंजाब आक्रमण में सहयोग दे रही थी। लेफ्टिनेंट माइल्डमें ने महाराजा को अपनी सीमा के किले मादरा में अपनी सेना का सेनापतित्व इतने उत्साह से करते हुये पाया जो एक देशी राजा में विरल है। वहाँ से लेफ्टिनेंट माइल्डमें ८०० बीकानेरी अश्वारोही सेना लेकर जनरल बानकोर्टलेंड के शिविर के लिये रवाना हुआ।

२६ योड़े समय के लिये वीकानेर की सेना ने हाँसी और हिसार की रचा की । १६ अगस्त को जब हाँसी में हमारे सिपाहियों पर विद्रोही गांव वालों ने लगभग तीन हजार की संख्या में हमला किया तो लेक्टिनेंट माइल्डमें ने बीकानेरी सेना का सेनापित्व किया। आक्रमणकारियों को पीछे हटा दिया गया और उनका मार्ग रोक दिया गया। लेक्टिनेंट माइल्डमें जनरल वानकोर्ट-लेंड के आदेशानुसार कार्य कर रहा था। उसने जनरल वानकोर्टलेंड को जो रिपोर्ट मेजी वह निसंदेह जनरल वानकोर्टलेंड द्वारा सरकार के ध्यान में लाई गयी है।

३० इन ग्राक्रमणों में लेफ्टिनेंट माइल्डमे ग्रीर महाराजा बीकानेर दोनों ने समान कठिनाइयों का ग्रेनुमव किया । जैसा में पहले लिख चुका हूँ यही बात मेवाड़ ग्रीर मारवाड़ के लिये भी समान थी । वे श्रपनी ग्रीर से ग्राक्रमण नहीं करेंने लेकिन महाराजा बीकानेर के समर्थन ग्रीर निजी उदाहरण तथा उनकी सेना की उपस्थिति से हमारा पत्त मजबूत हो गया।

३१. बीकानेर के कुछ घनवान व प्रभावशाली घरानों द्वारा किये गये भगड़े श्रीर षड्यन्त्रों ने महाराजा की शिक्त को काफी कमजोर वना दिया । लेफ्टिनेंट माइल्डमे ने जब यह बात मुभे बताई तो मैंने श्रवसर पाकर इन घरानों के एक सदस्य को वर्जास्त कर दिया जो कि इस एजेंसी में वकील था श्रीर जिसने बहुत वर्षों तक श्रपने पद का उपयोग श्रपने ही हितों के लिये किया था।

३२. लेफ्टिनेंट माइल्डमे श्रक्ट्रवर के महीने तक वीकानेर द्वारा सहायता के लिये भेजी गयी सेना के साथ मैदान में रहा । जब उसका स्वास्थ्य पुनः खराब होने लगा वह मुक्तसे श्रीर पंजाब के मुख्य श्रायुक्त से धन्यवाद पाकर एवं बीमारी का प्रमाण पत्र देकर इंग्लैंड चला गया।

× × ×

गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित सहायक एजेंट लेफ्टिनेंट ए॰ जी॰ होम माइल्डमे जो बीकानेर में विशेष ड्यूटी पर था, द्वारा ता॰ २४ सितम्बर १८५७ को गरुड शिविर से गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित एजेंट ब्रिगेडियर जनरल सेंट पैट्रिक लारेंस के नाम भेजे गये पत्र की प्रतिलिपि ।

जनरल वान कोर्टलेंड ने बीकानेर महाराजा की सेना के एक बड़ें भाग को सेवा में न रख कर केवल २०० पैदल और १५० युड़सवारों को ही रक्खा है, में स्वयं कई बार और लम्बे समय तक बुखार से पीड़ित रहा हूँ। सेना के साथ के डॉ० लैम्ब ने मुक्ते लड़ने के बिलकुल अयोग्य घोषित कर दिया है। १६ तारीख को हांसी से रवाना होने से एक दिन पहले तक मुक्ते बिस्तर पर ही रक्खा गया। बीकानेर लौटने पर में महाराजा की सेना के साथ वीकानेर लौट आया हूँ। में ससम्मान उनके द्वारा की गयी सेवाओं को आप के ध्यान में ला रहा हूँ। मुक्ते आशा है कि आप अपने अधिकार द्वारा महाराजा को अपनी ओर से एक खरीता भेज कर कृतज्ञता प्रकट करेंगे और गवर्नर जनरल से भी एक ऐसा ही सम्मान का पत्र उन्हें भिजवायेंगे।

- २. यह दुर्माग्य की बात यी कि वीकानेर की सेना झोढवाला छौर खेंसाकाज की लड़ाइयों में भाग लेने के लिये बहुत ही देर से पहुंची। यह सिरसा में केवल उसी समय पहुंची जिस समय जनरल वान कोर्ट लेंड की सेना ने वहां प्रवेश किया। लेकिन उनके वहां पहुँचने के कुछ दिन बाद जनरल वान कोर्ट लेंड ने उनमें से ५०० की एक टुकड़ी को लेक्टिनेंट पियर्ष के सेनापितत्व में हिसार पर झिषकार करने भेजा। वाद में इस सेना की संख्या बढ़ा कर १७०० कर दो गयी। चाहे उस समय इसकी झावश्यकता होने या न होने का प्रश्न रहा हो लेकिन बाद में हिसार पर मंगली झौर पड़ौसी राँघड़ झामीणों ने हमला किया तो झव उस समय सैनिकों की संख्या बढ़ाने की झावश्यकता के बारे में सन्देह नहीं रह जाता।
- रे तीन सप्ताह तक विना विरोध के इस सेना ने हिसार की रचा की । वे नगर के ग्रीर चारों ग्रीर के गाँवों के दुष्ट प्रवृति वाले लोगों को तब तक डराते रहे जब तक कि जनरल वान कोर्टलेंड की सेना वहाँ

नहीं पहुँच गयी । इस सेना के पहुँचने के पहले बहुत से लम्बरदार श्राये श्रीर उन्होंने लेक्टिनेंट पियर्स की श्रधीनता मान ली ।

- ४. जनरल वान कोर्टलेंड की सेना तीन सप्ताह तक हिसार में रही । इस अविध में बीकानेर के घुड़ सवार लगातार अपराधियों का भय मिटाने और राजस्व वस्त्ल करने के काम में लगाये गये । २१ जुलाई को जनरल की आजा से मैं एक हजार सैनिक और २ तोपें लेकर हाँसी को सुक्त कराने गया । इस पर विद्रोहियों ने हमला कर दिया था । मैंने वहाँ ५०० सैनिकों की टुकड़ी छोड़ दी । इस अगस्त को वहाँ जनरल के पहुँचने तक तीन सप्ताह तक इन सैनिकों ने नगर की रचा की ।
- प्र. इस टुकड़ी की मदद करने के लिये २०० वीकानेरी सैनिक भी भेजे गये थे क्योंकि ४ अगस्त को एक सम्भावित आक्रमण की स्चना मिली थी। २३ अगस्त को हजीमपुर जलाने के समय बीकानेर के सारे घुड़-सवार मेरे साथ उपस्थित थे। हिसार में मेरे सेनापितत्व में सेना ने जो लड़ाई लड़ी उसमें विद्रोही सेना को शहरपनाह से पीछे हटाने में महाराजा के अंगरक्तों ने मदद दी। उसी महीने की १६ ता० को चिमनराम पुरोहित के आधीन बीकानेरी टुकड़ी ने शहरपनाह पर अधिकार कर लिया था। लेफ्टिनेंट पियर्स के साथ वाठूल लेने में जो थोड़े से बीकानेरी थे, उनमें से एक शामपुरा के राठौड़ खेतिसंह ने अपनी अद्भुत वीरता दिखाई। दुश्मनों की लगातार गोलाबारी के बीच वह शहरपनाह पर चढ़ गया। उसकी इस अद्भुत बीरता ने जिलांधीश मि० फोर्ड का विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया जो वहाँ उपस्थित था।
- ६. जनरल की इंच्छा पर मंगली पर ग्राक्रमण करने के लिये बीकानेर की दो तोपें भेजी गयीं। बीकानेर की एक टुकड़ी ने कुछ समय तक तोशाम की तहसील की रचा की। यद्यपि ग्रन्त में उन्हें वहां के मुसलमान निवासियों ने घोखा दिया ग्रीर विद्रोही सेना फाटकों पर हावी हो गयी तो भी तहसीलदार ग्रीर थानेदार को बचाने के लिये यह टुकड़ी तहसील में बहादुरी से लड़ी। इसमें वहां उपस्थित इनके तीन सरदार मारे गये इनमें नीमराणाँ के मोहकमिंह, कू जला के मिट्ठूसिंह राठौड़ ग्रीर विरकाली के खुमानसिंह राठौड़ ये। इनके ग्रलावा गुमानसिंह जादू ग्रीर दूसरे लोग वहुसंख्यक विद्रोहियों से लड़ते मारे गये।
 - ७. जनरल वान कोर्टलेंड के जाने के बाद वे हिसार में सेना

जमालपुर लेने के समय बीकानेर की सारी बुड़सवार सेना उपस्थित थी । यहाँ उनका एक व्यक्ति घायल हुआ । न तो इन्हें और न किसी दूसरी बुड़सवार सेना को वहां लड़ाई करनी पड़ी ।

के एक ग्रंश रहे ग्रीर उन में से २०० तो ग्रव भी उस रूप में काम कर रहे हैं।

- ह. कुछ समय तक स्वयं महाराजा एक वही सेना के साथ सीमा के पास उपस्थित था। उसमें उनको काफी व्यक्तिगत ग्रमुविधा हुई श्रीर काफी खर्चा हुगा। उनके जाने के बाद, जो घटनायें हुई उन्होंने प्रत्यक्त कर दिया है कि वहां उनके उपस्थित रहने से मंगली, श्रीवैम्र तथा उसके पास के दूसरे गांव के दुष्ट प्रवृति के रांघड़ उस समय शांत रहे।
- १०. ज्वर के कारण हांसी में लगभग सारी सेना लड़ने में श्रयोग्य होगई । उनके बहुत से श्रादमी ज्वर से मर गयें। मुक्ते यह कहतें हुये श्रफ्त से होता है कि इनमें उनके प्रधान मोतिमद साह लालचन्द्र श्रीर लड़मीचन्द सुराणा थे। इन दोनों के श्रीर उनके रिश्तेदार श्रीर साथी फतेह चन्द सुराणा श्रीर ठाकुर हुकमिंसह भाटी के श्राने के बाद न तो जनरल वान कों र्टलेंड को श्रीर न मुक्ते एक बार भी ऐसा मौका मिला कि हम उनके विलम्ब की शिकायत करते श्रयवा श्रीर कोई भी मांग करने पर श्रपनी पूर्ण योग्यता के साथ तुरन्त उसे पूरा करने की चेष्टा न करने की शिकायत करते। सुक्ते यह कहते हुये श्रफ्तीस होता है कि उनके पहले वाले लोगों के साथ यह बात न थी।
- ११. श्रन्त में मुक्ते विश्वास है कि यदापि मैंने किसी श्रद्भुत वहादुरी के काम का उल्लेख नहीं किया है तो भी महाराजा की सेना द्वारा दी गयी सहायता श्राप द्वारा ऐसी समभी जाय कि श्राप महाराजा को घन्यवाद श्रीर इस सहायता की स्वीकृति का एक खरीता मेजना जरूरी समभोंगे। जिनकी सेवाश्रो का मंने विशेष रूप से उल्लेख किया है मैं उनके नाम लिखे जाने की नीति का सुभाव दूँगा ताकि किसी भावी श्रवसर पर श्रीर भी श्रिषक उत्साह दिखाया जाय। स्वयं महाराजा ने हमारे लिये जो प्रेम श्रोर सहृदयता दिखाई है वह निश्चय ही इस स्वीकृति के योग्य है।
- १२. में स्वयं आप को पहिले ही लिखता लेकिन बीमारी से बुरी तरह जकड़े होने के कारण ऐसा नहीं कर सका । मैं अब तक बैठने में समर्थ नहीं हूँ । मेरे पास कोई अंग्रे जी लिखने वाला भी नहीं है अन्यथा मैं यह पत्र पहले लिखा देता ।

गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित एजेन्ट द्वारा ता० २१ दिसम्बर १८६० को भारत सरकार के विदेश विभाग के सचिव को भेजा गया पत्र।

इस पत्र के साथ में एक मूल खरीता और उसका अंग्रेजी अनुवाद को इसके संलग्न था, भेज रहा हूँ। यह बीकानेर के महाराजा ने महामहिम भारत के वाइसराय और गवर्नर जनरल को भेजा है। में आप से अनुरोध करता हूँ कि क्या आप कृपा करके निम्नलिखित बातें महामहिम के विचार हेतु प्रस्तुत करने की कृपा करेंगे ?

विद्रोह के समय जिन लोगों ने अच्छी सेवाये की उन्हें नवम्बर सन् १८५६ में आगरा में हुये एक विशाल दरबार में महामिहम ने पुरस्कार दिये। इससे पुरस्कार देने का विषय सम्भवतः समाप्त माना जाता है। इस को पुनः उठाना अनियमित माना जा सकता है। उस समय गवर्नर जनरल के कार्यवाहक एजेंट मेजर ईडन ने जो सिफारिशें की उनका उल्लेख करना भी अशिष्ट लगे। पर सरकारी ढंग के परम्परागत नियमों से बाहर जाने वाला कहलाने का खतरा उठाकर भी में अनुभव करता हूँ कि यदि में एक भूल की ओर महामिहम का ध्यान आकर्षित न करू तो सरकार के प्रति अपने कर्तव्य से च्युत होऊंगा। सरकार ने बहुत ही उदारता से योग्य व्यक्तियों को सम्मान और पुरस्कार दिये हैं लेकिन उस समय वीकानेर के मामले में एक भूल हो गयी। इसे में इस आशा से ध्यान में ला रहा हूँ कि यदि सम्भव हो तो इसे सुधारा जाय।

मेरे लौटने पर यह बात मुक्ते स्पष्ट हो गयी है कि राजपूताना में जयपुर ही केवल ऐसी रियासत है जिसका दरबार प्राप्त पुरस्कारों से संतुष्ट है। उनको जो धन श्रीर सम्मान मिला है उससे बीकानेर श्रीर दूसरे स्थानों, जिन्होंने मेरे मत में जयपुर से श्रिधिक सेवायें की हैं, में एक निराशा की भावना पैदा की है क्योंकि उनकी श्रीर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना जयपुर की श्रीर दिया गया। भालावाड़ के राजधराने ने विद्रोही सेना को रसद देने से इन्कार कर दिया था श्रतः उसे बहुत नुकसान उठाना पड़ा श्रीर बड़ी मुश्किल से उसके प्रीए बचे । वास्तव में जब में यह पत्र लिख रहाँ हूँ राजिशनात में एक निजी मुलाकात में मेरे से इसे बात कि कि कि शिकायत की रहा कि उसके खिलग्रत के केवल दो हजार रुपये ही निश्चित किये गये जबकि उसके समुर जयपुर के मन्त्री को ५००० रुपये मिले ।

हाराजा के अन् पर बहुत शह्मान हैं । मुस्सूबतः इसी से अत्सक् होकुर अन्होंने व्यप्तर की इच्छायों की योग काफी ख्यान श्रांकष्ठित किया। लेकिन हे सा _लगता है कि बोक्तिर् करोली ह्यादि की उल्लाहमक सेवाश्री का उन्होंने च्यान नहीं रक्ला। विद्रोह के समय ये सेवार्य तुरन्त उनके ध्यान में नहीं लायी गयी थीं । लेकिन मैंने इनके द्वारा की गयी सेवाओं का कार्यालय में रैकार्ड 'छोड़ी यो ग्रीर में सोचेता हूँ कि इस रेकोड़ से उन्हें ग्रियिक मार्ग दर्शन 'तेना चाहिये या । वर्शन कर कह के अपन के अध्या है अपन कर कर कि त्रतः जहां तक महाराजा बीकानेर की शिकायत का सम्बन्ध है में महामहिम गवनर जनरल से सरकारी रेकाई के निरीत्तण करने का अनुरोध करूँगा। ६ जनवरी १८५६ के अपने मुरासिला में मेने लिखा था "बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह ने विद्रोह के आरस्म से ही स्किय रूप से त्यं येज सरकार के प्रति सबुसे या विक स्वामिस्ति। सिन्ना ् = श्रोप निष्ठा दिखाई है। सह में इन्होंने हमें हार्दिक सहयोग दिया । = = ार के जान कर**ाजा ने** कई यूरीपियनों को ज्ञानित शरणः देने क्यीर उत्को १८०० भीजन-ऋरिक्देने:में जो सेवार्ये की उनसे भारतः सरकार-पहले हुने ही अली भाँति परिचित है। इस प्रांत की सेना जनरल वान कोर्टलेंड की अधीनता में हांनी श्रीर हिसार में रुक्ली ग्रायी । महाराजा अपनी सेना के साथ अपनी सीमा पर गया और उसके बाद जहां और जब भी आवश्यकता हुई हमारी मदद के लिये तरपर रहा । महाराजा के इस सर्वश्रेष्ठ व्यवहार ने केवल अपने वंशजों के लिये ही नहीं बल्कि राजपताना के राजाओं के लिये एक अपूर्व उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किया । उन्होंने ऐसा साहस और शिक्त दिखाई जो अन्यत्र देखने में नहीं आयी । में सीचता हूं कि महाराजा उस सर्वोच प्रस्कार को पाने के अधिकारी हैं जो सरकार प्रसन्न होकर सर्वोधिक प्रशंसनीय राजपूत रियासतों को देना स्वीकार करें । दिल्ली में सर्वाधक प्रशंसनीय राजपूत रियासतों को देना स्वीकार करें । दिल्ली में सर्वाधक प्रशंसनीय राजपूत रियासतों को देना स्वीकार करें । दिल्ली में जब्त महलों में से भी एक महल पुरस्कार में दिया जा सकता है।" ३१ जुलाई सन् १८५८ की मेरी रिपोर्ट में इस राजा की ग्रच्छी सेवाश्रों का उल्लेख है। महाराजा ग्रीर उसकी सेना ने हमें जो सहायता

प्रदान की उसका विवरण जानने के लिये मैंने अपनी रिपोर्ट में पंजाब सरकार श्रीर जनरल वान कोर्टलेंड की रिपोर्टों की ओर सरकार का ध्यान दिलाया है

राजा की स्वामिमिक्ति श्रीर श्रच्छी सेवाएं जयपुर सहित राजपूताना के किसी श्रम्य राजा से श्रिधिक श्रेष्ठ हैं। मेरे मत में ये सेवाएं ऐसी हैं कि उन्हें रीवां श्रीर चरखारी के राजाश्रों की श्रेणी में ही रक्खा जाय जिन्हें खिलश्रत श्रीर श्रम्य श्रानरेरी सम्मान देने के साथ—साथ जागीर भी दी गयी है।

में महामहिम का ध्यान महाराजा के पत्र के उत्तरार्ध की श्रोर श्राकित करने का अनुरोध करू गा। इसमें उन्होंने दरबा श्रादि ४५ गांवों का संकेत किया है जो बीकानेर के इलाके से छीन लिये गये थे। श्रपने कार्यालय में रेकार्ड के श्रभाव में में यह बताने में श्रममर्थ हूँ कि उपर्युक्त गांव क्यों जन्त किये गये श्रथवा पहले इन गांवों को वापस लौटाने के बारे में जो पत्र व्यवहार हुआ उसमें विलम्ब के क्या कारण थे। महाराजा का जो वकील मेरे पास रहता है, कहता है कि इन गाँवों की वार्षिक श्राय ३०,००० रु० है। ये गांव ३०० वपों तक उसके मालिक के कब्जे में रहे लेकिन जब श्रंग्रेजी सेना उस हलाके पर श्रधिकार करने के लिये भुटियाना में प्रविष्ट हुयी तो कुछ स्वार्थी लोगों ने यह सूठी बात कही कि दरवा जिला भी महियों का था। फलस्वरूप इस पर श्रधिकार कर लिया गया।

बिना ग्रौर जांच किये में उपर्युक्त कथन की सत्यता निकालने में

ग्रसमर्थ हूँ। लेकिन यदि महामहिम गवर्नर जनरल विद्रोह के समय बीकानेर के महाराजा के व्यवहार पर एक नई दृष्टि डालकर उसके मामले को सहानुभूति से देखें तो में यह सुभाव देने की विनम्र छूट चाहता हूँ कि महाराजा साहव द्वारा मांगे गये गाँव हिसार में स्थित होने के कारण जागीर में देना श्रमुविधा-जनक लगे तो भुटियाना के च्लेत्र का इतनी हो मूल्य का भूभाग दिया जा सकता है। यह उत्तर पश्चिम की श्रोर स्वतन्त्र रियासतों के वीच एक काफी लम्बी पट्टी के रूप में फैला हुश्रा है।

यदि मैंने इस मामले को महामिहम (गवर्नर जनरल) के सम्मुख रखने में ग्रापने कर्तव्य की सीमा का उल्लंघन किया हो तो सच्चे सहायक के प्रति न्याय बुद्धि ग्रीर मेरा यह विश्वास कि मेरी सरकार बीकानेर राजा की ग्रामूल्य सेवायें खाली न जाने देगी, मेरे इस ग्रानुरोध के कारण समके जांय। सुके विश्वास है कि मेरा यह श्रानुरोध श्रीमान लाट साहब द्वारा माना जायेगा।

इन्डिया हाउस .लॅदन । ३०७७ १५ दिसस्वरु,१८५६ ७०००

श्रीमान,

महारानी ने मुक्ते ब्राज्ञा प्रदान की है कि मैं श्रीमान के पत्र की प्राप्ति स्वीकार करूँ ब्रोर इसमें लिखित मित्रता के ब्रापके आश्वासन के लिये महारानी की ब्रोर से कृतज्ञता प्रकट करूँ।

भारत में अभी विद्रोह के समय श्रीमान ने जिस राजभिक्त और मैत्री का परिचय दिया, उसका महारानी को पूरा पूरा ज्ञान है। इस अवसर पर आपने अंग्रेजी सेना तथा सरकार को जो सहायता पहुंचाई उसकी वे हार्दिक प्रशंसा करती हैं। ऐसे समय में ही मित्रता के सच्चे गुणों की परीचा होती है। आपने और राजपूताने के अन्य प्राचीन घरानों ने विद्रोह के समय जिस हद मित्रता का परिचय दिया, वह महारानी की सबसे प्रिय यादगार रहेगी।

में ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्रीमान दीर्घायु ग्रौर समृद्ध हों।

भीमान का पचा मित्र श्रौर हितेषी ' चार्ल्स बुड लार्ड रिपन द्वारा महाराजा ड्रॅंगरसिंह की ता० ३१ दिसम्बर सन् १८८३ की मैजा ग्रंथा न्वडीतातीत्रीर

हर इस वर्ष श्रीमान की रियासत में जो गड़बड़ी हुयी है, उसके बारे में में ने अपने राजपूताना स्थित एजेंट कर्नल ब्रेडफोर्ड से सुना है और मुफे बहुत चिन्ता हुयी है । अव मुक्त कर्नल बेडफोर्ड से गड़वड़ी के कारणों स्रोर वीकानेर में पुनः व्यवस्था स्थापित करने के लिये उसके द्वारा सुकाये उपायों के बारे में पूर्ण रिपोर्ट मिल चुकी है। ऐसा लगता है कि सारी चेतावनी के वार्व-जुद श्रीमान उर्ल्टे गलत सलाहकारी के हाथों में खुल रहे हैं। पिछले कुछ विपालमें रियासर्त केल प्रशासनी में लोई सुवार जाहीं हु छा। है ते असे कार्याप वढ़ने दिये गये हैं तथा रियासत की दशा उत्तरीत्तर अम्भीर होती गयी हैं हैन श्चन्तं में: श्रीमानः की=सत्ताः को भी खुली खुनौतीः दी _सगयी है । श्रीमान की प्रार्थना पर अप्रेज - सरकार् के लिये चहु जहरी है कि नह सेना मेजकर आपके इलाकेलमें विद्रोहें को देवा बहें भेलाहर नामक के कि अवस्त व्यव निर्मा कि विद्रोह मरे देखि, ग्रीं में किस्ति, ग्रीं में किस्कार ईस तरह की स्थित निकर हिंने की इजीजेत नहीं दें सकती । अन्यायपूर्ण विद्रोह के विरुद्ध मारत क देशी राजाओं की उचित सत्ता कायम रखने के लिये में सदी तत्पर रहूँ भी एउ लेकिन भिरो यह केतिव्य है कि में देशी राजायों के राज्या की गईनड़ी खीर अन्यवस्था की रियति में पड़ते से होत्र क्वांकि इन्हीं से विद्रोह सम्भव होता है। वर्तमान मामले में मुक्त यह ब्राह्म सुक्त नजर आती है कि जब तक श्रीमान की अपने इलाके में प्रशासन में मदद देने के लिये, चाहे कुछ ही समय के लिये हो, एक ग्रंग्रेज ग्रफ्सर निरन्तर उपस्थित नहीं रहेगा तब तक भविष्य में बीकानेर रियासत को ग्रव्यवस्था से नहीं बचाया जा सकता । मैंने कर्नल बेडफोर्ड से शीमान को सुचित करने के लिये कहा है कि ऋव वीकानेर में एक रेजीडेंट पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया जायेगा । देशी राज्यों के ब्रांतरिक प्रशासन में हस्तचेप करते में बहुत हिचिकचाता हूँ । इस पद के लिये मैंने कप्तान तालबोट को चुना है। उसे सरकार पर सीधा नियंत्रण करने की ज्ञाज्ञा नहीं होगी । लेकिन यह जरूरी है कि श्रीमान खुलकर उससे सलाह लें स्रौर उसकी सलाह के श्रनुसार चलें। कर्नल बोडफोर्ड श्रीमान को वे मामले बता देगा जिनके बारे में में यह जरूरी समकता हूँ कि वह श्रीमान को ग्रापनी सलाह

लार्ड डफरिन द्वारा महाराजा डूँगरसिंह को ता॰ २ फरवरी १८८७ को मेजा गया खरीता।

कुछ मास पूर्व मुक्ते अपने राजपूताना स्थित एजेन्ट से स्चना मिली कि श्रीमान की रियासत का काम भारत सरकार की इच्छा के अनुसार नहीं हो रहा है । इस बारे में लार्ड रिपन के ३१ दिसम्बर १८८३ के खरीते में श्रीमान को समभाया गया था। ऐसा लगा कि ग्राम तौर पर ग्रापने बीकानेर स्थित पोलिटिकल एजेंट की सलाह माननी जरूरी नहीं समभी। इस नासमभी के काम में कुछ लोगों ने त्रापको वढावा दिया । इनमें से कहा विदेशी थे जो पोलिटिकल एजेंट की सहमति के विना रियासत में नौकर रक्खे गये । ग्रन्य लोग बीकानेर के निवासी थे । मुफ्ते यह गुप्त सूचना पाकर चिन्ता श्रीर श्रसंतोष हुया । इससे प्रतीत होता है कि श्रीमान ने उन प्रति-बन्धों का खुलकर उल्लंघन किया है जो जानवूम कर स्रापकी सत्ता पर लगाये गये थे । ये प्रतिबन्ध श्रीमान की प्रार्थना पर उस समय लगाये गये जब जरूरी समक कर अंग्रेजी सेना के हस्तत्तेप से आपकी सत्ता का समर्थन किया गया। अतः मेंने सर एडवर्ड बेडफोर्ड को निर्देश दिया कि श्रीमान को एक मीका देकर इस मामले में स्नापकी कार्यवाही समभी जाय । इसके साथ ही में उसके मार्फत श्रीमान को एक स्पष्ट चेतावनी देना चाहता था। सन १८८३ के ग्रन्त में लार्ड रिपन ने जो प्रवन्घ स्वीकार किये थे यदि स्पष्ट रूप से ग्राप उनके ग्रनसार काम करने को तैयार नहीं हों, जो प्रवन्ध ग्रापकी रियासत में सीधा हस्तचेप रोकने के उद्देश्य से किये गये थे, तो यह जरूरी हो सकता है कि उन प्रवन्धों को इस तरीके से बदल दिया जाय जो श्रीमान को द्यरुचिकर हो सकते हैं। भारत सरकार के लिये यह सम्भव नहीं होगा कि वह श्रीमान को ऐसे तरीके से काम करने दे जिससे आपकी रियासत का प्रशासन ग्रस्त-व्यस्त हो जाय । मैंने सर एडवर्ड ब्रोडफोर्ड को यह भी सचित किया कि यदि किसी वीकानेर के ग्राफसर का बुरा प्रभाव पड़ रहा हो तो पोलिटिकल एजेंट को उसे श्रीमान की राजधानी से इटाने के लिये श्रावश्यक करम उठाने की छूट होगी।

मेरी ग्राज्ञा के ग्रनुसार सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड ग्रीर पोलिटिकल एजेंट ने जो कदम उठाये उनसे सर ब्रेडफोर्ड ने ग्रव सुक्ते ग्रवगत करा दिया है । उसने मुक्ते श्रीमान-द्वारा गत २७ अक्टूबर को उसको लिखे गये खरीते की नकल पेश की है । श्रीमान ने जो कारण और तर्क प्रस्तुत किये उन पर मैंने सावधानी से विचार किया है । बड़ी अनिच्छा और विवशता के साथ मैं आपको सूचित करता हूँ कि बिना पोलिटिकल एजेंट को बताये अपनी रियासत में विदेशियों को नौकर रखने के विवरण को मैं सही नहीं मान सकता। मुक्ते यह लिखते दुख होता है कि बीकानेर के जिन अधिकारियों की उपस्थिति के बारे में पोलिटिकल एजेंट ने एतराज किया उन्हें आपकी राजधानी से हटाने में कठिनाई हुयी।

मेरे दोस्त, तुम्हें ख्रव मेरे लिखने का उद्देश्य यही है कि एक वार पुनः ईमानदारी के साथ उन कामों के विरुद्ध सावधान कर दूँ जिनका परिणाम श्रीमान के लिये वहुत ही ख्ररूचिकर होगा।

जैसा लार्ड रिपन ने श्रीमान को बताया, मारत सरकार देशी रिया-सतों के आंतरिक प्रशासन में हस्तच्चेप करने की बहुत कम इच्छुक है। लेकिन साथ ही वह प्रशासन को अव्यवस्थित दशा में भी नहीं जाने देना चाहती। इन सिद्धांतों पर मेरे सम्मानित पूर्व पदाधिकारी ने प्रतिबन्ध बनाये. जो उसने एक राजा के रूप में आपकी सत्ता पर लगाये। सर एडवर्ड ब्रेड-फोर्ड ने उन्हें सही रूप में आपको बता दिया है। मुक्ते विश्वास और निश्चय है कि उनका पालन होगा। अतः में आशा करता हूँ कि मुक्ते इस विषय पर दुबारा लिखने के लिये विवश नहीं किया जायेगा। मविष्य में श्रीमान विशेषतः अपने अफसरों के चयन के सम्बन्ध में बीकानेर स्थित पोलिटिकल एजेंट की सलाह ईमानदारी से चाहेंगे और मानेंगे। इसी आशा में मैंने अधिक कड़े कदम उठाने का बचार छोड़ने का निश्चय किया है, यदि श्रीमान मुक्ते सलाह के लिये इस कष्ट कार्य से छुटकारा देंगे तो में सुख और कृतज्ञता अनुभव करूँगा।

बहुत ख्याल के साथ, मैं हूँ,

त्रापका सच्चा मित्र डफरिन भारत का वाइसराय श्रीर गवर्नर जनरल

राजपूताना में गवर्नर जनरल के एजेंट के प्रथम सहायक लेफ्टिनेन्ट कर्नल • ए॰ डी॰ मैक्फरसन ग्राई॰ ए॰ द्वारा ता॰ २६ मार्च सन् १९१६ को ग्रावू से बीकानेर स्टेट कौंसिल के राजनीतिक सदस्य को लिखा गया पत्रांक १३०८-१३०६।

मुक्ते आपको यह स्चित करने का निर्देश मिला है कि भारत सरकार के निर्देशानुसार बीकानेर और सिरोही रियासत की राजनीतिक देख रेख का काम अस्थायी तौर पर राजपूताना स्थित गवर्नर जनरल के माननीय एजेंट को हस्तांतरित किया गया है। अतः आपके कार्यालय से होने वाला सारा पत्र व्यवहार जो अब तक पश्चिमी राजपूताना रियासतों के पोलिटिकल एजेंट के साथ होता या भविष्य में माउन्ट आबू स्थित राजपूताना में गवर्नर जनरल के एजेंट के प्रथम सहायक के साथ किया जाय। इस पद का कार्य भार इसी २६ ता॰ से मैंने संभाल लिया है।

मारवाइ श्रीर जैसलमेर की रियासतों के इन्चार्ज श्रीर पश्चिमी राजपूताना की रियासतों के रेजीडेंट के पद पर मि॰ एल॰ डब्लू॰ रेनोल्ड्स, एम॰ सी॰, सी॰ श्राई॰ ई॰, श्राई॰ सी॰ एस॰, को लगाया गया है।

सेवा में

महामहिम सम्राट विकंघम महल

लंदन

मैंने अभी अभी सुना है कि रूस, फ्रांस, और जर्मनी के बीच युद्ध श्रारम्भ हो गया है। श्रत्यधिक कर्तव्यपूर्ण होकर मैं श्रापसे प्रार्थना करता हूँ कि यदि ग्रेट ब्रिटेन को भी युद्ध में शामिल होना पड़े तो मुक्ते लड़ने के लिये श्रपनी सेवायें श्रीमान को सौंपने की इजाजत दी जाय । चाहे सुके श्रीमान के स्टाफ का एक सदस्य होने के नाते उस रूप में सेवा ली जाय अथवा मेरी सेना और राजपूतों का नेतृत्व करते हुये सेवा ली जाय । मैं श्रीर मेरे सैनिक सभी श्रीमान के लिये, श्रीमान की सुरत्ता, सम्मान श्रीर कल्यारा के लिये तथा त्रापके राज्यों के लिये योख्प में, भारत में या अन्य किसी भी जगह लड़ने को तैयार हैं। मुक्ते किसी भी अन्य भारतीय राजा की तुलना में अधिक समय तक श्रीमान के ए० डी० सी० रूप में सेवा करने का महान सम्मान ऋौर गौरव मिला है। चाहे इस समय मेरी सेना कहीं लगाई जाय या न लगाई जाय मैं श्रीमान से सच्चे हृदय से निवेदन करता हूँ कि यदि साम्राज्य का सवाल हो तो सुभे निजी सैनिक सेवा का एक अवसर दिया जाय । सैनिक सेवा एक राठौड़ राजपूत राजा की सत्रसे बड़ी ग्रमिलापा है । श्राप कृपा कर मुक्ते श्रादेश दें कि मैं तुरन्त योख्प में मोर्चे के लिये रवाना हो जाऊँ। युद्ध के समय श्रीमान के स्टाफ में काम करके मैं इसे सर्वोच्च सम्भव सम्मान समभूँगा । लेकिन जैसे पिछले १२ वर्षों में शान्ति में सम्राट की सेवा की है, वैसे ही किसी भी रूप में कहीं भी युद्ध में अपने सम्राट की सेवा के लिये जाने के लिये तैयार हूँ । ऐसा अवसर जीवन में एक बार ही आता है। मैं विनम्रता से श्रीमान से प्रार्थना करूँगा कि यदि साम्राज्य की सेनायें लईं तो मुभे निष्किय न रक्ला जाय । एक राठौड़ राजा का कर्तव्य मुभे युद्ध के लिये पुकार रहा है। मेरी अनुपिस्थित में मेरी रियासत के प्रशासन का मैंने पूरा प्रवन्य कर लिया है । मैं तुरन्त समुद्र से यात्रा करने को तैयार हूँ । सरकारी तौर पर अपनी और अपनी सेना की सेवार्ये अर्पित करते हुये मैं वाइसराय को तार दे रहा हूँ।

गंगासिंह

वीकानेर ता॰ ३-८-१९१४

सेवा में

महामहिम वाइसराय वाइसराय शिविर-भारत

में ग्रीर मेरी सेना तुरन्त किसी भी जगह जाने के लिये तत्पर ग्रीर तैयार हैं। हमारे सम्राट श्रीर उनके राज्यों की सुरक्ता, सम्मान ग्रीर कल्याण के लिये योख्प में, भारत में श्रथवा जहां भी हमारी सेवाश्रों का ठीक प्रकार से सहयोग हो, हम जाने को तैयार हैं।

श्रीमान राठौड़ बीका राजपूतों की परम्परा को जानते हैं। हम जल्दी ही मोर्चे पर पहुंचना चाहते हैं।

लेकिन इस समय चाहे मेरी सेना का उपयोग हो या न हो, में सच्चे हृदय से श्रीमान से अनुरोध करता हूँ कि मुफे स्वयं सम्राट और साम्राज्य की व्यक्तिगत रूप में सैनिक सेवा करने का एक अवसर दिया जाय। सम्राट के स्टाफ का एक सदस्य और एक राठौड़ राजा होने के कारण यह मेरी सबसे बड़ी इच्छा है।

मेरी अनुपिस्थिति में रियासत के प्रशासन का पूर्ण प्रवन्ध कर दिया गया है ख्रीर में तुरन्त रवाना हो सकता हूँ।

महाराजा बीकानेर

ता० ३-८-१६१४

पंरिशिष्ट-१८

४ ग्रागस्त १६१४ को सम्राट द्वारा बीकानेर के महाराजा को भेजा गया तार।

श्रपनी बहुमूल्य सेवाश्रों को मेरी इच्छा पर प्रस्तुत करने के श्रापके सन्देश के लिये में श्रीमान को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। सैनिक कार्यवाहियों के सम्बन्ध में श्रमी तक कोई निर्णय नहीं हुश्रा है, लेकिन श्रापकी श्रजीं भुलाई नहीं जायेगी।

जार्ज ग्रार० ग्राई०

भारत के वाहसराय ग्रीर गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग द्वारा महाराजा गंगासिंह को ता॰ ४-८-१९१४ को भेजे गये एक तार का ग्रंश।

ग्रत्यधिक हार्दिक स्वामिमिति से श्रीमान ने जो सेवार्ये ग्रंपित की है, उन्हें में कृतज्ञता पूर्ण धन्यवाद के साथ स्वीकार करता हूँ । • • • में जानता था कि में ग्राप पर ग्रौर वीकानेर के ग्रान्य बहादुर राठौड़ों पर भरोसा कर सकता हूँ ।

	•	
महा	राजा गंगासिंह को प्राप्त सम्मानों, उपाधियों, तमगों ऋादि की	.स्ची ।
₹.	श्रानरेरी मेजर वनाये गये	१६००
₹.	कैसरे हिन्द स्वर्णपदक (रियासत में अकाल सहायता कार्य के लिये)	0039
ą.	चीन पदक (जून १६०२ में इंग्लैंड में राज्याभिषेक के समय जा	
	पंचम द्वारा दिया गया)	१९०३
٧.	के॰ सी॰ ग्राई॰ ई॰ बनाये गये	१०३१
ď.	राज्याभिषेक पदक	१६०२
ξ.	के॰ सी॰ एस॰ ऋाई॰ बनाये गये	१६०४
७.	जी॰ सी॰ स्त्राई॰ ई॰ बनाये गये	७०३१
ς,	त्रानरे री लेफ्टिनेंट कर्नल बनाये गये	3038
. 3	त्रानरे री कर्नेल बनाये गये	०१३१
80.	जी॰ सी॰ एस॰ ऋाई॰ बनाये गये	११३१
११.	केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से ग्रानरेरी एल॰ एल॰ डी॰ उपाधि	वे
	प्राप्त की	9939
१२.	के॰ सी॰ बी॰ (सैनिक विभाग) वनाये गये	१६१४
१३.	१९१४ स्टार	
१४.	एडिनबरा विश्वविद्यालय से स्रानरेरी एल० एल० डी० व	मे ·
	उपाधि प्राप्त की	७१३१
१५.	श्रानरेरी मेजर जनरल वनाये गये	0939
१६.	लंदन, एडिनवरा, मेनचेस्टर श्रौर ब्रिस्टल नगरों की मुक्ति	
	प्राप्त की	७ १३१
१७.	जनरल सेवा पदक	१६१८
१८.	विक्टरी पदक	१६१८
.38	नील का ग्रांड कोर्डन	2838
२०.	जी॰ सी॰ वी॰ स्रो॰ बनाये गये	3838
२१.	त्र्याक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से त्र्यानरेरी डी॰ सी॰ एल॰ उपाधि	1
	प्राप्त की	3838
२२.	जी॰ वी॰ ई॰ (सैनिक विभाग) वनाये गये	१६२१
२३.	वनारस हिन्दू विश्व विद्यालय से ग्रानरेरी एल॰ एल॰ डी॰	•
	उपाधि प्राप्त की	१६२७

२४.	ग्रानरेरी लेफ्टिनेंट जनरल बनाये गये	०६३९
ર્પ્ર.	श्रानरेरी जनरल बनाये गये	१९३७
२६.	१६ १६-४५ स्टार	मरगोपरान्त दिया गया
হ্ড.	ग्रफीका स्टार	"
হ্দ.	मारतीय सेवा परक	"
२१.	युद्ध पदक	"

२४ ग्राप्रैल सन् १६१७ को हाउस ग्राफ कॉमन्स के हारकोर्ट कमरे में साम्राज्य संसदीय संघ (ब्रिटिश शाखा) द्वारा भारतीय प्रतिनिधियों को दिये गये मध्यान्ह भोज के ग्रावसर पर महाराजा गंगासिंह द्वारा दिये गये भाषण का ग्रांश।

× × ×

"''''''' हमारी इच्छा भी ब्रिटेन के पथ प्रदर्शन में श्रीर जैसा मि॰ चेम्बरलेन ने कहा, ब्रिटेन की सहायता से वैधानिक तरीके से श्रपने देश की भौतिक, राजनैतिक श्रीर श्रार्थिक प्रगति करना है। हम भी श्रम्त में श्रपने सम्राट के नीचे वह स्वतन्त्रता श्रीर स्वायत्तता प्राप्त करना चाहते हैं जो श्राप लोगों ने इस देश में बहुत पहले प्राप्त की श्रीर जो पिछले कुछ समय से हमारे श्रिषक सौभाग्यशाली साथी राज्य प्राप्त कर चुके हैं।"

× × ×

"श्रीमानो त्रौर सज्जनों ! क्या यह त्राश्चर्य की बात है कि भारत त्रापने राजनैतिक पुनर्जीवन को लच्य वनाये ! त्रापने भारतीयों को पाश्चात्य हंग से शिचा प्रदान की है । ग्रेट व्रिटेन उदार परम्परात्रों त्रोर लोकप्रिय संस्थाओं का देश है। ग्रेट ब्रिटेन के साथ भारत का सिंदयों का निकट का ग्रीर गहरा सम्बन्ध है। इस देश में ग्राप के राजनीतिक जीवन में जो श्रेष्ठ है उसकी ग्रीर यदि हम भारतीय ध्यान न दें तो यह हमारी मूर्खता होगी। हमारी मूर्खता तब ग्रीर भी ग्राधिक होगी जब ग्रापकी राष्ट्रीय जीवन की ग्रच्छी बातों को ग्रहण करने के बाद जहाँ ग्रीर जब हमारी परिस्थितियाँ ग्रानुकृत हों तो हम उन सब को पाने ग्रीर पचाने की इच्छा न करें जो ग्रापकी संस्थाग्रों ग्रीर पद्धति में श्रेष्ठ हैं।

व्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत पूर्ण स्वराज्य और स्वायत्तता के लिये भारत की इच्छा के सम्बन्ध में में यह मानने को तैयार हूँ कि यह एक कठिन समस्या प्रस्तुत करती है लेकिन क्या यह एक ऐसी कठिनाई है जिसे व्रिटिश कुशल राजनीतिज्ञ और व्रिटिश सदमावना व सहानुभूति हल नहीं कर सकती ? क्या भारत में वर्तमान परिस्थितियाँ भारतीय भावनाओं के साथ इतनी निराशा पूर्ण और वेमेल हैं जिससे कि यह प्रश्न गम्भीर विचार के लायक न रह कर केवल शास्त्रीय वन जाता हो ? क्या यह प्रश्न इस योग्य है कि इसे पृष्टभूमि में फेंक दिया जाय और सुदूर और धुँधले भविष्य में ही वाहर लाया जाय ? निश्चय ही हमारे देश में जातियों की भिन्नता है लेकिन क्या इंग्लैंड में भी तीन अलग २ जातियाँ नहीं हैं ? क्या कनाडा में इतनी ही जातियों और राष्ट्रीयताओं की भिन्नता नहीं है ? और दिवाजों की बात करते हैं तो हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि भारत एक देश नहीं है बल्कि वास्तव में एक विशाल महाद्वीप है । यह एक राज्य नहीं है बल्कि साम्राज्य के भीतर एक साम्राज्य है ।"

"''''''भारत में जो श्रशांति है वह दो प्रकार की हैं। एक तो विष्लवकारी श्रशांति फैलाने का प्रयत्न करते हैं। सोभाग्य से बहुत कम लोग उनके श्रनुकूल हैं। श्रिधकारियों को इसका मुकाबला करना है श्रीर इसे ठीक तरह से हल करना है। वे इसका मुकाबला कर रहे हैं। यह भारत में हमारी सच्ची श्राशा है कि इसे मिटाने में हम धीरे २ श्रनुकूल परिस्थितियों में हो सकेंगे। यह केंसर की तरह बढ़ने वाला है जो केवल मेरे ही देश में नहीं है। यदि में गल्ती नहीं करता तो दूसरी श्रशाँति वह है जिसका कुछ वर्ष पहले एक कुशल ब्रिटिश राजनीतिज्ञ ने ठीके ढ़ंग से वर्णन किया है। यह न्यायोनित श्रशांति है। मारत में जिस मात्रा श्रीर जिस तरह से राजनीतिक विकास हुश्रा है यह उसी मात्रा के श्रिवेश से उत्पन्न होती है, यह उन लोगों के मन में है जो सही या गलत यह मत रखते हैं लेकिन जो उतने ही स्वामिमक है जितने श्राप श्रोर में हूँ।" इस विषय में जिन्होंने सोचा है उन बहुत सों का यह सुचिन्तित मत है कि जिन चेत्रों में भारतीयों ने श्रपनी योग्यता प्रदर्शित की है उनमें यदि उन्हें श्रिषक सत्ता श्रीर छूट मिले तो हमें श्रशाँति-श्रांदोलन श्रीर श्रनुत्तरदायी श्रालोचना बहुत कम सुनने को मिलेगी ''''' श्राणित श्रोदोलन श्रीर श्रापकी श्रोर हम सहानुभूति श्रोर सहायता के लिये देखते हैं। हम चाहते हैं कि श्राप तत्परता से उन परिवर्तनों को पहिचानें जो भारत में हो रहे हैं श्रीर भारत को श्रीर श्रिषक प्रगति प्राप्त करने तथा समय पर श्रपनी इच्छित भावनाश्रों को पूर्ण करने में योग हैं।" ""भारत की मांगों के रूप के सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है लेकिन इस बात में कोई मतभेद नहीं हो सकता कि वे मांगें पूर्णतः ठीक श्रीर न्यायोचित हैं। " ""

× × ×

महाराजा गंगासिंह द्वारा ता० १०-५-१६१७ को टाइम्स अलवार के साथ की गयी एक भेंट के अंश ।

२ मई के टाइम्स में लिखा है कि ब्रिटिश नीति भारत के लिये स्वराज्य कार्य को ग्रागे उत्तरोत्तर बढाने की है। यह बात प्रगति के लिये बहुत ही उत्साह—वर्षक मानी जायगी। हमने जिस नये हिंदिकोण के बारे में इतना ग्राधिक सुना है यह उस हिंदिकोण की वास्तविकता का पक्का प्रमाण है। लेकिन यह नीति बहुधा शतों में व्यक्त की जाती है। इसे घोषित करने का समय ग्रामी है जब कि युद्ध चल रहा है। जब युद्ध समाप्त हो जाय तो ग्राँदों- लन का उत्तर देने के लिये इसे घोषित करना उपयुक्त समय न होगा।

इन विचारों का समर्थन करते हुये में कहूँगा कि संसार के यहत से ग्रन्य भागों में ब्रिटिश नीति ने उदार श्रीर व्यापक दृष्टिकीण श्रपनाया है, यह प्रगति भी उसी तरह होनी चाहिये। जहां तक सुभे ब्रिटेन के उपनिवेशवादी विस्तार के इतिहास का स्मरण है उसे कभी पछताने का श्रवसर नहीं श्राया। भारत में भावना को बहुत श्रिधिक महत्व दिया जाता है श्रीर जो परिवर्तन किया जाय वह ऐसा होना चाहिये जो वहां के लोगों की कल्पना के अनुकृत हो। अभी वाइसराय ने कहा है कि भारत सरकार ने वैधानिक सुधार विचार हेतु राज्य मंत्री को भेजे हैं। इन पर यह प्राचीन कहावत पूरी तरह त्रानन्द के साथ लागू होती है "शुभस्य शीव्रम्"। तुरन्त श्रीर विना सोचे प्रस्तावों को स्वीकार करना उतनी ही बड़ी गल्ती होगी जितनी इनके वारे में बहुत अधिक सावधानी बरतना । लार्ड कर्जन ने घोपणा की है कि शाही सम्मेलन और मैत्री परिषद की बैठकें वार्षिक करने का विचार है। भारत के आंतरिक राजनैतिक विकास के लिये कुछ और कदम उठाना केवल बांछनीय ही नहीं है बल्कि उस शानदार निर्णय का एक त्र्यनिवार्य परिणाम भी है कि युद्ध की तरह शान्ति में त्र्याप स्वराज्य प्राप्त देशों की तरह भारत की भी उपयुक्त सम्मेलनों में नियमित रूप से सलाह ली जाय । भारत के त्रांतरिक मामलों को परिवर्तित परिस्थितियों के त्रानुकुल बनाने में त्रागे जो त्रानेक कठिनाइयाँ हैं उन्हें में कम बनाना नहीं चाहता। लेकिन वे इल न होने योग्य नहीं हैं। व्यवस्थित विकास के मार्ग पर चलने से त्रिटिश श्रीर भारतीय कुशल राजनीतिज्ञों को इससे रुकना नहीं चाहिये।

इस विचार से बदकर श्रीर कोई भूल नहीं हो सकती कि इस राज-नैतिक विकास से भारतीय राजा नाराज या भयभीत हो जायेंगे। इसके विपरीत विटिश मंडे के नीचे वैघानिक तरीके से भारत को राजनैतिक प्रगप्ति को देख कर उन्हें खुशी होगी, यद्यपि प्रत्येक रियासत ने इस बात को श्रिधिक पसंद किया है कि स्थानीय परिस्थितियों, विचित्रताश्रों, परम्पराश्रों श्रीर भावनाश्रों के लिये सर्वाधिक उपयुक्त तरीके से उसे श्रपने श्रांतरिक मामलों को चलाने की छूट हो यद्यपि उन रियासतों में प्रशासकीय योग्यता के विभिन्न स्तर श्रीर विभिन्न श्रादर्श हैं तो भी इनमें से बहुत सी प्रशासन श्रीर कानून बनाने के काम में जनता को सम्मिलित करने में तीव प्रगति कर रही हैं।

कुछ वर्ष पूर्व हमने अपनी रियासत में एक प्रतिनिधि सभा के आरम्भ का उद्घाटन किया। इसमें चुने हुये और गैर सरकारी मनोनीत सदस्य हैं। सन् १६०६ के सुधारों में ब्रिटिश भारत के विधान मएडलों को जो कानून बनाने के अधिकार थे उसी तरह से इसे भी है। बजट के सम्बन्ध में तो इसे वे ही अधिकार हैं जो लैंसडाउन सुधारों के द्वारा ब्रिटिश भारत में सर्वोच और प्रांतीय विधान मएडलों को दिये गये और जो १८६३ से १६०६ तक लागू रहे। इस प्रतिनिधि सभा के निर्माण की अपनी इच्छा घोषित करते समय मैंने सूचना दी कि ज्यों ही लोग अपनी योग्यता दिखायेंगे उनको अधिक अधिकार दिये जायेंगे। इसके अनुसार जब प्रथम त्रैवार्षिक अधिक स्वांत्रता दिये जायेंगे। इसके अनुसार जब प्रथम त्रैवार्षिक अधिक स्वांत्रता देने की दिशा में नियम संशोधित कर रहे हैं।

× × ×

लार्ड चेम्सफोर्ड द्वारा महाराजा गंगासिंह को ता॰ १५ नवम्बर १६१८ को भेजा गया तार ।

मेरे श्रीर लंदन के बीच हुये विचारों के श्रादान प्रदान के परिगाम स्वरूप श्रव में इस स्थिति में हूँ कि तुरन्त इंग्लैंड प्रस्थान के लिये
श्रीमान से कहूँ । यह वहुत जरूरी है कि श्रीमान चिन्दवाड़ा जहाज पर
जो इसी महीने की २३ तारीख को खाना हो रहा है स्थान प्राप्त करलें ।
सिन्हा चिन्दवाड़ा से जा रहा है । यात्रा के बाद के भाग में तुरन्त संक्रमण्
के लिये नाव श्रीर विशेष प्रवन्ध कर दिया जायेगा । श्रीमान को यह जानकर खुशी होगी कि स्वयं प्रधानमंत्री ने इच्छा प्रकट की है कि श्रापको श्रव
लंदन जाना चाहिये । श्रीमान की सेवायें किस रूप में ली जायेंगी इस बारे
में श्रमी तक कोई स्पष्ट बात नहीं बतायी गयी है । लेकिन में जानता हूँ कि
वर्तमान स्थिति में वर्तमान समय स्पष्ट रूप से किसी बात को मालूम करना
कितना श्रमम्भव है इसे श्रीमान समक्ष जायेंगे । कृपया मेरी हार्दिक बधाई
श्रीर शुभ कामना स्वीकार करें । कृपया इस सन्देश की प्राप्ति तार से स्वीकार करें । यदि खाना होने से पूर्व किसी तरह श्रीमान का दिल्ली श्राना
सम्भव हो तो सचमुच मुक्ते खुशी होगी । यात्रा के सम्बन्ध में राजनैतिक सचिव
हर सम्भव सहयोग देगा ।

परिज्ञिष्ट--२४

मि॰ मोन्टेग्यू द्वारा महाराजा गंगासिंह को भेजा गया तार।

भारत की स्थिति के बारे में राष्ट्र संघ समभौते को पढ़कर मुभे कुछ अशान्ति हुयी है । मुभे केवल इसी वात का सन्तोष है कि आपने, जो निजी रूप में इस मामले को देख रहे थे, मुभसे कोई चिन्ता प्रकट नहीं की है । क्या आप लार्ड रोवर्ट सेसिल और मि॰ इस्ट से मिल कर मुभे स्चित करेंगे कि क्या भारत ठीक है और उसकी स्थिति कैसे सुरच्चित रक्खी गयी है । इपया संकेत में तार दें क्योंकि यदि कोई चिन्ता की बात हो तो बुधवार को लौटने से पहले में प्रधान मन्त्री से अवश्य मिल लूँ।

वाइसराय ग्रीर भारत के लिये राज्य मन्त्री की संयुक्त रिपोर्ट के ग्रध्याय १० (भारतीय रियासतों से सम्बन्धित) पर की गयी टिप्पणी के ग्रंश ।

× × ×

१६. दूसरी बात जो में अनुकृल विचार हेतु महामिहम वाइ-सराय और मेरे बन्धु राजाओं के सामने रखना चाहूँगा वह द्वितीय श्रेणी में आने वाले राजाओं के सम्बन्ध में है।

यद्यपि उनके अधिकार और स्तर अधिक बड़ी रियासतों के राजायों के समान नहीं हैं तो भी इस तथ्य की उपेचा नहीं की जा सकती कि उनके इलाके भी भारत के उसी एक तिहाई भाग में हैं जो इस समय भारतीय रियासतों के नाम से जाना जाता है। ये शासक विटिश प्रजा नहीं हैं ग्रीर निसंदेह उनके इलाके वास्तविक ब्रिटिश भारत में शामिल नहीं हैं। ऐसे शासक ग्रीर उनकी प्रजा स्पष्ट रूप से ब्रिटिश भारत के उच्च पदा-विकारियों छोर लोगों से भिन्न हैं । ब्रिटिश भारत में इस समय जो सुघार करने सोचे जा रहे हैं या जो वहाँ भविष्य में लागू होंगे उनसे उन्हें लाभ नहीं हो सकता। वड़े राजायों और वड़ी रियासतों के खँगेज सरकार के साथ सौ वपों से ऋधिक समय तक ग्रह्माधिक समान ढंग के सम्बन्ध रहे हैं। जब इन सम्बन्धों का नियन्त्रण करने वाली व्यवस्था में संशोधन ऋौर सुधार करना आवश्यक समभा गया है तो में अनुरोध करता हूँ कि इन छोटे राजाओं श्रीर उनके इलाकों के लिये भी इसी प्रकार की श्रावश्यकता समभी जाय। यदे प्रस्तावित विभावन के ग्रान्तर्गत, जिसमें उनके ग्राधिक महत्व पूर्ण ग्रीर सीमान्य शाली बन्धु माग लेने की आशा कर रहे हैं, किसी लाभ से उन्हें विलकुल वंचित रक्खा गया तो वे शोघ ही एक मजबूत शृंखला में कमजोर कड़ी की तरह लगेंगे। इतना ही नहीं वे ग्रपने श्रापको वंघी हयी स्थिति में पार्वेगे । दोनों श्रेणियों के राजाओं के बीच अन्तर को मैं पूरी तरह समस्तता हूँ। लेकिन में यह बात अपनी पूरी ताकत और पूर्ण सम्मान के साथ कहना चाहता हूँ कि कोई ऐसा तरीका निकाला जाय जिससे उन्हें भी इन सुघारों के चेत्र में लिया जा सके। वे अनुभव करें कि सर्वीच सत्ता और उनके अधिक सम्मानित बन्धु उनके श्रौर उनकी रियासतों के हितों की उपेचा नहीं कर रहे हैं।

महाराजा गंगासिंह द्वारा ता० १७-७-१६३८ को लार्ड लिनलियगो को लिखे पत्र का ग्रंश ।

× × ×

१७, पर में ग्रापने इस विश्वास को दोहराना चाहता हूँ कि भारत का व्यवस्थित राजनीतिक विकास, जिसे पाने के लिये राजा लोग भी ब्रिटिश भारत के लोगों से कम इच्छुक नहीं हैं, केवल एक उचित ढ़ंग के खंब द्वारा ही प्राप्त हो सकता है । मेरी यह भी सची ग्राशा है कि भारत के राजनैतिक विकास की समस्या ऐसे तरीके से हल करनी है जो सभी के हितो में संतोषप्रद हो ग्रीर रियासतों की प्रभुसत्ता, स्वायत्तता ग्रीर समस्तीते में दिसे गये श्रिकारों की उचित ग्रीर पूर्ण सुरज्ञा करता हो ।

× × ×

महाराजा गंगासिंह द्वारा जोधपुर रियासत के तत्कालीन मुख्य मन्त्री सर डी॰एम॰ फील्ड को लिखे गये एक वहुत ही गोपनीय पत्राँक २०१-पी॰ ५४-३७ ता॰ २१ फरवरी १९३७ के ऋंश।

× × ×

•••• श्रपने इस पत्र के द्वारा में श्रपने विचार समकाना चाहता हूँ जो मेंने बहुधा एक बहुत ही उग्र श्रीर विरोधी वक्ता के सम्बन्ध में प्रकट किये हैं। जनमत की देहली पर राजाओं का इस प्रकार के व्यक्ति से कभी मुकावला नहीं हुया। यह दुर्भाग्य की वात है कि हमारे सार्वजिनक जीवन में ऋत्यधिक ऋसहिष्णुता है। इसी कारण श्री जयनारायण न्यास के लिये यह विश्वास करना कभी सम्भव नहीं हुन्ना कि उसके विरोधी भी उसके समान ही सच्चे ग्रीर देश भक्त हो सकते हैं। यदि मैं यह बात कहूँ कि यद्यपि श्री जयनारायण व्यास श्रीर उसके साथी सामान्य रूप से राजाग्रों के श्रीर विशेष रूप से मेरे विरुद्ध इलचलकारी, विना सोचे समक्ते श्रीर भद्दा प्रचार करते हुये बहुत कड़ा श्रीर जबरदस्त प्रहार करते रहे हैं तो भी श्री ब्यास के प्रति मेरे हमेशा स्पष्ट रूप से उच विचार रहे हैं, तो बहुत कम राजनीतिज्ञ इस पर विश्वास करेंगे । कई बार इन लोगों ने वात को बहुत बढ़ाने, मूठ को फैलाने, तथ्यों को जानवृक्त कर तोड़ने, निन्दा करने स्त्रीर मद्दी गालियाँ देने का भी काम किया है। ये लोग राजाश्रों को मूर्ख, प्रजापीडक, विद्रोही श्रीर दमनकारी, श्रपनी जनता का ख़्न पीने वाले श्रीर श्रपराधियों से भी श्रधिक वेईमान श्रीर श्रसंदिग्ध, कुकर्मी तथा धरती पर होने वाले प्रत्येक श्रपराध के दोषी कहते रहे हैं। कोई भी व्यक्ति जो त्रांतरिक रूप से रियासतों से परिचित है ऋौर जिसे राजाओं की सद्मावना का ज्ञान है वह इस संगठित, उद्दर्ड, उकसाने वाले ग्रीर जनरदस्त प्रचार के एक शब्द को भी सत्य नहीं मानेगा । लेकिन वे लोग जो एक संयुक्त ग्रौर विशाल भारत को प्रगति के पथ पर ग्रपने--ग्रपने लच्य की श्रोर कन्वे से कन्या मिला कर चलते हुये देखना चाहते हैं, वे उन लोगों के भविष्य के बारे में चितित हुये विना नहीं रह सकते जो ग्राजकल एक तरह से इन इलाकों के राजनैतिक श्रौर सार्वजनिक जीवन पर छाये हुये हैं।

सर डोनाल्ड ! में त्रापको वता दूँ कि इन सर्वेहारा उग्रवादियों के

सामने न तो राजतन्त्र के शानदार स्तम्म टिकेंगे श्रीर न उत्रत राज प्रतिनिधि का मएडल श्रिपत भारत में सिदयों पुरानी प्रभुसत्ता का भार इनके कन्धों पर पड़ेगा श्रीर इस बात की पूर्ण सम्भावना है कि हम में से भी कुछ लोग न्याय श्रीर ठीक व्यवहार के लिये उनका मुंह ताकेंगे। रूस में जनता के श्रव्यवस्थित शासन ने जो श्रातंक फैलाया, वह सारे संसार के लिये श्रांखें खोल देने वाला है। मुफे विश्वास है कि श्राप यह नहीं चाहेंगे कि भारतीय रियासतों में ऐसा हो। यह तभी सम्भव है जब भारतीय रियासतों में एक स्वस्थ जनमत वर्तमान हो जिसके पीछे सच्चे देशभक्त श्रीर गम्भीर मन वाले नागरिक हों जो शान्ति के मार्ग पर चलने वाले हों। इनका सच्चा श्रीर प्रशंसनीय लच्च श्रपने साथ की जनता का राजनीतिक विकास करना श्रीर उनकी मांगों को संवैधानिक तथा तर्कपूर्ण ढंग से निर्मित कर उनकी वास्तिवक शिकायतों को दूर करना श्रीर प्रशासन के दायित्व में भाग लेकर उनकी न्यायोचित भावनाश्रों को पूरा करना हो।

जैसा ऋाप स्वयं जानते हैं भारतीय रियासतों ने ऋधिकाँशतः ऐसे नेता उत्पन्न किये हैं जो अपने आप नेता बने हैं या असंतुष्ट और अप्रभा-वित तथाकथित राजनीतिज्ञ जो बहुधा राजनैतिक निर्वासन का जीवन विताते हैं। कई बार ऐसे लोग नेता बन गये हैं जिन्हें ऋपनी रियासतों से निकाल दिया गया या किसी गम्भीर अपराध के लिये सजा दो गयी थी। ऐसे लोग चाहे पूर्ण रूप से न सही पर मुख्य रूप से राजात्रों त्रौर रियासतों के विरुद्ध वदले की भावना से प्रेरित हैं। निसंदेह व्यास जयनारायण भी राजाश्रों के राज का ऐसा ही कड़ा ऋौर करू आलोचक है। पर ऐसा होते हुये भी वह पूर्ण ईमान-दार, भ्रष्ट न होने योग्य ग्रौर श्रपनी ग्रात्मा ग्रौर राजनैतिक मत के प्रति सच्चा है । सैकड़ों श्रीर हजारों घोखेबाजों, दुश्चिरत्रों श्रीर वेईमान किराये के लोगों में जो ऋपने ऋापको राजनीतिज्ञ ऋौर शास्त्री कहते हैं श्रीर भारतीय रियासतों में बसने वाले लाखीं लोगों को बहकाते हैं, आप शायद ही ऐसे भले आदमी से मिले होंगे जो राजात्रों के विरुद्ध अपनी जन्मजात घृणा श्रीर उग्र कोध के वावजूह कम से कम भारतीय रियासतों के इलाके का अच्छी तरह प्रशासन करने में ईमानदार त्र्यौर विश्वसनीय हो सकता है। इस प्रकार वह सवका भला कर सकता है। मुक्ते श्राशा है कि श्राप मेरी इस बात से सहमत होंगे कि जिन रिया-सतों का प्रशासन अब हम लोग देखते हैं वे अन्त में हमारे शत्रुओं के पास चली जायेंगी । यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम देखें कि जब हम हटें तो शत्रु पत्त के श्रिधिक श्रच्छे, तत्व कायम श्रौर काफी मजवूत रहें ताकि वे राजनैतिक मंच पर छाये रहें। न्यास जयनारायण ही केवल ऐसा न्यिक है ग्रापने हजारों साथियों

ग्रीर सहयोगियों पर काफी प्रमाय डाल सकता है। यदि इन दूसरे लोगों को ग्रापनी मनमानी करने की छूट मिल जाय तो ये राजपूताना के सभी वगों के लोगों के विनाश पर ग्रापना सिंहासन स्थापित करेंगे। चाहे जयनारायण व्यास हमसे सह-मत हो या न हो लेकिन निश्चय ही उसमें जिम्मेवारी की मावना है जो श्रकेली ही एक राजनीतिश को इस बात की प्रेरणा दे सकती है कि वह ग्रापनी देखरेख में रक्खे गये लोगों के प्रति न्यायी हो। चूंकि न तो ग्राप ग्रीर न ग्रापके दूसरे साथी मारवाड़ की रियासत को मेड़ियों के ग्राग फेंकना चाहते हैं, इसिलये ग्राप यह पूरी तरह ग्रानुभव करेंगे कि जब ग्राप शासन की देखमाल करने वाले नहीं होंगे तो उस समय लाखों लोगों की देखमाल के लिये व्यास जयनारायण जैसे श्रेष्ट लोगों की बहुत ग्राधिक ग्रावश्यकता होगी। इन्हीं तकों के समज्ञ में ग्राप से मेरी बात ध्यान से सुनने का ग्रानुरोध करता हूँ। ग्राप ग्रपने सबसे खराब शत्रु जयनारायण व्यास के प्रति ग्रव्हे बनने की भरसक कोशिश करें, उसके लिये या उसके सह-योगियों के लिये नहीं बल्कि निश्चय ही उस इलाके की शान्ति ग्रीर स्थिरता के लिये जो ग्राज ग्रापके द्वारा प्रशासित है।

जैसा त्राप स्वयं जानते हैं व्यास जयनारायण एक बहुत ही साधन-हीन घराने से सम्बन्ध रखता है। इसिलये उसे श्राधिक सहायता की स्थायी रूप से गहरी ग्रावश्यकता रहती है। ग्रपने सहयोगियों ग्रेगर साथियों की तरह वह भूठी धमकी देकर पैसा वस्त्ल करने ग्रथवा ग्रनुचित तरीके से धन लेने में विश्वास नहीं करता। उसका सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही रहा है कि उसके सबसे ग्रच्छे मित्र जिनका वह विश्वास करता है, बहुधा उसे धोखा देते हैं। वह एक बिना सिखलाये हुये ग्रानाड़ी की तरह इन सब धोखों को वास्तविक तथ्य मान लेता है।

× ÷ ×

वह राजनैतिक चालों को सीखने से इन्कार करता है क्योंकि वह बहुत ही कड़ा और साथ ही साथ अपने सट्विवेक या मत के प्रति सचा है। अतः उसे उन लोगों के हाथों कष्ट उठाना पड़ा है जो अपने आप को उसके मित्र कहने का दम भरते हैं। कई बार के थोखे से विवश होकर उसने अपना "अखंड भारत" पत्र बन्द कर दिया है। वह शायद एक लेखक या अभिनेता के रूप में सिनेमा में शामिल होने की सोच रहा है। मुक्ते यह बताया गया है कि वह एक बहुत अच्छा नर्तक और संगीतश है।

जब में सोचता हूँ कि जयनारायण व्यास राजनीति से अलग

होकर सिनेमा में शामिल हो रहा है तो मेरे हृदय में बड़ा दुख होता है। वह मेरा सबसे खराब शत्रु रहा है, इस तथ्य के बावजूद में उसे एक श्रेष्ठ व्यक्ति मानता हूँ। एक दिन अपने अयक प्रयत्नों से वह राजपूताना के इस वंजर इलाके में शांति श्रीर समृद्धि लायेगा। सम्भव है आज हम उसके पतन पर प्रसन्न हों लेकिन वह दिन तेजी से निकट आ रहा है जब हम अनुभव करेंगे कि हमारे हटने पर उत्पन्न रिक्तता को केवल वहीं मर सकेगा।

मैने अपनी स्रोर से फलौदी के एक राय साहब से जो हम दोनों का समान मित्र है, यह अनुरोध किया है कि वह व्यास जयनारायण से सम्पर्क करें स्रौर उसे सिनेमा में शामिल होने से रोकें। इस स्वनिर्मित व्यक्ति द्वारा निराश होकर फिल्म में पूँजी लगाने वालों के हाथों में स्राप्त शापको फैंक देने के विचार मात्र से मेरे मन में विद्रोह पैदा होता है। मैंने उसे स्रार्थिक सहायता भी देनी चाही पर उसने साहस से इन्कार कर दिया। स्रतः मेरे पास इसके सिवाय स्रौर कोई चारा नहीं कि स्रापको लिखने की सोचूं कि स्राप उसका जोधपुर वापस लौटना स्रौर स्रपनी मावी गतिविधियों के लिये वहां बसना सम्भव बना दें। स्रगर उसे जोधपुर में रहने स्रौर स्रपने स्रापको प्रशासन की समस्या से सम्बंधित करने की इजाजत दी जाती है तो यह बहुत ही उपयुक्त होगा।

अपने दृष्टिकोगां को स्पष्ट करने के लिये सम्भवतः सफाई का एक शब्द आवश्यक है। मैं चाहता हूँ कि एक ईमानदार, अपने सद्विवेक के प्रति सच्चे ग्रौर स्वयंनिर्मित व्यक्ति की किसी भी तरह मदद की जानी चाहिये जिससे कि वह अपने आपको राजपूताना के साथ निकट सम्पर्क में रक्खे श्रीर श्रावश्यक घटनाश्रों में जनता का भला कर सके । मैं चाहता हूँ दिः मैं व्यास जयनारायण को पकड़ पाता श्रीर उसके साथ श्रकेते में राजपूताना के बालू के टीलों पर बैठ कर ऋलगरों छोर सभा छों में उसने मुके जो गालियाँ निकाली हैं उनके बारे में दिल खोल कर उससे बात करता। चाहे हम असहमित के लिये सहमत हों या सहमित के लिये असहमत हों पर एक दूसरे से विपरीत जाने वाले मार्ग पर खड़े होकर भी हम किसी न किसी तरह यह श्रनुभव करेंगे कि चाहे हमारे मन में भ्रम श्रीर जवरदरा गलत धारणायें हों हम दोनों अपने अपने तरीके से लाखों लोगों का कल्याण श्रीर सामाजिक मलाई करना चाहते हैं। यह सच है कि हम दोनों भिन्न प्रकार के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन यह मानने का कोई कारण नहीं कि यदि हितों का संवर्ष हो तो एक प्रकार के हित विलक्कल मिटा दिये जाय।

ग्रतः में ग्रापको सुमाव देता हूँ कि व्यास जयनारायण की गति-विधियों के लिये एक उदार दृष्टिकोण ग्रपनाया जाय, विशेषतः ऐसे समय जबिक ग्रपनी ग्राधिक किठनाइयों के कारण वह इतना दुखी है। उसे जोधपुर ग्राने ग्रोर प्रशासन की जिम्मेदारी में माग लेने की मी छूट दी जानी चाहिये। ग्राप भारत में एक प्रजातांत्रिक देश के प्रतिनिधि हैं। ग्रापको हमेशा ग्रपने शतुग्रों का भी गर्व होना चाहिये। यदि वे ग्रात्महत्या भी करना चाहें तो ग्रापको ऐसा नहीं करने देना चाहिये। में कहता हूँ कि वह लाभप्रद सिद्ध होगा। ग्रपने विरोधी की सहायता करके ग्रापको कर्मा ग्रफसोस नहीं करना पड़िंगा क्योंकि ग्राप जानते हैं कि ग्रापके जाने के बाद वहीं बच्चेगा ग्रौर राजनीति में एक ग्रधिक महत्वपूर्ण भाग ग्रदा करेगा।

जोधपुर स्थित पश्चिमी राजपूताना की रियासतों के रेजीडेंट को बीकानेर मन्त्री परिषद के राजनैतिक सदस्य द्वारा सतलज नहर योजना के बारे में ता॰ २-२-१९१६ को भेजे गये पत्र संख्या ३३० सन् १९१६ का ग्रांश ।

- १०. भावलपुर राज्य द्वारा प्रस्तुत किये गये सन् १६१४ श्रीर १६१५ के वर्णन निसंदेह काफी लम्वे हैं लेकिन इस सब के वावजूद बीकानेर दरबार ऐसा महसूस करते हैं कि ये सारे तर्क जो बीकानेर को पूरी तरह श्रीर हमेशा के लिये सतलज नहर योजना में भाग लेने से श्रालग रखने के लिये प्रस्तुत किये गये हैं, श्रीर वास्तव में इन प्रतिवेदनों का श्रासली लच्य यही है, चार भागों में बाँटे जा सकते हैं:—
- ऐसा करना इंग्लैंड ग्रीर ग्रमेरिका में मालिकों से सम्बन्धित नदी तट सम्बन्धी कानून के विपरीत होंगा ।
- २. पंजाव सरकार की योजनाएं हानिकारक हैं और गलत निष्कर्षों पर आधारित हैं।
- ३. भावलपुर का एक वड़ा इलाका जिसे पंजाब के इंजीनियरों ने सिंचाई के लिये ऋनुपयुक्त वताया है, वास्तव में सींचे जा सकने योग्य है।
- ४. ग्रतः हेडवर्क्स नदी के श्रीर भी नीचे की ग्रीर ले जाया जाय ताकि बीकानेर को ग्रलग करके नदी का सारा ग्रितिरिक्त जल भावलपुर के उपर्युक्त इलाके को मिल जाय।
- ११. पहले तर्क के सम्बन्ध में यह बात ध्यान देने की है कि बार वार इसका उल्लेख करके भी भावलपुर राज्य ने इस बात पर वास्तविक विचार विमर्श करने से अपने को अलग रक्खा है। ऐसा उन्होंने समभ-दारी से किया है क्योंकि उनके तर्क निश्चय ही अर्थंहीन हैं और किसी तथ्य के सुदृढ़ आधार पर स्थित नहीं हैं। वास्तव में हम भारत की स्थितियों को हल कर रहे हैं न कि इंग्लैंड या अमेरिका की। अंग्रेजी कान्त की पाठ्य पुस्तकों से उद्धरण देना और उन्हें भारत की भृत या वर्तमान में प्रचलित ज्यवहारिकता पर लागू करने का प्रयत्न न करना उचित नहीं है। इन उद्धरणों से भावलपुर राज्य

यह निष्कर्ष निकालना चाहता है :--

(१) भारत में नदी तट के मालिकों के लिये ऐसा कानून व्यवहार में है।

मालिकों के लिये नदी तट सम्बन्धी यह कानून बड़ी नदियों ग्रीर सिचाई (२) की योजना के मामले में भी लागू होगा। यह इंग्लैंड में, अमेरिका में या इस देश में, राज्यों में विवाद होने पर भी लागू होगा । ऐसा एक भी उदा-हरण नहीं दिया गया है जिसमें मालिकों से सम्बन्ध नदी तट सम्बन्धी श्रंग्रेजी कातृत भारत में लागू किया गया हो। इस प्रकार के किसी निर्ण्य का इस देश के सभी रीति रिवाज ग्रीर व्यवहार द्वारा पूर्ण विरोध किया जायेगा । पंजाव में साधारण छोटे मालिकों का उदाहरण लीजिये । छोटी पहाडी घारात्रों से सिंचाई का श्रधिकार क्या केवल उन्हीं मालिकों तक सीमित है जिनकी भूमि नदी के तले के पास है ? नदी तट से दूर मालिक क्या अनन्त काल से नदी तट के मालिकों के साथ सिंचाई का समान अधिकार नहीं भोग रहे हैं। एक और उदाहरण पंजाव में शाहपुर निजी नहरों का दिया जा सकता है। ये नहरें भेलम नदी से निकाली गर्यी हैं श्रीर शायद एक या दो श्रपवादों के उनके विभिन्न मालिकों की उस नदी के तट पर कोई जमीन नहीं है। तो भी नदी तट से दूर उन मालिकों द्वारा िंचाई के लिये दूसरे मालिकों को पानी वेचने के अधिकार को कमी चुनौती नहीं दी गयी है । बताया गया है कि ब्रिटिश सरकार ने यह सिदांत मान लिया है कि यदि उनके इस ग्रधिकार को कोई हानि पहुँची तो उनको मुळावजा दिया जायेगा।

यदि मालिकों के नदी तट सम्बन्धी श्रंग्रेजी कान्न को इस देश की बड़ी निदयों पर लागृ किया गया तो एक भी सरकारी सिंचाई योजना ऐसी न होगी जिस पर सफलता से एतराज न किया जा सके । यदि नदी तट के मालिक श्रपनी हानि सोचकर नदी से दूर की भूमि के लिये पानी निकालने से सदा इन्कार कर सकते श्रीर उस पानी को उन व्यक्तियों को वचने से इन्कार करते जिनका नदी पर कोई दावा नहीं है श्रीर यदि यह कान्न कड़ाई से लागू किया जाता तो पंजाब में एक भी नहरी बस्ती नहीं हो सकती थी ! श्रगर यह कान्न इस देश में नदी तट के मालिकों पर लागू नहीं होता तो यह तर्क कैसे दिया जा सकता है कि इसे नदी तट की रिया-सतों पर लागू किया जाय १ ये रियासतें सम्भवतः श्रपने श्रापको कान्नी हिष्ट से श्रकेली मालिक समभती हैं । जब ब्रिटिश सरकार ने इसी सतलज नदी की सरहिन्द नहर से फुलिकियाँ रियासतों श्रीर फरीदकोट को, जो नदी तट वाली रियासतें नहीं हैं, पानी दिया तो ऐसा कोई दावा नहीं किया गया।

फिरोजशाह के समय से बीकानेर के उत्तर पूर्व कोने का एक छोटा माग पश्चिमी यसुना नहर से सींचा जाता रहा है। यदापि अब इससे सींचा जाने वाला चेत्र बहुत ही कम— केवल ४६० एकड़ है लेकिन यह बात पहले कभी नहीं सुनी गयी कि बीकानेर नदी तट वाली रियासत नहीं है ग्रातः उसे इस पानी का उपयोग करने से रोका जाना चाहिये। सुगल बादशाहों ने बिना नदी तट वाली रियासत जिन्द को भी पश्चिमी यसुना नहर से पानी दिया। वास्तव में नदी तट सम्बन्धी अंग्रेजी कानून जैसा कोई कानून भारत में नहीं है। वास्तव में सन् १६१५ के भावलपुर के प्रतिवेदन के पैरा ४३ (११) (बी) ग्रीर (सी) से ऐसा लगता है कि भावलपुर राज्य यह मानने को तैयार है कि इस देश में पहले कभी न तो ऐसा कानून सुना गया ग्रीर न लागू किया गया। लेकिन शायद वह यह, वहने को तैयार है कि भारतीय रियासतों पर भारतीय रिवाज या कानून लागू न किये जांय चिक इंग्लैंड या किसी ग्रीर जगह का कोई ऐसा कानून लागू किया जाय जो कि उनको श्रपनी बात के लिये सुविधाजनक लगे। ऐसी धारणा के लिये किसी उत्तर की ग्रावश्यकता नहीं है।

१२. भारत में अनन्तकाल से सर्वोच्च सत्ताधारी ही हमेशा भार-तीय निदयों के सारे जल का स्वामी रहा है। ब्रिटिश साम्राज्य भारत का अधिपति होने से इस कर्तव्य से वंधा हुआ है कि वह उस जल का उपयोग ऐसे तरीके से करे जो भारत के हितों के लिये सबसे अधिक लाभदायक हो और जो विभिन्न हितों को सबसे अधिक फायदा पहुँचाये। उत्तरी भारत नहर और नाली कानून प्रस् १८७३ की भूमिका में अंग्रेज सरकार की स्थिति ठीक प्रकार से समकायी गई है। यह इस प्रकार है:—

"जहाँ यह कानून लागू है उस सारे इलाके में सरकार को प्राकृतिक घाराओं में वहने वाली सारी निदयों श्रीर फरनों के तथा रिथर पानी के अन्य प्राकृतिक भएडारों और सारी भीलों के जल को सार्वजिनक कामों के लिये काम में लाने और नियन्त्रण करने का अधिकार है। इन इलाकों में सिंचाई, जहाजरानी और नालियों से सम्बंधित कानून में संशोधन करना उचित है।"

इस कानून के भाग ५ में स्थानीय सरकार को यह ग्राधिकार दिया गया है कि वह कानून वनाकर उक्त पानी का उपयोग कर सकती है।

यह इस देश का कान्त है। इस कान्त के ऋतिरिक्त इस देश

में प्राचीन रिवाज है जिसे "सारोवापियाना" कहा जाता है। इसमें नदी तट से दूर व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह किसी धारा के जल का किसी भी रूप में प्रयोग करे। सर्वोच्च सत्ताधारी की मान्य जिम्मेवारी और कर्तव्य के अतिरिक्त यही प्राचीन रिवाज है जिसने अंग्रेज सरकार को कान्त बनाने का अधिकार दिया। बीकानेर राज्य तत्परता से और पूरी तरह से सहमत है कि सतलज नदी का पानी प्राप्त करने के लिये मावलपुर को पूर्ण विचार करने के लिये कहने का अधिकार है लेकिन इतना अधिक स्वीकार करके भी हम एक ज्ञुण के लिये भी नहीं मान सकते कि भावलपुर राज्य को जहाँ इस पानी की सबसे अधिक आवश्यकता है, उसे देने से अधिपति सत्ता को रोकने अथवा बीकानेर को हमेशा के लिये सिंचाई के लाम से बंचित करने का कोई अधिकार है।



६३, वालीगंज सर्कु लर रोड, कलकत्ता २५ फरवरी, १९१२

प्रिय महाराजा साहब,

में श्रापके पहले पत्र का उत्तर दूँ उससे पहले ही मुक्ते दूसरा पत्र लिखना वास्तव में श्राप की बहुत ही भलमनसाहत है। लेकिन तथ्य यह है कि इस मास के श्रारम्भ से ही मेरे स्वास्थ्य से मेरे डाक्टर को बहुत श्रिषक चिन्ता हो रही है। १५ दिन पहले वह मुक्ते सारा काम तुरंत रोकने श्रीर इलाज के लिये तुरन्त फ्रांस के दिल्ए में जाने की श्राज्ञा देने की सोच रहा था। गत १४ वर्षों से में मधुमेह से पीड़ित हूँ। श्रव तक इस की शिकायत तुलनात्मक रूप में साधारण रही। इस मास एकाएक उसने श्रिषक गम्भीर रूप धारण करने का भय उत्पन्न कर दिया। पर श्रव में पहले से ठीक हूँ श्रीर मेरे स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार हो रहा है। केवल डाक्टर ने मुक्ते इस बात से बांध दिया है कि मैं बहुत निश्चित श्रीर नियमित घंटों के श्रंतर से भोजन करूं। उसने मेरे काम की सीमा भी श्रिषक से श्रिषक ६ घंटे प्रतिदिन, जिसमें पत्र व्यवहार भी शामिल है, बाँध दी है। यह सोमा जल्दी ही श्रा जाती है श्रतः मुक्ते श्राशा है कि मुक्ते श्रापको पत्र लिखने में जो देर हुई है उसके लिये श्रीमान स्वमा करेंगे।

त्रापने राजात्रों त्रीर प्रधानों को जो सकु लर पत्र ग्रीर तार भेजे, उनके उत्तरों की प्रतिलिपियां तथा श्रीमान ने वाइसराय की जो पत्र लिखे उनकी प्रतिलिपियां त्रापने कृपा कर मुक्ते भेजों इसके लिये ग्रानेक धन्यवाद। में ग्रापसे सहमत हूँ कि ग्रान्दोलन पूर्ण सफल रहा, में सोचता हूँ कि हमें संतोष ग्रान्य करने का कारण है कि इसका उद्धाटन करके हमने ग्रापने देश के लिये शुभ कार्य किया है। इस मामले में हमारे सहयोग की स्मृति रूप में क्या में ये प्रतिलिपियां ग्रापने पास रख सकता हूँ ?

जब त्राप यहां थे तो त्रापने एक से अधिक वार यह इच्छी प्रकट की कि मैं वाइसराय के त्रीर भी निकट सम्पर्क में ग्राऊँ ताकि वे मुक्ते श्रीर ग्रिधिक ग्रच्छी तरह से समम्मने में समर्थ हो सकें। ग्राप द्वारा प्रकट इस इच्छा को में हर्ष ग्रीर कृतज्ञता से समरण करता हूँ। उस दिशा में जाने

के लिये ग्रामी एक घटना हुई है । मैं इसे इस पत्र में इस लिये लिख रहा हूँ क्योंकि में श्रनुभव करता हूँ कि श्रीमान इसे जानना चाहेंगे । मुसलमानों के एक प्रतिनिधि मण्डल के सामने ढाका में वाइसराय ने यह घोषणा की कि भारत सरकार ने ढाका में एक ज्ञलग विश्वविद्यालय बनाने के लिये राज्य मन्त्री से सिफारिश करने का निर्णय किया है। इससे शहर में बड़ी उरोजना फैली। ग्रलग विश्वविद्यालय के विचार से इतनी उत्तेजना नहीं फैली जितनी उस रहस्यात्मक ढंग से जिसमें सारी बात छिपी हुई लगती थी। श्राखबारों ने पहले बताया कि प्रतिनिधि मण्डल की मुलाकात ग्राप्त है। इससे यहां के हिन्दुओं में ग्राशंका उत्पन्न हुई क्योंकि इससे मामला ऐसा लगा मानो सरकार ग्रौर मुसलमानों के बीच एक समभौता हो रहा हो। वाइ-सराय ने जो कुछ किया था उसका तुरन्त चारों ख्रोर से तीव विरोध हुआ। इस जगह के एंग्लो-इंडियन जो राजधानी वापस दिल्ली ले जाने के लिये वाइसराय से बहुत नाराज हैं, तुरन्त इस स्थिति का लाभ उठाने लगे। उन्होंने हिन्दु जाति से प्रस्ताव किया कि दोनों जातियों द्वारा मिलकर वाइसराय की उच्छं-खलता का विरोध किया जाय और राज्य मन्त्री को आवेदन किया जाय कि वाइसराय को वापस बुला लिया जाय । यह खेल लगभग सफल हो चुका था क्योंकि यहां भारतीय नेतास्रों ने कल स्थारित २४ फरवरी को टाउन हाल में वाइसराय के विरुद्ध एक बड़ा प्रदर्शन करने का प्रबन्ध आरम्भ कर दिया था। इसके बाद सारे वगों की एक सार्वजनिक समा होनी थी जिसमें बाइसराय के ऋनियंत्रित शासन का विरोध किया जाना था । इस स्थिति पर गम्भीरता से विचार करने के लिये जब मैं ग्रीर सर लारेंस जैनकिंस मिले तो मामला अन्धकारमय लगा । हमारा उद्देश्य यह मालूम करना था कि इस कठिनाई से बचने का क्या कोई उपाय नहीं हो सकता। हमारी बातचीत के श्रन्त में सर लारेंस ने मुक्त पर बहुत दबाव डाला कि मैं वाइसराय से मुलाकात के लिये समय मांगूं और जैसा हमने सोचा कि हमें जो २ ज्ञात होना चाहिये वह हरएक चीज उनके सामने रक्खूँ। लेकिन मैंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। मुफे उसी भावना ने रोका जो में श्रीमान को, जब श्राप यहां थे, वता चुका था। पर मैंने डी॰ एन॰ बोनले, जिन्हें मैं वस्बई में जानता या श्रीर सर गाई फ्लीटबुड विल्सन, जो मेरे घनिष्ट मित्र हैं, से मिलने की वात मान ली । इसके अनुसार में डी॰ एन॰ बोनले से उनके कार्यालय में मिला। मेंने उन्हे प्रभावित लोगों को अपना मत प्रकट करने का मौका दिये विना महत्वपूर्ण निर्णयों की घोषणा का ग्रानीचित्य जोर देकर बताया । मैंने उन्हें यह भी वताया कि ढाका के मामले पर बंगाली कितने उत्तेजित हैं श्रीर

किस प्रकार उनमें और एंग्लो-इंडियन जाति में बाइसराय के विरुद्ध एक समभौता होने ही वाला है। इससे वाइसराय के विरुद्ध एक ऐसा त्कान उठेगा जैसा लार्ड रिपन के समय से नहीं देखा गया । लगभग १० मिनट त्तक डी॰ एन बोनले ने मेरो बात बिलकुल खामोशी से सुनी। तब वह एकाएक खड़ा हुन्रा। उसने मुफसे कहा कि न्राधि मिनट के लिये मुफे चमा करो । वह वाइसराय के कमरे में चला गया श्रीर जब वह लौटा तो उसने मुफे महान् त्राश्चर्य में डालते हुये कहा-- 'मि॰ गोखले, त्राप जो कुछ मुक्ते कह रहे थे क्या वही सब न्नाप जाकर वाइसराय के सामने दोहरा देंगे १ मेरे पास आपको देने के लिये कोई जबाब नहीं है क्योंकि में आपसे सहमत हूँ। में सोचता हूँ वे बहुत जल्दबाज हैं।' खैर, इसके वाद मेरे पास इसके सिवा कोई चारा न रहा कि मैं वाइसराय के कमरे में जाऊँ ऋौर सारा मामला उनके सामने प्रस्तुत करूँ। मेरे प्रति उन्होंने वड़ा सद्व्यवहार दिखाया स्त्रीर हममें स्त्राधे घएटे तक अच्छी तरह बातचीत हुई । उन्होंने मुभे स्पष्ट रूप से बताया कि इस नये विश्वविद्यालय की स्थापना करने की इच्छा के पीछे वास्तविकता क्या यी। मैंने उन्हें वे सारे एतराज बताये जो इस तरह ग्रापनाई गई पद्धति के विरुद्ध थे। ग्रन्त में मैंने उन्हें बताया कि वे इस विषय पर तुरन्त एक स्पष्ट ग्रौर सान्त्वना देने वाली घोषणा करें। उन्होंने कहा कि उनका विचार १६ मार्च को ऐसी घोषणा करने का है जन्नकि कलकत्ता विश्वविद्यालय का दीन्रांत समारोह होगा। मैंने उन्हें बताया कि तत्र तक तो बहुत देर हो चुकी होगी क्योंकि उस समय दुषप्रभाव को मिटाना संभच न होगा । मैंने उनसे पूछा कि यदि इस विषय में एक प्रतिनिधि मंडल का उन से मिलने का प्रवंध किया जाय तो क्या वे उससे मुलाकात करेंगे । उन्होंने तुरन्त इस विचार का खागत किया श्रीर कहा कि यदि इस तरह निमूल स्त्राशंकास्त्रों को हटाने का उन्हें मौका मिले तो वे बहुत प्रसन्न होंगे । श्रन्त में उन्होंने मुफे बताया कि यदि प्रतिनिधि मएडल आया तो वे उसे क्या कहेंगे। तब एक से अधिक वार उन्होंने कहा कि वे मेरे इस विचारपूर्ण हस्तत्त्वेप की बहुत सराहना करते हैं ग्रौर इंसके लिये बहुत कृतज्ञ हैं। बाद में उन्होंने मेरे हस्तचेष के बारे में सर गाई विल्सन से भी यही शब्द कहे। उसी दिन शाम में कुछ वंगाली नेता थ्रों से मिला । तुरन्त एक प्रतिनिधि मण्डल का प्रवन्ध किया गया । श्रीमान् ने यह कार्यवाही ऋखवारों में पढ़ीं होगी। उसके वाद स्थिति काफी सुधर गयी है। यद्यपि कुछ वंगाली हल्कों में अभी काफी कड़वाहट है पर वाइसराय के विरुद्ध व्यक्तिगत भावना, जहां तक हिन्दू जाति का सम्बन्ध है, प्रायः पूरी तरह से मिट चुकी है।

मैंने घटना का विवरण कुछ विस्तार से दिया है क्योंकि मैं ग्रानुभव करता हूँ कि श्रीमान यह सब जानना चाहेंगे। इस मामले में पड़ने का मेरा मुख्य उद्देश्य भारतीय जनता को एक गम्भीर गलती करने से ग्रीर याइसराय को कम या ग्राधिक हमारे विरुद्ध होने से रोकना था। वाइसराय के साथ मुलाकात विलकुल ग्रापूर्वचितित थी। लेकिन ग्राव मुक्ते खुशी है कि यह मुलाकात हुई।

विश्वास करता हूँ कि श्रीमान बिल्कुल ठीक होंगे । ससम्मान,

त्रापका जी॰ के॰ गोखले

पुनश्चः नया श्राप कृपा करके उस सजन से कहेंगे जिसे श्राप के॰ पी॰ (मुक्ते श्रफ्तांस है कि मैं उसका नाम भूल गया हूँ) नाम से सम्बोधित करते हैं कि वह मेरी 'इंडिया लिस्ट' की प्रति, जो मैंने उसे यहां दी थी, लौटा दे १ ऐसे छोटे मामले में श्रीमान को कब्ट देते हुये मुक्ते श्रफ्तांस होता है लेकिन श्रागामी श्रार्थिक वहस के सम्बन्ध में कुछ निर्देश के लिये मुक्ते उस पुस्तक की जरूरत है। यहां कहीं यह पुस्तक मुक्ते नहीं मिल सकती, यद्यपि मैंने उसकी एक प्रति पाने की पूरी कोशिश की।

महाराजा गंगासिंह द्वारा लालगढ़ पैलेस बीकानेर से ता॰ ६ जुलाई १६३१ को महात्मा गाँघी, मिण्मवन, लबुरनाम रोड, बम्बई, को मेजा गया पत्र ।

श्रापके ७ तारीख के पत्र के लिये धन्यवाद । १० जून को जत्र मुफे वम्बई स्थित अपने निवास पर आप से मिलने का सौभाग्य मिला उस समय आपने जो मुफे बताया उस बारे में मेरी ओर से कोई गलतफहमी नहीं रही है । मैं अञ्च्छी तरह से समफ गया कि इंग्लैंड जाने के बारे में आप के लिये कोई निश्चित निर्णय करना सम्भव न था। इन परिस्थितियों में मैंने आपको जहाज में एक खाली कमरा देने और उसे आपकी सुविधा पर छोड़ने की जो बात कही थी उसे आप निश्चित रूप से नहीं मान सके। यह कमरा मैंने अस्थाई रूप से प्राप्त किया था।

इसके साथ ही आपको याद होगा मैंने आप पर इस बात के लिये बहुत जोर दिया या कि हमारे देश के हित में यह आवश्यक है कि गोलमेज सम्मेलन और संध-निर्माण समिति में काँग्रेस का प्रतिनिधित्व हो और आप वहां उपस्थित हों । मैंने आपको इस बात की आवश्यकता भी बताई थी कि आप अपने लिये और अपने दल के लिये स्थाई रूप से जहाज पर स्थान प्राप्त कर लें अन्यथा स्थान पाने में बहुत कठिनाई होगी क्योंकि समुद्र मार्ग से जाने वालों की बड़ी भीड़ है और "मुल्तान" एक आस्ट्रेंश्लियन जहाज है ।

यह अनुभव करके कि निश्चित रूप से जहाज पर स्थान सुरिच्चत करवाना अभी समय से पूर्व होगा, अतः, आप को याद होगा, मैंने एक खाली कमरा आपको देने की बात कही थी। मैंने आपको रसोई के लिये भी प्रवंघ की वात कही थी। मैंने जो आपको वचन दिया था उसी के अनुसार मैंने ऐसा अस्थायी प्रवंघ किया और आपको लिखा।

त्रातः मैं त्रापको विश्वास दिलाता हूँ कि इसमें मुक्ते कोई तकलीफ नहीं हुयी । मुक्ते तो जो कुछ मैं कर सका उसे करके अत्यधिक खुशी हुयी क्योंकि यह काम मैंने ऐसे व्यक्ति के लिये किया जिसे, मैं आशा करता हूँ, अब मुक्ते अपना निजी मित्र कहने का सीमाग्य मिलेगा । मुक्ते केवल यही आशंका है कि वाद में आपको जहाज में स्थान पाने में कठिनाई अनुभव होगो। मुक्ते इस बात का और भी अफसोस है कि अब भी आपका इंग्लैंड जाना निश्चित नहीं है यदि इसे सीमा उल्लं- घन न समका जाय तो मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि देश के हित में आप इस मामले पर और भी विचार करें। निसंदेह आप इस पर विचार कर रहे हैं। सौभाग्य से शायद अन्त में आपके लिये इंग्लैंड जाना और संव निर्माण समिति तथा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना सम्भव हो कके।

श्रापने मेरे पोते के बारे में, जो बीमार था, पूछा उसके लिये श्रापको श्रनेक धन्यवाद । मैं कृतज्ञता से यह कहना चाहता हूँ कि वह श्रव स्वस्थ है श्रीर मेरे सभी पोते पोती श्रगले सप्ताह यहां श्रा रहे हैं।

त्राशा है त्राप स्वस्थ होंगे। मुफे इस बात की ग्रीर भी श्रधिक त्राशा है कि मुक्ते "मुल्तान" पर त्रापके साथ यात्रा करने का त्रानन्द मिलेगा।

> भवदीय गंगासिंह

महाराजा गंगासिंह द्वारा ३८ नेपियन सी रोड बम्बई से ता० ४८-७-१६३१ को महारमा गाँधी को भेजा गया निजी पत्र ।

श्रापको याद होगा कि १० जून को मुक्ते श्राप से मिलने का सौभाग्य मिला तो मैंने श्राप से खुलकर श्रीर लग्नी बातचीत की। मैंने इससे बहुत श्रानन्द प्राप्त किया। उस समय श्रापने मंजाक में मुक्ते "मित्रों के लिये समुद्री यात्रा का श्राम प्रवन्धक" कहा। पर श्राधिक काम होने के कारण श्रीर श्रपने पोते पोतियों से, जिनमें एक वीमार है, मिलने के लिये श्रावू पहाड़ पर जाने के कारण मैं श्रापको पहले नहीं लिख सका। मुक्ते डर है कि श्राप शायद सोचें कि मैं श्रापके लिये मुल्तान जहाज पर स्थान प्राप्त करने श्रीर श्रापकी रसोई के प्रवन्ध करने के सहायता देने के बारे में श्रपने वचन को बिलकुल भूल गया हूँ।

उसी दिन शाम मैंने अपने मास्टर आफ हाउस होल्ड को आदेश दे दिया था और वह जाकर जहाज के प्रधान अधिकारी और हमारे यात्रा एजेंट मेसर्स काक्ष एन्ड किंग्स, होर्नवी रोड बम्बई से मिला । फलस्वरूप १५ अगस्त को छूटने वाले मुल्तान जहाज के ए डेक पर एक प्रथम श्रेगी के दो वर्ध वाला कमरा आर्द्तित हो गया है। इसी प्रकार आपके अलग भोजन बनाने का भी विशेष प्रबन्ध कर दिया गया है। इसके लिये डेक पर जगह सुर्द्तित कर दी गयी है जो जहाज छूटने से पहले आपके रसोइये को दिखा दी जायेगी। यदि आप चाहें तो एक तेल का चूल्हा भी दे दिया जायेगा।

श्रापके साथ जो श्रापके सिचव श्रीर नौकर श्रायेंगे उनके लिये श्रातिरिक्त स्थान प्राप्त करने के लिये क्या मैं श्रापको याद दिलाऊँ १ मुक्ते याद है कि मुल्तान में जगह के लिये बहुत श्राधिक मांग होने के कारण मैंने श्रापको इस मामले में श्राविलम्ब कार्यवाही करने की श्रावश्यकता बताई थी । यह बात में श्रापको याद दिलाने के लिये लिखता हूँ । मैं श्राशा करता हूँ कि श्राप पहले ही ऐसा कर चुके होंगे । यदि नहीं तो श्राप एजेंट श्रथवा जहाज के मुख्य श्राधिकारी को श्रपने दल के लोगों के नाम सीवे लिख हैं । उन्हें साधारणतयः श्रपनी सूची के लिये इन नामों की श्रावश्यकता होती है ।

श्रमी मैं यहाँ कुछ ब्रिटिश भारतीय मित्रों श्रीर भोपाल के नवाव

से मिला। इनकी तरह मैं भी पूर्ण आशा करता हूँ कि आप मुल्तान से यात्रा करने में समर्थ होंगे। इससे मार्ग में हम अपने आपको आगे जो संघ निर्माण समिति और गोलमेज सम्मेलन का कार्य है उसके लिये तैयार कर सकेंगे।

ग्रापकी जानकारी के लिये मैं जहाज के नक्शे की एक प्रतिलिपि इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ । मैं ग्राज रात बीकानेर के लिये रवाना हो रहा हूँ । मैं ग्रापको सुकाव दूँगा कि ग्राप ग्रज एजेंट ग्रथवा जहाज के मुख्य ग्रधिकारी से सीधा सम्पर्क करें । यदि मैं यहां रहता तो ग्राप की किसी तरह की मदद करके मुक्ते बहुत खुशी होती ।

श्राशा है श्राप स्वस्य होंगे। जलदी में,

मबदीय गंगासिंह

महाराजा सादूलसिंह जी को प्राप्त सम्मानों, उपाधियों और पदकों की सूची।

٤.	ग्रानरेरी लेफ्टनेंट कर्नल बनाये गये			
₹.	न्त्रानरेरी मेजर जनरल बनाये गये	१९४५		
₹•	१६३६-४५ स्टार	१९४५		
٧.	बर्मा स्टार	१९४५		
પ્ર.	सुरचा पदक	१९४५		
ξ.	युद्ध पदक	१९४५		
७.				
	जेरसलम	१९४५		
⊏.	जी॰ सी॰ ग्राई॰ ई॰ बनाये गये	१९४६		
•3	लेफ्टिनेंट जनरल बनाये गये	१६४६		
१∘.	जी॰ सी एस॰ ऋाई॰ बनाये गये	8E.R.C		

भ्तपूर्व बीकानेर रियासत के कुछ अफसरों के नामों की सूची जो राजस्थान संय बनने पर विभागाध्यच अथवा ऐसे ही वरिष्ठ पदों पर नियत किये गये।

- श्री के॰ एम॰ पन्निकर, प्रधान मन्त्री बीकानेर । बाद में चीन में राजदूत बने ।
- २. कुँवर जसवन्ततिंह, दाउदसर, वीकानेर के प्रधान मन्त्री। बाद में राजस्थान विधान सभा में विरोधी दल के नेता बने।
- श्री सी॰ एल॰ कपूर, मैनेजर बीकानेर स्टेट रेलवे । राजस्थान रेलवे के जनरल मैनेजर हुये ।
- ४. डाक्टर एस॰ के॰ मेनन, प्रिंसिपल मेडीकल आफीसर, बीकानैर । मेडिकल कालेज जयपुर के प्रिंसिपल और प्रिंसिपल मेडिकल आफीसर बने ।
- ५. मेजर जनरल जयदेवसिंह, वीकानेर रियासत की सेनाग्रों के जनरल श्राफी-सर कमांडिंग। राजप्रमुख, जो राजस्थान राज्य सेनाग्रों के सर्वोज्च सेना-पति भी थे, के नीचे सबसे वरिष्ठ सैनिक ग्राफसर बने।
- श्री कन्हैयालाल सांधी, वित्त सचिव बीकानेर । राजस्थान सरकार के वित्त सचिव हुये ।
- ७. श्री एम॰ यू॰ मेनन, महाराजा सादूलसिंह के निजी सचिव । राजस्थान सरकार के एकीकरण सचिव बने ।
- लाला कामता प्रसाद, सचिव रसद विभाग बीकानेर । राजस्थान सरकार के पुनर्वास विभाग के संचालक बने ।

महाराजा सादूलसिंह द्वारा बीकानेर हाउस आ़बू से ता॰ १८-६-१९४७ को महारमा गाँधी को भेजा गया पत्र ।

मुक्ते अखबारों से पता चला है कि आप थोड़े ही समय के बाद काश्मीर जाने वाले हैं। मुक्ते पूर्ण आशा है कि अपनी सदा की युक्ति और दूरदर्शिता से आप काश्मीर सरकार और रियासत के सम्बन्धित राजनैतिक दलों के बीच एक संतोषजनक समभौता कराने में समर्थ हो सकेंगे। इससे वहाँ का राजनैतिक गतिरोध हल होगा और स्थिति सुधरेगी।

श्राप जैसे संसार के गहरे श्रनुभवी व्यक्ति को सुमाव देना मेरे लिये एक साहस की बात होगी। काश्मीर के महाराजा को मैं बहुत वर्षों से जानता हूँ। उनके प्रति मेरे मन में सच्चे प्रेम श्रीर श्रादर की भावना है। उनका महान् हितैषी होने के कारण मैं भी इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करता रहा हूँ। इसके श्रितिरिक्त श्रपनी मातृभूमि के प्रति देश मिक्त की भावना ने भी मुक्ते प्रेरित किया कि मैं इस गतिरोध को मिटाने के लिये एक गम्भीर प्रयत्न करने का सुभाव दूँ।

इसे इल करने के लिये एक सम्भव तरीका मेरे दिमाग में आया है। यह कितना ठीक है इस पर विचार करने के लिये इसे मैं आपके सामने रखता हूँ। काश्मीर की असली स्थित में नहीं जानता। लेकिन विभिन्न गैर सरकारी सूत्रों से मैं जो कुछ जान पाया हूँ उस पर विचार करने पर मुक्ते ऐसा लगता है कि शेख अन्दुल्ला ने जो "काश्मीर छोड़ो" की पुकार और प्रचार आरम्भ किया था, सम्भव है कि वह न तो इसे छोड़ना चाहे और न माफी माँगना चाहे। आचार्य कुपलानी और दूसरे जिम्मेवार नेताओं ने काश्मीर के लोगों और नेशनल कांक्रों से के कार्यकर्ताओं को खुले रूप में सलाह दी है कि वे "काश्मीर छोड़ो" का नारा त्याग दें और काश्मीर के महाराजा की देखरेख में उत्तरदायी सरकार के रूप में वे काम करें। सेशन जज के सामने अपने मामले की सुनवाई के समय शेख अन्दुल्ला ने भी कहा बताते हैं कि "काश्मीर छोड़ो" की मांग खुद महाराजा के विरुद्ध नहीं थी। आरम्भ में उसने जो स्थित अपनायी थी, इन परिस्थितियों में यदि वह उससे हट सकता है तो और भी अन्छा हो, अन्यया समभीते का एक सम्भव तरीका यह होगा कि दोनों पन्न बीती वातों को भुलाने के लिये सहमत हो जाँय और पहले

तो बुद्ध हो चुका है उसे फिर श्रारम्म न करें। लेकिन शेख अन्दुल्ला को यह वचन देना होगा कि भविष्य में वह "काश्मीर छोड़ो" श्रान्दोलन से कोई मतलव नहीं रक्खेगा। उसे इस बारे में भी श्रावश्यक उचित श्राश्वा-रान देना होगा कि वह काश्मीर के महाराजा श्रीर राजधराने के प्रति स्वामिनभित्त श्रीर राजभित्त रक्खेगा। सम्भव है इससे काश्मीर रियासत के श्रिध-कारियों के लिये शेख अन्दुल्ला श्रीर दूसरे राजनैतिक कैदियों को छोड़ना सम्भव हो सके श्रीर एक नया श्रध्याय श्रारम्भ हो सके।

इस च्रण संकट का जैसा समय है श्रीर विशेषतः काश्मीर में जंसी रियति है उसकी माँग है कि जिना श्रीर श्रिष्ठक समय वर्बाद किये काश्मीर में एक समकीता कराया जाना चाहिये। यदि दोनों पच्च एक प्रेम पूर्ण समकीते पर पहुँचने की वास्तविक इच्छा से समस्या को लें तो मुक्ते इसमें कोई संदेह नहीं कि श्रापकी मध्यस्था से हल सम्भव हो सकेगा।

लेकिन में यह वात स्पष्ट करना चाहता हूँ कि इस मामले पर महाराजा काश्मीर या उनके प्रधान मन्त्री से विचार विमर्श करने का मुक्ते काई ग्रवसर नहीं मिला है। ग्रतः काश्मीर सरकार द्वारा ग्रयनाई गयी वर्तनान नाति के कारण मुक्ते ज्ञात नहीं है। में यह सुक्ताव या पत्र महाराजा या उनको सरकार के कहने से नहीं लिख रहा हूँ। लेकिन चूँकि ग्राप ग्रयनी ग्रमली काश्मीर यात्रा के समय इस सवाल पर चर्चा कर सकते हैं ग्रतः ग्राप को ग्रयने विचार बताने ग्रीर काश्मीर रियासत तथा हमारी राष्ट्रभूमि के व्यापक हितों में मेरे दिमाग में समक्षीते का जो सम्भव तरीका ग्राया यह बताने के लिये में ग्रापको लिख रहा हूँ।

श्रव हम खुशी से एक समान उद्देश्य से श्रीर कंघे से कंघा निलाकर काम कर रहे हैं। हमारे हित समान हैं, इससे भी बड़ी बात यह हैं कि श्राप श्रीर शेप भारत के मेरे भाई, मैं स्वयं श्रीर मेरी प्यारी प्रजा – जिसकी सेवा में मैंने श्रपने सारे जीवन को, जब तक ईश्वर चाहे, समर्पित कर दिया है— एक ही घरती से पैदा हुये हैं श्रीर सभी भारतीय हैं।

श्रापके श्रौर श्रापके उच्च श्रादशों के लिये मेरे हृदय में हमेशा सर्वोच्च सम्मान श्रौर गहरा श्रादर व प्रशंसा की मावना रही है। इसी श्रिमियिक के साथ।

सा॰ ८--७-१९४७ को जारी की गयी महाराजा सादूलसिंह की प्रेस विशिष्त का अंश ।

••••••••••••ग्रुपने ग्राघीन नये रियासती विभाग ग्रीर कांग्रेस की नीति का कुशल राजनीतिश की तरह स्वरूप बताने के लिये में पूर्ण सच्चाई के साथ उन्हें बधाई देने का शीव्रत्तम ग्रावसर प्राप्त करना चाहता हूँ।

उन्होंने जो कुछ कहा है उससे मैं स्वयं पूर्णतः सहमत हूँ। यह वहुत उपयुक्त शब्दों का कथन है। जब हमारी मातृ भूमि श्रपनी श्राजादी की श्रोर बढ रही है श्रीर जब रियासत के साथ उसका सम्बंध सिकंय रूप से बन रहा है तो रियासत के प्रति उस समय उससे बढ़कर सच्चो मित्रता श्रीर सद्मावना का दूसरा कोई कथन नहीं हो सकता।

उससे भी बड़ी बात यह है कि इसमें राजायों श्रीर उनकी प्रजा को निम्नलिखित श्राश्वासन दिये गये हैं:—

- (१) हम उन से इससे अधिक श्रीर कुछ नहीं चाहते कि वे तीन विषयों, जिनमें देश के समान हित हैं, में भारतीय संघ में सम्मिलित हो जायें। अन्य मामलों में हम निसंदेह रूप से उनके स्वायत्व स्थित्व का पालन करेंगे।
- (२) रियासत के घरेलू मामलों में किसी भी तरह से हस्तचे प करने का कांग्रेस का कोई इरादा नहीं है।
- (३) वे राजात्रों की व्यवस्था के शत्रु नहीं हैं। उसके विपरीत वे चाहते हैं कि राजात्रों की देखरेख में उनकी प्रजा पूर्ण समृद्धि, संतोष ग्रौर सुख को प्राप्त करें।
- (४) मेरी यह नीति नहीं होगी कि नये विभाग द्वारा रियासतों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाय जिससे एक का दूसरे पर अधिकार प्रतीत हो।

× × ×

यह संतोष की बात है कि अधिकांश रियासतें विधान निर्मात्री समा में सम्मिलित हो चुकी हैं। मुक्ते पूर्ण विश्वास है कि सरदार पटेल के उक्त कथन से दूसरी भी जल्दी ही सम्मिलित होने का निर्णय करेंगी। अतः में अपने वंधु राजाओं से कहूँगा कि कांग्रेस ने इस प्रकार स्वेच्छा से मित्रता का जो हाथ बढाया है, उसे थामें और उसे अपना पूर्ण समर्थन और सहायता दें ताकि भारत शीवता से अपनी 'निवीन महानता" पर पहुँच जाय।

बीकानेर रियाचत का भारतीय संघ में सम्मिलित होने का समभौता।

चूँ कि मारतीय स्वतन्त्रता कान्न १६४७ में व्यवस्या है कि १५ ह्यगनत सन् १६४७ से भारत नाम से एक स्वतन्त्र संघ की स्थापना की जादेगी, भारत सरकार का १६३५ का कान्न, ऐसे लोप, योग, अनुकृतता और संशोधन के साथ जैसा गवर्नर जनरल आदेश द्वारा वतायें, भारतीय संघ पर लागू होगा।

चूँ कि भारत सरकार के १६३५ के कान्न, जिसे गवर्नर जनरल ने ऐसा श्रनुकूल बनाया है, में ब्यवस्था है कि एक भारतीय रियासत श्रपने शासक द्वारा किये गये संघ में सम्मिलित होने के समक्तीते द्वारा भारतीय संघ में मिल ककती है।

ग्रंतः में महाराजा सादूलसिंह, बीकानेर रियासत का शासक, मेरी टक्त रियासत में ग्रीर पर अपनी प्रभुसत्ता के ग्रिधिकार से वहाँ संघं में सम्मिलित होने का यह समकीता करता हूँ, ग्रीर

- १. में यह घोपणा करता हूँ कि में इस इच्छा से मारत के संघ में सांमिलित होता हूँ कि भारत के गवर्नर जनरल, संघ की व्यवस्थापिका, संघीयन्यायालय ग्रीर संघ के उद्देशों के लिये स्थापित संघ का ग्रन्य कोई ग्रीधकारी मेरे इस संघ में सम्मिलित होने की रू से, लेकिन हमेशा उसकी शतों के ग्रनुसार ग्रीर केवल संघ के उद्देशों के लिये, बीकानेर रियासत (इसके बाद जिसे "यह रियासत" कहा गया है) के सम्बन्ध में ऐसे काम करने का ग्रीधकार होगा लो उन्हें भारत सरकार के १९३५ के कानून, जो भारत के संघ में १५ ग्रागस्त १९४० से चालू है (यह कानून जो चालू है इसके बाद "कानून" कहा गया है), के द्वारा ग्राथवा ग्रान्तर्गत दिये जांय।
- २. में इसके द्वारा इस बात का जिम्मा लेता हूँ कि मेरे इस संव में सम्मिलित होने के समकौते की रूसे जहां तक वे उसमें लागू होंगी, में इस रियासत में कारन की घाराओं के लागू करने का पूर्ण ध्यान सक्खूंगा।
- इ. साथ की स्ची में दिये गये विषयों के लिये में मानता हूँ कि इन विषयों के लिये संघ की व्यवस्थापिका इस रियासत के लिये कान्ने बना सकती है।

- ४. में इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि मैं इस आश्वासन पर मारतीय संघ में सम्मिलित होता हूँ कि यदि गवर्नर जनरल और इस रिया-सत के शासक के बीच कोई ऐसा समभौता किया जाता है जिसके द्वारा भारतीय व्यवस्थापिका का कोई कानून इस रियासत में लागू करने का काम इस रियासत के शासक द्वारा किया जायेगा तो वह समभौता इस समभौते का हिस्सा माना जायेगा और उसके अनुसार ही इसकी व्याख्या की जायेगी और मान्य होगा।
- ५. संघ में सम्मिलित होने के मेरे इस समभौते की शातें भारत के भारतीय स्वतन्त्रता कानून १९४७ अथवा 'कानून' में कोई संशोधन करके बदली नहीं जायेगीं जब तक कि इस समभौते के एक अनुपूरक समभौते द्वारा मैं ऐसे संशोधन को स्वीकार न करूं।
- ६. इस समभौते से संघ व्यवस्थापिका को यह अधिकार नहीं होगा कि किसी काम के लिये अनिवार्थ भूमि ग्रहण का अधिकार देने वाला कोई कानून इस रियासत के लिये बनाये। लेकिन मैं इसके द्वारा जिम्मा लेता हूँ कि यदि किसी संघीय कानून के लिये जो इस रियासत पर लागू होता है, संघ किसी भूमि को प्राप्त करना जरूरी समभे तो उनके अनुरोध पर मैं उनके खचें से भूमि प्राप्त कर लूँगा अथवा यदि भूमि मेरी हुयी तो सहमत शतों पर उन्हें हस्तांतरित कर दूँगा। यदि सहमित न हो तो भारत के मुख्य न्यायधीश द्वारा नियुक्त किसी पंच द्वारा तय की गयी शतों मान लूँगा।
- ७. इस समभौते का यह ऋर्ष नहीं होगा कि मैं भारत के किसी भावी संविधान को स्वीकार करने लिये किसी भी प्रकार बाध्य हूँ ऋौर न ही इस समभौते के कारण भारत सरकार के साथ किसी भावी संविधान के ऋंतर्गत समभौता करने की मेरी स्वतन्त्र इच्छा पर कोई वंधन लगता है।
- द्ध रियासत पर और रियासत में मेरी प्रभुसत्ता चालू रहने पर इस समस्तीते का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और नहीं इस रियासत के शासक के रूप में अब मेरे द्वारा जो अधिकार और सत्ता बर्ते जाते हैं उन पर इस समस्तीते में उल्लिखत व्यवस्था के अलावा कोई प्रभाव पड़ेगा।
- ह. मैं इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि इस रियासत की च्रोर से मैं यह समभौता करता हूँ । इस समभौते में मेरे वारे में ग्रथवा रियासत के शासक के बारे में जो उल्लेख है उसका तात्पर्य है कि उसमें उत्तराधिकारियों का उल्लेख भी शामिल है ।

श्राज ७ त्रगस्त १६४६ को इस पर हस्ताच् किये। सादूलसिंह महाराजा बीकानेर

रूप में सम्मिलित होने के इस समभौते को स्वीकार करता हूँ।

तां॰ १६ ग्रागस्त १६४७ मोहर भारत सरकार रियासती मंत्रालय

माउंटवैटन ग्राफ वर्मा

सूची

विपय जिनके बारे में संघ व्यवस्थापिका रियासत के लिये कानून बना सकती है।

श्र- सुरज्ञा

- १. यंघ की जल सेना, थल सेना श्रीर वायु सेना एवं यंघ द्वारा निर्मित श्रयवा रक्की गयी कोई श्रन्य सेना, जिसमें किसी वर्तमान राज्य द्वारा निर्मित या रक्की गयी सेना भी शामिल है, जो संघ की किसी सेना के साथ जोड़ी गयी है या काम करती है ।
- २. जल सेना, थल सेना श्रीर वायु सेना के काम; छावनी इलाकों का प्रशासन ।
- ३. हथियार :- श्राग्न श्रास्त्र (तोप बन्दूक), युद्ध सामग्री ।
- ४. विस्फोटक
- व- विदेशी मामले
 - ेंश विदेशी मामले, दूसरे देशों के साथ हुये समभौतों ग्रौर सन्धियों को लागृ करना, ग्रपराधियों ग्रौर दोषारोपित व्यक्तियों को मारत से वाहर सम्राट के संघ को सौंपना ग्रौर निर्वासन ।
 - २. भारत में ऐसे व्यक्तियों को जो किसी वर्तभान रियासत में वसे अंग्रेज नांगरिक नहीं हैं, प्रवेश देना, दूसरे देश में वसना और निष्कासन तथा भारत में उनके आने जाने पर नियंत्रण तथा भारत से बाहर

- ३. स्वाभाविक नागरिक बनाने का कार्य। स- संचार
 - १. डाक ग्रौर तार जिसमें टेलीफोन, वेतार का तार, प्रसारण ग्रौर संचार के ऐसे दूसरे साधन।
 - २. संघ रेलवे, छोटी रेलवे के अलावा सभी दूसरी रेलों की सुरचा, किराये की अधिकतम और न्यूनतम दर, स्टेशन और सेवाओं के टर्मिनल कर का नियन्त्रण । ट्राफिक की ऋदला बदली, माल ऋौर मुसा--फिरों के ले जाने में रेलवे प्रशासन के उत्तरदायित्व का नियन्त्रण। सुरचा की हिष्ट से छोटी रेलों का नियंत्रण श्रीर ऐसी रेलों द्वारा माल श्रौर मुसाफिर ले जाने की व्यवस्था की जिम्मेवारी का नियंत्रण।
 - ३. समुद्रीय जहाजरानी ऋौर जहाजी विद्या जिसमें नदी जल में जहाज ऋौर नाव चलाना भी शामिल है, नौ सेना ऋधिकार चेत्र।
 - ४. बन्दरगाहों पर संकामक रोग से प्रस्त होने पर यात्रा करने की रुकावट।
 - ५. बड़े बन्दरगाह, ऐसे बन्दरगाहों स्रीर स्टेशनों के सीमा चेत्र की घोषणा श्रीर न्यायालय का वहाँ श्रिधिकार।
 - ६. विमान श्रौर श्राकाश में उड़ान, हवाई श्रड्डों के नियंत्रण की व्यवस्था श्रौर हवाईयातायात श्रोर हवाई श्रड्डों का संचालन ।
 - ७. प्रकाश गृह जिनमें प्रकाश जहाज, त्राकाश दीप त्रौर दूसरी व्यवस्थायें हों ताकि जहाज श्रीर विमान बच सकें।
 - 📭 यात्रियों श्रौर माल का समुद्री मार्ग श्रथवा वायु मार्ग से ले जाया जाना ।
 - इस इकाई से बाहर के किसी भी इलाके के पुलिस वालों के सीमा चेत्र अधिकारों का विस्तार।

द-- श्राधीन

- १. कानून की घारात्रों श्रौर उसके श्रन्तर्गत दिये गये किसी श्रादेश के श्रनुसार संघीय व्यवस्थापिका के लिये चुनाव ।
- २. उपर्युक्त मामलों में से किसी से सम्बन्धित कानूनों के विरुद्ध अपराध।
- ३. उपर्युक्त मामलों में से किसी के लिये जांच श्रौर श्राँकड़े।
- ४. उपर्युक्त मामलों में से किसी के सम्बन्ध में समी कार्यालयों के श्रिध-कार श्रौर सीमा चेत्र । वर्तमान रियासत के शासक की सहमति विना उस रियासत में ऋथवा रियासत के बारे में समान्यतः ऋधिकार ऋौर सीमा चेत्र रखने वाले दूसरे किसी न्यायालय का सीमा चेत्र श्रौर श्रिधिकार न होगा।

बीकानेर रियासत ग्रौर भारतीय संघ के बीच हुन्ना समभौता।

चूं कि यह बात भारतीय संघ श्रौर भारतीय रियासतों के लिये लाभकारी श्रौर फायदेमन्द है कि भारतीय संघ श्रयवा उसके किसी भाग तथा भारतीय रियासतों के बीच समान हितों वाले मामलों में वर्तमान सम-भीते श्रौर प्रशासकीय व्यवस्थाएँ कुछ काल तक चालू रहें:

श्रतः श्रव बीकानेर रियासत श्रीर भारतीय संघ के बीच यह समभौता किया जाता है कि:—

- १. (१) जब तक इस बारे में नये समभौते नहीं हो जाते, इस समय सम्राट श्रौर किसी भारतीय रियासत के बीच समान हितों के मामलों के बारे में जो समभौते श्रौर प्रशासकीय व्यवस्थाएँ हैं, वे, जहां तक उपयुक्त हो, भारतीय संघ श्रथवा उसके किसी भाग, जैसी भी स्थित हो, श्रौर रियासत के बीच चालु रहेंगे।
 - (२) इस धारा की उपधारा (१) की सामान्यता से हटे विना, विशे-पतः ऊपर जिन विषयों का उल्लेख किया गया है उनमें वे विषय शामिल होंगे जो इस समभौते की सूची में बताये गये हैं।
- इस समभौते अथवा अव तक चालू समभौतों और प्रवंधों के वारे में कोई विवाद उत्पन्न होने पर गवर्नर जनरल अथवा राज्य— पाल के अलावा किसी अन्य अधिकारी की मध्यस्थता का जब तक उसमें प्रावधान न किया जाय तो ऐसा विवाद जहां तक हो सके भारतीय मध्यस्थता कानून १८६६ की पद्धित के अनुसार मध्यस्थता द्वारा निपटाया जायेगा।
- इस समभौते में किसी त्र्याधिपत्य कार्यों के त्र्याधिकार सम्मिलित नहीं हैं।

मोहर मारत चरकार रियासती मंत्रालय के॰ एम॰ पन्निकर
प्रधान मंत्री
बीकानेर रियासत
हस्ताच् -सचिव भारत सरकार

सूची

- १. ग्राकाश संचार
- २. शस्त्र ग्रौर सामग्री
- ३. वस्तुत्र्यों का नियंत्रण
- ४. मुद्रा और सिक्के
- प्. जकात
- ६. भारतीय रियासती सेनाएँ
- ७. विदेशी मामले
- **८.** निष्कासन
- ६. श्रायात श्रीर निर्यात नियंत्रण
- १०. सिंचाई श्रौर विद्युत् शिक
- ११ मोटर गाड़ियाँ
- १२. राष्ट्रीय मार्ग
- १३. ऋफीम
- १४. डाक, तार श्रीर टेलीफोन
- १५. रेलवे (कर सम्बंधी दूसरे प्रवंध और पुलिस सहित)
- १६. नमक
- १७. निर्मित पदार्थों पर केन्द्रीय कर, दोहरे आयकर से रचा और कर सम्बंधी दूसरे प्रबंध
- १८ वेतार का तार ।

राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली ता॰ १८ ग्राक्टूबर १९५०

मेरे सम्मानित मित्र,

श्रीमान को लिखते हुये मुक्ते बहुत खुशी है कि मेरे द्वारा बीकानेर रियासत की गद्दी पर श्रापका उत्तराधिकार मान लिया गया है । इस श्रवसर पर में श्रीमान को श्रपनी हार्दिक बघाई प्रेषित करता हूँ । श्रिषक भावना के साथ मैं हूँ

> भवदीय राजेन्द्र प्रसाद भारत का राष्ट्रपतिः

हिज हाईनेस महाराजाधिराज . राज राजेश्वर शिरोमिण महाराजा श्री करणीसिंह जी बहादुर महाराजा बीकानेर

रियासती मंत्रालय

नई दिल्ली १८ फरवरी १९४९

प्रिय महाराजा साहव,

राजस्थान के संयुक्त राज्य द्वारा श्रीमान को श्रापके जीवन काल तक १७ लाख रुपये वार्षिक निजी प्रिवीपर्स दिया जाना तय हुश्रा है। श्रीमान के उत्तराधिकारी को १० लाख रु० वार्षिक मिलेंगे।

> मवदीय एन॰ एम॰ बुच

लेफिटनेंट जनरल हिज हाइनेस महाराजाधिराज राज राजेश्वर शिरोमिण महाराजा श्री सर सादूलसिंह जी वहादुर, जी. सी. एस. श्राई, जी. सी. श्राई. ई., सी. वी. श्रो., महाराजा बीकानेर

		•	

सहायक ग्रंथ

१--- मूल स्रोत

क -- ग्रप्रकाशित

क्र) राजस्थान राज्य पुरालेख विभाग, बीकानेर

- (i) फरमान (ii) निशान (iii) मंसूर (iv) वकील रिपोटें
- (v) ऋखवारात (vi) खत्त (vii) खरीते (viii) खरीता फाइलें
- (ix) विदेश श्रीर राजनैतिक विभाग की फाइलें (x) फीज बहियाँ
- (xi) परवाना बहियाँ।
- व) भारत का राष्ट्रीय पुरालेखा विभाग, नई दिल्ली
- √(i) विदेश श्रीर राजनैतिक विभाग की फाइलें।
 - (ii) रेजीडेंसी रेकार्ड ।
- ा) बड़ा कारखाना, तोशाखाना श्रीर हजूरी दफ्तर रेकार्ड, लालगढ़ पैलेस, बीकानेर
 - (i) फरमान (ii) निशान (iii) मंसूर (iv) खरीते (v) संधियां (vi) सम-भौते, लड़ाइयां (vii) सनद (viii) खरीता वहियाँ (ix) हकीकत बहियाँ।
-) महाराजा बीकानेर के निजी सन्विव का कार्यालय, लालगढ़ पैलेस, बीकानेर
 - (i) बीकानेर के शासकों स्रोर ब्रिटिश राजनैतिक स्रिधिकारियों के बीच हुये स्रर्ध सरकारी पत्रों के पत्र व्यवहार की फाइलें।
 - (ii) बीकानेर के शासकों द्वारा श्रंग्रेजी साम्राज्य को दी गई सेवाश्रों से सम्बन्धित रेकार्ड ।
 - (iii) सन् १९१६ के शांति समभौते, राष्ट्र संघ, नरेन्द्र मण्डल, बटलर समिति, गोलमेज सम्मेलन, संघ, विधान निर्मात्री समा, संघ— प्रवेश का समभौता और राजस्थान के निर्माण से सम्बन्धित फाइलें।
-) श्रन्प संस्कृत पुस्तकालय, लालगढ़ पैलेस वीकानेर
 - (i) फारसी तवारीखें
 - (ii) ख्यातें
 - (iii) भाटों के इतिहास (कवियों द्वारा वर्णन)

ख--प्रकाशित

-) संस्कृत, हिन्दी श्रौर राजस्थानी
 - १- बॉकीदास, कविराना; ऐतिहासिक नातों का संग्रह
 - २- मट्ट, होसिंगः कर्णावतंस

٠٧

२- भट्ट, रग्रछोड़; राज्य प्रशस्ति महाकाव्य ४- बीठू स्जाः राव जैतसीरो छन्द

प्र- व्रजरत्नदासः मत्रासिरुल्डमरा (शाहनवाज खां की पुस्तक का हिन्दी त्रानुवाद)

६- देवीप्रसाद, सुँशी; शाहजहांनामा (हिन्दी)

७- देवीप्रसाद, मुँशी; हुमायूँनामा (हिन्दी)

दर्नाप्रसाद मुँशीः ग्रीरंगजेवनामा (हिन्दी)

६- लयानकः पृथ्वीराज विजय महाकाव्य

१०- जयसोम; कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनकं काव्यम्

११- मैथिल, गंगानन्द; कर्णभूषण

१२- नाहटा, अगरचन्दा बीकानेर जैन लेख संब्रह

१३- नैस्सी, मुंहस्रोतः मुंहस्रोत नैस्सी री ख्यात

१४-- रामभट्टः ग्रन्प कौतुकार्णव

१५-- रायसिंह, महाराजाः रायसिंह महोत्सव ग्रौर बालबोधिनी

१६- सिंदायच, दयालदासः दयालदास री ख्यात

१७- सिंदायच, दयालदासः ग्रायीख्यान कल्पद्रुम

१८- ग्रज्ञात- दलपत विलास

१६- राजा रायसिंह री वेल

२०- महाभारत

२१- जोघपुर राज्य की ख्यात

२२- जयपुर राज्य की ख्यात

(व) फारसी

१- श्रवुलफजलः श्रकवरनामा

२- ग्रवुलफजलः ग्राईन-इ-ग्रकवरी

३- ग्रबदुल हमीद लाहौरी; बादशाहनामा

४- श्रल्वदायूनी; मु^{*}तखबुत्तवारीख

५. गुलबदन वेगमः हुमायूँनामा

६. जीहरः तजिहरतुल वाकयात

७. ख्याबा निबामुदीन ग्रहमदः तवकात-इ-ग्रकवरी

मुहम्मद सईद ग्रहमदः उमरायहनृद

६. मुहम्मद शरीफ; इकवालनामा जहाँगीरी

१० शाहनवाज खाँः मत्रासिक्ल्डमरा

(स) अंग्रे दी

१. ग्रह्मद, मौलवी काविल ग्रलदीनः मुत्तखन-ग्रल-लुवाव

- २. एचिसन, सी॰ यू॰ः कलेक्शन श्राफ ट्रीटीज, इन्गेजमेंट्स एन्ड सनदस्
- ३. वेवरिज, एच०; श्रकवरनामा
- ४. वेबरिज, एच॰; तुजुक-इ-जहाँगीरी
- ध. व्लोकमैन, एच०; आईन-इ-ग्रकवरी
- ६. वोयल्, ए० एच० ई०; पर्सनल नरेटिव ग्राफ ए दूर श्रू ६ वेस्टर्ने स्टेट्स ग्राफ राजवाड़ा
- ७. डे, बी॰; तत्रकात-इ-ग्रकवरी
- इिलयट, सर एच० एम०; दि हिस्ट्री आफ इन्डिया एज टोल्ड वाह
 इट्स ओन हिस्टोरियन्स
- ६. फ्रेंकलिन, विलियमः मिलिटरी मेमोयर्से आफ जार्ज थामस
- १०. जैरेट, कर्नल एच० एस०, ब्राइन-इ-ब्रक्तरी
- २१. खड़गावत, नाथूराम; ए डिस्क्रिप्टिव लिस्ट श्राफ फरमान्स, मंस्से एन्ड निशान्स एड्रेस्ड बाइ दि इस्पीरियल मुगल्स टू दि विसेज ग्राफ राजस्थान
- १२. लो, डब्लू॰ एच॰; मुंत्तखबुत्तवारीख
- १३. स्टिवर्ट, सी०; तजकरातुल-वाकयात
- १४. टैसिटोरी, डा॰ एल॰ पी॰; जैतसी से छन्द
- १५. टैसिटोरी, डा॰ एल॰ पी॰; ए प्रोग्नेस रिपोर्ट स्रोन दि वर्क डन ड्यूरिंग दि इयर १६१७ इन कनेक्शन विद दि वार्डिक एन्ड हिस्टोरिकल सर्वे स्राफ राजपूताना
- १६. वहशत, रजायाली त्रौर खान, मुहम्मद यूसुफः लेलेक्शन्स फ्रोम दरवार—इ—ग्रकवरी

२ -- गौग स्रोत

(त्र) संस्कृत स्त्रीर हिन्दी

- १. देवीप्रसाद, पंडित, शास्त्रीः गंगासिंह कल्पद्रम
- २. देवीप्रसाद, मुन्शी; राव बीकाजी का जीवन चरित्र
- ३. देवीप्रसाद, मुनशीः राव लू एक र्णां जी का जीवन चरित्र
- ४. देवीप्रसाद, मुनशीः राव कल्यारणमल जी का जीवन चरित्र
- ५. देवीप्रसाद, मुन्शीः राव जैतसी का जीवन चरित्र
- ६. ज्वालासहाय, मुनशीः वकाए राजपूताना
- ७. लच्मीचन्द्रः जैसलमेर की तवारीख

- ग्रोभा, डा॰ गीरीर्शकर हीराचन्दः बीकानैरं राज्य का इतिहासः
- श्रोभा, डा॰ गौरीशंकर हीराचन्दः राजपूताने का इतिहास
- १०. ऱ्यामलदास, कविराजाः वीरविनोद
- ११. सोहनलालः तवारील बीकानेर

(व) ग्रंग्रे जी

- १. ग्रलखघारीः राजा रायसिंह
- २. ग्राजाद, मीलाना ग्रबुलकलाम; इपिडया विन्स फीडम
- ३. वनजीं, ए० सी०ः दि राजपूत स्टेट्स एन्ड दि ईस्ट इरिडया कम्पनी
- ४. वनर्जी, एस० के०; हुमायूँ वादशाह
- श्रील, थामस विलियमः एन च्रोरियंटल विव्लियोग्राफीकल डिक्शनरी
- ६. बीटसन, ब्रिगे॰ जन॰ स्टुग्रर्टः ए हिस्ट्री ग्राफ दि इम्पीरियल सर्विस ट्रुप्स ग्राफ दि नेटिव स्टेट्स
- ७. वेनीपसाद, डा॰; हिस्ट्री श्राफ जहाँगीर
- केम्पवेल, जानसन एलनः मिशन विद माउन्टवैटन
- ६. चक्रवर्ती, यादवचन्द्रः दि नेटिव स्टेट्न ग्राफ इरिडया
- १०. कोलबुक, सर टी० ई०: लाइफ ग्राफ एलफिन्सटन
- ११. कॉम्पटन, एच०; यूरोपियन मिलिटरी एडवेंचर्स स्नाफ हिन्दुस्तान
- १२. कमिंग, सर जाँन; पोलिटिकल इन्डिया १८३२-१६३२
- १३. डोडवेल, एच. एच.; दि केम्ब्रिज हिस्ट्री ग्राफ इन्डिया, भाग ६
- १४. एडवर्ड, माइकेलः दि लास्ट इयर्स ग्राफ ब्रिटिश इन्डिया
- १५. एलांफन्सटन, माउन्टस्टुग्रर्टः हिस्ट्री ग्राफ हिन्दुस्तान
- १६. एलफिन्सटनः हिस्ट्री ग्राफ इन्डिया
- १७. ग्रर्सकिन, के॰ डी॰; गजेटियर ग्राफ बीकानेर
- १८. गाँधी, एम० के०; दि इन्डियन स्टेट्स प्रोवलम
- १६. गोएट्स, इरमनः दि आर्ट एन्ड आर्काटे कचर आफ बीकानेर स्टेट
- २० ग्रे, वेसिल, राजपूत पेंटिंग्स
- २१. ज्वाला सहायः लोयल राजपृताना
- २२. खङ्गावत, नाथूरामः राजस्थान्स रोल इन दि स्ट्रगल आफ १८५७
- २३. लो, नरेन्द्रनाय; दि इन्डियन हिस्टोरीकल क्वार्टरली
- २४. ली वार्नर, सर विलियम; दि नेटिव स्टेट्स ग्राफ इन्डिया
- २५. मेलिसन, जी॰ ए॰; ए हिस्टोरीकल स्केच ग्राफ दी नेटिव स्टेट्स ग्राफ इन्डिया

- २६. मैरी, काउंटेस आफ मिन्टो; इन्डिया मिन्टो एन्ड मोर्ले १६०५-१६१०
- २७. मेहता, डा॰ मोहनसिंह; लार्ड हेस्टिंग्स एन्ड दि इन्डियन स्टेट्स
- २८. मेनन, वी॰ पी॰; दि स्टोरी आफ दी इन्टोग्रेशन आफ दी इन्डि-यन स्टेट्स
- २६. मेनन, वी॰ पी॰; दि ट्रांसफर श्राफ पावर इन इन्डिया
- ३०. मिर्जी इस्माइल, सर; माई पब्लिक लाइफ
- ३१. मोसले, लियोनार्ड; दि लास्ट डेज स्त्राफ दि ब्रिटिश राज
- ३२. निकल्सन, ए० पी०; स्क्रेप्स आफ पेपर
- ३३. पन्निकर, के॰ एम॰; हिंज हाईनेस दि महाराजा श्राफ बीकानेर, ए वायोग्राफी
- ३४. पन्निकर, के॰ एम॰; ब्रिटिश पालिसी दुवार्ड्स इन्डियन स्टेट्स
- ३५. पाउलेट, कर्नल, पी॰ डब्लू॰; गजेटियर ग्राफ दी बीकानेर स्टेट
- ३६. प्रिंसेप, एच० टी०; ए० हिस्ट्री आफ दी पोलिटिकल एन्ड मिलि-टरी ट्रांजेक्शन्स इन इन्डिया ड्यूरिंग दि एडिमिनिस्ट्रेशन आफ दि मार्कियस आफ हेस्टिंग्स
- ३७. रघुवीरसिंह, एम० के०; इन्डियन स्टेट्स एन्ड दि न्यू रेजीम
- ३८. रैले, सर थामसः लार्ड कर्जन इन इन्डिया
- ३६. रीड, हन्नाह; रंगमहल
- ४०. सरकार, सर जे० एन०; हिस्ट्री त्राफ त्रौरंगजेन माग ३
- ४१. सरकार, सर जे॰ एन॰; ए शोर्ट हिस्ट्री स्त्राफ स्रौरंगजेब
- ४२. सरकार, सर जे० एन०; फाल आफ दि मुगल एम्पायर
- ४३. शास्त्री, के० ग्रार० ग्रार०; इन्डियन स्टेट्स
- ४४. सक्सेना, डा॰ बनारसी प्रसादः हित्ट्री त्राफ शाहजहां त्राफ दिल्ली
- ४५. स्कॉट, जोनाथनः हिस्ट्री स्राप डेकन
- ४६. शर्मा, डा॰ दशरथः राजस्थान श्रू दि एजेज
- ४७. शावर्स; ए मिसिंग चेप्टर इन दि इन्डियन म्युटिनी
- ४८. स्मिथ, वी॰ ए॰; दि आनसफोर्ड हिस्ट्री आफ इन्डिया
- ४६. सोढ़ी, राव बहादुर हुकमिंदहः ज्योग्राफी त्राफ वीकानेर
- ५१. श्रीवास्तव, डा॰ ए॰ एल॰; दि मुगल एम्पायर
- ५२. टैसिटोरी, डा॰ एल॰ पी॰; बार्डिक एन्ड हिस्टोरीकल मैन्युस्क्रिप्ट्स
- ५२. यामसन, एडवर्ड; दि मेकिंग ब्राफ दि इन्डियन प्रिसेज
- ५३. थामसन, एडवर्ड; दि ऋदर साइड ऋाफ दि मेडल
- पूर. टॉड, कर्नल जेम्स; एनल्स एन्ड एन्टीक्युटीज आफ राजस्थान

- ५५. जर्नल आफ दि एशियाटिक सोसायटी आफ वंगाल
- ५६. जर्नरल आफ इन्डियन हिस्ट्री जिल्द ४ भाग १ से ३
- ५७. इडियन रिफोर्म सीरीन ट्रेक्ट्स, सीरीन ४ से ६
- ५८. इन्डियन रिफोर्मस
- ५६. रिपोर्टस ग्रान दि पोलिटिकल एडिमिनिस्टेर्शन ग्राफ दि राजपूताना स्टेर
- ६०. इम्पीरियल गजेटियर श्राफ इन्डिया, जिल्द ८
- ६१. ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ बीकानेर, एड्सन (प्रिंटर्स) लिमिटेड, लंदन
- ६२. सेन्सस रिपोर्ट, १९४६, बीकानेर स्टेंट जिल्द १
- ६३. चीफ्स एन्ड लीडिंग फेमिलीज इन राजपूताना
- ६४. दि हाऊस ग्राफ बीकानेर
- ६५. ए ब्रीफ स्टेटमेंट ब्राफ बीकानेर्स सर्विसेज इन दि ब्रेट वार १६१४-१
- ६६. दि त्रिटिश क्राउन एन्ड दि इन्डियन स्टेट्स
- ६७. व्हाइट पेपर ब्रान इन्डियन स्टेट्स, १९५०
- ६८. इन्डियाज इम्पीरियल पार्टनरशिप
- ६६. वीकानेर एन्ड दि वार १६३६-१६४५
- ७०. दि गवर्नमेंट ग्राफ बीकानेर एक्ट १९४७(एक्ट नं. ३ ग्राफ १९४७)
- ७१. प्रोसीडिंग्स आफ प्लेनरी सेशन्स आफ दि राउंड टेबल कांफ्रेंस
- ७२. प्रोसीडिंग्स ग्राफ फीडरल स्ट्रक्चर कमेटी एन्ड माइनोरिटीज कमेटी ग्राफ दि राउंड टेवल कॉफ्रेंस
- ७३. प्रोसीडिंग्स आफ दि कॉफ्रोसेन आफ दि रूलिंग प्रिंसेन एन्ड चीफर ७४. प्रोसीडिंग्स आफ दि चैम्बर आफ प्रिसेन
- ७५. वीकानेर बुलेटिन्स